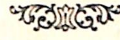
॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

१०९



कलिकालसर्वज्ञ-श्रीहेमचन्द्राचार्यविरचितः

अभिधानचिन्तामणिः

सटिप्पण 'मणिप्रभा' हिन्दीव्याख्याविमर्शोपेतः

व्याख्याकारः—

साहित्य-व्याकरणाचार्य-साहित्यरत्न-रिसर्चस्कॉलर-मिश्रोपाह्व-

प० श्रीहरगोविन्दशास्त्री

'आरा'स्थ-राजकीय-संस्कृतोच्चविद्यालय-साहित्याध्यापकः

प्रस्तावनालेखकः—

डॉ० नेमिचन्द्रशास्त्री

एम० ए० (हि० प्रा० सं०), पी-एच० डी०

(अध्यक्ष, संस्कृत एवं प्राकृत विभाग, एच० डी० जैन कालेज, आरा)



चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

संस्करण : प्रथम, वि० सं० २०२०

मूल्य : [illegible]



Phone : 3076

THE

VIDYABHAWAN SANSKRIT SERIES

109

ABHIDHĀNA CHINTĀMAṆI

OF

S'RĪ HEMACHANDRĀCHĀRYA

Edited with an Introduction

By

Dr. NEMICHANDRA S'ĀSTRĪ

M. A., Ph. D.

AND

The Maṇiprabhā Hindī Commentary and Notes

BY

S'RĪ HARAGOVINDA S'ĀSTRĪ

(Sāhityāchārya, Vyākaraṇāchārya, Sāhityaratna and Sāhityādhyāpaka, Government Sanskrit High School, Arrah.)

THE

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

Varanasi-1 (India)

1964

विषय-प्रवेश



प्रस्तावना

किसी भी भाषा की समृद्धि की सूचना उसके शब्दसमूह से मिलती है। भाषा ही क्या, किसी देश या राष्ट्र का सांस्कृतिक विकास भी उसकी शब्द-राशि से ही आँका जा सकता है। जिस प्रकार किसी देश की आर्थिक सम्पत्ति या अर्थकोश उसकी भौतिकता का मापक होता है, उसी प्रकार किसी राष्ट्र का शब्दकोष उसकी बौद्धिक एवं मानसिक प्रगति का परिचायक होता है।

अर्थशास्त्र का सिद्धान्त है कि जो पूंजी कहीं छिपी रहती है या जो अर्थार्जन का हेतु नहीं है, इस प्रकार की पूंजी मृत है, अनुपयोगी है; किन्तु जिसे विधिपूर्वक व्यवसाय में लगाया जाता है, जो अर्थार्जन का कारण है, ऐसी पूंजी को ही सार्थक और जीवन्त कहा जाता है। इसी प्रकार भाषा के संसार में जो शब्दराशि इधर-उधर बिखरी पड़ी रहती है, वह भी मृत है और है वह प्रयोगाभाव में भूगर्भ में छिपी हुई अर्थ-सम्पत्ति के समान निरुपयोगी। अतः इधर-उधर बिखरी हुई शब्द-सम्पत्ति को व्यवस्थित रूप देकर उसके सामर्थ्य का उपयोग कराना आवश्यक होता है। कोशकार वैज्ञानिक प्रणाली से समाज में यत्र-तत्र व्याप्त शब्दराशि को संकलित या व्यवस्थित कर कोश-निर्माण का कार्य करता है और निरुपयोगी एवं मृतशब्दावली को उपयोगी एवं जीवन्त बना देता है। यही कारण है कि प्राचीन समय से ही कोश साहित्य का प्रणयन होता आ रहा है।

संस्कृत भाषा महती शब्द-सम्पत्ति से युक्त है, उसका शब्दकोश कभी न क्षय होनेवाली निधि के समान अक्षय अनन्त है। इसका भाण्डार सहस्राब्दियों से समृद्ध होता आ रहा है। अतएव शब्द के वाच्यार्थ, भावार्थ एवं तात्पर्यार्थ की प्रक्रिया के अभाव में शब्द का अर्थबोध संभव नहीं। शब्द तो भावों को ढोने का एक वाहन है। जब तक संकेत ग्रहण न हो, तब तक उसकी कोई उपयोगिता ही नहीं। एक ही शब्द संकेत-भेद से भिन्न-भिन्न अर्थों का वाचक होता है। भर्तृहरि का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी नियत वासना के

अनुसार ही अर्थ का स्वरूप निर्धारित करता है। वस्तुतः कोई एक निश्चित अर्थ शब्द का है ही नहीं। यथा—

प्रतिनियतवासनावशेनैव प्रतिनियताकारोऽर्थः, तत्त्वतस्तु कश्चिदपि नियतो नाभिधीयते—वाक्य० २, १३६

अतएव स्पष्ट है कि वक्ता अपनी बुद्धि के अनुरूप अर्थ में शब्द का प्रयोग करता है, किन्तु भिन्न-भिन्न श्रोता अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार शब्द का पृथक्-पृथक् अर्थ ग्रहण करते हैं। ऐसी अवस्था में अर्थबोध के लिए संकेत-ग्रहण अत्यावश्यक है। संकेत-ग्रहण के अभाव में अर्थबोध की कोई भी व्यवस्था संभव नहीं है। आचार्यों ने संकेत-ग्रहण के उपायों का वर्णन करते हुए कहा है—

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः॥

अर्थात्—व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, वाक्यशेष, विवरण और प्रसिद्ध शब्द के सान्निध्य से संकेत-ग्रहण होता है। इनमें व्याकरण यौगिक शब्दों का व्युत्पत्ति द्वारा संकेत-ग्रहण कराने की क्षमता रखता है, पर रूढ़ और योगरूढ़ शब्दों का संकेत-ग्रहण व्याकरण द्वारा संभव नहीं। अतः कोश ही एक ऐसा उपाय है, जो सिद्ध, असिद्ध, यौगिक, रूढ़ या योग-रूढ़ आदि सभी प्रकार के शब्दों का संकेत-ग्रहण करा सकता है।

कोशज्ञान शब्दों के संकेत को समझने के लिए अत्यावश्यक है। साहित्य में शब्द और शब्दों के उचित प्रयोगों की जानकारी के अभाव में रसास्वादन का होना संभव नहीं है। अतएव शब्दों के अभिधेय बोध के लिए कोश व्याकरण से भी अधिक उपयोगी है। कोश द्वारा अवगत वास्तविक वाच्यार्थ से ही लक्ष्य एवं व्यंग्यार्थ का अवबोध होता है।

शब्दकोषों की परम्परा

संस्कृत भाषा में कोशग्रन्थ लिखने की परम्परा बहुत प्राचीन है। वैदिक युग में ही कोशविषय पर ग्रन्थ लिखे जाने लगे थे। वेद-मन्त्रों के द्रष्टा ऋषि-महर्षि कोशकार भी थे। प्राचीन कोश ग्रन्थों के उद्धरणों को देखने से अवगत होता है कि प्राचीन कोश परवर्त्ती कोशों की अपेक्षा सर्वथा भिन्न थे। पुरातन समय में व्याकरण और कोश का विषय लगभग एक ही श्रेणी का था, दोनों ही शब्दशास्त्र के अंग थे।

विलुप्त कोशग्रन्थों में भागुरिकृत कोश का नाम सर्वप्रथम आता है। अमरकोश की टीका सर्वस्व[1] में भागुरिकृत प्राचीन कोश के उद्धरण उपलब्ध होते हैं। सायणाचार्य की धातुवृत्ति[2] में भागुरि के कोश का पूरा श्लोक उद्धृत है। पुरुषोत्तमदेव की 'भाषावृत्ति'[3], सृष्टिधर की भाषावृत्ति टीका तथा प्रभावृत्ति[4] से अवगत होता है कि भागुरि के उस कोशग्रन्थ का नाम 'त्रिकाण्ड' था। इनका एक 'भागुरि व्याकरण' नामक व्याकरण ग्रन्थ भी था। ये पाणिनि के पूर्ववर्ती हैं।

भानुजिदीक्षित[5] ने अपनी अमरकोश की टीका में आचार्य आपिशल का एक वचन उद्धृत किया है, जिसके अवलोकन से यह विश्वास होता है कि उन्होंने भी कोई कोशग्रन्थ अवश्य लिखा था। उणादि सूत्र के वृत्तिकार उज्ज्वलदत्त द्वारा उद्धृत एक वचन से उक्त तथ्य की पुष्टि भी होती है। आपिशल वैयाकरण भी थे तथा इनका स्थितिकाल पाणिनि से पूर्व है।

केशव ने 'नानार्थार्णव संक्षेप' में शाकटायन के कोश विषयक वचन उद्धृत किये हैं, जिनसे इनके कोशकार होने की संभावना है। व्याडिकृत किसी विलुप्त कोश के उद्धरण भी अभिधान चिन्तामणि आदि कोशग्रन्थों की विभिन्न टीकाओं में मिलते हैं। श्री कीथ ने अपने संस्कृत साहित्य के इतिहास में लिखा है कि कात्यायन एक नाममाला के कर्त्ता, वाचस्पति शब्दार्णव के रचयिता और विक्रमादित्य संसारावर्त के लेखक थे।

उपलब्ध संस्कृत कोश ग्रन्थों में सबसे प्राचीन और ख्यातिप्राप्त अमरसिंह का अमरकोश है। यह अमरसिंह बौद्ध धर्मावलम्बी थे। कुछ विद्वान् इन्हें जैन भी मानते हैं। इनकी गणना विक्रमादित्य के नवरत्नों में की गयी है। अतः इनका समय चौथी शताब्दी है। मैक्समूलर ने इनका समय ईस्वी छठी शती से पहले ही स्वीकार किया है। इनका कथन है कि अमरकोश का चीनी-भाषा में एक अनुवाद छठी शताब्दी के पहले ही हो चुका था। डॉ० हार्नले ने इसका रचनाकाल ६२५–९४० ई० के बीच माना है। कहा जाता है कि ये महायान सम्प्रदाय से सुपरिचित थे; अतः इनका समय सातवीं शती के उपरान्त होना चाहिए।

---

१ सर्वानन्दविरचित टीका सर्वस्व भाग १ पृ० १९३

२ धातुवृत्ति भू धातु पृ० ३०

३ भाषावृत्ति ४।४।१४३

४ गुरुपद हालदारः–व्याकरणदर्शनेर इतिहास पृ० ४९९

५ अमरटीका १।१।६६ पृ० ६८

अमरकोश का दूसरा नाम 'नामलिङ्गानुशासन' भी है। यह कोश बड़ी वैज्ञानिक विधि से संकलित किया गया है। इसमें समानार्थक शब्दों का संग्रह है और विषय की दृष्टि से इसका विन्यास तीन काण्डों में किया गया है। तृतीयकाण्ड में परिशिष्ट रूप में विशेष्यनिघ्न, संकीर्ण, नानार्थक शब्दों, अव्ययों एवं लिङ्गों को दिया गया है। इसकी अनेक टीकाओं में ग्यारहवीं शताब्दी में लिखी गयी क्षीरस्वामी की टीका बहुत प्रसिद्ध है। इसके परिशिष्ट के रूप में संकलित पुरुषोत्तमदेव का त्रिकाण्डशेष है, जिसमें उन्होंने विरल शब्दों का संकलन किया है। इन्होंने हारावली नाम का एक स्वतन्त्र कोशग्रन्थ भी लिखा है, इसमें ऐसे नवीन शब्दों पर प्रकाश डाला गया है, जिनका उल्लेख पूर्ववर्ती ग्रन्थों में नहीं हुआ है। इस कोश में समानार्थक और नानार्थक दोनों ही प्रकार के शब्द सगृहीत हैं। इस कोश के अधिकांश शब्द बौद्धग्रन्थों से लिये गये हैं।

कवि और वैयाकरण के रूप में ख्यातिप्राप्त हलायुध ने 'अभिधानरत्नमाला' नामक कोशग्रन्थ ई० सन् ९५० के लगभग लिखा है। इस कोश में ८८७ श्लोक हैं। पर्यायवाची समानार्थक शब्दों का संग्रह इसमें भी है। ग्यारहवीं शताब्दी में विशिष्टाद्वैतवादी दाक्षिणात्य आचार्य यादव प्रकाश ने वैज्ञानिक ढंग का 'वैजयन्ती' कोश लिखा है। इसमें शब्दों को अक्षर, लिङ्ग तथा प्रारम्भिक वर्णों के क्रम से रखा गया है।

नवमी शती के महाकवि धनञ्जय के तीन कोश ग्रन्थ उपलब्ध हैं— नाममाला, अनेकार्थ नाममाला और अनेकार्थ निघण्टु। नाममाला के अन्तिम पद्य से इनकी विद्वत्ता के सम्बन्ध में सुन्दर प्रकाश पड़ता है :—

ब्रह्माणं समुपेत्य वेदनिनदव्याजात्तुषाराचल-
स्थानस्थावरमीश्वरं सुरनदीव्याजात्तथा केशवम्।
अप्यम्भोनिधिशायिनं जलनिधिर्ध्वानोपदेशादहो
फूत्कुर्वन्ति धनंजयस्य च भिया शब्दाः समुत्पीडिताः॥

धनञ्जय के भय से पीडित होकर शब्द ब्रह्माजी के पास जाकर वेदों के निनाद के छल से, हिमालय पर्वत के स्थान में रहनेवाले महादेव को प्राप्त होकर उनके प्रति स्वर्गगङ्गा की ध्वनि के मिष से एवं समुद्र में शयन करने वाले विष्णु के प्रति समुद्र की गर्जना के छल से जाकर पुकारते हैं, यह नितान्त आश्चर्य की बात है। इसमें सन्देह नहीं कि महाकवि धनञ्जय का शब्दों के ऊपर पूरा अधिकार है।

नाममाला छात्रोपयोगी सरल और सुन्दर शैली में लिखा गया कोश है। इसमें व्यावहारिक समानार्थक शब्द संगृहीत किये गये हैं। कोशकार ने २०० श्लोकों में ही संस्कृत भाषा की आवश्यक शब्दावली का चयन कर गागर में सागर भर देने की कहावत चरितार्थ की है। शब्द से शब्दान्तर बनाने की प्रक्रिया इस कोशग्रन्थ की निराली है। अमरकोश, वैजयन्ती प्रभृति किसी भी कोशकार ने इस पद्धति को नहीं अपनाया है। यथा—पृथ्वी के नामों के आगे धर शब्द या धर के पर्यायवाची शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम; पति शब्द या पति के समानार्थक स्वामिन् आदि शब्द जोड़ देने से राजा के नाम एवं रुह शब्द जोड़ देने से वृक्ष के नाम हो जाते हैं। इस पद्धति से सबसे बड़ा लाभ यह है कि एक प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की जानकारी से दूसरे प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की जानकारी सहज में हो जाती है। इस कोश में कुल १७०० शब्दों के अर्थ दिये गये हैं। इस पर १५ वीं शती के अमरकीर्त्ति का भाष्य भी उपलब्ध है।

अनेकार्थ नाममाला में ४६ पद्य हैं। इसमें एक शब्द के अनेक अर्थों का प्रतिपादन किया गया है। अघ, अज, अंजन, अथ, अद्रि, अनन्त, अन्त, अर्थ, इति, कदली, कम्बु, चेतन, कीलाल, कोटि, क्षीर प्रभृति सौ शब्दों के नाना अर्थों का संकलन किया गया है।

अनेकार्थ निघण्टु में २६८ शब्दों के विभिन्न अर्थ संग्रहीत हैं। इसमें एक-एक शब्द के तीन-तीन, चार-चार अर्थ बताये गये हैं।

कोश साहित्य की समृद्धि की दृष्टि से बारहवीं शताब्दी महत्त्वपूर्ण है। इस शती में केशवस्वामी ने 'नानार्थार्णवसंक्षेप' एवं 'शब्दकल्पद्रुम' की रचना की है। नानार्थार्णव कोश में एक शब्द के अनेक अर्थ दिये गये हैं और शब्द-कल्पद्रुम में शब्दों की व्युत्पत्तियाँ भी निहित हैं। महेश्वर ने विश्वप्रकाश नामक कोशग्रन्थ की रचना की है। इनका समय ई० ११११ के लगभग माना गया है। अभयपाल ने 'नानार्थरत्नमाला' नामक एक नानार्थक कोश लिखा है। इस शताब्दी में आचार्य हेमचन्द्र ने अभिधान चिन्तामणि, अनेकार्थसंग्रह, निघण्टुशेष एवं देशी नाममाला कोशों की रचना की है। इस शताब्दी में भैरवकवि ने अनेकार्थ कोश का भी निर्माण किया है। इस ग्रन्थ पर उनकी स्वयं की टीका भी है, जिसमें अमर, शाश्वत, हलायुध और धन्वन्तरि का उपयोग किया गया है।

चौदहवीं शताब्दी में मेदिनिकर ने अनेकार्थ शब्दकोश की रचना की है। इस शब्दकोश का प्रमाण अनेक संस्कृत टीकाकारों ने 'इति मेदिनी' के रूप में उपस्थित किया है। हरिहर के मन्त्री इरुगपद दण्डाधिनाथ ने नानार्थरत्नमाला कोश लिखा है। इसी शताब्दी में श्रीधरसेन ने विश्वलोचन कोश की रचना की है। इस कोश का दूसरा नाम मुक्तावली कोश भी है। कोश की प्रशस्ति के अनुसार इनके गुरु का नाम मुनिसेन था। इस कोश में २४५३ श्लोक हैं। स्वर वर्ण और ककार आदि के वर्णक्रम से शब्दों का संकलन किया गया है। संस्कृत में अनेक नानार्थक कोशों के रहने पर भी इतना बड़ा और इतने अधिक अर्थों को बतलाने वाला दूसरा कोष नहीं है।

सत्रहवीं शती में केशव दैवज्ञ ने कल्पद्रुम और अप्पय दीक्षित ने 'नामसंग्रहमाला' नामक कोश ग्रन्थ लिखे हैं। ज्योतिष के फलित तथा गणित दोनों विषयों के शब्दों को लेकर वेदांगराय ने 'पारसी प्रकाश' नाम का कोश लिखा है।

इनके अतिरिक्त महिप का 'अनेकार्थतिलक', श्रीमल्लभट्ट का 'आख्यातचन्द्रिका', महादेव वेदान्ती का 'अनादिकोश', सौरभी का 'एकार्थ नाममाला—द्वयक्षरनाममाला कोश', राघव कवि का 'कोशावतंस', भोज का 'नाममाला कोश', शाहजी का 'शब्दरत्नसमुच्चय', कर्णपूर का 'संस्कृत-पारसीकप्रकाश' एवं शिवदत्त का 'विश्वकोश' अच्छे कोशग्रन्थ हैं।

अभिधानचिन्तामणि के रचयिता आचार्य हेमचन्द्र

यह पहले ही लिखा गया है कि संस्कृत कोश-साहित्य के रचयिता हेमचन्द्र बारहवीं शताब्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् हैं। ये असाधारण प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति थे। इनका विशाल व्यक्तित्व वट वृक्ष के समान प्रसरणशील था। इन्होंने अपने पाण्डित्य की प्रखरकिरणों से साहित्य, संस्कृति और इतिहास के विभिन्न क्षेत्रों को आलोकित किया है। बारहवीं शती में गुजरात की सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि सभी परम्पराओं को इन्होंने एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया है। गुजरात की प्रत्येक गतिविधि की भव्यता में उनका विशाल हृदय स्पन्दित है। ए० बी० लट्ठे ने लिखा है—"हेमचन्द्राचार्य ने अमुक जाति या समुदाय के लिए अपना जीवन व्यतीत नहीं किया; उनकी कई कृतियाँ तो भारतीय साहित्य में महत्त्व का स्थान रखती हैं। वे केवल पुरातन पद्धति के अनुयायी नहीं थे। उनके जीवन के साथ तत्कालीन गुजरात का इतिहास गुंथा हुआ है। यद्यपि हेमचन्द्र विश्वजनीन और सार्व-

देशिक उपलब्धि हैं, तो भी उनका निवास सबसे अधिक गुजरात में हुआ। इसलिए उनके व्यक्तित्व का भी सर्वाधिक लाभ गुजरात को ही प्राप्त हुआ है। उन्होंने अपने ओजस्वी और सर्वाङ्गपूर्ण व्यक्तित्व से गुजरात को सँवारा-सजाया है और युग-युग तक जीवित रहने की जीवन्त शक्ति भरी है। सारे सोलङ्की वंश को अपनी लेखनी का अमृत पिला-पिलाकर अमर बनाया है। गुर्जर इतिहास में इन्हें अद्वितीय स्थान प्राप्त है[1]।"

आचार्य का जन्म एवं बाल्यकाल

आचार्य हेमचन्द्र का जन्म विक्रम संवत् ११४५ कार्त्तिकी पूर्णिमा को गुजरात के अन्तर्गत धन्धुका नामक गाँव में हुआ था। यह गाँव वर्तमान में भाधर नदी के दाहिने तट पर अहमदाबाद से उत्तर-पश्चिम में ६२ मील की दूरी पर स्थित है। इनके पिता शैवधर्मानुयायी मोढ़कुल के वणिक् थे। इनका नाम चाचदेव या चाचिगदेव था। चाचिगदेव की पत्नी का नाम पाहिनी (पाहिणी) था। एक रात को पाहिनी ने सुन्दर स्वप्न देखा। उस समय वहाँ चन्द्रगच्छ के आचार्य देवचन्द्र सूरि पधारे हुए थे। पाहिनी देवी ने अपने स्वप्न का फल उनसे पूछा। आचार्य देवचन्द्र सूरि ने उत्तर दिया—'तुम्हें एक अलौकिक प्रतिभाशाली पुत्ररत्न की प्राप्ति होगी। यह पुत्र ज्ञान, दर्शन और चारित्र से युक्त होगा तथा साहित्य एवं समाज के कल्याण में संलग्न रहेगा।' स्वप्न के इस फल को सुनकर माता बहुत प्रसन्न हुई।

समय पाकर पुत्र का जन्म हुआ। इनकी कुलदेवी चामुण्डा और कुलयक्ष 'गोनस' था, अतः माता-पिता ने देवता के प्रीत्यर्थ उक्त दोनों देवताओं के आद्य अक्षर लेकर बालक का नाम चाङ्गदेव रखा। लाड़-प्यार से चाङ्गदेव का पालन-पोषण होने लगा। शिशु चाङ्गदेव बहुत होनहार था। पालने में ही उसकी भवितव्यता के शुभ लक्षण प्रकट होने लगे थे।

एक बार आचार्य देवचन्द्र अणहिलपत्तन से प्रस्थान कर भव्य जनों के प्रबोध-हेतु धन्धुका गाँव में पधारे। उनकी पीयूषमयी वाणी का पान करने के लिए श्रोताओं और दर्शनार्थियों की अपार भीड़ एकत्र थी। पाहिनी भी चांग-देव को लेकर गुरुवंदना के लिए गयी। सहज रूप और शुभ लक्षणों से युक्त चांगदेव को देखकर आचार्य देवचन्द्र उस पर मुग्ध हो गये और पाहिनी से उन्होंने कहा—"बहिन! इस चिन्तामणि को तुम मुझे अर्पित करो। इसके द्वारा समाज और साहित्य का बड़ा कल्याण होगा। यह यशस्वी आचार्य पद

---

१ आचार्य भिक्षुस्मृति ग्रन्थ, द्वितीय खण्ड पृ० ७३

को प्राप्त करेगा।" आचार्य की उक्त वाणी को सुनकर पाहिनी देवी व्याकुल हो गयी। माता की ममता ने उसके हृदय को मथ डाला, अतः वह गद्गद कंठ से बोली—'प्रभो! यह तो मेरा प्राणाधार है। इस कलेजे के टुकड़े के बिना मेरा जीवित रहना संभव नहीं। दूसरी बात यह भी है कि पुत्र के ऊपर माता-पिता दोनों का अधिकार होता है, अतएव इसके पिता की आज्ञा भी अपेक्षित है। इस समय इसके पिता ग्रामान्तर को गये हैं। उनकी अनुमति के बिना मैं अकेली इस पुत्र को देने में असमर्थ हूँ।' कहा जाता है कि पाहिनी जैन कुल की थी और चाचदेव शैव। अतः पाहिनी को यह आशा भी थी कि उसका पति जैनाचार्य को पुत्र देना शायद ही पसन्द करेगा।

आचार्य देवचन्द्र ने चांगदेव की प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा उसके द्वारा सम्पन्न होनेवाले कार्यों का भव्य रूप उपस्थित किया, जिससे उपस्थित सभी समाज प्रसन्न हुआ। अनेक व्यक्तियों ने साहित्य और शासन की प्रभावना के हेतु उस पुत्र को आचार्य देवचन्द्र सूरि को समर्पित कर देने का अनुरोध किया। पाहिनी ने उस अनुरोध को स्वीकार किया और उसने साहसपूर्वक उस शिशु को आचार्य को सौंप दिया। आचार्य इस भविष्णु बालक को प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने बालक से पूछा—'वत्स! तू हमारा शिष्य बनेगा?' चांगदेव ने निर्भयतापूर्वक उत्तर दिया—'जी हाँ, अवश्य बनूँगा।' इस उत्तर से आचार्य बहुत प्रसन्न हुए। उनके मन में यह आशंका लगी हुई थी कि चाचिग यात्रा से वापस लौटने पर कहीं इसे छीन न ले। अतः वे उसे अपने साथ लेकर कर्णावती पहुँचे और वहाँ उदयन मन्त्री के यहाँ उसे रख दिया। उदयन उस समय जैनधर्म का सबसे बड़ा प्रभावशाली व्यक्ति था। अतः उसके संरक्षण में चांगदेव को रखकर आचार्य देवचन्द्र चिन्तामुक्त हुए।

चाचिग जब ग्रामान्तर से लौटा तो पुत्रसम्बन्धी समाचार को सुनकर बहुत दुःखी हुआ और पुत्र को वापस लाने के लिए तत्काल ही कर्णावती को चल दिया। पुत्र के अपहार से वह बहुत दुःखी था, अतः देवचन्द्राचार्य की पूरी भक्ति भी न कर सका। ज्ञानराशि आचार्य तत्काल उसके मन की बात समझ गये, अतः उसका मोह दूर करने के लिए अमृतमयी वाणी में उपदेश दिया। इसी बीच आचार्य ने उदयन मन्त्री को भी अपने पास बुला लिया। मन्त्रिवर ने बड़ी चतुराई के साथ चाचिग से वार्तालाप किया और धर्म के बड़े भाई होने के नाते श्रद्धापूर्वक उसे अपने घर ले गया और बड़े सत्कार से भोजन कराया। तदनन्तर उसकी गोद में चांगदेव को बैठाकर पञ्चाङ्ग सहित

तीन दुशाले और तीन लाख रुपये भेंट किये। इस सम्मान को पाकर चाचिग द्रवीभूत हो गया और स्नेह-विह्वल हो बोला—'आप तो तीन लाख रुपये देते हुए उदारता के छल से कृपणता प्रकट कर रहे हैं। मेरा यह पुत्र अमूल्य है, परन्तु साथ ही मैं देखता हूँ कि आपका सम्मान उसकी अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यवान् है। अतः इस बालक के मूल्य में अपना सम्मान ही बनाये रखिये। आपके द्रव्य का तो मैं शिव-निर्माल्य के समान स्पर्श भी नहीं कर सकता हूँ।'

चाचिग के उक्त कथन को सुनकर उदयन मन्त्री बोला—'आपके पुत्र का अभ्युदय मुझे सौंपने से नहीं होगा। आप इसे गुरुदेव को समर्पण करें, तो यह गुरुपद प्राप्त कर बालेन्दु के समान त्रिभुवन-पूज्य होगा। आप पुत्र-हितैषी हैं, पर सोचिये कि साहित्य और संस्कृति के अभ्युत्थान के लिए इस प्रकार के प्रतिभाशाली व्यक्तियों की कितनी आवश्यकता है? मन्त्री के इस कथन को सुनकर चाचिग ने कहा—'आपका वचन प्रमाण है, मैंने अपना पुत्र गुरुजी को सौंपा। अब उनकी जैसी इच्छा हो, इसका निर्माण करें। शिशु की शिक्षा का प्रबन्ध स्तम्भतीर्थ (खम्भात) में सिद्धराज के मन्त्री उदयन के घर पर ही किया गया।

दीक्षा-ग्रहण एवं शिक्षा

हेमचन्द्र की प्रव्रज्या के सम्बन्ध में मत-भिन्नता है। प्रभावकचरित में पाँच वर्ष की अवस्था में उनका दीक्षित होना लिखा है। जिनमण्डनकृत 'कुमारपालप्रबन्ध' में विक्रम संवत् ११६४ में दीक्षित होने का उल्लेख प्राप्त होता है। प्रबन्धचिन्तामणि, पुरातनप्रबन्धसंग्रह, प्रबन्धकोश एवं कुमारपालप्रतिबोध आदि ग्रन्थों से आठ वर्ष की अवस्था में दीक्षित होना सिद्ध होता है। हमारा अनुमान है कि चांगदेव—हेमचन्द्र की दीक्षा आठ वर्ष की अवस्था में ही सम्पन्न हुई होगी। प्रव्रज्या ग्रहण करने के उपरान्त चांगदेव का नाम सोमचन्द्र रखा गया। सोमचन्द्र की प्रतिभा अत्यन्त प्रखर, सूक्ष्म और प्रसरणशील थी। थोड़े ही समय में इन्होंने तर्क, व्याकरण, काव्य, अलङ्कार, छन्द, आगम आदि ग्रन्थों का बहुत गहरा अध्ययन किया[1]। इनके पाण्डित्य का लोहा सभी विद्वान् स्वीकार करते थे।

---

१ सोमचन्द्रस्ततश्चन्द्रोज्ज्वलप्रज्ञाबलादसौ ।
तर्कलक्षणसाहित्यविद्याः पर्यच्छिनद् द्रुतम् ॥ —प्रभावकचरितम्—हेमचन्द्र सूरि प्रबन्ध श्लो० ३७

प्रभावकचरित से यह भी ज्ञात होता है कि सोमचन्द्र ने अपने गुरु देवचन्द्र के साथ देश-देशान्तरों में परिभ्रमण कर शास्त्रीय एवं व्यावहारिक ज्ञान की वृद्धि की थी। हमें इनका नागपुर में धनद नामक सेठ के यहाँ तथा देवेन्द्र सूरि और मलयगिरि के साथ गौड देश के खिल्लर ग्राम में निवास करने का उल्लेख मिलता है। यह भी बताया जाता है कि हेमचन्द्र ने ब्राह्मी देवी—जो विद्या की अधिष्ठात्री मानी गयी है—की साधना के निमित्त कश्मीर की एक यात्रा आरम्भ की। वे इस साधना द्वारा अपने समस्त प्रतिद्वन्द्वियों को पराजित करना चाहते थे। मार्ग में जब ताम्रलिप्ति होते हुए रैवन्तगिरि पहुँचे तो नेमिनाथ स्वामी की इस पुण्य भूमि में इन्होंने योगविद्या की साधना आरम्भ की। इस साधना के अवसर पर ही सरस्वती उनके सम्मुख उपस्थित हुई और कहने लगी—'वत्स! तुम्हारी समस्त मनःकामनाएँ पूर्ण होंगी। समस्त प्रतिवादियों को पराजित करने की क्षमता तुम्हें प्राप्त होगी।' इस वाणी को सुनकर हेमचन्द्र बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपनी आगे की यात्रा स्थगित कर दी और वापस लौट आये[1]।

सूरिपद-प्राप्ति

सोमचन्द्र की अद्भुत प्रतिभा एवं पाण्डित्य का प्रभाव सभी पर था। अतः वि० सं० ११६६ में २१ वर्ष की अवस्था में ही उन्हें सूरिपद से विभूषित कर दिया गया। अब हेमचन्द्र सोमचन्द्र नहीं रहे, बल्कि आचार्य हेमचन्द्र बन गये।

आचार्य हेम और सिद्धराज जयसिंह

आचार्य हेमचन्द्र ने बिना किसी भेदभाव के जनजागरण और जीवनोत्थान के कार्यों में अपने को समर्पित कर दिया था। प्रत्येक अवसर पर वे नयी सूझ-बूझ से काम लेते थे और सदा के लिए अपनी तलस्पर्शी मेधा का एक चमत्कारिक प्रभाव छोड़ देते थे। संभवतः चेतना की इस विलक्षणता ने ही महापराक्रमी गुर्जरेश्वर जयसिंह सिद्धराज को आकृष्ट किया था। आचार्य हेमचन्द्र का सिद्धराज के साथ प्रथम परिचय कब हुआ, इसका प्रामाणिक रूप से तो कोई भी विवरण प्राप्त नहीं होता है, पर अनुमान ऐसा है कि मालव-विजय के अनन्तर विक्रम संवत् ११९१–११९२ में आशीर्वाद देने के लिए आचार्य हेम सिद्धराज की राजसभा में पधारे थे। सिद्धराज मालव के

---

१ विशेष के लिए देखें—Life of Hemchandra, IIch.
तथा काव्यानुशासन की अंग्रेजी प्रस्तावना P. P. CCLXVI-CCLXIX.

अनुकरण पर गुजरात में हर प्रकार की उन्नति करने का इच्छुक था। उस समय मालव में राजा भोज का सरस्वतीप्रेम प्रसिद्ध था। भोजराज संस्कृत का स्वयं प्रकाण्ड पण्डित था। विद्वानों को राजाश्रय देकर शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अहर्निश प्रयास करता रहता था। इस कार्य में उसे हेमचन्द्र से अपूर्व सहयोग मिला। हैमी प्रतिभा का स्पर्श पा गुजरात को सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना उत्तरोत्तर विकसित होने लगी।

सिद्धराज के आदेश से हेमचन्द्र ने सिद्धहैम नाम का एक नया व्याकरण ग्रन्थ लिखा, यह ग्रन्थ गुजरात का व्याकरण कहलाता है। इस ग्रन्थ को तैयार करने के लिए कश्मीर से व्याकरण के आठ ग्रन्थ मंगवाये गये थे[1]।

आचार्य हेमचन्द्र और सिद्धराज समवयस्क थे। सिद्धराज का जन्म हेमचन्द्र से दो वर्ष पूर्व हुआ था। दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी। सिद्धराज राष्ट्रीय नेता, शासक, संरक्षक के रूप में सम्माननीय थे तो हेमचन्द्र धार्मिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से प्राणदायी थे।

आचार्य हेमचन्द्र और कुमारपाल

हेमचन्द्र का कुमारपाल के साथ गुरु-शिष्य का सम्बन्ध था। उन्होंने सात वर्ष पहले ही कुमारपाल को राज्य प्राप्त होने की भविष्यवाणी की थी। एक बार जब राजकीय पुरुष उसे पकड़ने आये तो हेमचन्द्र ने उसे ताड़पत्रों में छिपा दिया था और उसके प्राणों की रक्षा की थी। कहा जाता है कि सिद्धराज को कोई पुत्र नहीं था; इससे उनके पश्चात् गद्दी का झगड़ा खड़ा हुआ और अन्त में कुमारपाल नामक व्यक्ति वि० सं० ११९४ में मार्गशीर्ष कृष्ण १४ को राज्याभिषिक्त हुआ। सिद्धराज जयसिंह कुमारपाल को मारने के प्रयत्न में था, पर वह किसी प्रकार बच गया[2]। राजा बनने के समय कुमारपाल की अवस्था ५० वर्ष की थी। अतः उसने अपने अनुभव और पुरुषार्थ द्वारा

---

१ देखें—पुरातत्त्व (पुस्तक चतुर्थ)—गुजरात नुं प्रधान व्याकरण पृ० ६१। गौरीशंकर ओझा ने अपने राजपूताने के इतिहास भाग १ पृ० १९६ पर लिखा है कि 'जयसिंह ने यशोवर्मा को वि० सं० ११९२–११९५ के मध्य हराया था। उज्जयिनी के शिलालेख से ज्ञात होता है कि मालवा वि० सं० ११९५ ज्येष्ठ वदी १४ को सिद्धराज जयसिंह के अधीन था।' इस उल्लेख के आधार पर 'सिद्धहैम' व्याकरण की रचना सं० ११९० के लगभग हुई होगी।—**बुद्धि प्रकाश, मार्च १९३५ के अंक में प्रकाशित**

२—नागरीप्रचारिणी पत्रिका भाग ६ पृ० ४४३–४६८
(कुमारपाल को कुल में हीन समझने के कारण ही सिद्धराज उसे मारना चाहता था।)

राज्य की सुदृढ़ व्यवस्था की। यद्यपि यह सिद्धराज के समान विद्वान् और विद्यारसिक नहीं था, तो भी राज्यव्यवस्था के पश्चात् धर्म और विद्या से प्रेम करने लगा था।

हेमचन्द्र के प्रति कुमारपाल राजा होने के पहले से ही श्रद्धावनत था, पर अब राजा होने पर उसका सम्बन्ध उनके साथ घनीभूत होने लगा। डा० बुल्हर ने कुमारपाल और हेमचन्द्र के सम्बन्ध का विवेचन करते हुए लिखा है कि हेमचन्द्र कुमारपाल से तब मिले, जब राज्य की समृद्धि और विस्तार हो गया था[१]। डा० बुल्हर की इस मान्यता की आलोचना काव्यानुशासन की भूमिका में डा० रसिकलाल पारिख ने की है और उन्होंने उक्त कथन को विवादास्पद सिद्ध किया है। जिनमण्डन ने कुमारपालप्रबन्ध में दोनों के मिलने की घटना पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि एक बार कुमारपाल जयसिंह से मिलने गया था। मुनि हेमचन्द्र को उसने सिंहासन पर बैठे देखा। वह अत्यधिक आकृष्ट हुआ और उनके भाषण-कक्ष में जाकर भाषण सुनने लगा। उसने पूछा—'मनुष्य का सबसे बड़ा गुण क्या है?' हेमचन्द्र ने कहा—'दूसरों की स्त्रियों में माँ-बहन की भावना रखना सबसे बड़ा गुण है।' यदि यह घटना ऐतिहासिक है तो अवश्य ही वि० सं० ११६९ के आसपास घटी होगी; क्योंकि उस समय कुमारपाल को अपने प्राणों का भय नहीं था[२]।

आचार्य हेमचन्द्र ने कुमारपाल के चारित्रिक पक्ष को बहुत परिष्कृत किया था। ऐश्वर्य के विलासमय और उत्तेजक वातावरण में रहते हुए भी उसे राजर्षि एवं परमार्हत बना दिया था। मांस, मदिरा आदि सप्त व्यसनों से उसे मुक्ति दिलायी थी। कुमारपाल ने अपने अधीन १८ राज्यों में 'अमारि'—अहिंसा की घोषणा की थी। इसमें सन्देह नहीं कि कुमारपाल की राजकीय सफलता, सामाजिक नवसुधार की योजना, साहित्य एवं कला के संरक्षण-संवर्धन के संकल्प के पीछे आचार्य हेमचन्द्र का व्यक्तित्व, उनकी प्रेरणा एवं उनका वरद हस्त था।

---

१ See Note 53 in Dr. Bulher's Life of Hemchandra P.P. 83–84

२ कुमारपाल प्रबन्ध पृ० १८–२२

see the Life of Hemchandra, Hemchandra's own account of Kumarpal's conversion pp. 32–40

देखें--कुमारपाल प्रतिबोध पृ० ३ श्लो० ३००–४००

कलात्मक निर्माण के प्रेरक

आचार्य हेमचन्द्र की प्रेरणा से पश्चिम तथा पश्चिमोत्तर भारत में अनेक मन्दिरों एवं विहारों का निर्माण हुआ। संसारप्रसिद्ध ऐतिहासिक सोमनाथ के मन्दिर का पुनर्निर्माण आचार्य हेमचन्द्र की प्रेरणा से हुआ था। प्रबन्धचिन्तामणि के रचयिता मेरुतुंग ने इस घटना का उल्लेख किया है। पञ्चकुल के मन्दिर के सम्पन्न हो जाने पर आचार्य हेमचन्द्र और कुमारपाल दोनों ही देवदर्शन करने गये थे। आचार्य हेमचन्द्र के प्रभाव एवं प्रेरणा से गुजरात तथा राजस्थान में बने मन्दिर एवं विहार कला के उत्कृष्ट नमूने हैं।

शिष्यवर्ग

आचार्य हेमचन्द्र जैसे प्रतिभाशाली व्यक्तित्व-सम्पन्न और उत्तमोत्तम गुणों के धारक थे, वैसा ही उनका शिष्य-समूह भी था। रामचन्द्र सूरि, बालचन्द्र सूरि, गुणचन्द्र सूरि, महेन्द्र सूरि, वर्धमान गणी, देवचन्द्र, उदयचन्द्र, एवं यशश्चन्द्र उनके प्रख्यात शिष्य थे। इन्होंने हेमचन्द्र की कृतियों पर टीकाएँ तथा वृत्तियाँ लिखी हैं, साथ ही इनके स्वतन्त्र ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं। रामचन्द्र सूरि इन सभी शिष्यों में अग्रणी थे। उनमें कवि की प्रखर प्रतिभा एवं साधुत्व का अलौकिक तेज था। कुमारविहारशतक के रचयिता ये ही हैं। इन्हें 'प्रबन्धशत-कर्ता' कहा जाता है। रामचन्द्र और गुणचन्द्र सूरि ने मिलकर 'नाट्यदर्पण' की रचना की है। महेन्द्र सूरि ने अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थनाममाला, देशीनाममाला और निघण्टु पर टीकाएँ लिखी हैं। देवचन्द्र सूरि ने 'चन्द्रलेखा-विजयप्रकरण' और बालचन्द्र गणि ने 'स्नातस्या' नामक काव्य की रचना की है।

साहित्य

हेमचन्द्र की साहित्य-साधना बहुत विशाल एवं व्यापक है। जीवन को संस्कृत, संवर्द्धित और संचालित करनेवाले जितने पहलू होते हैं, उन सभी को उन्होंने अपनी लेखनी का विषय बनाया है। व्याकरण, छन्द, अलङ्कार, कोश एवं काव्य विषयक इनकी रचनाएँ बेजोड़ हैं। इनके ग्रन्थ रोचक, मर्मस्पर्शी एवं सजीव हैं। पश्चिम के विद्वान् इनके साहित्य पर इतने मुग्ध हैं कि इन्होंने इन्हें ज्ञान का महासागर कहा है। इनकी प्रत्येक रचना में नया दृष्टिकोण और नयी शैली वर्तमान है। श्री सोमप्रभ सूरि ने इनकी सर्वाङ्गीण प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए लिखा है—

क्लृप्तं व्याकरणं नवं विरचितं छन्दो नवं द्व्याश्रया-
लंकारौ प्रथितौ नवौ, प्रकटितं श्रीयोगशास्त्रं नवम् ।
तर्कः संजनितो नवो, जिनवरादीनां चरित्रं नवं
बद्धं येन न केन केन विधिना मोहः कृतः दूरतः ॥

इससे स्पष्ट है कि हेम ने व्याकरण, छन्द, द्व्याश्रय काव्य, अलङ्कार, योग-शास्त्र, स्तवन काव्य, चरित काव्य प्रभृति विषय के ग्रन्थों की रचना की है ।

व्याकरण

व्याकरण के क्षेत्र में सिद्धहेमशब्दानुशासन, सिद्धहेमलिङ्गानुशासन एवं धातुपारायण ग्रन्थ उपलब्ध हैं । इनके व्याकरण ग्रन्थ की प्रशंसा करते हुए प्रबन्धचिन्तामणि में लिखा है—

भ्रातः संवृणु पाणिनिप्रलपितं कातन्त्रकन्था वृथा,
मा कार्षीः कटु शाकटायनवचः क्षुद्रेण चान्द्रेण किम् ।
किं कण्ठाभरणादिभिर्बठरयत्यात्मानमन्यैरपि,
श्रूयन्ते यदि तावदर्थमधुरा श्रीसिद्धहेमोक्तयः ॥

हैम व्याकरण

(१) मूलपाठ, (२) धातुपाठ, (३) गणपाठ, (४) उणादिप्रत्यय एवं (५) लिङ्गानुशासन इन पाँचों अंगों से परिपूर्ण है । सिद्धहेमशब्दानु-शासन राजा सिद्धराज जयसिंह की प्रेरणा से लिखा गया है । इस ग्रन्थ में आठ अध्याय और ३५६६ सूत्र हैं । आठवाँ अध्याय प्राकृत व्याकरण है, इसमें १११९ सूत्र हैं ।

आचार्य हेम ने इस व्याकरण ग्रन्थ पर छः हजार श्लोक प्रमाण लघुवृत्ति और अठारह हजार श्लोक प्रमाण बृहद्वृत्ति लिखी है । बृहद्वृत्ति सात अध्यायों पर ही प्राप्त होती है, आठवें अध्याय पर नहीं है ।

द्व्याश्रय काव्य

द्व्याश्रय नाम से ही स्पष्ट है कि उसमें दो तथ्यों को सन्निबद्ध किया गया है । इसमें चालुक्यवंश के चरित के साथ व्याकरण के सूत्रों के उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं । इसमें सन्देह नहीं कि हेमचन्द्र ने एक सर्वगुण-सम्पन्न महा-काव्य में सूत्रों का सन्दर्भ लेकर अपनी विशिष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है । इस महाकाव्य में २० सर्ग और २८८८ श्लोक हैं । सृष्टिवर्णन, ऋतुवर्णन, रसवर्णन आदि सभी महाकाव्य के गुण वर्तमान हैं ।

प्राकृत द्वयाश्रय काव्य में कुमारपाल के चरित के साथ प्राकृत व्याकरण के सूत्रों के उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं। इस काव्य में कुमारपाल की धर्म-निष्ठा, नीति, परोपकारी आचरण, सांस्कृतिक चेतना, उदारता, नागर जनों के साथ सम्बन्ध, जैनधर्म में दीक्षित होना एवं दिनचर्या आदि सभी विषयों का विस्तारपूर्वक रोचक वर्णन है। इसमें आठ सर्ग और ७४७ गाथाएँ हैं।

त्रिषष्टिशलाका-पुरुष-चरित

इस ग्रन्थ में २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ बलदेव, ९ वासुदेव और ९ प्रतिवासुदेव, इस प्रकार त्रेसठ पुरुषों का चरित अंकित है। यह ग्रन्थ बत्तीस हजार श्लोक प्रमाण है। इसका रचनाकाल वि० सं० १२२६–१२२९ के बीच का है। इसमें ईश्वर, परलोक, आत्मा, कर्म, धर्म, सृष्टि आदि विषयों पर विशद विवेचन किया गया है। दार्शनिक मान्यताओं का भी विशद विवेचन विद्यमान है। इतिहास, कथा एवं पौराणिक तथ्यों का यथेष्ट समावेश किया गया है।

काव्यानुशासन

आचार्य हेम ने मम्मट, आनन्दवर्द्धन, अभिनवगुप्त, रुद्रट, दण्डी, धनञ्जय आदि के काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों का अध्ययन कर इस ग्रन्थ की रचना की है। इस ग्रन्थ पर हेमचन्द्र ने अलङ्कार चूड़ामणि नाम से एक लघुवृत्ति और विवेक नाम की एक विस्तृत टीका लिखी है। इसमें मम्मट की अपेक्षा काव्य के प्रयोजन, हेतु, अर्थालङ्कार, गुण, दोष, ध्वनि आदि सिद्धान्तों पर गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

छन्दोनुशासन

इसमें संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य के छन्दों का विवेचन किया है। मूल ग्रन्थ सूत्रों में है। आचार्य हेम ने इसकी वृत्ति भी लिखी है। इन्होंने छन्दों के उदाहरण अपनी मौलिक रचनाओं से उपस्थित किये हैं।

न्याय

इनके द्वारा रचित प्रमाण-मीमांसा नामक ग्रन्थ प्रमाण-प्रमेय की साङ्गोपाङ्ग जानकारी प्रदान करने में पूर्ण क्षम है। अनेकान्तवाद, प्रमाण, पारमार्थिक प्रत्यक्ष की तात्त्विकता, इन्द्रियज्ञान का व्यापारक्रम, परोक्ष के प्रकार, अनुमानावयवों की प्रायोगिक व्यवस्था, निग्रहस्थान, जय-पराजय-व्यवस्था, सर्वज्ञत्व का समर्थन आदि मूल मुद्दों पर विचार किया गया है।

योगशास्त्र

कुमारपाल के अनुरोध से आचार्य हेम ने योगशास्त्र की रचना की है। इसमें बारह प्रकाश और १०१२ श्लोक हैं। गृहस्थ जीवन में आत्मसाधना करने की प्रक्रिया का निरूपण किया गया है। इसमें योग की परिभाषा, व्यायाम, रेचक, कुम्भक और पूरक आदि प्राणायामों तथा आसनों का निरूपण किया है। इसके अध्ययन एवं अभ्यास से आध्यात्मिक प्रगति की प्रेरणा मिलती है। व्यक्ति की अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों के उद्घाटन का पूर्ण प्रयास किया गया है। इस ग्रन्थ की शैली पतञ्जलि के योगशास्त्र के अनुसार ही है; पर विषय और वर्णनक्रम दोनों में मौलिकता और भिन्नता है।

स्तोत्र

द्वात्रिंशिकाओं के रचयिता के रूप में आचार्य हेम प्रसिद्ध हैं। वीतराग और महावीर स्तोत्र भी इनके सुन्दर माने जाते हैं। भक्ति की दृष्टि से इन स्तोत्रों का जितना महत्त्व है, उससे कहीं अधिक काव्य की दृष्टि से।

कोशग्रन्थ

आचार्य हेम के चार कोशग्रन्थ उपलब्ध हैं—अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसंग्रह, निघण्टु और देशीनाममाला।

अनेकार्थसंग्रह में सात काण्ड और १९४० श्लोक हैं। इसमें एक ही शब्द के अनेक अर्थ दिये गये हैं।

निघण्टु में छः काण्ड और ३९६ श्लोक हैं। इसमें सभी वनस्पतियों के नाम दिये गये हैं। इसके वृक्ष, गुल्म, लता, शाक, तृण और धान्य ये छः काण्ड हैं। वैद्यक शास्त्र के लिए इस कोश की अत्यधिक उपयोगिता है।

देशीनाममाला में ३९७८ देशी शब्दों का संकलन किया गया है। इस कोश के आधार पर आधुनिक भाषाओं के शब्दों की साङ्गोपाङ्ग आत्मकहानी लिखी जा सकती है। इस कोश में उदाहरण के रूप में आयी हुई गाथाएँ साहित्यिक दृष्टि से अमूल्य हैं। सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से भी इस कोश का बहुत बड़ा मूल्य है। इसमें संकलित शब्दों से बारहवीं शती की अनेक सांस्कृतिक परम्पराओं को अवगत किया जा सकता है।

अभिधानचिन्तामणि

संस्कृत के पर्यायवाची शब्दों की जानकारी के लिए इस कोश का महत्त्व अमरकोश की अपेक्षा भी अधिक है। इसमें समानार्थक शब्दों का संग्रह किया

गया है। इस पद्यमय कोश में कुल छः काण्ड हैं। प्रथम देवाधिदेव नाम के काण्ड में ८६ पद्य हैं, द्वितीय देवकाण्ड में २५० पद्य, तृतीय मर्त्यकांड में ५९८ पद्य, चतुर्थ भूमिकाण्ड में ४२३ पद्य, पञ्चम नारककाण्ड में ७ पद्य एवं षष्ठ सामान्य काण्ड में १७८ पद्य हैं। इस प्रकार इस कोश में कुल १५४२ पद्य हैं। हेमचन्द्र ने आरम्भ में ही रूढ़, यौगिक और मिश्र शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखने की प्रतिज्ञा इस तरह की है—

व्युत्पत्तिरहिताः शब्दा रूढा आखण्डलादयः।
योगोऽन्वयः स तु गुणक्रियासम्बन्धसम्भवः॥
गुणतो नीलकण्ठाद्याः क्रियातः स्रष्टृसन्निभाः।
स्वस्वामित्वादिसम्बन्धस्तत्राहुर्नाम तद्वताम्॥ (अ० चि० १।२-३)

व्युत्पत्ति से रहित—प्रकृति तथा प्रत्यय के विभाग करने से भी अन्वर्थहीन शब्दों को रूढ कहते हैं; जैसे आखण्डल आदि। यद्यपि कुछ आचार्य रूढ शब्दों की भी व्युत्पत्ति मानते हैं, पर उस व्युत्पत्ति का प्रयोजन केवल वर्णानुपूर्वी का विज्ञान कराना ही है, अन्वर्थ प्रतीति नहीं। अतः अभिधानचिन्तामणि में संग्रहीत शब्दों में प्रथम प्रकार के शब्द रूढ़ हैं।

हेम के द्वारा संग्रहीत दूसरे प्रकार के शब्द यौगिक हैं। शब्दों के परस्पर अर्थानुगम को अन्वय या योग कहते हैं और यह योग गुण, क्रिया तथा अन्य सम्बन्धों से उत्पन्न होता है। गुण के सम्बन्ध के कारण नीलकण्ठ, शितिकण्ठ, कालकण्ठ आदि शब्द ग्रहण किये गये हैं। क्रिया के सम्बन्ध से उत्पन्न होनेवाले शब्द स्रष्टा, धाता प्रभृति हैं। अन्य सम्बन्धों में प्रधान रूप से स्वस्वामित्व, जन्य-जनक, धार्य-धारक, भोज्य-भोजक, पति-कलत्र, सख्य, वाह्य-वाहक, ज्ञातेय, आश्रय-आश्रयी एवं वध्य-वधक भाव सम्बन्ध ग्रहण किया गया है। स्ववाचक शब्दों में स्वामिवाचक शब्द या प्रत्यय जोड़ देने से स्व-स्वामिवाचक शब्द बन जाते हैं। स्वामिवाचक प्रत्ययों में मतुप्, इन्, अण्, अक् आदि प्रत्यय एवं शब्दों में पाल, भुज्, धन और नेतृ शब्द परिगणित हैं। यथा—भू + मतुप् = भूमान्, धन + इन् = धनी, शिव + अण् = शैवः, दण्ड + इक् = दाण्डिकः। इसी प्रकार भू + पालः = भूपालः, भू + पतिः = भूपतिः आदि। हेम ने उक्त प्रकार के सभी सम्बन्धों से निष्पन्न शब्दों को कोश में स्थान दिया है।

हेम ने मूल श्लोकों में जिन शब्दों का संग्रह किया है, उनके अतिरिक्त 'शेषाश्च'—कहकर कुछ अन्य शब्दों को—जो मूल श्लोकों में नहीं आ सके हैं—स्थान दिया है। इसके पश्चात् स्वोपज्ञ वृत्ति में भी छूटे हुए शब्दों को समेटने का

प्रयास किया है। इस प्रकार इस कोश में उस समय तक प्रचलित और साहित्य में व्यवहृत शब्दों को स्थान दिया गया है। यही कारण है कि यह कोश संस्कृत साहित्य में सर्वश्रेष्ठ है।

विशेषताएँ

अभिधानचिन्तामणि कोश अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। जिज्ञासुओं के लिए इसमें पर्यायवाची शब्दों का संकलनमात्र ही नहीं है, अपितु इसमें भाषा-सम्बन्धी बहुत ही महत्त्वपूर्ण सामग्री संकलित है। समाज और संस्कृति के विकास के साथ भाषा के अङ्ग और उपांगों में भी विकास होता है और भावाभिव्यञ्जना के लिए नये-नये शब्दों की आवश्यकता पड़ती है। कोश साहित्य का सबसे बड़ा कार्य यही होता है कि वह नवीन और प्राचीन सभी प्रकार के शब्दसमूह का रक्षण और पोषण प्रस्तुत करता है। हेम ने इस कोश में अधिक से अधिक शब्दों को स्थान तो दिया ही है, पर साथ ही नवीन और प्राचीन शब्दों का समन्वय भी उपस्थित किया है। अतः गुप्तकाल में भुक्ति (प्रान्त), विषय (जिला), युक्त (जिले का सर्वोच्च अधिकारी), विषयपति (जिलाधीश), शौल्किक (चुङ्गी विभाग का अध्यक्ष), गौल्मिक (जंगल विभाग का अध्यक्ष), बलाधिकृत (सेनाध्यक्ष), महाबलाधिकृत (फील्ड मार्शल) एवं अक्षपटलाधिपति (रेकार्डकीपर) आदि नये शब्द ग्रहण किये गये हैं। अभिधानचिन्तामणि कोश की निम्नलिखित विशेषताएँ दर्शनीय हैं—

इतिहास की दृष्टि से इस कोश का बड़ा महत्त्व है। आचार्य हेम ने इस ग्रन्थ की 'स्वोपज्ञवृत्ति' नामक टीका में अपने पूर्ववर्ती जिन ५६ ग्रन्थकारों तथा ३१ ग्रन्थों का उल्लेख किया है, उनके नाम स्वोपज्ञवृत्ति (भावनगर से प्रकाशित संस्करण) की पृष्ठ एवं पंक्तियों की संख्याओं के साथ यहाँ लिखा जाता है। उनमें ५६ ग्रन्थकारों के नाम तथा कोष्ठ में क्रमशः पृष्ठों तथा पंक्तियों की संख्याएँ हैं। यथा—अमर (५५–१७ तथा २१; ५६–२५,···)। अमरादि (२७६–२१, २९९–१४)। अलङ्कारकृत् (११२–१३)। आगमविद् (७०–१४)। उत्पल (७४–१४)। कात्य (५६–१०, ६१–८,···)। कामन्दकि (५५०।४)। कालिदास (४१३–२, ४४०–१६)। कौटल्य (७०–४, २९६–२,···)। कौशिक (१६६–१३, १७०–२८)। क्षीरस्वामी (३५०–९, ४६१–१७)। गौड (३६–२९, ५३–३,···)। चाणक्य (३९४–५)। चान्द्र (५२८–२५)। दन्तिल (१२१–२२, ५६३–३)।

दुर्ग (५७-२८, १७४-२७,···)। द्रमिल (१५१-७, २०९-२७)। धनपाल (१-५, ७६-२१,···)। धन्वन्तरि (१६६-२८, २५९-७)। नन्दी (५२-२३)। नारद (३५७-१८)। नैरुक्त (१६४-१८, १८६-६,···)। पदार्थविद् (२०८-२२)। पालकाप्य (४९५-२७)। पौराणिक (३७३-६)। प्राच्य (२८-२६, ५७-२८,···)। बुद्धिसागर (२४५-२५)। बौद्ध (१०१-१७)। भट्टतोत (२४-१७)। भट्टि (५९३-२३)। भरत (११७-९, १२४-२३,···)। भागुरि (६६-१४, ६८-२७,···)। भाष्यकार (६६-२३, ३४८-१३, ३८९-२६)। भोज (१५७-१७, १८८-२६,···)। मनु (६३-११, १९५-१३,···)। माघ (९२-१७)। मुनि (१७१-८, २५४-२०,···)। याज्ञवल्क्य (३३६-२, ४८३-२०)। याज्ञिक (१०३-९)। लौकिक (३७८-२३, ४३३-३)। लिङ्गानुशासनकृत् (५३६-२४)। वाग्भट (१६७-१)। वाचस्पति (१-६, २९-४,···)। वासुकि (१-५)। विश्वदत्त (४९-८)। वैजयन्तीकार (१३१-२३, १३३-१९,···)। वैद्य (१६६-२८, २५३-२३,···)। व्याडि (१-५, ३४-२२ और २५,···)। शाब्दिक (४३-७, १०२-७,···)। शाश्वत (६४-७, १०२-७,···)। श्रीहर्ष (११८-७), श्रुतिज्ञ (३३२-२७)। सभ्य (१३४-१, २५८-१२)। स्मार्त (२०९-१०, ३४७-२, ३५८-१०)। हलायुध (१४४-१५ और १६) तथा हृद्य (४५३।२७)।

अब पृष्ठ-पंक्ति-संख्याओं के साथ ३१ ग्रन्थों के नाम दिये जाते हैं—अमरकोश (८-५)। अमरटीका (४५-१३, ५५-१,···)। अमरमाला (४४०-३२)। अमरशेष (१५३-२०, ४५६-१५)। अर्थशास्त्र (२९७-२५, ३१६-२७)। आगम (२१८-१६)। चान्द्र (१५८-२६)। जैनसमय (८०- ६)। टीका (५७४-२४)। तर्क (५५०-५)। त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित (१३-९, ८०-७)। द्वयाश्रयमहाकाव्य (६१०-१८ और २५)। धनुर्वेद (३०९-१७, ३१०-८, ३११-७)। धातुपारायण (१-११, ६०९-५)। नाट्यशास्त्र (११७-६, १२२-१३, २४३-१७)। निघण्टु (४८४-३०)। पुराण (५६-२१, ७०-१५,···)। प्रमाणमीमांसा (५५५-२१)। भारत (३३८-१३, ३९०-२७)। महाभारत (८१-२३)। माला (६८-२७, २१८-२५,···)। योगशास्त्र (४४५-७)। लिङ्गानुशासन (८-४, १९३-१३, ६०९-११)। वामनपुराण (४६-२९, ८२-८,···)। विष्णुपुराण (६९-१९, ९३-१)। वेद (३५-२२)। वैजयन्ती (५७-३, १०९-१८,···)।

शाकटायन (२-१)। श्रुति (२८-२५, ३०-१८,···)। संहिता (९३-४, ९६-६) तथा स्मृति (३५-२७, ३६-७,···)।

भागुरि तथा व्याडि के सम्बन्ध में इस कोश से बड़ी जानकारी प्राप्त हो जाती है। जहां शब्दों के अर्थ में मतभेद उपस्थित होता है, वहाँ आचार्य हेम अन्य ग्रन्थ तथा ग्रन्थकारों के वचन उद्धृत कर उस मतभेद का स्पष्टीकरण करते हैं। उदाहरण के लिए गूंगे के नामों को उपस्थित किया जा सकता है। इन्होंने मूक तथा अवाक्—ये दो नाम गूंगे के लिखे हैं। 'शेषश्च' में मूक के लिए 'जड तथा कड' पर्याय भी बतलाये हैं। इसी प्रसङ्ग में मतभिन्नता बतलाते हुए "कलमूकस्त्ववाक्श्रुतिः। इति हलायुधः। अनेडोऽपि अवर्करोऽपि मूकः अनेडमूकः, 'अन्धो ह्यनेडमूकः स्यात्' इति हलायुधः 'अनेडमूकस्तु जडः। इति वैजयन्ती, 'शठो ह्यनेडमूकः स्यात्' इति भागुरिः[1]।" अर्थात् हलायुध के मत में अन्धे को 'अनेडमूक' कहा है, वैजयन्तीकार ने जड को 'अनेडमूक' कहा है और भागुरि ने शठ को अनेडमूक बतलाया है। इस प्रकार 'अनेडमूक' शब्द अनेकार्थक है। हेम ने गूंगे-बहरे के लिए 'अनेडमूक' शब्द को व्यवहृत किया है। इनके मत में 'एडमूक, अनेडमूक और अवाक्श्रुति'—ये तीन पर्याय गूंगे-बहरे के लिए आये हैं।

इस प्रकार इतिहास और तुलना की दृष्टि से इस कोश का बहुत अधिक मूल्य है। भाषा की जानकारी विभिन्न दृष्टियों से प्राप्त कराने में आये हुए विभिन्न ग्रन्थ और ग्रन्थकारों के वचन पूर्णतः क्षम हैं।

इस कोश की दूसरी विशेषता यह है कि आचार्य हेम ने भी धनंजय के समान शब्दयोग से अनेक पर्यायवाची शब्दों के बनाने का विधान किया है, किन्तु इस विधान में (कविरूढ्या ज्ञेयोदाहरणावली) के अनुसार उन्हीं शब्दों को ग्रहण किया है, जो कवि-सम्प्रदाय द्वारा प्रचलित और प्रयुक्त हैं। जैसे पतिवाचक शब्दों से कान्ता, प्रियतमा, वधू, प्रणयिनी एवं निभा शब्दों को या इनके समान अन्य शब्दों को जोड़ देने से पत्नी के नाम और कलत्र-वाचक शब्दों में वर, रमण, प्रणयी एवं प्रिय शब्दों को या इनके समान अन्य शब्दों को जोड़ देने से पतिवाचक शब्द बन जाते हैं। गौरी के पर्यायवाची बनाने के लिए शिव शब्द में उक्त शब्द जोड़ने पर शिवकान्ता, शिवप्रियतमा, शिववधू एवं शिवप्रणयिनी आदि शब्द बनते हैं। निभा का समानार्थक परिग्रह भी है, किन्तु जिस प्रकार शिवकान्ता शब्द ग्रहण किया जाता है, उस

---

१. अभि० चिन्ता० काण्ड ३ श्लोक १२ की स्वोपज्ञवृत्ति।

प्रकार शिवपरिग्रह नहीं। यतः कवि-सम्प्रदाय में यह शब्द ग्रहण नहीं किया गया है।

कलत्रवाची गौरी शब्द में वर, रमण, प्रभृति शब्द जोड़ने से गौरीवर, गौरीरमण, गौरीश आदि शिववाचक शब्द बनते हैं। जिस प्रकार गौरीवर शब्द शिव का वाचक है, उसी प्रकार गंगावर शब्द नहीं। यद्यपि कान्तावाची गङ्गा शब्द में वर शब्द जोड़कर पतिवाचक शब्द बन जाते हैं, तो भी कवि-सम्प्रदाय में इस शब्द की प्रसिद्धि नहीं होने से यह शिव के अर्थ में ग्राह्य नहीं है। हेमचन्द्र ने अपनी स्वोपज्ञवृत्ति में इन समस्त विशेषताओं को बतलाया है। अतः स्पष्ट है कि "कविरूढ्या ज्ञेयोदाहरणावली" सिद्धान्त वाक्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इससे कई सुन्दर निष्कर्ष निकलते हैं। आचार्य हेम की नयी सूझ-बूझ का भी पता चल जाता है। अतएव शिव के पर्याय कपाली के समानार्थक कपालपाल, कपालधन, कपालभुक्, कपालनेता एवं कपालपति जैसे अप्रयुक्त और अमान्य शब्दों के ग्रहण से भी रक्षा हो जाती है। व्याकरण द्वारा उक्त शब्दों की सिद्धि सर्वथा संभव है, पर कवियों की मान्यता के विपरीत होने से उक्त शब्दों को कपाली के स्थान पर ग्रहण नहीं किया जा सकता है।

भाषाविज्ञान की दृष्टि से यह कोश बड़ा मूल्यवान् है। आचार्य हेम ने इसमें जिन शब्दों का संकलन किया है, उनपर प्राकृत, अपभ्रंश एवं अन्य देशी भाषाओं के शब्दों का पूर्णतः प्रभाव लक्षित होता है। अनेक शब्द तो आधुनिक भारतीय भाषाओं में दिखलायी पड़ते हैं। कुछ ऐसे शब्द भी हैं, जो भाषाविज्ञान के समीकरण, विषमीकरण आदि सिद्धान्तों से प्रभावित हैं। उदाहरण के लिए यहाँ कुछ शब्दों को उद्धृत किया जाता है—

(१) पोलिका (३।६२)—गुजराती में पोणी, ब्रजभाषा में पोनी, भोजपुरी में पिउनी तथा हिन्दी में भी पिउनी।

(२) मोदको लड्डुकश्च (शेष ३।६४)—हिन्दी में लड्डू, गुजराती में लाडु, राजस्थानी में लाडू।

(३) चोटी (३।३३९)—हिन्दी में चोटी, गुजराती में चोणी, राजस्थानी में चोड़ी या चुणिका।

(४) समौ कन्दुकगेन्दुकौ (३।३५३)—हिन्दी में गेन्द, ब्रजभाषा में गेंद या गिंद।

(५) हेरिको गूढपुरुषः (३।३९७)—ब्रजभाषा में हेर या हेरना—देखना, गुजराती में हेर।

(६) तरवारि (३।४४६)—ब्रजभाषा में तरवार, राजस्थानी में तलवार तथा गुजराती में तरवार।

(७) जंगलो निर्जलः (४।१९)—ब्रजभाषा में जङ्गल, हिन्दी में जङ्गल।

(८) सुरुङ्गा तु सन्धिला स्याद् गूढमार्गो भुवोऽन्तरे (४।५१)—ब्रजभाषा, हिन्दी तथा गुजराती तीनों भाषाओं में सुरंग।

(९) निश्रेणी त्वधिरोहणी (४।७९)—ब्रजभाषा में नसेनी, गुजराती में नीसरणी।

(१०) चालनी तितउ (४।८४)—ब्रजभाषा, राजस्थानी और गुजराती में चालनी, हिन्दी में चलनी या छलनी।

(११) पेटा स्यान्मञ्जूषा (४।८१)—राजस्थानी में पेटी, गुजराती में पेटी, पेटो तथा ब्रजभाषा में पिटारी, पेटी।

इस कोश की चौथी विशेषता यह है कि इसमें अनेक ऐसे शब्द आये हैं, जो अन्य कोशों में नहीं मिलते। अमरकोश में सुन्दर के पर्यायवाची—सुन्दरम्, रुचिरम्, चारु, सुषमम्, साधु, शोभनम्, कान्तम्, मनोरमम्, रुच्यम्, मनोज्ञम्, मंजु, और मंजुलम् ये बारह शब्द आये हैं। हेम ने इसी सुन्दरम् के पर्यायवाची चारुः, हारिः, रुचिरम्, मनोहरम्, वल्गुः, कान्तम्, अभिरामम्, बन्धुरम्, वामम्, रुच्यम्, शुषमम्, शोभनम्, मंजुलम्, मंजुः, मनोरमम्, साधुः, रम्यम्, मनोरमम्, पेशलम्, हृद्यम्, काम्यम्, कमनीयम्, सौम्यम्, मधुरम् और प्रियम् ये २६ शब्द बतलाये हैं। इतना ही नहीं, हेम ने अपनी वृत्ति में 'लडह' देशी शब्द को भी सौन्दर्यवाची ग्रहण किया है। इस प्रकार आचार्य हेम ने एक ही शब्द के अनेक पर्यायवाची शब्दों को ग्रहण कर अपने इस कोश को खूब समृद्ध बनाया है। सैकड़ों ऐसे नवीन शब्द आये हैं, जिनका अन्यत्र पाया जाना संभव नहीं। यहाँ उदाहरण के रूप में कुछ शब्दों को उपस्थित किया जाता है—

जिसके वर्ण या पद लुप्त हों—जिसका पूरा-पूरा उच्चारण नहीं किया गया हो, उस वचन का नाम ग्रस्तम् और थूकसहित वचन का नाम अम्बूकृतम् आया है। शुभवाणी का नाम कल्या; हर्ष-क्रीड़ा से युक्त वचन के नाम चर्चरी, चर्मरी एवं निन्दापूर्वक उपालम्भयुक्त वचन का नाम परिभाषण आया है। जले हुए भात के लिए भिस्सटा और दग्धिका नाम आये हैं[1]। गेहूँ के आटे के लिए समिता (३।६६) और जौ के आटे के लिए चिक्कस (३।६६) नाम आये हैं। नाक की विभिन्न बनावट वाले व्यक्तियों के विभिन्न नामों का उल्लेख भी

१. ३ कांड अ० चि० ६० श्लो०

शब्द-संकलन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। चिपटी नाकवाले के नतनासिक, अवनाट, अवटीट और अवभ्रट; नुकीली नाकवाले के लिए खरणस; छोटी नाकवाले के लिए नःक्षुद्र, खुर के समान बड़ी नाकवाले के लिए खुरणस एवं ऊंची नाकवाले के लिए उन्नस शब्द संकलित किये गये हैं[1]।

पति-पुत्र से हीन स्त्री के लिए निर्वीरा (३।१९४); जिस स्त्री के दाढ़ी या मूंछ के बाल हों, उसको नरमालिनी (३।१९५); बड़ी शाली के लिए कुली (३।२१८), और छोटी शाली के लिए हाली, यन्त्रणी और केलिकुंचिका (३।२१९) नाम आये हैं। छोटी शाली के नामों को देखने से अवगत होता है कि उस समय में छोटी शाली के साथ हंसी-मजाक करने की प्रथा थी। साथ ही पत्नी की मृत्यु के पश्चात् छोटी शाली से विवाह भी किया जाता था। इसी कारण इसे केलिकुञ्चिका कहा गया है।

दाहिनी और बायीं आँखों के लिए पृथक्-पृथक् शब्द इसी कोश में आये हैं। दाहिनी आँख का नाम भानवोय और बायीं आँख का नाम सौम्य (३।२४०) कहा गया है। इसी प्रकार जीभ की मैल को कुलुकम् और दाँत की मैल को पिप्पिका (३।२९६) कहा गया है। मृगचर्म के पंखे का नाम धवित्रम् और कपड़े के पंखे का नाम त्रालावर्तम् (३।३५१–५२) आया है। नाव के बीचवाले डण्डों का नाम पोलिन्दा; ऊपर वाले भाग का नाम मङ्ग एवं नाव के भीतर जमे हुए पानी को बाहर फेंकनेवाले चमड़े के पात्र का नाम सेकपात्र या सेचन (३।५४२) बताया है। ये शब्द अपने भीतर सांस्कृतिक इतिहास भी समेटे हुए हैं। छप्पर छाने के लिए लगायी गयी लकड़ी का नाम गोपानसी (४।७५); जिसमें बांधकर मथानी घुमायी जाती है, उस खम्भे का नाम विष्कम्भ (४।८९); सिक्का आदि रूप में परिणत सोना-चाँदी, ताँबा आदि सब धातुओं का नाम रूप्यम्; मिश्रित सोना-चाँदी का नाम घनगोलक (४।११२–११३); कूँआ के ऊपर रस्सी बाँधने के लिए काष्ठ आदि की बनी हुई चरखी का नाम तन्त्रिका (४।१५७); घर के पास वाले बगीचे का नाम निष्कुट; गाँव या नगर के बाहर वाले बगीचे का नाम पौरक (४।१७८); क्रीड़ा के लिए बनाये गये बगीचे का नाम आक्रीड या उद्यान (४।१७८); राजाओं के अन्तःपुर के योग्य घिरे हुए बगीचे का नाम प्रमदवन (४।१७९); धनिकों के बगीचे का नाम पुष्पवाटी या वृक्षवाटी (४।१७९) एवं छोटे बगीचे का नाम क्षुद्राराम या प्रसीदिका (४।१७९) आया है। इसी प्रकार

१. अ० चि० ३ कांड ११५ श्लो०

मशाले, अंग-प्रत्यंग के नाम, मालाएँ, सेना के विभिन्न भाग, वृक्ष, लता, पशु, पक्षी एवं धान्य आदि के अनेक नवीन नाम आये हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से इस कोश का अत्यधिक मूल्य है। इसमें व्याकरण की विशिष्ट परिभाषा बतलाते हुए लिखा है—

प्रकृतिप्रत्ययोपाधिनिपातादिविभागशः।
यदान्वाख्यानकरणं शास्त्रं व्याकरणं विदुः॥

—२।१६४ की स्वोपज्ञवृत्ति

अर्थात्—प्रकृति-प्रत्यय के विभाग द्वारा पदों का अन्वाख्यान करना व्याकरण है। व्याकरण द्वारा शब्दों की व्युत्पत्ति स्पष्ट की जाती है। व्याकरण के सूत्र संज्ञा, परिभाषा, विधि, निषेध, नियम, अतिदेश एवं अधिकार इन सात भागों में विभक्त हैं। प्रत्येक सूत्र के पदच्छेद, विभक्ति, समास, अर्थ, उदाहरण और सिद्धि ये छः अङ्ग होते हैं।

इसी प्रकार वार्तिक (२।१७०), टीका, पञ्जिका (२।१७०), निबन्ध, संग्रह, परिशिष्ट (२।१७१), कारिका, कलिन्दिका, निघण्टु (२।१७२), इतिहास, प्रहेलिका, किंवदन्ती, वार्ता (२।१७३), आदि की व्याख्याएँ और परिभाषाएँ प्रस्तुत की गयी हैं। इन परिभाषाओं से साहित्य के अनेक सिद्धान्तों पर प्रकाश पड़ता है।

प्राचीन भारत में प्रसाधन के कितने प्रकार प्रचलित थे, यह इस कोश से भलीभाँति जाना जा सकता है। शरीर को संस्कृत करने को परिकर्म (३।२९९), उबटन लगाने को उत्सादन (३।२९९), कस्तूरी-कुंकुम का लेप लगाने को अङ्गराग, चन्दन, अगर, कस्तूरी और कुंकुम के मिश्रण को चतुःसमम्; कर्पूर, अगर, कंकोल, कस्तूरी और चन्दनद्रव को मिश्रित कर बनाये गये लेप-विशेष को यक्षकर्दम एवं शरीर-संस्कारार्थ लगाये जानेवाले लेप का नाम वर्ति या गात्रानुलेपनी कहा गया है। मस्तक पर धारण की जानेवाली फूल की माला का नाम माल्यम्; बालों के बीच में स्थापित फूल की माला का नाम गर्भका; चोटी में लटकनेवाली फूलों की माला का नाम प्रभ्रष्टकम्, सामने लटकती हुई पुष्पमाला का नाम ललामकम्, छाती पर तिर्छी लटकती हुई पुष्पमाला का नाम वैकक्ष्यम्, कण्ठ से छाती पर सीधे लटकती हुई फूलों की माला का नाम प्रालम्बम्, शिर पर लपेटी हुई माला का नाम आपीड, कान पर लटकती हुई माला का नाम अवतंस एवं स्त्रियों के जूड़े में लगी हुई

माला का नाम वालपाश्या आया है[१]। इसी प्रकार कान, कण्ठ, गर्दन, हाथ, पैर, कमर आदि विभिन्न अङ्गों में धारण किये जानेवाले आभूषणों के अनेक नाम आये हैं। इन नामों से अवगत होता है कि आभूषण धारण करने की प्रथा प्राचीन समय में कितनी अधिक थी। मोती की सौ, एक हजार आठ, एक सौ आठ, पाँच सौ चौअन, चौअन, बत्तीस, सोलह, आठ, चार, दो, पाँच एवं चौसठ आदि विभिन्न प्रकार की लड़ियों की माला के विभिन्न नाम आये हैं। वस्त्रों में विभिन्न अङ्गों पर धारण किये जानेवाले रेशमी, सूती एवं ऊनी कपड़ों के अनेक नाम आये हैं[२]। संस्कृति और सभ्यता की दृष्टि से यह प्रकरण बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

विभिन्न वस्तुओं के व्यापारियों के नाम तथा व्यापार योग्य अनेक वस्तुओं के नाम भी इस कोश में संग्रहीत हैं। प्राचीन समय में मद्य—शराब बनाने की अनेक विधियाँ प्रचलित थीं। इस कोश में शहद मिलाकर तैयार किये गये मद्य को मध्वासव, गुड़ से बने मद्य को मैरेय, चावल उबाल कर तैयार किये गये मद्य को नग्नहू कहा गया है[३]।

गायों के नामों में बकेना गाय का नाम वष्कयणी, थोड़े दिन की ब्यायी गाय का नाम धेनु, अनेक बार ब्यायी गाय का नाम परेष्टु, एक बार ब्यायी गाय का नाम गृष्टि, गर्भग्रहणार्थ वृषभ के साथ संभोग की इच्छा करनेवाली गाय का नाम काल्या, सरलता से दूध देनेवाली गाय का नाम सुव्रता, बड़ी कठिनाई से दूही जानेवाली गाय का नाम करटा, बहुत दूध देनेवाली गाय का नाम वञ्जुला, एक द्रोण—आधा मन दूध देनेवाली गाय का नाम द्रोणदुग्धा, मोटे स्तनों वाली गाय का नाम पीनोघ्नी, बन्धक रखी हुई गाय का नाम धेनुष्या, उत्तम गाय का नाम नैचिकी, बचपन में गर्भधारण की हुई गाय का नाम पलिक्नी, प्रत्येक वर्ष में ब्यानेवाली गाय का नाम समांसमीना, सीधी गाय का नाम सुकरा, एवं स्नेह से वत्स को चाहनेवाली गाय का नाम वत्सला आया है। गायों के इन नामों को देखने से स्पष्ट अवगत होता है कि उस समय गोसम्पत्ति बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी[४]।

विभिन्न प्रकार के घोड़े के नामों से भी ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत में कितने प्रकार के घोड़े काम में लाये जाते थे। सुशिक्षित घोड़े को साधुवाही,

---

१ देखें—कांड ३ श्लोक ३१४-३२१

२ देखें—काण्ड ३ श्लो० ३२२-३४०

३ देखें—का० ३ श्लो० ५६४-५६९

४ देखें—का० ४ श्लो० ३३३-३३७

दुष्ट शिक्षित घोड़े को शूकल, कोड़ा मारने योग्य घोड़े को कश्य, छाती तथा मुख पर बालों की भौंरीवाले घोड़े को श्रीवृत्तकी; हृदय, पीठ, मुख तथा दोनों पार्श्व भागों में श्वेत चिह्नवाले घोड़े को पञ्चभद्र, श्वेत घोड़े को कर्क, पिंगल वर्ण घोड़े को खोङ्गाह, दूध के समान रंगवाले घोड़े को सेराह, पीले घोड़े को हरिय, काले घोड़े को खुङ्गाह, लाल घोड़े को क्रियाह, नीले घोड़े को नीलक, गधे के रङ्गवाले घोड़े को सुरूहक, पाटल वर्ण के घोड़े को वोरुखान, कुछ पीले वर्णवाले तथा काले घुटनेवाले को कुलाह, पीले तथा लाल वर्णवाले को उकनाह, कोकनद के समान वर्णवाले को शोण, सब्ज वर्ण के घोड़े को हरिक, कांच के समान श्वेत वर्ण के घोड़े को पङ्गुल, चितकबरे घोड़े को हलाह और अश्वमेध के घोड़े को ययु कहा गया है[1]।

इतना ही नहीं घोड़े की विभिन्न चालों के विभिन्न नाम आये हैं। स्पष्ट है कि घोड़ों को अनेक प्रकार की चालें सिखलायी जाती थीं।

अभिधानचिन्तामणि की स्वोपज्ञवृत्ति में अनेक प्राचीन आचार्यों के प्रमाण वचन तो उद्धृत हैं ही, पर साथ ही अनेक शब्दोंकी ऐसी व्युत्पत्तियाँ भी उपस्थित की गयी हैं, जिनसे उन शब्दों की आत्मकथा लिखी जा सकती है। शब्दों में अर्थ परिवर्तन किस प्रकार होता रहा है तथा अर्थविकास की दिशा कौन सी रही है, यह भी वृत्ति से स्पष्ट है। वृत्ति में व्याकरण के सूत्र उद्धृत कर शब्दों का साधुत्व भी बतलाया गया है। यथा—

भाष्यते भाषा (क्तेटो गुरोर्व्यञ्जनात् इत्यः, ५।३।१०६)। —२।११५

वण्यते वाणी ('कमिवमि–' उणा० ६१८) इति णिः। ङ्यां वाणी।

—२।११५

श्रूयते श्रुतिः (श्र्वादिभ्यः ५।३।९२) इति क्तिः। —२।१६२

सुष्ठु आ समन्तात् अधीयते स्वाध्यायः (इङोऽपदाने तु टिद्वा ५।३।१९) इति घञ्। —२।१६३

अवति विघ्नाद् ओम् अव्ययम् (अवेर्मः—उणा० ९३३) इति मः, ओमेव ओङ्कारः—(वर्णव्ययात् स्वरूपेकारः ७।२।१५६) इति कारः —२।१६४

प्रस्तूयते प्रस्तावः—(प्रात् स्नुद्रुस्तोः ५।३।६७) इति घञ् —२।१६८

न श्रियं लाति—अश्लीलम्—न श्रीरस्यास्तीति वा, सिध्मादित्वात् ले ऋफिडादित्वात् रस्य लः। —२।१८०

---

१ देखें—का० ४ श्लो० ३०१-३०९

समुखं लपनं संलापः, सम्मुखं कथनं संकथा (भीषिभूषि—५।३।१०९) इत्यङ् । —२।१८९

मन्यते अनया मतिः अर्थनिश्चयः, बुध्यते अनया बुद्धिः, ध्यायति दधाति वा धीः ('दिद्युत्–' ५।२।८३) इति क्विबन्तो निपात्यते । धृष्णोत्यनया धिषणा (धृषिवहेरिश्चोपान्त्यस्य; उणा० १८९) इत्यणः । —२।२२२

तत्त्वानुगामिनी मतिः, पण्यते स्तूयते पण्डा (पञ्चमाड्डः, उणा० १६८) इति डः । —२।२२४

नियतं द्रान्तीन्द्रियाणि अस्यां निद्रा, प्रमीलन्तीन्द्रियाण्यस्यां प्रमीला —२।२२७

पण्डते जानाति इति पण्डितः, पण्डा बुद्धिः संजाता अस्येति वा तारकादित्वादितः पण्डितः । —३।५

छ्यति छिनत्ति मूर्खदुष्टचित्तानि इति छेकः (निष्कतुरुष्क–उणा० २६) इति कान्तो निपात्यते । विशेषेण मूर्खचित्तं दहति इति विदग्धः —३।७

वाति गच्छति नरं वामा ('अकर्तरि–' उणा० ३३८) इति मः, यद्वा वामा विपरीतलक्षणया; शृङ्गारिखेदनाद्वा । —३।१६८

विगतो धवो भर्ता अस्याः विधवा —३।१९४

दधते बलिष्ठतां दधि……, ('पदिपठि–' उणा० ६०७) इति इः ।—३।७०

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि शब्दों की व्युत्पत्तियाँ कितनी सार्थक प्रस्तुत की गयी हैं । अतः स्वोपज्ञवृत्ति भाषा के अध्ययन के लिए बहुत आवश्यक है । शब्दों की निरुक्ति के साथ उनकी साधनिका भी अपना विशेष महत्त्व रखती है ।

प्रस्तुत हिन्दी संस्करण—

यह हिन्दी संस्करण भावनगर संस्करण के आधार पर प्रस्तुत किया गया है । इसमें मूल श्लोकों के अनुवाद के साथ स्वोपज्ञवृत्ति में आये हुए शब्दों का भी हिन्दी अनुवाद दिया गया है । अनुवादक और सम्पादक श्रीमान् पं० हरगोविन्द शास्त्री, व्याकरण-साहित्याचार्य हैं । आपने शब्दों की प्रातिपदिक अवस्था का भी निर्देश किया है । आवश्यकतानुसार विशेष शब्दों का लिङ्गादि निर्णय, विमर्श द्वारा गूढ़ स्थलों का स्पष्टीकरण, स्थल-स्थल पर टिप्पणी देकर विषय की सम्पुष्टि एवं शेषस्थ तथा स्वोपज्ञवृत्ति पर आधृत शब्दों के अतिरिक्त यौगिक और अन्यान्य शब्दों का अनुवाद में समावेश कर दिया है । सभी प्रकार के शब्दों की अकारादि क्रमानुसार अनुक्रमणिका एवं विषय-सूची आदि

के रहने से ग्रन्थ और अधिक उपयोगी बन गया है। इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी के भाण्डार की इस कोश द्वारा प्रचुर समृद्धि हुई है।

श्री पं० हरगोविन्दजी शास्त्री अनुभवी एवं सुयोग्य विद्वान् हैं। अब तक आपने अमरकोष, नैषधचरित, शिशुपालवध, मनुस्मृति एवं रघुवंश आदि ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद किया है। आपकी प्रतिभा का स्पर्श पा यह अनुपम ग्रन्थ सर्व-साधारण के लिए सुपाठ्य बना है। मैं उनके इस अथोर परिश्रम के लिए उन्हें साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि आपके द्वारा माँ भारती का भाण्डार अहर्निश वृद्धिङ्गत होता रहेगा।

इस ग्रन्थ के प्रकाशक लब्धप्रतिष्ठ श्री जयकृष्णदास हरिदास गुप्त, अध्यक्ष— चौखम्बा संस्कृत सीरीज तथा चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी हैं। अब तक इस संस्था द्वारा लगभग एक सहस्र संस्कृत-ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है। इस उपयोगी कृति के प्रकाशन के लिए मैं उन्हें भी साधुवाद देता हूँ। साथ ही मेरा इतना विनम्र अनुरोध है कि अगले संस्करण में स्वोपज्ञवृत्ति को अविकल रूप से स्थान देना चाहिए। इस वृत्ति का अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण स्थान है। विद्वानों और जिज्ञासुओं के लिए वृत्ति में ऐसी प्रचुर सामग्री है, जिसका उपयोग शोध के विभिन्न क्षेत्रों में किया जा सकता है।

इस संस्करण को शिक्षण संस्थाओं, पुस्तकालयों, छात्रों एवं अध्यापकों के बीच पर्याप्त आदर प्राप्त होगा।

विजयादशमी
२०२० वि० सं०

—नेमिचन्द्र शास्त्री

आमुख

"एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति ।"
इस वचनके अनुसार सम्यक् प्रकारसे ज्ञात एवं प्रयुक्त शब्द उभय-लोकमें मनोवाञ्छित फल देनेवाला होता है, क्योंकि विश्वके हस्तामलक-वत् प्रत्यक्षद्रष्टा हमारे आचार्योंने 'शब्द'को साक्षात् ब्रह्म कहा है और प्राणियोंने शब्द अथवा अनाहत नादरूपमें ही ब्रह्मका साक्षात्कार किया है, अतएव शब्दके सम्यग्ज्ञान और अनुभवकी महत्ता सुतरां सिद्ध हो जाती है। शब्दप्रयोगके विना अपने मनोगत अभिप्रायको दूसरे व्यक्ति-से कोई भी मनुष्य व्यक्त नहीं कर सकता और वैसे व्यक्त, व्युत्पन्न एवं सार्थक शब्दके प्रयोगकी क्षमता एकमात्र मानवमें ही है, पशु-पक्षी आदि अन्य प्राणियों में नहीं। यद्यपि आचार्यों ने—

"शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोषाप्तवाक्याद्व्यवहारतश्च ।
वाक्यस्य शेषाद्विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः ॥"

इस वचनके द्वारा व्याकरण, उपमान, कोष, आप्तवाक्य, व्यवहार आदिको व्युत्पन्न शब्दका शक्तिग्राहक बतलाया है; तो भी उनमें व्याकरण एवं कोष ही मुख्य हैं। इनमें भी व्याकरणके प्रकृति-प्रत्यय-विश्लेषण-द्वारा प्रायः यौगिक शब्दोंका ही शक्तिग्राहक होनेसे सर्वविध (रूढ, यौगिक तथा योगरूढ) शब्दोंका पूर्णतया अबाध ज्ञान कोश-द्वारा ही हो सकता है। भगवान्-पतञ्जलिने कहा है—

"एवं हि श्रूयते—बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच, नान्तं जगाम। बृहस्पतिश्च प्रवक्ता, इन्द्रश्चाध्येता, दिव्यं वर्षसहस्रमध्ययनकाल; न चान्तं जगाम, किं पुनर-द्यत्वे! यः सर्वथा चिरं जीवति, वर्षशतं जीवति।" (महाभाष्य, पस्पशाह्निक)

इस तथ्य की पुष्टि अनुभूतिस्वरूपाचार्य के निम्नोक्त पद्य से भी होती है—

"इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं न ययुः शब्दवारिधेः ।
प्रक्रियान्तस्य कृत्स्नस्य क्षमो वक्तुं नरः कथम् ॥"

अमरगुरु बृहस्पति–जैसे गुरु तथा अमरराज इन्द्र–जैसे शिष्य, दिव्य सहस्र वर्ष (३६०००० मानव वर्ष) आयु होनेपर भी जिस शब्द-सागरके पारगामी न हो सके, उस शब्द-सागरका पारङ्गत होना अधिक-से-अधिक १०० वर्ष परिमित आयुवाले वर्तमानकालिक मानवके लिए किस प्रकार सम्भव है ? हाँ, पूर्वकालमें योगबल-द्वारा सम्यग्ज्ञान-सम्पन्न, साक्षात् मन्त्रद्रष्टा महामहिम महर्षिगण उक्त शब्द-सागरके पारगामी अवश्य होते थे, किन्तु परिवर्तनशील संसारमें काल-चक्रके चलते उक्त योगबलके साथ ही साक्षात्-मन्त्रद्रष्टृत्व शक्तिका भी ह्रास होने लगा। फलतः वैसे साक्षात् मन्त्रद्रष्टा महर्षियोंका सर्वथा अभाव होने-से भगवान् कश्यप मुनिने वैदिक मन्त्रार्थज्ञानके लिए सर्वप्रथम 'निघण्टु' नामक कोषकी रचना की। परन्तु कालचक्रके अबाध गतिसे उसी प्रकार चलते रहनेसे योगबलका और भी अधिक ह्रास हुआ और उक्त 'निघण्टु'-के भी समझनेवालोंका अभाव देखकर 'यास्क' मुनिने 'निरुक्त' नामक कोषकी रचना की। जिस प्रकार अग्नि-निर्गत ज्वालाको अग्नि ही माना जाता है, उसी प्रकार वेदनिर्गत उक्त कोषद्वयको भी वेद ही माना गया है।

लौकिक कोषोंकी परम्परा

ज्ञान-ह्रासक कालचक्रके अबाध रूपसे चलते रहनेसे लौकिक शब्दों-के भी ज्ञाताओंका ह्रास हो जानेपर आचार्योंने लौकिक कोषोंका निर्माण किया। इनमें सर्वप्रथम किस लौकिक कोषका किस आचार्यने निर्माण किया, इसका वास्तविक ज्ञान आजतक अन्धकारमें ही पड़ा है, क्योंकि १२ वीं शताब्दीमें रचित 'शब्दकल्पद्रुम' नामक कोषमें २६ कोषकारोंके नाम उपलब्ध होते हैं। प्रायः सौ वर्षोंसे दुर्लभ एवं सार्वजनीन संस्कृत ग्रन्थोंके मुद्रण-प्रकाशन-द्वारा अमरवाणी-साहित्यकी सेवामें सतत संलग्न रहनेसे भारतमें ही नहीं, अपितु विदेशोंतकमें ख्यातिप्राप्त 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी' ने चिरकालसे दुष्प्राप्य उक्त शब्दकल्पद्रुम तथा वाचस्पत्यम् नामक महान् ग्रन्थरत्नोंका प्रकाशन, गतवर्ष ही किया है। 'शब्दकल्पद्रुम'में मिलनेवाले कात्यायन, साहसाङ्क, उत्पलिनी आदि कोषग्रन्थ यद्यपि वर्तमानकालमें सर्वथा अनुपलभ्य हैं, तथापि उनके परम्परोपलब्ध वचन परवर्ती टीकाकारोंके आजतक उपजीव्य हो रहे हैं। विशेष जिज्ञासुओंको इस ग्रन्थकी विस्तृत प्रस्तावनासे कोषग्रन्थोंकी परम्पराका ज्ञान करना चाहिए।

अमरकोष तथा अभिधानचिन्तामणि

वर्तमान कालमें उपलब्ध होनेवाले संस्कृत कोषग्रन्थोंमें अमरकोषके ही सर्वाधिक जनप्रिय होनेसे उसीके साथ तुलनात्मक विवेचनकर प्रस्तुत ग्रन्थकी महत्ता बतलायी जाती है। इस अभिधानचिन्तामणिकी कुल श्लोकसंख्या १५४२ है, जो प्रायः अमरकोषकी श्लोकसंख्याके बराबर ही है; फिर भी अमरकोषमें कहे गये नाम और उनके पर्यायोंकी अपेक्षा प्रकृत ग्रन्थमें उन्हीं नामोंके पर्याय अत्यधिक संख्या—कहीं-कहीं तो दुगुनीतक—में दिये गये हैं। दिग्दर्शनार्थ कुछ उदाहरण यहाँ दिये जाते हैं। यथा—

क्रमाङ्क	नाम	अ० को० की पर्यायसंख्या	अ० चि० की पर्यायसंख्या
१	सूर्य	३७	७२
२	किरण	११	३६
३	चन्द्र	२०	३२
४	शिव	४८	७७
५	गौरी	१७	३२
६	ब्रह्मा	२०	४०
७	विष्णु	३९	७५
८	अग्नि	३४	५१

उपरिलिखित नामोंके पर्यायोंमें यदि अभिधानचिन्तामणिकी स्वोपज्ञ वृत्तिमें कथित पर्यायसंख्या जोड़ दी जाय तो उक्त संख्या कहीं-कहीं अमरकोषसे तिगुनी-चौगुनीतक पहुँच जायेगी।

इसी प्रकार अमरकोषमें अवर्णित चक्रवर्तियों, अर्धचक्रवर्तियों, उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी कालके तीर्थङ्करों एवं उनके माता, पिता, वर्ण, चिह्न और वंश आदिका भी साङ्गोपाङ्ग वर्णन प्रस्तुत ग्रन्थमें किया गया है।

इसके अतिरिक्त जब कि अमरकोषमें अत्यल्प-संख्यक नदियों, पर्वतों, नगर-शाखानगरों, भोज्य पदार्थोंके पर्यायोंका वर्णन किया गया है; वहाँ अभिधानचिन्तामणिमें लगभग एक दर्जन नदियों; उदयाचल, अस्ताचल, हिमालय, विन्ध्य आदि डेढ़ दर्जन पर्वतों; गया, काशी आदि सप्तपुरियोंके साथ कान्यकुब्ज, मिथिला, निषधा, विदर्भ आदि लगभग डेढ़ दर्जन देशों, वाल्मीकि, व्यास, याज्ञवल्क्य आदि ग्रन्थकार महर्षियों, अश्विन्यादि सत्ताइस नक्षत्रों और साङ्गोपाङ्ग गृहावयवोंके साथ बर्तनों; सेव, घेवर, लड्डू आदि

विविध भोज्य पदार्थों तथा हाट-बाजार आदि-आदि अनेक नामोंके पर्याय दिये हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थकी महत्त्वपूर्ण विशिष्टता यह है कि ग्रन्थकारोक्त शैलीके अनुसार कविरूढिप्रसिद्ध शतशः यौगिक पर्यायोंकी रचना करके पर्याप्त संख्यामें पर्याय बनाये जा सकते हैं; किन्तु अमरकोषमें उक्त या अन्य किसी भी शैलीसे पर्याय-निर्माणकी चर्चातक नहीं की गयी है।

उपरिनिर्दिष्ट विवेचनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि अमरकोषादि ग्रन्थोंकी अपेक्षा प्रस्तुत 'अभिधानचिन्तामणि' ही श्रेष्ठतम संस्कृत कोष है। अतएव यह कथन ध्रुव सत्य है कि आचार्य हेमचन्द्र सूरिने इस ग्रन्थकी रचना कर संस्कृत-साहित्यके शब्द-भाण्डारकी प्रचुर परिमाणमें वृद्धिकी है।

काशीनरेश हि. हा. स्वर्गीय श्रीप्रभुनारायणसिंहके राजपण्डित मेरे सम्बन्धी स्व० प० द्वारकाधीश मिश्रजीके भ्रातृज स्व० प० रूपनारायण मिश्र (बच्चा पण्डित) जीसे कुछ अन्य पुस्तकोंके साथ हस्तलिखित अभिधानचिन्तामणिकी एक प्रति तथा मैथिल विद्याकर मिश्र[1] प्रणीत हेमचन्द्र सूची[2] प्राप्त हुई।

उसे आद्यन्त अध्ययन करनेके बाद मैंने अमरकोषकी संक्षिप्त माहेश्वरी व्याख्याके ढङ्गपर एक व्याख्या लिखी, किन्तु उक्त व्याख्यासे पूर्णतः सन्तोष नहीं होनेसे मैं उक्त ग्रन्थकी विस्तृत संस्कृत व्याख्याकी खोजमें लगा, 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज' (वाराणसी) के व्यवस्थापक श्रीमान् बाबू कृष्णदासजी गुप्तसे पता चलनेपर भावनगरमें मुद्रित स्वोपज्ञवृत्ति सहित प्रति मँगवाई और उसी वृत्तिके आधारपर इस 'मणिप्रभा' नामकी टीकाको राष्ट्रभाषामें पुनः तैयार किया। साथ ही इस ग्रन्थकी स्वोपज्ञ-वृत्तिमें लगभग डेढ़ सहस्रसे अधिक पर्यायोंके निर्देशक 'शेष'स्थ श्लोकोंको भी यथास्थान सन्निविष्ट कर दिया, उक्त वृत्तिमें आये हुए मूलग्रन्थोक्त पर्यायोंके अतिरिक्त यौगिक पर्यायोंके साथ ही अन्याचार्यसम्मत अन्यान्य बहुत-से पर्याय शब्दोंका भी समावेश कर दिया एवं क्लिष्ट विषयोंको विमर्श और टिप्पणीके द्वारा अधिक सुस्पष्ट एवं सुबोध्य बना दिया।

---

१ "समाप्तेयं हेमचन्द्र-सूची मैथिलश्रीविद्याकरमिश्रप्रणीता।" हेमचन्द्र-सूचीके अन्तमें ऐसी 'पुष्पिका' लिखी हुई है।

२ उक्त सूचीमें "जिनस्य २५ अर्हदादि २४ श्लो०, वृत्तार्हतामेकैकं २४ ऋषभेति २६ श्लो०" इत्यादि रूपमें किस अभिधान (नाम) के किस शब्दसे आरम्भ कर कितने पर्याय हैं, यह काण्ड तथा श्लोकसंख्याके साथ लिखा गया है।

कोई भी पर्याय पाठकोंको सुविधाके साथ शीघ्र मिल जाय, इसके लिए ग्रन्थान्तमें त्रिविध (मूलग्रन्थस्थ, शेषस्थ तथा मणिप्रभा-विमर्श-टिप्पणीस्थ) शब्दोंकी अकारादि क्रमसे सूची भी दे दी गयी है। मूलग्रन्थमें विस्तारके साथ कहे गये आशयोंके संक्षेपमें एक जगह ही ज्ञात होनेके लिए आवश्यकतानुसार यथास्थान चक्र भी दिये गये हैं। इस प्रकार प्रकृत ग्रन्थको सब प्रकारसे सुबोध्य एवं सरल बनानेके लिए भरपूर प्रयत्न किया गया है।

आभारप्रदर्शन

इस ग्रन्थकी विस्तृत एवं खोजपूर्ण प्रस्तावना लिखनेकी जो महती कृपा मेरे चिरमित्र, अनेक ग्रन्थोंके लेखक डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री (ज्यौ० आचार्य, एम० ए० (संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी), पी० एच० डी०, अध्यक्ष संस्कृत प्राकृत विभाग हरदास जैन कॉलेज आरा) ने की है; तदर्थ उन्हें मैं कोटिशः धन्यवादपूर्वक शुभाशीः प्रदान करता हूँ कि वे सपरिवार सानन्द, सुखी, एवं चिरजीवी होकर उत्तरोत्तर उन्नति करते हुए इसी प्रकार संस्कृत साहित्यकी सेवामें संलग्न रहें। साथ ही जिन विद्वानों एवं मित्रोंने इस ग्रन्थकी रचनामें जो साहाय्य किया है, उन सबका भी आभार मानता हुआ उन्हें भूरिशः धन्यवाद देता हूँ।

पूर्ण निष्ठाके साथ संस्कृत साहित्यके सेवार्थ दुर्लभ तथा दुर्बोध्य ग्रन्थोंको ख्यातिप्राप्त विद्वानोंके सहयोगसे सुलभ एवं सुबोध्य बनाकर प्रकाशन करनेवाले 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज, तथा चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी' के व्यवस्थापक महोदयने वर्तमानमें शताधिक ग्रन्थोंका मुद्रण कार्य चलते रहनेसे अत्यधिक व्यस्त रहनेपर भी चिरकालसे दुर्लभ इस ग्रन्थके प्रकाशनद्वारा इसे सर्वसुलभ बनाकर संस्कृत साहित्यकी सेवामें जो एक कड़ी और जोड़ दी है; तदर्थ उनका बहुत-बहुत आभार मानता हुआ उन्हें शुभाशीःप्रदानपूर्वक भूरिशः धन्यवाद देता हूँ।

अन्तमें माननीय विद्वानों, अध्यापकों तथा स्नेहास्पद छात्रोंसे मेरा विनम्र निवेदन है कि मेरे द्वारा अनूदित अमरकोष, नैषधचरित, शिशुपाल-वध, रघुवंश तथा मनुस्मृति आदि ग्रन्थोंको अद्यावधि अपनाकर संस्कृत-साहित्य-सेवार्थ मुझे जिस प्रकार उन्होंने उत्साहित किया है; उसी प्रकार इसे भी अपनाकर आगे भी उत्साहित करनेकी असीम अनुकम्पा करते रहेंगे।

मुझे दूरस्थ रहने, शीशेके टाइपोंके सूक्ष्मतम होने तथा लेखन-संशोधनादिमें मानव-सुलभ दोष रह जाना असम्भव नहीं होनेसे नव-मुद्रित इस ग्रन्थमें त्रुटिका सर्वथा अभाव कहनेका साहस तो नहीं ही किया जा सकता, अतएव इस ग्रन्थमें यदि कहीं कोई त्रुटि दृष्टिगोचर हो तो उसके लिए कृपालु पाठकोंसे करबद्ध प्रार्थनाके साथ क्षमायाचना करता हुआ आशा करता हूँ कि वे—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥

इस सूक्तिको ध्यानमें रखकर मुझे अवश्यमेव क्षमा-प्रदान करनेकी सहज अनुकम्पा करेंगे । इति शम् ।

विजयादशमी,
वि० सं० २०२०

विबुध-सेवक :—
हरगोविन्द मिश्र, शास्त्री

साङ्केतिक चिह्न तथा शब्द के विवरण

(क) मूल के सङ्केत—

मूल श्लोकों के पहले या मध्य में आये हुए अङ्क नीचे लिखी गयी 'मणि-प्रभा' व्याख्या के प्रतीक हैं। एवं श्लोकान्त में आये हुए अङ्क श्लोकों के क्रमसूचक हैं।

(ख) टीका तथा टिप्पणी के संकेत—

( ) इस कोष्ठक के अन्तर्गत –, = ये दो चिह्न मूल शब्दों के प्रातिपदिकावस्था के रूप को सूचित करते हैं। प्रथमोदाहरण—"लक्ष्म (–क्ष्मन्)" इससे ज्ञात होता है कि प्रातिपदिकावस्था में 'लक्ष्मन्' शब्द तथा प्रथमा विभक्ति के एकवचन में 'लक्ष्म'—ये रूप होते हैं।

द्वितीयोदाहरण—"द्यौः (= द्यो), द्यौः (= दिव्)" यहां यह ज्ञात होता है कि प्रथम शब्द के प्रातिपदिकावस्था का स्वरूप 'द्यो' तथा द्वितीय शब्द के प्रातिपदिकावस्था का स्वरूप 'दिव्' होता है और उक्त दोनों शब्दों के प्रथमा विभक्ति के एकवचन का स्वरूप 'द्यौः' होता है।

( ) इस कोष्ठान्तर्गत शब्द के पूर्व में दिया गया + चिह्न मूल ग्रन्थ के बाहरी शब्द को सूचित करता है। यथा—व्रीडा (+ व्रीडः), शाष्कुलः (+ शौष्कलः),……से सूचित होता है कि मूल ग्रन्थ में 'व्रीडा' और 'शाष्कुल' शब्द हैं; किन्तु अन्यत्र 'व्रीड' तथा 'शौष्कल' शब्द भी उपलब्ध होते हैं।

( ) इस कोष्ठ के अन्तर्गत दिये गये "यौ०, ए०व०, द्विव०, ब०व०, नि०, पु०, स्त्री०, न० या नपु०, त्रि०, अव्य०, शे० और उदा०"—ये सङ्केत क्रमशः यौगिक, एकवचन, द्विवचन, बहुवचन, नित्य, पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, त्रिलिङ्ग, अव्यय, शेष अर्थात् बाकी, और उदाहरण" इन अर्थों को सूचित करते हैं।

पृ०—पृष्ठ

पं०—पंक्ति

स्वो०—स्वोपज्ञवृत्ति

अभि० चिन्ता०—अभिधानचिन्तामणि

……—इत्यादि

देखने का प्रकार—

१—जिस शब्द के साथ जो सङ्केत है, उसी शब्द के साथ उस सङ्केत का सम्बन्ध है। २—संख्यासहित शब्द का पहलेवाले उतने ही शब्दों के साथ सम्बन्ध है। ३—कहीं-कहीं एक ही शब्द में एकाधिक संकेत भी हैं, उनका सम्बन्ध उसी क्रम से है। क्रमशः उदा०—१. "तारका (त्रि) और तारा (स्त्री पु)" यहां 'तारका' शब्द को त्रिलिङ्ग तथा 'तारा' शब्द को स्त्रीलिङ्ग तथा पुंल्लिङ्ग जानना चाहिए। २. तथा ३.···'कल्यम्, प्रत्युषः, उषः (२–षस्), काल्यम् (+ प्रातः,–तर्, प्रगे, प्राह्णे, पूर्वेद्युः–द्युस्। ४ अव्य०)। यहांपर '–२–षस्' का सम्बन्ध उसके पूर्ववर्ती 'प्रत्युषः, उषः' इन दो शब्दों के साथ होने से इनके प्रातिपदिकावस्था का रूप क्रमशः 'प्रत्युषस्' और 'उषस्' होता है। इसी प्रकार मूलस्थ 'काल्यम्' अर्थात् 'काल्य' शब्द के अतिरिक्त अन्य स्थानों में 'प्रातः' आदि शब्द भी 'प्रभात' अर्थ के वाचक हैं, इनमें 'प्रातः' शब्द के प्रातिपदिकावस्था का रूप 'प्रातर्' है तथा 'प्रातर्' से ४ शब्द (प्रातर्, प्रगे, प्राह्णे, पूर्वेद्युस्) अव्यय हैं, ऐसा जानना चाहिए।

( ) इस कोष्ठक के अन्तर्गत किसी चिह्न से रहित शब्द या शब्द-समूह पूर्ववर्ती शब्द के आशय को स्पष्ट करते हैं, यथा—"सहोक्त (साथ में कहे गये), तीनों सन्ध्याकाल (प्रातः सन्ध्या, मध्याह्न सन्ध्या तथा सायं सन्ध्या)" ·······। यहां 'सहोक्त' शब्द का आशय 'साथ में कहे गये' और तीनों सन्ध्याकाल का आशय 'प्रातः सन्ध्या'···" है।

"शेषश्च ······" इससे 'स्वोपज्ञवृत्ति' में आये हुए शेष शब्दों के बोधक मूल श्लोकों को लिखा गया है।



शब्द-सूची के संकेत

(क) शब्द-सूची के प्रत्येक पृष्ठ के वाम तथा दक्षिण पार्श्व में क्रमशः उस पृष्ठ के आदि तथा अन्तवाले शब्द [ ] इस कोष्ठ के अन्तर्गत लिखित हैं, इससे शब्द खोजनेवालों को शब्दोपलब्धि में विशेष सुविधा होगी।

(ख) प्रत्येक शब्द-सूची में कहीं भी प्रथम या द्वितीय अक्षर तक ही अकारादिक्रम न रखकर प्रत्येक शब्द में आदि से अन्त तक अकारादि क्रम रखने का पूर्णतया ध्यान रखा गया है।

(ग) मूलस्थ शब्द-सूची--पहले मूल में कथित शब्दों के प्रातिपदिकावस्था के रूप तथा बाद में काण्डों तथा श्लोकों की संख्याएँ दी गयी हैं। यथा—'अ' शब्द ६ ष्ठ काण्ड के १७५ वें श्लोक में उपलब्ध होगा। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिए।

(घ) शेषस्थ शब्द-सूची--पहले 'शेष' में आनेवाले शब्दों के प्रातिपदिकावस्था का रूप तथा बाद में पृष्ठ एवं पंक्ति (मूलस्थ श्लोकों की पंक्तियों को छोड़कर 'मणिप्रभा' व्याख्या से पंक्ति-गणना करनी चाहिए) की संख्या दी गयी है। विशेष—जिस शब्द के अंत में 'परि० १' के बाद में संख्या है, वह शब्द 'परिशिष्ट १ में लिखित क्रमसंख्या में उपलब्ध होगा, ऐसा समझना चाहिए। यथा—'अक्षज' शब्द ६२ वें पृष्ठ के 'मणिप्रभा' व्याख्या की २१ वीं पंक्ति में मिलेगा। तथा 'अर्शोघ्न' शब्द परिशिष्ट १ के क्रमाङ्क ९ में उपलब्ध होगा। यही क्रम सर्वत्र है।

(ङ) 'मणिप्रभा' व्याख्या, विमर्श तथा टिप्पणी के शब्दों की सूची—इसमें भी शब्दों के प्रातिपदिकावस्था के रूप के बाद पृष्ठ तथा पंक्तियों की संख्या (पूर्ववत् मूलश्लोकों की पंक्तियों की संख्या छोड़कर यहाँ भी 'मणिप्रभा' व्याख्या से ही पंक्ति-गणना करनी चाहिए) दी गयी है। यथा—'अंशुपति' शब्द ८ वें पृष्ठ की 'मणिप्रभा' व्याख्या के ९वीं पंक्ति में मिलेगा। इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए।

चक्र-सूची

पृष्ठाङ्क



॥ श्रीः ॥

अभिधानचिन्तामणिः

'मणिप्रभा'व्याख्योपेतः



अथ देवाधिदेवकाण्डः ॥ १ ॥

१ प्रणिपत्यार्हतः सिद्धसाङ्गशब्दानुशासनः ।
रूढयौगिकमिश्राणां नाम्नां मालां तनोम्यहम् ॥ १ ॥
२ व्युत्पत्तिरहिताः शब्दा रूढा आखण्डलादयः ।
३ योगोऽन्वयः स तु गुणक्रियासम्बन्धसम्भवः ॥ २ ॥

शेषक्षीरसमुद्रकौस्तुभमणीन् विष्णुर्मरालं विधिः
कैलासाद्रिशशाङ्कजह्नुतनयानन्द्यादिकान् शङ्करः ॥
यच्छुक्लत्वगुणस्य गौरववशीभूता इवाशिश्रियु-
स्तां विश्वव्यवहारकारणमयीं श्रीशारदां संश्रये ॥ १ ॥
आचार्यहेमचन्द्रकृताभिधानचिन्तामणेरमलाम् ।
विबुधो हरगोविन्दस्तनुते 'मणिप्रभां' व्याख्याम् ॥ २ ॥

१. अङ्गों (लिङ्ग-धातुपारायणादि) सहित व्याकरण शास्त्रका ज्ञाता मैं (हेमचन्द्राचार्य) 'अर्हत्' देवोंको प्रणामकर रूढ, यौगिक तथा मिश्र अर्थात् योगरूढ शब्दोंकी माला—"अभिधानचिन्तामणि"नामक ग्रन्थ बनाता हूँ ॥

२. (पहले क्रमप्राप्त रूढ शब्दोंकी व्याख्या करते हैं–) व्युत्पत्तिसे रहित अर्थात् प्रकृति तथा प्रत्ययके विभाग करनेसे भी अन्वर्थहीन, शब्दोंको 'रूढ' कहते हैं; यथा—आखण्डलः, आदिसे—मण्डपः,............का संग्रह है ॥

विमर्श :—"नाम च धातुजम्" इस शाकटायनोक्त वचनके अनुसार यद्यपि 'रूढ' शब्दोंकी भी व्युत्पत्ति होती है, तथापि उस व्युत्पत्तिका प्रयोजन केवल वर्णानुपूर्वीका विज्ञान ही है, अन्वर्थ-प्रतीतिमें कारण नहीं है, अत एव 'रूढ' शब्द व्युत्पत्तिहीन ही हैं ॥

३. (अब यहाँसे १।१८ तक 'यौगिक' शब्दोंकी व्याख्या करते हैं—) शब्दोंके परस्पर अर्थानुगमको अन्वय या 'योग' कहते हैं, वह योग 'गुण, क्रिया तथा सम्बन्ध'से उत्पन्न होता है ।

१ गुणतो नीलकण्ठाद्याः क्रियातः स्रष्टृसन्निभाः ।
२ स्वस्वामित्वादिसम्बन्धस्तत्राहुर्नाम तद्वताम् ॥ ३ ॥
स्वात्पालधनभुग्नेतृपतिमत्वर्थकादयः ।
३ भूपालो भूधनो भूभुग् भूनेता भूपतिस्तथा ॥ ४ ॥
भूमाँश्चेति ४ कविरूढ्या ज्ञेयोदाहरणावली ।

विमर्श :—'गुण'से नीला, पीला इत्यादिको; २ 'क्रिया'से 'करोति' इत्यादि को और ३ 'सम्बन्ध'से आगे तृतीय श्लोकमें कहे जानेवाले 'स्वस्वामित्वादि'को समझना चाहिए ॥

१. (अब गुण-क्रिया तथा सम्बन्धसे उत्पन्न योगसे सिद्ध 'यौगिक' शब्दोंका उदाहरण कहते हैं—) १ 'गुणसे'—नीलकण्ठः, इत्यादि ('आदि' शब्दसे 'शितिकण्ठः, कालकण्ठः,………' का संग्रह है), २ 'क्रिया'से स्रष्टा, इत्यादि ('आदि'से 'धाता,………'का संग्रह है) ।

विमर्श :—सङ्ख्या भी 'गुण' ही मानी गयी है, अतः 'त्रिलोचनः चतुर्मुखः, पञ्चबाणः, षण्मुखः, अष्टश्रवाः, दशग्रीवः,………' शब्दोंको भी यौगिक ही समझना चाहिए ॥

२. (अब ३ सम्बन्धसे उत्पन्न यौगिक शब्दोंको कहते हैं—) स्वत्व तथा स्वामित्व आदिके सम्बन्धमें 'स्व' (आत्मीय)से परे रहनेपर पाल, धन, भुक्, नेतृ, पति शब्द तथा मत्वर्थक आदि 'स्वामि'के वाचक होते हैं । ('स्वामित्व' आदिमें 'आदि' शब्दसे पञ्चमादि श्लोकोंमें वक्ष्यमाण जन्य-जनक, धार्य-धारक, भोज्य-भोजक, पति-कलत्र, सखि, वाह्य-वाहक, ज्ञातेय, आश्रय-आश्रयी, वध्य-वधक,—भाव सम्बन्धोंको जानना चाहिए । इनके उदाहरण भी यथास्थान वहीं षष्ठ श्लोकसे जानना चाहिए ।

३. (अब 'स्व' शब्दसे परे क्रमशः 'पाल' आदिका उदाहरण कहते हैं—) भूपालः, भूधनः, भूभुक् (–भुज्), भूनेता (–नेतृ), भूपतिः, भूमान् (–मत्), ये 'स्व' शब्दसे परे 'पाल' आदि शब्द अपने स्वामीके वाचक हैं, अतः 'भूपालः, भूधनः,………' शब्दोंका "भूका स्वामी" अर्थात् राजा अर्थ होता है ।

विमर्श—मत्वर्थक आदि में—'आदि' शब्दसे मतुप् , इन् , अण् , इक् इत्यादि प्रत्यय तथा 'पः' इत्यादिका ग्रहण है । क्रमशः उदा०—भूमान् (–मत्); धनी, मानीः(२–निन्); तापसः, साहस्रः; दण्डिकः, व्रीहिकः;……………; भूपः; धनदः;………" ॥

४. 'कविरूढि'से (कवियोंने जिन शब्दोंका प्रयोग शास्त्रोंमें किया हो), उन्हीं शब्दोंका प्रयोग करना चाहिए । उनके अप्रयुक्त शब्दोंका नहीं, अत एव—कपाली शब्द में 'स्व-स्वामिभावसम्बन्ध' रहनेपर भी कविप्रयुक्त

१ जन्यात्कृत्कर्तृस्रट्स्रष्टृविधातृकरसूसमाः ॥ ५ ॥
२ जनकाद्योनिजरुहजन्मभूसूत्यणादयः ।
३ धार्याद् ध्वजास्त्रपाण्यङ्कमौलिभूषणभृन्निभाः ॥ ६ ॥

मतुबर्थक 'इन्'प्रत्ययान्त 'कपाली' (–लिन्) शब्दका ही प्रयोग करना चाहिए, कवियोंसे अप्रयुक्त 'कपालपालः, कपालधनः, कपालाभुक्, कपालनेता, कपालपतिः' इत्यादि शब्दोंका प्रयोग नहीं करना चाहिए ॥

१. जन्य अर्थात् कार्यसे परे 'कृत्, कर्तृ, सृट् स्रष्टृ, विधातृ, कर, सू' इत्यादि शब्द जनक अर्थात् कारणके पर्यायवाचक होते हैं। (क्रमशः उदा०—विश्वकृत्, विश्वकर्ता (-कर्तृ), विश्वसृट् (–सृज्), विश्वस्रष्टा (–स्रष्टृ), विश्वविधाता (–धातृ), विश्वकरः, विश्वसूः,……'शब्द विश्वके कर्ता 'ब्रह्मा'के पर्याय हैं। 'आदि' अर्थवाले 'सम' शब्दसे—'विश्वकारकः, विश्वजनकः,……'शब्द भी 'ब्रह्मा'के पर्याय हैं। यहाँ भी 'कविरूढि'से ही प्रयोग होनेके कारण 'चित्रकृत्'का प्रयोग तो होता है, परन्तु 'चित्रसूः' का प्रयोग नहीं होता) ॥

२. जनक अर्थात् 'कारणवाचक' शब्दोंसे परे 'योनिः, जः, रुहः, जन्मन्, भूः तथा सूतिः' शब्द और 'अण्' आदि ('आदि' शब्दसे "ण्य, फ,……" का संग्रह होता है) प्रत्यय रहनेपर वे शब्द 'कार्यों'के पर्यायवाचक होते हैं। (क्रमशः उदा०—'आत्मयोनिः, आत्मजः, आत्मरुहः, आत्मजन्मा (–न्मन्), आत्मभूः, आत्मसूतिः' शब्द 'ब्रह्मा'के पर्याय हैं। 'अण्' आदि प्रत्ययके परे रहनेसे बननेवाले पर्यायोंका उदा०— भार्गवः, औपगवः, ……; दैत्यः, बार्हस्पत्यः, आदित्य;……; वात्सायनः, गार्ग्यायणः, ……) । यहां भी 'कविरूढि'के अनुसार ही प्रयोग होनेके कारण 'ब्रह्मा'के पर्यायमें 'आत्मयोनि' शब्दका तो प्रयोग होता है, किन्तु 'आत्मजनकः, आत्मकारकः, ……' शब्दोंका प्रयोग नहीं होता) ॥

३. 'धार्य' अर्थात् 'धारण करने योग्य'के वाचक 'वृष' आदि शब्दसे परे "ध्वज, अस्त्र, पाणि, अङ्क, मौलि, भूषण, भृत्,के 'निभ' (सदृश) शब्द और शाली, शेखर शब्द, मत्वर्थक प्रत्यय, तथा माली, भर्तृ और धर" शब्द 'धारक' अर्थात् ('वृष' आदि धार्यको धारण करनेवाले शिव (आदि) के पर्यायवाचक होते हैं। (क्रमशः उदा०—वृषध्वजः, शूलास्त्रः, पिनाकपाणिः, वृषाङ्कः, चन्द्रमौलिः, शशिभूषणः, शूलभृत्" इत्यादि; तथा "पिनाकभर्ता (–भर्तृ) शशिशेखरः, शूली (–लिन्), पिनाकशाली (–लिन्), पिनाक-भर्ता (–र्तृ) पिनाकधरः" शब्द 'वृष' (बैल) आदिको धारण करनेवाले 'शिवजी'के पर्याय होते हैं। यहां भी 'कविरूढि'के अनुसार ही प्रयोग होनेके

शालिशेखरमत्वर्थमालिभर्तृधरा अपि ।
१ भोज्याद्भुगन्धो व्रतलिट्पायिपाशाशनादयः ॥ ७ ॥
२ पत्युः कान्ताप्रियतमावधूप्रणयिनीनिभाः ।

कारण 'शिवजी'के पर्यायोंमें 'वृषध्वजः'के समान 'शूलध्वजः'का, 'शूलास्त्रः'के समान 'चन्द्राङ्कः'का, 'पिनाकपाणिः'के समान 'अहिपाणिः'का, 'वृषाङ्कः'के समान 'चन्द्राङ्कः'का, 'चन्द्रमौलिः'के समान 'गङ्गामौलिः'का, 'शशिभूषणः'के समान 'शूलभूषणः'का, 'शूलशाली'के समान 'चन्द्रशाली'का, 'चन्द्रशेखरः'के समान 'गङ्गाशेखरः'का, 'शूली'के समान 'शूलवान्'का, 'पिनाकमाली'के समान 'सर्पमाली'का, 'पिनाकभर्ता'के समान 'चन्द्रभर्ता' का और 'गङ्गाधरः'के समान 'चन्द्रधरः'का प्रयोग नहीं होता है।

विमर्शः—'समान' अर्थमें प्रयुक्त 'निभ' शब्दसे उनके तुल्य 'केतन, आयुध, लक्ष्म, शिरस्, आभरण,.......'शब्द यदि 'धार्य'वाचक शब्दके बादमें रहें तो वे 'धारक'के पर्यायवाचक हो जाते हैं। क्रमशः उदा०—वृषकेतनः, शूलायुधः, वृषलक्ष्मा (–क्ष्मन्), चन्द्रशिराः (–रस्), चन्द्राभरणः.....) ॥

१. भोज्य अर्थात् खाने योग्य वस्तुके वाचक शब्दके बादमें 'भुज्', अन्धः, व्रत, लिट्, पायी, प, आश, अशन' आदि शब्द रहें तो वे उन भोज्य वस्तुओंके भोक्ताओं (भोजन करनेवालों)के पर्याय होते हैं। (क्रमशः उदा०—अमृतभुजः (–भुज्), अमृतान्धसः (–न्धस्), अमृतव्रताः, अमृतलिहः (–लिट्), अमृतपायिनः (–यिन्), अमृतपाः, अमृताशाः, अमृताशनाः, आदि शब्द देवोंके भोज्य (खाने योग्य वस्तु) अमृतके बाद-में 'भुज्,........' आदि शब्द होनेसे देवोंके पर्यायवाचक होते हैं, क्योंकि 'अमृत' देवोंकी भोज्य वस्तु है, ऐसी रूढि है।

विमर्श—'आदि' शब्दसे उन (भुज्....) के समानार्थक भोजन आदि शब्दोंका ग्रहण है, अतः 'अमृतभोजनाः,.....' शब्द भी देवोंके पर्यायवाचक होते हैं। यहाँ भी कवि-रूढिसे प्रसिद्ध शब्दोंका ही ग्रहण होनेसे जिस प्रकार 'अमृतभुजः, अमृताशनाः' आदि शब्द देवोंके पर्यायवाचक होते हैं; उसी प्रकार 'अमृतवल्भाः' आदि शब्द 'देवों'के पर्यायवाचक नहीं होते ॥

२. 'पति'वाचक शब्दके बादमें 'कान्ता, प्रियतमा, वधू, प्रणयिनी' के निभ अर्थात् सदृश (कान्तादिके सदृश—रमणी, वल्लभा, प्रिया आदि) शब्द रहें तो वे शब्द उसकी भार्याके पर्यायवाचक होते हैं। (क्रमशः उदा०—शिवकान्ता, शिवप्रियतमा, शिववधूः, शिवप्रणयिनी (तथा सदृशार्थक 'निभ' शब्दसे ग्राह्यके उदा०—'शिवरमणी, शिववल्लभा, शिवप्रिया,....)

१ कलत्राद्वररमणप्रणयीशप्रियादयः ॥ ८ ॥
२ सख्युः सखिसमा ३ वाह्याद्गामियानासनादयः ।

शब्द 'शिव'के बादमें उनकी रमणी आदि शब्दके होनेसे शिवजीकी भार्या पार्वतीके पर्यायवाचक होते हैं; क्योंकि 'पार्वती' शिवजीकी भार्या है, यह रूढि है ।

विमर्श—यहाँ भी कवि-रूढिसे प्रसिद्ध शब्दोंका ही ग्रहण होनेसे जिस प्रकार 'शिवकान्ता, शिववल्लभा' आदि शब्द पार्वतीके पर्यायवाचक हैं, उसी प्रकार 'शिवपरिग्रहः' आदि शब्द भी पार्वतीके पर्यायवाचक नहीं है ॥

१. कलत्र अर्थात् स्त्रीवाचक शब्दके बादमें 'वर, रमण, प्रणयी, ईश, प्रिय' आदि शब्द रहें तो वे उनके पतिके पर्यायवाचक होते हैं। (क्रमशः उदा०—गौरीवरः, गौरीरमणः, गौरीप्रणयी (–यिन्), गौरीशः,····शब्द गौरीके पति शिवजीके पर्यायवाचक हैं; क्योंकि शिवजी पार्वतीके पति हैं, ऐसी रूढि है ।

विमर्श—'आदि' शब्दसे तत्समानार्थक—('वर, रमण' आदि शब्दोंके समान अर्थवाले 'पति, भर्ता, वल्लभ' आदि शब्दोंका ग्रहण होनेसे 'गौरीपतिः, गौरीभर्ता (–तृ), गौरीवल्लभः' आदि शब्द भी गौरीके पति शिवजीके पर्याय हैं। यहाँ भी कवि-रूढिसे प्रसिद्ध शब्दोंका ही ग्रहण होनेसे जिस प्रकार 'गौरीवरः' आदि शब्द शिवजीके पर्यायवाचक होते हैं, उसी प्रकार 'गङ्गावरः' आदि शब्द शिवजीके पर्यायवाचक नहीं होते ॥

२. सखि अर्थात् मित्रके वाचक शब्दके बादमें 'सखि' और उसके (सखि शब्दके) समान 'सुहृद्' आदि शब्द रहें तो वे उसके मित्रके पर्यायवाचक होते हैं। (क्रमशः उदा०—श्रीकण्ठसखः, मधुसखः, वायुसखः, अग्निसखः, आदि शब्द क्रमशः 'कुबेर, कामदेव, अग्नि, और वायु'के पर्यायवाचक हैं; क्योंकि 'श्रीकण्ठ (शिवजी), मधु (वसन्त), वायु और अग्नि' के क्रमशः 'कुबेर, कामदेव, अग्नि और वायु' मित्र हैं, ऐसी रूढि है ।

विमर्श—समानार्थक 'सम' शब्दसे 'सखि'के समान अर्थवाले 'सुहृद्' आदि शब्दका ग्रहण होनेसे 'कामसुहृद्, काममित्रम्' आदि शब्द भी कामके मित्र 'वसन्त'के पर्याय हो जाते हैं। यहाँ भी कविरूढिसे प्रसिद्ध शब्दोंका ही ग्रहण होनेके कारण जिस प्रकार 'श्रीकण्ठसखः' शब्द शिवजीके मित्र 'कुबेर'का पर्यायवाचक है, उसी प्रकार 'धनदसखः' शब्द धनद (कुबेर)के मित्र शिवजीका पर्यायवाचक नहीं होता ॥

३. 'वाह्य' अर्थात् वाहन (सवारी)-वाचक शब्दके बाद 'गामी,

१ जातेः स्वसृदुहित्रात्मजाग्रजावरजादयः ॥ ९ ॥
२ आश्रयात् सद्मपर्यायशयवासिसदादयः ।

यान, आसन' आदि शब्द रहें तो वे उन वाह्य (वाहन)वालेके पर्याय-वाचक होते हैं। (क्रमशः उदा०—वृषगामी (—मिन्), वृषयानः, वृषासनः' आदि शब्द 'वृष' अर्थात् बैल वाहनवाले शिवजीके पर्याय हैं। क्योंकि वृषभ (बैल) शिवजीका वाहन है, ऐसी रूढि है।

विमर्श—'आदि' शब्दसे 'वाहन, रथ' आदि शब्दका ग्रहण होनेसे 'गरुडवाहनः, पत्ररथः……'आदि शब्द विष्णुके पर्यायवाचक हैं। यहां भी कवि-रूढिसे प्रसिद्ध शब्दोंका ही ग्रहण होनेसे जिस प्रकार 'कुबेर'के वाहनभूत 'नर' शब्दके बादमें 'वाहन' शब्द रहनेपर 'नरवाहनः' शब्दका अर्थ कुबेर होता है, उसी प्रकार 'नर' शब्दके बादमें 'वाहन'के पर्यायभूत 'गामिन्, यान' शब्द जोड़कर बने हुए 'नरगामी, नरयानः' शब्द भी कुबेरके पर्यायवाचक नहीं होते हैं॥

१. 'जाति' अर्थात् स्वजन (भाई, बहन, पुत्री, पुत्र आदि)के वाचक शब्दके बादमें 'स्वसा, दुहिता, आत्मज, अग्रज, अवरज' आदि शब्द रहें तो वे स्वजन-वालोंके पर्यायवाचक होते हैं। (क्रमशः उदा०—यमस्वसा (-सृ), हिमवद्-दुहिता (–तृ), 'चन्द्रात्मजः, गदाग्रजः, इन्द्रावरजः' आदि शब्दोंमें प्रथम तीन शब्द क्रमशः 'यमुना, पार्वती, बुध' के तथा अन्तिम दो शब्द कृष्णजी (विष्णु भगवान्) के पर्यायवाचक हैं; क्योंकि यमुना यमराजकी स्वसा (बहन), पार्वती हिमवान् (हिमालय पर्वत)की दुहिता (पुत्री), बुध चन्द्रमाके आत्मज (पुत्र), कृष्णजी (विष्णु भगवान्) 'गद'के अग्रज (बड़े भाई) तथा 'इन्द्र'के अवरज (छोटे भाई) हैं, ऐसी रूढि है।

विमर्श—'आदि' शब्दसे 'सोदर, अनुज' आदि शब्दका ग्रहण होता है; अत एव 'कालिन्दीसोदरः' शब्दका अर्थ 'यमराज' और 'रामानुजः' शब्दका अर्थ 'लक्ष्मण' होता है, एवं अन्यत्र भी समझना चाहिए। यहाँ भी कवि-रूढिके अनुसार प्रसिद्ध शब्दोंका ही ग्रहण होनेके कारण जिस प्रकार 'यमुना'-को 'यम' (यमराज) की बहन होनेसे 'यमस्वसा (–सृ)' शब्द 'यमुना' का पर्याय होता है, उसी प्रकार शनिकी बहन होनेपर भी 'शनिस्वसा' शब्द यमुनाका पर्याय नहीं होता॥

२. आश्रय अर्थात् निवासस्थान-वाचक शब्दोंके बादमें 'सद्मन्' (गृह)-के पर्यायवाचक (सदन, ओक, वसति, आश्रय,…………) शब्द तथा 'शय, वासी, सत् (–द्),…………'शब्द रहें तो वे उन (आश्रयवालों)के पर्यायवाचक

१ वध्याद्भिद्द्वेषिजिद्घातिध्रुगरिध्वंसिशासनाः ॥ १० ॥
अप्यन्तकारिदमनदर्पच्छिन्मथनादयः ।
२ विवक्षितो हि सम्बन्ध एकतोऽपि पदात्ततः ॥ ११ ॥

होते हैं । (क्रमशः उदा०—'द्युसद्मानः (द्युसदनाः, दिवौकसः[1], द्युवसतयः, दिवाश्रयाः[2],…………), द्युशयाः, द्युवासिनः (–सिन्), द्युसदः (–द्)' आदि शब्द देवोंके पर्यायवाचक हैं, क्योंकि देवोंका आश्रय (निवासस्थान) दिव् और दिव अर्थात् स्वर्ग है, ऐसी रूढि है ।

विमर्श—यहाँ भी कवियोंकी रूढिसे प्रसिद्ध शब्दोंका ही ग्रहण होनेसे जिस प्रकार देवोंका पर्यायवाचक 'द्युसद्मानः (–द्मन्)' शब्द है, उसी प्रकार मनुष्योंके आश्रय (वासस्थान) 'भूमि' शब्दके बादमें 'सद्मन्' आदि शब्द रखनेसे बना हुआ 'भूमिसद्मा' आदि शब्द मनुष्योंके पर्याय नहीं होते ॥

१. "वध्य'वाचक शब्दके बादमें "भिद्, द्वेषी, जित्, घाती, ध्रुक्, अरि, ध्वंसी, शासन, अन्तकारी, दमन, दर्पच्छिद्, मथन" आदि ('आदि' शब्दसे—"दारी, निहन्ता, केतु, हा, सूदन, अन्तक, जयी,………" शब्दोंका संग्रह है) शब्द रहें तो वे 'वधक' अर्थात् मारनेवालेके पर्याय हो जाते हैं । क्रमशः उदा०—पुरभित् (–भिद्), पुरद्वेषी (– षिन्), पुरजित्, पुरघाती (–तिन्), पुरध्रुक् (–द्रुह्), पुरारिः, पुरध्वंसी (–सिन्), पुरशासनः, पुरान्तकारी (–रिन्), पुरदमनः, पुरदर्पच्छित् (–द्), पुरमथनः, आदि (आदि शब्दसे संगृहीतके क्रमशः उदा०—पुरहारी (–रिन्), पुरनिहन्ता (–न्तृ), पुरकेतुः, पुरहा (–हन्), पुरसूदनः, पुरान्तकः, पुरजयी (–यिन्), ……) 'पुर'के मारनेवाले 'शिवजी'के पर्यायवाचक हैं ।

विमर्श—'वध्य' शब्दसे वधके योग्यका भी संग्रह है, अर्थात् जिसका वध नहीं हुआ हो, किन्तु वह वध्यके योग्य है या उसको पराजितकर दयादिके कारण छोड़ दिया गया है, उसके बादमें भी उक्त 'भिद्,……' शब्दोंके रहनेपर वे शब्द वधक अर्थात् विजेताके पर्यायवाचक हो जाते हैं । यथा—"कालियभिद्, कालियदमनः, कालियारिः, कालियशासनः,……" शब्द 'कालिय'-को पराजित करनेवाले विष्णुके पर्याय होते हैं । यहां भी 'कविरूढि'के अनुसार ही प्रयोग होनेसे 'कालियदमन' शब्दके समान विष्णुके पर्यायमें कालियघाती (–तिन्) शब्दका प्रयोग नहीं किया जाता है ॥

२. सम्बन्ध विवक्षाके अधीन हुआ करता है, अत एव एक भी 'वृष'

१–२ अत्र शब्दद्वयेऽदन्तो 'दिव' शब्दो बोध्यः, अन्येषु तु 'दिव्' शब्दो दन्त्यौष्ठान्त इति ।

प्राक्प्रदर्शितसम्बन्धिशब्दा योज्या यथोचितम् ।
१ दृश्यते खलु वाह्यत्वे वृषस्य वृषवाहनः ॥ १२ ॥
स्वत्वे पुनर्वृषपतिर्धार्यत्वे वृषलाञ्छनः ।
अंशोर्धार्यत्वेंऽशुमाली स्वत्वेंऽशुपतिरंशुमान् ॥ १३ ॥
वध्यत्वेऽहेरहिरिपुर्भोज्यत्वे चाहिभुक्शिखी ।
२ चिह्नैर्व्यक्तैर्भवेद्व्यक्तेर्जातिशब्दोऽपि वाचकः ॥ १४ ॥
तथा ह्यगस्तिपूता दिग्दक्षिणाशा निगद्यते ।
३ अयुग्विषमशब्दौ त्रिपञ्चसप्तादिवाचकौ ॥ १५ ॥

आदि सम्बधि-पदसे सम्बन्धान्तर (दूसरे संबंध)के निमित्तक शब्दोंका भी यथोचित प्रयोग होता है ॥

१. (पूर्वोक्त सिद्धान्तोंको ही उदाहरणोंके द्वारा स्पष्ट करते हैं—) 'वाह्य-वाहक-संबंध'की विवक्षामें जिस प्रकार 'वृषवाहनः' शब्द 'शिवजी'का पर्याय होता है, उसी प्रकार—'स्वस्वामिभावसम्बन्ध'की विवक्षामें 'वृषपतिः' शब्द, 'धार्य-धारकभावसम्बन्ध'की विवक्षामें 'वृषलाञ्छनः' शब्द भी शिवजी-के पर्याय हो जाते हैं, और 'धार्य-धारक भावसम्बन्ध'की विवक्षामें जिस प्रकार 'अंशुमाली' (–लिन्) शब्द 'सूर्य'का पर्याय होता है, उसी प्रकार 'स्व-स्वामि-भावसम्बन्ध'की विवक्षामें 'अंशुपतिः, अंशुमान् (–मत्)' शब्द भी 'सूर्य'के पर्याय हो जाते हैं। एवं 'वध्यवधकभावसम्बन्ध'की विवक्षामें जिस प्रकार 'अहिरिपु' शब्द 'मोर'का पर्याय होता है, उसी प्रकार 'भोज्य-भोजकभाव-सम्बन्ध'की विवक्षामें 'अहिभुक्' (–भुज्) शब्द भी 'मोर'का पर्याय हो जाता है। (इसी प्रकार अन्यत्र भी और उदाहरणोंको समझना चाहिए) ॥

२. सन्देहहीन चिह्नों (विशेषणों)के द्वारा, जातिवाचक भी शब्द व्यक्ति-का वाचक हो जाता है। यथा—अगस्त्य मुनिके द्वारा पवित्र की गयी दिशा अगस्त्यपूता दिक् अर्थात् दक्षिण दिशा कहलाती है। (यहाँपर अगस्त्य मुनिने अपने नित्य निवाससे दक्षिण दिशाको पवित्र किया है, यह चिह्न सन्देहहीन है, अत एव उनसे (अगस्त्य मुनिसे) चिह्नित 'दिक्' यह जाति शब्द दक्षिण दिशारूप विशिष्ट दिशा (व्यक्ति)के अर्थमें प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार उत्तर दिशाको 'सप्तर्षियों'से पवित्र होनेके कारण 'सप्तर्षिपूता दिक्' उत्तर दिशारूप व्यक्ति (विशिष्ट दिशा)के अर्थमें प्रयुक्त होता है। 'चन्द्रमा'-का 'अत्रि' ऋषिके नेत्रसे उत्पन्न होनेके कारण 'अत्रिनेत्रोत्पन्नं ज्योतिः'से 'चन्द्रमा'का बोध होता है ॥

३. 'तीन, पाँच, सात, आदि ('आदि' शब्दसे—'नव, एका-दश,…'का संग्रह है) असमान (विषम, फूट) संख्याके वाचक 'अयुक्'

त्रिनेत्रपञ्चेषुसप्तपलाशादिषु योजयेत् ।
१ गुणशब्दो विरोध्यर्थं नञादिरितरोत्तरः ॥ १६ ॥
अभिधत्ते, यथा कृष्णः स्यादसितः सितेतरः ।
२ वार्ध्यादिषु पदे पूर्वे वडवाग्न्यादिपूत्तरे ॥ १७ ॥
द्वयेऽपि भूभृदाद्येषु पर्यायपरिवर्तनम् ।

(–ज्) और 'विषम' शब्दोंको 'त्रिनेत्रः, पञ्चेषुः, सप्तपलाशः' आदि पदोंमें जोड़ना चाहिए । अत एव—त्रिनेत्रः, अयुङ्नेत्रः, विषमनेत्रः' शब्द 'शिवजी'के; पञ्चेषुः, अयुगिषुः, विषमेषुः शब्द पांच बाणवाले 'कामदेव'-के और 'सप्तपलाशः, अयुक्पलाशः, विषमपलाशः' शब्द सात पत्तोंवाले 'सप्तपर्ण' (सतवना, छितौना) के पर्याय होते हैं । 'सप्तादि' तथा 'पलाशादि' दोनों स्थलोंमें 'आदि' शब्द होनेसे—'नवशक्तिः, अयुक्शक्तिः, विषमशक्तिः' शब्द नव शक्तियोंवाले 'शिवजी'के और त्र्यक्षः, अयुगक्षः, विषमाक्षः,····शब्द तीन नेत्रोंवाले 'शिवजी'के; पञ्चबाणः, अयुग्बाणः, विषमबाणः शब्द पांच बाणोंवाले 'कामदेव'के तथा सप्तच्छदः, अयुक्छदः, विषमच्छदः, सप्तपर्णः शब्द सात पत्तोंवाले 'सप्तपर्ण' के पर्याय बनते हैं । इसी प्रकार अन्यान्य पर्यायोंका भी प्रयोग करना चाहिए) ॥

१. नञादि' अर्थात् 'नञ् पूर्वक' तथा 'इतरोत्तर' ('इतर' शब्द जिसके बादमें रहे वह) शब्द स्वविरोधीके अर्थको कहता है । क्रमशः उदा०—'असितः, सितेतरः' शब्द 'सित' अर्थात् 'श्वेत'के विरोधी 'काले' अर्थमें प्रयुक्त हैं । इसी प्रकार—'अकृशः, कृशेतरः' शब्द 'कृश' अर्थात् 'दुर्बल'के विरोधी 'स्थूल' अर्थात् 'मोटा' अर्थमें प्रयुक्त होते हैं ॥

२. 'वार्धिः' आदि शब्दोंमें 'पूर्वपद' ('वार्' अर्थात् जल)में, 'वडवाग्नि' आदि शब्दोंमें 'उत्तरपद' (अग्नि')में तथा 'भूभृत्' आदि शब्दोंमें 'उभयपद' (पूर्व 'भू' तथा उत्तर 'भृत्'—दोनों ही) में पर्यायका परिवर्तन होता है । (क्रमशः उदा०—"वार्धिः, जलधिः, नीरधि, तोयधिः, पयोधिः,········" में 'वार्' अर्थात् 'जल'वाचक पूर्व पदोंका परिवर्तन करनेसे उक्त शब्द 'समुद्र'के पर्याय बन जाते हैं । ('आदि' शब्दसे –जलदः, तोयदः, नीरदः, पयोदः······, जलधरः, तोयधरः, नीरधरः, पयोधरः,········' शब्द 'जल'वाचक पूर्वपदके परिवर्तित होनेसे 'मेघ'के पर्याय बनते हैं) । 'वडवाग्निः, वडवानलः, वडवा-वह्निः,········' इत्यादिमें 'अग्नि'वाचक उत्तरपदका परिवर्तन करनेसे उक्त शब्द 'वडवाग्नि'के पर्याय बनते हैं । ('आदि' शब्दसे 'सरोजम्, सरोरुहम्,········' में 'उत्तरपद'का परिवर्तन करनेसे उक्त शब्द 'कमल'के पर्याय बनते हैं) । एवम्—"भूभृत्, उर्वीभृत्, महीभृत्,··············" में पूर्वपदका परिवर्तन

१ एवं परावृत्तिसहा योगात्स्युरिति यौगिकाः ॥ १८ ॥
२ मिश्राः पुनः परावृत्त्यसहा गीर्वाणसन्निभाः ।
प्रवक्ष्यन्तेऽत्र २७ लिङ्गं तु ज्ञेयं लिङ्गानुशासनात् ॥ १९ ॥
३ देवाधिदेवाः प्रथमे काण्डे, देवा द्वितीयके ।

करनेसे और "भूभृत्, भूधरः,........" में उत्तर पदका परिवर्तन करनेसे उक्त शब्द 'पर्वत'के पर्याय बन जाते हैं । ('आद्य' शब्दसे—"सुरराजः, देवराजः, अमरराजः,..........."इत्यादिमें पूर्वपदके परिवर्तनसे और "सुरपतिः, सुरेशः, सुरराजः, सुरेन्द्रः,.........."में उत्तरपदके परिवर्तनसे उक्त शब्द 'इन्द्र'के पर्याय बन जाते हैं ॥

१. ('यौगिक' शब्दोंका उपसंहार करते हुए कहते हैं—) इस प्रकार अर्थात् कहींपर पूर्वपदके, कहींपर उत्तर पदके और कहींपर उभय पदों (दोनों पदों) के परिवर्तनको सहनेवाले "वार्धिः, वडवाग्निः, भूभृत्, भूधरः,......." शब्द 'यौगिक' (प्रकृति–प्रत्ययके योगसे बने हुए) कहे जाते हैं ॥

२. (१।२ से आरम्भकर यहाँतक 'यौगिक' शब्दोंका निर्देश करनेके उपरान्त अब क्रमप्राप्त तृतीय 'मिश्र' अर्थात् 'योगरूढ' शब्दोंका निर्देश करते हैं—) 'गर्वाणः' आदि शब्द (पूर्व पदमें या उत्तर पदमें) पर्याय-परिवर्तनका सहन नहीं करनेसे अर्थात् पूर्व या उत्तर पदमें परिवर्तन करनेपर अभीष्टार्थका बोधक नहीं होनेसे 'मिश्र'अर्थात् 'योगरूढ' शब्द यहाँ (इस अभिधानचिन्तामणि'नामक ग्रन्थमें) कहे जायेंगे । ('गीर्वाणसन्निभाः' पद में 'आदि' अर्थवाले 'सन्निभ' शब्दके प्रयोगसे—'दशरथः, कृतान्तः,.........." इत्यादि 'मिश्र' शब्दोंका संग्रह होता है) ॥

३. इस ग्रन्थमें कहे जानेवाले पर्यायोंके लिङ्गों (पुँलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुसंकलिङ्ग) का ज्ञान 'लिङ्गानुशासन'से करना चाहिए । (अत एव 'अमरकोष' इत्यादि ग्रंथोंके समान इस 'अभिधानचिन्तामणि' ग्रंथमें लिङ्गोंका निर्णय नहीं किया गया है (कुछ सन्दिग्ध और अनेक लिङ्गवाले पर्यायोंका निर्णय स्वोपज्ञ वृत्तिमें किया गया है । यथा—"गणरात्रः पुंक्लीबलिङ्गः (२।५७), तमिस्रम् स्त्रीक्लीबलिङ्गः (२।५९), तिथिः पुंस्त्रीलिङ्गः (२।६१),..........")

४. जीवोंकी ५ गतियाँ हैं—१ मुक्तगति, २ देवगति, ३ मनुष्यगति, ४ तिर्यग्गति और ५ नारकगति । अतः इन भेदोंसे जीव भी ५ प्रकारके होते हैं—१ मुक्त, २ देव, ३ मनुष्य, ४ तिर्यञ्च और ५ नारक । पहले, कहे जानेवाले "रूढ, यौगिक तथा मिश्र" शब्दोंके विभागोंको कहकर अब प्रथमादि ६ काण्डोंमें वक्ष्यमाण 'मुक्त' आदि जीवोंके क्रमको कहते हैं—) १ म काण्डमें—गणधर आदि अङ्गोंके सहित देवाधिदेव (वर्तमान, भूत तथा भविष्यत् अर्हन्तों

नरास्तृतीये, तिर्यञ्चस्तुर्ये एकेन्द्रियादयः ॥ २० ॥
एकेन्द्रियाः पृथिव्यम्बुतेजोवायुमहीरुहः ।
कृमिपीलकलूताद्याः स्युर्द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः ॥ २१ ॥
पञ्चेन्द्रियाश्चेभकेकिमत्स्याद्याः स्थलखाम्बुगाः ।
पञ्चेन्द्रिया एव देवा नरा नैरयिका अपि ॥ २२ ॥
नारकाः पञ्चमे साङ्गाः षष्ठे साधारणाः स्फुटम् ।
प्रस्तोष्यन्तेऽव्ययाश्चात्र १ त्वन्ताथादी न पूर्वगौ ॥ २३ ॥
२ अर्हन् जिनः पारगतस्त्रिकालवित्

तथा उनके वाचक शब्दों) को, २ य काण्डमें—अङ्गों (भेदोपभेदों) के सहित देवोंको, ३ य काण्डमें—अङ्गोंके सहित मनुष्योंको, ४र्थ काण्डमें—अङ्गोंके सहित तिर्यञ्चोंको, इनमें एक इन्द्रियवालों पृथ्वीकायिक (शुद्ध पृथ्वी, शर्करा (कङ्कड़), बालू (रेत),..........), जलकायिक (हिम अर्थात् बर्फ आदि), तेजःकायिक (अङ्गार आदि), वायुकायिक (उत्कलिका आदि) तथा वनस्पतिकायिक (शेवाल आदि) जीवोंको; दो (स्पर्शन (चमड़ा) तथा रसना), इन्द्रियोंवाले कृमि आदि जीवोंको; तीन (स्पर्शन, रसना तथा नाक), इन्द्रियों वाले पिपीलिका (चींटी) आदि जीवोंको, चार (स्पर्शन, रसना, नाक तथा नेत्र) इन्द्रियोंवाले लूता (मकड़ी) आदि जीवोंको और पाँच (स्पर्शन, रसना, नाक, नेत्र तथा कान) इन्द्रियोंवाले स्थलचर अर्थात् सूखी भूमिमें चलनेवाले हाथी, मनुष्य, गौ आदि; खेचर अर्थात् आकाशमें चलनेवाले मोर, कबूतर, गीध, चील आदि और जलचर अर्थात् पानीमें चलनेवाले मछली, मगर, घड़ियाल, सूँस आदि जीवोंको तथा उक्त पांच इन्द्रियोंवाले ही देवों, मनुष्यों तथा नारकीय (नरकवासी) जीवोंको; एवं ५म काण्डमें—अङ्गोंके सहित नारकीय जीवोंको और ६ष्ठ काण्डमें—साधारण तथा अव्यय शब्दोंको कहूँगा ॥

१. 'त्वन्त' (जिसके अन्तमें 'तु' शब्द है वह) शब्द तथा 'अथादि' (जिसके पूर्वमें 'अथ' शब्द है वह) शब्द अपनेसे पहलेवाले शब्दके साथ सम्बद्ध नहीं होता है । (क्रमशः उदा०—१ म 'त्वन्त' जैसे—'स्यादनन्तजिदनन्तः सुविधस्तु पुष्पदन्तः' (१।२६) यहाँपर 'सुविध' शब्दके बादमें 'तु' शब्दका प्रयोग होनेसे 'सुविध' शब्द आगेवाले 'पुष्पदन्त' शब्दका ही पर्याय होता है, पूर्ववाले 'अनन्त' शब्दका नहीं । २ य 'अथादि' जैसे—'मुक्तिर्मोक्षोऽपवर्गोऽथ मुमुक्षुः श्रमणो यतिः' (१।७५) यहाँपर 'मुमुक्षु' शब्दके आदिमें 'अथ' शब्दका प्रयोग होनेसे 'मुमुक्षु' शब्द आगेवाले 'श्रमण' शब्दका ही पर्याय होता है, पूर्ववाले 'अपवर्ग' शब्दका नहीं) ॥

२. 'जिनेन्द्र भगवान्'के २५ नाम हैं—अर्हन् (-त्), जिनः, पारगतः,

क्षीणाष्टकर्मा परमेष्ठ्यधीश्वरः ।
शम्भुः स्वयम्भूर्भगवान् जगत्प्रभु-
स्तीर्थङ्करस्तीर्थकरो जिनेश्वरः ॥ २४ ॥
स्याद्वाद्यभयदसार्वाः सर्वज्ञः सर्वदर्शिकेवलिनौ ।
देवाधिदेवबोधिदपुरुषोत्तमवीतरागाप्ताः ॥ २५ ॥
१ एतस्यामवसर्पिण्यामृषभोऽजितशम्भवौ ।
अभिनन्दनः सुमतिस्ततः पद्मप्रभाभिधः ॥ २६ ॥
सुपार्श्वश्चन्द्रप्रभश्च सुविधिश्चाथ शीतलः ।
श्रेयांसो वासुपूज्यश्च विमलोऽनन्ततीर्थकृत् ॥ २७ ॥
धर्मः शान्तिः कुन्थुररो मल्लिश्च मुनिसुव्रतः ।
नमिर्नेमिः पार्श्वो वीरश्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २८ ॥
२ ऋषभो वृषभः ३श्रेयान् श्रेयांसः ४स्यादनन्तजिदनन्तः ।
५ सुविधिस्तु पुष्पदन्तो ६ मुनिसुव्रतसुव्रतौ तुल्यौ ॥ २९ ॥
७ अरिष्टनेमिस्तु नेमिर्वीरश्चरमतीर्थकृत् ।
महावीरो वर्धमानो देवार्यो ज्ञातनन्दनः ॥ ३० ॥

त्रिकालवित् (-द्), क्षीणाष्टकर्मा (-र्मन्), परमेष्ठी (-ष्ठिन्), अधीश्वरः, शम्भुः, स्वयम्भूः, भगवान् (-वत्), जगत्प्रभुः, तीर्थङ्करः, तीर्थकरः, जिनेश्वरः, स्याद्वादी (-दिन् । + अनेकान्तवादी, -दिन्), अभयदः, सार्वः, सर्वज्ञः, सर्वदर्शी (-र्शिन्), केवली (-लिन्), देवाधिदेवः, बोधिदः, (+ बोधदः), पुरुषोत्तमः, वीतरागः, आप्तः ॥

१. वर्तमान अवसर्पिणी (दश सागर कोड़ाकोड़ी परिमित समय-विशेष) में २४ तीर्थङ्कर हुए हैं, उनका क्रमशः वक्ष्यमाण १-१ नाम है—ऋषभः, अजितः, शम्भवः (+ सम्भवः), अभिनन्दनः, सुमतिः, पद्मप्रभः, सुपार्श्वः, चन्द्रप्रभः, सुविधिः, शीतलः, श्रेयांसः, (+ श्रेयांशः), वासुपूज्यः, विमलः, अनन्तः, धर्मः, शान्तिः, कुन्थुः, अरः, मल्लिः, मुनिसुव्रतः, नमिः (+ निमिः), नेमिः (+ नेमी -मिन्), पार्श्वः (+ पार्श्वनाथः), वीरः ॥

२. 'ऋषभदेव'के २ नाम हैं—ऋषभः, वृषभः ॥

३. 'श्रेयांसनाथ'के २ नाम हैं—श्रेयान् (-यस्), श्रेयांसः ॥

४. 'अनन्तजित्'के २ नाम हैं—अनन्तजित्, अनन्तः ॥

५. 'पुष्पदन्त'के २ नाम हैं—सुविधिः, पुष्पदन्तः ॥

६. 'मुनिसुव्रत'के २ नाम हैं—मुनिसुव्रतः, सुव्रतः ॥

७. 'नेमिनाथ'के २ नाम हैं—अरिष्टनेमिः, नेमिः (+ नेमी, -मिन्) ॥

८. 'महावीर स्वामी'के ६ नाम हैं—वीरः, चरमतीर्थकृत्, महावीरः, वर्द्धमानः, देवार्यः, ज्ञातनन्दनः ॥

१ गणा नवास्यर्षिसङ्घा २ एकादश गणाधिपाः ।
इन्द्रभूतिरग्निभूतिर्वायुभूतिश्च गोतमाः ॥ ३१ ॥
व्यक्तः सुधर्मा मण्डितमौर्यपुत्रावकम्पितः ।
अचलभ्राता मेतार्यः प्रभासश्च पृथक्कुलाः ॥ ३२ ॥
३ केवली चरमो जम्बूस्वाम्यऽथ प्रभवप्रभुः ।
शय्यम्भवो यशोभद्रः सम्भूतविजयस्ततः ॥ ३३ ॥
भद्रबाहुः ५स्थूलभद्रः श्रुतकेवलिनो हि षट् ।

---

१. इस महावीर स्वामीके नव ऋषियोंके समूह 'गण' हैं ।

विमर्शः—यद्यपि महावीरके ११ गणधर थे, तथापि केवल नव ही गणधरोंके विभिन्न 'वाचन' हुए । 'अकम्पित' तथा 'अचलभ्राता'के और 'मेतार्य' तथा 'प्रभास'के चूंके परस्पर समान ही 'वाचन' हुए थे, अत एव यहाँ महावीर स्वामीके नव ही गणोंका कहना असङ्गत नहीं होता । यही बात 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित'के—

"श्रीवीरनाथस्य गणधरेष्वेकादशस्वपि ।
द्वयोर्द्वयोर्वाचनयोः साम्यादासन् गणा नव ॥"

कथनसे भी पुष्ट होती है ॥

२. गणाधिप (गणधर, गणेश्वर) ११ हैं, उनका क्रमशः पृथक्-पृथक् १-१ नाम है—१ इन्द्रभूतिः, २ अग्निभूतिः, ३ वायुभूतिः, ४ व्यक्तः, ५ सुधर्मा (-र्मन्), ६ मण्डितः, ७ मौर्यपुत्रः, ८ अकम्पितः, ९ अचलभ्राता (-तृ), १० मेतार्यः और ११ प्रभासः । इनके कुल पृथक्-पृथक् हैं ।

विमर्शः—प्रथम तीन (इन्द्रभूति, अग्निभूति और वायुभूति) तथा अष्टम 'अकम्पित' गणधर 'गोतम' (+गौतम) वंशमें उत्पन्न हैं, ४र्थ 'व्यक्त' गणधर 'भारद्वाज' गोत्रोत्पन्न है, ५म 'सुधर्मा' (-र्मन् । +सुधर्म-र्म) गणधर "अग्निवैश्य' गोत्रमें उत्पन्न है, ६ष्ठ 'मण्डित' तथा ७म 'मौर्यपुत्र' गणधर क्रमशः 'वसिष्ठ' तथा 'कश्यप' गोत्रमें उत्पन्न हुए हैं, ९म 'अचलभ्राता' गणधर 'हारित' गोत्रोत्पन्न हैं और १०म 'मेतार्य' तथा ११श 'प्रभास' गणधर 'कौण्डिन्य' गोत्रोत्पन्न हैं ॥

३. इस अवसर्पिणी कालमें अन्यकी उत्पत्ति असम्भव है, अतः 'जम्बूस्वामी' (-मिन्) अन्तिम 'केवली' (-लिन्) हैं ॥

४. 'श्रुतकेवलियों'का क्रमशः १-१ नाम है, १ प्रभवप्रभुः, (+प्रभवः) २ शय्यम्भवः, ३ यशोभद्रः, ४ सम्भूतविजयः, ५ भद्रबाहुः और ६ स्थूलभद्रः ।

१ महागिरिसुहस्त्याद्या वज्रान्ता दशपूर्विणः ॥ ३४ ॥
२ इक्ष्वाकुकुलसम्भूताः स्याद् द्वाविंशतिरर्हताम् ।
मुनिसुव्रतनेमी तु हरिवंशसमुद्भवौ ॥ ३५ ॥
३ नाभिश्च जितशत्रुश्च जितारिरथ संवरः ।
मेघो धरः प्रतिष्ठश्च महासेननरेश्वरः ॥ ३६ ॥
सुग्रीवश्च दृढरथो विष्णुश्च वसुपूज्यराट् ।
कृतवर्मा सिंहसेनो भानुश्च विश्वसेनराट् ॥ ३७ ॥
सूरः सुदर्शनः कुम्भः सुमित्रो विजयस्तथा ।
समुद्रविजयश्चाश्वसेनः सिद्धार्थ एव च ॥ ३८ ॥
मरुदेवा विजया सेना सिद्धार्था च मङ्गला ।
ततः सुसीमा पृथ्वी लक्ष्मणा रामा ततः परम् ॥ ३९ ॥
नन्दा विष्णुर्जया श्यामा सुयशाः सुव्रताऽचिरा ।
श्रीर्देवी प्रभावती च पद्मा वप्रा शिवा तथा ॥ ४० ॥
वामा त्रिशला क्रमतः पितरो मातारोऽर्हताम् ।
४ स्याद्गोमुखो महायक्षस्त्रिमुखो यक्षनायकः ॥ ४१ ॥

ये ६ 'श्रुतकेवली' (-लिन्) कहे जाते हैं ॥

१. महागिरिः, सुहस्ती (-स्तिन्) आदिसे 'वज्रः' अर्थात् 'वज्रस्वामी' तक दशपूर्वी (-र्विन्) अर्थात् 'दशपूर्वधर' हैं। (इनके बाद 'दशपूर्वधरों'का होना असम्भव है) ॥

२. पूर्व (१।२६-२८)में कहे गये २४ तीर्थङ्करोंमें-से ('मुनिसुव्रत तथा नेमि' को छोड़कर) २२ तीर्थङ्कर 'इक्ष्वाकु' वंशमें और 'मुनिसुव्रत तथा नेमि'—ये दो तीर्थङ्कर 'हरिवंश'में उत्पन्न हैं ॥

३. पूर्वोक्त (१।२६-२८) 'ऋषभ' आदि २४ तीर्थङ्करोंके पिताओंका क्रमशः १-१ नाम है—नाभिः, जितशत्रुः, जितारिः, संवरः, मेघः, धरः, प्रतिष्ठः, महासेनः, सुग्रीवः, दृढरथः, विष्णुः, वसुपूज्यः, कृतवर्मा (-र्मन्), सिंहसेनः, भानुः, विश्वसेनः, सूरः, सुदर्शनः, कुम्भः, सुमित्रः, विजयः, समुद्रविजयः, अश्वसेनः, सिद्धार्थः ॥ तथा क्रमशः उक्त २४ तीर्थङ्करोंकी माताओंका १-१ नाम है—मरुदेवा (+मरुदेवी), विजया, सेना, सिद्धार्था, मङ्गला, सुसीमा, पृथ्वी, लक्ष्मणा, रामा, नन्दा, विष्णुः (+विश्ना), जया, श्यामा, सुयशाः (-शस्), सुव्रता, अचिरा, श्रीः, देवी, प्रभावती, पद्मा, वप्रा (विप्रा), शिवा, वामा, त्रिशला ॥

४. पूर्वोक्त (१।२६-२८) 'ऋषभ' आदि २४ तीर्थङ्करोंके उपासक यक्षोंका क्रमशः १-१ नाम है—गोमुखः, महायक्षः त्रिमुखः, यक्षनायकः, तुम्बुरुः,

तुम्बुरुः कुसुमश्चापि मातङ्गो विजयोऽजितः ।
ब्रह्मा यक्षेट् कुमारः षण्मुखपातालकिन्नराः ॥ ४२ ॥
गरुडो गन्धर्वो यक्षेट् कुबेरो वरुणोऽपि च ।
भृकुटिर्गोमेधः पार्श्वो मातङ्गोऽर्हदुपासकाः ॥ ४३ ॥
१ चक्रेश्वर्यजितबला दुरितारिश्च कालिका ।
महाकाली श्यामा शान्ता भृकुटिश्च सुतारका ॥ ४४ ॥
अशोका मानवी चण्डा विदिता चाङ्कुशा तथा ।
कन्दर्पा निर्वाणी बला धारिणी धरणप्रिया ॥ ४५ ॥
नरदत्ताऽथ गान्धार्यम्बिका पद्मावती तथा ।
सिद्धायिका चेति जैन्यः क्रमाच्छासनदेवताः ॥ ४६ ॥
२ वृषो गजोऽश्वः प्लवगः क्रौञ्चोऽब्जं स्वस्तिकः शशी ।
मकरः श्रीवत्सः खड्गो महिषः शूकरस्तथा ॥ ४७ ॥
श्येनो वज्रं मृगश्छागो नन्द्यावर्तो घटोऽपि च ।
कूर्मो नीलोत्पलं शङ्खः फणी सिंहोऽर्हतां ध्वजाः ॥ ४८ ॥
३ रक्तौ च पद्मप्रभवासुपूज्यौ
शुक्लौ तु चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ ।

कुसुमः, मातङ्गः, विजयः, अजितः, ब्रह्मा (-ह्मन्), यक्षेट् (-क्षेश्), कुमारः, षण्मुखः, पातालः, किन्नरः, गरुडः, गन्धर्वः, यक्षेट् (-क्षेश्), कुबेरः, वरुणः, भृकुटिः, गोमेधः, पार्श्वः, मातङ्गः ॥

१. पूर्वोक्त (१ । २६ – २८) 'ऋषभ' आदि २४ तीर्थङ्करोंकी शासन-देवताओं (जिन–शासनकी अधिष्ठात्री देवियों) का क्रमशः १–१ नामहै—चक्रेश्वरी (+अप्रतिचक्रा), अजितबला (+अजिता), दुरितारिः, कालिका, महाकाली, श्यामा (+अच्युतदेवी), शान्ता, भृकुटिः, सुतारका (+सुतारा), अशोका, मानवी, चण्डा, विदिता, अङ्कुशा (+अङ्कुशी) कन्दर्पा, निर्वाणी, बला, धारिणी, धरणप्रिया (+वैरोट्या), नरदत्ता, गान्धारी, अम्बिका (+कुष्माण्डी), पद्मावती, सिद्धार्थिका ॥

२. पूर्वोक्त (१ । २६ – २८) 'ऋषभ' आदि २४ तीर्थङ्करोंके दक्षिणाङ्गमें स्थित चिह्नोंका क्रमशः १–१ नाम है—वृषः, गजः, अश्वः, प्लवगः, क्रौञ्चः, अब्जम्, स्वस्तिकः, शशी (-शिन्), मकरः, श्रीवत्सः खड्गी (-ड्गिन्), महिषः, शूकरः, श्येनः, वज्रम्, मृगः, छागः, नन्द्यावर्तः, घटः, कूर्मः, नीलोत्पलम्, शङ्खः, फणी (-णिन्), सिंहः ॥

३. पद्मप्रभ तथा वासुपूज्य तीर्थङ्करोंका वर्ण 'लाल', चन्द्रप्रभ तथा पुष्पदन्त (सुविधि) तीर्थङ्करोंका वर्ण 'शुक्ल', नेमि तथा मुनिसुव्रत तीर्थङ्करोंका

कृष्णौ पुनर्नेमिमुनी, विनीलौ
श्रीमल्लिपार्श्वौ, कनकत्विषोऽन्ये ॥ ४६ ॥
१ उत्सर्पिण्यामतीतायां चतुर्विंशतिरर्हताम् ।
केवलज्ञानी निर्वाणी सागरोऽथ महायशाः ॥ ५० ॥
विमलः सर्वानुभूतिः श्रीधरो दत्ततीर्थकृत् ।
दामोदरः सुतेजाश्च स्वाम्यथो मुनिसुव्रतः ॥ ५१ ॥
सुमतिः शिवगतिश्चैवास्तागोऽथ निमीश्वरः ।
अनिलो यशोधराख्यः कृतार्थोऽथ जिनेश्वरः ॥ ५२ ॥
शुद्धमतिः शिवकरः स्यन्दनश्चाथ सम्प्रतिः ।
२ भाविन्यां तु पद्मनाभः शूरदेवः सुपार्श्वकः ॥ ५३ ॥
स्वयम्प्रभश्च सर्वानुभूतिर्देवश्रुतोदयौ ।
पेढालः पोट्टिलश्चापि शतकीर्तिश्च सुव्रतः ॥ ५४ ॥
अममो निष्कषायश्च निष्पुलाकोऽथ निर्ममः ।
चित्रगुप्तः समाधिश्च संवरश्च यशोधरः ॥ ५५ ॥
विजयो मल्लदेवौ चानन्तवीर्यश्च भद्रकृत् ।
३ एवं सर्वावसर्पिण्युत्सर्पिणीषु जिनोत्तमाः ॥ ५६ ॥

वर्ण कृष्ण (काला), मल्लिनाथ तथा पार्श्वनाथ तीर्थङ्करोंका वर्ण 'विनील' और शेष १६ तीर्थङ्करोंका वर्ण 'सुवर्णकी कान्तिके समान पीला' होता है ॥

विमर्श—परिशिष्टमें चक्रसंख्या १ देखें ।

१. गत उत्सर्पिणी काल (दशसागर परिमित कोड़ाकोड़ी वर्षोंका समय-विशेष) में २४ तीर्थङ्कर हुए हैं, उनका क्रमशः १–१ नाम है—केवलज्ञानी (–निन्), निर्वाणी (–णिन्), सागरः, महायशाः (–शस्), विमलः, सर्वानुभूतिः, श्रीधरः, दत्तः, दामोदरः, सुतेजाः (–जस्), स्वामी (–मिन्), मुनिसुव्रतः, सुमतिः, शिवगतिः, अस्तागः, निमिः (+निमीश्वरः), अनिलः, यशोधरः, कृतार्थः, जिनेश्वरः, शुद्धमतिः, शिवकरः, स्यन्दनः, सम्प्रतिः ॥

२. भावी (आगे-आगे आनेवाले) उत्सर्पिणीकालमें भी २४ तीर्थङ्कर होनेवाले हैं, उनका क्रमशः १–१ नाम है—पद्मनाभः, शूरदेवः, सुपार्श्वः (+सुपार्श्वकः), स्वयंप्रभः, सर्वानुभूतिः, देवश्रुतः, उदयः, पेढालः, पोट्टिलः, शतकीर्तिः, सुव्रतः, अममः, निष्कषायः, निष्पुलाकः, निर्ममः, चित्रगुप्तः, समाधिः, संवरः, यशोधरः, विजयः, मल्लः, देवः, अनन्तवीर्यः, भद्रकृत् (+भद्रः) ॥

३. (उपसंहार करते हैं—) इस प्रकार सब (वर्तमान, भूत तथा भावी) अवसर्पिणी तथा उत्सर्पिणी कालमें २४–२४ तीर्थङ्कर होते हैं ॥

चक्रसङ्ख्या १. वर्तमानावसर्पिणीभवतीर्थङ्कराणां नामवंशादेर्बोधकचक्रम् (११२६—४६) १६ पृष्ठे

क्रमांक	तीर्थङ्करनामानि	वंशनामानि	पितृनामानि	मातृनामानि	उपासकनामानि	शासनदेवतानाम	चिह्ननामानि	वर्णनामानि
१	ऋषभः	इक्ष्वाकुः	नाभिः	मरुदेवा(-वी)	गोमुखः	चक्रेश्वरी	वृषः (वृषभः)	सुवर्णवर्णः
२	अजितः	,,	जितशत्रुः	विजया	महायक्षः	अजितबला	गजः	,,
३	शम्भवः	,,	जितारिः	सेना	त्रिमुखः	दुरितारिः	अश्वः	,,
४	अभिनन्दनः	,,	शंवरः	सिद्धार्थी	यक्षनायकः	कालिका	प्लवगः	,,
५	सुमतिः	,,	मेघः	मङ्गला	तुम्बुरुः	महाकाली	क्रौञ्चः	,,
६	पद्मप्रभः	,,	धरः	सुसीमा	कुसुमः	श्यामा	अब्जम्	रक्तवर्णः
७	सुपार्श्वः	,,	प्रतिष्ठः	पृथ्वी	मातङ्गः	शान्ता	स्वस्तिकः	सुवर्णवर्णः
८	चन्द्रप्रभः	,,	महासेनः	लक्ष्मणा	विजयः	भृकुटिः	शशी	शुक्लवर्णः
९	सुविधिः	,,	सुग्रीवः	रामा	अजितः	सुतारका	मकरः	,,
१०	शीतलः	,,	दृढरथः	नन्दा	ब्रह्मा	अशोका	श्रीवत्सः	सुवर्णवर्णः
११	श्रेयांसः	,,	विष्णुः	विष्णुः	यक्षेट् (यक्षेशः)	मानवी	खड्गी	,,
१२	वासुपूज्यः	,,	वसुपूज्यः	जया	कुमारः	चण्डा	महिषः	रक्तवर्णः
१३	विमलः	,,	कृतवर्मा	श्यामा	षण्मुखः	विदिता	शूकरः	सुवर्णवर्णः
१४	अनन्त (जित्)	,,	सिंहसेनः	सुयशाः	पातालः	अंकुशा	श्येनः	,,
१५	धर्मः	,,	भानुः	सुव्रता	किन्नरः	कन्दर्पा	वज्रम्	,,
१६	शान्तिः	,,	विश्वसेनः	अचिरा	गरुडः	निर्वाणा	मृगः	,,
१७	कुन्थुः	,,	सूरः	श्रीः	गन्धर्वः	बला	छागः	,,
१८	अरः	,,	सुदर्शनः	देवी	यक्षेट् (यक्षेशः)	धारिणी	नन्द्यावर्तः	,,
१९	मल्लिः	,,	कुम्भः	प्रभावती	कुबेरः	धरणप्रिया	घटः	विनीलः
२०	मुनिसुव्रतः	हरिवंशः	सुमित्रः	पद्मा	वरुणः	नरदत्ता	कूर्मः	कृष्णवर्णः
२१	नमिः	इक्ष्वाकुः	विजयः	वप्रा	भृकुटिः	गान्धारी	नीलोत्पलम्	,,
२२	नेमिः	हरिवंशः	समुद्रविजयः	शिवा	गोमेधः	अंबिका	शङ्खः	सुवर्णवर्णः
२३	पार्श्वः	इक्ष्वाकुः	अश्वसेनः	वामा	पार्श्वः	पद्मावती	फणी (सर्पः)	विनीलः
२४	(महा) वीरः	,,	सिद्धार्थः	त्रिशला	मातङ्गः	सिद्धायिका	सिंहः	सुवर्णवर्णः

१ तेषां च देहोऽद्भुतरूपगन्धो निरामयः स्वेदमलोज्झितश्च ।
श्वासोऽब्जगन्धो रुधिरामिषन्तु गोक्षीरधाराधवलं ह्यविस्रम् ॥ ५७ ॥
आहारनीहारविधिस्त्वदृश्यश्चत्वार एतेऽतिशयाः सहोत्थाः ।
२ क्षेत्रे स्थितिर्योजनमात्रकेऽपि नृदेवतिर्यग्जनकोटिकोटेः ॥ ५८ ॥
वाणी नृतिर्यक्सुरलोकभाषासंवादिनी योजनगामिनी च ।
भामण्डलं चारु च मौलिपृष्ठे विडम्बिताहर्पतिमण्डलश्रीः ॥ ५९ ॥
साग्रे च गव्यूतिशतद्वये रुजावैरेतयो मार्यतिवृष्ट्यवृष्टयः ।
दुर्भिक्षमन्यस्वकचक्रतो भयं स्यान्नैत एकादश कर्मघातजाः ॥ ६० ॥

---

१. उन तीनों कालोंमें होनेवाले २४–२४ तीर्थङ्करोंके जन्मके साथ ही होनेवाले ४ अतिशय होते हैं; उनमें-से प्रथम अतिशय यह है कि—उन तीर्थङ्करोंके शरीरका रूप तथा गन्ध अद्भुत होता है, उनके शरीरमें रोग, पसीना, तथा मैल नहीं होती । द्वितीय अतिशय यह है कि—उन तीर्थङ्करोंका श्वास कमलके समान सुरभि होता है । तृतीय अतिशय यह है कि—उन तीर्थङ्करोंका रक्त गौके दूधकी धारके समान श्वेत होता है तथा मांस अपक्व मांसके समान गंधवाला नहीं होता है । और चतुर्थ अतिशय यह है कि—उन तीर्थङ्करोंका भोजन और मलमूत्रत्याग सामान्य चर्मचक्षुसे नहीं देखा जा सकता, (किन्तु अवधिलोचनवाले पुरुषसे ही देखा जा सकता है) ॥

२. पूर्वोक्त (१।२६–२८) तीर्थङ्करोंके ज्ञानावरणीय कर्मके क्षय होनेसे उत्पन्न ११ अतिशय होते हैं । १म अतिशय—केवल एक योजनमात्र स्थान (समवसरण-भूमि) में कोटि-कोटि मनुष्यों, देवों तथा तीर्यञ्चोंकी स्थिति हो जाती है । २य अतिशय—उनकी वाणी (अर्द्धमागधी भाषा) मनुष्यों तिर्यञ्चों तथा देवोंकी भाषामें परिवर्तित हो जाती है अर्थात् तीर्थङ्कर अर्द्धमागधीरूप एक ही भाषामें उपदेश देते हैं, किन्तु वह मनुष्य तिर्यञ्च तथा देवलोगोंकी भाषामें बदल जाती है, अत एव एक ही भाषाको वे तीनों अपनी-अपनी भाषामें ग्रहण करते हैं तथा वह तीर्थङ्करोक्त वाणी एक योजनतक सुनायी पड़ती है । ३ य अतिशय—तीर्थङ्करोंके शिरके पिछले भागमें सूर्यमण्डलकी शोभाके समान तेजःपूर्ण और सुन्दर भामण्डल (प्रभासमूह) होता है । क्रमशः ४–११ श अतिशय—साग्र दो सौ गव्यूति अर्थात् एक सौ पच्चीस योजनतक ज्वर आदि रोग, परस्पर विरोध, ईतियां (धान्यादिको नष्ट करनेवाले चूहा तथा पशु-पक्षी आदिके उपद्रवविशेष, मारी (किसी उपद्रवसे सामूहिक मृत्यु), अत्यधिक वृष्टि, वृष्टिका सर्वथा अभाव (सूखा), दुर्भिक्ष और अपने या दूसरे राष्ट्रसे भय नहीं होते हैं ॥

१ खे धर्मचक्रं चमराः सपादपीठं मृगेन्द्रासनमुज्ज्वलञ्च ।
छत्रत्रयं रत्नमयध्वजोऽङ्घ्रिन्यासे च चामीकरपङ्कजानि ॥ ६१ ॥
वप्रत्रयं चारु चतुर्मुखाङ्गता चैत्यद्रुमोऽधोवदनाश्च कण्टकाः ।
द्रुमानतिर्दुन्दुभिनाद उच्चकैर्वातोऽनुकूलः शकुनाः प्रदक्षिणाः ॥६२॥
गन्धाम्बुवर्षं बहुवर्णपुष्पवृष्टिः कचश्मश्रुनखाप्रवृद्धिः ।
चतुर्विधाऽमर्त्यनिकायकोटिर्जघन्यभावादपि पार्श्वदेशे ॥ ६३ ॥
ऋतूनामिन्द्रियार्थानामनुकूलत्वमित्यमी ।
एकोनविंशतिर्दैव्याश्चतुस्त्रिंशच्च मीलिताः ॥ ६४ ॥
२ संस्कारवत्त्वमौदात्यमुपचारपरीतता ।
मेघगम्भीरघोषत्वं प्रतिनादविधायिता ॥ ६५ ॥

---

१. उन तीर्थङ्करोंके देवकृत १६ अतिशय होते हैं--क्रमशः १-५ म अतिशय—आकाशमें धर्म-प्रकाशक चक्र होता है, आकाशमें चामर (चँवर) होते हैं, आकाशमें पादपीठ (पैर रखनेके लिए आसन) के सहित स्फटिकमय उज्ज्वल सिंहासन होता है, आकाशमें तीन छत्र होते हैं, और आकाशमें ही रत्नमय ध्वज (झण्डा) होता है । ६ष्ठ अतिशय—पैर रखनेके लिए सुवर्णरचित कमल होते हैं । ७म अतिशय—समवसरणमें रत्न, सुवर्ण तथा चाँदीके बने सुन्दर तीन वप्र (चहारदीवारियाँ) होते हैं । ८ म अतिशय—चार मुखोंवाले गात्र होते हैं । ६ म अतिशय—चैत्यनामक 'अशोक' वृक्ष होता है । १० म अतिशय—काँटोंका मुख नीचेकी ओर होता है । ११ श अतिशय—पेड़ (फल-फूलकी अधिकतासे) अत्यन्त झुके हुए रहते हैं । १२ श अतिशय—दुन्दुभिका शब्द लोकमें फैलनेवाला उच्च स्वरसे युक्त होता है । १३ श अतिशय—सुखप्रद अनुकूल वायु बहती है । १४ श अतिशय—पक्षिगण प्रदक्षिण क्रमसे (दहने भाग होकर) उड़ते हैं । १५ श अतिशय—सुगन्धित जलकी वृष्टि होती है । १६ श अतिशय—घुटनेतक ऊँची पांच रंगवाले फूलोंकी वृष्टि होती है । १७ श अतिशय—बाल, रोएँ, दाढ़ी, मूँछ और नख नहीं बढ़ते हैं । १८ श अतिशय—समीपमें कमसे कम एक कोटि भवनपति आदि चतुर्विध (१ भवनपति या भवनवासी, २ व्यन्तर, ३ ज्योतिष्क और ४ वैमानिक) देवोंका निवास रहता है । १६ तम अतिशय—रूप रस गन्ध स्पर्श और शब्दसे वसन्त आदि ऋतु सर्वदा अनुकूल रहते हैं । इस प्रकार देवकृत ये १६ अतिशय, सहज ४ अतिशय और ज्ञानावरणीय कर्मक्षयजन्य ११ अतिशय (१६+४+११=३४) कुल मिलाकर ३४ अतिशय उन तीर्थङ्करोंके होते हैं ॥

२. उन तीर्थङ्करोंकी वाणीके वक्ष्यमाण ३५ अतिशय होते हैं—१ संस्कारसे युक्त, २ उच्च स्वरयुक्त, ३ अग्राम्य, ४ मेघके तुल्य गम्भीर ध्वनिवाला, ५ प्रति-

दक्षिणत्वमुपनीतरागत्वं च महार्थता ।
अव्याहतत्वं शिष्टत्वं संशयानामसम्भवः ॥ ६६ ॥
निराकृतान्योत्तरत्वं हृदयङ्गमताऽपि च ।
मिथः साकाङ्क्षता प्रस्तावौचित्यं तत्त्वनिष्ठता ॥ ६७ ॥
अप्रकीर्णप्रसृतत्वमस्वश्लाघाऽन्यनिन्दता ।
आभिजात्यमतिस्निग्धमधुरत्वं प्रशस्यता ॥ ६८ ॥
अमर्मवेधितौदार्यं धर्मार्थप्रतिबद्धता ।
कारकाद्यविपर्यासो विभ्रमादिवियुक्तता ॥ ६९ ॥
चित्रकृत्त्वमद्भुतत्वं तथाऽनतिविलम्बिता ।
अनेकजातिवैचित्र्यमारोपितविशेषता ॥ ७० ॥
सत्त्वप्रधानता वर्णपदवाक्यविविक्तता ।
अव्युच्छित्तिरखेदित्वं पञ्चत्रिंशच्च वाग्गुणाः ॥ ७१ ॥
१ अन्तराया दानलाभवीर्यभोगोपभोगगाः ।

ध्वनिसे युक्त, ६ सरल, ७ मालव कैशिकी आदि ग्रामरागसे युक्त, ८ अधिक अर्थवाला, ९ पूर्वापर वाक्योंके विरोधाभाववाला, १० शिष्ट (अभिमत सिद्धान्तका सूचक तथा वक्ताकी शिष्टताका सूचक), ११ सन्देहहीन, १२ दूसरोंके उत्तरोंका स्वयं निराकरण करनेवाला, १३ हृदयग्राह्य, १४ पदों तथा वाक्योंकी परस्परापेक्षाओंसे युक्त, १५ प्रस्तावनाके अनुकूल, १६ विवक्षित वस्तुस्वरूपके अनुकूल, १७ असम्बद्ध अधिकार तथा अतिविस्तारसे हीन, १८ आत्मप्रशंसा तथा परनिन्दासे हीन, १९ वक्ता या वक्तव्यकी भूमिकाके अनुकूल, २० घृत गुड़के तुल्य अत्यन्त स्निग्ध तथा मधुर, २१ प्रशंसित, २२ दूसरेका मर्मवेध नहीं करनेवाला, २३ उदार (वक्तव्य अर्थसे पूर्ण), २४ धर्मार्थयुक्त, २५ कारक-काल-वचन-लिङ्ग आदिके विपर्ययरूप दोषसे रहित, २६ वक्ताके भ्रान्ति आदि मानसिक दोषोंसे हीन, २७ उत्तरोत्तर कौतूहल-(उत्कण्ठा-)वर्द्धक, २८ अद्भुत, २९ अधिक-विलम्बित्व दोषसे हीन, ३० वर्णनीय वस्तुके स्वरूपवर्णनके संश्रयसे विचित्र, ३१ अन्य वचनोंसे विशिष्ट, ३२ सत्त्वप्रधान (साहसयुक्त), ३३ वर्ण, पद तथा वाक्योंके पृथक्त्वसे युक्त , ३४ विवक्षितार्थकी सम्यक् सिद्धि होनेतक निरन्तर वचनोंकी प्रमेयतायुक्त और ३५ आयासका अनुत्पादक -ऐसे तीर्थङ्करोंके वचन होते हैं, अत एव इन गुणोंसे युक्त होना तीर्थङ्करोंके वचनोंके अतिशय (गुण) हैं। इनमें प्रथम सात शब्दकी अपेक्षासे और शेष २८ अर्थकी अपेक्षासे उन तीर्थङ्करोंके वचनोंके अतिशय (गुण) होते हैं, ऐसा जानना चाहिये ॥

१. उन 'ऋषभ' आदि तीर्थङ्करोंमें ये १८ दोष नहीं होते हैं—१ दानगत अन्तराय, २ लाभगत अन्तराय, ३ वीर्यगत अन्तराय, ४ माला आदिका

हासो रत्यरती भीतिर्जुगुप्सा शोक एव च ॥ ७२ ॥
कामो मिथ्यात्वमज्ञानं निद्रा चाविरतिस्तथा ।
रागो द्वेषश्च नो दोषास्तेषामष्टादशाप्यमी ॥ ७३ ॥
१ महानन्दोऽमृतं सिद्धिः कैवल्यमपुनर्भवः ।
शिवं निःश्रेयसं श्रेयो निर्वाणं ब्रह्म निर्वृतिः ॥ ७४ ॥
महोदयः सर्वदुःखक्षयो निर्याणमक्षरम् ।
मुक्तिर्मोक्षोऽपवर्गो२ऽथ मुमुक्षुः श्रमणो यतिः ॥ ७५ ॥
वाचंयमो यती साधुरनगार ऋषिर्मुनिः ।
निर्ग्रन्थो भिक्षु३रस्य स्वं तपोयोगशमादयः ॥ ७६ ॥
४ मोक्षोपायो योगो ज्ञानश्रद्धानचरणात्मकः ।
५ अभाषणं पुनर्मौनं ६ गुरुर्धर्मोपदेशकः ॥ ७७ ॥
७ अनुयोगकृदाचार्यः —

भोगगत अन्तराय, ५ स्त्री आदिका उपभोगगत अन्तराय, ६ हास, ७ किसी पदार्थमें प्रीति, ८ किसी पदार्थमें द्वेष, ९ भय, १० घृणा, ११ शोक, १२ काम (सुरत), १३ मिथ्यात्व (दर्शनमोह), १४ अज्ञान, १५ निद्रा, १६ अविरति, १७ राग (सुखज्ञाताके सुख-स्मृतिपूर्वक सुख या उसके साधनरूप इष्ट विषयमें लोभ), और १८ द्वेष (दुःखज्ञाताके दुःख-स्मृतिपूर्वक दुःख या उसके साधनरूप अनभिमत विषयमें क्रोध) ॥

१. 'मोक्ष'के १८ नाम हैं—महानन्दः, अमृतम् , सिद्धिः, कैवल्यम् , अपुनर्भवः, शिवम् , निःश्रेयसम् , श्रेयः (-यस्), निर्वाणम् , ब्रह्म (-ह्मन् , पु न), निर्वृतिः, महोदयः, सर्वदुःखक्षयः, निर्याणम्, अक्षरम्, मुक्तिः, मोक्षः, अपवर्गः ॥

शेषश्चात्र—निर्वाणे स्यात् शीतीभावः । शान्तिर्नैश्चिन्त्यमन्तिकः ।

२. 'मुमुक्षु' (मुक्ति चाहनेवाला, मुनि) के ११ नाम हैं—मुमुक्षुः, श्रमणः (+श्रवणः), यतिः, वाचंयमः, यती (-तिन्), साधुः, अनगारः, ऋषिः, मुनिः (पु स्त्री), निर्ग्रन्थः, भिक्षुः ॥

३. इस 'मुमुक्षु'का धन 'तप, योग, शम, आदि ("आदि' शब्दसे 'क्षमा,······" का संग्रह है) हैं, अत एव मुनिके यौगिक नाम—तपोधनः, योगी (-गिन्), शमभृत् , क्षान्तिमान् (-मत्),······होते हैं ॥

४. यथास्थिति तत्त्वका ज्ञान, श्रद्धान (सम्यक् तत्त्वमें रुचि), और चरित्र—ये तीनों मोक्षके उपाय हैं ॥

५. 'मौन, चुप रहना' के २ नाम हैं—अभाषणम् , मौनम् (पु न) ॥

६. 'धर्मके उपदेशक' का १ नाम है—गुरुः (+धर्मोपदेशकः) ॥

७. 'अनुयोग (व्याख्या) करनेवाले'का १ नाम है—आचार्यः ॥

—१ उपाध्यायस्तु पाठकः ।
२ अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती गणिश्च सः ॥ ७८ ॥
३ शिष्यो विनेयोऽन्तेवासी ४ शैक्षः प्राथमकल्पिकः ।
५ सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवो ६ विवेकः पृथगात्मता ॥ ७९ ॥
७ एकब्रह्मव्रताचारा मिथः स्युर्सब्रह्मचारिणः ।
८ स्यात्पारम्पर्यमाम्नायः सम्प्रदायो गुरुक्रमः ॥ ८० ॥
९ व्रतादनं परिव्रज्या तपस्या नियमस्थितिः ।
१० अहिंसासूनृतास्तेयब्रह्माकिञ्चनताः यमाः ॥ ८१ ॥
११ नियमाः शौचसन्तोषौ स्वाध्यायतपसी अपि ।
देवताप्रणिधानञ्च १२ करणं पुनरासनम् ॥ ८२ ॥
१३ प्राणायामः प्राणयमः श्वासप्रश्वासरोधनम् ।

---

१. 'उपाध्याय' (पढ़ानेवाले) के २ नाम हैं—उपाध्यायः, पाठकः ॥

२. 'आचारादि अङ्गयुक्त प्रवचन (आगम) को पढ़े हुए'के २ नाम हैं—अनूचानः, गणिः ॥

३. 'शिष्य, छात्र'के ३ नाम हैं—शिष्यः, विनेयः, अन्तेवासी (–सिन्) ॥

४. 'प्रथम कल्पको पढ़नेवाले'के २ नाम हैं—शैक्षः, प्राथमकल्पिकः ॥

५. 'एक गुरुके पास पढ़नेवालों'के २ नाम हैं—सतीर्थ्याः, एकगुरवः ॥

६. 'विवेक'के २ नाम हैं—विवेकः, पृथगात्मता ॥

७. एक समान शास्त्र पढ़नेवाले, व्रत करनेवाले और आचार रखनेवाले परस्परमें (एक दूसरेके प्रति) 'सब्रह्मचारी' (–रिन्) कहे जाते हैं ॥

८. 'सम्प्रदाय'के ४ नाम हैं—पारम्पर्यम्, आम्नायः, सम्प्रदायः, गुरुक्रमः ॥

९. 'व्रत ग्रहण करने'के ४ नाम हैं—व्रतादानम्, परिव्रज्या (+प्रव्रज्या), तपस्या, नियमस्थितिः ॥

१०. अहिंसा, सूनृतम् (प्रिय तथा सत्य वचन), अस्तेयः (विना दिये किसीकी कोई वस्तु नहीं लेना), ब्रह्मचर्यम् (अष्टविध मैथुनका त्याग), अकिञ्चनता (परिग्रहका त्याग)—इन पाँचोंको 'यमाः' (अर्थात् 'यम') कहते हैं ॥

११. शौचम् (शारीरिक तथा मानसिक शुद्धि), सन्तोषः, स्वाध्यायः (अध्ययन, या प्रणवमंत्रका जप), तपः (–स् । चान्द्रायणादि व्रतोंका पालन), देवताप्रणिधानम् (देवोंका ध्यान)—इन पाँचोंको 'नियमाः' (अर्थात् 'नियम') कहते हैं ॥

१२. 'आसन' (सिद्धासन, पद्मासन आदि) के २ नाम हैं—**करणम्**, आसनम् ॥

१३. 'प्राणायाम' श्वास लेने अर्थात् नाकसे बाहरी वायुको भीतर

१ प्रत्याहारस्त्विन्द्रियाणां विषयेभ्यः समाहृतिः ॥ ८३ ॥
२ धारणा तु क्वचिद्ध्येये चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ।
३ ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसन्ततिः ॥ ८४ ॥
४ समाधिस्तु तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् ।
५ एवं योगो यमाद्यङ्गैरष्टभिः सम्मतोऽष्टधा ॥ ८५ ॥
६ श्वःश्रेयसं शुभशिवे कल्याणं श्वोवसीयसं श्रेयः ।
क्षेमं भावुकभविककुशलमङ्गलभद्रमद्रशस्तानि ॥ ८६ ॥

इत्याचार्य्यहेमचन्द्रविरचितायाम् "अभिधानचिन्तामणिनाममालायां"
प्रथमो 'देवाधिदेवकाण्डः' समाप्तः ॥ १ ॥



खींचने और प्रश्वास (उसे रोकनेके बाद पुनः उस कोष्ठस्थ वायुको बाहर छोड़ने) के २ नाम हैं—प्राणायामः, प्राणयमः ॥

१. नेत्रादि इन्द्रियोंको रूप आदि विषयोंसे हटाने'का १ नाम है—प्रत्याहारः ॥

२. 'ध्यान करने योग्य देव आदिमें चित्तको स्थिर करने'का १ नाम है—धारणा ॥

३. 'ध्यान करने योग्य देवादिमें ध्येयके आलम्बनके समान प्रवाह होने'का १ नाम है—ध्यानम् ॥

४. 'अर्थमात्रके आभासरूप ध्यान'का १ नाम है—समाधिः ॥

५. यम आदि आठ अङ्गों (१ यम, २ नियम, ३ आसन, ४ प्राणायाम, ५ प्रत्याहार, ६ धारणा, ७ ध्यान और ८ समाधि) से 'योग' ८ प्रकारका होता है ॥

६. 'शुभ, कल्याण'के १४ नाम हैं—श्वःश्रेयसम्, शुभम्, शिवम्, कल्याणम्, श्वोवसीयसम्, श्रेयः (-यस्), क्षेमम् (पु न), भावुकम्, भविकम्, कुशलम्, मङ्गलम्, भद्रम् (+भन्द्रम्), मद्रम्, शस्तम् (+प्रशस्तम्) ॥

शेषश्चात्र—भद्रे भव्यं काम्यं सुकृतसुनृते ।

इस प्रकार साहित्य-व्याकरणाचार्यादिपदभूषित मिश्रोपाह्व
श्री'हरगोविन्द शास्त्रि'विरचित 'मणिप्रभा' व्याख्यामें
प्रथम 'देवाधिदेवकाण्ड' समाप्त हुआ ॥१॥



अथ देवकाण्डः ॥ २ ॥

१ स्वर्गस्त्रिविष्टपं द्यौदिवौ भुविस्तविषताविषौ नाकः ।
गौस्त्रिदिवमूर्ध्वलोकः सुरालयस्तत्सदस्त्वमराः ॥ १ ॥
देवाः सुपर्वसुरनिर्जरदेवतभु-
बर्हिर्मुखानिमिषदैवतनाकिलेखाः ।
वृन्दारकाः सुमनसस्त्रिदशा अमर्त्याः
स्वाहास्वधाक्रतुसुधाभुज आदितेयाः ॥ २ ॥
गीर्वाणा मरुतोऽस्वप्ना विबुधा दानवारयः ।

---

१. 'स्वर्ग' के १२ नाम हैं—स्वर्गः, त्रिविष्टपम् (न), द्यौः (=द्यो), द्यौः (=दिव्), भुविः (३ स्त्री), तविषः, ताविषः, नाकः (पु न), गौः (=गो, पु स्त्री), त्रिदिवम् (पु न), ऊर्ध्वलोकः, सुरालयः (शे० पु) ॥

शेषश्चात्र—फलोदयो मेरुपृष्ठं वासवावाससैरिकौ ।
दिदिविर्दीदिविद्युश्च दिवञ्च स्वर्गवाचकाः ॥

२. 'देवों' के २७ नाम हैं—स्वर्गसदः (–द् । यौ०–द्युसद्मानः,–द्मन् ,······), अमराः, देवाः, सुपर्वाणः (-र्वन्), सुराः, निर्जराः, देवताः (स्त्री), ऋभवः (–भुः), बर्हिर्मुखाः, अनिमिषाः, दैवतानि (पु न), नाकिनः (–किन् । यौ०–स्वर्गिणः,-गिन् , त्रिदिवाधीशाः,·········), लेखाः, वृन्दारकाः, सुमनसः (–नस्), त्रिदशाः, अमर्त्याः, स्वाहाभुजः, स्वधाभुजः, क्रतुभुजः, सुधाभुजः (४ –भुज् । यौ०—स्वाहाशनाः, स्वधाशनाः, यज्ञाशनाः, अमृतान्धसः –न्धस् ,·········), आदितेयाः (यौ०–आदित्याः, अदितिजाः,·········), गीर्वाणाः, मरुतः (–रुत्), अस्वप्नाः, विबुधाः, दानवारयः (–रि । यौ०—दनुजद्विषः, –द्विष् ,········ । शे० पु) ॥

शेषाश्चात्र—निलिम्पाः कामरूपाश्च साध्याः शोभाश्चिरायुषः ।
पूजिता मर्त्यमहिता सुबाला वायुभाः सुराः ॥
तथा—द्वादशार्काः वसवोऽष्टौ विश्वेदेवास्त्रयोदश ।
षट्त्रिंशत्तुषिताश्चैव षष्टिराभास्वरा अपि ॥
षट्त्रिंशदधिके माहाराजिकाश्च शते उभे ।
रुद्रा एकादशैकोनपञ्चाशद्वायवोऽपरे ॥
चतुर्दश तु वैकुण्ठाः सुशर्माणः पुनर्दश ।
साध्याश्च द्वादशेत्याद्या विज्ञेया 'गणदेवताः' ॥

१ तेषां यानं विमानोऽन्धः पीयूषममृतं सुधा ॥ ३ ॥
३ असुरा नागास्तडितः सुपर्णका वह्नयोऽनिलाः स्तनिताः ।
उदधिद्वीपदिशो दश भवनाधीशाः कुमारान्ताः ॥ ४ ॥
४ स्युः पिशाचा भूता यक्षा राक्षसाः किन्नरा अपि ।
किम्पुरुषा महोरगा गन्धर्वा व्यन्तरा अमी ॥ ५ ॥
५ ज्योतिष्काः पञ्च चन्द्रार्कग्रहनक्षत्रतारकाः ।
६ वैमानिकाः पुनः कल्पभवा द्वादश ते त्वमी ॥ ६ ॥
सौधर्मैशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकजाः ।

---

१. 'उन देवोंके यान' (विमान, सवारी) का १ नाम है—विमानः (पु न । +व्योमयानम् । उन देवोंका यान विमान है, ऐसा सम्बन्ध होनेसे यौ० द्वारा—"विमानयानाः, वैमानिकाः, विमानिकाः,……" नाम भी 'देवों'के होते हैं) ॥

२. 'अमृत' (देवोंके भोज्य पदार्थ) के ३ नाम हैं—पीयूषम् (+पेयूषम्), अमृतम् (२ न), सुधा (स्त्री । +समुद्रनवनीतम् । यौ०—देवान्धः-न्धस्, देवान्नम्, देवभोज्यम्, देवाहारः,……) ॥

३. (जैन-सिद्धान्तके अनुसार "१ भवनपति (या भवनवासी), २ व्यन्तर, ३ ज्योतिष्क और ४ वैमानिक" भेदसे देवोंके ४ भेद होते हैं; उनमेंसे क्रमप्राप्त 'भवनपति' देवोंके नामको पहले कहते हैं—) ये 'भवनपति' (या—'भवनवासी') देव १० होते हैं—असुरकुमाराः, नागकुमाराः, तडित्कुमाराः, सुपर्णकुमाराः, वह्निकुमाराः, अनिलकुमाराः, स्तनितकुमाराः, उदधिकुमाराः, द्वीपकुमाराः, दिक्कुमाराः ॥

विमर्श—ये देव कुमारके समान देखनेमें सुन्दर, मृदु, मधुर एवं ललित गतिवाले, शृङ्गार सुन्दर रूप एवं विकारवाले और कुमारके समान ही उद्धत वेष भाषा भूषण शास्त्र आवरण यान तथा वाहनवाले, तीव्र रागवाले एवं क्रीडापरायण होते हैं, अत एव ये 'कुमार' कहे जाते हैं ॥

४. (अब क्रमप्राप्त द्वितीय 'व्यन्तर' देवोंको कहते हैं—) ये 'व्यन्तर' देव ८ होते हैं—पिशाचाः, भूताः, यक्षाः, राक्षसाः, किन्नराः, किम्पुरुषाः, महोरगाः, गन्धर्वाः ॥

५. (अब क्रमप्राप्त तृतीय 'ज्योतिष्क' देवोंको कहते हैं—) ये 'ज्योतिष्क' देव ५ होते हैं—चन्द्रः, अर्कः, ग्रहाः, नक्षत्राणि, तारकाः ॥

६. (अब सबसे अन्तमें क्रमप्राप्त चतुर्थ 'वैमानिक' देवोंको कहते हैं—) इन 'वैमानिक' देवोंके २ भेद हैं—१ कल्पभव और २ कल्पातीत । उनमें-से प्रथम 'कल्पभव' वैमानिक देव १२ होते हैं—सौधर्मजाः, ऐशानजाः, सनत्कु-

शुक्रसहस्रारानतप्राणतजा आरणाच्युतजाः ॥ ७ ॥
कल्पातीता नव ग्रैवेयकाः पञ्च त्वनुत्तराः ।
१ निकायभेदादेवं स्युर्देवाः किल चतुर्विधाः ॥ ८ ॥
२ आदित्यः सवितार्यमा खरसहस्रोष्णांशुरंशू रवि-
मार्तण्डस्तरणिर्गभस्तिररुणो भानुर्नभोऽहर्मणिः ।
सूर्योऽर्कः किरणो भगो ग्रहपुषः पूषा पतङ्गः खगो

मारजाः, माहेन्द्रजाः, ब्रह्मजाः, लान्तकजाः, महाशुक्रजाः, सहस्रारजाः, आनतजाः, प्राणतजाः, आरणजाः, अच्युतजाः । द्वितीय 'कल्पातीत' वैमानिक देव १४ होते हैं, उनमें-से ९ 'लोकपुरुष'के ग्रैवेयक अर्थात् कण्ठभूषण हैं तथा ५ अनुत्तर हैं ॥

विमर्श—कल्पातीत ग्रैवेयक देव ३ हैं, तथा प्रत्येकके ३–३ भेद होनेसे वे समष्टिरूपमें ९ हो जाते हैं, और 'विजयः, वैजयन्तः, जयन्तः, अपराजितः, सर्वार्थसिद्धः (+सर्वार्थसिद्धिः)—ये ५ 'अनुत्तर कल्पातीत' वैमानिक देव हैं, इस प्रकार (३ × ३ = ९ + ५ = १४) 'कल्पातीत' वैमानिक देवके १४ भेद हो जाते हैं ॥

१. इस प्रकार निवास-स्थानके भेदसे देवोंके ४ भेद होते हैं ।

विमर्श—इनमें-से प्रथम 'भवनपति' देव एक लाख अस्सी हजार योजन परिमित रत्नप्रभामें एक-एक हजार योजन छोड़कर जन्म-ग्रहण करते हैं । द्वितीय 'व्यन्तर' देव उस (रत्नप्रभा) के ऊपर छोड़े गये एक हजार योजनके ऊपर तथा नीचे (दोनों ओर) एक-एक सौ योजन छोड़कर बीचवाले आठ सौ योजनमें जन्म-ग्रहण करते हैं । तृतीय 'ज्योतिष्क' देव समतल भू-भाग से सात सौ नब्बे योजन ऊपर चढ़कर एक सौ दस योजन पिण्डवाले तथा लोकान्त-से कुछ कम आकाशदेशमें जन्म-ग्रहण करते हैं और चतुर्थ 'वैमानिक' देव डेढ़ रज्जु चढ़कर सर्वार्थसिद्धि विमानके अन्त सौधर्मादि कल्पोंमें जन्म-ग्रहण करते हैं । अपने-अपने नियत स्थानोंमें उत्पन्न भवनपत्यादि देव 'लवण-समुद्र, मन्दर पर्वत, वर्षधर पर्वत एवं जङ्गलों'में निवास तो करते हैं, किन्तु पूर्वोक्त नियत स्थानोंके अतिरिक्त स्थानोंमें इनकी उत्पत्ति नहीं होती, अत एव यहाँ मूल (१।८)में निवासार्थ या सहार्थमें 'निकाय' शब्दका प्रयोग किया गया है ॥

२. 'सूर्य'के ७२ नाम हैं—आदित्यः, सविता (–तृ), अर्यमा (–मन्), खरांशुः, सहस्रांशुः, उष्णांशुः (यौ०—खररश्मिः, सहस्ररश्मिः, शीतेतर-रश्मिः,………), अंशुः, रविः, मार्तण्डः, तरणिः (पु स्त्री), गभस्तिः, अरुणः, भानुः, नभोमणिः, अहर्मणिः (यौ०—व्योमरत्नम्, दिनरत्नम्, द्युमणिः, दिनमणिः,………), सूर्यः, अर्कः, किरणः, भगः, ग्रहपुषः, पूषा (–षन्),

मार्तण्डो यमुनाकृतान्तजनकः प्रद्योतनस्तापनः ॥ ९ ॥
ब्रध्नो हंसश्चित्रभानुर्विवस्वान् सूरस्त्वष्टा द्वादशात्मा च हेलिः ।
मित्रो ध्वान्तारातिरब्जांशुहस्तश्चक्राब्जाहर्बान्धवः सप्तसप्तिः ॥ १० ॥
दिवादिनाहर्दिवसप्रभाविभाभासः करः स्यान्मिहिरो विरोचनः ।
ग्रहाब्जिनीगोद्युपतिर्विकर्तनो हरिः शुचीनौ गगनाद्ध्वजाध्वगौ ॥ ११ ॥
हरिदश्वो जगत्कर्मसाक्षी भास्वान् विभावसुः ।
त्रयीतनुर्जगच्चक्षुस्तपनोऽरुणसारथिः ॥ १२ ॥

पतङ्गः, खगः, मार्तण्डः, यमुनाजनकः, कृतान्तजनकः (यौ०—कालिन्दीसूः, यमसूः,……), प्रद्योतनः, तापनः, ब्रध्नः, हंसः, चित्रभानुः, विवस्वान् (–स्वत्), सूरः (+शूरः), त्वष्टा (–ष्टृ), द्वादशात्मा (–त्मन्), हेलिः, मित्रः, ध्वान्ता-रातिः (यौ०—तिमिरारिः,……), अब्जहस्तः, अंशुहस्तः (यौ०—पद्मपाणिः, गभस्तिपाणिः,……), चक्रबान्धवः, अब्जबान्धवः, अहर्बान्धवः (यौ०—चक्रवाकबन्धुः, पद्मबन्धुः, दिनबन्धुः,……), सप्तसप्तिः (यौ०—सप्ताश्वः, विष-माश्वः,……) दिवाकरः, दिनकरः, अहस्करः, दिवसकरः, प्रभाकरः, विभाकरः, भास्करः (यौ०—वासरकृत् , दिनप्रणीः, दिनकृत्,……), मिहिरः (+मिहरः, महिरः), विरोचनः, ग्रहपतिः, अब्जिनीपतिः, गोपतिः, द्युपतिः (यौ०—ग्रहेशः, पद्मिनीशः, त्विषामीशः, दिनेशः,……), विकर्तनः, हरिः, शुचिः, इनः, गगनध्वजः, गगनाध्वगः (यौ०—नभःकेतनः, नभःपान्थः,……), हरिदश्वः, जगत्साक्षी, कर्मसाक्षी (२ –क्षिन्), भास्वान् (–स्वत् , यौ०—अंशुमान्–मत् , अंशुमाली –लिन् ;……), विभावसुः, त्रयीतनुः, जगच्चक्षुः (–क्षुस्), तपनः, अरुणसारथिः ॥

विमर्श :—ऋतुभेदसे प्रत्येक मासमें सूर्य-किरणें घटती-बढ़ती हैं, अत एव 'पूषति वर्द्धते'इस विग्रहसे सूर्यका नाम 'पूषा' होता है । 'व्याडि'के मतमें सूर्य-रश्मियोंकी संख्यामें वक्ष्यमाण विभिन्नता होती है । यथा—चैत्रमें १२००, वैशाखमें १३००, ज्येष्ठमें १४००, आषाढमें १५०० श्रावण तथा भाद्रपदमें १४००–१४००, आश्विनमें १६००, कार्तिकमें ११००, अगहनमें १०५०, पौषमें १०००, माघमें ११०० और फाल्गुनमें १०५० सूर्यकी किरणें होती हैं * ॥

---

* यथाऽऽह व्याडिः —

"ऋतुभेदात्पुनस्तस्यातिरिच्यन्तेऽपि रश्मयः ।
शतानि द्वादश मधौ त्रयोदशैव माधवे ॥
चतुर्दश पुनर्ज्येष्ठे नभोनभस्ययोस्तथा ।
पञ्चदशैव त्वाषाढे षोडशैव तथाऽऽश्विने ॥
कार्तिकके त्वेकादश शतान्येवं तपस्यपि ।
मार्गे तु दश सार्द्धानि शतान्येवं च फाल्गुने ॥
पौष एव परं मासि सहस्रं किरणा रवेः ॥" इति ॥

१ रोचिरुस्त्ररुचिशोचिरंशुगो ज्योतिरर्चिरुपधृत्यभीशवः ।
प्रग्रहः शुचिमरीचिदीप्तयो धाम केतुघृणिरश्मिपृश्नयः ॥ १३ ॥
पाददीधितिकरद्युतिद्युतो रुग्विरोककिरणत्विषित्विषः ।
भाः प्रभावसुगभस्तिभानवो भा मयूखमहसी छविर्विभा ॥ १४ ॥
२ प्रकाशस्तेज उद्योत आलोको वर्च आतपः ।
३ मरीचिका मृगतृष्णा ४ मण्डलं तूपसूर्यकम् ॥ १५ ॥
परिधिः परिवेषश्च ५ सूरसूतस्तु काश्यपिः ।
अनूरुर्विनतासूनुररुणो गरुडाग्रजः ॥ १६ ॥

शेषश्चात्र—सूर्ये वाजीलोकबन्धुर्भानेमिर्भानुकेसरः ।
सहस्राङ्को दिवापुष्टः कालभृद्रात्रिनाशनः ॥
पपी: सदागतिः पीतुः सांवत्सररथः कपिः ।
ईशानः पुष्करो ब्रह्मा बहुरूपश्च कर्णसूः ॥
वेदोदयः खतिलकः प्रत्यूषाण्डं सुरावृतः ।
लोकप्रकाशनः पीथो जगद्दीपोऽम्बुतस्करः ॥

१. 'किरण'के ३६ नाम हैं—रोचिः (–चिस्), उस्त्रः, रुचिः (स्त्री), शोचिः (–चिस्, न), अंशुः (पु), गौः (–गो, पु स्त्री), ज्योतिः (–तिस्, न), अर्चिः (–र्चिस्, स्त्री न), उपधृतिः, अभीशुः (+अभीषुः । २ पु), प्रग्रहः, शुचिः, मरीचिः (स्त्री पु), दीप्तिः (स्त्री), धाम (–मन्), केतुः, घृणिः (+घृष्णिः, धृष्णिः), रश्मिः, पृश्निः (पु स्त्री । + पृष्णिः, वृष्णिः), पादः, दीधितिः (स्त्री), करः, द्युतिः (स्त्री), द्युत्, रुक् (–च्), विरोकः, किरणः, त्विषिः (स्त्री), त्विट् (–ष्), भाः (–स्, पु स्त्री), प्रभा, वसुः, गभस्तिः, भानुः (३ पु), भा (भा, स्त्री), मयूखः, महः (–स्, न), छविः (स्त्री), विभा ॥

२. 'धूप, घाम'के ६ नाम हैं—प्रकाशः, तेजः (–जस्), उद्योतः, आलोकः, वर्चः (–र्चस्), आतपः (+द्योतः) ॥

३. 'मृगतृष्णा'के २ नाम हैं—मरीचिका, मृगतृष्णा ॥

४. 'मण्डल' (सूर्यकी चारों ओर दिखलायी पड़नेवाले गोलाकार तेजः-समूह) के ४ नाम हैं—मण्डलम् (त्र), उपसूर्यकम् (न), परिधिः (पु), परिवेषः (+परिवेषः) ॥

५. 'सूर्यके सारथि, अरुण'के ६ नाम हैं—सूरसूतः (यौ०—रवि-सारथिः,……), काश्यपिः, अनूरुः, विनतासूनुः (यौ०—वैनतेयः,……), गरुडाग्रजः ॥

१ रेवन्तस्त्वर्करेतोजः प्लवगो हयवाहनः ।
२ अष्टादश माठराद्याः सवितुः पारिपार्श्विकाः ॥ १७ ॥
३ चन्द्रमाः कुमुदबान्धवो दशश्वेतवाज्यमृतसूस्तिथिप्रणीः ।
कौमुदीकुमुदिनीभदक्षजारोहिणीद्विजनिशौषधीपतिः ॥ १८ ॥
जैवातृकोऽब्जश्च कलाशशैणच्छायाभृदिन्दुर्विधुरत्रिदृग्जः ।
राजा निशो रत्नकरौ च चन्द्रः सोमोऽमृतश्वेतहिमद्युतिर्ग्लौः ॥१९॥

शेषश्चात्र—अरुणो विपुलस्कन्धो महासारथिराश्मनः ।

१. 'रेवन्त' (वर्तमान १४ मनुओंमें-से पञ्चम मनु) के ४ नाम हैं—रेवन्तः (+ रैवतः), अर्करेतोजः, प्लवगः, हयवाहनः ॥

२. 'सूर्यके पारिपार्श्विक' (पार्श्ववर्ती) 'माठरः' इत्यादि १८ हैं ॥

विमर्श—सूर्यके १८ पार्श्ववर्तियोंके ये नाम हैं—"माठरः, पिङ्गलः, दण्डः, राजश्रोथौ, खरद्वारिकौ, कल्माषपक्षिणौ (-क्षिन्), जातृकारः, कुतापकौ, पिङ्गगजौ, दण्डिपुरुषौ, किशोरकौ"। (इन्द्रादि देव ही दूसरे-दूसरे नामोंसे सूर्यके पार्श्ववर्ती बनकर रहते हैं) ॥

३. 'चन्द्र'के ३२ नाम हैं—चन्द्रमाः (-मस्), कुमुदबान्धवः (यौ०—कैरवबन्धुः, कुमुदसुहृत् -हृद् ,……), दशवाजी (+दशाश्वः), श्वेतवाजी (+श्वेताश्वः । २-जिन्), अमृतसूः (यौ०—सुधासूः,……), तिथिप्रणीः, कौमुदीपतिः, कुमुदिनीपतिः, भपतिः, दक्षजापतिः, रोहिणीपतिः, द्विजपतिः, निशापतिः, औषधीपतिः (यौ०—ज्योत्स्नेशः, कुमुद्वतीशः, नक्षत्रेशः, दाक्षायणीशः, रोहिणीशः, द्विजेशः, निशेशः, औषधीशः,……), जैवातृकः, अब्जः, (+समुद्रनवनीतम्), कलाभृत् , शशभृत् , एणभृत् , छायाभृत् (यौ०—कलानिधिः, शशधरः, मृगलाञ्छनः, छायाङ्कः, शशाङ्कः, मृगाङ्कः, कलाधरः,……), इन्दुः, विधुः, अत्रिदृग्जः (यौ०—अत्रिनेत्रप्रसूतः,……), राजा (-जन्), निशारत्नम् , निशाकरः (यौ०—निशामणिः, रजनीकरः,……), चन्द्रः, सोमः, अमृतद्युतिः, श्वेतद्युतिः, हिमद्युतिः (यौ०—सुधांशुः, सितांशुः, शीतांशुः,……), ग्लौः ॥

विमर्शः—चन्द्रमाके दश घोड़े होनेसे उसे 'दशवाजी' कहते हैं, उन दश घोड़ोंके ये नाम हैं—यजुः (-जुष्), चन्द्रमनाः (-नस्), वृषः, सप्तधातुः, हयः, वाजी (-जिन्), हंसः, व्योममृगः, नरः और अर्वा (-र्वन्)। इनमेंसे कहीं-कहीं 'चन्द्रमनाः'के स्थानमें 'त्रिघनाः' तथा 'सप्तधातुः'के स्थानमें 'सहस्रण्यः' नाम भी आते हैं ॥

१ षोडशोंऽशः कला २ चिह्नं लक्षणं लक्ष्म लाञ्छनम् ।
अङ्कः कलङ्कोऽभिज्ञानं ३ चन्द्रिका चन्द्रगोलिका ॥ २० ॥
चन्द्रातपः कौमुदी च ज्योत्स्ना ४ बिम्बं तु मण्डलम् ।
५ नक्षत्रं तारका ताराज्योतिषी भमुडु ग्रहः ॥ २१ ॥
धिष्ण्यमृक्षम६थाश्विन्यश्वकिनी दस्रदेवता ।
अश्वयुग्बालिनी चाथ ७ भरणी यमदेवता ॥ २२ ॥
८ कृत्तिकाबहुलाश्चाग्निदेवा ९ ब्राह्मी तु रोहिणी ।
१० मृगशीर्षं मृगशिरो मार्गश्चान्द्रमसं मृगः ॥ २३ ॥
११ इल्वलास्तु मृगशिरःशिरःस्थाः पञ्च तारकाः ।

शेषश्चात्र—चन्द्रस्तु मास्तपोराजौ शुभांशुः श्वेतवाहनः ।
जर्णः सुप्रो राजराजो यजतः कृत्तिकाभवः ॥
यक्षराडौषधीगर्भस्तपसः शयतो बुधः ।
स्यन्दः खसिन्धुः सिन्धूत्थः श्रविष्ठारमणस्तथा ॥
आकाशचमसः पीतुः क्लेदुः पर्वरिचिक्लिदौ ।
परिज्वा युवनो नेमिश्चन्दिरः स्नेहुरेकभूः ॥

१. 'चन्द्र'के सोलहवें भागका 'कला' यह १ नाम है ॥

२. 'चन्द्रकलङ्क, या चिह्नमात्र'के ७ नाम हैं—चिह्नम्, लक्षणम्, लक्ष्म (-क्ष्मन्), लाञ्छनम्, अङ्कः, कलङ्कः, अभिज्ञानम् ॥

३. 'चाँदनी'के ५ नाम हैं—चन्द्रिका, चन्द्रगोलिका, चन्द्रातपः, कौमुदी, ज्योत्स्ना (+चन्द्रिमा) ॥

४. 'मण्डल'के २ नाम हैं—बिम्बम् (पु न), मण्डलम् ॥

५. 'नक्षत्र, तारा'के ६ नाम हैं—नक्षत्रम्, तारका (त्रि), तारा (स्त्री पु), ज्योतिः (-तिस्), भम्, उडु (स्त्री न), ग्रहः, धिष्ण्यम्, ऋक्षम् ॥

६. 'अश्विनी नक्षत्र'के ५ नाम हैं—अश्विनी, अश्वकिनी, दस्रदेवता, अश्वयुक् (-युज् स्त्री), बालिनी ॥

७. 'भरणी नक्षत्र'के २ नाम हैं—भरणी, यमदेवता ॥

८. 'कृत्तिका नक्षत्र'के ३ नाम हैं—कृत्तिकाः, बहुलाः (२ स्त्री० नि० ब० ब०), अग्निदेवाः ॥

९. 'रोहिणी नक्षत्र'के २ नाम हैं—ब्राह्मी, रोहिणी ॥

१०. 'मृगशिरा नक्षत्र'के ५ नाम हैं—मृगशीर्षम्, मृगशिरः (-रस्, पु न), मार्गः, चान्द्रमसम्, मृगः ॥

११. मृगशिरा नक्षत्र'के ऊपर भागमें स्थित ५ ताराओंका 'इल्वलाः' (स्त्री । + इन्वकाः) यह १ नाम है ॥

१ आर्द्रा तु कालिनी रौद्री २ पुनर्वसू तु यामकौ ॥ २४ ॥
आदित्यौ च ३ पुष्यस्तिष्यः सिद्धयश्च गुरुदैवतः ।
४ सार्प्यश्लेषा ५ मघाः पित्र्याः ६ फल्गुनी योनिदेवता ॥ २५ ॥
७ सा तूत्तरार्यमदेवा ८ हस्तः सवितृदेवतः ।
९ त्वाष्ट्री चित्रा१०ऽऽनिली स्वाति११र्विशाखेन्द्राग्निदेवता ॥ २६ ॥
राधा१२ऽनुराधा तु मैत्री १३ ज्येष्ठैन्द्री १४ मूल आश्रपः ।
१५ पूर्वाषाढापी १६ सोत्तरा स्याद्वैश्वी १७ श्रवणः पुनः ॥ २७ ॥
हरिदेवः१८श्रविष्ठा तु धनिष्ठा वसुदेवता ।
१९ वारुणी तु शतभिष२०गजाहिर्बुध्नदेवताः ॥ २८ ॥

---

१. 'आर्द्रा नक्षत्र'के ३ नाम हैं—आर्द्रा, कालिनी, रौद्री ॥

२. 'पुनर्वसु नक्षत्र'के ३ नाम हैं—पुनर्वसू (पु), यामकौ, आदित्यौ (३ नि० द्वि व०) ॥

३. 'पुष्य नक्षत्र'के ४ नाम हैं—पुष्यः, तिष्यः, सिद्धयः, गुरुदैवतः ॥

४. 'अश्लेषा नक्षत्र'के २ नाम हैं—सार्पी, अश्लेषा (पु स्त्री) ॥

५. 'मघा नक्षत्र'के २ नाम हैं—मघाः, पित्र्याः ॥

६. 'पूर्वफल्गुनी नक्षत्र'के २ नाम हैं—पूर्वफल्गुनी (द्विव० ब० व० । +ए० व०) योनिदेवता ॥

७. 'उत्तरफल्गुनी नक्षत्र'के २ नाम हैं—उत्तरफल्गुनी (नि० द्विव० ब०व०), अर्यमदेवा ॥

८. 'हस्त नक्षत्र'के २ नाम हैं—हस्तः (पु स्त्री), सवितृदेवतः ॥

९. 'चित्रा नक्षत्र'के २ नाम हैं—त्वाष्ट्री, चित्रा ॥

१०. 'स्वाति नक्षत्र'के २ नाम हैं—आनिली, स्वातिः (पु स्त्री) ॥

११. 'विशाखा नक्षत्र'के ३ नाम हैं—विशाखा, इन्द्राग्निदेवता, राधा ॥

१२. 'अनुराधा नक्षत्र'के २ नाम हैं—अनुराधा (+अनूराधा), मैत्री ॥

१३. 'ज्येष्ठा नक्षत्र'के २ नाम हैं – ज्येष्ठा, ऐन्द्री ॥

१४. 'मूल नक्षत्र'के २ नाम हैं—मूलः (पु न), आश्रपः ॥

१५. 'पूर्वाषाढा नक्षत्र'के २ नाम हैं—पूर्वाषाढा, आपी ॥

१६. 'उत्तराषाढा नक्षत्र'के २ नाम हैं—उत्तराषाढा, वैश्वी ॥

१७. 'श्रवण नक्षत्र'के २ नाम हैं—श्रवणः (पु स्त्री), हरिदेवः ॥

१८. 'धनिष्ठा नक्षत्र'के ३ नाम हैं—श्रविष्ठा, धनिष्ठा, वसुदेवता ॥

१९. 'शषभिषा नक्षत्र'के २ नाम हैं—वारुणी, शतभिषक् (–ज्, स्त्री) ॥

२०. 'पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र'के २ नाम हैं—अजदेवताः, पूर्वभाद्रपदाः (२ स्त्री)। 'उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र'के २ नाम हैं—अहिबुध्नदेवताः

पूर्वोत्तरा भाद्रपदा द्वयः प्रोष्ठपदाश्च ताः ।
१ रेवती तु पौष्णं २ दाक्षायण्यः सर्वाः शशिप्रियाः ॥ २६ ॥

(+अहिर्बुध्नदेवताः), उत्तरभाद्रपदाः (२ स्त्री)। उक्त दोनों नक्षत्रोंका १-१ नाम और भी है—प्रोष्ठपदाः (स्त्री ब० व०)॥

१. 'रेवती नक्षत्र'के २ नाम हैं—रेवती (स्त्री), पौष्णम् (न)॥

विमर्श :—इन 'अश्विनी' आदि २७ नक्षत्रोंके लिङ्ग तथा वचन अन्य शास्त्रानुसार इस प्रकार हैं—अश्विनीसे रोहिणीतक ४ नक्षत्र स्त्रीलिङ्ग तथा बहुवचन, 'मृगशिर' स्त्रीलिङ्ग नपुंसक तथा एकवचन, 'आर्द्रा' स्त्रीलिंङ्ग तथा एकवचन, 'पुनर्वसु, पुष्य' पुंल्लिङ्ग तथा एकवचन, 'अश्लेषा, मघा' स्त्रीलिङ्ग तथा बहुवचन, 'पूर्वफल्गुनी, उत्तरफल्गुनी' स्त्रीलिङ्ग तथा द्विवचन, 'हस्त' पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग तथा एकवचन, 'चित्रा' स्त्रीलिङ्ग तथा एकवचन, 'स्वाति' स्त्रीलिङ्ग पुंल्लिङ्ग तथा एकवचन, 'विशाखा, अनुराधा' स्त्रीलिङ्ग तथा बहुवचन, 'ज्येष्ठा' स्त्रीलिङ्ग तथा एकवचन, 'मूल' पुंल्लिङ्ग नपुंसक तथा एकवचन, 'पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा' स्त्रीलिङ्ग तथा बहुवचन, 'श्रवण' पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग तथा एकवचन, 'धनिष्ठा, शतभिषज्' स्त्रीलिङ्ग तथा बहुवचन, 'पूर्वभाद्रपदा तथा उत्तरभाद्रपदा' स्त्रीलिङ्ग तथा द्विवचन, और 'रेवती' स्त्रीलिङ्ग तथा एकवचन है। 'मुकुट'ने जो—"अश्विनी, भरणी, रोहिणी आदि ३, पुष्य, आश्लेषा, हस्त आदि ३, अनुराधा आदि ८ और रेवती—ये १६ नक्षत्र एकवचन; पुनर्वसु, पूर्वफल्गुनी, उत्तरफल्गुनी, विशाखा, पूर्वभाद्रपदा, उत्तरभाद्रपदा—ये ६ नक्षत्र द्विवचन और कृत्तिका तथा मघा—ये २ नक्षत्र बहुवचन हैं" ऐसा कहा है, वह आर्षोक्तिविरुद्ध होनेसे चिन्त्य है॥

२. 'अश्विनी'से 'रेवती' तक समष्टि २७ रूपमें नक्षत्रोंके २ नाम हैं—दाक्षायण्यः, शशिप्रियाः (२ स्त्री। यहाँ बहुवचन नक्षत्रोंकी बहुलतासे है, उक्त दोनों शब्द नि० बहुवचन नहीं हैं)।

विमर्श—यद्यपि "अष्टाविंशतिराख्यातास्तारका मुनिसत्तमैः" इस वचनके अनुसार २८ नक्षत्रगणनाकी पूर्तिके लिए 'अभिजित्' नक्षत्रका भी सन्निवेश करना उचित था, तथापि—

"अभिजिद्भोगमेतद्वै वैश्वदेवान्त्यपादमखिलं तत्।
आद्याश्चतस्रो नाड्यो हरिभस्यैतस्य रोहिणीविद्धम्॥"

इस वचनके अनुसार 'अश्विनी' आदि नक्षत्रोंके समान 'अभिजित्' नक्षत्रका स्वतन्त्र मान नहीं होनेके कारण मुख्य २७ नक्षत्रोंका कथन त्रुटिपूर्ण नहीं समझना चाहिए॥

१ राशीनामुदयो लग्नं २ मेषप्रभृतयस्तु ते ।
३ आरो वक्रो लोहिताङ्गो मङ्गलोऽङ्गारकः कुजः ॥ ३० ॥
आषाढाभूर्नवार्चिश्च ४ बुधः सौम्यः प्रहर्षुलः ।
ज्ञः पञ्चार्चिः श्रविष्ठाभूः श्यामाङ्गो रोहिणीसुतः ॥ ३१ ॥
५ बृहस्पतिः सुराचार्यो जीवश्चित्रशिखण्डिजः ।
वाचस्पतिर्द्वादशार्चिर्धिषणः फल्गुनीभवः ॥ ३२ ॥
गीर्बृहत्योः पतिरुतथ्यानुजाङ्गिरसौ गुरुः ।
६ शुक्रो मघाभवः काव्य उशना भार्गवः कविः ॥ ३३ ॥
षोडशार्चिर्दैत्यगुरुर्धिष्ण्यः ७ शनैश्चरः शनिः ।
छायासुतोऽसितः सौरिः सप्तार्चीं रेवतीभवः ॥ ३४ ॥

---

१. 'राशियोंके उदय'का १ नाम है—लग्नम् (पु न) ॥
२. 'वे राशियाँ' मेष इत्यादि १२ हैं ।

विमर्श—'मेषः, वृषः, मिथुनम्, कर्कः, सिंहः, कन्या, तुला, वृश्चिकः, धनुः (–स्), मकरः, कुम्भः, मीनः'—ये १२ 'राशियाँ' हैं, इन्हींको 'लग्न' कहते हैं ॥

३. 'मङ्गल ग्रह'के ८ नाम हैं—आरः, वक्रः, लोहिताङ्गः, मङ्गलः, अङ्गारकः, कुजः (यौ०—भौमः, माहेयः, धरणीसुतः, महीसुतः,………), आषाढाभूः, नवार्चिः (–र्चिस्) ॥

४. 'बुध ग्रह'के ८ नाम हैं—बुधः, सौम्यः (यौ०—चन्द्रात्मजः, चान्द्रमसायनिः,…………), प्रहर्षुलः, ज्ञः, पञ्चार्चिः (–र्चिस्), श्रविष्ठाभूः, श्यामाङ्गः, रोहिणीसुतः (यौ०—रौहिणेयः,………) ॥

५. 'बृहस्पति ग्रह'के १३ नाम हैं—बृहस्पतिः, सुराचार्यः (यौ०—देवगुरुः,……), जीवः, चित्रशिखण्डिजः (यौ०—सप्तर्षिजः,…….), वाचस्पतिः (+ वाक्पतिः, वागीशः,), द्वादशार्चिः (–र्चिस्), धिषणः, फल्गुनीभवः (+ फाल्गुनीभवः), गीःपतिः, बृहतीपतिः, उतथ्यानुजः, आङ्गिरसः, गुरुः ॥

शेषश्चात्र—गीष्पतिस्तु महामतिः ।
प्रख्यः प्रचक्षा वाग्वाग्मी गौरो दीदिविगीरथौ ॥

६. 'शुक्र ग्रह, शुक्राचार्य'के ६ नाम हैं—शुक्रः, मघाभवः, काव्यः, उशनाः (–नस्), भार्गवः, कविः, षोडशार्चिः (–र्चिस्), दैत्यगुरुः (यौ०—असुराचार्यः,…….), धिष्ण्यः ॥

शेषश्चात्र—शुक्रे भृगुः ।

७. 'शनि ग्रह'के १० नाम हैं—शनैश्चरः, शनिः, छायासुतः, असितः,

मन्दः क्रोडो नीलवासाः १ स्वर्भाणुस्तु विधुन्तुदः ।
तमो राहुः सैंहिकेयो भरणीभूरथाहिकः ॥ ३५ ॥
अश्लेषाभूः शिखी केतु३र्ध्रुव उत्तानपादजः ।
४ अगस्त्योऽगस्तिः पीताब्धिर्वातापिद्विड्घटोद्भवः ॥ ३६ ॥
मैत्रावरुणिराग्नेय और्वशेयाग्निमारुतौ ।
५ लोपामुद्रा तु तद्भार्या कौषीतकी वरप्रदा ॥ ३७ ॥
६ मरीचिप्रमुखाः सप्तर्षयश्चित्रशिखण्डिनः ।
७ पुष्पदन्तौ पुष्पवन्तावेकोक्त्या शशिभास्करौ ॥ ३८ ॥

सौरिः, (+सौरः, शौरिः, सूरः), सप्तार्चिः (-र्चिस्), रेवतीभवः, मन्दः, क्रोडः, नीलवासाः (-सस्) ॥

शेषश्चात्र—शनौ पङ्गुः श्रुतकर्मा महाग्रहः ।
श्रुतश्रवोऽनुजः कालो ब्रह्मण्यश्च यमः स्थिरः ॥ क्रूरात्मा च ।

१. 'राहु ग्रह'के ६ नाम हैं—स्वर्भाणुः (+स्वर्भानुः), विधुन्तुदः, तमः (-मस्, पु न । +तमः,-म, पु), राहुः (+अभ्रपिशाचः, ग्रहकल्लोलः), सैंहिकेयः, भरणीभूः ॥

शेषश्चात्र—अथ राहौ स्यादुपराग उपप्लवः ।

२. 'केतु ग्रह'के ४ नाम हैं—आहिकः, अश्लेषाभूः, शिखी (-खिन्), केतुः ॥

शेषश्चात्र—केतावूर्ध्वकचः ।

३. 'ध्रुव तारा'के २ नाम हैं—ध्रुवः, उत्तानपादजः (यौ०—औत्तानपादिः, औत्तानपादः,·······) ॥

शेषश्चात्र—ज्योतीरथग्रहाश्रयौ ध्रुवे ।

४. 'अगस्त्य मुनि'के ६ नाम हैं—अगस्त्यः, अगस्तिः, पीताब्धिः, वातापिद्विट् (-द्विष्), घटोद्भवः (+कुम्भजः), मैत्रावरुणिः, आग्नेयः, और्वशेयः, आग्निमारुतः ॥

५. 'अगस्त्य मुनिकी पत्नी'के ३ नाम हैं—लोपामुद्रा, कौषीतकी, वरप्रदा ॥

६. 'मरीचि' आदि सप्तर्षियोंके २ नाम हैं—सप्तर्षयः, चित्रशिखण्डिनः (-ण्डिन्) ।

विमर्शः—मरीचिः, अत्रिः, अङ्गिराः (-रस्), पुलस्त्यः, पुलहः, क्रतुः, वसिष्ठः (+वशिष्ठः)—ये 'सप्तर्षि' हैं ॥

७. 'एक साथ कहे गये सूर्य तथा चन्द्र'के २ नाम हैं—पुष्पदन्तौ, पुष्पवन्तौ (-वत् । २ नि द्विव०) ॥

१ राहुग्रासोऽर्केन्द्वोर्ग्रह उपराग उपप्लवः ।
२ उपलिङ्गं त्वरिष्टं स्यादुपसर्ग उपद्रवः ॥ ३९ ॥
अजन्यमीतिरुत्पातो ३ वह्न्युत्पात उपाहितः ।
४ स्यात्कालः समयो दिष्टानेहसौ सर्वमूषकः ॥ ४० ॥
५ कालो द्विविधोऽवसर्पिण्युत्सर्पिणीविभेदतः ।
सागरकोटिकोटीनां विंशत्या स समाप्यते ॥ ४१ ॥
६ अवसर्पिण्यां षडरा उत्सर्पिण्यां त एव विपरीताः ।
एवं द्वादशभिररैर्विवर्तते कालचक्रमिदम् ॥ ४२ ॥

---

१. 'सूर्यग्रहण तथा चन्द्रग्रहण'के ३ नाम हैं—राहुग्रासः, उपरागः, उपप्लवः ॥

२. 'उपद्रव'के ७ नाम हैं—उपलिङ्गम्, अरिष्टम्, उपसर्गः, उपद्रवः, अजन्यम् (पु न), ईतिः (स्त्री), उत्पातः ॥

३. 'अग्निजन्य उपद्रव' (मता० 'धूमकेतु' नामक उपद्रव) के २ नाम हैं—वह्न्युत्पातः, उपाहितः ॥

४. 'समय'के ५ नाम हैं—कालः, समयः (पु न), दिष्टः, अनेहाः (-हस्), सर्वमूषकः ॥

५. 'काल'के २ भेद हैं—अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी । वह काल (समय) बीस सागर कोड़ाकोड़ी व्यतीत होनेपर समाप्त होता है ।

विमर्श—प्रथम 'अवसर्पिणी' नामक कालमें भाव क्रमशः घटते जाते हैं और द्वितीय 'उत्सर्पिणी' नामक कालमें भाव क्रमशः बढ़ते जाते हैं । एक कोटि (करोड़) को एक कोटिसे गुणित करनेपर एक कोटि-कोटि (एक कोड़ाकोड़ी अर्थात् दश नील) होता है । ऐसे बीस सागर कोटिकोटि (कोड़ाकोड़ी) समयमें वह द्विविध काल पूरा होता है ॥

६. प्रथम 'अवसर्पिणी' नामक काल (२ । ४३ में वक्ष्यमाण 'एकान्त-सुषमा' इत्यादि) में ६ 'अर' होते हैं और द्वितीय 'उत्सर्पिणी' नामक कालमें वे ही ६ 'अर' विपरीत क्रमसे होते हैं, इस प्रकार यह कालचक्र १२ अरोंसे घूमा (चला) करता है ।

विमर्श—प्रथम 'अवसर्पिणी' नामक कालमें १ एकान्तसुषमा अर्थात् सुषमसुषमा, २ सुषमा, ३ सुषमदुःषमा, ४ दुःषमसुषमा, ५ दुःषमा, और ६ एकान्तदुःषमा अर्थात् दुःषमदुःषमा'—ये ६ 'अर' होते हैं, तथा द्वितीय 'उत्सर्पिणी' नामक कालमें वे ही छहों अर विपरीत क्रमसे अर्थात् १ एकान्त-दुःषमा अर्थात् दुःषमदुःषमा, २ दुःषमा, ३ दुःषमसुषमा, ४ सुषमदुःषमा, ५ सुषमा और ६ एकान्तसुषमा अर्थात् सुषमसुषमा, होते हैं, और इन्हीं १२ अरोंके द्वारा यह उभयविध कालचक्र चलता रहता है । इन अरोंका मान आगे (२ । ४३-४५ में) कहा गया है ॥

१ तत्रैकान्तसुषमाऽरश्चतस्रः कोटिकोटयः ।
सागराणां २ सुषमा तु तिस्रस्तत्कोटिकोटयः ॥ ४३ ॥
३ सुषमदुःषमा ते द्वे ४ दुःषमसुषमा पुनः ।
सैका सहस्रैर्वर्षाणां द्विचत्वारिंशतोनिता ॥ ४४ ॥
५ अथ दुःषमैकविंशतिरब्दसहस्राणि ६तावती तु स्यात् ।
एकान्तदुःषमाऽपि ७ ह्येतत्सङ्ख्याः परेऽपि विपरीताः ॥ ४५ ॥
८ प्रथमेऽरत्रये मर्त्यास्त्रिद्व्येकपल्यजीविताः ।
त्रिद्व्येकगव्यूतोच्छ्राया स्त्रिद्व्येकदिनभोजनाः ॥ ४६ ॥
कल्पद्रुफलसन्तुष्टाः—

---

१. उनमें-से 'एकान्तसुषमा' अर्थात् 'सुषमसुषमा' नामक 'अर'का प्रमाण चार सागर कोड़ाकोड़ी है ॥

२. 'सुषमा' नामक 'अर'का प्रमाण तीन सागर कोड़ाकोड़ी है ॥

३. 'सुषमदुःषमा' नामक 'अर'का प्रमाण दो सागर कोड़ाकोड़ी है ॥

४. 'दुःषमसुषमा' नामक 'अर'का प्रमाण बयालिस सहस्र (४२०००) कम एक सागर कोड़ाकोड़ी है ॥

५. 'दुःषमा' नामक 'अर'का प्रमाण इक्कीस सहस्र (२१०००)वर्ष है ॥

६. 'एकान्तदुःषमा' अर्थात् 'दुःषमदुःषमा' नामक 'अर'का प्रमाण उतना (२१००० वर्ष) ही है ॥

७. 'उत्सर्पिणी' नामक कालके भी ये ६ 'अर' विपरीत क्रमसे (२।४२ के 'विमर्श'में वर्णित क्रमसे) इतने ही इतने ('अवसर्पिणी' कालके अरोंके 'प्रमाण'के बराबर ही) प्रमाणवाले होते हैं । इस प्रकार ('अवसर्पिणी' तथा 'उत्सर्पिणी'के भेदसे) दोनों तरहके कालका प्रमाण २० सागर कोड़ाकोड़ी होता है ॥

८. प्रथम तीन ('एकान्तसुषमा—सुषमसुषमा, सुषमा और दुःषमसुषमा') अरोंमें मनुष्योंकी आयु क्रमशः तीन, दो और एक पल्यकी होती है, वे (मनुष्य) क्रमशः तीन, दो और एक गव्यूत ऊँचे होते हैं, तीन, दो और एक दिनपर भोजन करते हैं और कल्पवृक्षके फलोंको खाते हैं ।

विमर्श—'एकान्तसुषमा' (सुषमसुषमा) नामक अरमें मनुष्योंकी आयु तीन पल्य तथा ऊँचाई तीन गव्यूत होती है और वे तीन दिनपर अर्थात् चौथे दिन भोजन करते हैं । 'सुषमा' नामक अरमें मनुष्योंकी आयु दो पल्य तथा ऊँचाई दो गव्यूत होती है और वे दो दिन पर अर्थात् तीसरे दिन भोजन करते हैं । 'दुःषमसुषमा' नामक अरमें मनुष्योंकी आयु एक पल्य तथा ऊँचाई एक गव्यूत होती है और वे एक दिन पर अर्थात् दूसरे दिन भोजन करते हैं । इन तीनों अरोंमें होनेवाले मनुष्य कल्पवृक्षके फलोंको खाते हैं ।

जैनसम्प्रदायके अनुसार प्रमाणके दो भेद हैं—१ लौकिक तथा २ लोकोत्तर । १म लौकिक प्रमाणके ६ भेद हैं—१ मान, २ उन्मान, ३ अवमान, ४ गणना, ५ प्रतिमान और ६ तत्प्रमाण । २य लोकोत्तर प्रमाणके ४ भेद हैं—१ द्रव्यप्रमाण, २ क्षेत्रप्रमाण, ३ कालप्रमाण और ४ भावप्रमाण ।

इनमें-से १म द्रव्यप्रमाणके २ भेद हैं—१ संख्याप्रमाण और २ उपमा-प्रमाण। संख्याप्रमाणके ३ भेद हैं—१ संख्येय, २ असंख्येय और ३ अनन्त। संख्येयप्रमाणके भी ३ भेद हैं—१ जघन्य, २ अजघन्योत्कृष्ट और ३ उत्कृष्ट। असंख्येयके ३ भेद हैं—१ परीतासंख्येय, २ युक्तासंख्येय और ३ अनन्ता-संख्येय। इन तीनों (परीतासंख्येय, युक्तासंख्येय और अनन्तासंख्येय)में प्रत्येकके ३–३ भेद हैं—१ जघन्य, २ उत्कृष्ट और ३ मध्यम (इस प्रकार असंख्येयके ९ भेद होते हैं)। इसी प्रकार अनन्तके भी ३ भेद हैं—१ परीतानन्त, २ युक्तानन्त और ३ अनन्तानन्त। इन तीनों (परीतानन्त, युक्ता-नन्त और अनन्तानन्त) में प्रत्येकके ३–३ भेद हैं—१ जघन्य, २ उत्कृष्ट और ३ मध्यम (इस प्रकार अनन्तप्रमाणके भी ९ भेद हो जाते हैं)। उपमा-प्रमाण (द्रव्यप्रमाणके २य भेद) के ८ भेद हैं—१ पल्य, २ सागर, ३ सूची, ४ प्रतर, ५ घनाङ्गुल, ६ जगच्छ्रेणी, ७ लोक और ८ प्रतर लोक। इनमें १म पल्यप्रमाणके ३ भेद हैं—१ व्यवहारपल्य, २ उद्धारपल्य और ३ अद्धापल्य (इसका विशद विवेचन आगे किया जायेगा)। क्षेत्रप्रमाण (लोकोत्तरप्रमाणके ४ भेदोंमें से २य प्रमाण)के २ भेद हैं—१ अवगाह क्षेत्र और २ विभागनिष्पन्न क्षेत्र। उनमें-से १म अवगाह क्षेत्र एक दो तीन चार संख्येय असंख्येय और अनन्त प्रदेशवाले पुद्गल द्रव्यको अवकाश देनेवाले आकाशप्रदेशोंकी दृष्टिसे अनेक प्रकारका है। २य विभागनिष्पन्न क्षेत्र भी असंख्यात आकाशश्रेणी, क्षेत्रप्रमाणांगुलका एक असंख्यात भाग, असंख्यात प्रमाणांगुलके असंख्यात भाग, एक क्षेत्र प्रमाणांगुलके भेदसे अनेक प्रकारका होता है। कालप्रमाणके भी अनेक भेद हैं, यथा—काल, आवली, निश्वास–उच्छ्‌वास, प्राण, स्तोक, लव, मुहूर्त, अहोरात्र (दिन–रात), पक्ष, मास, ऋतु, अयन, वर्ष, (८४ लाख वर्षका) पूर्वाङ्ग, (८४ लाख पूर्वाङ्गका) पूर्व; इसी प्रकार उत्तरोत्तर 'नयुतांग नयुत, कुमुदांग कुमुद, पद्मांग पद्म, नलिनांग नलिन, महालतांग महालता' आदि काल-वर्षोंकी गणना गणनीय (गिनने योग्य) होनेसे 'संख्येय' कही जाती है। इसके आगे पल्योपम, साग-रोपम आदि काल असंख्येय हैं। उनके अनन्त काल हैं, जो अतीत एवं अंतगत रूप हैं तथा वे सर्वज्ञके ही प्रत्यक्षगम्य हैं। भावप्रमाण पञ्चविध ज्ञानको कहा जाता है।

अब 'पल्य' प्रमाणको स्पष्ट करनेके प्रसङ्गमें पहले 'योजन' प्रमाणको स्पष्ट किया जाता है—अनन्तानन्त परमाणु = १ उत्संज्ञासंज्ञा, ८ उत्संज्ञासंज्ञा = १ संज्ञासंज्ञा, ८ संज्ञासंज्ञा = १ त्रुटिरेणु, ८ त्रुटिरेणु = १ त्रसरेणु, ८ त्रसरेणु = १ रथरेणु, ८ रथरेणु = १ देवकुरु = उत्तर देवकुरुके मनुष्यका वालाग्र, उक्त ८ वालाग्र = हैरण्यवत और हैमवत क्षेत्रके मनुष्यका वालाग्र,

उक्त ८ वालाग्र = भरत ऐरावत और विदेह क्षेत्रके मनुष्यका वालाग्र, उक्त ८ वालाग्र = १ लीख, ८ लीख = १ जूँ, ८ जूँ = १ यवमध्य, ८ यवमध्य = १ उत्सेधांगुल, ५०० उत्सेधांगुल = १ प्रमाणांगुल (अवसर्पिणी कालके प्रथम चक्रवर्तीका आत्मांगुल), ६ अंगुल = १ पाद, २ पाद = १ बित्ता, २ बित्ता = १ हाथ, २ हाथ = १ किष्कु, २ किष्कु = १ दण्ड, २००० दण्ड = १ गव्यूत और ४ गव्यूत = १ योजनका प्रमाण है।

'पल्य' प्रमाणके ३ भेद हैं—१ व्यवहार पल्य, २ उद्धार पल्य और ३ अद्धा पल्य। इनमेंसे १म व्यवहार पल्य आगेवाले पल्योंके व्यवहारमें कारण होता है, उससे दूसरे किसीका परिच्छेद नहीं होता। २य उद्धार पल्यके लोमच्छेदोंसे द्वीप समुद्रोंकी गणना की जाती है और ३य अद्धा पल्यसे स्थिति-का परिच्छेद किया जाता है। उस पल्यका प्रमाण इस प्रकार है—उपर्युक्त 'प्रमाणांगुल'से परिमित १–१ योजन लम्बे-चौड़े और गहरे तीन गर्तों (गढों) को सात दिन तककी आयुवाले भेड़के बच्चोंके रोओंके अतिसूक्ष्म (पुनः अखण्डनीय) टुकड़ोंसे दबा-दबाकर भर देनेके बाद एक-एक सौ वर्ष व्यतीत होनेपर एक-एक टुकड़ेको निकालते रहनेपर जितने समयमें वह खाली हो जाय उस समयविशेषको १ व्यवहार पल्य कहा जाता है। उन्हीं रोमच्छेदोंको यदि असंख्यात करोड़ वर्षोंसे छिन्न कर दिया जाय और प्रत्येक समयमें एक-एक रोमच्छेदको निकालनेपर वह गर्त जितने समयमें खाली होगा, वह समय-विशेष 'उद्धार पल्य' कहलाता है ....। उद्धार पल्योंके रोमच्छेदोंको सौ वर्षोंके समयसे छेदकर अर्थात् सौ-सौ वर्षमें एक-एक रोमच्छेद निकालते रहनेपर जितने समयमें वह गर्त खाली हो जाय वह समय-विशेष 'अद्धा पल्य' कहलाता है। दस कोड़ाकोड़ी (१ करोड़ × १ करोड़ = १० नील) 'अद्धा पल्यों'का १ 'अद्धासागर' परिमित समय होता है। १० 'अद्धा सागर' परिमित समय 'अवसर्पिणी'का और उतना ही समय 'उत्सर्पिणी'का होता है। विशेष प्रमाणोंके जिज्ञासुओंको "नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तमुहूर्ते" (तत्त्वार्थसूत्र ३।३८) की व्याख्या सर्वार्थसिद्धि और तत्त्वार्थराजवार्तिक ग्रन्थों-को देखना चाहिए।

१–१ योजन लम्बा, चौड़ा तथा गहरा गढा खोदकर एक दिनसे सात दिन तककी आयुवाले भेंड़के बच्चोंके रोओं (वालों) के असङ्ख्य टुकड़े करके—जिसमें उनका पुनः टुकड़ा नहीं किया जा सके—उन रोओं (वालों) के टुकड़ोंसे उक्त खोदे गये गढेको लोहेकी गाड़ीसे दबा-दबाकर भर दिया जाय। फिर एक-एक सौ वर्ष बीतनेपर उन खण्डित रोओंके १-१ टुकड़ेको निकालते रहनेसे वह गढा जितने वर्षोंमें बिलकुल खाली हो जाय, उतने समयको 'पल्य' कहते हैं।

—१चतुर्थे त्वरके नराः ।
पूर्वकोट्यायुषः पञ्चधनुःशतसमुच्छ्रयाः ॥ ४७ ॥
२ पञ्चमे तु वर्षशतायुषः सप्तकरोच्छ्रयाः ।
षष्ठे पुनः षोडशाब्दायुषो हस्तसमुच्छ्रयाः ॥ ४८ ॥
एकान्तदुःखप्रचिता ३उत्सर्पिण्यामपीदृशाः ।
पश्चानुपूर्व्या विज्ञेया अरेषु किल षट्स्वपि ॥ ४९ ॥

ग्रन्थकारकी 'स्वोपज्ञवृत्ति' तथा अग्रिम वचन (३ । ५५१)के अनुसार 'गव्यूत'का मान एक कोश है, किन्तु पाठान्तरमें 'गव्यूतिः' शब्द होनेसे तथा आगे (३ । ५५२में) 'गव्यूत' तथा 'गव्यूति'—इन दोनों शब्दोंके परस्पर पर्यायवाची होनेसे, तथा दिगम्बरजैन सम्प्रदाय एवं अन्यान्य कोषग्रन्थोंमें भी 'गव्यूति' शब्दका प्रयोग दो कोश-परिमित मार्ग-विशेषमें होनेसे यहाँ भी 'गव्यूत' शब्दका दो कोश मानना ही युक्तिसंगत प्रतीत होता है । तत्त्वार्थ-राजवार्तिकके अनुसार दो सहस्र दण्ड अर्थात् आठ हजार (८०००) हाथका एक गव्यूत होता है* ॥

१. चौथे ('दुःषमसुषमा' नामक) अरमें मनुष्योंकी आयु पूर्वकोटि तथा ऊँचाई पाँच सौ धनुष होती है ॥

विमर्श :—८४ लाख वर्षों का १ पूर्वांग और ८४ लाख पूर्वांगोंका अर्थात् सत्तर लाख छप्पन हजार करोड़ वर्षोंका १ पूर्व होता है, उसी प्रमाण से १ करोड़ पूर्वपरिमित आयु चतुर्थ अर (दुःषमसुषमा) के मनुष्योंकी होती है । उन मनुष्यों की ऊँचाई ५००धनुष अर्थात् २००० हाथ होती है, क्योंकि १ धनुष ४ हाथ का होता है† ॥

२. पञ्चम ('दुःषमा' नामक) अरमें मनुष्योंकी आयु सौ वर्ष तथा ऊँचाई सात हाथ होती है और षष्ठ ('एकान्तदुःषमा' अर्थात् 'दुःषम दुःषमा' नामक) अरमें मनुष्योंकी आयु सोलह वर्ष तथा ऊँचाई एक हाथ होती है । इस अरमें प्राणी बहुत दुखी रहते हैं ।

३. 'उत्सर्पिणी' कालमें भी इन ६ अरोंके विपरीतक्रमसे मनुष्योंकी आयु, ऊँचाई तथा भोजनादि जानना चाहिये ॥

---

*·········तत्र षडङ्गुलः पादः, द्वादशाङ्गुलो वितस्तिः, द्विवितस्तिर्हस्तः, द्विहस्तः किष्कुः, द्विकिष्कुर्दण्डः, द्वे दण्डसहस्रे 'गव्यूतम्' । चतुर्गव्यूतं योजनम् । (तत्त्वा० रा० वा० (३ । ३८ सूत्रस्य) टीका पृ० २०८) ।

† तथा च बृहस्पतिः—'धनुर्हस्तचतुष्टयम् ।' इति ।

१ अष्टादश निमेषाः स्युः काष्ठा २काष्ठाद्वयं लवः ।
३ कला तैः पञ्चदशभि४र्लेशस्तद्‌द्वितयेन च ॥ ५० ॥
५ क्षणस्तैः पञ्चदशभिः ६क्षणैः षड्‌भिस्तु नाडिका ।
सा धारिका घटिका च ७मुहूर्तस्तद्‌द्वयेन च ॥ ५१ ॥
८ त्रिंशता तैरहोरात्रस्तत्रा९हर्दिवसो दिनम् ।
दिवं द्युर्वासरो घस्त्रः १०प्रभातं स्यादहर्मुखम् ॥ ५२ ॥
व्युष्टं विभातं प्रत्यूषं कल्यप्रत्युषसी उषः ।
काल्यं ११ मध्याह्नस्तु दिवामध्यं मध्यन्दिनं च सः ॥ ५३ ॥
१२ दिनावसानमुत्सूरो विकालसबली अपि ।
सायम्—

---

१. (नेत्रके पलक गिरनेका १ नाम है 'निमेषः', वह $\frac{२}{२७}$ विपल या $\frac{२}{१३५}$ सेकेण्डका होता है) १८ निमेषकी १ 'काष्ठा' ($\frac{२}{३}$ विपल=$\frac{४}{१५}$ सेकेण्ड) होती है ।

२. २ काष्ठाका १ 'लवः' ($\frac{४}{३}$ विपल = $\frac{८}{१५}$ सेकेण्ड) होता है ॥

३. १५ लवकी १ 'कला' (२० विपल = ८ सेकेण्ड) होती है ॥

४. २ कलाका १ 'लेशः' (४० विपल = १६ सेकेण्ड) होता है ॥

५. १५ लेशका १ 'क्षणः' (१० पल = ४ मिनट) होता है ॥

६. ६ 'क्षण'की १ नाडिका (१ घटी = २४ मिनट) होती है, इस 'नाडिका'के ३ नाम हैं—नाडिका (+नाडी), धारिका, घटिका (घटी) ॥

७. २ नाडिकाका १ 'मुहूर्तः' (४८ मिनट) होता है ॥

८. ३० मुहूर्तका १ 'अहोरात्रः' (पु न), अर्थात् 'दिन-रात' होता है ॥

९. उसमें 'दिन'के ७ नाम हैं—अहः (-हन्), दिवसः, दिनम् (२ पु न), दिवम् , द्युः (पु), वासरः (पु न), घस्त्रः (+दिवा, अव्य०) ॥

१०. 'प्रभात' (सबेरा-सूर्योदयसे कुछ पूर्वका समय)के ९ नाम हैं—प्रभातम् , अहर्मुखम्, व्युष्टम् , विभातम् , प्रत्यूषम् (पु न), कल्यम् , प्रत्युषः, उषः (२-षस्), काल्यम् (+प्रातः,—तर् , प्रगे, प्राह्णे , पूर्वेद्युः-द्युस् , ४ अव्य०, गोसः) ॥

शेषश्चात्र—व्युष्टे निशात्ययगोसर्गौ ।

११. 'मध्याह्न' (दोपहरी) के ३ नाम हैं—मध्याह्नः, दिवामध्यम् , मध्यन्दिनम् ॥

१२. 'सायङ्काल' (दिनान्त)के ५ नाम हैं—दिवावसानम् (न । + दिनान्तः), उत्सूरः, विकालः, सबलिः (पु), सायम् (न ।+सायः, पु ।+ सायम्, अव्य०) ॥

—१ सन्ध्या तु पितृसूर्‌स्त्रिसन्ध्यं तूपवैणवम् ॥ ५४ ॥
३ श्राद्धकालस्तु कुतपोऽष्टमो भागो दिनस्य यः ।
४ निशा निशीथिनी रात्रिः शर्वरी क्षणदा क्षपा ॥ ५५ ॥
त्रियामा यामिनी भौती तमी तमा विभावरी ।
रजनी वसतिः श्यामा वासतेयी तमस्विनी ॥ ५६ ॥
उषा दोषेन्दुकान्ता५ऽथ तमिस्रा दर्शयामिनी ।
६ ज्यौत्स्नी तु पूर्णिमारात्रि७र्गणरात्रो निशागणः ॥ ५७ ॥
८ पक्षिणी पक्षतुल्याभ्यामहोभ्यां वेष्टिता निशा ।
९ गर्भकं रजनीद्वन्द्वं १०प्रदोषो यामिनीमुखम् ॥ ५८ ॥

---

१. 'सन्ध्या'के २ नाम हैं—सन्ध्या, पितृसूः ॥

२. 'सहोक्त (साथमें कहे गये) तीनों सन्ध्याकाल' (प्रातः सन्ध्या, मध्याह्न सन्ध्या तथा सायं सन्ध्या)के २ नाम हैं—त्रिसन्ध्यम्, उपवैणवम् ॥

३. 'श्राद्धके समय' (दिनके आठवें भाग)के २ नाम हैं—श्राद्धकालः, कुतपः (पु न) ॥

४. 'रात'के २० नाम हैं—निशा, निशीथिनी, रात्रिः (+रात्री), शर्वरी, क्षणदा, क्षपा, त्रियामा, यामिनी (यौ०—यामवती), भौती, तमी, तमा, विभावरी, रजनी, वसतिः, श्यामा, वासतेयी, तमस्विनी, उषा, दोषा (+२ अव्य० भी), इन्दुकान्ता (नक्तम्, अव्य०, तुङ्गी) ॥

शेषश्चात्र—निशि चक्रभेदिनी।

निषद्वरी निशिथ्या निट् घोरा वासरकन्यका।
शताक्षी राक्षसी याम्या पूतार्चिस्तामसी तमिः ॥
शार्वरी क्षणिनी नक्ता पैशाची वासुरा उशाः ।

५. 'अँधेरी रात या अमावस्याकी रात'के २ नाम हैं—तमिस्रा, दर्शयामिनी ॥

६. 'उजेली रात या पूर्णिमाकी रात'के २ नाम हैं—ज्यौत्स्नी, पूर्णिमारात्रिः ॥

७. 'निशा-समूह'के २ नाम हैं—गणरात्रः, निशागणः ॥

८. 'दो पक्षोंकी मध्यवाली रात' (पूर्णिमा तथा कृष्णपक्षकी प्रतिपत् तिथियों और अमावस्या तथा शुक्लपक्षकी प्रतिपत् तिथियोंके बीचवाली रात) का १ नाम है—पक्षिणी। (इसी प्रकार उक्त दोनों तिथियोंके मध्यवाले दिनका १ नाम है—पक्षी दिन्) ॥

९. 'दो रात्रियोंके समुदाय'के २ नाम हैं—गर्भकम्, रजनीद्वन्द्वम् ॥

१०. 'प्रदोषकाल' (रात्रिके प्रारम्भ काल)के २ नाम हैं—प्रदोषः, यामिनीमुखम् (+रजनीमुखम्, निशामुखम्) ॥

१ यामः प्रहरो २निशीथस्त्वर्द्धरात्रो महानिशा ।
३ उच्चन्द्रस्त्वपररात्र४स्तमिस्रं तिमिरं तमः ॥ ५९ ॥
ध्वान्तं भूच्छायान्धकारं तमसं समवान्धतः ।
५ तुल्यनक्तन्दिने काले विषुवद्विषुवञ्च तत् ॥ ६० ॥
६ पञ्चादशाहोरात्रः स्यात्पक्षः ७स बहुलोऽसितः ।
८ तिथिः पुनः कर्मवाटी ९प्रतिपत्पक्षतिः समे ॥ ६१ ॥

शेषश्चात्र—दिनात्यये प्रदोषः स्यात् ।

१. 'पहर' (३ घंटेका समय)के २ नाम हैं—यामः, प्रहरः ॥

२. 'आधीरात'के ३ नाम हैं—निशीथः, अर्धरात्रः, महानिशा (+निःसम्पातः) ॥

३. 'रातके अन्तिम भाग'के २ नाम हैं—उच्चन्द्रः, अपररात्रः (+पश्चिमरात्रः) ॥

४. 'अन्धकार'के ९ नाम हैं—तमिस्रम् (पु स्त्री), तिमिरम् (पु न), तमः (-मस्), ध्वान्तम् (पु न), भूच्छाया (+भूच्छायम्), अन्धकारम् (पु न), सन्तमसम्, अवतमसम्, अन्धतमसम् (+अन्धातमसम्) ॥

शेषश्चात्र—ध्वान्ते वृत्रो रजोबलम् ।

राज्रिरागो नीलपङ्को दिनाण्डं दिनकेसरः ।
खपरागो निशावर्म वियद्भूतिर्दिगम्बरः ॥

विमर्श—'अमरसिंह'ने 'नामलिङ्गानुशासन'में "ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः ॥ विष्वक् सन्तमसम्,......" (१।८।३-४) उक्ति द्वारा अत्यधिक अन्धकारका नाम—'अन्धतमसम्', थोड़े (क्षीण) अन्धकारका नाम—'अवतमसम्' और चारों ओर फैले हुए अन्धकारका नाम—'सन्तमसम्' कहा है ॥

५. 'जिस समय रात-दिन बराबर हों, उस समय'के २ नाम हैं—विषुवत् (पु न), विषुवम् ॥

विमर्श—उक्त समय सूर्यकी मेष तथा तुला-संक्रान्तिके प्रारम्भमें होता है ॥

६. १५ अहोरात्र (दिन-रात)का १ 'पक्षः' ($\frac{1}{2}$ मास) होता है ॥

७. वह पक्ष २ प्रकारका होता है—'बहुलः, असितः'। अर्थात् शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष ॥

८. 'तिथि'के २ नाम हैं—तिथिः (पु स्त्री), कर्मवाटी ॥

९. 'प्रतिपद्' (परिवा) तिथिके २ नाम हैं—प्रतिपत् (-पद्), पक्षतिः (२ स्त्री) ॥

१ पञ्चदश्यौ यज्ञकालौ पक्षान्तौ पर्वणी अपि ।
२ तत्पर्वमूलं भूतेष्टापञ्चदश्योर्यदन्तरम् ॥ ६२ ॥
३ स पर्व सन्धिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम् ।
४ पूर्णिमा पौर्णमासी ५सा राका पूर्णे निशाकरे ॥ ६३ ॥
६ कलाहीने त्वनुमति७र्मार्गशीर्ष्याग्रहायणी ।
८ अमाऽमावस्यमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः ॥ ६४ ॥
अमावास्याऽमावासी च ९सा नष्टेन्दुः कुहुः कुहूः ।
१० दृष्टेन्दुस्तु सिनीवाली ११ भूतेष्टा तु चतुर्दशी ॥ ६५ ॥
१२ पक्षौ मासो १३वत्सरादिर्मार्गशीर्षः सहः सहाः ।
आग्रहायणिकश्च--

---

१. 'पूर्णिमा तथा अमावस्या तिथियों'के ४ नाम हैं—पञ्चदश्यौ, यज्ञकालौ, पक्षान्तौ, पर्वणी (-र्वन् । ४ नि द्विव) ॥

२. 'पूर्णिमा तथा शुक्लपक्षकी चतुर्दशी और अमावस्या तथा कृष्णपक्षकी चतुर्दशी तिथियोंके मध्यकाल'का १ नाम है—'पर्वमूलम्' ॥

३. 'पूर्णिमा तथा कृष्णपक्षकी प्रतिपदा तिथियों और अमावस्या तथा शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा तिथियोंके सन्धिकाल' (मध्य भाग)का १ नाम है--पर्व (-र्वन् ।+पर्वसन्धिः) ॥

४. 'पूर्णिमा तिथि'के २ नाम हैं--पूर्णिमा, पौर्णमासी ॥

५. 'पूर्ण चन्द्रवाली पूर्णिमा तिथि'का १ नाम है—राका ॥

६. 'कलासे हीन पूर्णिमा तिथि'का १ नाम है—अनुमतिः ॥

७. 'अगहनकी पूर्णिमा तिथि'के २ नाम हैं—मार्गशीर्षी, आग्रहायणी ॥

८. 'अमावस्या तिथि'के ७ नाम हैं—अमा, अमावसी, अमावस्या, दर्शः, सूर्येन्दुसङ्गमः, अमावास्या, अमावासी ॥

९. 'जिसमें चन्द्रका बिलकुल दर्शन नहीं हो, उस अमावस्या तिथि'के २ नाम हैं—कुहुः (स्त्री), कुहूः ॥

१०. 'जिसमें चन्द्रका दर्शन हो, उस अमावस्या तिथि'का १ नाम है—सिनीवाली ॥

११. 'चतुर्दशी तिथि'के २ नाम हैं—भूतेष्टा, चतुर्दशी ॥

१२. २ पक्षका १ 'मासः' अर्थात् 'महीना' होता है ॥

शेषश्चात्र—मासे वर्षांशको भवेत् ।
　　वर्षकोशो दिनमलः ॥

१३. 'अगहन मास'के ५ नाम हैं—वत्सरादिः, मार्गशीर्षः (यौ०—मार्गः), सहः, सहाः (-हस् , पु), आग्रहायणिकः ॥

—१अथ पौषस्तैषः सहस्यवत् ॥ ६६ ॥
२ माघस्तपाः ३ फाल्गुनस्तु फाल्गुनिकस्तपस्यवत् ।
४ चैत्रो मधुश्चैत्रिकश्च ५ वैशाखे राधमाधवौ ॥ ६७ ॥
६ ज्येष्ठस्तु शुक्रो७ऽथाषाढः शुचिः स्याद्८च्छ्रावणो नभाः ।
श्रावणिको९ऽथ नभस्यः प्रौष्ठभाद्रपरः पदः ॥ ६८ ॥
भाद्रश्चा१०प्याश्विने त्वाश्वयुजेषा११वथ कार्तिकः ।
कार्तिकिको बाहुलोर्जौ १२ द्वौ द्वौ मार्गादिकावृतुः ॥ ६९ ॥

---

१. 'पौष मास'के ३ नाम हैं—पौषः, तैषः, सहस्यः ॥

२. 'माघ मास'के २ नाम हैं—माघः, तपाः (-पस्, पु) ॥

३. 'फाल्गुन मास'के ३ नाम हैं—फाल्गुनः, फाल्गुनिकः, तपस्यः ॥

शेषश्चात्र—फल्गुनालस्तु फाल्गुने ।

४. 'चैत्र मास'के ३ नाम हैं—चैत्रः, मधुः (पु), चैत्रिकः ॥

शेषश्चात्र—चैत्रे मोहनिकः कामसखश्च फाल्गुनानुजः ॥

५. 'वैशाख मास'के ३ नाम हैं—वैशाखः, राधः, माधवः ॥

शेषश्चात्र—वैशाखे तूच्छरः ।

६. 'ज्येष्ठ मास'के २ नाम हैं—ज्येष्ठः, शुक्रः (पु न) ॥

शेषश्चात्र—ज्येष्ठमासे तु खरकोमलः । ज्येष्ठामूलीय इति च ।

७. 'आषाढ़ मास'के २ नाम हैं—आषाढः, शुचिः (पु) ॥

८. 'श्रावण मास'के ३ नाम हैं—श्रावणः, नभाः (-भस्, पु), श्रावणिकः ॥

९. 'भाद्रपद (भादों) मास'के ४ नाम हैं—नभस्यः, प्रौष्ठपदः, भाद्रपदः, भाद्रः ॥

१०. 'आश्विन (क्वार) मास'के ३ नाम हैं—आश्विनः, आश्वयुजः, इषः ॥

११. 'कार्तिक मास'के ४ नाम हैं—कार्तिकः, कार्तिकिकः, बाहुलः, ऊर्जः ॥

शेषश्चात्र—कार्तिके सैरिकौमुदौ ।

१२. 'मार्ग (अगहन)' आदि २-२ मासका १-१ 'ऋतु' होता है, यह 'ऋतुः' पुंल्लिङ्ग है ॥

विमर्श—'ऋतु' ६ होते हैं, उनके क्रमशः ये नाम हैं—हेमन्तः, शिशिरः, वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षाः और शरद् ॥

१ हेमन्तः प्रसलो रौद्रोऽथ २ शैषशिशिरौ समौ ।
३ वसन्त इष्यः सुरभिः पुष्पकालो बलाङ्गकः ॥ ७० ॥
४ उष्ण उष्णागमो ग्रीष्मो निदाघस्तप ऊष्मकः ।
५ वर्षास्तपात्ययः प्रावृट् मेघात्कालागमौ त्वरी ॥ ७१ ॥
६ शरद् घनात्ययो ७ऽयनं शिशिराद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ।
८ अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः ॥ ७२ ॥

---

१. 'हेमन्त ऋतु'के ३ नाम हैं—हेमन्तः, प्रसलः, रौद्रः (यह ऋतु अगहन तथा पौष मासमें होता है) ॥

शेषश्चात्र—हिमागमस्तु हेमन्ते ।

२. 'शिशिर ऋतु'के २ नाम हैं—शैषः, शिशिरः (पु न) । (यह ऋतु माघ तथा फाल्गुन मासमें होता है) ॥

३. 'वसन्त ऋतु'के ५ नाम हैं—वसन्तः, इष्यः (२ पु न), सुरभिः (पु), पुष्पकालः, बलाङ्गकः । (यह ऋतु चैत्र तथा वैशाख मासमें होता है) ॥

शेषश्चात्र—वसन्ते पिकबान्धवः ।
पुष्पसाधारणश्चापि ।

४. 'ग्रीष्म (गर्मी) ऋतु'के ६ नाम हैं—उष्णः, उष्णागमः, ग्रीष्मः, निदाघः, तपः, ऊष्मकः (+ऊष्मः) । (यह ऋतु ज्येष्ठ तथा आषाढ़ मास में होता है ।

शेषश्चात्र—ग्रीष्मे तूष्मायणो मतः ।
आखोरपञ्चौ ।

५. 'वर्षा ऋतु'के ६ नाम हैं—वर्षाः (नि० ब० व० स्त्री), तपात्ययः, प्रावृट् (-वृष्, स्त्री), मेघकालः, मेघागमः, त्वरी (-रिन्) । (यह ऋतु श्रावण तथा भाद्रपद मासमें होता है) ॥

६. 'शरद् ऋतु'के २ नाम हैं—शरद् (स्त्री), घनात्ययः ॥

७. शिशिर आदि ३-३ ऋतुओं का 'अयन' होता है । ('अयनम्'-नपुं—है) ।

विमर्श—शिशिर, वसन्त तथा ग्रीष्म तीन ऋतुओं (माघसे आषाढ़तक ६ मासों) का 'उत्तरायण' और वर्षा, शरद् तथा हेमन्त तीन ऋतुओं (श्रावण-से पौषतक ६ मासों) का 'दक्षिणायन' होता है ।

८. 'सूर्यकी उत्तर तथा दक्षिण दिशाकी ओर गतिसे दो अयन होते हैं—'उत्तरायणम्' 'दक्षिणायनम्' । इन दोनों अयनोंका (६ ऋतुओंका, अथवा १२ मासोंका) 'वत्सरः' अर्थात् १ वर्ष होता है ॥

१ स सम्पर्यनूद्भ्यो वर्षं हायनोऽब्दं समाः शरत् ।
२ भवेत्पैत्रं त्वहोरात्रं मासेनाऽब्देन दैवतम् ॥ ७३ ॥
४ दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मं —

---

१. 'वर्ष, साल'के ६ नाम हैं—संवत्सरः, परिवत्सरः, अनुवत्सरः, उद्वत्सरः, वर्षम्, हायनः, अब्दम् (३ पु न), समाः (स्त्री ब० व०), शरत् (-रद्, स्त्री) ॥

२. मनुष्योंके एक मासका 'पैत्रम् अहोरात्रम्' (पितरोंकी १ दिन–रात) होता है ॥

विमर्श—मनुष्योंके कृष्णपक्ष तथा शुक्लपक्षमें पितरोंका क्रमशः दिन और रात होता है । वास्तविक दृष्टिसे यह क्रम उस स्थितिमें है, जब आधी रातसे दिनका परिवर्तन माना जाता है, सूर्योदयसे दिनारम्भ माननेपर मनुष्योंके कृष्णपक्षकी अष्टमी तिथिके उत्तरार्द्धसे शुक्लपक्षकी अष्टमी तिथिके पूर्वार्द्धतक पितरोंका दिन तथा मनुष्योंके शुक्ल पक्षकी अष्टमी तिथिके उत्तरार्द्धसे कृष्ण-पक्षकी अष्टमी तिथिके पूर्वार्द्धतक पितरोंकी रात होती है, इस प्रकार मनुष्योंकी अमावस्या तथा पूर्णिमा तिथियोंके अन्तमें पितरोंका क्रमशः मध्याह्न तथा आधीरात होती है ॥

३. मनुष्योंके एक वर्षका 'दैवतम् अहोरात्रम्' (देवताओंकी १ दिन–रात) होता है ।

विमर्श—मनुष्योंका उत्तरायण (सूर्यकी मकरसंक्रान्तिसे मिथुनसंक्रा-न्तितक) देवोंका दिन और मनुष्योंका दक्षिणायन (सूर्यकी कर्कसंक्रान्तिसे धनुसंक्रान्तितक) देवोंकी रात होती है । वास्तविकमें यह क्रम भी उसी स्थितिमें है, जब आधीरातके बादसे दिनका प्रारम्भ माना जाता है, सूर्योदयसे दिनका प्रारम्भ माननेपर तो मनुष्योंके उत्तरायणके उत्तरार्द्धसे दक्षिणायनके पूर्वार्द्धतक (सूर्यकी मेषसंक्रान्तिके प्रारम्भसे कन्यासंक्रान्तिके अन्ततक) देवोंका दिन और मनुष्योंके दक्षिणायनके उत्तरार्द्धसे उत्तरायणके पूर्वार्द्धतक (सूर्यकी तुलासंक्रान्तिके प्रारम्भसे मीनसंक्रान्तिके अन्ततक) देवोंकी रात होती है । इस प्रकार मनुष्योंके उत्तरायण तथा दक्षिणायन (सूर्यकी मिथुन तथा धनुसंक्रान्ति)के अन्तिम दिनोंमें देवोंका क्रमशः मध्याह्न तथा आधीरात होती है ॥

४. देवोंके दो हजार युगका 'ब्राह्मम् अहोरात्रम्' (ब्रह्माका दिन-रात) होता है ।

विमर्श—मनुष्योंके ३६०वर्ष देवोंके ३६० दिन अर्थात् १ दिव्य वर्ष होते हैं । तथा १२००० दिव्य वर्ष (मनुष्योंके ४३२०००० तैंतालिस लाख

—१ कल्पौ तु ते नृणाम् ।

२ मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ॥ ७४ ॥

३ कल्पो युगान्तः कल्पान्तः संहारः प्रलयः क्षयः ।
संवर्त्तः परिवर्त्तश्च समसुप्तिर्जिहानकः ॥ ७५ ॥

४ तत्कालस्तु तदात्वं स्या५त्तज्जं सान्दृष्टिकं फलम् ।

६ आयतिस्तूत्तरः काल ७ उदर्कस्तद्भवं फलम् ॥ ७६ ॥

८ व्योमान्तरिक्षं गगनं घनाश्रयो विहाय आकाशमनन्तपुष्करे ।
अभ्रं सुराभ्रोडुमरुत्पथोऽम्बरं खं द्योदिवौ विष्णुपदं वियन्नभः ॥ ७७ ॥

बीस हजार वर्ष = १ चतुर्युग (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग) = दिव्य (देवोंका) १ युग होता है। उक्त दो हजार दिव्य युगकी ब्रह्माकी दिन-रात होती है अर्थात् एक हजार दिव्य युगका ब्रह्माका दिन तथा एक हजार दिव्ययुगकी ब्रह्माकी रात होती है। इस प्रकार मनुष्योंके ८६४०००००० आठ अरब चौंसठ करोड़ वर्षोंकी ब्रह्माकी 'दिन-रात' होती है अर्थात् मनुष्योंके ४३२०००००० चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षोंका 'ब्रह्माका दिन' तथा उतने ही मानव वर्षोंकी 'ब्रह्माकी रात' होती है ॥

१. वे ही दो हजार दैव वर्ष या ब्रह्माकी दिन-रात मनुष्योंका कल्पद्वय (दो कल्प) अर्थात् स्थिति तथा प्रलयकाल होता है। इसमें ब्रह्माका दिन मनुष्योंका स्थितिकाल और ब्रह्माकी रात मनुष्योंका प्रलयकाल होती है।

२. देवोंके ७१ युगोंका (मनुष्योंके ३०६७२०००० तीस करोड़ सरसठ लाख बीस हजार वर्षोंका) एक 'मन्वन्तर' (१४ मनुओंमें-से प्रत्येक मनुका स्थिति-काल) होता है। विशेष जिज्ञासुओंको 'अमरकोष'की मत्कृत 'मणिप्रभा' नामकी हिन्दी टीका तथा टिप्पणी देखनी चहिए ॥

३. 'कल्प, प्रलय'के १० नाम हैं—कल्पः, युगान्तः, कल्पान्तः, संहारः, प्रलयः, क्षयः, संवर्तः, परिवर्तः, समसुप्तिः, जिहानकः ।

४. 'उस समयके भाव' अर्थात् उस समयवालेके २ नाम हैं—तत्कालः, तदात्वम् ॥

५. 'तत्काल (उस समय)में होनेवाले फल' अर्थात् तात्कालिक फलका १ नाम है—सान्दृष्टिकम् ॥

६. 'उत्तर काल' (भविष्यमें आनेवाला समय) का १ नाम है–आयतिः।

७. 'उत्तरकालमें होनेवाले फल' (भावी परिणाम)का १ नाम है—उदर्कः ॥

८. 'आकाश'के २० नाम हैं—व्योम (-मन्), अन्तरिक्षम् (+अन्तरीक्षम्), गगनम् , घनाश्रयः, विहायः (-यस्), आकाशम् (२ पु न),

१ नभ्राट् तडित्वान्मुदिरो घनाघनोऽभ्रं धूमयोनिस्तनयित्नुमेघाः ।
जीमूतपर्जन्यबलाहका घनो धाराधरो वाहदमुग्धरा जलात् ॥ ७८ ॥
२ कादम्बिनी मेघमाला ३दुर्दिनं मेघजं तमः ।
४ आसारो वेगवान् वर्षो ५वातास्तं वारि शीकरः ॥ ७९ ॥
६ वृष्ट्यां वर्षणवर्षे ७तद्विघ्ने ग्राहग्रहाववात् ।
८ घनोपलस्तु करकः ९काष्ठाऽऽशा दिग्हरित् ककुप् ॥ ८० ॥

अनन्तम् , पुष्करम् , अभ्रम् , सुरपथः, अभ्रपथः, उडुपथः, मरुत्पथः, (यौ०—देववर्त्म, मेघवर्त्म, नक्षत्रवर्त्म, वायुवर्त्म,······४-र्त्मन्,·······), अम्बरम्, खम्, द्यौः (=द्यो), द्यौः(=दिव्), विष्णुपदम् , वियत् , नभः (-भस् । + विहायसा, भुवः, २ अव्य, महाविलम्) ॥

शेषश्चात्र—नक्षत्रवर्त्मनि पुनर्ग्रहनेमिर्नभोऽटवी ।
छायापथश्च ।

१. 'मेघ, बादल'के १७ नाम हैं—नभ्राट् (-भ्राज्), तडित्वान् (-त्वत्), मुदिरः, घनाघनः, अभ्रम् (न), धूमयोनिः, स्तनयित्नुः, मेघः, जीमूतः, पर्जन्यः, बलाहकः, घनः, धाराधरः, जलवाहः, जलदः, जलमुक् (-मुच्), जलधरः (शे० पु) ॥

शेषश्चात्र—मेघे तु व्योमधूमो नभोध्वजः ।
गडयित्नुर्गदयित्नुर्वार्मसिर्वारिवाहनः ॥
खतमालोऽपि ।

२. 'मेघ-समूह'का १ नाम है—कादम्बिनी (+कालिका) ॥

३. 'मेघकृत अन्धकार'का १ नाम है—दुर्दिनम् ॥

४. 'वेगसे पानी बरसने'का १ नाम है—आसारः ॥

शेषाश्चात्र—अथासारे धारासम्पात इत्यपि ।

५. 'हवासे उड़ाये गये जलकण'का एक नाम है—शीकरः ॥

६. 'वर्षा, पानी बरसने'के ३ नाम हैं—वृष्टिः, वर्षणम्, वर्षम् (पु न) ॥

७. 'सूखा पड़ना, पानी नहीं बरसने'के २ नाम हैं—अवग्राहः, अवग्रहः ॥

८. 'ओला, बनौरी'के २ नाम हैं—घनोपलः, करकः (त्रि) ॥

शेषश्चात्र—करकेऽम्बुघनो मेघकफो मेघास्थिमिञ्जिका ।
बीजोदकं तोयडिम्भो वर्षाबीजमिरावरम् ॥

९. 'पूर्वादि दिशा'के ५ नाम हैं—काष्ठा, आशा, दिक् (-श्), हरित्, ककुप् (-कुभ् । सब स्त्री) ॥

१पूर्वा प्राची २दक्षिणाऽपाची ३प्रतीची तु पश्चिमा ।
अपराऽ४थोत्तरोदीची ५विदिक् त्वपदिशं प्रदिक् ॥ ८१ ॥
६दिश्यं दिग्भववस्तु ७न्यपागपाचीन ८मुदगुदीचीनम् ।
९प्राक्प्राचीनं च समे १०प्रत्यक्तु स्यात्प्रतीचीनम् ॥ ८२ ॥
११तिर्यग्दिशां तु पतय इन्द्राग्नियमनैर्ऋताः ।
वरुणो वायुकुबेरावीशानश्च यथाक्रमम् ॥ ८३ ॥
१२ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ८४ ॥

---

१. 'पूर्व दिशा'के २ नाम हैं—पूर्वा, प्राची ॥

२. 'दक्षिण दिशा'के २ नाम हैं—दक्षिणा, अपाची (+अवाची) ॥

३. 'पश्चिम दिशा'के ३ नाम हैं—प्रतीची, पश्चिमा, अपरा ॥

शेषश्चात्र—यथाऽपरेतरा पूर्वाऽपरा पूर्वेतरा तथा ।

४. 'उत्तर दिशा'के २ नाम हैं—उत्तरा, उदीची ॥

शेषश्चात्र—यथोत्तरेतरापाची तथाऽपाचीतरोत्तरा ।

५. 'कोण' (पूर्वादि किन्हीं दो दिशाओंके बीचवाली दिशा)के ३ नाम हैं—विदिक् (-दिश्), अपदिशम्, प्रदिक् (-दिश्) ॥

६. 'दिशामें होनेवाली वस्तु'का एक नाम है—दिश्यम् ॥

७. 'दक्षिण दिशावाला' या 'दक्षिण दिशामें उत्पन्न'के २ नाम हैं—अपाक् (-पाच्), अपाचीनम् ॥

८. 'उत्तर दिशावाला' या 'उत्तर दिशामें उत्पन्न'के २ नाम हैं—उदक् (-दञ्च्), उदीचीनम् ॥

९. 'पूर्व दिशावाला' या 'पूर्व दिशामें उत्पन्न'के २ नाम हैं—प्राक् (-ञ्च्), प्राचीनम् ॥

१०. 'पश्चिम दिशावाला' या 'पश्चिम दिशामें उत्पन्न'के २ नाम हैं—प्रत्यक् (-त्यञ्च्), प्रतीचीनम् ॥

११. 'आठों दिशाओं' (चार कोणों तथा चार पूर्व आदि दिशाओं)के ये इन्द्र आदि क्रमशः पति (स्वामी) हैं—इन्द्रः, अग्निः, यमः, नैर्ऋतः, वरुणः, वायुः, कुबेरः, ईशानः ।

विमर्शः—पूर्व दिशाके स्वामी 'इन्द्र', अग्निकोण (पूर्व तथा दक्षिण दिशाओं की बीचवाली दिशा) का स्वामी 'अग्नि', दक्षिण दिशाका स्वामी यम,………… ॥

१२. ४ कोणों सहित पूर्व आदि आठों दिशाओंके ये 'ऐरावत' आदि गज

१इन्द्रो हरिर्दुश्च्यवनोऽच्युताग्रजो वज्री विडौजा मघवान् पुरन्दरः ।
प्राचीनबर्हिः पुरुहूतवासवौ सङ्क्रन्दनाखण्डलमेघवाहनाः ॥ ८५ ॥
सुत्रामवास्तोष्पतिदल्मिशक्रा वृषा शुनासीरसहस्रनेत्रौ ।
पर्जन्यहर्यश्वऋभुक्षिबाहुदन्तेयवृद्धश्रवसस्तुराषाट् ॥ ८६ ॥
सुरर्षभस्तपस्तक्षो जिष्णुर्वरशतक्रतुः ।
कौशिकः पूर्वदिग्देवाप्सरःस्वर्गशचीपतिः ॥ ८७ ॥
पृतनाषाडुग्रधन्वा मरुत्वान्मघवा२ऽस्यतु ।
द्विषः पाकोऽद्रयो वृत्रः पुलोमा नमुचिर्बलः ॥ ८८ ॥

दिग्गज हैं—ऐरावतः, पुण्डरीकः, वामनः, कुमुदः, अञ्जनः, पुष्पदन्तः, सार्वभौमः, सुप्रतीकः ॥

विमर्श—पूर्वका दिग्गज 'ऐरावत', 'अग्नि' कोणका दिग्गज 'पुण्डरीक', दक्षिण दिशाका दिग्गज 'वामन',.............. ॥ परन्तु आचार्य 'भागुरि'ने—"ऐरावत, पुण्डरीक, कुमुद, अञ्जन, वामन,......" ऐसा, और 'मालाकार'ने—"ऐरावत, सुप्रतीक,......" ऐसा पूर्वादिके दिग्गजोंका क्रम माना है ॥

१. (पहले (२।८३) पूर्व आदि ८ दिशाओंके स्वामी (दिक्पालों) के नाम कह चुके हैं, उन 'इन्द्र' आदि आठ दिक्पालोंमें-से 'अग्नि तथा वायु'को तिर्यक् काण्ड (४।१६३–१६६ तथा १७२–१७३) में कहेंगे, शेष इन्द्रादि ६ दिक्पालोंके नामादि यथाक्रम कहते हैं—) । 'इन्द्र'के ४२ नाम हैं—इन्द्रः, हरिः, दुश्च्यवनः, अच्युताग्रजः, वज्री (–ज्रिन्), विडौजाः (–जस्), मघवान् (–वत्), पुरन्दरः, प्राचीनबर्हिः (–र्हिस्), पुरुहूतः, वासवः, संक्रन्दनः, आखण्डलः, मेघवाहनः, सुत्रामा (–मन् । + सूत्रामा,–मन्), वास्तोष्पतिः, दल्मिः, शक्रः, वृषा (–षन्), शुनासीरः (+ सुनासीरः), सहस्रनेत्रः, पर्जन्यः, हर्यश्वः, ऋभुक्षी (–क्षिन्), बाहुदन्तेयः, वृद्धश्रवाः (–वस्), तुराषाट् (–ह्), सुरर्षभः, तपस्तक्षः, जिष्णुः, वरक्रतुः, शतक्रतुः, कौशिकः, पूर्वदिक्पतिः, देवपतिः, अप्सरःपतिः, स्वर्गपतिः, शचीपतिः (यौ० क्रमशः—प्राचीशः, पूर्वदिगीशः, सुरेशः, सुरस्त्रीशः, नाकेशः, शचीशः, पौलोमीशः,......), पृतनाषाट् (–षाह्), उग्रधन्वा (–न्वन्), मरुत्वान् (–त्वत्), मघवा (–वन्) ॥

शेषश्चात्र—इन्द्रे तु खदिरो नेरो त्रयस्त्रिंशपतिर्जयः ।
गौरावस्कन्दी वन्दीको वराणो देवदुन्दुभिः ॥
किणालातश्च हरिमान् यामनेमिरसन्महाः ।
शपीविर्मिहिरो वज्रदक्षिणो वयुनोऽपि च ॥

८१. 'इन्द्रके शत्रुओं'का १–१ नाम है—पाकः, अद्रयः, वृत्रः, पुलोमा

जम्भः [1]प्रिया शचीन्द्राणी पौलोमी जयवाहिनी।
[2]तनयस्तु जयन्तः स्याज्जयदत्तो जयश्च सः ॥ ८९ ॥
[3]सुता जयन्ती तविषी ताविष्यु[4]च्चैःश्रवा हयः।
[5]मातलिः सारथि[6]र्देवनन्दी द्वाःस्थो [7]गजः पुनः ॥ ९० ॥
ऐरावणोऽभ्रमातङ्गश्चतुर्दन्तोऽर्कसोदरः ।
ऐरावतो हस्तिमल्लः श्वेतगजोऽभ्रमुप्रियः ॥ ९१ ॥
[8]वैजयन्तौ तु प्रासादध्वजौ [9]पुर्यमरावती।

(-मन्), नमुचिः, बलः, जम्भः । (वध्याद्विद्द्वेषिजिद्घाति……१।१०-११ वचनके अनुसार—"पाकद्विट्, अद्रिद्विट्, वृत्रद्विट्, पुलोमद्विट्, नमुचिद्विट्, बलद्विट्, जम्भद्विट्,……" तथा यौ०—"पाकशासनः, अद्रिशासनः, वृत्र-शासनः,……" नाम भी 'इन्द्र'के हैं) ॥

१. 'इन्द्राणी' (इन्द्रकी प्रिया)के ४ नाम हैं—शची, इन्द्राणी, पौलोमी, जयवाहिनी ॥

शेषश्चात्र—स्यात् पौलोम्यां तु शक्राणी चारुधारा शतावरी।
महेन्द्राणी परिपूर्णसहस्रचन्द्रवत्यपि ॥

२. 'इन्द्रके पुत्र'के ३ नाम हैं—जयन्तः, जयदत्तः, जयः ॥

शेषश्चात्र—जयन्ते यागसन्तानः ।

३. 'इन्द्रकी पुत्री'के ३ नाम हैं—जयन्ती, तविषी, ताविषी ॥

४. 'इन्द्रके घोड़े'का १ नाम है—उच्चैःश्रवाः (-वस्) ॥

शेषश्चात्र—वृषणश्वो हरेर्हये।

५. 'इन्द्रके सारथि'का १ नाम है—मातलिः ॥

शेषश्चात्र—मातलौ हयंकषः स्यात्।

६. 'इन्द्रके द्वारपाल'का १ नाम है—देवनन्दी (-न्दिन्) ॥

७. 'इन्द्रके हाथी' (ऐरावत, पूर्व दिशाका दिग्गज)के ८ नाम हैं—ऐरावणः, अभ्रमातङ्गः, चतुर्दन्तः, अर्कसोदरः, ऐरावतः (पु न), हस्तिमल्लः, श्वेतगजः, अभ्रमुप्रियः ॥

शेषश्चात्र—ऐरावणे मदाम्बरः । सदादानो भद्ररेणुः ॥

८. 'इन्द्रके महल तथा ध्वजा'का १ नाम है—वैजयन्तौ ॥
(दोकी अपेक्षासे द्विवचन कहा गया है, अतः 'वैजयन्तः' ए० व० भी होता है) ॥

९. 'इन्द्रपुरी'का १ नाम है—अमरावती ॥

शेषश्चात्र—पुरे त्वैन्द्रे सुदर्शनम्।

१सरो नन्दीसरः २पर्षत् सुधर्मा ३नन्दनं वनम् ॥ ९२ ॥
४वृक्षाः कल्पः पारिजातो मन्दारो हरिचन्दनः ।
सन्तानश्च ५धनुर्देवायुधं ६तदृजु रोहितम् ॥ ९३ ॥
७दीर्घमैरावतं ८वज्रं त्वशनिर्ह्लादिनी स्वरुः ।
शतकोटिः पविः शम्बोः दम्भोलिर्भिदुरं भिदुः ॥ ९४ ॥
व्याधामः कुलिशोऽ ९स्यार्चिरतिभीः १०स्फूर्जथुर्ध्वनिः ।
११स्ववैद्यावश्विनीपुत्रावश्विनौ वडवासुतौ ॥ ९५ ॥
नासिक्यावर्कजौ दस्रौ नासत्यावब्धिजौ यमौ ।
१२विश्वकर्मा पुनस्त्वष्टा विश्वकृद् देववर्द्धकिः ॥ ९६ ॥
१३स्वःस्वर्गिवध्वोऽप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ।

---

१. 'इन्द्रके तडाग'का १ नाम है—नन्दीसरः (-रस्) ॥

२. 'इन्द्रकी सभा'का १ नाम है—सुधर्मा ॥

३. 'इन्द्रके वन' (उद्यान)का १ नाम है—नन्दनम् ॥

४. 'इन्द्रके वृक्षों' (देव-वृक्षों)का क्रमशः १-१ नाम है—कल्पः, पारिजातः, मन्दारः, हरिचन्दनः, सन्तानः । (ये ही पाँचों 'देववृक्ष' कहलाते हैं) ॥

५. 'इन्द्रधनुष्'का १ नाम है—देवायुधम् ॥

६. 'सीधे इन्द्र-धनुष्'का १ नाम है—रोहितम् (+ ऋजुरोहितम्) ॥

७. 'इन्द्रके बड़े तथा सीधे धनुष्'का १ नाम है—ऐरावतम् (पु न) ॥

८. 'वज्र' (इन्द्रके हथियार)के १२ नाम हैं—वज्रम् (पु न), अशनिः (पु स्त्री), ह्लादिनी, स्वरुः (पु), शतकोटिः (पु । + शतारः; शतधारः), पविः (पु), शंबः, दम्भोलिः (पु), भिदुरम्, भिदुः (पु), व्याधामः, कुलिशः (पु न) ॥

९. 'वज्रकी ज्वाला'का १ नाम है—अतिभीः (स्त्री) ॥

१०. 'वज्र की ध्वनि'का १ नाम है—स्फूर्जथुः (पु) ॥

११. 'अश्विनीकुमार'के १० नाम हैं—स्ववैद्यौ, अश्विनीपुत्रौ (यौ०—आश्विनेयौ,......), अश्विनौ, वडवासुतौ, नासिक्यौ, अर्कजौ, दस्रौ, नासत्यौ, अब्धिजौ, यमौ (सर्वदा युग्म रहनेसे सब शब्द नि.द्वि.व. हैं) ॥

शेषश्चात्र—नासिक्ययोस्तु नासत्यदस्रौ प्रवरवाहनौ । गदान्तकौ यज्ञवहौ ।

१२. 'विश्वकर्मा'के ४ नाम हैं—विश्वकर्मा (-र्मन्), त्वष्टा (-ष्टृ), विश्वकृत्, देववर्धकिः ॥

१३. 'अप्सराओं'के ४ नाम हैं—स्वर्वध्वः, स्वर्गिवध्वः, (यौ०—स्वर्गस्त्रियः,

१हाहादयस्तु गन्धर्वा गान्धर्वा देवगायनाः ॥ ९७ ॥
२यमः कृतान्तः पितृदक्षिणाशाप्रेतात्पतिर्दण्डधरोऽर्कसूनुः ।
कीनाशमृत्यू समवर्तिकालौ शीर्णाङ्घ्रिहर्यन्तकधर्मराजाः ॥ ९८ ॥
यमराजः श्राद्धदेवः शमनो महिषध्वजः ।
कालिन्दीसोदरश्चापि ३धूमोर्णा तस्य वल्लभा ॥ ९९ ॥
४पुरी पुनः संयमनी ५प्रतीहारस्तु वैध्यतः ।
६दासौ चण्डमहाचण्डौ ७चित्रगुप्तस्तु लेखकः ॥ १०० ॥

सुरस्त्रियः,·······), अप्सरसः (-रस्, ब. व. स्त्री । +अप्सराः), स्वर्वेश्याः, (+देवगणिकाः)। वे 'अप्सराएँ' 'उर्वशी' आदि ('आदि'से—प्रभावती,······)॥

विमर्श—उन 'अप्सराओं'के नाम ये हैं—प्रभावती, वेदिवती, सुलोचना, उर्वशी, रम्भा, चित्रलेखा, महाचित्ता, काकलिका, वसा, मरीचिसूचिका, विद्युत्पर्णा, तिलोत्तमा, अद्रिका, लक्षणा, क्षेमा, दिव्या, रामा, मनोरमा, हेमा, सुगन्धा, सुवपुः (-पुस्), सुबाहुः, सुव्रता, सिता, शारद्वती, पुण्डरीका, सुरसा, सूनृता, सुवाता, कामला, हंसपादी, पर्णिनी, पुञ्जिकास्थला, ऋतुस्थला, घृताची, विश्वाची ॥

१. 'गन्धर्वों' (देवोंके गायकों—गान करनेवालों)के ३ नाम हैं—गन्धर्वाः, गान्धर्वाः, देवगायनाः (बहुत्वकी अपेक्षासे बहुवचन है, अतः इन नामोंके एकवचन भी होते हैं)। वे 'गन्धर्व' 'हाहा' आदि ('आदि' शब्दसे—"हूहूः, तुम्बुरुः, वृषणाश्वः, विश्वावसुः, वसुरुचिः,···"। हूहाहाहूः। पु+अव्यय)॥

२. 'यमराज' के २० नाम हैं—यमः, कृतान्तः, पितृपतिः, दक्षिणाशापतिः, प्रेतपतिः, दण्डधरः, अर्कसूनुः, कीनाशः, मृत्युः, समवर्ती (-र्तिन्), कालः, शीर्णाङ्घ्रिः, हरिः, अन्तकः, धर्मराजः, यमराजः (+यमराट्,—राज्), श्राद्धदेवः, शमनः, महिषध्वजः (+महिषवाहनः), कालिन्दीसोदरः +यमुनाभ्राता,(—तृ,······)॥

शेषश्चात्र—यमे तु यमुनाग्रजः ।
　　महासत्यः पुराणान्तः कालकूटः ।

३. 'यमराजकी स्त्री'का १ नाम हैं—धूमोर्णा ॥

४. 'यमपुरी'का १ नाम है—संयमनी ।

५. 'यमराजके द्वारपाल'का १ नाम है—वैध्यतः ॥

६. 'यमराजके दोनों दासों'का १-१ नाम है—चण्डः, महाचण्डः ॥

७. 'यमराजके लेखक'का १ नाम है—चित्रगुप्तः ॥

१स्याद्राक्षसः पुण्यजनो नृचक्षा यात्वाशरः कौणपयातुधानौ ।
रात्रिञ्चरो रात्रिचरः पलादः कीनाशरक्षोनिकसात्मजाश्च ॥१०१॥
क्रव्यात्कर्बुरनैर्ऋतावसृक्पो २वरुणस्त्वर्णवमन्दिरः प्रचेताः ।
जलयादःपतिपाशिमेघनादा जलकान्तारः स्यात्परञ्जनश्च ॥१०२॥
३श्रीदः सितोदरकुहेशसखाः पिशाचकीच्छावसुस्त्रिशिरऐलविलैकपिङ्गाः ।
पौलस्त्यवैश्रवणरत्नकराः कुबेरयक्षौ नृधर्मधनदौ नरवाहनश्च ॥१०३॥
कैलासौका यक्षधननिधिकिम्पुरुषेश्वराः ।
४विमानं पुष्पकं ५चैत्ररथं वनं—

---

१. 'राक्षस'के १८ नाम हैं—राक्षसः, पुण्यजनः, नृचक्षा (-क्षस्), यातु (न+पु), आशरः, कौणपः, यातुधानः, रात्रिञ्चरः, रात्रिचरः, पलादः, कीनाशः, रक्षः (-क्षस्, न), निकसात्मजः (+नैकसेयः,+निकषात्मजः, नैकषेयः), क्रव्यात् (-व्याद् +क्रव्यादः), कर्बुरः, नैर्ऋतः, असृक्पः (अस्रपः, अश्रपः) ॥

शेषश्चात्र—अथ राक्षसे ।

पलप्रियः खसापुत्रः कर्बरो नरविष्वणः ।
अशिरो हनुषः शङ्कुर्विथुरो जललोहितः ॥
उद्धरः स्तब्धसंभारो रक्तग्रीवः प्रवाहिकः ।
सन्ध्याबलो रात्रिबलस्त्रिशिराः समितीन्दः ॥

२. 'वरुण'के ६ नाम हैं—वरुणः, अर्णवमन्दिरः, प्रचेताः (-तस्), जलपतिः, यादःपतिः (यौ०—अपां नाथः, यादोनाथः,.........), पाशी (-शिन्। यौ०—पाशपाणिः), मेघनादः, जलकान्तारः, परञ्जनः ॥

शेषश्चात्र—वरुणे तु प्रतीचीशो दुन्दुभ्युद्दामसंवृताः ।

३. 'कुबेर'के २२ नाम हैं—श्रीदः, सितोदरः, कुहः, ईशसखः, पिशाचकी (-किन्), इच्छावसुः, त्रिशिराः (-रस्), ऐलविलः (+ऐडविलः), एकपिङ्गः, पौलस्त्यः, वैश्रवणः, रत्नकरः, कुबेरः, यक्षः, नृधर्मा (-र्मन्। +मनुष्यधर्मा,—र्मन्), धनदः, नरवाहनः, कैलासौकाः (-कस्), यक्षेश्वरः, धनेश्वरः, निधीश्वरः, किंपुरुषेश्वरः (यौ०—गुह्यकेशः, वित्तेशः, निधानेशः, किन्नरेशः,........, राजराजः) ॥

शेषश्चात्र—धनदे निधनाक्षः स्यान्महासत्त्वः प्रमोदितः ।
रत्नगर्भ उत्तराशाऽधिपतिः सत्यसङ्गरः ॥
धनकेलिः सुप्रसन्नः परिविद्धः ।

४. 'कुबेरके विमान'का १ नाम है—पुष्पकम् ॥

५. 'कुबेरके वन' (उद्यान, फुलवाड़ी)का १ नाम है—चैत्ररथम् ॥

—१ पुरी प्रभा ॥ १०४ ॥

अलका वस्वोकसारा २सुतोऽस्य नलकूबरः ।

३वित्तं रिक्थं स्वापतेयं राः सारं विभवो वसु ॥ १०५ ॥

द्युम्नं द्रव्यं पृक्थमृक्थं स्वमृक्णं द्रविणं धनम् ।

हिरण्यार्थौ ४निधानं तु कुनाभिः शेवधिर्निधिः ॥ १०६ ॥

५महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ ।

मुकुन्दकुन्दनीलाश्च चर्चाश्च निधयो नव ॥ १०७ ॥

६यक्षः पुण्यजनो राजा गुह्यको वटवास्यपि ।

७किन्नरस्तु किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः ॥ १०८ ॥

८शम्भुः शर्वः स्थाणुरीशान ईशो रुद्रोड्डीशौ वामदेवो वृषाङ्कः ।

कण्ठेकालः शङ्करो नीलकण्ठः श्रीकण्ठोग्रौ धूर्जटिर्भीमभर्गौ ॥१०९॥

---

१. 'कुबेर की पुरी'के ३ नाम हैं—प्रभा, अलका, वस्वोकसारा ॥

शेषश्चात्र—अलका पुनः ।

वसुप्रभा वसुसारा ।

२. 'कुबेरके पुत्र'का १ नाम है—नलकूबरः ॥

३. 'धन'के १७ नाम हैं—वित्तम्, रिक्थम्, स्वापतेयम्, राः (रै, स्त्री पु), सारम् (न । +पु), विभवः, वसु (न), द्युम्नम्, द्रव्यम्, पृक्थम्, ऋक्थम्, स्वम् (पु न), ऋक्णम्, द्रविणम्, धनम् (पु न), हिरण्यम्, अर्थः ॥

४. 'निधान' (उत्तम खजाना)के ४ नाम हैं—निधानम्, कुनाभिः (पु), शेवधिः (पु । +पु न), निधिः (पु) ॥

५. महापद्मः, पद्मः (पु । +पु न), शङ्खः, मकरः, कच्छपः, मुकुन्दः, कुन्दः, नीलः, चर्चाः,—ये ९ 'निधियां' हैं । 'निधिः' शब्द पुंल्लिङ्ग है ॥

विमर्श—जैन सिद्धान्तके अनुसार ९ निधियोंके ये नाम हैं—नैसर्पः, पाण्डुकः, पिङ्गलः, सर्वरत्नकः, महापद्मः, कालः, महाकालः, माणवः, शङ्खः । उन्हींके नामवाले उनके अधिष्ठाता देव हैं, 'पल्य' परिमाण आयुवाले नागकुमार वहाँके निवासी हैं ॥

६. 'यक्ष'के ५ नाम हैं—यक्षः, पुण्यजनः, राजा (-जन्), गुह्यकः, वटवासी (-सिन्) ॥

७. 'किन्नर'के ४ नाम हैं—किन्नरः, किम्पुरुषः, तुरङ्गवदनः, मयुः ॥

८. 'शिवजी'के ७७ नाम हैं—शम्भुः, शर्वः, स्थाणुः, ईशानः, ईशः, रुद्रः, उड्डीशः, वामदेवः, वृषाङ्कः, कण्ठेकालः, शङ्करः, नीलकण्ठः,

मृत्युञ्जयः पञ्चमुखोऽष्टमूर्तिः श्मशानवेश्मा गिरिशो गिरीशः ।
षण्ढः कपर्दीश्वर ऊर्ध्वलिङ्ग एकत्रिदृग्भालदृगेकपादः ॥ ११० ॥
मृडोऽट्टहासी घनवाहनोहिर्बुध्नो विरूपाक्षविषान्तकौ च ।
महाव्रती वह्निहिरण्यरेताः शिवोऽस्थिधन्वा पुरुषास्थिमाली ॥ १११ ॥
स्याद्व्योमकेशः शिपिविष्टभैरवौ दिक्कृत्तिवासा भवनीललोहितौ ।
सर्वज्ञनाट्यप्रियखण्डपर्शवो महापरा देवनटेश्वरा हरः ॥ ११२ ॥
पशुप्रमथभूतोमापतिः पिङ्गजटेक्षणः ।
पिनाकशूलखट्वाङ्गगङ्गाऽहीन्दुकपालभृत् ॥ ११३ ॥
गजपूषपुरानङ्गकालान्धकमखासुहृत् ।

श्रीकण्ठः, उग्रः, धूर्जटिः, भीमः, भर्गः, मृत्युञ्जयः, पञ्चमुखः, अष्टमूर्तिः, श्मशानवेश्मा (–श्मन्), गिरिशः, गिरीशः, षण्ढः, कपर्दी (–र्दिन्), ईश्वरः, ऊर्ध्वलिङ्गः, एकदृक्, त्रिदृक्, भालदृक् (३–दृश्), एकपात् (पाद्), मृडः, अट्टहासी (–सिन्), घनवाहनः, अहिर्बुध्नः, विरूपाक्षः, विषान्तकः, महाव्रती (–तिन्), वह्निरेताः, हिरण्यरेताः (२–तस्), शिवः, अस्थिधन्वा (–न्वन्), पुरुषास्थिमाली (–लिन्), व्योमकेशः, शिपिविष्टः, भैरवः, दिग्वासाः (दिगम्बरः), कृत्तिवासाः (२–सस्), भवः, नीललोहितः, सर्वज्ञः, नाट्यप्रियः, खण्डपर्शुः, महादेवः, महानटः, महेश्वरः, हरः, पशुपतिः, प्रमथपतिः, भूतपतिः, उमापतिः, पिङ्गजटः, पिङ्गेक्षणः, पिनाकभृत्, शूलभृत् 'खट्वाङ्गभृत्, गङ्गाभृत्, अहिभृत्, इन्दुभृत्, कपालभृत्, गजासुहृत् पूषासुहृत्, पुरासुहृत्, अनङ्गासुहृत्, कालासुहृत्, अन्धकासुहृत्, मखासुहृत्, (७–हृद् । यौ०—गजासुरद्वेषी (–षिन्), पूषदन्तहरः, त्रिपुरान्तकः, कामध्वंसी(–सिन्), यमजित्, अन्धकारिः, दक्षाध्वरध्वंसकः, गजारिः, गजान्तकृत्, गजान्तकः, गजरिपुः,··········) ॥

शेषश्चात्र—शङ्करे नन्दिवर्धनः ।

बहुरूपः सुप्रसादो मिहिराणोऽपराजितः ॥
कङ्कटीको गुह्यगुरुर्भगनेत्रान्तकः खरुः ।
परिणाहो दशबाहुः सुभगोऽनेकलोचनः ॥
गोपालो वरवृद्धोऽहिपर्यङ्कः पांसुचन्दनः ।
कूटकृन्मन्दरमणिर्नवशक्तिर्महाम्बकः ॥
कोणवादी शैलधन्वा विशालाक्षोऽक्षतस्वनः ।
उन्मत्तवेषः शबरः सिताङ्गो धर्मवाहनः ॥
महाकान्त वह्निनेत्रः स्त्रीदेहार्धो नृवेष्टनः ।
महानादो नराधारो भूरिरेकादशोत्तमः ॥

१कपर्दोऽस्य जटाजूटः २खट्वाङ्गस्तु सुखंसुणः ॥ ११४ ॥
३पिनाकं स्यादाजगवमजकावञ्च तद्धनुः ।
४ब्राह्मयाद्या मातरः सप्त ५प्रमथाः पार्षदा गणाः ॥ ११५ ॥
६लघिमा वशितेशित्वं प्राकाम्यं महिमाऽणिमा ।
यत्रकामावसायित्वं प्राप्तिरैश्वर्यमष्टधा ॥ ११६ ॥

जोटी जोटीङ्गोऽर्धकूटः समिरो धूम्रयोगिनौ ।
उलन्दो जयतः कालो जटाधरदशाव्ययौ ॥
सन्ध्यानाटी रेरिहाणः शङ्कुश्च कपिलाञ्जनः ।
जगद्द्रोणिरर्धकालो दिशां प्रियतमोऽतलः ॥
जगत्स्रष्टा कटाटङ्कः कटप्रूहीरहल्करा: ।

१. 'शिवजीके जटासमूह'के २ नाम हैं—कपर्दः, जटाजूटः ॥

२. 'शिवजीके खट्वाङ्ग'के २ नाम हैं—खट्वाङ्गः (पु । + न), सुखंसुणः ॥

३. 'शिवजीके धनुष'के ३ नाम हैं—पिनाकम् (पु न), आजगवम्, अजकावम् (+ अजगवम्, अजगावम्) ॥

४. शिवजीके परिकर 'ब्राह्मी' आदि सात माताएं हैं ।

विमर्श—उन सात माताओंके ये नाम हैं—ब्रह्माणी, सिद्धी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, चामुण्डा ।

५. 'शिवजीके गण'के ३ नाम हैं—प्रमथाः, पार्षदाः (+पारिषदाः), गणाः ॥

६. 'आठ ऐश्वर्यों (सिद्धियों)का क्रमशः १—१ नाम है—लघिमा (-मन्), वशिता, ईशित्वम्, प्राकाम्यम्, महिमा, अणिमा (२ मन्), यत्रकामावसायित्वम्, प्राप्तिः ॥

विमर्श—इन आठ ऐश्वर्योंके ये कार्य हैं—'लघिमा'में भारी भी रुईके समान हलका होकर आकाशमें उड़ता है । 'वशिता'में पृथ्वी आदि पंचभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश), भौतिक पदार्थ गौ, घट आदि उसके वशीभूत हो जाते हैं और वह (वशिता सिद्धिको पाया हुआ व्यक्ति) उनका वश्य नहीं होता, अतः उनके कारण पृथ्वी आदिके परमाणुके वशमें होनेसे उनके कार्य भी वशमें हो जाते हैं तब उन्हें जिस रूपसे वह रखता है, उसी रूपमें वे (भौतिक कार्य) रहते हैं । 'ईशित्व'में भूत एवं भौतिक पदार्थोंकी मूलप्रकृतिके वशमें हो जानेसे उनकी उत्पत्ति, नाश तथा स्थितिका स्वामी होता है । 'प्राकाम्य'में इच्छाका विघात नहीं होता, अतः उक्त सिद्धिको पाया हुआ

१गौरी काली पार्वती मातृमाताऽपर्णा रुद्राण्यम्बिकाय-म्बकोमा ।
दुर्गा चण्डी सिंहयाना मृडानीकात्यायन्यौ दक्षजाऽऽर्या कुमारी ॥११७॥
शिवा सती महादेवी शर्वाणी सर्वमङ्गला ।
भवानी कृष्णमैनाकस्वसा मेनाद्रिजेश्वरा ॥ ११८ ॥
निशुम्भशुम्भमहिषमथनी भूतनायिका ।

व्यक्ति पृथ्वीपर भी उसी प्रकार डूबता उतराता (तैरता) है जिस प्रकार पानीमें। 'महिमा'में छोटा भी व्यक्ति पर्वत-नगर-आकाशादिके समान अत्यधिक बड़ा हो सकता है। 'अणिमा'में बहुत बड़ा भी व्यक्ति कीट, मच्छर, परमाणु आदिके समान सूक्ष्मसे सूक्ष्म हो सकता है। 'यत्रकामावसायित्व'में इच्छानुसार कार्य होता है अतः उक्त सिद्धि पाया हुआ व्यक्ति विषको भी अमृतकार्यमें संकल्प कर खिलाकर किसी को जिलाता है। 'प्राप्ति'में समस्त कार्य उसके समीपवर्ती ही रहते हैं, अतः वह भूमिपर बैठा हुआ ही अँगूठेसे आकाशस्थ चन्द्रको छू सकता है ॥

१. 'पार्वती'के ३२ नाम हैं—गौरी, काली, पार्वती, मातृमाता (-मातृ), अपर्णा, रुद्राणी, अम्बिका, त्र्यम्बका, उमा, दुर्गा, चण्डी, सिंहयाना (यौ०—सिंहवाहना,······), मृडानी, कात्यायनी, दक्षजा (यौ०—दाक्षायणी), आर्या, कुमारी, शिवा (+शिवी), सती, महादेवी, शर्वाणी, सर्वमङ्गला, भवानी, कृष्णस्वसा, मैनाकस्वसा (२-स्वसृ), मेनाजा, अद्रिजा, ईश्वरा (+ ईश्वरी), निशुम्भमथनी, शुम्भमथनी, महिषमथनी, भूतनायिका ॥

शेषश्चात्र—गौतमी कौशिकी कृष्णा तामसी बाभ्रवी जया ।
कालरात्रिर्महामाया भ्रामरी यादवी वरा ।
बर्हिध्वजा शूलधरा परमब्रह्मचारिणी ॥
अमोघा विन्ध्यनिलया षष्टी कान्तारवासिनी ।
जाङ्गुली बदरीवासा वरदा कृष्णपिङ्गला ॥
दृषद्वतीन्द्रभगिनी प्रगल्भा रेवती तथा ।
महाविद्या सिनीवाली रक्तदन्त्येकपाटला ॥
एकपर्णा बहुभुजा नन्दपुत्री महाजया ।
भद्रकाली महाकाली योगिनी गणनायिका ॥
हासा भीमा प्रकूष्माण्डी गदिनी वारुणी हिमा ।
अनन्ता विजया क्षेमा मानस्तोका कुहावती ॥
चारणा च पितृगणा स्कन्दमाता घनाञ्जनी ।
गान्धर्वी कर्बुरा गार्गी सावित्री ब्रह्मचारिणी ॥
कोटिश्रीर्मन्दरावासा केशी मलयवासिनी ।

१तस्याः सिंहो मनस्तालः २सख्यौ तु विजया जया ॥ ११९ ॥
३चामुण्डा चर्चिका चर्ममुण्डा मार्जारकर्णिका ।
कर्णमोटी महागन्धा भैरवी च कपालिनी ॥ १२० ॥
४हेरम्बो गणविघ्नेशः पर्शुपाणिर्विनायकः ।
द्वैमातुरो गजास्यैकदन्तौ लम्बोदराखुगौ ॥ १२१ ॥
५स्कन्दः स्वामी महासेनः सेनानीः शिखिवाहनः ।
षाण्मातुरो ब्रह्मचारी गङ्गोमाकृत्तिकासुतः ॥ १२२ ॥

कालायनी विशालाक्षी किराती गोकुलोद्भवा ॥
एकानसी नारायणी शैला शाकम्भरीश्वरी ।
प्रकीर्णकेशी कुण्डा च नीलवस्त्रोग्रचारिणी ॥
अष्टादशभुजा पौत्री शिवदूती यमस्वसा ।
सुनन्दा विकचा लम्बा जयन्ती नकुला कुला ॥
विलङ्का नन्दिनी नन्दा नन्दयन्ती निरञ्जना ।
कालञ्जरी शतमुखी विकराला करालिका ॥
विरजाः पुरला जारी बहुपुत्री कुलेश्वरी ।
कैटभी कालदमनी दर्दुरा कुलदेवता ॥
रौद्री कुन्दा महारौद्री कालङ्गमा महानिशा ।
बलदेवस्वसा पुत्री हीरी क्षेमङ्करी प्रभा ॥
मारी हैमवती चापि गोला शिखरवासिनी ।

१. 'पार्वतीके वाहन सिंह'का १ नाम है—मनस्तालः ॥

२. 'पार्वतीकी सखियों'का १–१ नाम है विजया, जया ॥

३. 'चामुण्डा देवी'के ८ नाम हैं—चामुण्डा, चर्चिका, चर्ममुण्डा, मार्जारकर्णिका, कर्णमोटी, महागन्धा, भैरवी, कपालिनी ॥

शेषश्चात्र—चामुण्डायां महाचण्डी चण्डमुण्डाऽपि ।

४. 'गणेश'के ८ नाम हैं—हेरम्बः, गणेशः, विघ्नेशः (यौ०—प्रमथाधिपः, विघ्नराजः,······), पर्शुपाणिः (यौ०—पर्शुधरः,····), विनायकः, द्वैमातुरः, गजास्यः (+गजाननः, गजवदनः,······), एकदन्तः, लम्बोदरः, आखुगः (यौ०—मूषिकरथः, मूषिकवाहनः,······) ॥

शेषश्चात्र—अथाखुगे ।

पृश्निगर्भः पृश्निशृङ्गो द्विशरीरस्त्रिधातुकः ।
हस्तिमल्लो विषाणान्तः ।

५. 'कार्तिकेय'के २१ नाम हैं—स्कन्दः, स्वामी (-मिन्), महासेनः, सेनानीः, शिखिवाहनः (यौ०—मयूररथः,·······), षाण्मातुरः, ब्रह्मचारी

द्वादशाक्षो महातेजाः कुमारः षण्मुखो गुहः ।
विशाखः शक्तिभृत् क्रौञ्चतारकारिः शराग्निभूः ॥ १२३ ॥
१भृङ्गी भृङ्गिरिटिर्भृङ्गिरीटिर्नाड्यस्थिविग्रहः ।
२कूष्माण्डके केलिकिलो ३नन्दीशे तण्डुनन्दिनौ ॥ १२४ ॥

(-रिन्), गङ्गासुतः, उमासुतः, कृत्तिकासुतः (यौ०— गाङ्गेयः, पार्वतीनन्दनः, बाहुलेयः, कार्तिकेयः,……), द्वादशाक्षः, महातेजाः (-जस्), कुमारः, षण्मुखः, गुहः, विशाखः, शक्तिभृत् (यौ०—शक्तिपाणिः,……), क्रौञ्चारिः, तारकारिः (यौ०—क्रौञ्चदारणः, तारकान्तकः,……), शरभूः, अग्निभूः (यौ०—शरजन्मा, अग्निजन्मा, २—न्मन् ,……) ॥

शेषश्चात्र—स्कन्दे तु करवीरकः ।
सिद्धसेनो वैजयन्तो बालचर्यो दिगम्बरः ॥

१. 'भृङ्गी'के ५ नाम हैं—भृङ्गी (-ङ्गिन्), भृङ्गिरिटिः, भृङ्गिरीटिः, नाडीविग्रहः, अस्थिविग्रहः ॥

शेषश्चात्र—भृङ्गी तु चर्मी ।

२. 'कूष्माण्डक' (शिवजीके गणमें रहनेवाले पिशाच-विशेष)के २ नाम हैं—कूष्माण्डकः, केलिकिलः ॥

३. 'नन्दी'के ३ नाम हैं—नन्दीशः, तण्डुः, नन्दी (-न्दिन्) ।

विमर्श—पूर्वोक्त (२।१२४) भृङ्गी आदि शिवजीके 'गण-विशेष' हैं; इनके अतिरिक्त उनके और भी गण हैं, जिनके नाम ये हैं—महाकालः, बाणः, लूनबाहुः, वृषाणकः, वीरभद्रः, धीराजः, हेरुकः, कृतालकः, चण्डः, महाचण्डः, कुशाण्डी (-ण्डिन्), कङ्कणप्रियः, मज्जनः, उन्मज्जनः, छागः, छागमेषः, महाघसः, महाकपालः, आलानः, सन्तापनः, विलापनः, महाकपोलः, ऐलोजः, शङ्कुकर्णः, खरः, तपः, उल्कामाली (-लिन्), महाजम्भः, श्वेतपादः, खराण्डकः, गोपालः, ग्रामणीमालुः, घण्टाकर्णः, करन्धमः, कपाली (-लिन्), जृम्भकः, लिम्पः, स्थूलः, अकर्णः, विकर्णकः, लम्बकर्णः, महाशीर्षः, हस्तिकर्णः, प्रमर्दनः, ज्वालाजिह्वः, धमधमः, संह्रातः, क्षेमकः, पुलः, भीषकः, ग्राहकः, सिह्नः, धीरुण्डः, मकराननः, पिशिताशी (-शिन्), महाकुण्डः, नखारिः, अहिलोचनः, कूणकुच्छः, महाजानुः, कोष्ठकोटिः, शिवङ्करः, वेतालः, लोमवेतालः, तामसः, सुमहाकपिः, उत्तुङ्गः, गृध्रजम्बूकः, कण्डानकः, कलानकः, चर्मग्रीवः, जलोन्मादः, ज्वालावक्त्रः, विहुण्डनः, हृदयः, वर्तुलः, पाण्डुः, भुण्डिः,…… ॥

१द्रुहिणो विरिञ्चिर्द्रुघणो विरिञ्चः परमेष्ठ्यजोऽष्टश्रवणः स्वयम्भूः ।
कमनः कविः सात्त्विकवेदगर्भौ स्थविरः शतानन्दपितामहौ कः ॥१२५॥
धाता विधाता विधिवेधसौ ध्रुवः पुराणगो हंसगविश्वरेतसौ ।
प्रजापतिर्ब्रह्मचतुर्मुखौ भवान्तकृज्जगत्कर्तृसरोरुहासनौ ॥ १२६ ॥
शम्भुः शतधृतिः स्रष्टा सुरज्येष्ठो विरिञ्चिनः ।
हिरण्यगर्भो लोकेशो नाभिपद्मात्मभूरपि ॥ १२७ ॥
२विष्णुर्जिष्णुजनार्दनौ हरिहृषीकेशाच्युताः केशवा
दाशार्हः पुरुषोत्तमोऽब्धिशयनोपेन्द्राजेन्द्रानुजौ ।
विष्वक्सेननरायणौ जलशयो नारायणः श्रीपति—
र्दैत्यारिश्च पुराणयज्ञपुरुषस्तार्क्ष्यध्वजोऽधोक्षजः ॥ १२८ ॥
गोविन्दषड्बिन्दुमुकुन्दकृष्णा वैकुण्ठपद्मेशयपद्मनाभाः ।
वृषाकपिर्माधववासुदेवौ विश्वम्भरः श्रीधरविश्वरूपौ ॥ १२९ ॥

---

१. 'ब्रह्मा'के ४० नाम हैं—द्रुहिणः, विरिञ्चिः, द्रुघणः, विरिञ्चः, परमेष्ठी (–ष्ठिन्), अजः, अष्टश्रवणः, स्वयम्भूः, कमनः, कविः, सात्त्विकः, वेदगर्भः, स्थविरः, शतानन्दः, पितामहः, कः, धाता, विधाता (२–धातृ), विधिः, वेधाः (–धस्), ध्रुवः, पुराणगः, हंसगः (यौ०—श्वेतपत्ररथः, हंसवाहनः), विश्वरेताः (–तस्), प्रजापतिः, ब्रह्मा (–ह्मन्, पु न), चतुर्मुखः, भवान्तकृत्, जगत्कर्ता (–तृ । यौ०—विश्वसृट्–ज्), सरोरुहासनः (यौ०—कमलासनः, पद्मासनः,……), शम्भुः, शतधृतिः, स्रष्टा (-ष्टृ), सुरज्येष्ठः, विरिञ्चिनः, हिरण्यगर्भः, लोकेशः, नाभिभूः, पद्मभूः, आत्मभूः (यौ०—नाभिजन्मा, कमलजन्मा,–२ न्मन्, आत्मयोनिः,……)॥

शेषश्चात्र—ब्रह्मा तु क्षेत्रज्ञः पुरुषः सनत् ।

२. 'विष्णु भगवान्'के ७५ नाम हैं—विष्णुः, जिष्णुः, जनार्दनः, हरिः, हृषीकेशः, अच्युतः, केशवः, दाशार्हः, पुरुषोत्तमः, अब्धिशयनः, उपेन्द्रः, अजः, इन्द्रानुजः (यौ०—वासवावरजः,……), विष्वक्सेनः, नरायणः, जलशयः (+जलेशयः), नारायणः, श्रीपतिः (यौ०—लक्ष्मीपतिः, लक्ष्मीनाथः,……), दैत्यारिः, पुराणपुरुषः, यज्ञपुरुषः, तार्क्ष्यध्वजः (यौ०—गरुडाङ्कः, गरुडध्वजः,……), अधोक्षजः, गोविन्दः, षड्बिन्दुः, मुकुन्दः, कृष्णः, वैकुण्ठः, पद्मेशयः, पद्मनाभः, वृषाकपिः, माधवः, वासुदेवः, विश्वम्भरः, श्रीधरः, विश्वरूपः, दामोदरः, सौरिः, सनातनः, विधुः, पीताम्बरः, मार्जः, जिनः, कुमोदकः, त्रिविक्रमः, जह्नुः, चतुर्भुजः, पुनर्वसुः, शतावर्तः, गदाग्रजः, स्वभूः, मुञ्जकेशी (–शिन्), वनमाली (–लिन्), पुण्डरीकाक्षः, बभ्रुः, शशबिन्दुः, वेधाः (–धस्), पृश्निशृङ्गः, धरणीधरः (यौ०—महीधरः,……),

दामोदरः शौरिसनातनौ विधुः पीताम्बरो मार्जजिनौ कुमोदकः ।
त्रिविक्रमो जह्नुचतुर्भुजौ पुनर्वसुः शतावर्तगदाग्रजौ स्वभूः ॥१३०॥
मुञ्जकेशिवनमालिपुण्डरीकाक्षवभ्रुशशबिन्दुवेधसः ।
पृश्निश्रृङ्गधरणीधरात्मभूपाण्डवायनसुवर्णबिन्दवः ॥ १३१ ॥
श्रीवत्सो देवकीसूनुर्गोपेन्द्रो विष्टरश्रवाः ।
सोमसिन्धुर्जगन्नाथो गोवर्धनधरोऽपि च ॥ १३२ ॥

आत्मभूः, पाण्डवायनः, सुवर्णबिन्दुः, श्रीवत्सः, देवकीसूनुः (+देवकीनन्दनः,······), गोपेन्द्रः, विष्टरश्रवाः (–वस्), सोमसिन्धुः, जगन्नाथः, गोवर्धनधरः, यदुनाथः, गदाभृत्, शार्ङ्गभृत्, चक्रभृत्, श्रीवत्सभृत्, शङ्खभृत् (यौ०—गदाधरः, शार्ङ्गी (–ङ्गिन्), चक्रपाणिः; श्रीवत्साङ्कः, शङ्खपाणिः,······) ॥

शेषश्चात्र—

नारायणो तीर्थपादः पुण्यश्लोको बलिन्दमः ।
उरुक्रमोरुगायौ च तमोघ्नः श्रवणोऽपि च ॥
उदारथिर्लतापर्णः सुभद्रः पांशुजालिकः ।
चतुर्व्यूहो नवव्यूहो नवशक्तिः षडङ्गजित् ॥
द्वादशमूलः शतको दशावतार एकदक् ।
हिरण्यकेशः सोमोऽहिस्त्रिधामा त्रिककुत् त्रिपात् ॥
मानङ्गरः पराविद्धः पृश्निगर्भोऽपराजितः ।
हिरण्यनाभः श्रीगर्भो वृषोत्साहः सहस्रजित् ॥
ऊर्ध्वकर्मा यज्ञधरो धर्मनेमिरसंयुतः ।
पुरुषो योगनिद्रालुः खण्डास्यः शलिकाजितौ ॥
कालकुण्ठो वरारोहः श्रीकरो वायुवाहनः ।
वर्धमानश्चतुर्दंष्ट्रो नृसिंहवपुरव्ययः ॥
कपिलो भद्रकपिलः सुषेणः समितिञ्जयः ।
क्रतुधामा वासुभद्रो बहुरूपो महाक्रमः ॥
विधाता धार एकाङ्गो वृषाक्षः सुवृषोऽव्जजः ।
रन्तिदेवः सिन्धुवृषो जितमन्युर्वृकोदरः ॥
बहुशृङ्गो रत्नबाहुः पुष्पहासो महातपाः ।
लोकनाभः सूक्ष्मनाभो धर्मनाभः पराक्रमः ॥
पद्महासो महाहंसः पद्मगर्भः सुरोत्तमः ।
शतवीरो महामायो ब्रह्मनाभः सरीसृपः ॥
बृन्दाङ्कोऽधोमुखो धन्वी सुधन्वा विश्वभुक् स्थिरः ।

यदुनाथो गदाशार्ङ्गचक्रश्रीवत्सशङ्खभृत् ।
१मधुधेनुकचाणूरपूतनायमलार्जुनाः ॥ १३३ ॥
कालनेमिहयग्रीवशकटारिष्टकैटभाः ।
कंसकेशिमुराः सात्वमैन्दद्विविदराहवः ॥ १३४ ॥
हिरण्यकशिपुर्बाणः कालियो नरको बलिः ।
शिशुपालश्चास्य वध्या २वैनतेयस्तु वाहनम् ॥ १३५ ॥
३शङ्खोऽस्य पाञ्चजन्यो ४ऽङ्कः श्रीवत्सो ५ऽसिस्तु नन्दकः ।
६गदा कौमोदकी ७चापं शार्ङ्गं ८चक्रं सुदर्शनः ॥ १३६ ॥

शतानन्दः शरुश्चापि यवनारिः प्रमर्दनः ॥
यज्ञनेमिर्लोहिताक्ष एकपाद् द्विपदः कपिः ।
एकशृङ्गो यमकीलः आसन्दः शिवकीर्तनः ॥
शद्रुवंशः श्रीवराहः सदायोगी सुयामुनः ।

१. विष्णु भगवान्के वध्यों (मारने योग्य शत्रुओं) का १-१ नाम है ये २३ हैं—मधुः, धेनुकः, चाणूरः, पूतना (स्त्री), यमलार्जुनः, कालनेमिः, हयग्रीवः, शकटः, अरिष्टः, कैटभः, कंसः, केशी (-शिन्), मुरः, शाल्वः, मैन्दः, द्विविदः, राहुः, हिरण्यकशिपुः, बाणः, कालियः, नरकः, बलिः, शिशुपालः, (यौ०—मधुमथनः, धेनुकध्वंसी—सिन् , चाणूरसूदनः, पूतनादूषणः, यमलार्जुनभञ्जनः, कालनेमिहरः, हयग्रीवरिपुः, शकटारिः, अरिष्टहा—हन् , कैटभारिः, कंसजित् , केशिहा—हन् , मुरारिः, साल्वारिः, मैन्दमर्दनः, द्विविदारिः, राहुमूर्धहरः, हिरण्यकशिपुदारणः, बाणजित् , कालियदमनः, नरकारिः, बलिबन्धनः, शिशुपालनिषूदनः,……भी 'विष्णु भगवान्'के नाम होते हैं) ॥

२. 'विष्णु भगवान्'का वाहन 'वैनतेयः', अर्थात् 'गरुड़' है ॥ (अतः यौ०—गरुडगामी-मिन्, गरुडवाहनः, गरुडरथः,…………नाम भी 'विष्णुभगवान्'के होते हैं) ॥

३ 'विष्णु भगवान्के शङ्ख'का १ नाम है—पाञ्चजन्यः ॥

५. 'विष्णु भगवान्के अङ्क (हृदयस्थ चिह्न)'का १ नाम है—श्रीवत्सः ॥

६. 'विष्णु भगवान्की तलवार'का १ नाम है—नन्दकः ॥

७. 'विष्णु भगवान् की गदा'का १ नाम है—कौमोदकी ॥

८. 'विष्णु भगवान्के धनुष'का १ नाम है—शार्ङ्गम् ॥

९. 'विष्णु भगवान्के चक्र'का १ नाम है—सुदर्शनः (पु+पु न) ॥

१मणिः स्यमन्तको हस्ते २भुजमध्ये तु कौस्तुभः ।
३वसुदेवो भूकश्यपो दिन्दुरानकदुन्दुभिः ॥ १३७ ॥
४रामो हली मुसलिसात्वतकामपालाः
सङ्कर्षणः प्रियमधुर्बलरौहिणेयौ ।
रुक्मिप्रलम्बयमुनाभिदनन्तताल—
लक्ष्मैककुण्डलसितासितरेवतीशाः ॥ १३८ ॥
बलदेवो बलभद्रो नीलवस्त्रोऽच्युताग्रजः ।
५मुसलं त्वस्य सौनन्दं ६हलं संवर्तकाह्वयम् ॥ १३९ ॥
७लक्ष्मीः पद्मा रमा या मा ता सा श्रीः कमलेन्दिरा ।
हरिप्रिया पद्मवासा क्षीरोदतनयाऽपि च ॥ १४० ॥
८मदनो जराभीरुरनङ्गमन्मथौ कमनः कलाकेलिरनन्यजोऽङ्गजः ।
मधुदीपमारौ मधुसारथिः स्मरो विषमायुधो दर्पककामहृच्छयाः ॥ १४१ ॥

---

१. 'विष्णु भगवान्के हाथमें स्थित मणि'का १ नाम है—स्यमन्तकः ॥

२. 'विष्णु भगवान्के वक्षःस्थलमें स्थित मणि'का १ नाम है—कौस्तुभः ।

३. 'वसुदेव' (कृष्ण भगवान्के पिता)के नाम हैं—वसुदेवः, भूकश्यपः, दिन्दुः, आनकदुन्दुभिः ॥

४. 'बलरामजी'के २१ नाम हैं—रामः, हली, मुसली (२-लिन्), सात्वतः, कामपालः, संकर्षणः, प्रियमधुः, बलः, रौहिणेयः, रुक्मिभित्, प्रलम्बभित्, यमुनाभित् (३-भिद् । यौ०—रुक्मिदारणः, प्रलम्बघ्नः, कालिन्दीकर्षणः, कालिन्दीभेदनः,..........), अनन्तः,ताललक्ष्मा (-क्ष्मन्), एककुण्डलः, सितासितः, रेवतीशः (+रेवतीरमणः), बलदेवः, बलभद्रः, नीलवस्त्रः (+नीलाम्बरः), अच्युताग्रजः ॥

शेषश्चात्र—बलभद्रे तु भद्राङ्गः फालो गुप्तचरो बली ।
प्रलापी भद्रचलनः पौरः शेषाहिनामभृत् ॥

५. 'बलरामजीके मुसल'का १ नाम है—सौनन्दम् ॥

६. 'बलरामके हल'का १ नाम है—संवर्तकम् ॥

७. 'लक्ष्मीजी'के नाम हैं—लक्ष्मीः, पद्मा, रमा, ईः, आ (+या), मा, ता, सा, श्रीः, कमला, इन्दिरा, हरिप्रिया, पद्मवासा (+पद्मालया), क्षीरोदतनया ॥

शेषश्चात्र—लक्ष्म्यान्तु भर्भरी विष्णुशक्तिः क्षीराब्धिमानुषी ।

८. 'कामदेव'के २० नाम हैं—मदनः, जराभीरुः, अनङ्गः, मन्मथः, कमनः, कलाकेलिः, अनन्यजः, अङ्गजः, मधुदीपः, मारः, मधुसारथिः, स्मरः,

प्रद्युम्नः श्रीनन्दनश्च कन्दर्पः पुष्पकेतनः ।
१पुष्पाण्यस्येषुचापास्त्राण्यरी शंवरशूर्पकौ ॥ १४२ ॥
३केतनं मीनमकरौ ४बाणाः पञ्च ५रतिः प्रिया ।
६मनःशृङ्गारसङ्कल्पात्मानो योनिः ७सुहृन्मधुः ॥ १४३ ॥
८सुतोऽनिरुद्ध ऋष्याङ्क उषेशो ब्रह्मसूश्च सः ।
९गरुडः शाल्मल्यरुणावरजो विष्णुवाहनम् ॥ १४४ ॥
सौपर्णेयो वैनतेयः सुपर्णः सर्पारातिर्वज्रिजिद्वज्रतुण्डः ।
पक्षिस्वामी काश्यपिः स्वर्णकायस्तार्क्ष्यः कामायुर्गरुत्मान् सुधाहृत् ॥ १४५ ॥

विषमायुधः, दर्पकः, कामः, हृच्छयः (+मनसिशयः), प्रद्युम्नः, श्रीनन्दनः, कन्दर्पः, पुष्पकेतनः, (यौ०--पुष्पध्वजः,········· । +कन्तुः) ॥

शेषश्चात्र--कामे तु यौवनोद्भेदः शिखिमृत्युर्महोत्सवः ।
रामान्तकः सर्वधन्वी रागरज्जुः प्रकर्षकः ॥
मनोदाही मथनश्च ।

१. इस कामदेवके बाण, चाप (धनुष) और अस्त्र पुष्प हैं, (अतएव यौ०—पुष्पेषुः, कुसुमबाणः, पुष्पचापः, कुसुमधन्वा (–न्वन्), पुष्पास्त्रः, कुसुमायुधः,·······नाम 'कामदेव'के हैं) ॥

२. 'कामदेवके दो शत्रु हैं, उनका १—१ नाम है—शंवरः, शूर्पकः । (अतएव यौ०—शंवरारिः, शूर्पकारिः,······' नाम भी कामदेवके होते हैं) ॥

३. 'कामदेवकी पताका' दो हैं—उनका १—१ नाम है—मीनः, मकरः, (अतएव यौ०—मीनकेतनः, झषध्वजः, मकरकेतनः, मकरध्वजः,········) ॥

४. 'कामदेवके पाँच बाण हैं। (अतः यौ०—विषमेषुः, पञ्चबाणः,·······) ॥

५. 'कामदेवकी स्त्री'का १ नाम है—रतिः (अतएव यौ०--रतिवरः, रतिपतिः,······) ॥

६. कामदेवके ये योनि (उत्पत्तिस्थान) हैं--मनः (–स्), शृङ्गारः, संकल्पः, आत्मा (–त्मन्) ॥

७. 'कामदेवका मित्र 'मधुः' अर्थात् वसन्तऋतु है ॥

८. 'कामदेवके पुत्र' (अनिरुद्ध)के ४ नाम हैं—अनिरुद्धः, ऋष्याङ्कः, उषेशः, ब्रह्मसूः ॥

९. 'गरुड' के १७ नाम हैं--गरुडः (+गरुलः), शाल्मली (–लिन्), अरुणावरजः, विष्णुवाहनम्, सौपर्णेयः, वैनतेयः, सुपर्णः, सर्पारातिः,

१बुद्धस्तु सुगतो धर्मधातुस्त्रिकालविज्जिनः ।
बोधिसत्त्वो महाबोधिरार्यः शास्ता तथागतः ॥ १४६ ॥
पञ्चज्ञानः षडभिज्ञो दाशार्हो दशभूमिगः ।
चतुस्त्रिंशज्जातकज्ञो दशपारमिताधरः ॥ १४७ ॥
द्वादशाक्षो दशबलस्त्रिकायः श्रीघनाऽद्वयौ ।
समन्तभद्रः सङ्गुप्तो दयाकूर्चो विनायकः ॥ १४८ ॥
मारलोकखजिद्धर्मराजो विज्ञानमातृकः ।
महामैत्रो मुनीन्द्रश्च २बुद्धाः स्युः सप्त ते त्वमी ॥ १४९ ॥
विपश्यी शिखी विश्वभूः क्रकुच्छन्दश्च काञ्चनः ।
काश्यपश्च ३सप्तमस्तु शाक्यसिंहोऽर्कबान्धवः ॥ १५० ॥
तथा राहुलसूः सर्वार्थसिद्धो गोतमान्वयः ।
मायाशुद्धोदनसुतो देवदत्ताग्रजश्च सः ॥ १५१ ॥

वज्रिजित्, वज्रतुण्डः, पक्षिस्वामी (-मिन् । +पक्षिराजः), काश्यपिः, स्वर्णकायः, तार्क्ष्यः, कामायुः, गरुत्मान् (-त्मत्), सुधाहृत् ॥

शेषश्चात्र—गरुडस्तु विषापहः ।

पक्षिसिंहो महापक्षो महावेगो विशालकः ।
उन्नतीशः स्वमुखभूः शिलाऽनीहोऽहिभुक् च सः ॥

१. 'बुद्धदेव'के ३२ नाम हैं—बुद्धः, सुगतः, धर्मधातुः, त्रिकालवित् (-विद्), जिनः, बोधिसत्त्वः, महाबोधिः, आर्यः, शास्ता (-स्तृ), तथागतः, पञ्चज्ञानः, षडभिज्ञः, दाशार्हः, दशभूमिगः, चतुस्त्रिंशज्जातकज्ञः, दशपारमिताधरः, द्वादशाक्षः, दशबलः, त्रिकायः, श्रीघनः, अद्वयः, समन्तभद्रः, संगुप्तः, दयाकूर्चः, विनायकः, मारजित्, लोकजित्, खजित्ः, धर्मराजः विज्ञानमातृकः, महामैत्रः, मुनीन्द्रः (+मुनिः) ॥

शेषश्चात्र—बुद्धे तु भगवान् योगी बुधो विज्ञानदेशनः ।

महासत्त्वो लोकनाथो बोधिरर्हन् सुनिश्चितः ॥
गुणाब्धिर्विगतद्वन्द्वः ।

२. 'बुद्ध' ७ हैं, उनमें-से ६ तकका क्रमशः १—१ नाम यह है—विपश्यी (-श्यिन्), शिखी (-खिन्), विश्वभूः, क्रकुच्छन्दः, काञ्चनः, काश्यपः ॥

३. 'सातवें 'बुद्ध'के ८ नाम हैं—शाक्यसिंहः (+शाक्यः), अर्कबान्धवः, राहुलसूः, सर्वार्थसिद्धः (+सिद्धार्थः,) गोतमान्वयः, मायासुतः, शुद्धोदनसुतः (यौ०—शौद्धोदनिः,……), देवदत्ताग्रजः[1] ॥

---

१. 'बुद्ध' स्यान्यनामानि—पञ्चज्ञानः, षडभिज्ञः, दशभूमिगः, चतुस्त्रिंशज्जातकज्ञः, दशपारमिताधरः, दशबलः, मारजित् ।

१असुरा दितिदनुजाः पातालौकःसुरारयः ।
पूर्वदेवाः शुक्रशिष्या २विद्यादेव्यस्तु षोडश ॥ १५२ ॥
रोहिणी प्रज्ञप्तिर्वज्रशृङ्खला कुलिशाङ्कुशा ।
चक्रेश्वरी नरदत्ता काल्यथासौ महापरा ॥ १५३ ॥
गौरी गान्धारी सर्वास्त्रमहाज्वाला च मानवी ।
वैरोट्याऽच्छुप्ता मानसी महामानसिकेति ताः ॥ १५४ ॥
३वाग्ब्राह्मी भारती गौर्गीर्वाणी भाषा सरस्वती ।
श्रुतदेवी ४वचनन्तु व्याहारो भाषितं वचः ॥ १५५ ॥
५सविशेषणमाख्यातं वाक्यं—

१. 'असुरों' के ७ नाम हैं—असुराः, दितिजाः, दनुजाः, (यौ०—दैतेयाः, दैत्याः, दानवाः, ·······), पातालौकसः (–कस्), सुरारयः, पूर्वदेवाः, शुक्रशिष्याः । (ब० व०—बहुत्वापेक्षासे है नित्य नहीं है) ॥

२. 'विद्यादेवियाँ' १६ हैं, उनके क्रमशः १—१ नाम ये हैं—रोहिणी, प्रज्ञप्तिः, वज्रशृङ्खला, कुलिशाङ्कुशा, चक्रेश्वरी, नरदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गान्धारी, सर्वास्त्रमहाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अच्छुप्ता, मानसी, महामानसिका ॥

३. 'सरस्वती'के ६ नाम हैं—वाक् (–च्), ब्राह्मी, भारती, गौः (गो), गीः (गिर्), वाणी, भाषा, सरस्वती, श्रुतदेवी ॥

४. 'वचन (बोली)'के सरस्वतीके उक्त ६ नाम तथा वक्ष्यमाण और ४ नाम हैं—वचनम्, व्याहारः, भाषितम्' वचः (–चस्) ॥

शेषश्चात्र—वचने स्यात्तु जल्पितम् ।
लपितोदितभाषिताभिधानगदितानि च ॥

५. (प्रयुज्यमान अथवा अप्रयुज्यमान कर्ता आदि) विशेषणोंके सहित एक आख्यात (त्याद्यन्त—अर्थात् पाणिनीय व्याकरणमतके तिङन्त पद)को 'वाक्य' कहते हैं, यह 'वाक्य' शब्द नपुंसक लिङ्ग (वाक्यम्) है ।

विमर्श—प्रयुज्यमान आख्यातवाले वाक्यका उदा०—'धर्मं त्वां रक्षतु' (यहां आख्यातपद 'रक्षतु'का प्रयोग किया गया है); अप्रयुज्यमान आख्यातवाले वाक्यका उदा०—'शीलं ते स्वम्' (यहांपर आख्यातपद 'अस्ति'का प्रयोग नहीं करनेपर प्रकरण या अर्थके द्वारा 'अस्ति'पदका अध्याहार किया जाता है); अप्रयुज्यमान विशेषणवाले वाक्यका उदा०—'प्रविश' (यहांपर प्रकरण या अर्थके द्वारा 'गृहम्' इस विशेषणपदका अध्याहार किया जाता है) । 'आख्यातम्' यहांपर एकवचनका प्रयोग होनेसे यद्यपि 'ओदनं पच, तव भविष्यति' इस स्थलमें दो आख्यातपद ('पच' और

—१स्त्याद्यन्तकं पदम् ।
२राद्धसिद्धकृतेभ्योऽन्त आप्तोक्तिः समयागमौ ॥ १५६ ॥
३आचाराङ्गं सूत्रकृतं स्थानाङ्गं समवाययुक् ।
पञ्चमं भगवत्यङ्गं ज्ञातधर्मकथाऽपि च ॥ १५७ ॥
उपासकान्तकृदनुत्तरोपपातिकाद् दशाः ।
प्रश्नव्याकरणञ्चैव विपाकश्रुतमेव च ॥ १५८ ॥
इत्येकादश सोपाङ्गान्यङ्गानि ४द्वादशं पुनः ।
दृष्टिवादो ५द्वादशाङ्गी स्याद् गणिपिटकाह्वया ॥ १५९ ॥
६परिकर्मसूत्रपूर्वानुयोगपूर्वगतचूलिकाः पञ्च ।
स्युर्दृष्टिवादभेदाः ७पूर्वाणि चतुर्दशापि पूर्वगते ॥ १६० ॥
उत्पादपूर्वमग्रायणीयमथ वीर्यतः प्रवादं स्यात् ।
अस्तेर्ज्ञानात् सत्यात्तदात्मनः कर्मणश्च परम् ॥ १६१ ॥

'भविष्यति') हैं, तथापि वहाँ एक वाक्य नहीं, किन्तु दो वाक्य हैं ॥

१. 'सि' आदि तथा 'ति' आदि (प्रथमाके एकवचन 'सि'से लेकर सप्तमीके बहुवचन 'सुप्' तक और परस्मैपदके प्रथम पुरुषके एकवचन 'ति'से लेकर आत्मनेपदके उत्तमपुरुषके बहुवचन 'महि' तक अर्थात् पाणिनीय व्याकरण-के मतसे सुबन्त तथा तिङन्त) शब्दको 'पद' कहते हैं । यह 'पद' शब्द नपुंसकलिङ्ग (पदम्) है ॥

२. 'सिद्धान्त'के ६ नाम हैं—राद्धान्तः, सिद्धान्तः, कृतान्तः, आप्तोक्तिः, समयः, आगमः ॥

३. प्रवचनपुरुषके अङ्गोंके समान औपपातिक आदि उपाङ्गोंके साथ ११ अङ्ग हैं, उनका क्रमशः १—१ नाम है—आचाराङ्गम्, सूत्रकृतम्, स्थानाङ्गम्, समवाययुक् (-युज्), भगवत्यङ्गम्, ज्ञातधर्मकथा, उपासकदशाः, अन्तकृद्दशाः, अनुत्तरोपपातिकदशाः, प्रश्नव्याकरणम् , विपाकश्रुतम् ॥

४. १२वें अङ्गका १ नाम है—दृष्टिवादः (+दृष्टिपातः) ॥

५. पूर्वोक्त (२ । १५७–१५९) 'आचाराङ्ग' इत्यादि १२ अङ्ग-समुदायको 'गणिपिटकम्' कहते हैं ।

६. पूर्वोक्त (२ । १५७) १२ वें अङ्ग 'दृष्टिवाद'के ५ भेद हैं, उनके क्रमशः १—१ नाम हैं—परिकर्माणि, सूत्राणि, पूर्वानुयोगः, पूर्वगतम्, चूलिका: ॥

७. (सब अङ्गोंसे पहले तीर्थङ्करोंके द्वारा कहे जानेसे, १४ 'पूर्व' हैं, उनके क्रमशः १—१ नाम हैं—उत्पादपूर्वम्, अग्रायणीयम्, वीर्यप्रवादम्, अस्तिनास्तिप्रवादम्, ज्ञानप्रवादम् , सत्यप्रवादम्, आत्मप्रवादम्, कर्मप्रवादम्,

प्रत्याख्यानं विद्याप्रवादकल्याणनामधेये च ।
प्राणावायञ्च क्रियाविशालमथ लोकबिन्दुसारमिति ॥ १६२ ॥
१स्वाध्यायः श्रुतिराम्नायश्छन्दो वेद२स्त्रयी पुनः ।
ऋग्यजुःसामवेदाः स्यु३रथर्वा तु तदुद्धृतिः ॥ १६३ ॥
४वेदान्तः स्यादुपनिष५दोङ्कारप्रणवौ समौ ।
६शिक्षा कल्पो व्याकरणं छन्दोज्योतिर्निरुक्तयः ॥ १६४ ॥
षडङ्गानि ७धर्मशास्त्रं स्यात् स्मृतिर्धर्मसंहिता ।
८आन्वीक्षिकी तर्कविद्या ९मीमांसा तु विचारणा ॥ १६५ ॥
१०सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुवंशचरितं पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ १६६ ॥

प्रत्याख्यानम् (+प्रत्याख्यानप्रवादम्), विद्याप्रवादम्, कल्याणम् (+अवन्ध्यम्), प्राणावायम्, क्रियाविशालम्, लोकबिन्दुसारम् ॥

१. 'वेद'के ५ नाम हैं—स्वाध्यायः, श्रुतिः (स्त्री), आम्नायः, छन्दः (-न्दस्, न), वेदः ॥

२. 'ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेदके समुदाय'का १ नाम है—त्रयी ॥

३. 'त्रयी' (ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेदों)से उद्धृत चौथा 'अथर्वा' (-र्वन्, पु) अर्थात् 'अथर्ववेद' है ॥

४. 'उपनिषद्'के २ नाम हैं—वेदान्तः, उपनिषद् ॥

५. 'प्रणव'के २ नाम हैं—ओङ्कारः, प्रणवः ॥

६. वेदोंके ६ अङ्ग हैं, उनके क्रमशः १-१ नाम हैं—शिक्षा, कल्पः, व्याकरणम्, छन्दः (-न्दस्।+छन्दोविचितिः), ज्योतिः (-तिष्), निरुक्तिः (+निरुक्तम्) ॥

७. 'धर्मशास्त्र'के ३ नाम हैं—धर्मशास्त्रम्, स्मृतिः, धर्मसंहिता ॥

८. 'तर्कशास्त्र'के २ नाम हैं—आन्वीक्षिकी, तर्कविद्या ॥

९. 'मीमांसाशास्त्र'के २ नाम हैं—मीमांसा, विचारणा ॥

१०. सर्गः (सृष्टि), प्रतिसर्गः (संहार), वंशः (सूर्यादि वंश), मन्वन्तराणि (स्वायंभुव आदि १४ मन्वन्तर) और वंशानुवंशचरितम् (सूर्यादिवंशके वंशोंकी परम्पराका चरित)—इन ५ लक्षणोंसे युक्त ग्रन्थको 'पुराण' कहते हैं, यह 'पुराण' शब्द नपुं० (पुराणम्) है ।

विमर्श—पुराण १८ हैं, उनके नाम आदिके लिए 'अमरकोष'के मत्कृत 'मणिप्रभा' नामक राष्ट्रभाषानुवादकी 'अमरकौमुदी' नामकी टिप्पणी देखनी चाहिए । श्रीमद्भागवतमें पुराणके दस लक्षण कहे गये हैं ॥[1]

---

१. "पुराणलक्षणं ब्रह्मन् ब्रह्मर्षिभिर्निरूपितम् ।

१षडङ्गी वेदाश्चत्वारो मीमांसाऽन्वीक्षिकी तथा ।
धर्मशास्त्रं पुराणञ्च विद्या एताश्चतुर्दश ॥ १६७ ॥

---

१. 'विद्याएँ' १४ हैं—शिक्षा आदि (२।१६४) ६ वेदाङ्ग, ऋग्वेद आदि (१ ऋग्वेद, यजुर्वेद, ३ सामवेद और ४ अथर्ववेद) ४ वेद, मीमांसा, आन्वीक्षिकी, धर्मशास्त्र और पुराण ॥

शृणुष्व बुद्धिमाश्रित्य वेदशास्त्रानुसारतः ॥
सर्गोऽप्यथ विसर्गश्च वृत्ती रक्षान्तराणि च ।
वंशो वंशानुचरितं संस्था हेतुरपाश्रयः ॥
दशभिर्लक्षणैर्युक्तं पुराणं तद्विदो विदुः ।
केचित् पञ्चविधं ब्रह्मन् महदल्पव्यवस्थया ॥
अव्याकृतगुणक्षोभान्महतस्त्रिवृतोऽहमः ।
भूतमात्रेन्द्रियार्थानां संभवः सर्ग उच्यते ॥
पुरुषानुगृहीतानामेतेषां वासनामयः ।
विसर्गोऽयं समाहारो बीजाद् बीजं चराचरम् ॥
वृत्तिर्भूतानि भूतानां चराणामचराणि च ।
कृतास्वेन नृणां तत्र कामाच्चोदनयाऽपि वा ॥
रक्षा च्युतावतारेहा विश्वस्यानुयुगे युगे ।
तिर्यङ्मर्त्यर्षिदेवेषु हन्यन्ते यैस्त्रयीद्विषः ॥
मन्वन्तरं मनुर्देवा मनुपुत्राः सुरेश्वरः ।
ऋषयोंऽशावताराश्च हरेः षड्विधमुच्यते ॥
राज्ञां ब्रह्मप्रसूतानां वंशस्त्रैकालिकोऽन्वयः ।
वंशानुचरितं तेषां वृत्तं वंशधराश्च ये ॥
नैमित्तिकः प्राकृतिकस्तेषामात्यन्तिको लयः ।
संस्थेति कविभिः प्रोक्ता चतुर्धाऽस्य स्वभावतः ॥
हेतुर्जीवोऽस्य सर्गादेरविद्याकर्मकारकः ।
यं चानुशायिनं प्राहुरव्याकृतमुतापरे ॥
व्यतिरेकान्वयो यस्य जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु ।
मायामयेषु तद् ब्रह्म जीववृत्तिष्वपाश्रयः ॥
पदार्थेषु यथाद्रव्यं सन्मात्रं रूपनामसु ।
बीजादिपञ्चतान्तासु ह्यवस्थासु युतायुतम् ॥
विरमेत यदा चित्तं हित्वा वृत्तित्रयं स्वयम् ।
योगेन वा तदात्मानं वेदेहाया निवर्तते ॥

१सूत्रं सूचनकृद् २भाष्यं सूत्रोक्तार्थप्रपञ्चकम् ।
३प्रस्तावस्तु प्रकरणं ४निरुक्तं पदभञ्जनम् ॥ १६८ ॥
५अवान्तरप्रकरणविश्रामे शीघ्रपाठतः ।
आह्निक६मधिकरणं त्वेकन्यायोपपादनम् ॥ १६९ ॥
७उक्तानुक्तदुरुक्तार्थचिन्ताकारि तु वार्तिकम् ।
८टीका निरन्तरव्याख्या—

---

१. 'सूचित करनेवाले' (संक्षेप रूपसे संकेत करनेवाले ग्रन्थ-विशेष) का १ नाम है—सूत्रम् (पु न । यथा—शाकटायनसूत्र, पाणिनिकृत अष्टाध्यायीसूत्र;............) ॥

२. 'सूत्रमें कहे गये विषयको विस्तारके साथ प्रतिपादन करनेवाले ग्रन्थ-विशेष'का १ नाम है—भाष्यम् । (यथा—पाणिनिकृत अष्टाध्यायी सूत्रपर पातञ्जल महाभाष्य, वेदान्त सूत्रपर शाङ्करभाष्य, रामानुजभाष्य,.......) ॥

३. 'प्रस्ताव'के २ नाम हैं—प्रस्तावः, प्रकरणम् ॥

४. 'निरुक्त' (प्रत्येक वर्णादिका विश्लेषणकर पदोंके विवेचन करनेवाले ग्रन्थ-विशेष) के २ नाम हैं—निरुक्तम्, पदभञ्जनम् ॥

५. 'अवान्तर प्रकरणके विश्राममें शीघ्र पाठसे एक दिनमें निवृत्तके समान ग्रन्थांश-विशेष'का १ नाम है—आह्निकम् । (यथा—पातञ्जलमहाभाष्यमें १ म, २ य आदि आह्निक) ॥

६. 'एक न्याय (विषय)के प्रतिपादन करनेवाले ग्रन्थांश-विशेष'का १ नाम है—अधिकरणम् ॥

७. 'सूत्रोंमें कथित, अकथित और अन्यथाकथित विषयोंके विचार करनेवाले ग्रन्थ-विशेष'का १ नाम है—'वार्तिकम्'। (यथा—पाणिनीय अष्टाध्यायी सूत्रपर कात्यायनका वार्तिक, एवं श्लोकवार्तिक,...........) ॥

८. 'किसी ग्रंथके साधारण या असाधारण प्रत्येक शब्दोंकी निरन्तर व्याख्या'का एक १ नाम है—'टीका' । (यथा—अमरकोषकी भानुजिदीक्षितकृत

एवं लक्षणलक्ष्याणि पुराणानि पुराविदः ।
मुनयोऽष्टादश प्राहुः क्षुल्लकानि महान्ति च ॥
ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवञ्च शैवं लैङ्गं सगारुडम् ।
नारदीयं भागवतमाग्नेयं स्कान्दसंज्ञितम् ॥
भविष्यं ब्रह्मवैवर्तं मार्कण्डेयं सवामनम् ।
वाराहं मात्स्यं कौर्मं ब्रह्माण्डाख्यमिति त्रिषट् ॥ इति ।।"

(श्रीमद्भागवत १२।७।८–२४)

—१पञ्जिका पदभञ्जिका ॥ १७० ॥
२निबन्धवृत्ती अन्वर्थे ३संग्रहस्तु समाहृतिः ।
४परिशिष्टपद्धत्यादीन् पथाऽनेन समुन्नयेत् ॥ १७१ ॥
५कारिका तु स्वल्पवृत्तौ बहोरर्थस्य सूचनी ।
६कलिन्दिका सर्वविद्या ७निघण्टुर्नामसङ्ग्रहः ॥ १७२ ॥
८इतिहासः पुरावृत्तं ९प्रवह्लिका प्रहेलिका ।

'रामाश्रमी' टीका, क्षीरस्वामिकृत 'अमरकोषोद्घाटन' टीका, रायमुकुटकृत 'पदचन्द्रिका' टीका,.......) ॥

१. 'विषम पदोंको स्पष्ट करनेवाली व्याख्या'का १ नाम है—पञ्जिका । (यथा—पाणिनीयशिक्षाकी 'पञ्जिका' नामकी व्याख्या) ॥

२. 'निबन्ध'के २ नाम हैं—निबन्धः, वृत्तिः । (यथा०—निबन्धरचनादर्श, प्रबन्धपारिजात,......ग्रन्थ) ॥

३. 'संग्रह'के २ नाम हैं—संग्रहः, समाहृतिः । (यथा—सुभाषितरत्नभाण्डागार, सुभाषितरत्नसन्दोह,.......ग्रन्थ) ॥

४. इसी प्रकार 'परिशिष्टम्, पद्धतिः, आदि ('आदि' शब्दसे—अध्यायः, उच्छ्वासः, परिच्छेदः, निःश्वासः, सर्गः, काण्डम्, अङ्कः, मयूखः,....आदिका संग्रह है) को जानना चाहिए ॥

५. थोड़ेमें अधिक अर्थको सूचित करनेवाले पद्य'का १ नाम है—'कारिका' । (यथा— कारिकावली, साहित्यदर्पणकी कारिकाएँ,......) ॥

६. 'जिसमें आन्वीक्षिकी आदि सब विद्याओंका वर्णन हो, उस'का १ नाम है—'कलिन्दिका' (+ कडिन्दिका, कलन्दिका) ।

७. 'नामोंके संग्रहवाले ग्रन्थ'के २ नाम हैं—निघण्टुः, (पु । + पु न), नामसंग्रहः । (यथा—मदनपालनिघण्टुः,......) ॥

८. 'इतिहास'के २ नाम हैं—इतिहासः, पुरावृत्तम् । (यथा—नासिकेतोपाख्यान, महाभारत,.......) ॥

९. 'पहेली, प्रहेलिका'के २ नाम हैं—प्रवह्लिका (+ प्रवह्ली), प्रहेलिका ।

विमर्श—जिस पद्यका अर्थ पूर्वापरविरुद्ध प्रतीत होता हो, परन्तु विशेष अनुसन्धान करनेसे अविरुद्ध अर्थ निकले, उसे 'पहेली' कहते हैं, यथा—(क) "वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजस्त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः । त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघः ॥" (ख) "सर्वस्वापहरो न तस्करगणो रक्षो न रक्ताशनः, सर्पो नैव बिलेशयोऽखिलनिशाचारी न भूतोऽपि च ।

१जनश्रुतिः किंवदन्ती २वार्तैतिह्यं पुरातनी ॥१७३॥
३वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तो४ऽथाह्वयोऽभिधा ।
गोत्रसंज्ञानामधेयाऽऽख्याऽऽह्वाऽभिख्याश्च नाम च ॥१७४॥
५सम्बोधनमामन्त्रण६माह्वानं त्वभिमन्त्रणम् ।
आकारणं हवो हूतिः ७संहूतिर्बहुभिः कृता ॥ १७५ ॥
८उदाहार उपोद्घात उपन्यासश्च वाङ्मुखम् ।
९व्यवहारो विवादः स्यात् १०शपथः शपनं शपः ॥ १७६ ॥
११उत्तरं तु प्रतिवचः १२प्रश्नः पृच्छाऽनुयोजनम् ।
कथङ्कथिकता चा१३थ देवप्रश्न उपश्रुतिः ॥ १७७ ॥

अन्तर्धानपटुर्न सिद्धपुरुषो नाप्याशुगो मारुतस्तीक्ष्णास्यो न च सायकस्तमिह ये जानन्ति ते पण्डिताः ॥" इन दोनों पद्योंका अर्थ प्रथमतः विरुद्ध प्रतीत होता है, किन्तु क्रमशः नारिकेलफल और मत्कुण (खटमल) अर्थ माने जानेपर सरल हो जाता है ॥

१. 'जनश्रुति'के २ नाम हैं—जनश्रुतिः, किंवदन्ती ॥

२. 'प्राचीन बात'का १ नाम है—ऐतिह्यम् ॥

३. 'बात, वृत्तान्त'के ४ नाम हैं—वार्ता, प्रवृत्तिः, वृत्तान्तः, उदन्तः ॥

४. 'नाम, संज्ञा'के ६ नाम हैं—आह्वयः, अभिधा, गोत्रम्, संज्ञा, नामधेयम्, आख्या, आह्वा, अभिख्या, नाम (-मन् , पु न) ॥

५. 'सम्बोधन'के २ नाम हैं—संबोधनम् , आमन्त्रणम् ॥

६. 'आह्वान, पुकारना, बुलाना'के ५ नाम हैं—आह्वानम् , अभिमन्त्रणम् , आकारणम्, हवः, हूतिः (स्त्री) ॥

७. 'बहुतलोगोंके द्वारा बुलाने'का १ नाम है—संहूतिः ॥

८. 'उपोद्घात'के ४ नाम हैं—उदाहारः, उपोद्घातः, उपन्यासः, वाङ्मुखम् ॥

९. 'विवाद, झगड़ा'के २ नाम हैं—व्यवहारः, विवादः ॥

१०. 'शपथ, सौगन्ध'के ३ नाम हैं—शपथः, शपनम्, शपः ॥

११. 'उत्तर, जवाब'के २ नाम हैं—उत्तरम्, प्रतिवचः (- चस्) ॥

१२. 'प्रश्न, सवाल'के ४ नाम हैं—प्रश्नः, पृच्छा, अनुयोजनम् (+अनुयोगः, पर्यनुयोगः), कथंकथिकता ॥

१३. 'देवोंसे पूछने'के २ नाम हैं—देवप्रश्नः, उपश्रुतिः ।

विमर्श—'पुरुषोत्तमदेवनृपति'ने 'त्रिकाण्डशेष' नामक अपने ग्रन्थमें—'चित्तोक्तिः पुष्पशकटी दैवप्रश्न उपश्रुतिः' (२।८।२६) इस वचन द्वारा 'आकाशवाणी'के 'चित्तोक्तिः, पुष्पशकटी, दैवप्रश्नः, उपश्रुतिः'—ये ४ नाम कहे हैं ॥

१चटु चाटु प्रियप्रायं २प्रियसत्यं तु सूनृतम् ।
३सत्यं सम्यक्समीचीनमृतं तथ्यं यथातथम् ॥ १७८ ॥
यथास्थितञ्च सद्भूतं४ऽलीके तु वितथानृते ।
५अथ क्लिष्टं संकुलञ्च परस्परपराहतम् ॥ १७९ ॥
६सान्त्वं सुमधुरं ७ग्राम्यमश्लीलं ८म्लिष्टमस्फुटम् ।
९लुप्तवर्णपदं ग्रस्त१०मवाच्यं स्यादनक्षरम् ॥ १८० ॥
११अम्बूकृतं सथूत्कारे १२निरस्तं त्वरयोदितम् ।
१३आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्त१४मबद्धन्तु निरर्थकम् ॥ १८१ ॥
१५पृष्ठमांसादनं तद्यत् परोक्षे दोषकीर्तनम् ।

---

१. 'अधिकतर प्रिय (खुशामदी) बात'के २ नाम हैं—चटु, चाटु ॥

२. 'प्रिय तथा सत्य वचन'का १ नाम है—सूनृतम् ॥

३. 'सत्य वचन'के ८ नाम हैं—सत्यम्, सम्यक् (–म्यञ्च्), समीचीनम्, ऋतम्, तथ्यम्, यथातथम्, यथास्थितम्, सद्भूतम् ॥

४. 'असत्य (झूठे) वचन'के ३ नाम हैं—अलीकम्, वितथम्, अनृतम् (+ असत्यम्, मिथ्या, मृषा, २ अव्य०) ॥

५. 'परस्परमें विरुद्ध वचन'के २ नाम हैं—क्लिष्टम्, संकुलम् । (यथा—"अन्धो मणिमुपाविध्यत् तमनङ्गुलिरासदत् । तमग्रीवः प्रत्यमुञ्चत् तमजिह्वोऽभ्यपूजयत् ॥" इस श्लोकमें अन्धे आदिके मणि छेदना आदि कार्य परस्परविरुद्ध होनेसे उक्त वचन 'क्लिष्ट' है) ॥

६. 'अत्यन्त मधुर वचन'का १ नाम है—सान्त्वम् ।

७. 'अश्लील (दिहाती) वचन'के २ नाम हैं—ग्राम्यम्, अश्लीलम् ॥

विमर्श—इस 'ग्राम्य' वचनके ३ भेद हैं—व्रीडाजनक, जुगुप्साजनक और अमङ्गलजनक । 'आलङ्कारिकोंने 'ग्राम्य' तथा 'अश्लील'को परस्पर पर्यायवाचक न मानकर भिन्नार्थक माना है ।

८. 'अस्पष्ट वचन'का १ नाम है—म्लिष्टम् ॥

९. 'जिसके वर्ण या पद लुप्त हों (जिसका पूरा-पूरा उच्चारण नहीं किया गया हो), उस वचन'का १ नाम है—ग्रस्तम् ॥

१०. 'अकथनीय वचन'के २ नाम हैं—अवाच्यम्, अनक्षरम् ॥

११. 'थूकसहित वचन'का १ नाम है—अम्बूकृतम् ॥

१२. 'शीघ्र कहे गये वचन'का १ नाम है—निरस्तम् ॥

१३. 'दो-तीन बार कहे गये वचन'का १ नाम है—आम्रेडितम् ॥

१४. 'निरर्थक (अर्थशून्य) वचन'का १ नाम है—अबद्धम् ॥

१५. 'परोक्षमें दोष कहने'का १ नाम है—पृष्ठमांसादनम् ॥

१मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानं २सङ्गतं हृदयङ्गमम् ॥ १८२ ॥
३परुषं निष्ठुरं रूक्षं विक्रुष्टं४मथ घोषणा ।
उच्चैर्घुष्टं ५वर्णनेडा स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ १८३ ॥
श्लाघा प्रशंसाऽर्थवादः ६सा तु मिथ्या विकत्थनम् ।
७जनप्रवादः कौलीनं विगानं वचनीयता ॥ १८४ ॥
८स्यादवर्ण उपक्रोशो वादो निष्पर्यपात्परः ।
गर्हणा धिक्क्रिया निन्दा कुत्सा क्षेपो जुगुप्सनम् ॥ १८५ ॥
९आक्रोशाभीषङ्गाक्षेपाः शापः १०सा क्षारणा रते ।
११विरुद्धशंसनं गालि१२राशीर्मङ्गलशंसनम् ॥ १८६ ॥
१३श्लोकः कीर्तिर्यशोऽभिख्या समाज्ञा —

---

१. 'असत्य आक्षेपपूर्ण वचन (दोष लगाना)'का १ नाम है—अभ्याख्यानम् । (यथा—चोरी आदि नहीं करनेपर भी किसीको चोरी करनेका दोष लगाना,·······) ॥

२. 'हृदयङ्गम (मनोहर) वचन'के २ नाम हैं—सङ्गतम्, हृदयङ्गमम् ॥

३. 'निष्ठुर (रूखे) वचन' के ४ नाम हैं—परुषम्, निष्ठुरम्, रूक्षम्, विक्रुष्टम् (+कठोरम्) ॥

४. 'घोषणा (ऊँचे स्वरसे सबको सुनाकर कहा गया वचन)'के २ नाम हैं—घोषणा, उच्चैर्घुष्टम् ॥

५. 'स्तुति, प्रशंसा'के ९ नाम हैं—वर्णना, ईडा, स्तवः, स्तोत्रम्, स्तुतिः, नुतिः, श्लाघा, प्रशंसा, अर्थवादः ॥

६. 'झूठी प्रशंसा'का १ नाम है—विकत्थनम् ॥

७. 'जनप्रवाद (जनताके विरुद्ध वचन)'के ४ नाम हैं—जनप्रवादः, कौलीनम्, विगानम्, वचनीयता ॥

८. 'निन्दा'के ११ नाम हैं—अवर्णः, उपक्रोशः, निर्वादः, परिवादः (+परीवादः), अपवादः, गर्हणा (+गर्हा), धिक्क्रिया (+धिक्कारः), निन्दा, कुत्सा, क्षेपः, जुगुप्सनम् (+जुगुप्सा) ॥

९. 'आक्षेप'के ४ नाम हैं—आक्रोशः, अभीषङ्गः, आक्षेपः, शापः ॥

१०. 'मैथुन-विषयक आक्षेप (दोषारोपण)'का १ नाम है—क्षारणा (+आक्षारणा) ॥

११. 'गाली देने'का १ नाम है—(+विरुद्धशंसनम्), गालिः (स्त्री) ॥

१२. 'आशीर्वाद'का १ नाम है—आशीः (–शिष् । +मङ्गलशंसनम्) ॥

१३. 'कीर्ति'के ५ नाम हैं—श्लोकः, कीर्तिः, यशः (–शस्), अभिख्या, समाज्ञा (+समाख्या) ॥

—१रुशती पुनः ।
अशुभा वाक् २शुभा कल्या ३चर्चरी चर्भटी समे ॥ १८७ ॥
४यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात् परिभाषणम् ।
५आपृच्छाऽऽलापः सम्भाषो६ऽनुलापः स्यान्मुहुर्वचः ॥ १८८ ॥
७अनर्थकन्तु प्रलापो ८विलापः परिदेवनम् ।
९उल्लापः काकुवा१०गन्योऽन्योक्तिः संलापसङ्कथे ॥ १८९ ॥
११विप्रलापो विरुद्धोक्ति१२रपलापस्तु निह्नवः ।
१३सुप्रलापः सुवचनं १४सन्देशवाक्तु वाचिकम् ॥ १९० ॥
१५आज्ञा शिष्टिर्निराङ्न्भ्यो देशो नियोगशासने ।
अववादोऽप्य१६थाहूय प्रेषणं प्रतिशासनम् ॥ १९१ ॥

---

१. 'अशुभ वाणी'का १ नाम है—रुशती । यह शब्द ('आश्रयलिङ्ग' है, अत: 'रुशन्' शब्द:, रुशती वाक्, रुशत् वचनम्,······विशेष्यके अनुसार तीनो लिङ्गोंमें 'रुशत्' शब्दका प्रयोग होता है) ॥

२. 'शुभ वाणी'का १ नाम है—कल्या ॥

३. 'हर्ष-क्रीडासे युक्त वचन'के २ नाम हैं—चर्चरी, चर्भटी ॥

४. 'निन्दापूर्वक उपालम्भयुक्त वचन' का १ नाम है—परिभाषणम् ॥

५. 'आलाप'के ३ नाम हैं—आपृच्छा, आलाप:, संभाष: ॥

६. 'बार-बार कहे हुए वचन'का १ नाम है—अनुलाप: ॥

७. 'अनर्थक वचन'का १ नाम है—प्रलाप: ॥

८. 'विलाप (शोकयुक्त वचन)'के २ नाम हैं—विलाप:, परिदेवनम् ॥

९. 'काकु ध्वनियुक्त वचन'के २ नाम हैं—उल्लाप:, काकुवाक् (-वाच्) ॥

१०. 'परस्परमें बात-चीत करने'के ३ नाम हैं—अन्योन्योक्ति:, संलाप:, संकथा ॥

११. 'विरुद्ध वचन' के २ नाम हैं—विप्रलाप:, विरुद्धोक्ति: ॥

१२. 'सत्य विषयको छिपाकर बोलने'के २ नाम हैं—अपलाप:, निह्नव: ॥

१३ 'सुन्दर वचन'के २ नाम हैं—सुप्रलाप:, सुवचनम् ॥

१४. 'मौखिक संदेश कहने'के २ नाम हैं—संदेशवाक् (-वाच्), वाचिकम् ॥

१५. 'आज्ञा देने'के ८ नाम हैं—आज्ञा, शिष्टि:, निर्देश:, आदेश:, निदेश:, नियोग:, शासनम्, अववाद: ।

१६. 'बुलाकर भेजने'का १ नाम है—प्रतिशासनम् ॥

१संवित् सन्धाऽऽस्थाभ्युपायः संप्रत्याङ्भ्यः परः श्रवः ।
अङ्गीकारोऽभ्युपगमः प्रतिज्ञाऽऽगूश्च सङ्गरः ॥ १९२ ॥
२गीतनृत्यवाद्यत्रयं नाट्यं तौर्यत्रिकञ्च तत् ।
३सङ्गीतं प्रेक्षणार्थेऽस्मिन्४शास्त्रोक्त नाट्यधर्मिका ॥ १९३ ॥
५गीतं गानं गेयं गीतिर्गान्धर्वं६मथ नर्तनम् ।
नटनं नृत्यं नृत्तञ्च लास्यं नाट्यञ्च ताण्डवम् ॥ १९४ ॥

---

१. 'प्रतिज्ञा, प्रण' के १५ नाम हैं—संवित् (–विद्), संधा, आस्था, अभ्युपायः, संश्रवः, प्रतिश्रवः, आश्रवः, अङ्गीकारः अभ्युपगमः, प्रतिज्ञा, आगूः (–गूर् स्त्री। +आगूः–गुर् स्त्री), संगरः (+समाधिः) ॥

विमर्श—पद्योक्ति तथा प्रकृतको अङ्गीकार करना—दोनों ही 'प्रतिज्ञा' हैं, इसी दृष्टिसे यहाँ 'संवित्' आदि १२ शब्दोंको पर्यायवाचक कहा गया है—'अमरकोष'कारने तो "संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः" (१।५।५)से इन ६ नामोंको 'प्रतिज्ञा'का पर्यायवाचक और "अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रय-समाधयः" (१।५।५)से इन ४ नामोंको 'स्वीकार'का पर्यायवाचक माना है। इनमें ऊकारान्त 'आगू' शब्दको 'खलपू' शब्दके समान तथा प्रक्षिप्त 'रेफान्त' 'आगुर्' शब्दका रूप 'पुर्' शब्दके समान होता हैं, दोनों ही शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं ॥

२. 'गीतम्, नृत्यम्, वाद्यम्' अर्थात् 'गाना, नाचना, और बाजा बजाना'—इन तीनोंके नाट्य (नट कर्म) में एक साथ होनेपर उस 'नाट्य'को 'तौर्यत्रिकम्' कहते हैं। (वक्ष्यमाण शेष सबको 'नटनम्' कहते हैं) ॥

३. इन तीनों (गाना, नाचना और बाजा बजाना) को जनताको दिखलानेके लिये करनेपर उसको 'संगीतम्' कहते हैं ॥

४. इन तीनों (गाना, नाचना और बाजा बजाना)के भरतादिशास्त्रानुकूल प्रयोग करनेपर उसे 'नाट्यधर्मी' (+नाट्यधर्मिका) कहते हैं ॥

५. 'गाना, गीत'के ५ नाम हैं—गीतम्, गानम्, गेयम्, गीतिः, गान्धर्वम् ॥

विमर्शः—यद्यपि भरतादिने 'गाने योग्यको 'गीतम्' गन्धर्वोंके गानेको 'गान्धर्वम्' रागपूर्वक गानेको 'गीतम्' प्रावेशिक्यादि ध्रुवा रूपको 'गानम्' और पद, स्वर, ताल तथा लयपूर्वक गानेको 'गान्धर्वम्' कहते हुए उक्त गीत आदिमें परस्पर भेद प्रदर्शित किया है; तथापि उक्त विशिष्ट भेदका आश्रय यहाँ ग्रन्थकारने नहीं किया है ॥

६. 'नाचने'के ७ नाम हैं—नर्तनम्, नटनम्, नृत्यम्, नृत्तम्, लास्यम्, नाट्यम् (पु न,, ताण्डवम् ॥

१मण्डलेन तु यन्नृत्तं स्त्रीणां हल्लीसकं हि तत् ।
२पानगोष्ठ्यामुच्चतालं ३रणे वीरजयन्तिका ॥ १९५ ॥
४स्थानं नाट्यस्य रङ्गः स्यात् ५पूर्वरङ्ग उपक्रमः ।
६अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो ७व्यञ्जकोऽभिनयः समौ ॥ १९६ ॥
८स चतुर्विध आहार्यो रचितो भूषणादिना ।
वचसा वाचिकोऽङ्गेनाङ्गिकः सत्त्वेन सात्त्विकः ॥ १९७ ॥
९स्यान्नाटकं प्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः ।
व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा इति ॥ १९८ ॥

विमर्शः—यहाँपर भी भरतादि प्रतिपादित इनके परस्पर भेद-विशेषोंका आश्रय नहीं किया गया है, किन्तु सामान्यतः सबको पर्यायवाचक कहा गया है ॥

१. बहुत सी स्त्रियोंका घूम-घूम मण्डलाकार रूपमें नाचनेका १ नाम है—हल्लीसकम् (न । + पु न) ॥

२. 'पानगोष्ठी (मदिरा आदि पीनेके स्थान) में नाचने'का १ नाम है—उच्चतालम् ॥

३. 'युद्ध भूमिमें नाचने'का १ नाम है—वीरजयन्तिका ॥

४. 'नाट्यस्थल (स्टेज)'का १ नाम है—रङ्गः ॥

५. 'नाटकके आरम्भ' का १ नाम है—पूर्वरङ्गः ॥

६. 'नाटकमें भावप्रदर्शनार्थ अङ्गोंके सञ्चालन करने'के २ नाम हैं—अङ्गहारः, अङ्गविक्षेपः ॥

७. 'भावप्रदर्शन, अभिनय करने'के २ नाम हैं—व्यञ्जकः, अभिनयः ॥

८. उस 'अभिनय' के ४ भेद हैं—१ भूषणादिसे किये गये अभिनयको आहार्यः, २—वचनमात्रसे किये गये अभिनयको 'वाचिकः,' अङ्गों (हाथ पैर-भ्रू आदिके सञ्चालन)से किये गये अभिनयको 'आङ्गिकः' और ४ सत्त्व (मन या गुण)से किये गये अभिनयको 'सात्त्विकः' कहते हैं ॥

९. 'उस अभिनेय'के १० प्रकार हैं—१ नाटकम् , २ प्रकरणम् , ३ भाणः, ४ प्रहसनम् , ५ डिमः, ६ व्यायोगः, ७ समवकारः, ८ वीथी, ९ अङ्कः, और १० ईहामृगः ।

विमर्श :—नाटक आदि १० अभिनेय प्रकारोंका लक्षण तथा उनके अङ्गोपाङ्ग, भाषा, पात्र आदिका सविस्तर वर्णन 'साहित्यदर्पण'में विश्वनाथ महापात्र ने (६।२७८–५३४) में किया है, जिज्ञासुओंको उसे वहीं देखना चाहिए । यहाँपर केवल जिस कारिकामें उक्त नाटकादिका मुख्य लक्षण विश्वनाथने कहा है, उसकी संख्या तथा उदाहरणभूत ग्रन्थके नाममात्रका उल्लेख किया जाता है । १ नाटक (६।२८०), यथा—बालरामायणम् , अभिज्ञान-

अभिनेयप्रकाराः स्युः[1]भाषाः षट् संस्कृतादिकाः ।
[2]भारती सात्त्वती कैशिक्यारभट्यौ च वृत्तयः ॥ १६६ ॥
[3]वाद्यं वादित्रमातोद्यं तूर्यं तूरं स्मरध्वजः ।

शाकुन्तलम् ,......, २—प्रकरण (६।५२८), यथा—मृच्छकटिकम् , मालती-माधवम् , पुष्पभूषितम् ,......, ३—भाणः (६।५३०), यथा—लीलामधुकरः,......, ४—प्रहसनम् (६।५५२), यथा —कन्दर्पकेलिः,......, ५—डिमः (६ । ५३४), यथा—त्रिपुरदाहः,................'६—व्यायोगः (६ । ५३१), यथा—सौगन्धिकाहरणम् ,.......,७—समवकारः (६।५३२), यथा—समुद्रमथनम् ,......, ८—वीथी (६।५३७), यथा—मालविका,......, ९ अङ्कः (६।५३६), यथा—शर्मिष्ठाययातिः,......और १०—ईहामृगः (६।५३५), यथा—कुसुमशेखरविजयः,......। "नाटकमथ प्रकरणं भाण-व्यायोगसमवकारडिमाः। ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश ॥ (६।२७८)" इस कारिकामें 'रूपक' (अभिनेय)के १० भेदोंको कहकर उसीके आगेवाली कारिकामें १८ उपरूपकोंको भी 'विश्वनाथ महापात्र'ने कहा है, यथा —"नाटिका त्रोटकं गोष्ठी सट्टकं नाट्यसंज्ञकम् । प्रस्थानोल्लाप्यकाव्यानि प्रेङ्खणं लासकं तथा ॥ संलापकं श्रीगदितं शिल्पकं च विलासिका । दुर्मल्लिका प्रकरणी हल्लीशो भाणिकेति च ॥ अष्टादश प्राहुरुपरूपकाणि मनीषिणः । विना विशेषं सर्वेषां लक्ष्म नाटकवन्मतम् ॥ (६।२७९)" उक्त १८ उपरूपकोंके लक्षण आदि साहित्यदर्पणमें ही (६।५५७—५७०) देखना चाहिए ॥

१. 'संस्कृतम् आदि' ('आदि' शब्द से—"प्राकृत, मागधी, शौरसेनी, पैशाची और अपभ्रंश"का संग्रह है) ६ भाषाएँ हैं। 'भाषा' शब्द स्त्री-लिङ्ग है ॥

२. 'भारती, सात्वती, कैशिकी, आरभटी'—ये ४ वृत्तियाँ हैं। 'वृत्तिः' शब्द स्त्रीलिङ्ग है।

विमर्श—रौद्र तथा बीभत्स रसमें 'भारती' वृत्ति, शृङ्गार रसमें 'कैशिकी' वृत्ति और वीर रसमें 'सात्वती' तथा 'आरभटी' वृत्तिका प्रयोग होता है। इनमें-से प्रत्येकके ४-४ अङ्ग या भेद होते हैं, इनके मुख्य तथा अङ्गादिका सलक्षण उदाहरण साहित्यदर्पणमें (६।४१४—४३५ तथा २८८-२८९) देखना चाहिए।

३. 'बाजा'के ६ नाम हैं—वाद्यम्, वादित्रम् , आतोद्यम्, तुर्यम् (पु न), तूरम्, स्मरध्वजः ॥

१ततं वीणाप्रभृतिकं २तालप्रभृतिकं घनम् ॥ २०० ॥
३वंशादिकन्तु शुषिर४मानद्धं मुरजादिकम् ।
५वीणा पुनर्घोषवती विपञ्ची कण्ठकूणिका ॥ २०१ ॥
वल्लकी ६साऽथ तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ।
७शिवस्य वीणाऽनालम्बी ८सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥ २०२ ॥
९नारदस्य तु महती १०गणानान्तु प्रभावती ।
११विश्वावसोस्तु बृहती १२तुम्बुरोस्तु कलावती ॥ २०३ ॥
१३चण्डालानान्तु कटोलवीणा चाण्डालिका च सा ।

---

१. 'वीणा' आदि ('आदि' शब्दसे—"सैरन्ध्री, रावणहस्त, किन्नर,……"का संग्रह है) तारसे बजनेवाले बाजाओं'का १ नाम है—'ततम्' ॥

२. 'ताल आदि (घरी, घंटा, झांझ आदि) कांसेके बने हुए बाजाओं'का १ नाम है—'घनम्' ॥

३. 'वंशी आदि ('आदि' शब्दसे—"नालिका, नलक,……" का संग्रह है) छिद्रवाले बाजाओं'का १ नाम है—शुषिरम् ॥

४. 'मुरज आदि ('आदि' शब्द से—ढोल, नगाड़ा, पखावज, तबला,………"का संग्रह है) चमड़ेसे मढ़े हुए बाजाओं'का १ नाम है—आनद्धम् (+अवनद्धम्)। (इस प्रकार' बाजाओं'के ४ भेद हैं—ततम्, घनम्, शुषिरम् और आनद्धम्) ॥

५. 'वीणा'के ५ नाम हैं—वीणा, घोषवती, विपञ्ची, कण्ठकूणिका, वल्लकी ॥

६. 'सात तारोंसे बजनेवाली वीणा (सितार)'का १ नाम है—परिवादिनी ॥

७. 'शिवजीकी वीणा'का १ नाम है—अनालम्बी ॥

८. 'सरस्वती देवीकी वीणा'का १ नाम है—कच्छपी ॥

९. 'नारदजीकी वीणा'का १ नाम है—महती ॥

१०. 'गणोंकी वीणा'का १ नाम है—प्रभावती ॥

११. 'विश्वावसुकी वीणा'का १ नाम है—बृहती ॥

१२. 'तुम्बुरुकी वीणा'का १ नाम है—कलावती ॥

१३. 'चण्डालोंकी वीणा'के २ नाम हैं—कटोलवीणा, चाण्डालिका ॥

शेषश्चात्र—चण्डालानां तु वल्लकी ।
काण्डवीणा कुवीणा च डक्कारी किन्नरी तथा ।
सारिका खुङ्कणी च ।

१काय: कोलम्बकस्तस्या २ उपनाहो निबन्धनम् ॥ २०४ ॥
३दण्डः पुनः प्रवालः स्यात् ४ककुभस्तु प्रसेवकः ।
५मूले वंशशलाका स्यात्कलिका कूणिकाऽपि च ॥ २०५ ॥
६कालस्य क्रियया मानं तालः ७साम्यं पुनर्लयः ।
८द्रुतं विलम्बितं मध्यमोघस्तत्त्वं घनं क्रमात् ॥ २०६ ॥
९मृदङ्गो मुरजः १०सोऽङ्क्यालिङ्ग्यूर्ध्वक इति त्रिधा ।

---

१. 'ताररहित वीणाके ढाँचे'का १ नाम है—कोलम्बकः ॥

२. 'वीणामें जहाँ तार बाँधे जाते हैं, उस स्थान'का १ नाम है—उपनाहः ॥

३. 'वीणाके दण्ड'का १ नाम है—प्रवालः (पु न) ॥

४. 'वीणाके दण्डके नीचेवाले बड़े भाण्ड'के २ नाम हैं—ककुभः, प्रसेवकः ॥

५. 'वीणाके मूलमें स्थित तार बाँधे जानेवाली वंशशलाका'के २ नाम हैं—कलिका, कूणिका ॥

६. 'ताल (गानेके समयमें नियामक कारण)'का १ नाम है—तालः ॥

७. 'लय (वक्ष्यमाण 'द्रुत, विलम्बित' आदि बाजाओंके ध्वनिकी परस्परमें समानता)'का १ नाम है—लयः । (कुछ लोग 'ताल-विशेषको ही 'लय' कहते हैं) ॥

८. 'द्रुत, विलम्बित तथा मध्य लयों'का क्रमशः १-१ नाम है—ओघः, तत्त्वम्, घनम् (+अनुगतम्) ।

विमर्श—नाट्यशास्त्रमें 'द्रुत' आदि लयोंके अनुसार क्रमशः 'ओघः' आदि वाद्य-प्रकार हैं, ऐसा कहा गया है ॥

९. 'मृदङ्ग'के २ नाम हैं—मृदङ्गः, मुरजः ॥

१०. वह 'मृदङ्ग' तीन प्रकारका होता है—१ अङ्की (-ङ्किन् । +अङ्क्यः), २ आलिङ्गी (- लिङ्गिन् । + आलिङ्ग्यः) और ऊर्ध्वकः (+आभोगिकः) ॥

विमर्श—प्रथम 'अङ्की' मृदङ्ग हरीतकी (हर्रे)के आकारके समान अर्थात् बीचमें मोटा तथा दोनों छोरमें पतला होता है, यथा—पखावज, इसे क्रोडके मध्य (गोद)में रखकर बजाया जाता है । द्वितीय 'आलिङ्गी' मृदङ्ग गोपुच्छके आकारके समान एक भागमें मोटा तथा दूसरे भागमें क्रमशः पतला होता है, यथा—तबला, इसे वाम भागमें रखकर बजाया जाता है । तृतीय 'ऊर्ध्वक' मृदङ्ग यव (जौ) के आकारके समान होता है, इसे दहिने भागमें रखकर बजाया जाता है । ऐसा नाट्यशास्त्रमें कहा गया है ।

१स्याद् यशःपटहो ढक्का २ भेरी दुन्दुभिरानकः ॥ २०७ ॥
पटहोऽ३थ शारिका स्यात्कोणो वीणादिवादनम् ।
४शृङ्गारहास्यकरुणा रौद्रवीरभयानकाः ॥ २०८ ॥
बीभत्साद्भुतशान्ताश्च रसा ५भावाः पुनस्त्रिधा ।
स्थायिसात्त्विकसञ्चारिप्रभेदैः—

१. 'ढक्का (नगाड़ा)'के २ नाम हैं—यशःपटहः, ढक्का ॥

२. 'दुन्दुभि'के ४ नाम हैं—भेरी, दुन्दुभिः (पु), आनकः (पु । +पु न), पटहः ।

विमर्श—कतिपय कोषकारोंने २-२ पर्यायोंको एकार्थक माना है ॥

शेषश्चात्र—अथ दर्दरे कलशीमुखः ।
सूत्रकोणो डमरुकं समौ पणवकिङ्कणौ । शृङ्गवाद्ये शृङ्गमुखं हुडुकस्तालमर्दकः ॥
काहला तु कुहाला स्याच्चण्डकोलाहला च सा । संवेशप्रतिबोधार्थं द्रगडद्रकटावुभौ ॥
देवतार्चनतूर्ये तु धूमलो बलिरित्यपि । त्रुण्णकं मृतयात्रायां माङ्गले प्रियवादिका ॥
रणोद्यमे त्वर्धतूरो वाद्यभेदास्तथाऽपरे ।
डिण्डिमो झर्झरो मड्डुस्तिमिला किरिकिञ्चिका ॥
लम्बिका टट्टरी वेध्या कलापूरादयोऽपि च ॥

३. 'वीणा, सारङ्गी आदि बजानेके लिए धनुषाकार टेढ़ा काष्ठविशेष'के २ नाम हैं—शारिका, कोणः (पु । +पु न) ॥

४. 'शृङ्गारः (पु न । +पु), हास्यः (+न), करुणः (+करुणा, स्त्री), रौद्रः (+न), वीरः, भयानकः, बीभत्सः, अद्भुतः, शान्तः (+४ न । ८ पु)—'काव्य'में ये ६ 'रस' कहे गये हैं, 'रसः' अर्थात् उक्त 'रस' शब्द 'पुं, न' है ॥

विमर्श—गौड तथा मुनीन्द्रने 'वात्सल्यम् (वत्सलता)'को दशम रस मानकर दस रस हैं ऐसा कहा है[1] । इन शृङ्गार आदि नव रसोंके लक्षण, आलम्बन, व्यभिचारिभाव, अनुभाव, वर्ण, देवता आदि साहित्यदर्पणमें (३।२१४–२४४) देखें ॥

५. स्थायी (—यिन्), संचारी (–रिन्), सात्त्विकः,—इन भेदोंसे 'भाव'के ३ भेद हैं, 'भावः' शब्द पुंल्लिङ्ग है ॥

---

१. तदाह गौडः—
शृङ्गारवीरौ बीभत्सं रौद्रं हास्यं भयानकम् ।
करुणा चाद्भुतं शान्तं वात्सल्यं च रसा दश ॥ इति ॥
तथा च विश्वनाथः—
वत्सलश्च रस इति तेन स दशमो मतः ।
स्फुटं चमत्कारितया वत्सलञ्च रसं विदुः ॥
(सा० द० ३।२४५)

—१स्याद्रतिः पुनः ॥ २०९ ॥
रागोऽनुरागोनुरतिर्२हासस्तु हसनं हसः ।
घर्घरो हासिका हास्यं ३तत्राहष्टरदे स्मितम् ॥ २१० ॥
वक्रोष्ठिका४ऽथ हसितं किञ्चिद्दृष्टरदाङ्करे ।
५किञ्चिच्छ्रुते विहसितं६मट्टहासो महीयसि ॥ २११ ॥
७अतिहासस्त्वनुस्यूते८ऽपहासोऽकारणात् कृते ।
९सोत्प्रासे त्वाच्छुरितकं हसनं स्फुरदोष्ठके ॥ २१२ ॥
१०शोकः शुक् शोचनं खेदः ११क्रोधो मन्युः क्रुधा रूषा ।
क्रुत्कोपः प्रतिघो रोषो रुट् चो१२त्साहः प्रगल्भता ॥ २१३ ॥
अभियोगोद्यमौ प्रौढिरुद्योगः कियदेतिका ।
अध्यवसाय ऊर्जो१३ऽथ वीर्यं सोऽतिशयान्वितः ॥ २१४ ॥

---

१. 'रति, अनुराग' के ४ नाम हैं—रतिः, रागः, अनुरागः, अनुरतिः ॥

२. 'हँसने'के ६ नाम हैं—हासः, हसनम्, हसः, घर्घरः, हासिका, हास्यम् ॥

३. 'मुस्कान' (जिस हँसनेमें दाँत नहीं दिखलायी पड़ें, उस)के २ नाम हैं—स्मितम्, वक्रोष्ठिका (स्त्री न) ॥

४. 'जिस हँसनेमें दाँतका थोड़ा-सा भाग दिखलायी पड़े, उस'का १ नाम है—हसितम् ॥

५. 'जिस हँसनेमें थोड़ा शब्द सुनाई पड़े, उस'का १ नाम है—विहसितम् ॥

६. 'जिस हँसनेमें अधिक शब्द सुनाई पड़े, उस'का १ नाम है—अट्टहासः ॥

७. 'निरन्तर हँसने'का १ नाम है—अतिहासः ॥

८. 'निष्कारण हँसने'का १ नाम है—अपहासः ॥

९. 'जिस हँसनेसे दूसरेको अमर्ष हो जाय, उस'का १ नाम है—आच्छुरितकम् (+ अवच्छुरितम्) ॥

विमर्श—स्मितम् (२ । २१०)से लेकर यहाँ (२ । २१२) तक ८ भेद 'हसने'के हैं ॥

१०. 'शोक'के ४ नाम हैं—शोकः, शुक् (-च्, स्त्री), शोचनम्, खेदः ॥

११. 'क्रोध'के ९ नाम हैं—क्रोधः, मन्युः (पु), क्रुधा, रुषा, क्रुत् (-ध्, स्त्री), कोपः, प्रतिघः, रोषः, रुट् (-ष्, स्त्री) ॥

१२. 'उत्साह'के ९ नाम हैं—उत्साहः, प्रगल्भता, अभियोगः, उद्यमः (पु न), प्रौढिः, उद्योगः, कियदेतिका, अध्यवसायः, ऊर्जः (-र्जस् न) ॥

१३. 'वीर्य, अत्युन्नत उत्साह'का १ नाम है— वीर्यम् ॥

१भयं भीर्भीतिरातङ्क आशङ्का साध्वसं दरः ।
भिया च २तच्चाहिभयं भूपतीनां स्वपक्षजम् ॥ २१५ ॥
३अदृष्टं वह्नितोयादे४र्दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।
५भयङ्करं प्रतिभयं भीमं भीष्मं भयानकम् ॥ २१६ ॥
भीषणं भैरवं घोरं दारुणञ्च भयावहम् ।
६जुगुप्सा तु घृणा७ऽथ स्याद्विस्मयश्चित्रमद्भुतम् ॥ २१७ ॥
चोद्याश्चर्ये ८शमः शान्तिः शमथोपशमावपि ।
तृष्णाक्षयः ९स्थायिनोऽमी रसानां कारणं क्रमात् ॥ २१८ ॥
१०स्तम्भो जाड्यं ११स्वेदो घर्मनिदाघौ १२पुलकः पुनः ।
रोमाञ्चः कण्टको रोमविकारो रोमहर्षणम् ॥ २१९ ॥
रोमोद्गम उद्धुषणमुल्लकसनमित्यपि ।

---

१. 'भय'के ८ नाम हैं—भयम्, भीः, भीतिः (२ स्त्री), आतङ्कः, आशङ्का, साध्वसम्, दरः (पु न), भिया ॥

२. 'राजाओंका अपने पक्षवालोंसे होनेवाले भय'का १ नाम है—अहिभयम् ॥

३. 'आग-पानी आदिसे होनेवाले भय'का १ नाम है—अदृष्टम् ॥

४. 'अपने तथा परराष्ट्रसे होनेवाले भय'का १ नाम है—दृष्टम् ॥

५. 'भयङ्कर, डरावना'के १० नाम हैं—भयङ्करम् , प्रतिभयम् , भीमम् , भीष्मम् , भयानकम् , भीषणम् , भैरवम् , घोरम् , दारुणम् , भयावहम् ॥

शेषश्चात्र—भयङ्करे तु डमरमाभीलं भासुरं तथा ।

६. 'घृणा'के २ नाम हैं—जुगुप्सा, घृणा ॥

७. 'आश्चर्य'के ५ नाम हैं—विस्मयः, चित्रम् , अद्भुतम् , चोद्यम् , आश्चर्यम् ॥

शेषश्चात्र—आश्चर्ये फुल्लकं मोहो वीक्ष्यम् ।

८. 'शान्ति'के ५ नाम हैं–शमः शान्तिः, शमथः, उपशमः, तृष्णाक्षयः ॥

९. पूर्वोक्त (२।२०८–२०९) शृङ्गार आदि ९ रसोंके ये 'रति' आदि ९ (रतिः, हासः, शोकः, क्रोधः, उत्साहः, भयम् , जुगुप्सा, विस्मयः, शमः) क्रमशः 'स्थायी भाव' हैं ॥

१०. 'स्तम्भ, जडता'के २ नाम हैं—स्तम्भः, जाड्यम् ॥

११. 'स्वेद, पसीना'के ३ नाम हैं—स्वेदः, घर्मः, निदाघः ॥

१२. 'रोमाञ्च'के ८ नाम हैं—पुलकः (पु न), रोमाञ्चः, कण्टकः, (पु न), रोमविकारः, रोमहर्षणम् , रोमोद्गमः, उद्धुषणम् , उल्लकसनम् ।

१स्वरभेदस्तु कल्लत्वं स्वरे २कम्पस्तु वेपथुः ॥ २२० ॥
३वैवर्ण्यं कालिका४ऽथाश्रु बाष्पो नेत्राम्बु रोदनम् ।
अस्रमस्त्रु ५प्रलयस्त्वचेष्टते६त्यष्ट सात्त्विकाः ॥ २२१ ॥
७धृतिः सन्तोषः स्वास्थ्यं स्या८दाध्यानं स्मरणं स्मृतिः ।
९मतिर्मनीषा बुद्धिर्धीर्धिषणाज्ञप्तिचेतनाः ॥ २२२ ॥
प्रतिभाप्रतिपत्प्रज्ञाप्रेक्षाचिदुपलब्धयः ।
संवित्तिः शेमुषी दृष्टिः १०सा मेधा धारणक्षमा ॥ २२३ ॥
११पण्डा तत्त्वानुगा १२मोक्षे ज्ञानं १३विज्ञानमन्यतः ।
१४शुश्रूषा श्रवणञ्चैव ग्रहणं धारणं तथा ॥ २२४ ॥

---

१. 'स्वरमें अव्यक्त भाव होने'का १ नाम है—स्वरभेदः ॥

२. 'कम्पन'के २ नाम हैं—कम्पनम्, वेपथुः (पु) ॥

३. 'विवर्णता (फीकापन)'के २ नाम हैं—वैवर्ण्यम्, कालिका ॥

४. 'आँसू'के ६ नाम हैं—अश्रु (न) बाष्पम् (पु न), नेत्राम्बु, रोदनम्, अस्रम्, अस्रु (न) ॥

शेषश्चात्र—लोतस्तु दृग्जले ।

५. 'मूर्च्छा'के २ नाम हैं—प्रलयः, अचेष्टता (+मोहः, मूर्च्छा) ॥

६. पूर्वोक्त (२।२०८–२०९) 'शृङ्गार' आदि ९ रसोंके ये 'स्तम्भ' आदि ८ (स्तम्भः, स्वेदः, रोमाञ्चः, स्वरभेदः, कम्पः, वैवर्ण्यम्, रोदनम् और प्रलयः) 'सात्त्विक भाव' हैं ॥

७. 'धृति, धैर्य'के ३ नाम हैं—धृतिः (+धैर्यम्), संतोषः, स्वास्थ्यम् ॥

८. 'स्मरण'के ३ नाम हैं—आध्यानम्, स्मरणम्, स्मृतिः ॥

९. 'बुद्धि'के १९ नाम हैं—मतिः, मनीषा, बुद्धिः, धीः, धिषणा, ज्ञप्तिः, चेतना, प्रतिभा, प्रतिपत् (–पद्), प्रज्ञा, प्रेक्षा, चित् (–द्, स्त्री), उपलब्धिः, संवित्तिः, शेमुषी, दृष्टिः ॥

१०. 'धारण करनेवाली बुद्धि'का १ नाम है—मेधा ॥

११. 'तत्त्वानुगामिनी बुद्धि'का १ नाम है—पण्डा ॥

१२. 'मोक्ष-विषयिणी बुद्धि'का १ नाम है—ज्ञानम् ॥

१३. 'विज्ञान' अर्थात् 'शिल्प-चित्रकलादि-विषयिणी बुद्धि'का १ नाम है—विज्ञानम् ॥

१४. 'बुद्धि'के ८ गुण हैं, उनके क्रमशः पृथक्-पृथक् १–१ नाम हैं—शुश्रूषा (सुननेकी इच्छा), श्रवणम् (सुनना), ग्रहणम् (ग्रहण करना, लेना), धारणम् (धारण किये हुएको नहीं भूलना), ऊहः (युक्तिसंगत

ऊहोऽपोहोऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानञ्च धीगुणाः ।
१व्रीडा लज्जा मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा २साऽपत्रपाऽन्यतः ॥ २२५ ॥
३जाड्यं मौर्ख्यं ४विषादोऽवसादः सादो विषण्णता ।
५मदो मुन्मोहसम्भेदो ६व्याधिस्त्वाधी रुजाकरः ॥ २२६ ॥
७निद्रा प्रमीला शयनं संवेशस्वापसंलयाः ।
नन्दीमुखी श्वासहेतिस्तन्द्रा ८सुप्तन्तु साऽधिका ॥ २२७ ॥
९औत्सुक्यं रणरणकोत्कण्ठे आयल्लकारती ।
हृल्लेखोत्कलिके चा१०थावहित्थाऽऽकारगोपनम् ॥ २२८ ॥
११शङ्काऽनिष्टोत्प्रेक्षणं स्या१२च्चापलन्त्वनवस्थितिः ।
१३आलस्यं तन्द्रा कौसीद्यं—

तर्क), अपोहः (दूषित पक्षका खण्डन करना), अर्थविज्ञानम् (अर्थको यथावत् जानना), तत्त्वज्ञानम् (वास्तविक तत्त्वका ज्ञान) ॥

१. 'लज्जा'के ५ नाम हैं—व्रीडा (+व्रीडः), लज्जा, मन्दाक्षम्, ह्रीः (स्त्री), त्रपा ॥

२. 'दूसरेसे लज्जा होने'का १ नाम है—अपत्रपा ॥

३. 'मूर्खता'के २ नाम हैं—जाड्यम् , मौर्ख्यम् ॥

४. 'विषाद'के ४ नाम हैं—विषादः, अवसादः, सादः, विषण्णता ॥

५. 'मद (नशा, आनन्द तथा संमोहका संयोग)'का १ नाम है—मदः ॥

६. 'रोग उत्पन्न करनेवाली मानसिक पीडा'का १ नाम है—व्याधिः ॥

७. 'नींद'के ९ नाम हैं—निद्रा, प्रमीला, शयनम् , संवेशः, स्वापः, संलयः, नन्दीमुखी, श्वासहेतिः, तन्द्रा (+तन्द्री, तन्द्रिः) । (किसी-किसीके मतसे 'नन्दीमुखी' तथा 'श्वासहेतिः' ये २ नाम 'सोये हुए'के हैं) ॥

शेषश्चात्र—निद्रायां तामसी ।

८. 'अधिक नींद'का १ नाम है—सुप्तम् ॥

शेषश्चात्र—सुप्ते सुष्वापः सुखसुप्तिका ॥

९. 'उत्सुकता'के ७ नाम हैं—औत्सुक्यम् , रणरणकः उत्कण्ठा (+उत्कण्ठः, आयल्लकम् , अरतिः (स्त्री), हृल्लेखः, उत्कलिका ॥

१०. 'भ्रू-विकार मुखरागादिरूप आकारको छिपाने'का १ नाम है—अवहित्था (स्त्री न) ॥

शेषश्चात्र—आकारगूहने चावकटिकाऽवकुटारिका । गृहजालिका ।

११. 'शङ्का (अनिष्टकी संभावना)'का १ नाम है—शङ्का ॥

१२. 'चपलता'के २ नाम हैं—चापलम् , अनवस्थितिः ॥

१३. 'आलस्य'के ३ नाम हैं—आलस्यम् , तन्द्रा, कौसीद्यम् ॥

—१हर्षश्चित्तप्रसन्नता ॥ २२९ ॥
ह्लादः प्रमोदः प्रमदो मुत्प्रीत्यामोदसम्मदाः ।
आनन्दानन्दथू २गर्वस्त्वहङ्कारोऽवलिप्तता ॥ २३० ॥
दर्पोऽभिमानो ममता मानश्चित्तोन्नतिः स्मयः ।
३स मिथोऽहमहमिका ४या तु सम्भावनाऽऽत्मनि ॥ २३१ ॥
दर्पात्साऽऽहोपुरुषिका स्यात्५दहम्पूर्विका पुनः ।
अहं पूर्वमहंपूर्वमित्य६त्युग्रत्वन्तु चण्डता ॥ २३२ ॥
७प्रबोधस्तु विनिद्रत्वं ८ग्लानिस्तु बलहीनता ।
९दैन्यं कार्पण्यं १०श्रमस्तु क्लमः क्लेशः परिश्रमः ॥ २३३ ॥
प्रयासायासव्यायामा ११उन्मादश्चित्तविप्लवः ।
१२मोहो मौढ्यं १३चिन्ता ध्यानम्—

---

१. 'हर्ष'के ११ नाम हैं —हर्षः, चित्तप्रसन्नता, ह्लादः, प्रमोदः, प्रमदः, मुत् (-द्, स्त्री), प्रीतिः, आमोदः, संमदः, आनन्दः, आनन्दथुः (पु) ॥

२. 'अहङ्कार'के ९ नाम हैं—गर्वः, अहङ्कारः, अवलिप्तता (+अवलेपः), दर्पः, अभिमानः, ममता, मानः (पु न), चित्तोन्नतिः, स्मयः ॥

३. (मैं बलवान् हूँ, मैं बलवान् हूँ, इत्यादि रूपमें एकाधिक व्यक्तियोंका) 'परस्परमें अहङ्कार करने'का १ नाम है—अहमहमिका ॥

४. 'अहङ्कारके अपने विषयमें संभावना करने'का १ नाम है—आहोपुरुषिका ॥

५. 'मैं आगे, मैं आगे' इस प्रकार विचार रखने या कहने'का १ नाम है—अहंपूर्विका (+ अहंप्रथमिका, अहमग्रिका) ॥

६, 'उग्रता, अधिक तेजी'के २ नाम हैं—उग्रत्वम्, चण्डता ॥

७. 'प्रबोध, जगने'के २ नाम हैं—प्रबोधः, विनिद्रत्वम् ॥

८. 'ग्लानि (क्षीणशक्ति होने)'का १ नाम है—ग्लानिः (स्त्री) ॥

९. 'दीनता'के २ नाम हैं—दैन्यम्, कार्पण्यम् ॥

१०. 'परिश्रम'के ७ नाम हैं—श्रमः, क्लमः, क्लेशः, परिश्रमः, प्रयासः, आयासः, व्यायामः ॥

११. 'उन्माद (चित्तका विक्षिप्त होना—पागलपन)'के २ नाम हैं—उन्मादः, चित्तविप्लवः ॥

१२. 'मोह (बेहोशी)'के २ नाम हैं—मोहः, मौढ्यम् ॥

१३. 'ध्यान'के २ नाम हैं—चिन्ता, ध्यानम् ॥

—१अमर्षः क्रोधसम्भवः ॥ २३४ ॥
गुणो जिगीषोत्साहवान्२स्त्रासस्त्वाकस्मिकं भयम् ।
३अपस्मारः स्यादावेशो ४निर्वेदः स्वावमाननम् ॥ २३५ ॥
५आवेगस्तु त्वरिस्तूर्णिः संवेगः सम्भ्रमस्त्वरा ।
६वितर्कः स्यादुन्नयनं परामर्शो विमर्शनम् ॥ २३६ ॥
अध्याहारस्तर्क ऊहो७ऽसूयाऽन्यगुणदूषणम् ।
८मृतिः संस्था मृत्युकालौ परलोकगमोऽत्ययः ॥ २३७ ॥
पञ्चत्वं निधनं नाशो दीर्घनिद्रा निमीलनम् ।
दिष्टान्तोऽस्तं कालधर्मोऽवसानं ९सा तु सर्वगा ॥ २३८ ॥
मरको मारि१०स्त्रयस्त्रिंशदमी व्यभिचारिणः ।
११स्युः कारणानि कार्याणि सहचारीणि यानि च ॥ २३९ ॥

---

१. 'विजयेच्छाके उत्साहसे युक्त क्रोधोत्पन्न गुण (प्रतिकार करनेकी इच्छा)' का १ नाम है—अमर्षः ॥

२. 'आकस्मिक भय'का १ नाम है—त्रासः ॥

३. 'मृगी (एक प्रकारका रोग-विशेष)'का १ नाम है—अपस्मारः ॥

४. 'अपनेको हीन समझना'का १ नाम है—निर्वेदः ॥

५. 'जल्दीबाजी'के ६ नाम हैं—आवेगः, त्वरिः, तूर्णिः (२ स्त्री), संवेगः, संभ्रमः, त्वरा ॥

६. 'तर्क'के ७ नाम हैं—वितर्कः, उन्नयनम्, परामर्शः, विमर्शनम्, अध्याहारः, तर्कः (पु । + पु न), ऊहः (+उहा) ॥

७. 'दूसरेके गुणको भी दोष बतलाना'का १ नाम है—असूया ॥

८. 'मरने'के १५ नाम हैं—मृतिः, संस्था, मृत्युः (पु स्त्री), कालः, परलोकगमः, अत्ययः, पञ्चत्वम्, निधनम् (पु न), नाशः दीर्घनिद्रा, निमीलनम् दिष्टान्तः, अस्तम्, कालधर्मः, अवसानम् ॥

९. 'मारी' (हैजा, प्लेग आदि किसी रोग या उपद्रवके कारण एक साथ बहुत लोगोंके मरने)'के २ नाम हैं—मरकः, मारिः (स्त्री) ॥

१०. पूर्वोक्त (२।२२२–२३८) ये 'धृतिः' आदि ३३ भाव 'व्यभिचारी भाव' हैं । 'व्यभिचारी' (– रिन्) शब्द पुंल्लिङ्ग है ।

११. पूर्वोक्त (२।२१९–२३८) 'रति' आदि ९ स्थायी भावोंके, लोकमें आलम्बन (स्त्री आदि) तथा उद्दीपन (चन्द्र, मलयवायु, उद्यानादि) जो कारण हैं, वचन आदि अभिनयसे युक्त स्थायिव्यभिचारिरूप उन चित्तवृत्तियों-को काव्य तथा नाट्यमें 'विभाव' कहते हैं । तथा उन 'रति' आदि ९ स्थायी भावोंके कटाक्ष, बाहु सञ्चालनादिरूप जो कार्य हैं, स्थायि-व्यभिचारिरूप

रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेत्काव्यनाट्ययोः ।
विभावा अनुभावाश्च व्यभिचारिण एव च ॥ २४० ॥
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो भवेद्रसः ।
१पात्राणि नाट्येऽधिकृता२स्तत्तद्वेषस्तु भूमिका ॥ २४१ ॥
३शैलूषो भरतः सर्वकेशी भरतपुत्रकः ।
धर्मीपुत्रो रङ्गजायाऽऽजीवो रङ्गावतारकः ॥ २४२ ॥
नटः कृशाश्वी शैलाली ४चारणस्तु कुशीलवः ।
५भ्रकुंसश्च भ्रूकुंसश्च भ्रूकुंसः स्त्रीवेषधारकः ॥ २४३ ॥
६वेश्याऽऽचार्यः पीठमर्दः ७सूत्रधारस्तु सूचकः ।

चित्तवृत्तिविशेषको सामाजिक (दर्शक) स्वयं अनुभव करता हुआ जिनके द्वारा अनुभावित होता है, उन्हें काव्य तथा नाट्यमें 'अनुभाव' कहते हैं । और उन 'रति' आदि ९ स्थायी भावोंके सहचारी पूर्वोक्त (२।२२२-२३८) 'धृति' आदि ३३ 'व्यभिचारी भाव जिन विभावादि भावोंसे अभिव्यक्त (सामाजिकों (दर्शकों)के वासनारूपसे स्थित) होते हैं, वह रति' आदि स्थायी भाव कवियों एवं सहृदयोंसे आस्वादित होनेके कारण शृङ्गारादि 'रस' कहलाता है ।

विमर्शः—रति आदि ९ स्थायी भावोंके 'कारण, कार्य, तथा सहचारी' भाव काव्य तथा नाट्यमें क्रमशः 'विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी' कहलाते हैं और उन (विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी) भावोंसे अभिव्यक्त—दर्शकोंके वासनारूपसे स्थित—उस रति आदि स्थायी भावका ही कवि सहृदय जन आस्वादनकर आनन्दानुभव करते हैं, अत एव वे (रत्यादि स्थायी भाव) ही क्रमशः शृङ्गारादि रस कहलाते हैं ॥

१. 'नाट्यमें अधिकृत व्यक्तियों (ऐक्टरों, अभिनय करनेवालों)'का १ नाम है—पात्रम् ॥

२. 'उन पात्रोंके वेष-भूषा'का १ नाम है—भूमिका ॥

३. 'नट'के ११ नाम हैं—शैलूषः, भरतः, सर्वकेशी (-शिन्), भरतपुत्रकः, धर्मीपुत्रः, रंगजीवः, जायाजीवः, रङ्गावतारकः, नटः, कृशाश्वी (-श्विन्), शैलाली (-लिन्), ॥

४. 'चारण (देशान्तरमें भ्रमण करनेवाले नट)'के २ नाम हैं—चारणः, कुशीलवः ॥

५. 'स्त्रीका वेष धारण करनेवाले नट'के ४ नाम हैं—भ्रकुंसः, भ्रुकुंसः, भ्रूकुंसः, भृकुंसः ॥

६. 'वेश्याओंके शिक्षक'के २ नाम हैं—वेश्याचार्यः, पीठमर्दः ॥

७. 'सूत्रधार'के २ नाम हैं—सूत्रधारः, सूचकः (+स्थापकः) ॥

१नन्दी तु पाठको नान्द्याः २पार्श्वस्थः पारिपार्श्विकः ॥ २४४ ॥
३वासन्तिकः केलिकिलो वैहासिको विदूषकः ।
प्रहासी प्रीतिदश्चा४थ षिङ्गः पल्लवको विटः ॥ २४५ ॥
५पिता त्वावुक ६आवुत्तभावुकौ भगिनीपतौ ।
७भावो विद्वान् ८युवराजः कुमारो भर्तृदारकः ॥ २४६ ॥
९बाला वासू१०र्मार्ष आर्यो ११देवो भट्टारको नृपः ।
१२राष्ट्रियो नृपतेः श्यालो १३दुहिता भर्तृदारिका ॥ २४७ ॥
१४देवी कृताभिषेका१५ऽन्या भट्टिनी १६गणिकाऽज्जुका ।
१७नीचाचेटीसखीहूतौ हण्डेहञ्जेहलाः क्रमात् ॥ २४८ ॥

शेषश्चात्र—अथ सूत्रधारे स्याद् बीजदर्शकः ॥

१. 'नान्दी' (पूर्वरंगके अङ्ग-विशेष)का पाठ करनेवाले' का १ नाम हैं—नन्दी (-न्दिन्) ॥

२. 'पार्श्ववर्ती'के २ नाम हैं—पार्श्वस्थः, पारिपार्श्विकः ॥

३. 'विदूषक (नाटकके जोकर—सदस्योंको हँसानेवाले पात्र-विशेष)' के ६ नाम हैं—वासन्तिकः, केलिकिलः (+केलीकिलः), वैहासिकः, विदूषकः, प्रहासी (-सिन्), प्रीतिदः ॥

४. 'विट'के ३ नाम हैं—षिङ्गः, पल्लवकः, विटः (पु न) ॥

५. पिता'का १ नाम है—आवुकः ॥

६. 'बहनके पति'के २ नाम हैं—आवुत्तः, भावुकः ॥

७. 'विद्वान्'का १ नाम है—भावः ॥

८. 'युवराज'के २ नाम हैं—कुमारः, भर्तृदारकः ॥

९. 'बाला'का १ नाम है—वासूः ॥

१०. 'आर्य'के २ नाम हैं—मार्षः (+मारिषः), आर्यः ॥

११. 'राजा'के २ नाम हैं—देवः, भट्टारकः ॥

१२. 'राजाके शाले'का १ नाम है—राष्ट्रियः । (इसे प्रायः नगरके कोतवालका पद प्राप्त रहता है) ॥

१३. 'राजाकी लड़की'का १ नाम है—भर्तृदारिका ॥

१४. 'पटरानी (अभिषिक्त रानी)'का १ नाम है—देवी ॥

१५. 'राजाकी अन्य रानियों'का १ नाम है—भट्टिनी ॥

१६. 'वेश्या'का १ नाम है—अज्जुका ॥

१७. 'नीचा, चेटी (दासी) और सखी'के बुलानेमें क्रमशः 'हण्डे, हञ्जे, हला' इन तीनों में-से १–१ का प्रयोग होता है ॥

१अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ २ज्यायसी तु स्वसाऽत्तिका ।
३भर्ताऽऽर्यपुत्रो ४माताऽम्बा ५भदन्ताः सौगतादयः ॥ २४९ ॥
६पूज्ये तत्रभवानत्रभवांश्च भगवानपि ।
७पादा भट्टारको देवः प्रयोज्यः पूज्यनामतः ॥ २५० ॥

इत्याचार्यहेमचन्द्रविरचितायाम् "अभिधानचिन्तामणिनाममालायां"
द्वितीयो 'देवकाण्डः' समाप्तः ॥ २ ॥

—: * :—

---

१. 'अवध्यके कहनेमें' 'अब्रह्मण्यम्' शब्दका प्रयोग होता है ॥

२. 'बड़ी बहन'का १ नाम है—अत्तिका ॥

३. 'पति'का १ नाम है—आर्यपुत्रः ॥

४. 'माता'का १ नाम है—अम्बा ॥

५. 'बौद्ध आदि भिक्षुकों'का १ नाम है—भदन्तः ॥

६. 'पूज्य' व्यक्तिमें—'तत्रभवान्, अत्रभवान्, भगवान् (३ –वत्)' शब्दोंका प्रयोग होता है ॥

७. 'पूज्य व्यक्तिके नामके आगे 'पादाः, भट्टारकः, देवः' शब्दोंका प्रयोग किया जाता है । (यथा—गुरुपादाः, गुरुचरणाः, अर्हभट्टारकः, कुमारपालदेवः,·········) ॥

विमर्श—पूर्वोक्त (२।२४५–२५०) आवुकादि शब्दोंका प्रयोग नाट्याधिकार होनेसे नाटकोंमें ही होता है । परन्तु 'तत्रभवान्' आदि (२।२५०) शब्दोंका प्रयोग नाटकसे भिन्न स्थलोंमें भी किया जाता है ॥

इस प्रकार साहित्य-व्याकरणाचार्यादिपदविभूषित मिश्रोपाह्व
श्रीहरगोविन्दशास्त्रिविरचित 'मणिप्रभा'व्याख्यामें
द्वितीय 'देवकाण्ड' समाप्त हुआ ॥ २ ॥



अथ मर्त्यकाण्डः ॥ ३ ॥

१मर्त्यः पञ्चजनो भूस्पृक् पुरुषः पूरुषो नरः ।
मनुष्यो मानुषो ना विट् मनुजो मानवः पुमान् ॥ १ ॥
२बालः पाकः शिशुर्डिम्भः पोतः शावः स्तनन्धयः ।
पृथुकार्भोत्तानशयाः क्षीरकण्ठः कुमारकः ॥ २ ॥
३शिशुत्वं शैशवं बाल्यं ४वयःस्थस्तरुणो युवा ।
५तारुण्यं यौवनं ६वृद्धः प्रवयाः स्थविरो जरन् ॥ ३ ॥
जरी जीर्णो यातयामो जीनोऽ७थ विस्रसा जरा ।
८वार्द्धकं स्थाविरं ९ज्यायान् वर्षीयान्दशमीत्यपि ॥ ४ ॥
१०विद्वान् सुधीः कविविचक्षणलब्धवर्णा ज्ञः प्राप्तरूपकृतिकृष्ट्यभिरूपधीराः ।
मेधाविकोविदविशारदसूरिदोषज्ञाः प्राज्ञपण्डितमनीषिबुधप्रबुद्धाः ॥ ५ ॥
व्यक्तो विपश्चित्सङ्ख्यावान् सन्—

---

१. 'मनुष्य'के १३ नाम हैं—मर्त्यः, पञ्चजनः, भूस्पृक् (–स्पृश्), पुरुषः, पूरुषः, नरः, मनुष्य, मानुषः, ना (=नृ), विट् (–श्), मनुजः, मानवः, पुमान् (= पुंस्) ॥

२. 'बालक, बच्चे'के १२ नाम हैं—बालः (+बालकः); पाकः, शिशुः, डिम्भः, पोतः, शावः, स्तनन्धयः (यौ०—स्तनपः), पृथुकः, अर्भः (+अर्भकः), उत्तानशयः, क्षीरकण्ठः (यौ०—क्षीरपः), कुमारकः (+कुमारः) ॥

३. 'बचपन'के ३ नाम हैं—शिशुत्वम्, शैशवम्, बाल्यम् ॥

४. 'युवक, नौजवान'के ३ नाम हैं—वयःस्थः, तरुणः, युवा (– वन्) ॥

५. 'जवानी'के २ नाम हैं—तारुण्यम्, यौवनम् (पु न ।+यौवनिका) ॥

६. 'बूढ़े'के ८ नाम हैं—वृद्धः, प्रवयाः (– यस्), स्थविरः, जरन् (– रत्), जरी (– रिन्), जीर्णः, यातयामः, जीनः ॥

७. 'बुढापा'के २ नाम हैं—विस्रसा, जरा ॥

८. 'अधिक बुढापा'के २ नाम हैं—वार्द्धकम्, स्थाविरम् ॥

९. 'बहुत बड़ा या बूढा'के ३ नाम हैं —ज्यायान्, वर्षीयान् (२–यस्), दशमी (– मिन्) ॥

१०. 'विद्वान्'के २५ नाम हैं—विद्वान् (– द्वस्), सुधीः, कविः, विचक्षणः, लब्धवर्णः, ज्ञः, प्राप्तरूपः, कृती (– तिन्), कृष्टिः, अभिरूपः, धीरः, मेधावी (–विन्), कोविदः, विशारदः, सूरिः, दोषज्ञः, प्राज्ञः, पण्डितः, मनीषी, (– षिन् । यौ०—धीमान्, मतिमान्, बुद्धिमान्, ३—मत्,·········), बुधः, प्रबुद्धः, व्यक्तः, विपश्चित्, संख्यावान् (– वत्), सन् (– त्) ॥

—[1]प्रवीणे तु शिक्षितः ।
निष्णातो निपुणो दक्षः कर्महस्तमुखाः कृतात् ॥ ६ ॥
कुशलश्चतुरोऽभिज्ञविज्ञवैज्ञानिकाः पटुः ।
[2]छेको विदग्धे [3]प्रौढस्तु प्रगल्भः प्रतिभान्वितः ॥ ७ ॥
[4]कुशाग्रीयमतिः सूक्ष्मदर्शी [5]तत्कालधीः पुनः ।
प्रत्युत्पन्नमतिर्[6]दूराद्यः पश्येद्दीर्घदर्श्यसौ ॥ ८ ॥
[7]हृदयालुः सहृदयश्चिद्रूपोऽप्यन्थ संस्कृते ।
व्युत्पन्नप्रहतक्षुण्णा [9]अन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ९ ॥
[10]वागीशो वाक्पतौ [11]वाग्मी वाचोयुक्तिपटुः प्रवाक् ।
समुखो वावदूको[12]ऽथ वदो वक्ता वदावदः ॥ १० ॥

---

१. 'प्रवीण (उत्तम विद्वान्, चतुर)'के १४ नाम हैं—प्रवीणः, शिक्षितः, निष्णातः, निपुणः, दक्षः, कृतकर्मा (-र्मन् । यौ०— कृतकृत्यः, कृतार्थः, कृती -तिन्), कृतहस्तः, कृतमुखः, कुशलः, चतुरः, अभिज्ञः, विज्ञः, वैज्ञानिकः, पटुः ॥

शेषश्चात्र—अथ प्रवीणे क्षेत्रज्ञो नदीष्णो निष्ण इत्यपि ।

२. 'हुशियार'के २ नाम हैं—छेकः, विदग्धः ॥

शेषश्चात्र—छेकालश्छेकिलौ छेके ।

३. 'प्रतिभाशाली'के ३ नाम हैं—प्रौढः, प्रगल्भः, प्रतिभान्वितः ॥

४. तीक्ष्णबुद्धि'के २ नाम हैं—कुशाग्रीयमतिः, सूक्ष्मदर्शी (-र्शिन्) ॥

५. 'प्रत्युत्पन्नमति (तत्काल सोचनेवाला, हाजिरजबाब)'के २ नाम हैं—तत्कालधीः, प्रत्युत्पन्नमतिः ॥

६. दूरदर्शी'का १ नाम है—दीर्घदशी (-र्शिन् । + दूरदर्शी - र्शिन्) ॥

७. 'सहृदय (कोमल हृदयवाला)'के ३ नाम हैं—हृदयालुः, सहृदयः, चिद्रूपः ॥

८. 'व्युत्पन्न (शास्त्रादिके संस्कारसे युक्त)'के ४ नाम हैं—संस्कृतः, व्युत्पन्नः, प्रहतः, क्षुण्णः ॥

९. 'शास्त्रज्ञाता (शास्त्रको जानता हुआ भी उसे नहीं कह सकनेवाले)के' २ नाम हैं—अन्तर्वाणिः, शास्त्रवित् (-द्) ॥

१०. 'वागीश'के २ नाम हैं—वागीशः, वाक्पतिः ॥

११. 'युक्तिसंगत अधिक बोलनेवाले'के ५ नाम हैं—वाग्मी (-ग्मिन्), वाचोयुक्तिपटुः, प्रवाक् (-च्), समुखः, वावदूकः ॥

१२. 'वक्ता (बोलनेवाले)'के ३ नाम हैं—वदः, वक्ता (क्तृ), वदावदः ॥

१स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ।
२यद्वदोऽनुत्तरे ३दुर्वाक् कद्वदे स्या४दथाधरः ॥ ११ ॥
हीनवादि५न्येडमूकानेडमूकौ त्ववाक्श्रुतौ ।
६रवणः शब्दनस्तुल्यौ ७कुवादकुचरौ समौ ॥ १२ ॥
८लोहलोऽस्फुटवाङ् ९मूकोऽवाग१०सौम्यस्वरोऽस्वरः ।
११वेदिता विदुरो विन्दु१२र्वन्दारुस्त्वभिवादकः ॥ १३ ॥
१३आशंसुराशंसितरि १४कट्वरस्त्वतिकुत्सितः ।
१५निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्याद्—

---

१. 'वाचाल (सारहीन बहुत बोलनेवाले)'के ४ नाम हैं—जल्पाकः, वाचालः, वाचाटः, बहुगर्ह्यवाक् (– च्) ॥

२. 'उत्तर नहीं दे सकनेवाले, या चाहे जो कुछ भी बोलनेवाले'के २ नाम हैं—यद्वदः, अनुत्तरः ॥

३. 'दुर्वचन कहनेवाले'के २ नाम हैं—दुर्वाक् (–च्), कद्वदः ॥

४. 'तुच्छ (कम) बोलनेवाले'के २ नाम हैं—अधरः, हीनवादी (–दिन्) ॥

५. 'गूंगा, बहिरा'के ३ नाम हैं—एडमूकः, अनेडमूकः, अवाक्श्रुतिः ॥

६. 'कोलाहल करनेवाले'के २ नाम हैं—रवणः, शब्दनः ॥

७. 'बुरा बोलनेवाले, या कुटिल आशयवाले'के २ नाम हैं—कुवादः, कुचरः ॥

८. 'अस्पष्ट बोलनेवाले'के २ नाम हैं—लोहलः, अस्फुटवाक् (–वाच्) ॥

शेषश्चात्र—काहलोऽस्फुटभाषिणि ।

९. 'गूंगे'के २ नाम हैं—मूकः, अवाक् (–वाच्) ॥

शेषश्चात्र—मूके जडकडौ ।

१०. 'रूखा बोलनेवाले या असुन्दर स्वरवाले'के २ नाम हैं—असौम्यस्वरः, अस्वरः ॥

११. 'जानकार'के ३ नाम हैं—वेदिता (–तृ), विदुरः, विन्दुः ॥

१२. 'अभिवादनशील'के २ नाम हैं—वन्दारुः, अभिवादकः ॥

१३. 'आशांसा (अपने मनोरथकी पूर्ति)का इच्छुक'के २ नाम हैं—आशंसुः, आशंसिता (–तृ) ॥

१४. 'अत्यन्त निन्दित'के २ नाम हैं—कट्वरः, (+ कद्वदः), अतिकुत्सितः ॥

१५. 'निराकरण करनेवाले (टालनेवाले)'के २ नाम हैं—निराकरिष्णुः, क्षिप्नुः ॥

१—विकासी तु विकस्वरः ॥ १४ ॥
२दुर्मुखे मुखराबद्धमुखौ ३शक्लः प्रियंवदः ।
४दानशीलः स वदान्यो वदन्योऽप्यथ५ बालिशः ॥ १५ ॥
मूढो मन्दो यथाजातो बालो मातृमुखो जडः ।
मूर्खोऽमेधोविवर्णाज्ञा वैधेयो मातृशासितः ॥ १६ ॥
देवानाम्प्रियजाल्मौ च ६दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।
७मन्दः क्रियासु कुण्ठः स्यात् ८क्रियावान् कर्मसूद्यतः ॥ १७ ॥
९कर्मक्षमाऽलङ्कर्मीणः १०कर्मशूरस्तु कर्मठः ।
११कर्मशीलः कार्म १२आयःशूलिकस्तीक्ष्णकर्मकृत् ॥ १८ ॥
१३सिंहसंहननः स्वङ्गः १४स्वतन्त्रो निरवग्रहः ।
यथाकामी स्वरुचिश्च स्वच्छन्दः स्वैर्यपावृतः ॥ १९ ॥

---

१. 'विकासशील (विकसित होनेवाले, या उन्नति करनेवाले)'के २ नाम हैं—विकासी (-सिन्), विकस्वरः ॥

२. 'मुखर (बेलगाम बोलनेवाले, दुर्वचन कहनेवाले)'के ३ नाम हैं—दुर्मुखः, मुखरः, अबद्धमुखः ॥

३. 'प्रिय बोलनेवाले'के २ नाम हैं—शक्लः, प्रियंवदः ॥

४. 'प्रिय वचन बोलकर दान देनेवाले'के २ नाम हैं—वदान्यः, वदन्यः ॥

५. 'मूढ'के १५ नाम हैं—बालिशः, मूढः, मन्दः, यथाजातः, (+यथोद्गतः), बालः, मातृमुखः, जडः, मूर्खः, अमेधाः (-धस्), विवर्णः, अज्ञः, वैधेयः मातृशासितः, देवानांप्रियः, जाल्मः ॥

शेषश्चात्र—मूर्खे त्वनेडो नामवर्जितः ॥

६. 'विलम्बसे काम करनेवाले'के २ नाम हैं—दीर्घसूत्रः, चिरक्रियः ॥

७. 'काममें कुण्ठित (काम नहीं कर सकनेवाले)'का १ नाम है—मन्दः ॥

८. 'काममें तत्पर रहनेवाले'का १ नाम है—क्रियावान् (-वत्) ॥

९. 'काममें समर्थ'के २ नाम है—कर्मक्षमः, अलङ्कर्मीणः ॥

१०. 'कर्मठ (उद्योगी)'के २ नाम हैं—कर्मशूरः, कर्मठः ॥

११. 'कर्मशील (स्वभावसे सदा काम करनेवाले)'के २ नाम हैं—कर्मशीलः, कार्मः ।

१२. 'सरल उपायसे साध्य कामको तीक्ष्ण उपायसे सिद्ध करनेवाले'के २ नाम हैं—आयःशूलिकः, तीक्ष्णकर्मकृत् ॥

१३. 'सिंहतुल्य शरीरवाले'के २ नाम हैं—सिंहसंहननः, स्वङ्गः ॥

१४. 'स्वतन्त्र'के ७ नाम हैं—स्वतन्त्रः, निरवग्रहः, यथाकामी (-मिन्), स्वरुचिः, स्वच्छन्दः, स्वैरी (-रिन्), अपावृतः ॥

१यदृच्छा स्वैरिता स्वेच्छा २नाथवान् निघ्नगृह्यकौ ।
तन्त्रायत्तवशाधीनच्छन्दवन्तः परात् परे ॥ २० ॥
३लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्लील ४इभ्य आढ्यो धनीश्वरः ।
ऋद्धे ५विभूतिः सम्पत्तिर्लक्ष्मीः श्रीऋद्धिसम्पदः ॥ २१ ॥
६दरिद्रो दुर्विधो दुःस्थो दुर्गतो निःस्वकीकटौ ।
अकिञ्चनो७ऽधिपस्त्वीशो नेता परिवृढोऽधिभूः ॥ २२ ॥
पतीन्द्रस्वामिनाथार्याः प्रभुर्भर्तेश्वरो विभुः ।
ईशितेनो नायकश्च ८नियोज्यः परिचारकः ॥ २३ ॥
डिङ्गरः किङ्करो भृत्यश्चेटो गोप्यः पराचितः ।
दासः प्रेष्यः परिस्कन्दो भुजिष्यपरिकर्मिणौ ॥ २४ ॥
परान्नः परपिण्डादः परजातः परैधितः ।

---

१. 'स्वेच्छा'के ३ नाम हैं—यदृच्छा, स्वैरिता, स्वेच्छा ॥

२. 'पराधीन'के ९ नाम हैं—नाथवान् (-वत्), निघ्नः, गृह्यकः, परतन्त्रः, परायत्तः, परवशः, पराधीनः, परच्छन्दः, परवान् ॥

शेषश्चात्र—परतन्त्रे वशायत्तावधीनोऽपि ।

३. 'श्रीमान्'के ३ नाम हैं—लक्ष्मीवान् (-वत्), लक्ष्मणः, श्लीलः (+श्रीमान् -मत्) ॥

४. 'धनी, ऐश्वर्यवान्'के ५ नाम हैं—इभ्यः, आढ्यः, धनी (-निन् । +धनिकः), ईश्वर, ऋद्धः ॥

५. 'ऐश्वर्य, सम्पत्ति'के ६ नाम हैं—विभूतिः, संपत्तिः, लक्ष्मीः, श्रीः, ऋद्धिः, संपत् (-द् । +संपदा) ॥

६. 'दरिद्र, निर्धन'के ७ नाम हैं—दरिद्रः, दुर्विधः, दुःस्थः, दुर्गतः, निःस्वः, कीकटः, अकिञ्चनः (+निर्धनः) ॥

शेषश्चात्र—अथ दुर्गते । क्षुद्रो दीनश्च नीचश्च ।

७. 'स्वामी, मालिक'के १७ नाम हैं—अधिपः, ईशः, नेता (-तृ), परिवृढः, अधिभूः, पतिः, इन्द्रः, स्वामी (-मिन्), नाथः, अर्यः, प्रभुः, भर्ता (-तृ), ईश्वरः, विभुः, ईशिता (-तृ), इनः, नायकः ॥

८. 'भृत्य, नौकर'के १७ नाम हैं—नियोज्यः, परिचारकः (+प्रतिचरः), डिङ्गरः, किङ्करः, भृत्यः, चेटः, गोप्यः, पराचितः, दासः, प्रेष्यः, परिस्कन्दः, भुजिष्यः, परिकर्मी (-र्मिन्), परान्नः, परपिण्डादः, परजातः, परैधितः ।

विमर्श—इनमें पहलेवाले १३ नाम उक्तार्थक तथा अन्तवाले 'परान्नः' आदि ४ नाम 'भोजनके लिए पराश्रित रहनेवाले'के हैं, ऐसा भी किसी-किसी-का मत है ॥

१भृतके भृतिभुग्वैतनिकः कर्मकरोऽपि च ॥ २५ ॥
२स निर्भृतिः कर्मकारो ३भृतिः स्यान्निष्क्रयः पणः ।
कर्मण्या वेतनं मूल्यं निर्वेशो भरणं विधा ॥ २६ ॥
भर्मण्या भर्म भृत्या च ४भोगस्तु गणिकाभृतिः ।
५खलपूः स्याद्बहुकरो ६भारवाहस्तु भारिकः ॥ २७ ॥
७वार्तावहे वैवधिको ८भारे विवधवीवधौ ।
९काचः शिक्यं तदालम्बो १०भारयष्टिर्विहङ्गिका ॥ २८ ॥
११शूरश्चारभटो वीरो विक्रान्तश्चा१२थ कातरः ।
दरितश्चकितो भीतो भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २९ ॥
१३विहस्तव्याकुलौ व्यग्रे—

---

१. 'वेतनभोगी नौकर'के ४ नाम हैं—भृतकः, भृतिभुक् (-ज्), वैतनिकः, कर्मकरः ॥

२. 'अवैतनिक भृत्य'का १ नाम है—कर्मकारः ॥

३. 'वेतन, मजदूरी'के १२ नाम हैं—भृतिः, निष्क्रयः, पणः, कर्मण्या, वेतनम्, मूल्यम् , निर्वेशः, भरणम्, विधा, भर्मण्या, भर्म (-र्मन्), भृत्या ॥

४. 'वेश्याका वेतन (फीस, भाड़ा)'का १ नाम है—भोगः ॥

शेषश्चात्र—भाटिस्तु गणिकाभृतौ ॥

५. 'झाड़ू देनेवाले, या—बहुत अन्नोपार्जन करनेवाले'के २ नाम हैं—खलपूः, बहुकरः ॥

६. 'बोझ ढोनेवाले, कुली'के २ नाम हैं—भारवाहः, भारिकः ॥

७. 'अन्नादि ढोनेवाले'के २ नाम हैं—वार्तावहः, वैवधिकः (+विवधिकः, वीवधिकः) ॥

८. 'बोझ, बहँगीके बोझ'के २ नाम हैं—विवधः, वीवधः ॥

९. '(बहँगीके बांसमें लटकनेवाली (बोझकी आधारभूत), रस्सी या छींका (सिकहर)'के २ नाम हैं—काचः, शिक्यम् ॥

१०. 'बहँगी, या—बहँगी ढोते समय ऊपरी भागमें आधारार्थ लकड़ी लगाये हुए डंडे'का १ नाम है—विहङ्गिका ॥

११. 'शूर, वीर'के ४ नाम है—शूरः, चारभटः, वीरः, विक्रान्तः ॥

१२. 'कायर, डरपोंक'के ७ नाम हैं—कातरः, दरितः, चकितः, भीतः, भीरुः, भीरुकः, भीलुकः ॥

शेषश्चात्र—त्रस्नुत्रस्तौ तु चकिते ।

१३. 'व्याकुल, घबड़ाये हुए'के ३ नाम हैं—विहस्तः, व्याकुलः, व्यग्रः ॥

—१कान्दिशीको भयद्रुते ।
२उत्पिञ्जलसमुत्पिञ्जपिञ्जला भृशमाकुले ॥ ३० ॥
३महेच्छे तूद्भटोदारोदात्तोदीर्णमहाशयाः ।
महामना महात्मा च ४कृपणस्तु मितम्पचः ॥ ३१ ॥
कीनाशस्तद्धनः क्षुद्रकदर्यदृढमुष्टयः ।
किम्पचानो ५दयालुस्तु कृपालुः करुणापरः ॥ ३२ ॥
सूरतो६ऽथ दया शूकः कारुण्यं करुणा घृणा ।
कृपाऽनुकम्पाऽनुक्रोशो ७हिंस्रे शरारुघातुकौ ॥ ३३ ॥
८व्यापादनं विशरणं प्रमयः प्रमापणं निर्ग्रन्थनं प्रमथनं कदनं निबर्हणम् ।
निस्तर्हणं विशसनं क्षणनं परासनं प्रोज्जासनं प्रशमनं प्रतिघातनं वधः ।३४।
प्रवासनोद्वासनघातनिर्वासनानि संज्ञप्तिनिशुम्भहिंसाः ।
निर्वापणालम्भनिषूदनानि निर्यातनोन्मन्थसमापनानि ॥ ३५ ॥
अपासनं वर्जनमारपिञ्जा निष्कारणक्राथविशारणानि ।
९स्युः कर्तने कल्पनवर्धने च च्छेदश्च १०घातोद्यत आततायी ।।३६।।

---

१. 'भयसे भागे हुए'के २ नाम हैं—कान्दिशीकः, भयद्रुतः ॥

२. 'अधिक व्याकुल'के ३ नाम हैं—उत्पिञ्जलः, समुत्पिञ्जः पिञ्जलः ॥

३. 'उदार, उन्नत इच्छावाले'के ८ नाम हैं—महेच्छः, उद्भटः, उदारः, उदात्तः, उदीर्णः, महाशयः, महामनाः (-नस्), महात्मा (-त्मन्)॥

४. 'कृपण'के ८ नाम हैं—कृपणः, मितम्पचः, कीनाशः, तद्धनः, क्षुद्रः, कदर्यः, दृढमुष्टिः, किम्पचानः ॥

५. 'दयालु'के ४ नाम हैं—दयालुः, कृपालुः, करुणापरः, सूरतः ॥

६. 'दया, कृपा'के ८ नाम हैं—दया, शूकः (पु न), कारुण्यम्, करुणा, घृणा, कृपा, अनुकम्पा, अनुक्रोशः ॥

७. हिंस्र, हिंसक'के ३ नाम हैं—हिंस्रः, शरारुः, घातुकः ॥

८. 'मारने, वध करने'के ३६ नाम हैं—व्यापादनम्, विशरणम्, प्रमयः, (पु न), प्रमापणम्, निर्ग्रन्थनम्, प्रमथनम्, कदनम्, निबर्हणम्, निस्तर्हणम्, विशसनम्, क्षणनम्, परासनम्, प्रोज्जासनम्, प्रशमनम्, प्रतिघातनम्, वधः, प्रवासनम्, उद्वासनम्, घातः, निर्वासनम्, संज्ञप्तिः, निशुम्भः, हिंसा, निर्वापणम्, आलम्भः, निषूदनम्, निर्यातनम्, उन्मन्थः, समापनम्, अपासनम्, वर्जनम्, मारः, पिञ्जः, निष्कारणम्, क्राथः, विशारणम् ॥

९. 'काटने'के ४ नाम हैं—कर्तनम्, कल्पनम्, वर्धनम्, छेदः ॥

१०. 'आततायी (हत्या करनेके लिए तत्पर)'का १ नाम है—आततायी (-यिन्) ॥

१स शैर्षच्छेदिकः शीर्षच्छेद्यो यो वधमर्हति ।
२प्रमीत उपसम्पन्नः परेतप्रेतसंस्थिताः ॥ ३७ ॥
नामालेख्ययशःशेषौ व्यापन्नोपगतौ मृतः ।
परासु३स्तदहे दानं तदर्थमौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३८ ॥
४मृतस्नानमपस्नानं ५निवापः पितृतर्पणम् ।
६चितिचित्याचितास्तुल्या ७ऋजुस्तु प्राञ्जलोऽञ्जसः ॥ ३९ ॥
८दक्षिणे सरलोदारौ ९शठस्तु निकृतोऽनृजुः ।
१०क्रूरे नृशंसनिस्त्रिंशपापा ११धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४० ॥
व्यंसकः कुहको दाण्डाजिनिको मायिजालिकौ ।

विमर्श—स्मृतिकारोंने ६ प्रकारके 'आततायी' कहे हैं, यथा—१ आग लगानेवाला; २ विष खिलानेवाला, ३ हाथमें शस्त्र लिया हुआ, ४ धन चुरानेवाला, ५ खेत (खेतके धान्य, या—आर (खेतकी मेंड़ = सीमा) काटकर खेत चुरानेवाला और ६ स्त्रीको चुरानेवाला । याज्ञवल्क्य स्मृतिकारने तो—"वध करनेके लिए तलवार (या अन्य कोई घातक शस्त्र) उठाया हुआ, विषदेनेवाला, आग लगानेवाला, शाप देनेके लिए हाथ उठाया हुआ, आथर्वण विधिसे मारनेवाला, राजाके यहां चुगलखोरी करनेवाला, स्त्रीका त्याग करनेवाला, छिद्रान्वेषण करनेवाला, तथा ऐसे ही अन्यान्य कार्य करने वाले सबको आततायी जानना चाहिए" ऐसा कहा है । (या. स्मृ ३।३१) ॥

१. 'शिर काटने योग्य'के २ नाम हैं—शैर्षच्छेदिकः, शीर्षच्छेद्यः ॥

२. 'मरे हुए'के १२ नाम हैं—प्रमीतः, उपसम्पन्नः, परेतः प्रेतः, संस्थितः नामशेषः, आलेख्यशेषः, यशःशेषः, व्यापन्नः, उपगतः, मृतः, परासुः ॥

३. 'मरे हुए व्यक्तिके उद्देश्यसे उसके मृत्युके दिन किये गये पिण्ड-दान, आदि कार्य'का १ नाम है—और्ध्वदेहिकम् (+ऊर्ध्वदेहिकम्, और्ध्वदैहिकम्) ॥

४. 'मरनेके बाद स्नान करने'के २ नाम हैं—मृतस्नानम्, अपस्नानम् ॥

५. 'पितरोंके तर्पण करने'के २ नाम हैं—निवापः, पितृतर्पणम् ॥

६. 'चिता'के ३ नाम हैं—चितिः, चित्या, चिता ॥

७. 'सूधा'के ३ नाम हैं—ऋजुः, प्राञ्जलः, अञ्जसः ॥

८. 'उदार'के ३ नाम हैं—दक्षिणः, सरलः, उदारः ॥

९. 'टेढा, शठ'के ३ नाम हैं—शठः (+शण्ठः), निकृतः, अनृजुः ॥

१०. 'क्रूर'के ४ नाम हैं—क्रूरः, नृशंसः, निस्त्रिंशः, पापः ॥

११. 'धूर्त, ठग'के ७ नाम हैं—धूर्तः, वञ्चकः, व्यंसकः, कुहकः, दाण्डाजिनिकः, मायी (-यिन् । +मायावी-विन्, मायिकः), जालिकः ॥

१माया तु शठता शाठ्यं कुसृतिर्निकृतिश्च सा ॥ ४१ ॥
२कपटं कैतवं दम्भः कूटं छद्मोपधिश्छलम् ।
व्यपदेशो मिषं लक्षं निभं व्याजो३ऽथ कुक्कुटिः ॥ ४२ ॥
कुहना दम्भचर्या च ४वञ्चनन्तु प्रतारणम् ।
व्यलीकमतिसन्धानं ५साधौ सभ्यार्यसज्जनाः ॥ ४३ ॥
६दोषैकदृक् पुरोभागी ७कर्णेजपस्तु दुर्जनः ।
पिशुनः सूचको नीचो द्विजिह्वो मत्सरी खलः ॥ ४४ ॥
८व्यसनार्तस्तूपरक्त९श्चौरस्तु प्रतिरोधकः ।
दस्युः पाटच्चरः स्तेनस्तस्करः पारिपन्थिकः ॥ ४५ ॥
परिमोषिपरास्कन्दैकागारिकमलिम्लुचाः ।
१०यः पश्यतो हरेदर्थं स चौरः पश्यतोहरः ॥ ४६ ॥

---

१. 'माया'के ५ नाम हैं—माया, शठता, शाठ्यम्, कुसृतिः, निकृतिः ॥

२. 'कपट, छल'के १२ नाम हैं—कपटः (पु न), कैतवम्, दम्भः, गूढम् (पु न), छद्म (-द्मन्), उपधिः (+उपधा), छलम्, व्यपदेशः, मिषम्, लक्ष्म् (पु न), निभम्, व्याजः ॥

३. 'दम्भसे व्यवहार करने'के ३ नाम हैं—कुक्कुटिः, कुहना, दम्भचर्या ॥

४. 'ठगने'के ४ नाम हैं—वञ्चनम्, प्रतारणम्, व्यलीकम्, अतिसन्धानम् ॥

५. 'सज्जन'के ४ नाम हैं—साधुः, सभ्यः, आर्यः, सज्जनः ॥

६. 'केवल दूसरेके दोष देखनेवाले'के २ नाम हैं—दोषैकदृक् (-श्), पुरोभागी (-गिन्) ॥

७. 'चुगलखोर'के ८ नाम हैं—कर्णेजपः, दुर्जनः, पिशुनः, सूचकः, नीचः, द्विजिह्वः, मत्सरी (-रिन्), खलः (पु न । + त्रि) ॥

शेषश्चात्र—अथ क्षुद्रः खलौ खले ।

८. 'व्यसनमें आसक्त'के २ नाम हैं—व्यसनार्तः, उपरक्तः ॥

९. 'चोर'के ११ नाम हैं—चोरः (+ चौरः), प्रतिरोधकः, दस्युः, पाटच्चरः (+पटच्चोरः), स्तेनः (पु न), तस्करः, पारिपन्थिकः, परिमोषी (-षिन्), परास्कन्दी (+न्दिन्), ऐकागारिकः, मलिम्लुचः ॥

शेषश्चात्र—चोरे तु चोरडो रात्रिचरः ।

१०. 'देखते रहनेपर (सामनेसे धोखा देकर) चोरी करनेवाले'का १ नाम है—पश्यतोहरः ॥

१चौर्यं तु चौरिका २स्तेयं लोप्त्रं त्वपहृतं धनम् ।
३यद्भविष्यो दैवपरो४ऽथालस्यः शीतकोऽलसः ॥ ४७ ॥
मन्दस्तुन्दपरिमृजोऽनुष्णो ५दक्षस्तु पेशलः ।
पटूष्णोष्णकसूत्थानचतुराश्चा६थ तत्परः ॥ ४८ ॥
आसक्तः प्रवणः प्रह्वः प्रसितश्च परायणः ।
७दातोदारः ८स्थूललक्षदानशौण्डौ बहुप्रदे ॥ ४९ ॥
९दानमुत्सर्जनं त्यागः प्रदेशनविसर्जने ।
विहायितं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ ५० ॥
विश्राणनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।
१०अर्थव्ययज्ञः सुकलो ११याचकस्तु वनीपकः ॥ ५१ ॥
मार्गणोऽर्थी याचनकस्तर्कुको१२ऽथार्थनैषणा ।
अर्दना प्रणयो याच्ञा याचनाऽध्येषणा सनिः ॥ ५२ ॥

---

१. 'चोरी'के ३ नाम हैं—चौर्यम्, चोरिका (स्त्री न), स्तेयम् (+स्तैन्यम्) ॥
२. 'चुराये हुए धन'का १ नाम है—लोप्त्रम् ॥

३. 'भाग्यवादी (भाग्यपर निर्भर रहनेवाले)'के २ नाम हैं—यद्भविष्यः, दैवपरः ॥

४. 'आलसी'के ६ नाम हैं—आलस्यः, शीतकः, अलसः, मन्दः, तुन्दपरिमृजः, अनुष्णः ॥

५. 'चतुर'के ७ नाम हैं—दक्षः, पेशलः, पटुः, उष्णः उष्णकः, सूत्थानः, चतुरः ॥

६. 'तत्पर (लगे हुए, आसक्त)'के ६ नाम हैं—तत्परः, आसक्तः, प्रवणः, प्रह्वः, प्रसितः, परायणः ॥

७. 'दाता, देनेवाले'के २ नाम हैं—दाता (–तृ), उदारः ॥

८. 'बहुत दान देनेवाले'के ३ नाम हैं—स्थूललक्षः, दानशौण्डः, बहुप्रदः ॥

९. 'दान'के १३ नाम हैं—दानम्, उत्सर्जनम्, त्यागः, प्रदेशनम्, (+प्रादेशनम्), विसर्जनम्, विहायितम्, वितरणम्, स्पर्शनम्, प्रतिपादनम्, विश्राणनम्, निर्वपणम् (+निर्वापणम्), अपवर्जनम्, अंहतिः (स्त्री) ॥

१०. 'अर्थव्ययका ज्ञाता (धनका दान या उपभोग किस प्रकार करना चाहिए, इसे जाननेवाले)'के २ नाम हैं—अर्थव्ययज्ञः, सुकलः ॥

११. 'याचक'के ६ नाम हैं—याचकः, वनीपकः, मार्गणः, अर्थी (–र्थिन्), याचनकः, तर्कुकः ॥

१२. 'याचना (मांगने)'के ८ नाम हैं—अर्थना, एषणा, अर्दना, प्रणयः, याच्ञा, याचना, अध्येषणा, सनिः ॥

१उत्पतिष्णुस्तूत्पतिता२ऽलङ्करिष्णुस्तु मण्डनः ।
३भविष्णुर्भविता भूष्णुः ४समौ वर्तिष्णुवर्तनौ ॥ ५३ ॥
५विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी च विसारिणि ।
६लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुः ७सहिष्णुः क्षमिता क्षमी ॥ ५४ ॥
तितिक्षुः सहनः क्षन्ता ८तितिक्षा सहनं क्षमा ।
९ईर्ष्यालुः कुहनो१०ऽक्षान्तिरीर्ष्या ११क्रोधी तु रोषणः ॥ ५५ ॥
अमर्षणः क्रोधनश्च १२चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः ।
१३बुभुक्षितः स्यात् क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ॥ ५६ ॥
१४बुभुक्षायामशनाया जिघत्सा रोचको रुचिः ।

शेषश्चात्र—याच्ञा तु भिक्षणा । अभिषस्तिर्मार्गणा च ।

१. 'ऊपर जानेवाले'के २ नाम हैं—उत्पतिष्णुः, उत्पतिता (– तितृ) ॥

२. 'अलङ्कृत करनेवाले'के २ नाम हैं—अङ्करिष्णुः, मण्डनः ॥

३. 'भविष्णु (होनहार)'के ३ नाम हैं—भविष्णुः, भविता (– तृ), भूष्णुः ॥

४. 'रहनेवाले'के २ नाम हैं—वर्तिष्णुः, वर्तनः ॥

५. 'प्रसरणशील (फैलनेवाले)'के ४ नाम हैं—विसृत्वरः, विसृमरः, प्रसारी, विसारी (२ – रिन्) ॥

६. 'लजानेवाले'के २ नाम हैं—लज्जाशीलः, अपत्रपिष्णुः ॥

७. 'सहनशील'के ६ नाम हैं—सहिष्णुः, क्षमिता (– तृ), क्षमी (– मिन), तितिक्षुः, सहनः, क्षन्ता (– न्तृ) ॥

८. 'क्षमा, सहन करने'के ३ नाम हैं—तितिक्षा, सहनम्, क्षमा (+क्षान्तिः) ॥

९. 'ईर्ष्या करनेवाले'के २ नाम हैं—ईर्ष्यालुः, कुहनः ॥

१०. 'ईर्ष्या' (स्त्री आदिको दूसरेके देखने या—दूसरेकी उन्नतिको नहीं सहने)के २ नाम हैं—अक्षान्तिः, ईर्ष्या ॥

११. 'क्रोधी'के ४ नाम हैं—क्रोधी (–धिन्), रोषणः, अमर्षणः, क्रोधनः (+कोपनः) ॥

१२. 'अत्यधिक क्रोध करनेवाले'के २ नाम हैं—चण्डः, अत्यन्तकोपनः ॥

१३. 'भूखे'के ४ नाम हैं—बुभुक्षितः, क्षुधितः, जिघत्सुः, अशनायितः ॥

१४. 'भूख'के ५ नाम हैं—बुभुक्षा, अशनाया, जिघत्सा, रोचकः (पु न), रुचिः (स्त्री) ॥

विमर्श—'बुभुक्षा' आदि ३ नाम 'भूख'के तथा 'रुचकः, रुचिः, ये २ नाम 'रुचि (रुचने)के हैं, यह भी किसी-किसीका मत है ॥

१पिपासुस्तृषितस्तृष्णक् २तृष्णा तर्षोऽपलासिका ॥ ५७ ॥
पिपासा तृट् तृषोदन्या धीतिः पाने३ऽथ शोषणम् ।
रसादानं ४भक्षकस्तु घस्मरोऽद्मर आशितः ॥ ५८ ॥
५भक्तमन्नं कूरमन्धो भिस्सा दीदिविरोदनः ।
अशनं जीवनकञ्च याजो वाजः प्रसादनम् ॥ ५९ ॥
६भिस्सटा दग्धिका ७सर्वरसाग्रं मण्ड८मत्र तु ।
दधिजे मस्तु ९भक्तोत्थे निःस्रावाचाममासराः ॥ ६० ॥
१०आणा विलेपी तरला यवागूरुष्णिकाऽपि च ।
११सूपः स्यात्प्रहितं सूदः १२व्यञ्जनन्तु घृतादिकम् ॥ ६१ ॥
१३तुल्यौ तिलान्ने कृसरत्रिसरा१४वथ पिष्टकः ।

शेषश्चात्र—बुभुक्षायां क्षुधाक्षुधौ ।

१. 'प्यासे हुए'के ३ नाम हैं—पिपासुः (+पिपासितः), तृषितः (+तर्षितः), तृष्णक् (-ज्) ॥

२. 'प्यास'के ९ नाम हैं—तृष्णा, तर्षः, अपलासिका, पिपासा, तृट् (-ष्), तृषा, उदन्या, धीतिः, पानम् ॥

३. 'सूखने'के २ नाम हैं—शोषणम्, रसादानम् ॥

४. 'खानेवाले'के ४ नाम हैं—भक्षकः, घस्मरः, अद्मरः, आशितः (+आशिरः) ॥

५. 'भात'के १२ नाम हैं—भक्तम्, अन्नम्, कूरम् (पु न), अन्धः (-न्धस्), भिस्सा, दीदिविः (पु । +स्त्री), ओदनः, अशनम् (२ पु न), जीवनकम्, याजः, वाजः, प्रसादनम् ॥

६. 'जले हुए भात आदि'के २ नाम हैं—भिस्सटा, दग्धिका ॥

७. 'मांड़'का १ नाम है—मण्डम् (पु न) ॥

८. 'दहीके मांड (पानी)'का १ नाम है—मस्तु (पु न) ॥

९. 'भातके माँड़'के ३ नाम हैं—निःस्रावः, आचामः, मासरः ॥

१०. 'लपसी'के ५ नाम हैं—आणा, विलेपी (+विलेप्या), तरला (स्त्री न), यवागूः (स्त्री), उष्णिका ॥

११. 'दाल, कढ़ी आदि'के ३ नाम हैं—सूपः (पु । + पु न), प्रहितम्, सूदः ॥

१२. 'घृत आदि रस-विशेष'का १ नाम है—व्यञ्जनम् ॥

१३. 'तिल-मिश्रित अन्न, खिचड़ी'के २ नाम हैं—कृसरः, त्रिसरः (२ पु स्त्री । त्रि) ॥

१४. 'पूआ'के ३ नाम हैं—पिष्टकः (पु न), पूपः, अपूपः ॥

पूपोऽपूपः १पूलिका तु पोलिकापोलिपूपिकाः ॥ ६२ ॥
पूपल्य२थेषत्पक्वे स्युरभ्यूषाभ्योषपौलयः ।
३निष्ठानन्तु तेमनं स्यात् ४करम्भो दधिसक्तवः ॥ ६३ ॥
५घृतपूरो घृतवरः पिष्टपूरश्च घार्तिकः ।
६चमसी पिष्टवर्ती स्याद् व७टकस्त्ववसेकिमः ॥ ६४ ॥
८भृष्टा यवाः पुनर्धाना ९धानाचूर्णन्तु सक्तवः ।
१०पृथुकश्चिपटस्तुल्यौ ११लाजाः स्युः पुनरक्षताः ॥ ६५ ॥

शेषश्चात्र—अपूपे परिशोलः ।

१. 'पूड़ी'के ५ नाम हैं—पूलिका, पोलिका, पोलिः, (+पोली), पूपिका, पूपली ॥

२. 'अधपकी पूड़ी या रोटी आदि'के ३ नाम हैं—अभ्यूषः, अभ्योषः पौलिः ॥

३. 'आर्द्र करनेवाले कढ़ी आदि भोज्य पदार्थ'के २ नाम हैं—**निष्ठानम्** (पु न), तेमनम् (+क्नोपनम्) ॥

४. 'दहीसे युक्त सत्तू'का १ नाम है—करम्भः ॥

शेषश्चात्र—अथ करम्बो दधिसक्तुषु ।

५. 'घेवर'के ४ नाम हैं—घृतपूरः, घृतवरः, पिष्टपूरः, घार्तिकः ॥

६. 'सेव'के २ नाम हैं—चमसी (+चमसः), पिष्टवर्तिः ॥

७. 'बड़ा, दहीबड़ा'के २ नाम हैं—वटकः (पु न), अवसेकिमः ॥

शेषश्चात्र[1]—ईण्डेरिका तु वटिका शष्कुली त्वर्धलोटिका ।
पर्पटास्तु मर्मराला घृताण्डी तु घृतौषणी ॥
समिताखण्डाज्यकृतो मोदको लड्डुकश्च सः ।
एलामरीचादियुतः स पुनः सिंहकेसरः ॥

८. 'भूने हुए जौ (फरुही, बहुरी)'का १ नाम है—धानाः (नि० पु० ब० व०) ॥

९. 'सत्तू'का १ नाम है—सक्तवः (ए० व० भी होता है—सक्तुः) ॥

१०. 'चिउड़ा'के २ नाम हैं—पृथुकः, चिपिटः (+चिपिटकः) ॥

११. 'लावा, खोल'के २ नाम हैं—लाजाः (पु स्त्री, नि० ब० व०), अक्षताः (पु न नि० ब० व०) ॥

शेषश्चात्र—लाजेषु भरुजोद्‌धूषखटिकापरिवारिकाः ।

---

१. शेषोक्तानीमानि नामानि विभिन्नमोदकस्येति ज्ञेयम् ॥

¹गोधूमचूर्णे समिता ²यवक्षोदे तु चिक्कसः ।
³गुड इक्षुरसक्वाथः ⁴शर्करा तु सितोपला ॥ ६६ ॥
सिता च ⁵मधुधूलिस्तु खण्ड⁶स्तद्विकृती पुनः ।
मत्स्यण्डी फाणितञ्चापि ⁷रसालायान्तु मार्जिता ॥ ६७ ॥
शिखरिण्यथ ⁸यूर्यूषो रसो ⁹दुग्धन्तु सोमजम् ।
गोरसः क्षीरमूधस्नं स्तन्यं पुंसवनं पयः ॥ ६८ ॥
¹⁰पयस्यं घृतदध्यादि ¹¹पेयूषोऽभिनवं पयः ।
¹²उभे क्षीरस्य विकृती किलाटी कूर्चिकाऽपि च ॥ ६९ ॥

---

१. 'गेहूँके आटे'का १ नाम है—समिता ॥

२. 'जौके आटे'का १ नाम है—चिक्कसः (पु न) ॥

३. 'गुड़'का १ नाम है—गुडः ॥

४. 'शक्कर, चीनी'के ३ नाम हैं—शर्करा, सितोपला, सिता ॥

५. 'खाँड़'के २ नाम हैं—मधुधूलिः, खण्डः (पु न) ॥

६. 'राब'के २ नाम हैं—मत्स्यण्डी (+मत्स्याण्डिका, मत्स्यण्डिका), फाणितम् (पु न) ॥

७. 'सिखरन'के ३ नाम हैं—रसाला, मार्जिता (+मर्जिता), शिखरिणी ॥

८. 'जूस, यूष (मूंग, परवल आदिका रस)'के ३ नाम हैं—यूः (पु), यूषः (पु न), रसः ॥

९. 'दूध'के ८ नाम हैं—दुग्धम् , सोमजम् , गोरसः, क्षीरम् (पु न), ऊधस्यम् , स्तन्यम् , पुंसवनम् , पयः (—यस्) ॥

शेषश्चात्र—दुग्धे योग्यं बालसात्म्यं जीवनीयं रसोत्तमम् ।
सरं गव्यं मधुज्येष्ठं, धारोष्णं तु पयोऽमृतम् ॥

१०. 'दूध से बने हुए पदार्थ (घृत, (दही) मक्खन आदि)'का १ नाम है—पयस्यम् ॥

११. 'फेनुस (थोड़ी दिनकी व्यायी हुई गाय आदिके दूध)'का १ नाम है—पेयूषः +(पीयूषम्) ।

विमर्श—वैजयन्तीकारका मत है कि एक सप्ताहके भीतर व्यायी हुई गाय आदिके दूधको 'पेयूषम्' तथा उसके बादके दूधको 'मोरटम् ; मोरकम्' कहते हैं ॥

१२. 'खोवा, मावा'के २ नाम हैं—किलाटी (पु स्त्री), कूर्चिका (÷कूचिका) ॥

१पायसं परमान्नञ्च क्षैरेयी २क्षीरजं दधि ।
गोरसश्च ३तद्घनं द्रप्सं पत्रलमित्यपि ॥ ७० ॥
४घृतं हविष्यमाज्यं च हविराघारसर्पिषी ।
५ह्योगोदोहोद्भवं हैयङ्गवीनं ६शरजं पुनः ॥ ७१ ॥
दधिसारं तक्रसारं नवनीतं नवोद्धृतम् ।
७दण्डाहते कालशेयघोलारिष्टानि गोरसः ॥ ७२ ॥
रसायनमथा८र्द्धाम्बूदश्वि९च्छ्वेतं समोदकम् ।
१०तक्रं पुनः पादजलं ११मथितं वारिवर्जितम् ॥ ७३ ॥
१२सार्पिष्कं दाधिकं सर्पिर्दधिभ्यां संस्कृतं क्रमात् ।
१३लवणोदकाभ्यां दकलावणिक१४मुदश्वित ॥ ७४ ॥
औदश्वितमौदश्वित्कं—

---

१. 'खीर'के ३ नाम हैं—पायसम्, (पु न), परमान्नम् , क्षैरेयी ॥

२. 'दही'के ३ नाम हैं—क्षीरजम् , दधि (न), गोरसः ॥

शेषश्चात्र—दध्नि श्रीघनमङ्गल्ये ।

३. 'पतले दही'के २ नाम हैं—द्रप्सम् (+द्रप्स्यम्), पत्रलम् ॥

४. 'घी'के ६ नाम हैं—घृतम् (पु न), हविष्यम् , आज्यम् , हविः (—बिस् , न), आघारः, सर्पिः (—र्पिस्) ॥

५. 'एक दिनके बासी दूधके मक्खन'का १ नाम है—हैयङ्गवीनम् ॥

६. 'दहीसे निकाले हुए मक्खन'के ५ नाम हैं—शरजम् , दधिसारम् , तक्रसारम् , नवनीतम् , नवोद्धृतम् ॥

७. मट्ठा (मथनीसे मथे हुए दही)' के ६ नाम हैं—दण्डाहतम् , कालशेयम् , घोलम् , अरिष्टम् , गोरसः, रसायनम् ॥

८. 'दहीके आधा पानी मिलाये हुए मट्ठे'का १ नाम है—उदश्वित् ॥

९. 'बराबर पानी मिलाये हुए मट्ठे'का १ नाम है—श्वेतम् (+श्वेतरसम्) ॥

१०. 'दहीके चौथाई पानी मिलाये हुए मट्ठे'का १ नाम है—तक्रम् ॥

११. 'विना पानीके मथे हुए दही'का १ नाम है—मथितम् ॥

१२. 'घी तथा दहीसे तैयार किये गये पदार्थ'का क्रमशः १—१ नाम सार्पिष्कम् , दाधिकम् ॥

१३. 'नमक तथा पानीसे तैयार किये गये पदार्थ'का १ नाम है—दकलावणिकम् ॥

१४. 'उदश्वित् (आधे पानी मिलाये हुए मट्ठे) में तैयार किए गये पदार्थ'के २ नाम हैं—औदश्वितम् , औदश्वित्कम् ॥

—१लवणे स्यात्तु लावणम् ।
२पैठरोख्ये उखासिद्धे ३प्रयस्तन्तु सुसंस्कृतम् ॥ ७५ ॥
४पक्के राद्धञ्च सिद्धञ्च ५भृष्टं पक्वं विनाऽम्बुना ।
७भृष्टामिषं भटित्रं स्याद्भूतिर्भरूटकञ्च तत् ॥ ७६ ॥
८शूल्यं शूलाकृतं मांसं ९निष्काथो रसकः समौ ।
१०प्रणीतमुपसम्पन्नं ११स्निग्धे मसृणचिक्कणे ॥ ७७ ॥
पिच्छिलन्तु विजिविलं विज्जलं विजिलञ्च तत् ।
१२भावितन्तु वासितं स्यात् १३तुल्ये संम्मृष्टशोधिते ॥ ७८ ॥
१४काञ्चिकं काञ्जिकं धान्याम्लारनाले तुषोदकम् ।

---

१. 'नमकमें तैयार किये हुए पदार्थ'का १ नाम है—लावणम् ॥

२. 'बटलोही'में पकाये हुए (भात-दाल आदि) पदार्थ'के २ नाम हैं—पैठरम् , उख्यम् ॥

३. 'अच्छी तरह सिद्ध किये (पकाये) गये भोज्य पदार्थ'के २ नाम हैं—प्रयस्तम्, सुसंस्कृतम् ॥

४. 'पके हुए पदार्थ'के ३ नाम हैं—पक्वम्, राद्धम्, सिद्धम् ॥

५. 'भुने हुए (विना पानीके पकाये गये भुजना, होरहा आदि) पदार्थ'का १ नाम है—भृष्टम् ॥

६. 'अङ्गारोंपर भूने गये मांस'के ३ नाम हैं—भटित्रम्, भूतिः, भरूटकम् ॥

७. 'लोहेके छड़पर पकाये गये मांस'के २ नाम हैं—शूल्यम्, शूलाकृतम् ॥

८. 'मांसके झोल (रस)'के २ नाम हैं—निष्काथः, रसकः । (यह पीसे हुए मांसके तुल्य होता है) ॥

९. 'पकाने आदिसे तैयार किये गये पदार्थ'के २ नाम हैं—प्रणीतम्, उपसम्पन्नम् ॥

१०. 'चिकने पदार्थ'के ३ नाम हैं—स्निग्धः, मसृणम्, चिक्कणम् ॥

११. 'पिच्छिल (पीने योग्य कुछ गाढ़ा तथा पतला) पदार्थ'के ४ नाम हैं—पिच्छिलम्, विजिविलम् (+ विजिपिकम्) विज्जलम्, विजिलम् ॥

१२. 'दूसरे पदार्थसे मिश्रित पदार्थ, या—पुष्प—धूपादिसे सुगन्धित किये गये पदार्थ'के २ नाम हैं—भावितम्, वासितम् ॥

१३. 'चुन, फटककर साफ किये गये पदार्थ'के २ नाम हैं—संमृष्टम्, शोधितम् ॥

१४. 'काँजी'के १७ नाम हैं—काञ्चिकम्, काञ्जिकम्, धान्याम्लम्,

कुल्माषाभिषुतावन्तिसोमशुक्तानि कुञ्जलम् ॥ ७९ ॥
चुक्रं धातुघ्नमुन्नाहं रक्षोघ्नं कुण्डगोलकम् ।
महारसं सुवीराम्लं सौवीरं १म्रक्षणं पुनः ॥ ८० ॥
तैलं स्नेहोऽभ्यञ्जनञ्च २वेषवार उपस्करः ।
३स्यात्तिन्तिडीकन्तु चुक्रं वृक्षाम्लं चाम्लवेतसे ॥ ८१ ॥
४हरिद्रा काञ्चनी पीता निशाह्वया वरवर्णिनी ।
५क्षवः क्षुताभिजननो राजिका राजसर्षपः ॥ ८२ ॥
आसुरी कृष्णिका चासौ ६कुस्तुम्बुरु तु धान्यकम् ।
धन्या धन्याकं धान्याकं ७मरीचं कृष्णमूषणम् ॥ ८३ ॥
कोलकं वेल्लजं धार्मपत्तनं यवनप्रियम् ।
८शुण्ठी महौषधं विश्वा नागरं विश्वभेषजम् ॥ ८४ ॥

आरनालम्, तुषोदकम्, कुल्माषाभिषुतम् (+कुल्माषम्, अभिषुतम्), अवन्तिसोमम् , शुक्तम् , कुञ्जलम् , चुक्रम् (पु न), धातुघ्नम् , उन्नाहम् , रक्षोघ्नम्, कुण्डगोलकम् , महारसम् , सुवीराम्लम् , सौवीरम् ॥

शेषश्चात्र—कुल्माषाभिषुते पुनः । गृहाम्बु मधुरा च ।

१ 'तैल'के ४ नाम हैं—म्रक्षणम्, तैलम्, स्नेहः (२ पु न), अभ्यञ्जनम् ॥

२. 'मसाले (मेथी,जीरा धना, हल्दी आदि)'के २ नाम हैं—वेषवारः, उपस्करः ॥

३. 'अमचुर, या इमिली'के ४ नाम हैं—तिन्तिडीकम्, चुक्रम् (पु न), वृक्षाम्लम्, अम्लवेतसम् ॥

४. 'हल्दी'के ५ नाम हैं—हरिद्रा, काञ्चनी, पीता, निशाख्या ('रात्रि' के वाचक सभी पर्याय), वरवर्णिनी ॥

५. 'राई, सरसो'के ६ नाम हैं—क्षवः, क्षुताभिजननः, राजिका, राजसर्षपः, असुरी, कृष्णिका ॥

६. 'धनियां'के ५ नाम हैं—कुस्तुम्बुरु (पु न), धान्यकम्, धन्या, धन्याकम् , धान्याकम् ॥

शेषश्चात्र—अथ स्यात् कुस्तुम्बुरुरल्लुका ।

७. 'काली मिर्च'के ७ नाम हैं—मरिचम्, कृष्णम्, ऊषणम्, कोलकम्, वेल्लजम्, धार्मपत्तनम्, यवनप्रियम् ॥

शेषश्चात्र—मरिचे तु द्वारवृत्तं मरीचं वलितं तथा ।

८. 'सोंठ'के ५ नाम हैं—शुण्ठी, महौषधम्, विश्वा (स्त्री न), नागरम् , विश्वभेषजम् ॥

१वैदेही पिप्पली कृष्णोपकुल्या मागधी कणा ।
२तन्मूलं ग्रन्थिकं सर्वग्रन्थिकं चटकाशिरः ॥ ८५ ॥
३त्रिकटु त्र्यूषणं व्योष४मजाजी जीरकः कणा ।
५सहस्रवेधि वाह्लीकं जतुकं हिङ्गु रामठम् ॥ ८६ ॥
६न्यादः स्वदनं खादनमशनं निघसो वल्भनमभ्यवहारः ।
जग्धिर्जक्षणभक्षणलेहाः प्रत्यवसानं घसिराहारः ॥ ८७ ॥
प्सानाऽवष्वाणविष्वाणा भोजनं जेमनादने ।
७चर्वणं चूर्णनन्दन्तै८र्जिह्वाऽऽस्वादस्तु लेहनम् ॥ ८८ ॥
९कल्यवर्तः प्रातराशः १०सग्धिस्तु सहभोजनम् ।
११ग्रासो गुडेरकः पिण्डो गडोलः कवको गुडः ॥ ८९ ॥
गण्डोलः कवल—

---

१. 'पीपली'के ६ नाम वैदेही, पिप्पली, कृष्णा, उपकुल्या, मागधी, कणा ॥
शेषश्चात्र—पिप्पल्यामूषणा शौण्डी चपला तीक्ष्णतण्डुला ।
उषणा तण्डुलकला कोला च कृष्णतण्डुला ॥

२. 'पीपरामूल'के ३ नाम हैं—(+ पिप्पलीमूलम्), ग्रन्थिकम्, सर्वग्रन्थिकम्, चटकाशिरः (-रस्) ॥

३. 'त्रिकटु (पीपली, सोंठ तथा काली मिर्च—इन तीनोंके समुदाय)'के ३ नाम हैं—त्रिकटु (+ त्रिकटुकम्), त्र्यूषणम्, व्योषम् ॥

४. 'जीरा'के ३ नाम हैं—अजाजी, जीरकः (पु न), कणा ॥
शेषश्चात्र—जीरे जीरणजरणौ ।

५. 'हींग'के ५ नाम हैं—सहस्रवेधि, वाह्लीकम्, जतुकम्, हिङ्गु (पु न), रामठम् ॥
शेषश्चात्र—हिङ्गौ तु भूतनाशनम् । अगूढगन्धमत्युग्रम् ॥

६. 'भोजन करने, स्वाद लेने'के २० नाम हैं—न्यादः, स्वदनम्, खादनम्, अशनम्, निघसः, वल्भनम्, अभ्यवहारः, जग्धिः, जक्षणम्, भक्षणम्, लेहः, प्रत्यवसानम्, घसिः, आहारः, प्सानम्, अवष्वाणः, विष्वाणः, भोजनम्, जेमनम् (+ जवनम्), अदनम् ॥

७. 'दाँतसे चबाने'का १ नाम है—चर्वणम् ॥

८. 'चाटने'के २ नाम हैं—जिह्वास्वादः, लेहनम् ॥

९. 'कलेवा (जलपान, नास्ता)'के २ नाम हैं—कल्यवर्तः, प्रातराशः ॥

१०. 'एक साथ बैठकर भोजन करने'के २ नाम हैं—सग्धिः (स्त्री), सहभोजनम् ॥

११. 'ग्रास'के ८ नाम हैं—ग्रासः, गुडेरकः, पिण्डः (पु स्त्री), गडोलः, कवकः, गुडः, गण्डोलः, कवलः (पु न) ॥

—१स्तृप्ते त्वाघ्रातसुहिताऽऽशिताः ।
२तृप्तिः सौहित्यमाघ्राण३मथ भुक्तसमुज्झिते ॥ ९० ॥
फेला पिण्डोलिफेली च ४स्वोदरपूरके पुनः ।
कुक्षिम्भरिरात्मम्भरिरुदरम्भरि५रप्यथ ॥ ९१ ॥
आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते ।
६उदरपिशाचः सर्वान्नीनः सर्वान्नभक्षकः ॥ ९२ ॥
७शाष्कुलः पिशिताश्यु८न्मदिष्णुस्तून्मादसंयुतः ।
९गृध्नुस्तु गर्धनस्तृष्णक् लिप्सुर्लुब्धोऽभिलाषुकः ॥ ९३ ॥
लोलुपो लोलुभो १०लोभस्तृष्णा लिप्सा वशः स्पृहा ।
काङ्क्षाऽऽशंसागर्धवाञ्छाऽऽशेच्छेहातृण्मनोरथाः ॥ ९४ ॥
कामोऽभिलाषोऽ—

---

१. 'तृप्त (खाकर सन्तुष्ट, व्यक्ति)'के ४ नाम हैं—तृप्तः, आघ्रातः (+आघ्राणः), सुहितः, आशितः ॥

२. 'तृप्ति'के ३ नाम हैं—तृप्तिः, सौहित्यम्, आघ्राणम् ॥

३. 'जूठा'के ४ नाम हैं—भुक्तसमुज्झितम्, फेला, पिण्डोलिः, फेलिः (२ स्त्री) ॥

४. 'पेटू (अपना ही पेट भरनेवाले)'के ४ नाम हैं—स्वोदरपूरकः, कुक्षिम्भरिः, आत्मम्भरिः, उदरम्भरिः ॥

५. 'अत्यधिक भूखे'के २ नाम हैं—आद्यूनः, औदरिकः ॥

६. 'सब प्रकारके अन्न खानेवाले'के ३ नाम हैं—उदरपिशाचः, सर्वान्नीनः, सर्वान्नभक्षकः (+सर्वान्नभोजी -जिन्) ॥

७. 'मांसाहारी'के २ नाम हैं—शाष्कुलः (+शौष्कलः), पिशिताशी (-शिन् ।+मांसभक्षकः, मांसाहारी-रिन्) ॥

८. 'पागल'के २ नाम हैं—उन्मदिष्णुः, उन्मादसंयुतः (+उन्मादी -दिन्) ॥

९. 'लोभी'के ८ नाम हैं—गृध्नुः, गर्धनः, तृष्णक् (-ज्), लिप्सुः, लुब्धः, अभिलाषुकः, लोलुपः, लोलुभः ॥

विमर्श—कुछ लोगोंके मतसे प्रथम ६ नाम 'लोभी'के तथा अन्तवाले २ नाम 'अत्यधिक लोभी'के हैं ॥

शेषश्चात्र—लिप्सौ लालसलम्पटौ । लोलः ।

१०. 'लोभ'के १६ नाम हैं—लोभः, तृष्णा, लिप्सा, वशः, स्पृहा, काङ्क्षा, आशंसा, गर्धः, वाञ्छा, आशा, इच्छा, ईहा (+ईहः), तृट् (-ष्), मनोरथः (+मनोगवी), कामः (पु न), अभिलाषः ॥

—१अभिध्या तु परस्वेहो२रुद्धतः पुनः ।
अविनीतो ३विनीतस्तु निभृतः प्रश्रितोऽपि च ॥ ९५ ॥
४विधेये विनयस्थः स्या५दाश्रवो वचने स्थितः ।
६वश्यः प्रणेयो ७धृष्टस्तु वियातो धृष्णुधृष्णजौ ॥ ९६ ॥
८वीक्षापन्नो विलक्षो९ऽथाधृष्टे शालीनशारदौ ।
१०शुभंयुः शुभसंयुक्तः स्या११दहंयुरहंकृतः ॥ ९७ ॥
१२कामुकः कमिता कम्रोऽनुकः कामयिताऽभिकः ।
कामनः कमरोऽभीकः १३पञ्चभद्रस्तु विप्लुतः ॥ ९८ ॥
व्यसनी १४हर्षमाणस्तु प्रमना हृष्टमानसः ।
विकुर्वाणो १५विचेतास्तु दुरन्तर्विमनो मनाः ॥ ९९ ॥

शेषश्चात्र—लिप्सा तु धनाया । रुचिरीप्सा तु कामना ।

१. 'अनुचित रूपसे दूसरेके धनकी इच्छा करने'के २ नाम हैं—परस्वेहा, अभिध्या ॥

२. 'उद्धत'के २ नाम हैं—उद्धतः, अविनीतः ॥

३. विनीत'के ३ नाम हैं—विनीतः, निभृतः, प्रश्रितः ॥

४. विनयमें स्थित'के २ नाम हैं—विधेयः, विनयस्थः ॥

५. 'बात माननेवाले'के २ नाम हैं—आश्रवः, वचनेस्थितः ॥

६. 'वशीभूत'के २ नाम हैं—वश्यः, प्रणेयः ॥

विमर्श—किसी-किसीके मतसे 'विधेयः' आदि ६ नाम एकार्थक हैं ॥

७. 'ढीठ'के ४ नाम हैं—धृष्टः, वियातः, धृष्णुः, धृष्णक् (-ज् । +प्रगल्भः) ॥

८. 'विस्मययुक्त'के २ नाम हैं—वीक्षापन्नः, विलक्षः ॥

९. 'धृष्टताहीन'के ३ नाम हैं—अधृष्टः, शालीनः, शारदः ॥

१०. 'शुभयुक्त'के २ नाम हैं—शुभंयुः, शुभसंयुक्तः ॥

११. 'अहङ्कारी, घमण्डी'के २ नाम हैं—अहंयुः, अहङ्कृतः (+अहङ्कारी -रिन्) ॥

१२. 'कामी'के ९ नाम हैं—कामुकः, कमिता (-तृ), कम्रः, अनुकः, कामयिता (-तृ), अभिकः, कामनः (+कमनः), कमरः, अभीकः ॥

१३. (जूआ, परस्त्रीसंगम आदि) 'व्यसनमें आसक्त'के ३ नाम हैं—पञ्चभद्रः, विप्लुतः, व्यसनी (-निन्) ॥

१४. 'हर्षित, प्रसन्नचित्त'के ४ नाम हैं—हर्षमाणः, प्रमनाः (-नस्), हृष्टमानसः, विकुर्वाणः ॥

१५. 'विमनस्क (उदास, अन्यमनस्क)'के ४ नाम हैं—विचेताः (-तस्), दुर्मनाः, अन्तर्मनाः, विमनाः (३-नस्) ॥

१मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबा २उत्कस्तूत्सुक उन्मनाः ।
उत्कण्ठितो३ऽभिशस्ते तु वाच्यक्षारितदूषिताः ॥ १०० ॥
४गुणैः प्रतीते त्वाहतलक्षणः कृतलक्षणः ।
५निर्लक्षणस्तु पाण्डुरपृष्ठः ६संकसुकोऽस्थिरे ॥ १०१ ॥
७तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको ८विवशोऽनिष्टदुष्टधीः ।
९बद्धो निगडितो नद्धः कीलितो यन्त्रितः सितः ॥ १०२ ॥
सन्दानितः संयतश्च १०स्यादुद्दानन्तु बन्धनम् ।
११मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥ १०३ ॥
१२प्रतिक्षिप्तोऽधिक्षिप्तो१३ऽवकृष्टनिष्कासितौ समौ ।
१४आत्तगन्धोऽभिभूतो१५ऽपध्वस्ते न्यक्कृतधिक्कृतौ ॥ १०४ ॥

---

१. 'मतवाले'के ४ नाम हैं—मत्तः, शौण्डः, उत्कटः, क्षीबः ॥

२. 'उत्कण्ठित'के ४ नाम हैं—उत्कः, उत्सुकः, उन्मनाः (-नस्), उत्कण्ठितः ॥

३. 'निन्दित'के ४ नाम हैं—अभिशस्तः, वाच्यः, क्षारितः (+आक्षारितः), दूषितः । (किसी-किसीके मतमें 'मैथुनके विषयमें निन्दित'के ये नाम हैं) ॥

४. 'गुणोंसे प्रसिद्ध'के २ नाम हैं—आहतलक्षणः, कृतलक्षणः ॥

५. 'लक्षणहीन'के २ नाम हैं—निर्लक्षणः, पाण्डुरपृष्ठः ॥

६. 'अस्थिर'के २ नाम हैं—संकसुकः, अस्थिरः ॥

७. 'चुप रहनेवाले'के २ नाम हैं—तूष्णींशीलः, तूष्णीकः ॥

८. 'अनिष्ट तथा दुष्ट बुद्धिवाले'के २ नाम हैं—विवशः, अनिष्टदुष्टधीः ॥

९. 'बँधे हुए'के ८ नाम हैं—बद्धः, निगडितः, नद्धः, कीलितः, यन्त्रितः, सितः, संदानितः, संयतः ।

१०. 'बन्धन'के २ नाम हैं—उद्दानम्, बन्धनम् ॥

११. 'टूटे हुए मनवाले'के ४ नाम हैं—मनोहतः, प्रतिहतः, प्रतिबद्धः, हतः ॥

१२. 'प्रतिक्षिप्त'के २ नाम हैं—प्रतिक्षिप्तः, अधिक्षिप्तः ॥

१३. 'निष्कासित (घर आदिसे निकाले गये)'के २ नाम हैं—अवकृष्टः, निष्कासितः (+निःसारितः) ॥

१४. 'अभिभूत (नष्ट अभिमानवाले)'के २ नाम हैं—आत्तगन्धः, अभिभूतः ॥

१५. 'धिक्कारे गये'के ३ नाम हैं—अपध्वस्तः, न्यक्कृतः, धिक्कृतः । (किसी-किसीके मतसे 'आत्तगन्धः' आदि ५ नाम एकार्थक हैं) ॥

१निकृतस्तु विप्रकृतो २न्यक्कारस्तु तिरस्क्रिया ।
परिभावो विप्रकारः परापर्यभितो भवः ॥ १०५ ॥
अत्याकारो निकारश्च ३विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।
४स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुः५घूर्णिते प्रचलायितः ॥ १०६ ॥
६निद्राणः शयितः सुप्तो ७जागरूकस्तु जागरी ।
८जागर्या स्याज्जागरणं जागरा जागरोऽपि च ॥ १०७ ॥
९विष्वगञ्चति विष्वद्रयङ् १०देवद्रयङ् देवमञ्चति ।
११सहाञ्चति तु सध्रयङ् स्यात् १२तिर्यङ् पुनस्तिरोऽञ्चति ॥ १०८ ॥
१३संशयालुः संशयिता १४गृहयालुर्ग्रहीतरि ।
१५पतयालुः पातुकः स्यात् १६समौ रोचिष्णुरोचनौ ॥ १०९ ॥

---

१. 'तिरस्कृत'के २ नाम हैं—निकृतः, विप्रकृतः (+ तिरस्कृतः) ॥

२. 'तिरस्कार'के ९ नाम हैं—न्यक्कारः, तिरस्क्रिया (+तिरस्कारः), परिभावः, विप्रकारः, पराभवः, परिभवः, अभिभवः, अत्याकारः, निकारः ॥

३. 'ठगे गये'के २ नाम हैं—विप्रलब्धः, वञ्चितः ॥

४. 'सोनेवाले'के ३ नाम हैं—स्वप्नक् (-ज्), शयालुः, निद्रालुः ॥

५. 'नींदसे घूर्णित होते हुए'के २ नाम हैं—घूर्णितः, प्रचलायितः ॥

६. 'सोये हुए'के ३ नाम हैं—निद्राणः, शयितः, सुप्तः ॥

७. 'जागते हुए'के २ नाम हैं—जागरूकः (+जागरिता-तृ,), जागरी (-रिन्) ॥

८. 'जागने'के ४ नाम हैं—जागर्या, जागरणम्, जागरा, जागरः ॥

९. 'सब तरफ शोभनेवाले'का १ नाम है—विष्वद्रयङ् (द्रयञ्च् ।+ विश्वद्रयङ्—द्रयञ्च्) ॥

१०. 'देवोंकी पूजा करनेवाले'का १ नाम है—देवद्रयङ् (-द्रयञ्च्) ॥

११. 'साथ पूजन करने या रहनेवाले'का १ नाम है—सध्रयङ् (ध्रयञ्च्) ॥

१२. 'तिर्छे चलनेवाले'का १ नाम है—तिर्यङ् (-र्यञ्च्) ॥

१३. 'संशय करनेवाले'के २ नाम हैं—संशयालुः, संशयिता (-तृ । सांशयिकः) ॥

१४. 'ग्रहण करने (लेने)वाले'के २ नाम हैं—ग्रहयालुः, ग्रहीता (—तृ) ॥

१५. 'गिरनेवाले'के २ नाम हैं—पतयालुः, पातुकः ॥

१६. 'रुचने (शोभने) वाले'के २ नाम हैं—रोचिष्णुः, रोचनः ॥

१दक्षिणार्हस्तु दक्षिण्यो दक्षिणीयो२ऽथ दण्डितः ।
दापितः साधितो३ऽर्च्यस्तु प्रतीक्ष्यः ४पूजितेऽर्हितः ॥ ११० ॥
नमस्यितो नमसितापचितावञ्चितोऽर्चितः ।
५पूजाऽर्हणा सपर्याऽर्चा ६उपहारबली समौ ॥ १११ ॥
७विक्लवो विह्वलः ८स्थूलः पीवा पीनश्च पीवरः ।
९चक्षुष्यः सुभगो १०द्वेष्योऽक्षिगतो११ऽथांसलो बली ॥ ११२ ॥
निर्दिग्धो मांसलश्चोपचितो१२ऽथ दुर्बलः कृशः ।
क्षामः क्षीणस्तनुश्छातस्तलिनाऽमांसपेलवाः ॥ ११३ ॥
१३पिचिण्डिलो बृहत्कुक्षितुन्दिस्तुन्दिकतुन्दिलाः ।
उदर्युदरिल—

---

१. 'दक्षिणाके योग्य'के ३ नाम हैं—दक्षिणार्हः, दक्षिण्यः, दक्षिणीयः ॥

२. 'दण्डितः (दण्ड पाये हुए)'के ३ नाम हैं—दण्डितः, दापितः, (+दायितः), साधितः ॥

३. 'पूज्य'के २ नाम हैं—अर्च्यः, प्रतीक्ष्यः (+अर्चनीयः, पूज्यः, पूजनीयः,………) ॥

४. 'पूजित'के ७ नाम हैं—पूजितः, अर्हितः, नमस्यितः, नमसितः, अपचितः (+अपचायितः,), अञ्चितः, अर्चितः ॥

५. 'पूजा'के ४ नाम हैं—पूजा, अर्हणा, सपर्या, अर्चा ॥

शेषश्चात्र—पूजा त्वपचितिः ।

६. 'उपहार' (यथा—काकबलि, जीवबलि,……)के २ नाम हैं—उपहारः, बलिः, (पु स्त्री) ॥

७. 'विह्वल'के २ नाम हैं—विक्लवः, विह्वलः ॥

८. 'मोटे'के ४ नाम हैं—स्थूलः, पीवा (–वन्), पीनः, पीवरः ॥

९. 'सुन्दर, सुभग'के २ नाम हैं—चक्षुष्यः, सुभगः ॥

१०. 'द्वेषयोग्य (आँखमें गड़े हुए)'के २ नाम हैं—द्वेष्यः, अक्षिगतः ॥

११. 'बलवान्, मांसल'के ५ नाम हैं—अंसलः, बली (–लिन् ।+बलवान् –वत्), निर्दिग्धः, मांसलः, उपचितः ॥

१२. 'दुर्बल'के ९ नाम हैं—दुर्बलः, कृशः, क्षामः, क्षीणः, तनुः, छातः, तलिनः, अमांसः, पेलवः ॥

१३. 'बड़े तोंदवाले'के ७ नाम हैं—पिचिण्डिलः, बृहत्कुक्षिः, तुन्दी (–दिन्), तुन्दिकः, तुन्दिलः, उदरी (–रिन्), उदरिलः (+उदरिकः, तुन्दिभः) ॥

—१विखविखुविग्रा अनासिके ॥ ११४ ॥
२नतनासिकेऽवनाटोऽवटीटोऽवभ्रटोऽपि च ।
३खरणास्तु खरणसो ४नःक्षुद्रः क्षुद्रनासिकः ॥ ११५ ॥
५खुरणाः स्यात् खुरणसः ६उन्नसस्तूग्रनासिकः ।
७पङ्गुःश्रोणः ८खलतिस्तु खल्वाट ऐन्द्रलुप्तिकः ॥ ११६ ॥
शिपिविष्टो बभ्रु९रथ काणः कनन एकदृक् ।
१०पृश्निरल्पतनौ ११कुब्जे गडुलः १२कुकरे कुणिः ॥ ११७ ॥
१३निखर्वः खट्टनः खर्वः खर्वशाखश्च वामनः ।
१४अकर्ण एडो बधिरो १५दुश्चर्मा तु द्विनग्नकः ॥ ११८ ॥
वण्डश्च शिपिविष्टश्च—

---

१. 'नकटे'के ४ नाम हैं—विखः, विखुः, विग्रः, अनासिकः ॥

२. 'नकचिपटे (चिपटी नाकवाले)'के ४ नाम हैं—नतनासिकः, अवनाटः, अवटीटः, अवभ्रटः ॥

शेषश्चात्र—अथ चिपिटो नम्रनासिके ।

३. 'नुकीली नाकवाले'के २ नाम हैं—खरणाः (-णस्), खरणसः ॥

४. 'छोटी नाकवाले'के २ नाम हैं—नःक्षुद्रः, क्षुद्रनासिकः ॥

५. 'खुरके समान (बड़ी) नाकवाले'के २ नाम हैं—खुरणाः (-णस्), खुरणसः ॥

६. 'ऊँची नाकवाले'के २ नाम हैं—उन्नसः, उग्रनासिकः ॥

७. 'पँगुले'के २ नाम हैं—पङ्गुः, श्रोणः ॥

शेषश्चात्र—पङ्गुलस्तु पीठसर्पी ।

८. 'खल्वाट (जिसके मस्तकमध्यके बाल झड़कर गिर गये हों, उस'के ५ नाम हैं—खलतिः, खल्वाटः (+खलतः), ऐन्द्रलुप्तिकः शिपिविष्टः, बभ्रुः ॥

९. 'काना'के ३ नाम हैं—काणः, कननः, एकदृक् (-दृश् । +एकाक्षः) ॥

१०. 'नाटा, ठिंगना (छोटी कदवाले)'के २ नाम हैं—पृश्निः, अल्पतनुः ॥

शेषश्चात्र—किरातस्त्वल्पवर्ष्मणि ।

११. 'कूबड़ा'के २ नाम हैं—कुब्जः, (+न्युब्जः), गडुलः ॥

१२. 'लूला'के २ नाम हैं—कुकरः, कुणिः ।

१३. 'बौना'के ५ नाम हैं—निखर्वः, खट्टनः, खर्वः, खर्वशाखः, वामनः ॥

शेषश्चात्र—खर्वे ह्रस्वः ।

१४. 'बहरे'के २ नाम हैं—अकर्णः, एडः, बधिरः ॥

१५. 'खराब (रूखे) चमड़ेवाले या—नपुंसक'के ४ नाम हैं—दुश्चर्मा (-र्मन्), द्विनग्नकः, वण्डः, शिपिविष्टः ॥

—१खोडखोरौ तु खञ्जके ।
२विकलाङ्गस्तु पोगण्ड ३ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुकः ॥ ११६ ॥
ऊर्ध्वज्ञश्चा४प्यथ प्रज्ञुप्रज्ञौ विरलजानुके ।
५संज्ञुसंज्ञौ युतजानौ ६वलिनो वलिभः समौ ॥ १२० ॥
७उदग्रदन् दन्तुरः स्यात् ८प्रलम्बाण्डस्तु मुष्करः ।
९अन्धो गताक्ष १०उत्पश्य उन्मुखोऽ११धोमुखस्त्ववाङ् ॥ १२१ ॥
१२मुण्डस्तु मुण्डितः १३केशी केशवः केशिकोऽपि च ।
१४वलिरः केकरो—

---

१. 'खञ्ज (लँगड़े)'के ३ नाम हैं—खोडः, खोरः, खञ्जकः (+खञ्जः) ॥

२. 'किसी अङ्ग से हीन या अधिक (यथा—२,३ या ४ अङ्गुलियों-वाला, या छः अङ्गुलियोंवाला—छांगुर)'के २ नाम हैं—विकलाङ्गः, पोगण्डः ॥

३. 'जिसका घुटना ऊपर उठा हो, उस'के ३ नाम हैं—ऊर्ध्वज्ञुः, ऊर्ध्व-जानुकः, ऊर्ध्वज्ञः ॥

४. 'वातादि दोषसे जिसका घुटना अलग-अलग रहे अर्थात् बैठनेमें सटता न हो उस'के ३ नाम हैं—प्रज्ञुः, प्रज्ञः, विरलजानुकः ॥

५. मिले (सटे) हुए घुटनेवाले'के ३ नाम हैं—संज्ञुः, संज्ञः, युतजानुः ॥

६. (रोग या बुढ़ापा आदिसे) 'सिकुड़े हुए चमड़ेवाले'के २ नाम हैं—वलिनः, वलिभः ॥

७. 'दन्तुर (बाहर निकले हुए दाँतवाले)'के २ नाम हैं—उदग्रदन् (–त्), दन्तुरः ॥

८. 'बढ़े हुए अण्डकोषवाले'के २ नाम हैं—प्रलम्बाण्डः, मुष्करः ॥

९. 'अन्धे'के २ नाम हैं—अन्धः, गताक्षः ॥

शेषश्चात्र—अनेडमूकस्त्वन्धे ।

१०. 'ऊपरकी ओर उठे हुए मुखवाले'के २ नाम हैं—उत्पश्यः, उन्मुखः ॥

११. 'नीचेकी ओर दबे हुए मुखवाले'के २ नाम हैं—अधोमुखः, अवाङ् (–वाञ्च्) ॥

शेषश्चात्र—न्युब्जस्त्वधोमुखे ।

१२. 'मुण्डित (शिरके बालको मुँड़ाए हुए)'के २ नाम हैं—मुण्डः, मुण्डितः ॥

१३. 'शिरपर बाल बढ़ाये हुए'के ३ नाम हैं—केशी (–शिन्), केशवः, केशिकः ।

१४. 'सर्गपाताली (जो एक आँखको ऊपर उठाकर देखा करता हो, उस)'के २ नाम हैं—वलिरः, केकरः ॥

—१वृद्धनाभौ तुण्डिलतुण्डिभौ ॥ १२२ ॥
२आमयाव्यपटुर्ग्लानो ग्लास्नुर्विकृत आतुरः ।
व्याधितोऽभ्यमितोऽभ्यान्तो ३दद्रुरोगी तु दद्रुणः ॥ १२३ ॥
४पामनः कच्छुरस्तुल्यौ ५सातिसारोऽतिसारकी ।
६वातकी वातरोगी स्या७च्छ्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ १२४ ॥
८क्लिन्ननेत्रे चिल्लचुल्लौ पिल्लो९ऽथाऽर्शोयुगर्शसः ।
१०मूर्च्छिते मूर्त्तमूर्च्छालौ ११सिध्मलस्तु किलासिनि ॥ १२५ ॥
१२पित्तं मायुः १३कफः श्लेष्मा बलाशः स्नेहभूः खटः ।
१४रोगो रुजा रुगातङ्को मान्द्यं व्याधिरपाटवम् ॥ १२६ ॥
आम आमय आकल्यमुपतापो गदः समाः ।

---

१. 'बड़ी नाभिवाले'के ३ नाम हैं—वृद्धनाभिः, तुण्डिलः, तुण्डिभः ॥

२. 'रोगी'के ६ नाम हैं—आमयावी (– विन्), अपटुः, ग्लानः, ग्लास्नुः, विकृतः, आतुरः, व्याधितः (+रोगितः, रोगी – गिन्), अभ्यमितः, अभ्यान्तः ॥

३. 'दादके रोगी'के २ नाम हैं—दद्रुरोगी (– गिन्), दद्रुणः (+दद्रुणः) ॥

४. 'पामा रोगी'के २ नाम हैं—पामनः (+पामरः), कच्छुरः ॥

५. 'अतिसारके रोगी'के २ नाम हैं—सातिसारः, अतिसारकी (–किन् । +अतीसारकी – किन्) ॥

६. 'वातरोगी'के २ नाम हैं—वातकी (–किन्), वातरोगी (–गिन्) ॥

७. 'कफके रोगी'के ३ नाम हैं—श्लेष्मलः, श्लेष्मणः, कफी (—फिन्)॥

८. 'कींचरसे भरी हुई आँखवाले'के ४ नाम हैं—क्लिन्ननेत्रः, चिल्लः, चुल्लः, पिल्लः ॥

९. 'बवासीरके रोगी'के २ नाम हैं—अर्शोयुक् (—ज्), अर्शसः ॥

१०. 'मूर्च्छाके रोगी, मूर्च्छित'के ३ नाम हैं—मूर्च्छितः, मूर्त्तः, मूर्च्छालः ॥

११. 'सिध्म (सिहुला, सेंहुआ, या—पपड़ीके समान चमड़ा हो जाना) के रोगी'के २ नाम हैं—सिध्मलः, किलासी (—सिन्) ॥

१२. 'पित्तके दो नाम हैं—पित्तम् , मायुः (पु) ॥

शेषश्चात्र—पित्ते पलाग्निः पललज्वरः स्यादग्निरेचकः ।

१३. 'कफ'के ५ नाम हैं—कफः, श्लेष्मा (–ष्मन्), बलाशः, स्नेहभूः, खटः ॥

शेषश्चात्र—कफे शिङ्घानकः खेटः ॥

१४. 'रोग'के १२ नाम हैं—रोगः, रुजा, रुक् (—ज्), आतङ्कः, मान्द्यम् , व्याधिः, अपाटवम् , आमः, आमयः, आकल्यम् , उपतापः, गदः ॥

१क्षयः शोषो राजयक्ष्मा यक्ष्मा२ऽथ क्षुत्क्षुतं क्षवः ॥ १२७ ॥
३कासस्तु क्षवथुः ४पामा खसः कच्छूर्विचर्चिका ।
५कण्डूः कण्डूयनं खर्जूः कण्डूया६ऽथ क्षतं व्रणः ॥ १२८ ॥
अरुरीर्मं क्षणनुश्च ७रूढव्रणपदं किणः ।
८श्लीपदं पादवल्मीकः ९पादस्फोटो विपादिका ॥ १२९ ॥
१०स्फोटकः पिटको गण्डः ११पृष्ठग्रन्थिः पुनर्गडुः ।
१२श्वित्रं स्यात्पाण्डुरं कुष्ठं १३केशघ्नन्त्विन्द्रलुप्तकम् ॥ १३० ॥
१४सिध्म किलासं त्वक्पुष्पं सिध्मं—

---

१. 'क्षय (टी० बी०) रोग'के ४ नाम हैं—क्षयः, शोषः, राजयक्ष्मा, यक्ष्मा (२-क्ष्मन् , पु) ॥

२. 'छींक'के तीन नाम हैं—क्षुत् , क्षुतम् , क्षवः ॥

३. 'खांसी'के २ नाम हैं—कासः, क्षवथुः (पु) ॥

४. 'पामारोग'के ४ नाम हैं—पामा (-मन् ,+मा, स्त्री) खसः, कच्छूः (स्त्री), विचर्चिका ॥

५. 'खाज'के ४ नाम हैं—कण्डूः, कण्डूयनम् , खर्जूः (स्त्री), कण्डूया (+कण्डूतिः) ॥

६. 'घाव, फोड़ा'के ५ नाम हैं—क्षतम् , व्रणः (पु न), अरुः (—रुस् , न), ईर्मम् (न ।+न पु), क्षणनुः (पु) ॥

७. 'घट्ठा'का २ नाम हैं—रूढव्रणपदम्, किणः ॥

८. 'श्लीपद (फीलपाँव) के २ नाम हैं—श्लीपदम् , पादवल्मीकः (पु न) ॥

९. 'बिवाय'के २ नाम हैं—पादस्फोटः, विपादिका ॥

१०. 'फुंसी'के ३ नाम हैं—स्फोटकः, (+विस्फोटः), पिटकः (त्रि), गण्डः ॥

११. 'कूबड़'के २ नाम हैं—पृष्ठग्रन्थिः, गडुः (पु) ॥

१२. 'सफेद कोढ़ (चरकरोग)'के ३ नाम हैं—श्वित्रम् , पाण्डुरम् , कुष्ठम् ॥

१३. 'बाल झड़नेके रोग'के २ नाम हैं—केशघ्नम् , इन्द्रलुप्तकम् +इन्द्रलुप्तम्) ॥

१४. 'सिंहुला, सेंहुआरोग'के ४ नाम हैं—सिध्म (-मन् न), किलासम्, त्वक्पुष्पम् , सिध्मम् ॥

—१कोठस्तु मण्डलम् ।
२गलगण्डो गण्डमालो ३रोहिणी तु गलाङ्कुरः ॥ १३१ ॥
४हिक्का हेक्का च हृल्लासः ५प्रतिश्यायस्तु पीनसः ।
६शोथस्तु श्वयथुः शोफे ७दुर्नामाऽर्शो गुदाङ्कुरः ॥ १३२ ॥
८छर्दी प्रच्छर्दिका छर्दिर्वमथुर्वमनं वमिः ।
९गुल्मः स्यादुदरग्रन्थि१०रुदावर्तो गुदग्रहः ॥ १३३ ॥
११गतिर्नाडीव्रणे १२वृद्धिः कुरण्डश्चाण्डवर्द्धने ।
१३अश्मरी स्यान्मूत्रकृच्छ्रे १४प्रमेहो बहुमूत्रता ॥ १३४ ॥
१५आनाहस्तु विबन्धः स्याद्१६ ग्रहणीरुक्प्रवाहिका ।

---

१. 'चकत्ता होनेके रोग'के २ नाम हैं—कोठः, मण्डलम् (त्रि । + मण्डलकम्) ॥

२. 'गलगण्ड रोग'के २ नाम हैं—गलगण्डः, गण्डमालः ॥

३. 'गलेके रोग-विशेष'के २ नाम हैं—रोहिणी, गलाङ्कुरः ॥

४. 'हिचकी'के ३ नाम हैं—हिक्का, हेक्का, हृल्लासः ॥

५. 'पीनस रोग (सर्दी जुकाम)'के २ नाम हैं—प्रतिश्यायः, पीनसः ॥

६. 'शोथ, सूजन'के ३ नाम हैं—शोथः (पु । + न), श्वयथुः (पु), शोफः ॥

७. 'बवासीर'के ३ नाम हैं—दुर्नाम (–मन्), अर्शः (–र्शस् । २ न), गुदाङ्कुरः (+ गुदकीलः) ॥

८. 'वमन, उल्टी, कय'के ६ नाम हैं—छर्दिः (न स्त्री), प्रच्छर्दिका, छर्दिः (–र्दिस् , स्त्री), वमथुः (पु), वमनम्, वमिः (स्त्री) ॥

९. 'गुल्म रोग (पेटमें गोला-सा उठकर शूल पैदा करनेवाले रोग-विशेष)'के २ नाम हैं—गुल्मः (पु न), उदरग्रन्थिः ॥

१०. 'उदावर्त (गुदासे काँच निकलनेका रोग)'के २ नाम हैं—उदावर्तः, गुदग्रहः ॥

११. नाडीके रोग-विशेष'के २ नाम हैं—गतिः, नाडीव्रणः ॥

१२. 'फोता (अण्डकोष) बढ़ने'के ३ नाम हैं—वृद्धिः, कुरण्डः, अण्ड-वर्द्धनम् (यौ०– अण्डवृद्धिः, कोषवृद्धिः,.........) ॥

१३. 'मूत्रकृच्छ्र रोग'के २ नाम हैं—अश्मरी, मूत्रकृच्छ्रम् ॥

१४. 'प्रमेहरोग'के २ नाम हैं—प्रमेहः (+ मेहः), बहुमूत्रता ॥

१५. 'आनाह (मल-मूत्र रुक जानेका) रोग'के २ नाम हैं—आनाहः, विबन्धः ॥

१६. 'संग्रहणी रोग'के २ नाम हैं—ग्रहणीरुक् (–ज् । + ग्रहणी, संग्रहणी), प्रवाहिका ।

१व्याधिप्रभेदा विद्रधिभगन्दरज्वरादयः ॥ १३५ ॥
२दोषज्ञस्तु भिषग्वैद्य आयुर्वेदी चिकित्सकः ।
रोगहार्यगदङ्कारो ३भेषजन्तन्त्रमौषधम् ॥ १३६ ॥
भैषज्यमगदो जायु४श्चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।
उपचर्योपचारौ च ५लङ्घनन्त्वपतर्पणम् ॥ १३७ ॥
६जाङ्गुलिको विषभिषक् ७स्वास्थ्ये वार्तमनामयम् ।
सह्यारोग्ये ८पटूल्लाघवार्तकल्यास्तु नीरुजि ॥ १३८ ॥
९कुसृत्या विभवान्वेषी पार्श्वकः सन्धिजीवकः ।
१०सत्कृत्यालङ्कृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ॥ १३९ ॥
११चपलश्चिकुरो—

---

१. 'विद्रधिः (स्त्री ।+पु), भगन्दरः, ज्वरः, आदि ('आदि शब्द से —अर्बुदः,·········) क्रमशः भीतरी फोड़ा, भगन्दर (गुदाका रोग), ज्वर आदि (आदिसे 'अर्बुद' आदिका संग्रह है)--ये व्याधिभेद अर्थात् रोगोंके भेद हैं ॥

२. 'चिकित्सक (वैद्य, हकीम, डाक्टर)'के ७ नाम हैं--दोषज्ञः, भिषक्, (-ज्), वैद्यः, आयुर्वेदी (-दिन् । +आयुर्वेदिकः), चिकित्सकः, रोगहारी (-रिन्), अगदङ्कारः ॥

३. 'दवा'के ६ नाम हैं—भेषजम्, तन्त्रम्, औषधम् (पु न), भैषज्यम्, अगदः, जायुः (पु) ॥

४. 'चिकित्सा, इलाज'के ४ नाम हैं—चिकित्सा, रुक्प्रतिक्रिया, उपचर्या, उपचारः ॥

५. 'लङ्घन (रोगके कारण भोजन-त्याग करने)'के २ नाम हैं—लङ्घनम्, अपतर्पणम् ॥

६. 'विषके वैद्य'के २ नाम हैं—जाङ्गुलिकः, विषभिषक् (षज् ।+ विषवैद्यः) ॥

७. 'स्वास्थ्य'के ५ नाम है—स्वास्थ्यम्, वार्तम्, अनामयम्, सह्यम्, आरोग्यम् ॥

८. 'नीरोग, स्वस्थ'के ५ नाम हैं—पटुः, उल्लाघः, वार्तः, कल्यः, नीरुक् (-ज् ।+नीरोगः, स्वस्थः) ॥

९. 'कपटसे धन चाहनेवाले'के २ नाम हैं—पार्श्वकः, सन्धिजीवकः ॥

१०. 'भूषणादिसे अलङ्कृतकर ब्राह्मविधिसे कन्यादान करनेवाले'का १ है—कूकुदः ॥

शेषश्चात्र—कूकुदे तु कूपदः पारिमितः ।

११. 'चपल'के २ नाम हैं—चपलः, चिकुरः (+चञ्चलः) ॥

—१नीलीरागस्तु स्थिरसौहृदः।
२ततो हरिद्रारागोऽन्यः ३सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः ॥ १४० ॥
४गेहेनर्दी गेहेशूरः पिण्डीशूरो५ऽस्तिमान् धनी।
६स्वस्थानस्थः परद्वेषी गोष्ठश्वो७ऽथापदि स्थितः ॥ १४१ ॥
आपन्नो८ऽथापद्विपत्तिर्विपत् ९स्निग्धस्तु वत्सलः।
१०उपाध्यभ्यागारिकौ तु कुटुम्बव्यापृते नरि ॥ १४२ ॥
११जैवातृकस्तु दीर्घायु१२स्त्रासदायी तु शङ्कुरः।
१३अभिपन्नः शरणार्थी १४कारणिकः परीक्षकः ॥ १४३ ॥

---

१. 'दृढ मित्रता या प्रेम करनेवाले'के २ नाम हैं—नीलीरागः, स्थिरसौहृदः ॥

२. 'क्षणिक (कुछ समयके लिए) मित्रता या प्रेम करनेवाले'का १ नाम है—हरिद्रारागः ॥

३. 'अधिक स्निग्ध (स्नेह रखनेवाले)'के २ नाम हैं—सान्द्रस्निग्धः, मेदुरः ॥

४. 'घरमें ही शूरता प्रदर्शित करनेवाले (किन्तु अवसर पड़नेपर मैदान छोड़कर भाग या छिप जानेवाले)'के ३ नाम हैं—गेहेनर्दी (-र्दिन्), गेहेशूरः, पिण्डीशूरः ॥

५. 'धनवान्'के ३ नाम हैं—अस्तिमान् (-मत्), धनी (-निन्। धनवान्-वत्, धनिक,............) ॥

६. 'अपने स्थानपर रहकर दूसरेसे द्वेष करनेवाले'का १ नाम है—गोष्ठश्वः ॥

७. 'आपत्तिमें पड़े हुए'का १ नाम है—आपन्नः ॥

८. 'आपत्तिके ३ नाम हैं—आपत् (-द्), विपत्तिः, विपत् (-द्।+ आपदा, आपत्तिः, विपदा) ॥

९. 'स्नेही'के २ नाम हैं—स्निग्धः, वत्सलः ॥

१०. 'स्त्री-पुत्रादि परिवारके पालन-पोषणमें लगे हुए'के २ नाम हैं—उपाधिः (पु), अभ्यागारिकः ॥

११. 'दीर्घायु'के २ नाम हैं—जैवातृकः, दीर्घायुः, (-युस्। (+आयुष्मान्,-मत्, चिरायुः—युष्) ॥

१२. 'दूसरेको भयभीत करनेवाले'के २ नाम हैं—त्रासदायी (-यिन्), शङ्कुरः ॥

१३. 'शरणार्थी'के २ नाम हैं—अभिपन्नः, शरणार्थी (-र्थिन्) ॥

१४. 'परीक्षा लेनेवाले'के २ नाम हैं—कारणिकः, परीक्षकः ॥

१समर्धुकस्तु वरदो २व्रातीनाः सङ्घजीविनः ।
३सभ्याः सदस्याः पार्षद्याः सभास्ताराः सभासदः ॥ १४४ ॥
सामाजिकाः ४सभा संसत्समाजः परिषत्सदः ।
पर्षत्समज्या गोष्ठ्यास्था आस्थानं समितिर्घटा ॥ १४५ ॥
५सांवत्सरो ज्यौतिषिको मौहूर्तिको निमित्तवित् ।
दैवज्ञगणकादेशिज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४६ ॥
विप्रश्निकेक्षणिकौ च ६सैद्धान्तिकस्तु तान्त्रिकः ।
७लेखकोऽक्षरपूर्वाः स्युश्चणजीवकचञ्चवः ॥ १४७ ॥
वार्णिको लिपिकर ८आक्षरन्यासे लिपिर्लिविः ।

---

१. 'वरदान देनेवाले'के २ नाम हैं—समर्धुकः, वरदः ॥

२. परिश्रमकर जीविका चलानेवाले अनेकजातीय समुदाय'के २ नाम हैं—व्रातीनाः, सङ्घजीविनः (–विन्) ॥

३. 'सदस्यों, सभासदों'के ६ नाम हैं—सभ्याः, सदस्याः, पार्षद्याः (+पारिषद्याः), सभास्ताराः, सभासदः (–द्), सामाजिकाः । ('व्रातीन' आदि शब्दोंके बहुत्वकी अपेक्षा से बहुवचन कहा गया है ये एक व्यक्तके प्रयोगमें एकवचन में भी प्रयुक्त होते हैं) ॥

४. सभा'के १२ नाम हैं—सभा, संसत् (–द्), समाजः, परिषत् (–द्), सदः, (–दस्, स्त्री न), पर्षत् (–द् स्त्री), समज्या, गोष्ठी, आस्था, आस्थानम् (न स्त्री), समितिः, घटा ॥

५. 'ज्योतिषी, दैवज्ञ'के ११ नाम हैं—सांवत्सरः, ज्यौतिषिकः, मौहूर्तिकः (+मौहूर्तः), निमित्तवित् (+नैमित्तः, नैमित्तिकः । –२–विद्), दैवज्ञः, गणकः, आदेशी (–शिन्), ज्ञानी. (–निन्), कार्तान्तिकः, विप्रश्निकः, ईक्षणिकः ॥

६. (ज्यौतिष, वैद्यक, आदि),सिद्धान्तके जाननेवाले'के २ नाम हैं—सैद्धान्तिकः, तान्त्रिकः ॥

७. 'लेखक, लिपिक (क्लर्क)'के ६ नाम हैं—लेखकः, अक्षरचणः, अक्षरजीवकः, अक्षरचञ्चुः, वार्णिकः, लिपिकरः (+लिविकरः) ॥

शेषश्चात्र—अथ कायस्थः, करणोऽक्षरजीविनि ।

विमर्श :—'अक्षरचञ्चुः' शब्दके स्थानमें 'अक्षरचुञ्चु' शब्द होना चाहिए, क्योंकि 'पाणिनि'ने 'तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ' (५।२।२६ इस सूत्रसे प्रथम चकारको भी अकारान्त न कहकर उकारान्त) ही 'चुञ्चुप्' प्रत्यय किया है ॥

८. 'लिखावट, लिपि'के ३ नाम हैं—अक्षरन्यासः, लिपिः, लिविः (२ स्त्री । +लिखिता) ॥

१मषिधानं मषिकूपी २मलिनाम्बु मषी मसी ॥ १४८ ॥
३कुलिकस्तु कुलश्रेष्ठी ४सभिको द्यूतकारकः ।
५कितवो धूर्तकृद्धूर्तोऽक्षधूर्तश्चाक्षदेविनि ॥ १४९ ॥
६दुरोदरं कैतवञ्च द्यूतमक्षवती पणः ।
७पाशकः प्रासकोऽक्षश्च देवनः८स्तत्पणो ग्लहः ॥ १५० ॥
९अष्टापदः शारिफलं १०शारः शारिश्च खेलनी ।
११परिणायस्तु शारीणां नयनं स्यात्समन्ततः ॥ १५१ ॥
१२समाह्वयः प्राणिद्यूतं १३व्यालग्राह्याहितुण्डकः ।
१४स्यान्मनोजवसस्ताततुल्यः—

---

१. 'दावात'के २ नाम हैं—मषिधानम्, मषिकूपी ॥

२. 'स्याही, रोशनाई'के ३ नाम हैं—मलिनाम्बु, मषी, मसी (+मषिः, मषी । २ स्त्री पु) ॥

३. 'व्यापारियोंमें श्रेष्ठ'के २ नाम हैं—कुलिकः (+कुलकः), कुलश्रेष्ठी (-ष्ठिन्) ॥

४. 'जुआ खेलानेवाले'के २ नाम हैं—सभिकः, द्यूतकारकः ॥

५. 'जुआ खेलनेवाले'के ५ नाम हैं—कितवः, द्यूतकृत्, धूर्तः, अक्षधूर्तः, अक्षदेवी (-विन्) ॥

६. 'जुआ, द्यूत'के ५ नाम हैं—दुरोदरम् (५ न), कैतवम्, द्यूतम् (पु न), अक्षवती, पणः ॥

७. 'पाशा'के ४ नाम हैं—पाशकः, प्रासकः, अक्षः, देवनः ॥

८. 'दावपर रखे हुए धनादि'का १ नाम है—ग्लहः ॥

९. 'बिसात (जिसपर सतरंज या चौसरकी गोटियां रखकर खेला जाता है, उस (कपड़े आदिके बने हुए फलक)'के २ नाम हैं—अष्टापदः, शारिफलम् (+शारिफलकः । २ पु न) ॥

१०. (सतरंज या चौसर आदिकी)'गोटियों-मोहरों'के ३ नाम हैं—शारः (पु स्त्री), शारिः (स्त्री । +पु), खेलनी ॥

११. 'गोटियोंके चलने (एक स्थानसे दूसरे स्थानोंमें रखने)'का १ नाम है—परिणायः ॥

१२. दाव पर धनादि रखकर भेंड़, मुर्गे, तीतर आदि प्राणियोंको परस्पर में लड़ाने'के २ नाम हैं—समाह्वयः, प्राणिद्यूतम् ॥

१३. 'सँपेरा'के २ नाम हैं—व्यालग्राही (-हिन्), आहितुण्डिकः ॥

१४. 'पिताके तुल्य (चाचा आदि वय, विद्या, पद आदिसे) पूज्य व्यक्ति'के २ नाम हैं—मनोजवसः (+मनोजवः[१]), ताततुल्यः ॥

---

१. यथाऽह व्याडिः—"जनः पितृसधर्मा यः स ताताहों मनोजवः ॥"

—१शास्ता तु देशकः ॥ १५२ ॥
२सुकृती पुण्यवान् धन्यो ३मित्रयुर्मित्रवत्सलः ।
४क्षेमङ्करो रिष्टतातिः शिवतातिः शिवङ्करः ॥ १५३ ॥
५श्रद्धालुरास्तिकः श्राद्धो ६नास्तिकस्तद्विपर्यये ।
७वैरङ्गिको विरागार्हो ८वीतदम्भस्त्वकल्कनः ॥ १५४ ॥
९प्रणाय्योऽसम्मतो१०ऽन्वेष्टाऽनुपद्य११थ सहः क्षमः ।
शक्तः प्रभूष्णु१२र्भूतात्तस्त्वाविष्टः १३शिथिलः श्लथः ॥ १५५ ॥
१४संवाहकोऽङ्गमर्दः स्यात् १५नष्टबीजस्तु निष्कलः ।
१६आसीन उपविष्टः स्याद्—

---

१. 'शासक'के २ नाम हैं—शास्ता (–स्तृ । + शासकः), देशकः ॥

२. 'पुण्यवान्'के ३ नाम हैं—सुकृती (–तिन्), पुण्यवान् (–वत्), धन्यः ॥

३. 'मित्रवत्सल'के २ नाम हैं—मित्रयुः, मित्रवत्सलः ॥

४. 'मङ्गलकर्ता'के ४ नाम हैं—क्षेमङ्करः, रिष्टतातिः, शिवतातिः, शिवङ्करः ॥

५. 'श्रद्धालु'के ३ नाम हैं—श्रद्धालुः, आस्तिकः, श्राद्धः ॥

६. 'नास्तिक (परलोकादिको नहीं माननेवालों)का १ नाम है—नास्तिकः ॥

७. 'वैराग्यके योग्य'के २ नाम हैं—वैरङ्गिकः, विरागार्हः ॥

८. 'दम्भरहित'के २ नाम हैं—वीतदम्भः, अकल्कनः ॥

९. 'असम्मत (अनभिमत)'के २ नाम हैं—प्रणाय्यः, असम्मतः ॥

१०. 'खोज करनेवाले'के २ नाम हैं—अन्वेष्टा (–ष्टृ), अनुपदी (– दिन्) ॥

११. 'समर्थ, शक्त'के ४ नाम हैं—सहः, क्षमः, शक्तः, प्रभूष्णुः (+प्रभविष्णुः) ॥

शेषश्चात्र—क्षमे समर्थोऽलम्भूष्णुः ।

१२. 'भूत (प्रेत, पिशाचादि)से आक्रान्त'के २ नाम हैं—भूतात्तः, आविष्टः ॥

१३. 'शिथिल, ढीला'के २ नाम हैं—शिथिलः, श्लथः ॥

१४. 'संवाहक (पीडा आदिके निवारणके लिए शरीरको दबाने या तेल आदिकी मालिश करनेवाले)'के २ नाम हैं—संवाहकः, अङ्गमर्दः ॥

१५. 'वीर्यशून्य (रोग या अवस्था आदिके कारण जिसका वीर्य नष्ट हो गया है, उस)'के २ नाम हैं—नष्टबीजः, निष्कलः ॥

१६. 'बैठे हुए'के २ नाम हैं—आसीनः, उपविष्टः ॥

—१ऊर्ध्वं ऊर्ध्वन्दमः स्थितः ॥ १५६ ॥
२अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिकदेशिकौ ।
प्रवासी ३तद्गणो हारिः ४पाथेयं शम्बलं समे ॥ १५७ ॥
५जङ्घालोऽतिजवी ६जङ्घाकरिको जाङ्घिको ७जवी ।
जवनस्त्वरिते ८वेगे रये रंहस्तरः स्यदः ॥ १५८ ॥
जवो वाजः प्रसरश्च ९मन्दगामी तु मन्थरः ।
१०कामंगाम्यनुकामीनो११ऽत्यन्तीनोऽत्यन्तगामिनि ॥ १५९ ॥
१२सहायोऽभिचरोऽनोश्च जीविगामिचरप्लवाः ।
सेवको१३ऽथ सेवा भक्तिः परिचर्य्या प्रसादना ॥ १६० ॥
शुश्रूषाऽऽराधनोपास्तिवरिवस्यापरीष्टयः ।
उपचारः—

---

१. 'खड़े हुए'के ३ नाम हैं—ऊर्ध्वः, ऊर्ध्वन्दमः, स्थितः ॥

२. 'पथिक, राही'के ७ नाम हैं—अध्वनीनः, अध्वगः, अध्वन्यः, पान्थः, पथिकः, देशिकः, प्रवासी (– सिन् । +यात्री, – त्रिन्) ॥

३. 'पथिकोंके समूह'का १ नाम है—हारिः ॥

४. 'रास्तेके भोजन'के २ नाम हैं—पाथेयम्, शम्बलम् (पु न) ॥

५. 'अत्यन्त तेज चलनेवाले पथिक'के २ नाम हैं—जङ्घालः, अतिजवी (– विन्) ॥

६. 'जिसकी जीविका राजा आदिके द्वारा इधर-उधर भेजनेसे चलती हो, उस'के २ नाम हैं—जङ्घाकरिकः, जाङ्घिकः (+जङ्घाकरः) ॥

७. 'तेज चलनेवाले'के ३ नाम हैं—जवी (– विन्), जवनः, त्वरितः (किसीके मतसे 'जङ्घालः' आदि ८ शब्द एकार्थक हैं) ॥

८. 'तेजी, वेग'के ८ नाम हैं—वेगः, रयः, रंहः (– हस्), तरः (– रस् । २ न), स्यदः, जवः, वाजः, प्रसरः ॥

९. 'मन्द चलने या काम करनेवाले'के २ नाम हैं—मन्दगामी (– मिन्), मन्थरः ॥

१०. 'इच्छानुसार चलने या कोई कार्य करनेवाले'के २ नाम हैं—कामंगामी (– मिन्), अनुकामीनः ॥

११. 'अधिक चलनेवाले'के २ नाम हैं—अत्यन्तीनः, अत्यन्तगामी (– मिन्) ॥

१२. 'सेवक'के ७ नाम हैं—सहायः, अभिचरः, अनुजीवी (विन्), अनुगामी (– मिन्), अनुचरः, अनुप्लवः (+अनुगः), सेवकः ॥

१३. 'सेवा'के १० नाम हैं—सेवा, भक्तिः, परिचर्य्या, प्रसादना, शुश्रूषा,

—१पदातिस्तु पत्तिः पद्गः पदातिकः ॥ १६१ ॥
पादातिकः पादचारी पादाजिपदिकावपि ।
२सरः पुरोऽग्रतोऽग्रेभ्यः पुरस्तो गमगामिगाः ॥ १६२ ॥
प्रष्ठो३ऽथावेशिकागन्तू प्राघुणोऽभ्यागतोऽतिथिः ।
प्राघूर्णके४ऽथावेशिकमातिथ्यञ्चातिथेय्यपि ॥ १६३ ॥
५सूर्योढस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तङ्गतेऽतिथिः ।
६पादार्थं पाद्य७मर्घार्थमर्घ्यं वार्य८थ गौरवम् ॥ १६४ ॥
अभ्युत्थानं ९व्यथकस्तु स्यान्मर्मस्पृगरुन्तुदः ।
१०ग्रामेयके तु ग्रामीणग्राम्यौ—

आराधना, उपास्तिः (+उपासना), वरिवस्या, परीष्टिः (+पर्येषणा), उपचारः ॥

विमर्श—'अमरसिंह'ने परीष्टि तथा पर्येषणा—इन दो शब्दोंको 'श्राद्धमें ब्राह्मणोंकी सेवा करने अर्थमें माना है (अमरकोष २।७।३२) ॥

१. 'पैदल'के ८ नाम हैं—पदातिः, पत्तिः, पद्गः, पदातिकः, पादातिकः, पादचारी (– रिन्), पादाजिः, पदिकः ॥

शेषश्चात्र—पादातपदगौ समौ ।

२. 'अग्रगामी (आगे चलनेवाले)'के ७ नाम हैं—पुरःसरः, अग्रतःसरः, अग्रेसरः (+अग्रेगूः), पुरोगमः, पुरोगामी (– मिन्), पुरोगः, प्रष्ठः ॥

३. 'अतिथि'के ६ नाम हैं—आवेशिकः, आगन्तुः (+आगन्तुकः), प्राघुणः, अभ्यागतः, अतिथिः (+आतिथ्यः), प्राघूर्णकः ॥

विमर्श—किसी-किसीने अतिथि तथा अभ्यागतको एकार्थक न मानकर यह भेद बतलाया है कि—जिस महात्माने तिथि-पर्व, उत्सव आदिका त्याग कर दिया है, उसे 'अतिथि' और शेषको 'अभ्यागत' कहते हैं; परन्तु यहाँ उक्त भेदका आश्रय त्यागकर दोनों शब्दोंको एकार्थक ही कहा गया है ॥

४. 'आतिथ्य (अतिथि-सत्कार)'के ३ नाम हैं—आवेशिकम्, आतिथ्यम्, आतिथेयी (स्त्री न) ॥

५. 'सूर्यास्त होनेके उपरान्त आये हुए अतिथि'का १ नाम है—सूर्योढः ॥

६. 'पैर धोनेके लिए दिये जानेवाले जल'का १ नाम है—पाद्यम् ॥

७. 'अर्घके लिए दिये जानेवाले जल'का १ नाम है—अर्घ्यम् ॥

८. 'अतिथि (या—पिता, गुरु आदि श्रेष्ठ जनों)को गौरवप्रदानके लिए उठकर खड़े होने'के २ नाम हैं—गौरवम्, अभ्युत्थानम् ॥

९. 'मर्मस्पर्शी (अत्यधिक कष्ट देनेवाले)'के ३ नाम हैं—व्यथकः, मर्मस्पृक् (– स्पृश्), अरुन्तुदः ॥

१०. 'ग्रामीण, देहाती'के ३ नाम हैं—ग्रामेयकः, ग्रामीणः, ग्राम्यः ॥

—१लोको जनः प्रजा ॥ १६५ ॥
२स्यादामुष्यायणोऽमुष्यपुत्रः प्रख्यातवप्तृकः ।
३कुल्यः कुलीनोऽभिजातः कौलेयकमहाकुलौ ॥ १६६ ॥
जात्यो ४गोत्रन्तु सन्तानोऽन्ववायोऽभिजनः कुलम् ।
अन्वयो जननं वंशः ५स्त्री नारी वनिता वधूः ॥ १६७ ॥
वशा सीमन्तिनी वामा वर्णिनी महिलाऽबला ।
योषा योषिद्६विशेषास्तु कान्ता भीरुर्नितम्बिनी ॥ १६८ ॥
प्रमदा सुन्दरी रामा रमणी ललनाऽङ्गना ।
७स्वगुणेनोपमानेन मनोज्ञादिपदेन च ॥ १६९ ॥
विशेषिताङ्गकर्मा स्त्री यथा तरललोचना ।
अलसेक्षणा मृगाक्षी मत्तेभगमनाऽपि च ॥ १७० ॥
वामाक्षी सुस्मिता—

---

१. 'प्रजा, जन'के ३ नाम हैं—लोकः, जनः, प्रजा ॥

२. 'विख्यात पितावाले'के ३ नाम हैं—आमुष्यायणः, अमुष्यपुत्रः, प्रख्यातवप्तृकः ॥

३. 'कुलीन (उत्तम वंशमें उत्पन्न)'के ६ नाम हैं—कुल्यः, कुलीनः, अभिजातः, कौलेयकः, महाकुलः, जात्यः ॥

४. 'वंश, कुल'के ८ नाम हैं—गोत्रम्, सन्तानः (+सन्ततिः), अन्ववायः, अभिजनः, कुलम्, अन्वयः, जननम्, वंशः ॥

५. 'नारी, स्त्री'के १२ नाम हैं—स्त्री, नारी, वनिता, वधूः, वशा, सीमन्तिनी, वामा, वर्णिनी, महिला (+महेला), अबला, योषा, योषित् (+योषिता) ॥

६. 'ये स्त्रियोंके विभिन्न भेद-विशेष'हैं—कान्ता, भीरुः, नितम्बिनी, प्रमदा, सुन्दरी, रामा, रमणी, ललना, अङ्गना ॥

७. 'अङ्गों या कार्योंके गुण या उपमानसे तथा 'मनोज्ञ' आदि (आदि' पदसे 'वाम, विशाल,…………'का संग्रह है) विशेषित अङ्गों (यथा—लोचन, ईक्षण) तथा कार्यों (यथा—गमन, स्मित,……)वाली स्त्री के विभिन्न पर्याय होते हैं—क्रमशः उदा० यथा—"तरललोचना, अलसेक्षणा, मृगाक्षी, मत्तेभगमना, वामाक्षी, सुस्मिता" (इनमेंसे क्रमशः १–१ नाम 'चञ्चल नेत्रोंवाली, आलसयुक्त नेत्रोंवाली, मृगके समान नेत्रोंवाली, मतवाले हाथीके समान चालवाली, सुन्दर नेत्रोंवाली और सुन्दर मुस्कानवाली स्त्री"का है ।

विमर्श—उक्त ६ पर्यायोंमेंसे 'तरललोचना' पदमें 'तरलता नेत्रका असाधारण अपना (नेत्रका) गुण है, 'अलसेक्षणा' पदमें नेत्रका 'ईक्षण' अर्थात् 'देखना' रूप कार्यकी अलसता' असाधारण अपना (नेत्रका) गुण है,

—१अस्याः स्वं मानलीलास्मरादयः ।
२लीला विलासो विच्छित्तिर्विब्वोकः किलिकिञ्चितम् ॥ १७१ ॥
मोटायितं कुट्टुमितं ललितं विहृतन्तथा ।
विभ्रमश्चेत्यलङ्काराः स्त्रीणां स्वाभाविका दश ॥ १७२ ॥
३प्रागल्भ्यौदार्यमाधुर्यशोभाधीरत्वकान्तयः ।
दीप्तिश्चायत्नजाः—

'मृगाक्षी' पदमें मृगके नेत्ररूप 'उपमान'से स्त्रीका अक्षि (नेत्र) रूप अङ्ग विशेषित हुआ है, 'मत्तेभगमना' पदमें 'उपमान' रूप मत्तेभगमन (मतवाले हाथीकी चाल) से स्त्रीका गमन विशेषित है, 'वामाक्षी'पदमें 'वामत्व' (सुन्दरता)से 'नेत्र' रूपी स्त्रीका अङ्ग विशेषित है और 'सुस्मिता' पदमें 'सु'के अर्थ 'शोभनत्व'से 'स्मित' रूपी कर्म विशेषित है। इसी प्रकार "वरारोहा, वरवर्णिनी, प्रतीपदर्शिनी,………"नामोंके विषयमें तर्क करना चाहिए ॥

१. इस स्त्रीके धन 'मानः' लीला, स्मरः, (स्वाभिमान, लीला, काम) आदि ('आदि शब्दसे 'मनोविलास' आदिका संग्रह है) हैं। अतएव 'मानिनी लीलावती, स्मरवती, (मान, लीला तथा स्मरवाली) आदि यौगिक नाम स्त्रियोंके होते हैं ॥

२. स्त्रियोंके स्वभावसिद्ध १० अलङ्कार होते हैं, उनका क्रमशः अर्थसहित वक्ष्यमाण १—१ नाम है—लीला (वचन, वेष तथा चेष्टादिसे प्रियतमका अनुकरण करना), विलासः (स्थान तथा गमनादिकी विशिष्टता), विच्छित्तिः (शोभाजन्य गर्वसे थोड़ा भूषणादि धारण करना), विब्वोकः (सौभाग्यके दर्पसे इष्ट वस्तुओंमें अवज्ञा रखना), किलकिञ्चितम् (सौभाग्यादिसे मुस्कान आदिका संमिश्रण), मोटायितम् (प्रियकथा-प्रसङ्गमें तद्भाव की भावनासे उत्पन्न कान खुजलाना आदि चेष्टा), कुट्टुमितम् (+ कुट्टमितम् अधरादि क्षतकालमें हर्ष होनेपर भी हाथ या मस्तकादिके कम्पन द्वारा निषेध करते हुए निषेध का प्रदर्शन), ललितम् (सुकुमारता पूर्वक अङ्गन्यास अर्थात् गमन आदि), विहृतम् (बोलने आदिके अवसरपर भी चुप रहना), विभ्रमः (प्रियतम के आने पर हर्षादिके कारण विभूषणोंका उलटा-पुलटा (अस्थानमें) धारण करना) ॥

विमर्श—'साहित्यदर्पण'कार 'विश्वनाथ'ने उक्त 'दश अलङ्कारोंके अतिरिक्त स्त्रियोंके और भी ८ स्वभावसिद्ध अलङ्कार कहे हैं, यथा—मदः, तपनम्, मौग्ध्यम्, विक्षेपः, कुतूहलम्, हसितम्, चकितम्, केलिः ॥

३. वक्ष्यमाण ७ अलङ्कार स्त्रियोंके अयत्नज (विना प्रयत्न-विशेषके होनेवाले) हैं, उनका अर्थ सहित १—१ नाम है, यथा-प्रागल्भ्यम् (ढिठाई, निर्भयता), औदार्यम् (अमर्षादिके अवसरपर भी नम्रता), माधुर्यम्

—१भावहावहेलास्त्रयोऽङ्गजाः ॥ १७३ ॥
२सा कोपना भामिनी स्या ३च्छेका मत्ता च वाणिनी।
४कन्या कनी कुमारी च ५गौरी तु नग्निकाऽरजाः ॥१७४॥
६मध्यमा तु दृष्टरजास्तरुणी युवतिश्चरी ।
तलुनी दिक्करी ७वर्या पतिंवरा स्वयंवरा ॥ १७५ ॥
८सुवासिनी वधूटी स्याच्चिरिण्ट्य—

(क्रोधादिके अवसरमें भी मधुर चेष्टा होना), शोभा (रूप, यौवन, सौन्दर्य आदि से अङ्गों का शोभित होना), धीरत्वम् (अचपलता), कान्तिः (काम द्वारा उक्त 'शोभा' का बढ़ना), दीप्तिः (उक्त 'कान्ति' का ही अत्यधिक बढ़ना) ॥

१. वक्ष्यमाण ३ अलङ्कार स्त्रियोंके 'अङ्गज' होते हैं, उनका अर्थ सहित क्रमशः वक्ष्यमाण १-१ नाम है—भावः (कामजन्य विकारसे शून्य शरीरमें थोड़ा कामज विकार होना), हावः (कटाक्षादिसे सुरतेच्छाके प्रकाशनसे कुछ-कुछ लक्षित होनेवाला भाव), हेला (उक्त हावका अधिक प्रकाशन) ॥

विमर्श—इन २० (विश्वनाथसम्मत २८) अलङ्कारोंके विस्तृत लक्षण तथा उदाहरण साहित्यदर्पण (३।१३०–१५७) में जिज्ञासुओंको देखना चाहिए ॥

२. 'क्रोधशीला स्त्री'का १ नाम है—भामिनी (+कोपना) ॥

३. 'चतुर एवं मत्त स्त्री'का १ नाम है—वाणिनी ॥

४. 'कन्या (क्वारी स्त्री')के ३ नाम हैं—कन्या, कनी, कुमारी ॥

५. 'जिसका रजोधर्म (मासिक धर्म) आरम्भ नहीं हुआ हो उस स्त्री' के ३ नाम हैं—गौरी, नग्निका, अरजाः (–जस्) ॥

विमर्श—'अष्टवर्षा भवेद् गौरी दशमे नग्निका भवेत्' अर्थात् ८ वर्षकी कन्या 'गौरी' और १० वर्षकी कन्या 'नग्निका' संज्ञक है, इस धर्मशास्त्रोक्त भेदका आश्रय यहाँ नहीं किया गया है ॥

६. 'तरुणी' (नौजवान) स्त्री'के ७ नाम हैं—मध्यमा, दृष्टरजाः (– जस्), तरुणी, युवतिः, चरी, तलुनी, दिक्करी ॥

७. 'पतिको स्वयं वरण करनेवाली स्त्री'के ३ नाम हैं—वर्या, पतिंवरा, स्वयंवरा ॥

८. 'आरम्भमें होनेवाले युवावस्थाके लक्षणोंवाली विवाहिता स्त्री'के ३ नाम हैं—सुवासिनी (+स्ववासिनी), वधूटी (+वध्वटी), चिरिण्टी (+चिरण्टी, चरिण्टी, चरण्टी) ॥

—१थ सधर्मिणी ।
पत्नी सहचरी पाणिगृहीती गृहिणी गृहाः ॥ १७६ ॥
दाराः क्षेत्रं वधूर्भार्या जनी जाया परिग्रहः ।
द्वितीयोढा कलत्रञ्च२पुरन्ध्री तु कुटुम्बिनी ॥ १७७ ॥
३प्रजावती भ्रातृजाया ४सूनोः स्नुषा जनी वधूः ।
५भ्रातृवर्गस्य या जाया यातरस्ताः परस्परम् ॥ १७८ ॥
६वीरपत्नी वीरभार्या ७कुलस्त्री कुलबालिका ।
८प्रेयसी दयिता कान्ता प्राणेशा वल्लभा प्रिया ॥ १७९ ॥
हृदयेशा प्राणसमा प्रेष्ठा प्रणयिनी च सा ।
९प्रेयस्याद्याः पुंसि पत्यौ भर्ता सेक्ता पतिर्वरः ॥ १८० ॥
विवोढा रमणो भोक्ता रुच्यो वरयिता धवः ।

---

१. 'सविधि विवाहिता स्त्री'के १६ नाम हैं—सधर्मिणी (+सधर्मचारिणी), पत्नी, सहचरी, पाणिगृहीती (+करात्ती), गृहिणी (+गेहिनी), गृहाः (नि पु ब० व०), दाराः (नि पु ब० व० ।+ए० व०, यथा—"धर्मप्रजासम्पन्ने दारे नान्यं कुर्वीत"), क्षेत्रम्, वधूः, भार्या, जनी, जाया, परिग्रहः, द्वितीया, ऊढा, कलत्रम् ॥

२. 'पुत्र, नौकर आदिवाली स्त्री'के २ नाम हैं—पुरन्ध्री, कुटुम्बिनी ॥

३. 'भौजाई, भाभी'के २ नाम हैं—प्रजावती, भ्रातृजाया ॥

४. 'पतोहू (पुत्र या—भतीजे आदि की स्त्री)'के ३ नाम हैं—स्नुषा, जनी, वधूः (+वधूटी) ॥

५. परस्परमें भाइयोंकी स्त्रियाँ 'यातरः' (-तृ), अर्थात् 'याता' कहलाती हैं ॥

६. 'वीरपत्नी'के २ नाम हैं—वीरपत्नी, वीरभार्या ॥

७. 'कुलीन स्त्री'के २ नाम हैं—कुलस्त्री, कुलबालिका (+कुलपालिका) ॥

८. 'प्रिया स्त्री'के १० नाम हैं—प्रेयसी, दयिता, कान्ता, प्राणेशा, वल्लभा, प्रिया, हृदयेशा, प्राणसमा, प्रेष्ठा, प्रणयिनी ॥

९. उक्त 'प्रेयसी' आदि १० शब्द 'पुंल्लिङ्ग' होने पर (यथा—प्रेयान् (-यस्), दयितः, कान्तः, प्राणेशः, वल्लभः, प्रियः, हृदयेशः, प्राणसमः, प्रेष्ठः, प्रणयी (-यिन्) और 'भर्ता (-र्तृ), सेक्ता (क्तृ), पतिः, वरः, विवोढा (-ढृ । यौ०—परिणेता-तृ, परिग्राहः, उपयन्ता (-न्तृ……) रमणः, भोक्ता (-क्तृ), रुच्यः, वरयिता (तृ), धवः'—ये १० नाम (कुल १०+१० = २० नाम) 'पति'के हैं ॥

१जन्यास्तु तस्य सुहृदो २विवाहः पाणिपीडनम् ॥ १८१ ॥
पाणिग्रहणमुद्वाह उपाद् यामयमावपि ।
दारकर्म परिणयो ३जामाता दुहितुः पतिः ॥ १८२ ॥
४उपपतिस्तु जारः स्याद्५भुजङ्गो गणिकापतिः ।
६जम्पती दम्पती जायापती भार्यापती समाः ॥ १८३ ॥
७यौतकं युतयोर्देयं सुदायो हरणञ्च तत् ।
८कृताभिषेका महिषी९भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ॥ १८४ ॥
१०सैरन्ध्री याऽन्यवेश्मस्था स्वतन्त्रा शिल्पजीविनी ।
११असिक्न्यन्तःपुरप्रेष्या १२दूतीसञ्चारिके समे ॥ १८५ ॥

---

१. 'पतिके मित्रों'का १ नाम है—जन्याः ॥

२. 'विवाह'के ८ नाम हैं—विवाहः पाणिग्रहणम्, उद्वाहः, उपयामः, उपयमः, दारकर्म (-र्मन्), परिणयः ॥

शेषश्चात्र—जाम्बूलमालिकोद्वाहे वरयात्रा तु दौन्दुभी ।
गोपाली वर्णके शान्तियात्रा वरनिमन्त्रणे ।
स्यादिन्द्राणी महे हेलिरुल्लुलुर्मङ्गलध्वनिः ॥
स्यात्तु स्वस्त्ययनं पूर्णकलशे मङ्गलाह्निकम् ।
शान्तिके मङ्गलस्नानं वारिपल्लववारिणा ॥
हस्तलेपे तु करणं हस्तबन्धे तु पीडनम् ।
तच्छेदे समवभ्रंशो धूलिभक्ते तु वार्तिकम् ॥

३. 'दामाद, जामाता'का १ नाम है—जामाता (-तृ) ॥

४. 'जार (पतिसे भिन्न स्त्रीका प्रेमी)'के २ नाम हैं—उपपतिः, जारः ॥

५. 'वेश्याके पति'का १ नाम है—भुजङ्गः (+गणिकापतिः) ॥

६. 'पति तथा पत्नी (सम्मिलित दोनोंकी जोड़ी)'के ४ नाम हैं—जम्पती, दम्पती, जायापती, भार्यापती (नि० द्विव०) ॥

७. 'दहेज'के ३ नाम हैं—यौतकम्, सुदायः (+दायः), हरणम् ॥

८. 'पटरानी'का १ नाम है—महिषी ॥

९. 'अन्य राजपत्नियों'का १ नाम है—भोगिनी ॥

१०. 'दूसरेके घरमें रहती हुई स्वतन्त्र, सब कलाओंमें निपुण तथा राजपत्नियों आदिका शृङ्गारकर जीविका चलानेवाली स्त्री'का १ नाम है—सैरन्ध्री ॥

११. 'रनिवासकी दासियों'का १ नाम है—असिक्नी ॥

१२. 'दूती'के २ नाम हैं—दूती, संचारिका ॥

१प्रज्ञा प्राज्ञी प्रजावत्यां २प्राज्ञा तु प्रज्ञयाऽन्विता ।
३स्यादाभीरी महाशूद्री जातिपुंयोगयोः समे ॥ १८६ ॥
४पुंयुज्याचार्याचार्य्यानी ५मातुलानी तु मातुली ।
६उपाध्यायान्युपाध्यायी ७क्षत्रिय्यर्यी च शूद्र्यपि ॥ १८७ ॥
८स्वत आचार्या शूद्रा च ९क्षत्त्रिया क्षत्त्रियाण्यपि ।
१०उपाध्याय्युपाध्याया स्या११दर्याऽर्याण्यौ पुनः समे ॥ १८८ ॥
१२दिधिषूस्तु पुनर्भूर्द्विरूढा१३ऽस्या दिधिषूः पतिः ।
१४स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूर्यस्य स्यात्सैव गेहिनी ॥ १८९ ॥

---

१. 'जानकार स्त्री'के २ नाम हैं—प्रज्ञा, प्राज्ञी ॥

२. 'विशिष्ट बुद्धिमती स्त्री'का १ नाम है—प्राज्ञा ॥

३. 'आभीर (ग्वाले)की स्त्री या आभीर जातिमें उत्पन्न स्त्री'का १ नाम 'आभीरी' और 'महाशूद्रकी स्त्री या महाशूद्र जातिमें उत्पन्न स्त्री'का १ नाम 'महाशूद्री' है ॥

४. 'आचार्यकी पत्नी'के २ नाम हैं—आचार्य्या, आचार्य्यानी ॥

५. 'मामी (मामाकी स्त्री)'के २ नाम हैं—मातुलानी, मातुली ॥

६. 'उपाध्यायकी स्त्री'के २ नाम हैं—उपाध्यायानी, उपाध्यायी ॥

७. 'क्षत्त्रिय तथा शूद्रकी (अन्यजात्युत्पन्न भी) स्त्री'का क्रमशः १-१ नाम है—क्षत्त्रियी, अर्यी ॥

८. 'पतिके आचार्य नहीं होनेपर भी स्वयं आचार्याका काम करनेवाली स्त्री'का १ नाम 'आचार्या' तथा 'पतिके शूद्रजातीय नहीं होनेपर भी स्वयं शूद्रजात्युत्पन्न स्त्री'का १ नाम 'शूद्रा' है ॥

९. 'पतिके क्षत्त्रिय होनेपर भी स्वयं क्षत्त्रिय-जात्युत्पन्न स्त्री'के २ नाम हैं—क्षत्त्रिया, क्षत्त्रियाणी ॥

१०. 'पतिके उपाध्याय नहीं होनेपर भी स्वयं उपाध्यायाका कार्य करनेवाली स्त्री'के २ नाम हैं—उपाध्यायी, उपाध्याया ॥

११. 'पतिके वैश्य नहीं होनेपर भी स्वयं वैश्यजातीय स्त्री'के २ नाम हैं—अर्या, अर्याणी ॥

१२. 'दोबार विवाहिता (विधवा होनेपर विवाहकी हुई स्त्री)'के ३ नाम हैं—दिधिषूः (+दिधीषूः), पुनर्भूः, द्विरूढा ॥

१३. 'दोबार विवाहिता स्त्रीके पति'का १ नाम है—दिधिषूः ॥

१४. 'दूसरी बार विवाहिता जिसकी धर्मपत्नी हो, उस द्विज (ब्राह्मण, क्षत्त्रिय या वैश्य) पति'का १ नाम है—अग्रेदिधिषूः ॥

१ज्येष्ठेऽनूढे परिवेत्ताऽनुजो दारपरिग्रही ।
२तस्य ज्येष्ठः परिवित्तिः३र्जाया तु परिवेदिनी ॥ १९० ॥
४वृषस्यन्ती कामुकी स्या५दिच्छायुक्ता तु कामुका ।
६कृतसापत्निकाऽध्यूढाऽधिविन्ना७ऽथ पतिव्रता ॥ १९१ ॥
एकपत्नी सुचरित्रा साध्वी सत्य८सतीत्वरी ।
पुंश्चली चर्षणी बन्धक्यविनीता तु पांसुला ॥ १९२ ॥
स्वैरिणी कुलटा ९याति या प्रियं साऽभिसारिका ।
१०वयस्यालिः सखी सध्रीच्य११शिश्वी तु शिशुं विना ॥ १९३ ॥
१२पतिवत्नी जीवत्पति१३र्विश्वस्ता विधवा समे ।

---

१. 'जेठे भाईके अविवाहित रहनेपर विवाहित छोटे भाई'का १ नाम है—परिवेत्ता (– तृ) ॥

२. 'विवाहित छोटे भाईका अविवाहित जेठा भाई'का १ नाम है—परिवित्तिः ॥

३. 'परिवेत्ता (अविवाहित बड़े भाईके विवाहित छोटे भाईकी पत्नी)'का १ नाम है—परिवेदिनी ॥

४. 'वृषतुल्य मैथुनकी इच्छा करनेवाली स्त्री'के २ नाम हैं—वृषस्यन्ती, कामुकी ॥

५. 'सामान्यतः मैथुनेच्छा करनेवाली स्त्री'का १ नाम है—कामुका ॥

६. 'सपत्नी (सौत) वाली स्त्री'के ३ नाम हैं—कृतसापत्निका, अध्यूढा, अधिविन्ना ॥

७. 'पतिव्रता स्त्री'के ५ नाम हैं—पतिव्रता, एकपत्नी, सुचरित्रा, साध्वी, सती ॥

८. 'व्यभिचारिणी स्त्री'के ९ नाम हैं—असती, इत्वरी, पुंश्चली, चर्षणी, बन्धकी, अविनीता, पांसुला, स्वैरिणी, कुलटा ॥

शेषश्चात्र—कुलटायां तु दुःश्रृङ्गी बन्धुदा फलकूणिका ।
धर्षणी लाञ्छनी खण्डशीला मदननालिका ॥
त्रिलोचना मनोहारी ।

९. 'अभिसारिका (संकेतित स्थानपर पतिके पास काम-वशीभूत होकर जानेवाली या पतिको बुलानेवाली स्त्री)'का १ नाम है—अभिसारिका ॥

१०. 'सखी-सहेली'के ४ नाम हैं—वयस्या, आलिः, सखी, सध्रीची ॥

११. 'सन्तानहीन स्त्री'का १ नाम है—अशिश्वी ॥

१२. 'सधवा स्त्री'के २ नाम हैं—पतिवत्नी, जीवत्पतिः (+ सधवा) ॥

१३. 'विधवा स्त्री'के २ नाम हैं—विश्वस्ता, विधवा ॥

१निर्वीरा निष्पतिसुता २जीवत्तोका तु जीवसूः ॥ १६४ ॥
३नश्यत्प्रसूतिका निन्दुः ४सश्मश्रुर्नरमालिनी ।
५कात्यायनी त्वर्द्धवृद्धा काषायवसनाऽधवा ॥ १६५ ॥
६श्रवणा भिक्षुकी मुण्डा ७पोटा तु स्त्रीनृलक्षणा ।
८साधारणस्त्री गणिका वेश्या पण्यपणाङ्गना ॥ १६६ ॥
भुजिष्या लञ्जिका रूपाजीवा ९वारवधूः पुनः ।
सा वारमुख्या१०ऽथ चुन्दी कुट्टनी शम्भली समाः ॥ १६७ ॥
११पोटा वोटा च चेटी च दासी च कुटहारिका ।
१२नग्ना तु कोटवी १३वृद्धा पलिक्न्य१४थ रजस्वला ॥ १६८ ॥
पुष्पवत्यधिरात्रेयी स्त्रीधर्मिणी मलिन्यवीः ।
उदक्या ऋतुमती च—

---

१. 'पति-पुत्रसे हीन स्त्री'के २ नाम हैं-निर्वीरा (+अवीरा), निष्पतिसुता ॥

२. जिसकी सन्तान जीवित रहती हो, उस स्त्री'के २ नाम हैं—जीवत्तोका, जीवसूः ॥

३. 'जिसकी सन्तान मर जाती हो, उस स्त्री'के २ नाम हैं—निन्दुः, नश्यत्प्रसूतिका ॥

४. 'जिस स्त्रीके दाढ़ी या मूंछके बाल हों, उस'के २ नाम हैं—सश्मश्रुः, नरमालिनी ॥

५. 'गेरुआ कपड़ा पहननेवाली अधबूढ़ी विधवा स्त्री'का १ नाम है—कात्यायनी ॥

६. 'भिक्षुकी स्त्री'के ३ नाम हैं—श्रवणा (+श्रमणा), भिक्षुकी, मुण्डा ॥

शेषश्चात्र—श्रवणायां भिक्षुकी स्यात् ।

७. 'पुरुषके लक्षणोंसे युक्त स्त्री'के २ नाम हैं—पोटा, स्त्रीनृलक्षणा ॥

८. वेश्या'के ८ नाम हैं—साधारणस्त्री, गणिका, वेश्या, पण्याङ्गना, पणाङ्गना, भुजिष्या, लञ्जिका, रूपाजीवा ॥

शेषश्चात्र—वेश्यायां तु खगालिका । वारवाणिः कामलेखा क्षुद्रा ।

९. 'सेवामें नियुक्त वेश्या'के २ नाम हैं—वारवधूः, वारमुख्या ॥

१०. 'कुटिनी'के ३ नाम हैं—चुन्दी, कुट्टनी, शम्भली ॥

११. 'दासी'के ५ नाम हैं—पोटा, वोटा, चेटी, दासी, कुटहारिका ॥

शेषश्चात्र—चेट्यां गणेरुका । वडवा कुम्भदासी च ।

१२. 'नग्न स्त्री'के २ नाम हैं—नग्ना (+नग्निका), कोटवी ॥

१३. 'बुढ़िया'के २ नाम हैं—वृद्धा, पलिक्नी ॥

१४. 'रजस्वला, ऋतुमती स्त्री'के ९ नाम हैं—रजस्वला, पुष्पवती

—१पुष्पहीना तु निष्कला ॥ १९९ ॥
२राका तु सरजाः कन्या ३स्त्रीधर्मः पुष्पमार्तवम् ।
रज४स्तत्कालस्तु ऋतुः ५सुरतं मोहनं रतम् ॥ २०० ॥
संवेशनं संप्रयोगः संभोगश्च रहो रतिः ।
ग्राम्यधर्मो निधुवनं कामकेलिः पशुक्रिया ॥ २०१ ॥
व्यवायो मैथुनं६ स्त्रीपुंसौ द्वन्द्वं मिथुनञ्च तत् ।
७अन्तर्वत्नी गुर्विणी स्याद् गर्भवत्युदरिण्यपि ॥ २०२ ॥
आपन्नसत्त्वा गुर्वी च ८श्रद्धालुर्दोहदान्विता ।
९विजाता च प्रजाता च जातापत्या प्रसूतिका ॥ २०३ ॥
१०गर्भस्तु गरभो भ्रूणो दोहदलक्षणञ्च सः ।
११गर्भाशयो जरायूल्बे—

(+पुष्पिता), आधः, आत्रेयी, स्त्रीधर्मिणी, मलिनी, अवीः, उदक्या, ऋतुमती ॥

१. 'जिसका मासिक धर्म नहीं होता हो, उस स्त्री'के २ नाम है—निष्कला, पुष्पहीना ॥

२. 'रजस्वला क्वाँरी कन्या'का १ नाम है—राका ॥

३. 'रज, ऋतुधर्म'के ४ नाम हैं—स्त्रीधर्मः, पुष्पम्, आर्तवम्, रजः (-जस्, न) ॥

४. 'स्त्रियोंके मासिक धर्म होनेके समय'का १ नाम है—ऋतुः ॥

५. 'रति, मैथुन'के १४ नाम हैं—सुरतम्, मोहनम्, रतम्, संवेशनम्, संप्रयोगः, संभोगः, रहः, रतिः, ग्राम्यधर्मः, निधुवनम्, कामकेलिः, पशुक्रिया (+पशुधर्मः), व्यवायः, मैथुनम् ॥

६. 'स्त्री-पुरुषों की जोड़ी'के ३ नाम हैं—स्त्रीपुंसौ (नि द्वि व), द्वन्द्वम्, मिथुनम् ॥

७. 'गर्भवती'के ६ नाम हैं—अन्तर्वत्नी, गुर्विणी, गर्भवती, उदरिणी, आपन्नसत्त्वा, गुर्वी ॥

८. 'गर्भके समय किसी विशेष वस्तुके खाने, देखने आदिकी इच्छा करनेवाली स्त्री'के २ नाम हैं—श्रद्धालुः, दोहदान्विता ॥

९. 'प्रसूती (प्रसव की हुई) स्त्री'के ४ नाम हैं—विजाता, प्रजाता, जातापत्या, प्रसूतिका ॥

१०. 'गर्भ'के ४ नाम हैं—गर्भः, गरभः, भ्रूणः, दोहदलक्षणम् (न) ॥

११. 'गर्भाशय'के ३ नाम हैं—गर्भाशयः, जरायुः (पु), उल्बम् (पु न) ॥

—१कललोल्बे पुनः समे ॥ २०४ ॥
२दोहदं दौर्हृदं श्रद्धा लालसा ३सूतिमासि तु ।
वैजननो ४विजननं प्रसवो ५नन्दनः पुनः ॥ २०५ ॥
उद्वहोऽङ्गात्मजः सूनुस्तनयो दारकः सुतः ।
पुत्रो ६दुहितरि स्त्रीत्वे ७तोकापत्यप्रसूतयः ॥ २०६ ॥
तुक् प्रजोभयो८र्भ्रात्रीयो भ्रातृव्यो भ्रातुरात्मजे ।
९स्वस्रीयो भागिनेयश्च जामेयः कुतपश्च सः ॥ २०७ ॥
१०नप्ता पौत्रः पुत्रपुत्रो ११दौहित्रो दुहितुः सुतः ।

---

१. 'वीर्य तथा रजके संयोग'के २ नाम हैं—कललम्, उल्बम् (२ पुन) ॥

२. 'दोहद, गर्भकालमें होनेवाली इच्छा'के ४ नाम हैं—दोहदम्, (पुन), दौर्हृदम्, श्रद्धा, लालसा (पु न)।

विमर्श—अमरसिंहने सामान्य इच्छाको 'दोहद' तथा प्रबल इच्छाको 'लालसा' कहा है (अ० को० १।७।२७—२८ ॥

३. 'प्रसवका महीना (दशम मास)'का १ नाम है—वैजननः ॥

४. 'प्रसव'के २ नाम हैं—विजननम्, प्रसवः ॥

५. 'पुत्र'के ६ नाम हैं—नन्दनः, उद्वहः, अङ्गजः (+तनुजः, तनूजः, देहजः,·········), आत्मजः, सूनुः, तनयः, दारकः, सुतः, पुत्रः ॥

शेषश्चात्र—पुत्रे तु कुलधारकः । स दायादो द्वितीयश्च ।

६. पूर्वोक्त नन्दन आदि ६ शब्द स्त्रीलिङ्ग होनेपर 'पुत्री'के पर्याय होते हैं (यथा—नन्दना, उद्वहा, अङ्गजा (+तनुजा, तनूजा, देहजा,··········) आत्मजा, सूनुः, तनया, दारिका, सुता, पुत्री)। तथा 'दुहिता' (–तृ) शब्द भी पुत्री का वाचक है ॥

शेषश्चात्र—पुत्र्यां धीदा समर्धुका । देहसंचारिणी चापि ।

७. 'सन्तान (पुत्र या पुत्री)'के ५ नाम हैं—तोकम् , अपत्यम् , प्रसूतिः, तुक् , प्रजा ॥

शेषश्चात्र—अपत्ये संतानसंतती ।

८. 'भतीजा (भाई का लड़का)'के २ नाम हैं—भ्रात्रीयः, भ्रातृव्यः, (+भ्रातृजः) ॥

९. 'भानजा (बहनका लड़का)'के ४ नाम हैं—स्वस्रीयः, भागिनेयः, जामेयः, कुतपः ॥

१०. 'पोता (लड़केका लड़का)'के २ नाम हैं—नप्ता (प्तृ), पौत्रः ॥

११. 'धेवता (पुत्रीका लड़का)'का एक नाम है—दौहित्रः ॥

१प्रतिनप्ता प्रपौत्रः स्यात्२तत्पुत्रस्तु परम्परः ॥ २०८ ॥
३पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्रीयस्तुक् पितृष्वसुः ।
४मातृष्वस्रीयस्तुङ्मातृष्वसुर्मातृष्वसेयवत् ॥ २०९ ॥
५विमातृजो वैमात्रेयो ६द्वैमातुरो द्विमातृजः ।
७सत्यास्तु तनये सांमातुरवद्भाद्रमातुरः ॥ २१० ॥
८सौभागिनेयकानीनौ सुभगाकन्ययोः सुतौ ।
९पौनर्भवपारस्त्रैणेयौ पुनर्भूपरस्त्रियोः ॥ २११ ॥
१०दास्या दासेरदासेयौ ११नाटेरस्तु नटीसुतः ।
१२बन्धुलो बान्धकिनेयः कौलटेरोऽसतीसुतः ॥ २१२ ॥
१३स तु कौलटिनेयः स्याद्यो भिक्षुकसतीसुतः ।
१४द्वावप्येतौ कौलटेयौ—

---

१. परपोता (पौत्रका पुत्र)'के २ नाम हैं-- प्रतिनप्ता (-प्तृ), प्रपौत्रः ॥

२. 'छरपोता (परपोतेका पुत्र)'का १ नाम है—परम्परः ॥

३. 'पैतृष्वसेय (फूआ + (पिताकी बहन)का लड़का)'के २ नाम हैं—पैतृष्वसेयः, पैतृष्वस्रीयः ॥

४. 'मातृष्वसेय (मौसी का लड़का)'के २ नाम हैं—मातृष्वस्रीयः, मातृष्वसेयः ॥

५. 'सौतेले भाई (विमाताका लड़का)'के २ नाम हैं—विमातृजः, वैमात्रेयः ॥

६. 'दो माताओंका पुत्र'के २ नाम हैं—द्वैमातुरः, द्विमातृजः ॥

७. 'पतिव्रताका पुत्र'के २ नाम हैं—सांमातुरः, भाद्रमातुरः, ॥

८. 'सधवा तथा क्वाँरी (अविवाहिता कन्या)के पुत्रों'के क्रमशः १–१ नाम हैं—सौभागिनेयः, कानीनः ॥

९. 'दुबारा व्याही गयी तथा परायी स्त्रीके पुत्रों'का क्रमशः १-१ नाम है—पौनर्भवः, पारस्त्रैणेयः ॥

१०. 'दासीका पुत्र'के २ नाम हैं—दासेरः, दासेयः ॥

११. 'नटीका पुत्र'के २ नाम हैं—नाटेरः नटीसुतः (+नाटेयः) ॥

१२. 'व्यभिचारिणीका पुत्र'के ३ नाम हैं—बन्धुलः, बान्धकिनेयः, कौलटेरः (+असतीसुतः) ॥

१३. 'भिक्षा माँगनेवाली सती स्त्रीका पुत्र'का १ नाम है—कौलटिनेयः ॥

१४. 'कुलटा' (उक्त दोनों स्त्रियों—व्यभिचारिणी तथा भिक्षा मांगनेवाली सती स्त्रीका पुत्र)'का १ नाम और है—कौलटेयः ॥

—[१]क्षेत्रजो देवरादिजः ॥ २१३ ॥
[२]स्वजाते त्वौरसोरस्यौ [३]मृते भर्तरि जारजः ।
गोलकोऽ[४]थामृते कुण्डो [५]भ्राता तु स्यात्सहोदरः ॥ २१४ ॥
समानोदर्यसोदर्यसगर्भसहजा अपि ।
सोदरश्च—

---

१. 'नियोग द्वारा देवर आदिसे उत्पन्न पुत्र'का १ नाम है—क्षेत्रजः[१] ॥

विमर्श—मरे हुए, असाध्य रोगवाले या नपुंसक पतिकी स्त्रीमें सन्तान-क्षय होनेकी अवस्था हो तब देवर या सपिण्ड के साथ सम्भोग द्वारा उत्पन्न सन्तान "क्षेत्रज" कहलाता है, इस विधिको 'नियोग' कहते हैं। 'नियोग' विधिसे सन्तान उत्पन्न करनेकी आज्ञा मनु भगवान्‌ने भी दी है[२]। परन्तु कलियुगमें नियोग द्वारा सन्तानोत्पत्ति करनेका कुछ शास्त्रकारोंने निषेध किया है[३] ॥

२. 'औरस (निजी) पुत्र'के २ नाम हैं—औरसः, उरस्यः ॥

३. पतिके मरनेपर जार (उपपति)से उत्पन्न पुत्र'का १ नाम है—गोलकः ॥

४. 'पतिके जीवित रहते जार (उपपति)से उत्पन्न पुत्र'का १ नाम है—कुण्डः ॥

५. 'सहोदर भाई'के ७ नाम हैं—भ्राता (-तृ), सहोदरः, समानोदर्यः, सोदर्यः, सगर्भः, सहजः, सोदरः ॥

---

१. यथाऽऽह मनुः—
"यस्तल्पजः प्रतीतस्य क्लीबस्य व्याधितस्य वा ।
स्वधर्मेण नियुक्तायां स पुत्रः 'क्षेत्रजः' स्मृतः ॥" इति ।

मनु० ९।१६७

२. तद्यथा—"देवराद्वा सपिण्डाद्वा स्त्रिया सम्यङ्नियुक्तया ।
प्रजेप्सिताऽधिगन्तव्या सन्तानस्य परिक्षये ॥
विधवायां नियुक्तस्तु घृताक्तो वाग्यतो निशि ।
एकमुत्पादयेत्पुत्रं न द्वितीयं कथञ्चन ॥"

मनु० ९।५९-६०

३. तथा चोक्तम्—"अश्वालम्भं गवालम्भं संन्यासं पलपैतृकम् ।
देवराद्वा सुतोत्पत्तिः कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥"

परं संन्यासार्थमपवादोऽपि दृश्यते । तद्यथा—
"यावद् गङ्गा च गोदा च यावच्छशिदिवाकरौ ।
अग्निहोत्रञ्च संन्यासः कलौ तावत्प्रवर्तते ॥" इति ।

—१स तु ज्येष्ठः स्यात्पित्र्यः पूर्वजोऽग्रजः ॥ २१५ ॥
२जघन्यजे यविष्ठः स्यात्कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।
स यवीयान् कनीयांश्च ३पितृव्यश्यालमातुलाः ॥ २१६ ॥
पितुः पत्न्याश्च मातुश्च भ्रातरो ४देवृदेवरौ ।
देवा चावरजे पत्युपुर्जामिस्तु भगिनी स्वसा ॥ २१७ ॥
६ननान्दा तु स्वसा पत्युर्ननन्दा नन्दिनीत्यपि ।
७पत्न्यास्तु भगिनी ज्येष्ठा ज्येष्ठश्वश्रूः कुली च सा ॥ २१८ ॥
८कनिष्ठा श्यालिका हाली यन्त्रणी केलिकुञ्चिका ।
९केलिर्द्रवः परीहासः क्रीडा लीला च नर्म च ॥ २१९ ॥
देवनं कूर्दनं खेला ललनं वर्करोऽपि च ।

---

१. 'बड़ा भाई'के ४ नाम हैं—ज्येष्ठः, पित्र्यः, पूर्वजः, अग्रजः ॥

२. 'छोटा भाई'के ७ नाम हैं—जघन्यजः, यविष्ठः, कनिष्टः, अवरजः, अनुजः, यवीयान्, कनीयान् (२ – यस्) ॥

शेषश्चात्र—स्यात्कनिष्ठे तु कन्यसः ।

३. 'चाचा (काका, ताऊ), शाला और मामा'के क्रमशः १-१ नाम हैं—पितृव्यः, श्यालः, मातुलः ॥

४. 'देवर (पतिका छोटा भाई)'के ३ नाम हैं—देवा (– वृ), देवरः, देवा (– वन्) ॥

५. 'बहन'के ३ नाम हैं—जामिः, भगिनी, स्वसा (– सृ) ॥

शेषश्चात्र—ज्येष्ठभगिन्यां तु वीरभवन्ती ।

६—'ननद (पतिकी बहन)'के ३ नाम हैं—ननान्दा, ननन्दा (२–न्द), नन्दिनी ॥

७. 'बड़ी शाली (पत्नीकी बड़ी बहन)'के २ नाम हैं—ज्येष्ठश्वश्रूः, कुली ॥

८. 'छोटी शाली (पत्नीकी छोटी बहन)'के ४ नाम हैं—श्यालिका (+शालिका), हाली, यन्त्रणी, केलिकुञ्चिका ॥

९. 'क्रीडा, केलि, खेल, हँसी'के ११ नाम हैं—केलिः (पु स्त्री), द्रवः, परीहासः (+परिहासः), क्रीडा, लीला, नर्म (– र्मन् , न), देवनम्, कूर्दनम् , खेला, ललनम् , वर्करः ॥

विमर्श—क्रीडा, खेला, कूर्दनम्—ये शब्द खेलना, कूदना इन अर्थ विशेषोंमें रूढ रहनेपर भी विशेषके आश्रयकी अपेक्षा नहीं करनेसे यहाँ क्रीडा सामान्य अर्थमें कहे गये हैं ॥

शेषश्चात्र—स्यात्तु नर्मणि । सुखोत्सवे रागरसे विनोदोऽपि किलोऽपि च ।

१वप्ता तु जनकस्तातो बीजी जनयिता पिता ॥ २२० ॥
२पितामहस्त्वस्य पिता ३तत्पिता प्रपितामहः ।
४मातुर्मातामहाद्येवं ५माताऽम्बा जननी प्रसूः ॥ २२१ ॥
सवित्री जनयित्री च ६क्रमिला तु बहुप्रसूः ।
७धात्री तु स्यादुपमाता ८वीरमाता तु वीरसूः ॥ २२२ ॥
९श्वश्रूर्माता पतिपत्न्योः १०श्वशुरस्तु तयोः पिता ।
११पितरस्तु पितुर्वंश्या १२मातुर्मातामहाः कुले ॥ २२३ ॥
१३पितरौ मातापितरौ मातरपितरौ पिता च माता च ।
१४श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ १५पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ।। २२४ ।।

---

१. 'पिता, बाप'के ६ नाम हैं—वप्ता (– प्तृ), जनकः, तातः, बीजी (– जिन्), जनयिता, पिता (२ तृ) ।।

शेषश्चात्र—वप्यो जनित्रो रेतोधास्ताते ।

२. 'दादा (पिताके पिता)'का १ नाम है—पितामहः ।।

३. 'परदादा (पितामहके पिता)'का १ नाम है—प्रपितामहः ।।

४. 'नाना'का १ नाम है—'मातामहः' और इसी प्रकार 'परनाना'का १ नाम है—'प्रमातामहः' ।।

५. 'माता'के ६ नाम हैं—माता (– तृ), अम्बा, जननी, प्रसूः, सवित्री, जनयित्री ।।

शेषश्चात्र—जानी तु मातरि ।

६. 'बहुत सन्तान उत्पन्न करनेवाली माता'का १ नाम है—क्रमिला (+ बहुप्रसूः) ।।

७. 'धाई, उपमाता'के २ नाम हैं—धात्री, उपमाता (– तृ) ।।

८. 'वीरमाता'का १ नाम है—(+ वीरमाता, – तृ), वीरसूः ।।

९. 'सास (पति या पत्नीकी माता)'का १ नाम है—श्वश्रूः ।।

१०. 'श्वशुर (पति या पत्नीका पिता)'का १ नाम है—श्वशुरः ।।

११. 'पितरों (पिताके वंशके पुरुखों)'का १ नाम है—पितरः (– तृ)।

१२. 'माताके वंशके पुरुखों'का १ नाम है—मातामहाः ।।

विमर्श—उक्त दोनों पदों ('पितरः, मातामहाः') में बहुवचनका प्रयोग पुरुखाओंके बहुत होनेकी अपेक्षासे किया गया है) ।।

१३. 'एक साथमें कहे गये माता-पिता'के ४ नाम हैं—पितरौ, मातापितरौ, मातरपितरौ (३ – तृ, नि० द्विव०) ।।

१४. 'एक साथमें कहे गये सास-श्वशुर'के २ नाम हैं—श्वश्रूश्वशुरौ, श्वशुरौ (२ नि० द्विव०) ।।

१५. 'एक साथ कहे गये पुत्र-पुत्री'का १ नाम है—पुत्रौ (नि. द्विव.) ।।

१भ्राता च भगिनी चापि भ्रातरा२वथ बान्धवः ।
स्वो ज्ञातिः स्वजनो बन्धुः सगोत्रश्च ३निजः पुनः ॥ २२५ ॥
आत्मीयः स्वः स्वकीयश्च ४सपिण्डास्तु सनाभयः ।
५तृतीया प्रकृतिः पण्डः षण्ढः क्लीबो नपुंसकम् ॥ २२६ ॥
६इन्द्रियायतनमङ्गविग्रहौ क्षेत्रगात्रतनुभूघनास्तनूः ।
मूर्तिमत्करणकायमूर्तयो वेरसंहननदेहसञ्चराः ॥ २२७ ॥
घनो बन्धः पुरं पिण्डो वपुः पुद्गलवर्ष्मणी ।
कलेवरं शरीरो७ऽस्मिन्नजीवे कुणपं शवः ॥ २२८ ॥
मृतकं ८रुण्डकबन्धौ त्वपशीर्षे क्रियायुजि ।
९वयांसि तु दशाः प्रायाः १०सामुद्रं देहलक्षणम् ॥ २२९ ॥

---

१. 'एक साथ कहे गये भाई बहन'का १ नाम है—भ्रातरौ (-तृ, नि० द्विव०) ।

विमर्श—पूर्वोक्त 'पितरौ' आदि ६ पर्यायोंमें माता-पिता आदिके २-२ होनेके कारणसे द्विवचनका प्रयोग किया गया है ॥

२. अपनी जातिवालों'के ६ नाम हैं—बान्धवः, स्वः, ज्ञातिः (पु), स्वजनः, बन्धुः, सगोत्रः ॥

३. 'निजी, आत्मीय'के ४ नाम हैं—निजः, आत्मीयः, स्वः, स्वकीयः ॥

विमर्श—'उक्त दोनों (अपनी जातिवालों तथा आत्मीय') अर्थोंमें 'स्व' शब्द सर्वनामसंज्ञक होता है ॥

४. 'सपिण्ड' (सात पीढ़ियों तक पूर्वजों)'का १ नाम है—सपिण्डः ॥

५. 'नपुंसक'के ५ नाम हैं—तृतीयाप्रकृतिः, पण्डः (+पण्डुः), षण्ढः (+शण्ढः, शण्ठः), क्लीबः, नपुंसकम् (२ पु न) ॥

६. 'शरीर'के २५ नाम हैं—इन्द्रियायतनम् , अङ्गम् , विग्रहः, क्षेत्रम् , गात्रम् , तनुः (स्त्री), भूघनः, तनूः (स्त्री), मूर्तिमत् , करणम् , कायः, मूर्तिः, वेरम् (पु न), संहननम् , देहः, (पु न), संचरः, घनः, बन्धः, पुरम् , पिण्डः (पु न), वपुः (-पुस् , न), पुद्गलः, वर्ष्म (-र्ष्मन् , न), कलेवरम् , शरीरः (पु न) ॥

७. 'शव,मुर्दा'के ३ नाम हैं—कुणपम् , शवः (२ पु न), मृतकम् ॥

८. 'शिरके कटनेपर नाचते हुए धड़ (मस्तकरहित शरीर)'के २ नाम हैं—रुण्डः, कबन्धः (पु न) ॥

९. 'वय, बाल्यादि अवस्थाओं'के ३ नाम हैं—वयांसि (-यस्), दशाः (स्त्री), प्रायाः (पु) ॥

१०. 'सामुद्रिक शास्त्र' (हाथ-पैर आदिमें शङ्ख-चक्रादि चिह्नोंका

१एकदेशे प्रतीकोऽङ्गावयवापघना अपि।
२उत्तमाङ्गं शिरो मूर्धा मौलिर्मुण्डं कमस्तके ॥ २३० ॥
वराङ्गं करणत्राणं शीर्षं मस्तिकमित्यपि।
३तज्जाः केशास्तीर्थवाकाश्चिकुराः कुन्तलाः कचाः ॥ २३१ ॥
वालाः स्युस्त४त्पराः पाशो रचना भार उच्चयः।
हस्तः पक्षः कलापश्च केशभूयस्त्ववाचकाः ॥ २३२ ॥
५अलकस्तु कर्कराल: खङ्गरश्चूर्णकुन्तलः।
६स तु भाले भ्रमरकः कुरुलो भ्रमरालकः ॥ २३३ ॥
७धम्मिल्लः संयताः केशाः ८केशवेषे कबर्य९थ।
वेणिः प्रवेणी—

शुभाशुभवर्णन करनेवाला शास्त्र-विशेष)'के २ नाम हैं—सामुद्रम् (+सामुद्रिकशास्त्राम्), देहलक्षणम् ॥

१. 'अङ्ग'के ४ नाम हैं—प्रतीकः, अङ्गम्, अवयवः, अपघनः ॥

शेषश्चात्र—देहैकदेशे गात्रम्।

२. 'मस्तक'के ११ नाम हैं—उत्तमाङ्गम्, शिरः (—रस्, न), मूर्धा (—र्धन्। पु), मौलिः (पु स्त्री), मुण्डम् (पु न), कम्, मस्तकम् (पु न), वराङ्गम्, करणत्राणम्, शीर्षम्, मस्तिकम् ॥

३. 'बाल, केश'के ६ नाम हैं—केशाः, तीर्थवाकाः, चिकुराः, (+चिहुराः), कुन्तलाः, कचाः, वालाः (पु न), बहुत्वकी अपेक्षासे यहाँ ब० व० प्रयुक्त हुआ है, अतः इन पर्यायोंका एकवचन भी होता है) ॥

४. उक्त 'केश'आदि शब्दके अन्तमें 'पाशः, रचना' आदि ७ शब्दोंके जोड़नेसे 'केश-समूह'के पर्यायवाचक शब्द बनते हैं, यथा—केशपाशः, केशरचना, केशभारः, केशोच्चयः, केशहस्तः केशपक्षः, केशकलापः ॥

५. 'स्वभावतः टेढ़े बालों'के ४ नाम हैं—अलकः (पु न), कर्करालः, खङ्गरः, चूर्णकुन्तलः ॥

६. 'ललाटपर लटकते हुए बालों (काकुल, बुलबुली)'के ३ नाम हैं—भ्रमरकः (पु न), कुरुलः, भ्रमरालकः ॥

७. 'बंधे हुए बालों'का १ नाम है—धम्मिल्लः ॥

शेषश्चात्र—धम्मिल्ले मौलिजूटकौ।

८. 'केशोंकी रचना'का १ नाम है— कबरी ॥

शेषश्चात्र—कर्बरी तु कबर्यां स्यात्।

९. 'चोटी, गूथे हुए बाल'के २ नाम हैं—वेणिः (स्त्री), प्रवेणी (+प्रवेणिः) ॥

—१शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ॥ २३४ ॥
२केशेषु वर्त्म सीमन्तः ३पलितं पाण्डुरः कचः ।
४चूडा केशी केशपाशी शिखा शिखण्डिकः समाः ॥ २३५ ॥
५सा बालानां काकपक्षः शिखण्डकशिखाण्डकौ ।
६तुण्डमास्यं मुखं वक्त्रं लपनं वदनानने ॥ २३६ ॥
७भाले गोध्यलिकालीकललाटानि ८श्रुतौ श्रवः ।
शब्दाधिष्ठानपैञ्जूषमहानादध्वनिग्रहाः ॥ २३७ ॥
कर्णः श्रोत्रं श्रवणञ्च ९वेष्टनं कर्णशष्कुली ।
१०पालिस्तु कर्णलतिका ११शङ्खो भालश्रवोऽन्तरे ॥ २३८ ॥

---

१. 'निर्मल (मैल आदिसे रहित) बाल'के २ नाम हैं—शीर्षण्यः, शिरस्यः ॥

शेषश्चात्र—प्रलोभ्यो विशदे कचे ।

२. 'मांग'का १ नाम है—सीमन्तः ॥

३. 'पके हुए (श्वेत) बाल'का १ नाम है—पलितम् (पु न) ॥

४. 'शिखा, टीक, चुटिया'के ५ नाम हैं—चूडा, केशी, केशपाशी, शिखा, शिखण्डिकः ॥

५. 'काकपक्ष' (बच्चोंके कौवेके पंखके समान दोनों भागमें कटाये हुए बाल)के ३ नाम हैं—काकपक्षः, शिखण्डकः, शिखाण्डकः ॥

६. 'मुख'के ७ नाम हैं—तुण्डम्, आस्यम्, मुखम् (पु न), वक्त्रम्, लपनम्, वदनम्, आननम् ॥

शेषश्चात्र—मुखे दन्तालयस्तेरं घनं चरं घनोत्तमम् ॥

७. 'ललाट'के ५ नाम हैं—भालम् (पु न), गोधिः (स्त्री), अलिकम्, अलीकम्, ललाटम् ॥

८. 'कान'के ९ नाम हैं—श्रुतिः, श्रवः (-वस् न), शब्दाधिष्ठानम्, पञ्जूषः (पु न), महानादः, ध्वनिग्रहः (+शब्दग्रहः), कर्णः, श्रोत्रम्, श्रवणम् (पु न) ॥

९. 'कर्णशष्कुली'के २ नाम हैं—वेष्टनम्, कर्णशष्कुली ॥

१०. 'कर्णमूल (कानके पासवाले भाग)'के २ नाम हैं—पालिः (स्त्री), कर्णलतिका ॥

शेषश्चात्र—कर्णप्रान्तस्तु धारा स्यात्कर्णमूलं तु शीलकम् ।

११. 'ललाट तथा कानके बीचवाले स्थान'का १ नाम है—शङ्खः (पु न) ॥

१चक्षुरक्षीक्षणं नेत्रं नयनं दृष्टिरम्बकम् ।
लोचनं दर्शनं दृक्च २तत्तारा तु कनीनिका ॥ २३९ ॥
३वामन्तु नयनं सौम्यं ४भानवीयन्तु दक्षिणम् ।
५असौम्येऽक्ष्ण्यनक्षि स्याद्६दीक्षणन्तु निशामनम् ॥ २४० ॥
निभालनं निशमनं निध्यानमवलोकनम ।
दर्शनं द्योतनं निर्वर्णनञ्चा७थार्द्धवीक्षणम् ॥ २४१ ॥
अपाङ्गदर्शनं काक्षः कटाक्षोऽक्षिविकूणितम् ।
८स्यादुन्मीलनमुन्मेषो ९निमेषस्तु निमीलनम् ॥ २४२ ॥
१०अक्ष्णोर्बाह्यान्तावपाङ्गौ ११भ्रूरूर्ध्वे रोमपद्धतिः ।
१२सकोपभ्रूविकारे स्याद् भ्रुभ्रुभ्रूभूपरा कुटिः ॥ २४३ ॥

---

१. 'आँख'के १० नाम हैं—चक्षुः (-क्षुस्), अक्षि (२ न), ईक्षणम्, नेत्रम् (पु न), नयनम्, दृष्टिः, अम्बकम्, लोचनम् (+विलोचनम्), दर्शनम्, दृक् (-श्, स्त्री) ॥

शेषश्चात्र—अक्षिण रूपग्रहो देवदीपः ।

२. 'आँखकी पुतली'के २ नाम हैं—तारा (पु स्त्री ।+तारका), कनीनिका ॥

३. 'बायीं आँख'का १ नाम है—सौम्यम् । (इसका चन्द्रमा देवता है) ॥

४. 'दहिनी आँख'का १ नाम है—भानवीयम् । (इसका सूर्य देवता है) ॥

५. 'सुन्दरताहीन आँख'का १ नाम है—अनक्षि ॥

६. 'देखने'के ९ नाम हैं—ईक्षणम्, निशामनम्, निभालनम्, निशमनम्, निध्यानम्, अवलोकनम्, दर्शनम्, द्योतनम्, निर्वर्णनम् ॥

७. 'कटाक्ष'के ५ नाम हैं—अर्धवीक्षणम्, अपाङ्गदर्शनम्, काक्षः, कटाक्षः, अक्षिविकूणितम् ॥

८. 'आँख खोलने'के २ नाम हैं—उन्मीलनम्, उन्मेषः ॥

९. 'आँख (की पलक) बन्द करने'के २ नाम हैं—निमेषः, निमीलनम् ॥

१०. 'आँखके आस-पासके दोनों भागों'का १ नाम है—अपाङ्गौ । (एकत्वकी विवक्षामें ए० व० भी प्रयुक्त होता है) ॥

११. 'भौंह'का १ नाम है—भ्रूः (स्त्री) ॥

१२. क्रोधसे भौंहके टेढ़े होने'के ४ नाम हैं—भ्रकुटिः, भ्रुकुटिः, भ्रूकुटिः, भृकुटिः (सब स्त्री) ॥

१कूर्चं कूर्पं भ्रुवोर्मध्ये २पक्ष्म स्यान्नेत्ररोमणि ।
३गन्धज्ञा नासिका नासा घ्राणं घोणा विकूणिका ॥ २४४ ॥
नक्रं नर्कुटकं शिङ्घि४न्योष्ठोऽधरो रदच्छदः ।
दन्तवस्त्रञ्च ५तत्प्रान्तौ सृक्कणी ६श्रसिकन्त्वधः ॥ २४५ ॥
७श्रसिकाधस्तु चिबुकं स्याद्८गल्लः सृक्कणं परः ।
९गल्लात्परः कपोलश्च १०परो गण्डः कपोलतः ॥ २४६ ॥
११ततो हनुः १२श्मश्रु कूर्चमास्यलोम च मासुरी ।
१३दाढिका दंष्ट्रिका—

---

१. 'भौहोंके मध्यभाग'के २ नाम हैं—कूर्चम् (पु न), कूर्पम् ॥

२. 'पपनी (नेत्रके बालों)'का १ नाम है—पक्ष्म (–क्ष्मन् पु न) ॥

३. 'नाक'के ९ नाम हैं—गन्धज्ञा, नासिका, नासा, घ्राणम्, घोणा, विकूणिका, नक्रम् (न । + पु), नर्कुटकम् (+ नर्कुटम्), शिङ्घिनी ॥

शेषश्चात्र—नासा तु गन्धहृत् । नसा गन्धवहा नस्या नासिक्यं गन्धनालिका ।

४. 'ओष्ठ'के ४ नाम हैं—ओष्ठः, अधरः, रदच्छदः, दन्तवस्त्रम् (पु न । किसीके मतसे 'अधर' शब्द नीचेवाले ओष्ठका पर्याय है) ॥

शेषश्चात्र—ओष्टे तु दशनोच्छिष्टो रसालेपी च वाग्दलम् ।

५. 'ओष्ठप्रान्तों (ओष्ठके दोनों भागों—गलजबड़ों)'का १ नाम है—सृक्कणी (क्कि । + सृक्वणी,–क्कि, सृक्किणी,—क्किन् । द्वित्वापेक्षासे द्विवचनका प्रयोग किया गया है) ॥

६. 'ओष्ठके नीचेवाले भाग'का १ नाम है—अ्रसिकम् ॥

७. 'उक्त असिकके नीचेवाले भाग, ठुड्ढी'का १ नाम है—चिबुकम् ॥

८. 'गलजबड़ोंके बादवाले भाग'का १ नाम है—गल्लः ॥

९. 'कपोल, गाल (गल्लके बादवाले भाग)'का १ नाम है—कपोलः ॥

१०. 'कपोलके बादवाले भाग'का १ नाम है—गण्डः ॥

विमर्श—विशेष भेद नहीं होनेसे 'गल्लः, कपोलः, गण्डः'—ये तीनों शब्द एकार्थक ('गाल'के वाचक) ही हैं, ऐसा भी किसी का मत है ॥

११. 'ठुड्ढी दाढ़ी' या—ऊपरवाले जबड़े'का १ नाम है—हनुः (पु स्त्री) ॥

१२. 'दाढ़ीके बाल'के ४ नाम हैं—श्मश्रु (न), कूर्चम् (पु न), आस्यलोम (–मन्), मासुरी ॥

शेषश्चात्र—श्मश्रुणि व्यञ्जनं कोटः ।

१३. 'दाढ़ी'के २ नाम हैं—दाढिका, दंष्ट्रिका (+ द्राढिका) ॥

—१दाढा दंष्ट्रा जम्भो २द्विजा रदाः ॥ २४७ ॥
रदना दशना दन्ता दंशखादनमल्लकाः ।
३राजदन्तौ तु मध्यस्थावुपरिश्रेणिकौ क्वचित् ॥ २४८ ॥
४रसज्ञा रसना जिह्वा लोला ५तालु तु काकुदम् ।
६सुधास्रवा घण्टिका च लम्बिका गलशुण्डिका ॥ २४९ ॥
७कन्धरा धमनिर्ग्रीवा शिरोधिश्च शिरोधरा ।
८सा त्रिरेखा कम्बुग्रीवा९ऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥ २५० ॥
१०कृकस्तु कन्धरामध्यं ११कृकपार्श्वौ तु वीतनौ ।
१२ग्रीवाधमन्यौ प्राग् नीले १३पश्चान्मन्ये कलम्बिके ॥ २५१ ॥

---

१. 'दाढ़'के ३ नाम हैं—दाढा, दंष्ट्रा, जम्भः ॥

२. 'दाँत'के ८ नाम हैं—द्विजाः, रदाः, रदनाः, दशनाः, दन्ताः, दंशाः, खादनाः, मल्लकाः । (यहाँ बहुत्यापेक्षा से बहुवचन कहा गया है) ॥

शेषश्चात्र—दन्ते मुखखुरः खरुः । दालुः ।

३. 'ऊपरमें स्थित बीचवाले दो दाँतों'का १ नाम है—राजदन्तौ ॥

विमर्श—किसी-किसीके मतसे ऊपर-नीचे (दोनों भागोंमें) स्थित दो-दो दाँतों'का १ नाम हैं—राजदन्ताः । दोनोंमें-से प्रथम मतमें दो दाँत होनेसे द्विवचन तथा दूसरे मतमें चार दाँत होनेसे बहुवचन प्रयुक्त हुआ है ॥

४. 'जीभ'के ४ नाम हैं—रसज्ञा, रसना (स्त्री न), जिह्वा, लोला ।

शेषश्चात्र—जिह्वा तु रसिका, रस्ना च रसमातृका । रसा काकुर्ललना च ।

५. 'तालु'के २ नाम हैं—तालु (न), काकुदम् ॥

शेषश्चात्र—वक्त्रदलं तु तालुनि ।

६. 'घाँटी'के ४ नाम हैं—सुधास्रवा, घण्टिका, लम्बिका, गलशुण्डिका ॥

७. 'गर्दन'के ५ नाम हैं—कन्धरा, धमनिः (स्त्री), ग्रीवा, शिरोधिः (स्त्री), शिरोधरा ॥

८. 'तीन रेखायुक्त गर्दन'का १ नाम है—कम्बुग्रीवा ॥

९. 'गर्दनके पीछेवाले भाग'के ३ नाम हैं—अवटुः, (पु स्त्री), घाटा, कृकाटिका ॥

शेषश्चात्र—अवटौ तु शिरःपीठम् ॥

१०. 'गर्दनके बीच'का १ नाम है—कृकः ॥

११. 'उक्त कृकके अगल-बगलवाले भागों'का १ नाम है—वीतनौ ॥

१२. 'गर्दनके आगेवाली दोनों नाड़ियों'का १ नाम है—नीले (–ला, स्त्री) ॥

१३. 'गर्दनके पीछेवाली दोनों नाड़ियों'का १ नाम है—कलम्बिके (–का,

१गलो निगरणः कण्ठः २काकलकस्तु तन्मणिः ।
३अंसो भुजशिरः स्कन्धो ४जत्रु सन्धिरुरोंऽसगः ॥ २५२ ॥
५भुजो बाहुः प्रवेष्टो दोर्वाहा६ऽथ भुजकोटरः ।
दोर्मूलं खण्डिकः कक्षा ७पार्श्वं स्यादेतयोरधः ॥ २५३ ॥
८कफोणिस्तु भुजामध्यं कफणिः कूर्परश्च सः ।
९अधस्तस्याऽऽमणिबन्धात् स्यात्प्रकोष्ठः कलाचिका ॥ २५४ ॥
१०प्रगण्डः कूर्परांसान्तः ११पञ्चशाखः शयः शमः ।
हस्तः पाणिः करो१२ऽस्यादौ मणिबन्धो मणिश्च सः ॥ २५५ ॥
१३करभोऽस्मादाकनिष्ठं—

स्त्री । 'वीतनौ, नीले, कलम्बिके'—इन तीनोंमें द्वित्वकी अपेक्षासे द्विवचनका प्रयोग किया गया है) ॥

१. 'कण्ठ'के ३ नाम हैं—गलः, निगरणः, कण्ठः (पु ।+पु न) ॥

२. 'कण्ठमणि'का १ नाम है—काकलकः (+काकलः) ॥

३. 'कन्धे'के ३ नाम हैं—अंसः (पु न), भुजशिरः (–रस् ।+भुजशिखरम्), स्कन्धः ॥

४. 'हँसुली' (कन्धेसे छातीको जोड़नेवाली हड्डी) का १ नाम है—जत्रु (न), ॥

५. 'बाँह, भुजा'के ५ नाम हैं—भुजः , बाहुः, (२ पु स्त्री), प्रवेष्टः, दोः (—स् , पु न), वाहा ॥

६. 'काँख'के ४ नाम हैं—भुजकोटरः (पु न), दोर्मूलम् , खण्डिकः, कक्षा (पु स्त्री) ॥

७. 'पँजड़ी (काँखके नीचेवाले भाग) का १ नाम है—पार्श्वम् (पु न) ॥

८. 'कोहुनी (बांहके बीचवाले भाग)'के ४ नाम हैं—कफोणिः (स्त्री ।+कफाणिः), भुजामध्यम् , कफणिः (स्त्री ।+पु), कूर्परः (+कुर्परः) ॥

शेषश्चात्र—कफोणौ रत्नपृष्ठकम् ।
बाहूपबाहुसन्धिश्च ।

९. 'कोनीके नीचे कलाई तकके भाग'के २ नाम हैं–प्रकोष्ठः, कलाचिका ॥

१०. 'कोहुनीसे कन्धेतकके भाग'का ४ नाम हैं—प्रगण्डः ॥

११. 'हाथ'के ६ नामहैं—पञ्चशाखः, शयः, शमः, हस्तः (पु न), पाणिः (पु), करः ॥

शेषश्चात्र—हस्ते भुजदलः सलः ॥

१२. 'मणिबन्ध (कलाई)'के २ नाम हैं—मणिबन्धः, मणिः (पु स्त्री) ॥

१३. 'कलाईसे कनिष्ठा अङ्गुलिके मूलतक बाहरी भाग'का १ नाम है—करभः ॥

—१करशाखाङ्गुली समे।
अंगुरी २चांगुलोऽङ्गुष्ठ३स्तर्जनी तु प्रदेशिनी ॥ २५६ ॥
४ज्येष्ठा तु मध्यमा मध्या ५सावित्री स्यादनामिका।
६कनीनिका तु कनिष्ठा७ऽवहस्तो हस्तपृष्ठतः ॥ २५७ ॥
८कामाङ्कुशो महाराजः करजो नखरो नखः।
करशूको भुजाकण्टः पुनर्भवपुनर्नवौ ॥ २५८ ॥
९प्रदेशिन्यादिभिः सार्धमङ्गुष्ठे वितते सति।
प्रादेशतालगोकर्णवितस्तयो यथाक्रमम् ॥ २५९ ॥
१०प्रसारितांगुलौ पाणौ चपेटः प्रतलस्तलः।
प्रहस्तस्तालिका तालः ११सिंहतलस्तु तौ युतौ ॥ २६० ॥

---

१. 'अंगुलि'के ३ नाम हैं—करशाखा, अङ्गुली (+अङ्गुलिः), अङ्गुरी ॥

२. 'अंगूठे'के २ नाम हैं—अङ्गुलः, अङ्गुष्ठः ॥

३. 'तर्जनी (अँगूठेके बादवाली अङ्गुलि)'के २ नाम हैं—तर्जनी, प्रदेशिनी ॥

४. 'बीचवाली (तर्जनीके बादवाली) अङ्गुलि'के ३ नाम हैं—ज्येष्ठा, मध्यमा, मध्या ॥

५. अनामिका (मध्यमा तथा कनिष्ठाके बीचवाली अंगुलि)'के २ नाम हैं—सावित्री, अनामिका ॥

६. 'कनिष्ठा' (सबसे छोटी अंगुलि)'के २ नाम हैं—कनीनिका, कनिष्ठा ॥

७. 'हथेलीके पीछेवाले भाग'का १ नाम है—अवहस्तः ॥

८. 'नख, नाखून'के ६ नाम हैं—कामाङ्कुशः, महाराजः, करजः (यौ०—पाणिजः, कररुहः,………), नखरः (त्रि), नखः (पु न), करशूकः, भुजाकण्टः, पुनर्भवः, पुनर्नवः ॥

९. 'तर्जनी आदि (तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा अंगुलियोंके साथ अंगुष्ठ अङ्गुलिको फैलानेपर होनेवाले नाप (लम्बाई)'का क्रमशः १–१ नाम होता है—प्रादेशः, तालः, गोकर्णः, वितस्तिः (पु स्त्री) अर्थात् 'बित्ता' ॥

१०. 'थप्पड़, चटकन'के ६ नाम हैं—चपेटः (पु स्त्री), प्रतलः, तलः, प्रहस्तः, तालिका, तालः ॥

११. 'फैलाये हुए दोनों हाथोंके सटाने (दोहथा)'का १ नाम है—सिंहतलः (+संहतलः) ॥

१संपीडितांगुलिः पाणिर्मुष्टिर्मुस्तुर्मुचुट्यपि ।
संग्राहश्चा२र्धमुष्टिस्तु खटकः ३कुब्जितः पुनः ॥ २६१ ॥
पाणिः प्रसृतः प्रसृति४स्तौ युतौ पुनरञ्जलिः ।
५प्रसृते तु द्रवाधारे गण्डूषश्चुलुकश्चलुः ॥ २६२ ॥
६हस्तः प्रामाणिको मध्ये मध्यमाङ्गुलिकूर्परम् ।
७बद्धमुष्टिरसौ रत्नि८ररत्निर्निष्कनिष्ठिकः ॥ २६३ ॥
९व्यामव्यायामन्यग्रोधास्तिर्यग्बाहू प्रसारितौ ।
१०ऊर्ध्वीकृतभुजापाणि नरमानं तु पौरुषम् ॥ २६४ ॥
११दघ्नद्वयसमात्रास्तु जान्वादेस्तत्तदुन्मिते ।

---

१. 'मुट्ठी, मुक्का'के ४ नाम हैं—मुष्टिः, मुस्तुः, (२ पु स्त्री), मुचुटी (स्त्री), संग्राहः ॥

२. 'खुली हुई (आधी बंद) मुट्ठी'का १ नाम है—खटकः ॥

३. 'पसर'के २ नाम हैं—प्रसृतः, प्रसृतिः (स्त्री) ॥

४. 'अञ्जलि'का १ नाम है—अञ्जलिः (पु) ॥

५. 'चुल्लू'के ३ नाम हैं—गण्डूषः, चुलुकः (२ पु स्त्री), चलुः (पु । +चलुकः) ॥

६. 'हाथभर (केहुनीसे मध्यमा अङ्गुलितक फैलानेसे होनेवाले २४ अंगुल या २ वित्तेकी लम्बाईवाले प्रमाणविशेष)'का १ नाम है—हस्तः ॥

७. 'निमुठ हाथभर (केहुनीसे मुट्ठी बाँधकर फेलानेसे होनेवाले नाप)'का १ नाम है—रत्निः (पु स्त्री) ॥

८. 'केहुनीसे कनिष्ठा अंगुलिके फैलानेसे होनेवाले नाप'का १ नाम है—अरत्निः (पु स्त्री) ॥

९. 'दोनों हाथ फैलानेपर होनेवाले नाप'के ३ नाम हैं— व्यामः, व्यायामः, न्यग्रोधः ॥

शेषश्चात्र—अथ व्यामे वियामः स्याद्बाहुचापस्तनूतलः ।

१०. 'पोरसा' (खड़ा होकर हाथ उठानेसे होनेवाले (साढ़े चार हाथका)नाप'का १ नाम है—पौरुषम् ॥

११. 'जानु'आदि शब्दोंके बादमें 'दघ्नम् , द्वयसम् , मात्रम् (३ त्रि) प्रत्यय लगानेसे बने हुए 'जानुदघ्नम् , जानुद्वयसम् , जानुमात्रम्' शब्द 'जानु (घुटने, ठेहुने) तक पानी आदिके नाम हो जाते हैं । यथा—जानुदघ्नं जलम् , जानुद्वयसं जलम् , जानुमात्रं जलम्'का अर्थ 'घुटनाभर पानी' होता है । (इसीप्रकार 'ऊरु' आदि शब्दोंके बाद 'दघ्न' आदि जोड़नेपर 'ऊरुदघ्नम्' आदि शब्द बनते हैं) ॥

१रीढकः पृष्ठवंशः स्यात् २पृष्ठं तु चरमं तनोः ॥ २६५ ॥
३पूर्वभाग उपस्थोऽङ्कः क्रोड उत्सङ्ग इत्यपि ।
४क्रोडोरो हृदयस्थानं वक्षो वत्सो भुजान्तरम् ॥ २६६ ॥
५स्तनान्तरं हृद् हृदयं ६स्तनौ कुचौ पयोधरौ ।
उरोजौ च ७चूचुकं तु स्तनाद् वृन्तशिखामुखाः ॥ २६७ ॥
८तुन्दं तुन्दिर्गर्भकुक्षी पिचण्डो जठरोदरे ।
९कालखण्डं कालखञ्जं कालेयं कालकं यकृत् ॥ २६८ ॥
१०दक्षिणे तिलकं क्लोम—

---

१. 'पीठकी रीढ़'के २ नाम हैं—रीढकः, पृष्ठवंशः ॥

२. 'पीठ'का १ नाम है—पृष्ठम् । (आरोपसे 'पृष्ठ' शब्द पीछेका भी वाचक है) ॥

३. 'गोद, क्रोड'के ४ नाम हैं—उपस्थः, अङ्कः, क्रोडः, उत्सङ्गः ॥

४. 'अँकवार (दोनों भुजाओंका मध्यभाग)'के ६ नाम हैं—क्रोडा (स्त्री न). उरः (-रस्, न), हृदयस्थानम्, वक्षः (—स्, न), वत्सः (पु न), भुजान्तरम् ॥

५. 'हृदय'के ३ नाम हैं—स्तनान्तरम्, हृत् (—द् न), हृदयम् ॥

शेषश्चात्र—हृद्यसहं मर्मचरं गुणाधिष्ठानकं त्रसम् ।

६. 'स्तन'के ४ नाम हैं—स्तनौ, कुचौ, पयोधरौ, उरोजौ (यौ०—उरसिजौ, वक्षोजौ,……। द्वित्वकी अपेक्षासे इनका प्रयोग द्विवचनमें हुआ है) ॥

शेषश्चात्र—गुणौ तु धरणौ ।

७. 'स्तनके अग्रभाग (जिसे बच्चे मुखमें लेकर दुग्धपान करते हैं, उस)'के ४ नाम हैं—चूचुकम् (पु न), स्तनवृन्तम्, स्तनशिखा, स्तनमुखम् ॥

शेषश्चात्र—अग्रे तयोः पिप्पलमेचकौ ।

८. 'पेट, तोंद'के ७ नाम हैं—तुन्दम्, तुन्दिः (स्त्री), गर्भः, कुक्षिः (पु । + पु स्त्री), पिचण्डः, जठरम् (पु न), उदरम् (न । + पु स्त्री) (वाचस्पतिके मतसे 'पेट'के आधारका नाम 'कुक्षि' है) ॥

९. यकृत्, कलेजा (हृदयके भागमें स्थित कृष्ण वर्णवाले मांस-विशेष)'के ५ नाम हैं—कालखण्डम्, कालखञ्जम्, कालेयम्, कालकम्, यकृत् (न) ॥

१०. 'फेफड़ा (हृदयके दहने भागमें स्थित पेटके जलाधार-विशेष)'के २ नाम हैं—तिलकम्, क्लोम (-मन्, न) ॥

—१वामे तु रक्तफेनजः ।
पुप्पसः स्या२दथ प्लीहा गुल्मो३ऽन्त्रं तु पुरीतति ॥ २६९ ॥
४रोमावली रोमलता ५नाभिः स्यात्तुन्दकूपिका ।
६नाभेरधो मूत्रपुटं बस्तिर्मूत्राशयोऽपि च ॥ २७० ॥
७मध्योऽवलग्नं विलग्नं मध्यमो८ऽथ कटः कटिः ।
श्रोणिः कलत्रं कटीरं काञ्चीपदं ककुद्मती ॥ २७१ ॥
९नितम्बारोहौ स्त्रीकट्याः पश्चा१०ज्जघनमग्रतः ।
११त्रिकं वंशाध१२स्तत्पार्श्वकूपकौ तु कुकुन्दरे ॥ २७२ ॥
१३युतौ स्फिचौ कटिप्रोथौ—

शेषश्चात्र—जठरे मलुको रोमलताधारः ।

१. 'फुफ्फुस' (हृदयके बाँये भागमें रक्तफेनसे उत्पन्न)'के २नाम हैं—रक्तफेनजः, पुप्पसः ॥

२. 'प्लीहा, गुल्मनामक रोग'के २ नाम हैं—प्लीहा, गुल्मः (पु न)

३. 'आँत'के २ नाम हैं—अन्त्रम्, पुरीतत् (न । + पु) ॥

४. 'नाभिके नीचेवाली रोमपंक्ति'के २ नाम हैं—रोमावली, रोमलता ॥

५. 'नाभि'के २ नाम हैं—नाभिः (पु स्त्री), तुन्दकूपिका ॥

शेषश्चात्र—अथ क्लोमनि । स्यात्ताल्व्यं क्लपुषं क्लोमम् ।

६. 'मूत्राशय'के ३ नाम हैं—मूत्रपुटम्, वस्तिः (पु स्त्री), मूत्राशयः ॥

७. 'शरीरके मध्यभाग'के ४ नाम हैं—मध्यः, अवलग्नम्, मध्यमः (सब पु न) ॥

८. 'कटि, कमर'के ७ नाम हैं—कटः (पु न), कटिः (स्त्री), श्रोणिः (पु स्त्री), कलत्रम्, कटीरम् काञ्चीपदम्, ककुद्मती ॥

९. 'नितम्ब (स्त्रीके चूतड़)'के २ नाम हैं—नितम्बः, आरोहः ॥

१०. 'जघन'का १ नाम है—जघनम् ॥

११. 'पीठकी रीढ़के नीचे तथा दोनों ऊरुके जोड़वाले भाग'का १ नाम है—त्रिकम् ॥

१२. 'उक्त, त्रिक'के पासवाले दोनों भागमें स्थित गर्तविशेष'का १ नाम है—कुकुन्दरे (न, द्वित्वापेक्षासे द्विवचन कहा गया है अतः एकबचन भी होता है । + पु + कुकुन्दुरः) ॥

शेषश्चात्र—कटीकूपौ तूच्चिलिङ्गौ रतावुके ।

१३. 'दोनों चूतड़ों'के २ नाम हैं—स्फिचौ (च्, स्त्री), कटिप्रोथौ । (द्वित्वकी अपेक्षासे द्विवचन कहा गया है, अतः एकवचन भी होता है) ॥

—१वराङ्गं तु च्युतिर्बुलिः ।
भगोऽपत्यपथो योनिः स्मरान्मन्दिरकूपिके ॥ २७३ ॥
स्त्रीचिह्नं२मथ पुंश्चिह्नं मेहनं शेपशेपसी ।
शिश्नं मेढ्रः कामलता लिङ्गं च ३द्वयमप्यदः ॥ २७४ ॥
गुह्यप्रजननोपस्था ४गुह्यमध्यं गुलो मणिः ।
५सीवनी तदधःसूत्रं ६स्यादण्डं पेलमण्डकः ॥ २७५ ॥
मुष्कोऽण्डकोशो वृषणो७ऽपानं पायुर्गुदं च्युतिः ।
अधोमर्म शकृद्द्वारं त्रिवलीक-बुली अपि ॥ २७६ ॥
८विटपं तु महाबीज्यमन्तरा मुष्कवङ्क्षणम् ।
९ऊरुसन्धिर्वङ्क्षणः स्यात् १०सक्थ्यूरुस्तस्य पर्व तु ॥ २७७ ॥

---

१. 'योनि'के ९ नाम हैं—वराङ्गम्, च्युतिः, बुलिः (२ स्त्री), भगः (पु न), अपत्यपथः, योनिः (पु स्त्री), स्मरमन्दिरम्, स्मरकूपिका, स्त्रीचिह्नम् ॥

२. 'लिङ्ग (पुरुषोंके पेशाब करनेवाली इन्द्रिय')के ८ नाम हैं—पुंश्चिह्नम्, मेहनम्, शेपः, शेपः (-पस्, न), शिश्नम्, मेढ्रः (२ पु न), कामलता, लिङ्गम् ॥

शेषश्चात्र—शिश्ने तु लंगुलं शंकु लाङ्गूलं शेफशेफसी ।

३. 'योनि तथा लिङ्ग' दोनोंके ३ नाम और भी हैं—गुह्यम्, प्रजननम्, उपस्थः (पु । + पु न) ॥

४. 'गुह्य (लिङ्ग)के मध्यभागस्थ मणि'के २ नाम हैं—गुलः, मणिः (पु स्त्री) ॥

५. 'गुह्य (लिङ्ग तथा योनि)'के नीचे 'स्थित सीवन'का १ नाम है—सीवनी ॥

६. 'अण्डकोष (फोता)'के ६ नाम हैं—अण्डम् (न । + न पु । + आण्डः), पेलम् (+ पेलकः), अण्डकः, मुष्कः (पु न), अण्डकोशः, वृषणः (पु न) ॥

७. 'गुदा (पाखाने का मार्ग)'के ८ नाम हैं—अपानम्, पायुः (पु), गुदम् (पु न), च्युतिः, अधोमर्म (-र्मन्), शकृद्द्वारम्, त्रिवलीकम्, बुलिः (स्त्री) ॥

८. 'अण्डकोष तथा ऊरुसन्धिके मध्यवाली रेखा'के २ नाम हैं—विटपम्, महाबीज्यम् ॥

९. 'ऊरुसन्धि'का १ नाम है (+ ऊरुसन्धिः), वङ्क्षणः ॥

१०. 'जङ्घा'के २ नाम हैं—सक्थि (न), ऊरुः (पु स्त्री) ॥

१जानुर्नलकीलोऽष्ठीवान् २पश्चाद्भागोऽस्य मन्दिरः ।
३कपोली त्वग्रिमो ४जङ्घा प्रसृता नलकीन्यपि ॥ २७८ ॥
५प्रतिजङ्घा त्वग्रजङ्घा ६पिण्डिका तु पिचण्डिका ।
७गुल्फस्तु चरणग्रन्थिर्घुटिको घुण्टको घुटः ॥ २७९ ॥
८चरणः क्रमणः पादः पदोंऽह्रिश्चलनः क्रमः ।
९पादमूलं गोहिरं स्यात् १०पार्ष्णिस्तु घुटयोरधः ॥ २८० ॥
११पादाग्रं प्रपदं १२क्षिप्रं त्वङ्गुष्ठाङ्गुलिमध्यतः ।
१३कूर्चं क्षिप्रस्योप१४र्यंह्रिस्कन्धः कूर्चशिरः समे ॥ २८१ ॥
१५तलहृदयं तु तलं मध्ये पादतलस्य तत् ।
१६तिलकः कालकः पिप्लुर्जडुलस्तिलकालकः ॥ २८२ ॥

---

१. 'घुटना, ठेहुना' ३ नाम हैं—जानुः (पु न), नलकीलः, अष्ठीवान् (—वत् , पु न) ॥

२. 'घुटनेके पीछेवाले भाग'का १ नाम है—मन्दिरः ॥

३. 'घुटनेके आगेवाले भाग'का १ नाम है—कपोली ॥

४. 'जङ्घा' (पिंडली, घुटनेके नीचेवाले भाग)के ३ नाम हैं—जङ्घा, प्रसृता, नलकीनी ॥

५. 'जङ्घाके आगेवाले भाग'के २ नाम हैं--प्रतिजङ्घा, अग्रजङ्घा ॥

६. 'पिंडलीके पीछेवाले मांसल भाग'के २ नाम हैं—पिण्डिका, पिचण्डिका ॥

७. 'पैरकी फिल्ली (घुट्टी, एड़ीके ऊपरवाली गांठ)'के ४ नाम हैं—गुल्फः (+चरणग्रन्थिः), घुटिकः, घुण्टकः, घुटः (सब पु स्त्री) ॥

८. 'पैर'के ७ नाम हैं—चरणः, (पु न), क्रमणः, पादः (+पात् —द्), पदः (पु न ।+पत्–द्), अंह्रिः (पु । अङ्घ्रिः), चलनः, क्रमः ॥

९. 'एड़ी'का १ नाम है—(+पादमूलम्) गोहिरम् ॥

१०. 'घुट्टियोंके नीचेवाले भाग'का १ नाम है—पार्ष्णिः (स्त्री) ॥

११. 'पैरके आगेवाले भाग (पैरका पंजा)'का १ नाम है—प्रपदम् ॥

१२. 'पैरके अङ्गूठे तथा अंगुलियोंके बीचवाले भाग'का १ नाम है—क्षिप्रम् ॥

१३. 'उक्त 'क्षिप्र'के ऊपरवाले भाग'का १ नाम है—कूर्चम् ॥

१४. 'उक्त 'कूर्च'के ऊपरवाले भाग'के २ नाम हैं—अंह्रिस्कन्धः, कूर्चशिरः (–रस्) ॥

१५. 'पैरके तलवे (सुपली)'के २ नाम हैं—तलहृदयम् , तलम् ॥

१६. 'अङ्गमें तिलके समान काले चिह्न'के ५ नाम हैं—तिलकः, कालकः, पिप्लुः, (पु), जडलः, तिलकालकः ॥

१रसासृग्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः ।
सप्तैव दश वैकेषां रोमत्वक्स्नायुभिः सह ॥ २८३ ॥
२रस आहारतेजोऽग्निसंभवः षड्रसासवः ।
आत्रेयोऽसृक्करो धातुर्घनमूलमहापरः ॥ २८४ ॥
३रक्तं रुधिरमाग्नेयं विस्रं तेजोभवे रसात् ।
शोणितं लोहितमसृग् वाशिष्ठं प्राणदाऽऽसुरे ॥ २८५ ॥
क्षतजं मांसकार्यस्रं ४मांसं पललजङ्गले ।
रक्तात्तेजोभवे क्रव्यं काश्यपं तरसामिषे ॥ २८६ ॥
मेदस्कृत पिशितं कीनं पलं ५पेश्यस्तु तल्लताः ।
६बुक्का हृद् हृदयं वृक्का सुरसं च तदग्रिमम् ॥ २८७ ॥
७शुष्कं वल्लूरमुत्तप्तं—

---

१. 'रसः (खाए हुए अन्नादिसे बना हुआ सार भाग), असृक् (–ज्, रक्त), मांसः (मांस), मेदः (–दस्, मेदा), अस्थि (हड्डी), मज्जा (शरीरकी हड्डियोंकी नालियोंमें होनेवाला स्निग्ध पदार्थ), शुक्रम् (वीर्य)—ये ७ 'धातवः' अर्थात् 'धातु' कहलाते हैं । किसी-किसीके मतसे उक्त ७ तथा 'रोम (–मन्, न । रोएँ,वाल), त्वक् (–च्, स्त्री । चमड़ा), स्नायुः (नाड़ी, नस)—ये ३ कुल १० 'धातवः' अर्थात् 'धातु' कहलाते हैं ॥

२. (अब क्रमसे उक्त रसादि १० के पर्यायोंको कहते हैं—) 'भोजन किये हुए पदार्थके सार भाग'के ६ नाम हैं—रसः, आहारतेजः (–जस्), अग्निसंभवः, षड्रसासवः, आत्रेयः, असृक्करः, घनधातुः, महाधातुः, मूलधातुः ॥

३. 'रक्त, खून'के १५ नाम हैं—रक्तम्, रुधिरम्, आग्नेयम्, विस्रम्, रसतेजः (–जस्), रसभवम्, शोणितम्, लोहितम्, असृक् (–ज्, न), वाशिष्ठम्, प्राणदम्, आसुरम्, क्षतजम्, मांसकारि (–रिन्), अस्रम् ॥

शेषश्चात्र—रक्ते तु शोध्यकीलाले ।

४. 'मांस'के १३ नाम हैं—मांसम् (पु न), पललम्, जङ्गलम्, (पु न), रक्ततेजः (–जस्), रक्तभवम्, क्रव्यम्, काश्यपम्, तरसम्, आमिषम् (पु न), मेदस्कृत्, पिशितम्, कीनम्, पलम् (पु न) ॥

शेषश्चात्र—मांसे तूढः समारटम् । लेपनञ्च ।

५. 'मांसपेशियों'का १ नाम है—पेश्यः (बहुत्वकी अपेक्षा से बहुवचनका प्रयोग होनेसे 'पेशी' ए० व० भी होता है) ॥

६. 'हृदय'के ५ नाम हैं—बुक्का (–क्कन्, पु । + –क्का, स्त्री । + बुक्कम्, न पु,) हृद्, हृदयम्, वृक्का (स्त्री । + पु), सुरसम् ॥

७. 'सूखे मांस'के २ नाम हैं—वल्लूरम् (त्रि), उत्तप्तम् ॥

—१पूयदूष्ये पुनः समे ।
२मेदोऽस्थिकृद्वपा मांसात्तेजो-जे गौतमं वसा ॥ २८८ ॥
३गोदं तु मस्तकस्नेहो मस्तिष्को मस्तुलुङ्गकः ।
४अस्थि कुल्यं भारद्वाजं मेदस्तेजश्च मज्जकृत् ॥ २८९ ॥
मांसपित्तं श्वदयितं कर्करो देहधारकम् ।
मेदोजं कीकसं सारः ५करोटिः शिरसोऽस्थनि ॥ २९० ॥
६कपालकर्परौ तुल्यौ ७पृष्ठस्यास्थ्नि कशेरुका ।
८शाखास्थनि स्यान्नलकं ९पार्श्वास्थ्नि वङ्क्रिपर्शुके ॥ २९१ ॥
१०शरीरास्थि करङ्कः स्यात् कङ्कालमस्थिपञ्जरः ।
११मज्जा तु कौशिकः शुक्रकरोऽस्थ्नः स्नेहसंभवौ ॥ २९२ ॥

---

१. 'पीब'के २ नाम हैं—पूयम् (पु न), दूष्यम् ॥

२. 'चर्बी'के ७ नाम हैं—मेदः (–दस् , न), अस्थिकृत् , वपा, मांस-तेजः (–जस्), मांसजम् , गौतमम् वसा ॥

३. 'मस्तिष्क, दिमाग'के ४ नाम हैं—गोदम् (न ! +पु), मस्तक-स्नेहः, मस्तिष्कः (पु न), मातुलुङ्गकः (+न) ॥

४. 'हड्डी'के १२ नाम हैं—अस्थि (न), कुल्यम् (पु न), भारद्वाजम् , मेदस्तेजः (–जस्), मज्जकृत् , मांसपित्तम् , श्वदयितम् , कर्करः, देहधारकम् , मेदोजम् , कीकसम् , सारः (+हड्डम्) ॥

५. 'मस्तककी हड्डी'का १ नाम है—करोटिः (स्त्री) ॥

६. 'कपाल, खोपड़ी'के २ नाम हैं—कपालम् (पु न । + शकलम्), कर्परः ॥

७. 'पीठकी हड्डी'का १ नाम है—कशेरुका (स्त्री न । + कशारुका, कशारु) ॥

८. 'नलिका—छोटी २ हड्डियों'का १ नाम है—नलकम् ॥

९. 'पंजड़ी (दोनों पार्श्वभागोंकी हड्डी)'के २ नाम हैं—वङ्क्रिः (स्त्री), पशुका ॥

१०. 'कंकाल (शरीरकी हड्डी)'के ३ नाम हैं—करङ्कः, कङ्कालम् (पु न), अस्थिपञ्जरः ॥

११. 'मज्जा'के ५ नाम हैं—मज्जा (–ज्जन् , पु । + स्त्री पु । + मज्जा–ज्जा, स्त्री), कौशिकः, शुक्रकरः, अस्थिस्नेहः, अस्थिसम्भवः (+अस्थितेजः,–जस्) ॥

१शुक्रं रेतो बलं बीजं वीर्यं मज्जसमुद्भवम् ।
आनन्दप्रभवं पुंस्त्वमिन्द्रियं किट्टवर्जितम् ॥ २६३ ॥
पौरुषं प्रधानधातुर्२लोम रोम तनूरुहम् ।
३त्वक् छविश्छादनी कृत्तिश्चर्माऽजिनमसृग्धरा ॥ २६४ ॥
४वस्नसा तु स्नसा स्नायु५र्नाड्यो धमनयः सिराः ।
६कण्डरा तु महास्नायु७र्मलं किट्टं ८तदद्विजम् ॥ २६५ ॥
दूषीका दूषिका ९जैह्वं कुलुकं—

---

१. 'वीर्य, शुक्र'के १२ नाम हैं—शुक्रम्, रेतः (-तस् न), बलम्, बीजम्, वीर्यम्, मज्जसमुद्भवम्, आनन्दप्रभवम्, पुंस्त्वम्, इन्द्रियम्, किट्टवर्जितम्, पौरुषम्, प्रधानधातुः ॥

२. 'रोंएं'के ३ नाम हैं—लोम, रोम (२-न् न), तनूरुहम् (पु न) ॥

शेषश्चात्र—रोमणि तु त्वग्मलं वालपुत्रकः । कूपजो मांसनिर्यासः परित्राणम् ॥

३. 'चमड़ा (सादृश्योपचारसे छिलका)'के ७ नाम हैं—त्वक् (-च्), छविः (२ स्त्री), छादनी, कृत्तिः, चर्म (-र्मन्), अजिनम्, असृग्धरा ।

विमर्श—'अमरसिंह'ने 'अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री' (२।७।४६) वचनके द्वारा पूर्वोक्त 'कृत्ति, अजिन और चर्मन्' शब्दोंको 'मृगयोनि' होनेसे सामान्य चमड़ेसे भिन्न कहा है। अतएव "मृगा अजिनयोनयः" यह वचन तथा "तत्राजिनं मृगयोनिर्मृगाश्च प्रियकादयः । मृगप्रकरणे तेऽथ प्रोक्ता अजिनयोनयः ॥" यह वाचस्पतिके वचन भी सार्थक होते हैं ॥

४. 'अङ्ग-प्रत्यङ्गोंकी सन्धि (जोड़)'के ३ नाम हैं—वस्नसा, स्नसा (स्त्री), स्नायुः (स्त्री ।+न) ॥

शेषश्चात्र—अथ स्नसा । तन्त्रनिखारुस्नावानः सन्धिबन्धनमित्यपि ।

५. 'नाड़ियों, नशों'के ३ नाम हैं—नाड्यः (+नड्यः), धमनयः (स्त्री), सिराः । (बहुत्वकी अपेक्षासे ब० व० कहा गया है, अतः ए० व० भी होता है) ॥

६. 'महास्नायु (वैद्योंके मत में—स्नायुसमूह)'के २ नाम हैं—कण्डरा, महास्नायुः ॥

७. 'मैल'के २ नाम हैं—मलम्, किट्टम् (२ पु न) ॥

८. 'कींचर (आँखकी मैल)'के २ नाम हैं—दूषीका, दूषिका ॥

९. 'जीभकी मैल'का १ नाम है—कुलुकम् ॥

—१पिप्पिका पुनः ।
दन्त्यं २कार्णं तु पिञ्जूषः ३शिङ्घाणो घ्राणसंभवम् ॥ २६६ ॥
४सृणीका स्यन्दिनी लालाऽऽस्यासवः कफकूचिका ।
५मूत्रं वस्तिमलं मेहः प्रस्रावो नृजलं स्रवः ॥ २६७ ॥
६पुष्पिका तु लिङ्गमलं ७विड् विष्ठाऽवस्करः शकृत् ।
गूथं पुरीषं शमलोच्चारौ वर्चस्कवर्चसी ॥ २६८ ॥
८वेषो नेपथ्यमाकल्पः ९परिकर्माङ्गसंस्क्रिया ।
१०उद्वर्तनमुत्सादन११मङ्गरागो विलेपनम् ॥ २६९ ॥
१२चर्चिक्यं समालभनं चर्चा स्याद् १३मण्डनं पुनः ।
प्रसाधनं प्रतिकर्म—

---

१. 'दाँतकी मैल'का १ नाम है—पिप्पिका ॥

२. 'खोंट (कानकी मैल)'का १ नाम है—पिञ्जूषः ॥

३. 'नेटा, नकटी (नाककी मैल)'का १ नाम है—शिङ्घाणः (+शिङ्घाणकः) ॥

४. लार'के ५ नाम हैं-सृणीका (+सृणिका), स्यन्दिनी, लाला, आस्यासवः, कफकूचिका ॥

५. 'मूत्र, पेशाब'के ६ नाम हैं—मूत्रम्, वस्तिमलम्, मेहः, प्रस्रावः, नृजलम्, स्रवः ॥

६. 'पुष्पिका (लिङ्गकी श्वेत वर्ण मैल)'का १ नाम है—पुष्पिका ॥

७. 'विष्ठा, मैला'के १० नाम हैं—विट् (-श्, स्त्री ।+स्त्री न ।+विट्=विष्, स्त्री), विष्ठा, अवस्करः, शकृत् (न), गूथम् (पु न), पुरीषम्, शमलम्, उच्चारः, वर्चस्कम् (पु न), वर्चः (-र्चस् ।+अशुचि) ॥

८. 'वेष या भूषण'के ३ नाम हैं—वेषः (पु न ।+वेशः), नेपथ्यम्, आकल्पः ॥

९. 'शरीरका संस्कार करना' (उबटन, साबुन आदिसे स्वच्छ करने)'का १ नाम है—परिकर्म (-र्मन्) ॥

१०. 'उबटन लगाने'के २ नाम हैं—उद्वर्तनम्, उत्सादनम् (+उच्छादनम्) ॥

११. 'कस्तूरी, कुङ्कुम आदि लपेटना'के २ नाम हैं—अङ्गरागः, विलेपनम् ॥

१२. 'चन्दन आदिका तिलक करने'के ३ नाम हैं—चर्चिक्यम्, समालभनम्, चर्चा ॥

१३. 'शृङ्गार करना, सजाना (स्तन-कपोलादिपर पत्रमकरिकादिकी रचना करना)'के ३ नाम हैं—मण्डनम्, प्रसाधनम्, प्रतिकर्म (-र्मन्) ॥

—१मार्ष्टिः स्याद् मार्जना मृजा ॥ ३०० ॥
२वासयोगस्तु चूर्णं स्यात् ३पिष्टातः पटवासकः ।
४गन्धमाल्यादिना यस्तु संस्कारः सोऽधिवासनम् ॥ ३०१ ॥
५निर्वेश उपभोगो६ऽथ स्नानं सवनमाप्लवः ।
७कर्पूरागुरुकक्कोलकस्तूरीचन्दनद्रवैः ॥ ३०२ ॥
स्याद् यक्षकर्दमो मिश्रै८र्वर्तिर्गात्रानुलेपनी ।
९चन्दनागरुकस्तूरीकुङ्कुमैस्तु चतुःसमम् ॥ ३०३ ॥
१०अगुर्वगरुराजार्हं लोहं कृमिजवंशिके ।
अनार्यजं जोङ्गकं च—

---

१. 'स्वच्छ (साफ) करना'के ३ नाम हैं—मार्ष्टिः, मार्जना मृजा ॥

२. 'सुगन्धित (सुवासित) करनेवाले चूर्ण'के २ नाम हैं—वासयोगः, चूर्णम् (पु न) ॥

३. 'कपड़ेको सुवासित करनेवाले फूल या चूर्णादि'के २ नाम हैं—पिष्टातः, पटवासकः ॥

४. 'सुगन्धित पदार्थ या माला आदिसे सुवासित करने'का १ नाम है—अधिवासनम् ।

५. 'उपभोग'के २ नाम हैं—निर्वेशः, उपभोगः ॥

६. 'स्नान, नहाना'के ३ नाम हैं–स्नानम्, सवनम्, आप्लवः (+आप्लावः) ॥

७. कर्पूर, अगर, कक्कोल, कस्तूरी और चन्दनद्रवको मिश्रितकर बनाया गया (सुगन्धपूर्ण) लेप-विशेष'का १ नाम है—यक्षकर्दमः ।

विमर्श—धन्वन्तरिका कथन है कि—कुङ्कुम, अगर, कस्तूरी, कर्पूर और चन्दनको मिलाकर बनाये गये अत्यन्त सुगन्धयुक्त लेपविशेषका नाम 'यक्षकर्दम' है ॥

८. 'वत्ती' (नाटकादि में पात्रोंके शरीरसंस्कारार्थ लगाये जानेवाले लेपविशेषकी वत्ती'के २ नाम हैं—वर्तिः (स्त्री), गात्रानुलेपनी ॥

९. 'समान भाग चन्दन, अगर, कस्तूरी और कुङ्कुमके मिश्रणसे बनाये गये और लेप विशेष'का १ नाम है—चतुःसमम् ॥

१०. 'अगर'के ८ नाम हैं—अगुरु, अगरु (२ पु न), राजार्हम्, लोहम् (पु न), कृमिजम् (+कृमिजग्धम्), वंशिका (स्त्री न), अनार्यजम्, जोङ्गकम् ।

शेषश्चात्र—अगुरौ प्रवरं शृङ्गं शीर्षकं मृदुलं लघु ।
वरद्रुमः परमदः प्रकरं गन्धदारु च ॥

—[१]मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ॥ ३०४ ॥
[२]कालागरुः काकतुण्डः [३]श्रीखण्डं रोहणद्रुमः ।
गन्धसारो मलयजश्चन्दने [४]हरिचन्दने ॥ ३०५ ॥
तैलपर्णिकगोशीर्षौ [५]पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।
कुचन्दनं ताम्रसारं रञ्जनं तिलपर्णिका ॥ ३०६ ॥
[६]जातिकोशं जातिफलं [७]कर्पूरो हिमवालुका ।
घनसारः सिताभ्रश्च चन्द्रो[८]ऽथ मृगनाभिजा ॥ ३०७ ॥
मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी गन्धधूल्यपि ।
[९]कश्मीरजन्म घुसृणं वर्णं लोहितचन्दनम् ॥ ३०८ ॥
वाह्लीकं कुङ्कुमं वह्निशिखं कालेयजागुडे ।
सङ्कोचपिशुनं रक्तं धीरं पीतनदीपने ॥ ३०९ ॥

---

१. 'मल्लिकाके फूलके समान गन्धवाले अगर'का १ नाम है—मङ्गल्या ॥

२. 'काले अगर'के २ नाम हैं—कालागरुः, काकतुण्डः ॥

३. 'चन्दन'के ५ नाम हैं—श्रीखण्डम्, रोहणद्रुमः, गन्धसारः, मलयजः, चन्दनः, (२ पु न) ॥

शेषश्चात्र—चन्दने पुनरेकाङ्गं भद्रश्रीः फलकीत्यपि ।

४. 'हरिचन्दन'के ३ नाम हैं—हरिचन्दनम् (पु न), तैलपर्णिकः, गोशीर्षः (२ पु । + १ न) ॥

५. 'रक्तचन्दन'के ६ नाम हैं—पत्राङ्गम्, रक्तचन्दनम्, कुचन्दनम्, ताम्रसारम्, रञ्जनम्, तिलपर्णिका ॥

६. 'जायफल'के २ नाम हैं—जातिकोशम् (+ जातीकोशम्, जातिकोषम्, जातीकोषम्), जातिफलम् (+ जातीफलम्, जातिः, फलम्) ॥

शेषश्चात्र—जातीफले सौमनसं पुटकं मदशौण्डकम् ।
कोशफलम् ।

७. 'कपूर'के ५ नाम हैं—कर्पूरः (पु न), हिमवालुका, घनसारः, सिताभ्रः, चन्द्रः (पु न । 'चन्द्र'के पर्याय-वाचक सभी नाम) ॥

८. 'कस्तूरी'के ५ नाम हैं—मृगनाभिजा, मृगनाभिः (स्त्री), मृगमदः, कस्तूरी, गन्धधूली ॥

९. 'कुंकुम'के १४ नाम हैं—कश्मीरजन्म (—न्मन्), घुसृणम्, वर्णम् (+ वर्ण्यम्), लोहितचन्दनम्, वाह्लीकम् (+ वाह्लिकम्), कुङ्कुमम् (न + पु), वह्निशिखम्, कालेयम्, जागुडम्, संकोचपिशुनम् (सङ्कोचम्, पिशुनम्), रक्तम्, धीरम् पीतनम्, दीपनम् ॥

१लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञ२मथ कोलकम् ।
कक्कोलकं कोषफलं ३कालीयकं तु जापकम् ॥ ३१० ॥
४यक्षधूपो बहुरूपः सालवेष्टोऽग्निवल्लभः ।
सर्जमणिः सर्जरसो रालः सर्वरसोऽपि च ॥ ३११ ॥
५धूपो वृकात् कृत्रिमाच्च तुरुष्कः सिल्हपिण्डकौ ।
६पायसस्तु वृक्षधूपः श्रीवासः सरलद्रवः ॥ ३१२ ॥
७स्थानात् स्थानान्तरं गच्छन् धूपो गन्धपिशाचिका ।
८स्थासकस्तु हस्तबिम्ब९मलङ्कारस्तु भूषणम् ॥ ३१३ ॥
परिष्काराऽऽभरणे च १०चूडामणिः शिरोमणिः ।

शेषश्चात्र—कुंकुमे तु करटं वासनीयकम् ।
प्रियङ्गुपीतं काबेरं घोरं पुष्परजो वरम् ॥
कुसुम्भञ्च जवापुष्पं कुसुमान्तञ्च गौरवम् ।

१. 'लवङ्ग'के ३ नाम हैं—लवङ्गम्, देवकुसुमम्, श्रीसंज्ञम् (श्री अर्थात् लक्ष्मी के पर्यायवाचक सब नाम) ॥

२. 'कक्कोल'के ३ नाम हैं—कोलकम् (+कोलम्), कक्कोलकम् (+कक्कोलम्), कोषफलम् ॥

३. 'जापक (या—'जायक') नामक गन्धद्रव्यविशेष)'के २ नाम हैं—कालीयकम् (+कालीयम्), जापकम् (+कालानुसार्यम्) ॥

४. 'राल'के ८ नाम हैं—यक्षधूपः, बहुरूपः, सालवेष्टः, अग्निवल्लभः, सर्जमणिः, सर्जरसः, रालः (पु न), सर्वरसः ॥

५. 'लोहबान'के ५ नाम हैं—वृकधूपः, कृत्रिमधूपः, तुरुष्कः (पु न ।+यावनः), सिल्हः, पिण्डकः ॥

६. 'देवदारुके निर्याससे बने हुए सुगन्धयुक्त गन्ध-विशेष'के ४ नाम हैं—पायसः, वृक्षधूपः, श्रीवासः, सरलद्रवः ॥

शेषश्चात्र—वृक्षधूपे च श्रीवेष्टो दधिक्षीरघृताह्वयः ।

७. 'एक जगहसे दूसरी जगह जानेवाले धूप-विशेष'का १ नाम है—गन्धपिशाचिका ॥

८. 'दिवाल आदिपर कुंकुम, चन्दन या चौरठसे दिये गये हाथके पांचों अंगुलियोंके छाप'के २ नाम हैं—स्थासकः, हस्तबिम्बम् ॥

९. 'आभूषण, गहना, जेवर'के ४ नाम हैं—अलङ्कारः, भूषणम् (पु न), परिष्कारः, आभरणम् ॥

१०. 'चूडामणि'के २ नाम हैं—चूडामणिः, शिरोमणिः (+चूडारत्नम्, शिरोरत्नम्) ॥

१नायकस्तरलो हारान्तर्मणिर्२मुकुटं पुनः ॥ ३१४ ॥
मौलिः किरीटं कोटीरमुष्णीषं ३पुष्पदाम तु ।
मूर्ध्नि माल्यं माला स्रग् ४गर्भकः केशमध्यगम् ॥ ३१५ ॥
५प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि ६पुरोन्यस्तं ललामकम् ।
७तिर्यग् वक्षसि वैकक्षं ८प्रालम्बमृजुलम्बि यत् ॥ ३१६ ॥
९सन्दर्भो रचना गुम्फः श्रन्थनं ग्रन्थनं समाः ।
१०तिलके तमालपत्रचित्रपुण्ड्रविशेषकाः ॥ ३१७ ॥
११आपीडशेखरोत्तंसाऽवतंसाः शिरसः स्रजि ।

---

१. ‘मालाके बीचवाले सामान्यसे कुछ बड़े दाने’के ३ नाम हैं—नायकः, तरलः, हारान्तर्मणिः ॥

२. ‘मुकुट’के ५ नाम हैं—मुकुटम् (न । ÷ पु न । + मकुटः), मौलिः (पु स्त्री), किरीटम् , कोटीरम् , उष्णीषम् (३ पु न) ॥

३. ‘मस्तकस्थ फूलकी माला’के ३ नाम है—माल्यम् , माला, स्रक् (—ज्) ॥

४. ‘बालों’के बीचमें स्थापित फूलकी माला’का १ नाम है—गर्भकः ॥

५. ‘चोटीसे लटकनेवाली फूलोंकी माला’का १ नाम है—प्रभ्रष्टकम् ॥

६. ‘सामने लटकती हुई फूलोंकी माला’का १ नाम है—ललामकम् ॥

७. ‘छातीपर तिर्छी लटकती हुई फूलकी माला’का १ नाम है—वैकक्षम् ॥

८. ‘कण्ठसे छातीपर सीधे लटकती हुई फूलोंकी माला’का १ नाम है—प्रालम्बम् ॥

९. ‘माला (हार आदि) बनाने (गूथने)’के ५ नाम हैं—सन्दर्भः, रचना, गुम्फः, श्रन्थनम् , ग्रन्थनम् ॥

शेषश्चात्र—रचनायां परिस्पन्दः प्रतियत्नः ।

१०. ‘तिलक (ललाट, कपोल आदिपर लगाये गये चन्दनादिकी विविध रचना)’के ५ नाम हैं—तिलकम् (पु न), तमालपत्रम् , चित्रम् (+ चित्रकम्), पुण्ड्रम् , विशेषकम् (पु न) ॥

विमर्श—उक्त पाँच पर्यायोंके विभिन्न प्रकारकी तिलकरचनाके अर्थमें प्रयुक्त होनेपर भी यहाँ विशेष भेद नहीं होनेसे इन की गणना पर्यायमें की गयी है ॥

११. ‘शिरपर लपेटी हुई माला’के ४ नाम हैं—आपीडः, शेखरः, उत्तंसः, अवतंसः (+ वतंसः । सब पु न) ॥

१उत्तंसो कर्णपूरेऽपि २पत्रलेखा तु पत्रतः ॥ ३१८ ॥
भङ्गिवल्लिलताङ्गुल्यः ३पत्रपाश्या ललाटिका ।
४बालपाश्या पारितथ्या ५कर्णिका कर्णभूषणम् ॥ ३१९ ॥
६ताटङ्कस्तु ताडपत्रं कुण्डलं कर्णवेष्टकः ।
७उत्क्षिप्तिका तु कर्णान्दुर्८बालिका कर्णपृष्ठगा ॥ ३२० ॥
९ग्रैवेयकं कण्ठभूषा १०लम्बमाना ललन्तिका ।
११प्रालम्बिका कृता हेम्नो१२रःसूत्रिका तु मौक्तिकैः ॥ ३२१ ॥

---

१. 'कर्णपूर (कानपर लटकती हुई माला)'के २ नाम हैं— उत्तंसः, अवतंसः (२ पु न) ॥

२. 'स्त्रियोंके कपोल तथा स्तनोंपर कस्तूरी–कुंकुम–चन्दनादिसे रचित पत्राकार रचना-विशेष'के ५ नाम हैं—पत्रलेखा, पत्रभङ्गिः, पत्रवल्लिः, पत्रलता, पत्राङ्गुली (+पत्रवल्लरी, पत्रमञ्जरी,……) ॥

३. 'स्वर्णपत्रादिसे निर्मित स्त्रियोंका ललाट भूषण'के २ नाम हैं—पत्रपाश्या, ललाटिका ॥

४. 'स्त्रियोंके बाल बाँधनेके लिये मोतियोंकी लड़ी, या पुष्पमाला या प्रफुल्ल लतादि'के २ नाम हैं—बालपाश्या, पारितथ्या (+पायतिथ्या) ॥

५. 'कर्णभूषण'के २ नाम हैं—कर्णिका, कर्णभूषणम् ॥

६. 'कुण्डल'के ४ नाम हैं— ताटङ्कः, ताडपत्रम् , कुण्डलम् (पु न), कर्णवेष्टकः ॥

विमर्श—''ताटङ्कः, ताडपत्रम्' ये २ नाम 'तरकी या कनफूलके और 'कुण्डलम् , कर्णवेष्टकः'—ये २ नाम 'कुण्डल'के हैं'' यह भी किसी-किसीका मत है ॥

शेषश्चात्र—अथ कुण्डले । कर्णादर्शः ॥

७. 'कानकी सिकड़ी (सोने आदि की बनी हुई जंजीर)'के २ नाम हैं—उत्क्षिप्तिका, कर्णान्दुः (स्त्री । +कर्णान्दूः) ॥

८. 'बाली (कानके पीछे तक भी पहने जानेवाला गोलाकार भूषण विशेष)'का १ नाम है—बालिका ॥

९. 'कण्ठके भूषण (कंठा, हंसुली, टीक आदि)'के २ नाम हैं—ग्रैवेयकम्, कण्ठभूषा ॥

१०. 'गर्दनसे नीचे लटकनेवाले भूषण (हलका, चन्द्रहार आदि)'का १ नाम है—ललन्तिका ॥

११. 'सोनेके बने हुए कण्ठभूषण'का १ नाम है—प्रालम्बिका ॥

१२. 'मोतीके बने हुए कण्ठभूषण'का १ नाम है—उरःसूत्रिका ॥

१हारो मुक्ताप्रालम्बस्रक्कलापावलीलताः ।
२देवच्छन्दः शतं ३साष्टं त्विन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ॥ ३२२ ॥
४तदर्धं विजयच्छन्दो ५हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ।
६अर्धं रश्मिकलापोऽस्य ७द्वादश त्वर्धमाणवः ॥ ३२३ ॥
८द्विर्द्वादशार्धगुच्छः स्यात् ९पञ्च हारफलं लताः ।
१०अर्धहारश्चतुःषष्टि११र्गुच्छमाणवमन्दराः ॥ ३२४ ॥
अपि गोस्तनगोपुच्छावर्धमर्धं यथोत्तरम् ।
१२इति हारा यष्टिभेदा१३देकावल्येकयष्टिका ॥ ३२५ ॥
कण्ठिकाऽप्य—

---

१. 'हार, मोतीकी माला'के ६ नाम हैं—हारः (पु स्त्री), मुक्ताप्रालम्बः, मुक्तास्रक् (–स्रज्), मुक्ताकलापः, मुक्तावली, मुक्तालता ॥

२. 'सौ लड़ीवाली मोतीकी माला'का १ नाम है—देवच्छन्दः ॥

३. 'एक हजार आठ लड़ीवाली मोतीकी माला'का १ नाम है—इन्द्रच्छन्दः ॥

४. 'उसके आधी (५५४) लड़ीवाली मोतीकी माला'का १ नाम है—विजयच्छन्दः ॥

५. 'एक सौ आठ लड़ीवाली मोतीकी माला'का १ नाम है—हारः ॥

६. 'उसके आधी (५४) लड़ीवाली मोतीकी माला'का १ नाम है—रश्मिकलापः ॥

७, 'बारह लड़ीवाली मोतीकी माला'का १ नाम है—अर्धमाणवः ॥

८. 'चौबीस लड़ीवाली मोतीकी माला'का १ नाम है—अर्धगुच्छः ॥

९. 'पांच लड़ीवाली मोतीकी माला'का १ नाम है—हारफलम् ॥

१०. 'चौंसठ लड़ीवाली मोतीकी माला'का १ नाम है—अर्धहारः ॥

११. 'बत्तीस, सोलह, आठ, चार और दो लड़ियोंवाली मोतीकी मालाओं'का क्रमशः १—१ नाम है—गुच्छः, माणवः, मन्दरः, गोस्तनः, गोपुच्छः ।

विमर्श—अन्य आचार्योंके मतसे ६४, ५६, ४८, ४०, ३२, १६ और ७० लड़ियोंवाली मोतीकी मालाओंका क्रमशः १—१ नाम है—हारः, रश्मिकलापः, माणवकः, अर्धहारः, अर्धगुच्छकः, कलापच्छन्दः, मन्दरः, ॥

१२. इस प्रकार लड़ियोंकी संख्याके भेदसे १४ प्रकारके हार (मोतियोंकी मालाएँ) होते हैं ॥

१३. 'एक लड़ीवाली मोतीकी माला'के ३ नाम हैं—एकावली, एकयष्टिका, कण्ठिका ॥

—१थ नक्षत्रमाला तत्संख्यमौक्तिकैः ।
२केयूरमङ्गदं बाहुभूषा३ऽथ करभूषणम् ॥ ३२६ ॥
कटको वलयं पारिहार्यावापौ च कङ्कणम् ।
हस्तसूत्रं प्रतिसर ४ऊर्मिका त्वङ्गुलीयकम् ॥ ३२७ ॥
५सा साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा ६कटिसूत्रं तु मेखला ।
कलापो रसना सारसनं काञ्ची च सप्तकी ॥ ३२८ ॥
७सा शृङ्खलं पुंस्कटिस्था ८किङ्कणी क्षुद्रघण्टिका ।
९नूपुरं तु तुलाकोटिः पादतः कटकाङ्गदे ॥ ३२९ ॥
मञ्जीरं हंसकं शिञ्जिन्यं१०शुकं वस्त्रमम्बरम् ।
सिचयो वसनं चीराऽऽच्छादौ सिक् चेलवाससी ॥ ३३० ॥
पटः प्रोतो—

---

१. 'सत्ताइस मोतियोंकी माला'का १ नाम है—नक्षत्रमाला ॥

२. 'बिजायठ, बाजूबन्द (बांहके भूषण)'के ३ नाम हैं—केयूरम्, अङ्गदम् (न । + पु), बाहुभूषा ॥

३. 'कङ्कण'के ८ नाम हैं—करभूषणम्, कटकः, वलयम्, पारिहार्यः (+पारिहार्यम्), आवापः, कङ्कणम्, हस्तसूत्रम्, प्रतिसरः (त्रि) ।

विमर्श—कुछ कोषकार 'कङ्कण'के प्रथम ५ नाम तथा 'विवाह या यज्ञादि में बांधे जानेवाले माङ्गलिक सूत्र'के अन्तिम ३ नाम हैं, ऐसा कहते हैं ॥

४. 'अंगूठी'के २ नाम हैं—ऊर्मिका, अङ्गुलीयकम् (+अङ्गलीयम्) ॥

५. 'नाम खुदी हुई अंगूठी'का १ नाम है—अङ्गुलिमुद्रा ॥

६. 'स्त्रियोंकी करधनी'के ७ नाम हैं—कटिसूत्रम्, मेखला, कलापः, रसना (स्त्री न), सारसनम्, काञ्ची, सप्तकी ।

७. 'पुरुषोंकी करधनी'का १ नाम है—शृङ्खलम् (त्रि) ॥

८. 'घुघुरू'के २ नाम हैं—किङ्कणी (+किङ्किनी), क्षुद्रघण्टिका ॥

शेषश्चात्र—अथ किङ्कण्यां घर्घरी विद्या विद्यामणिस्तथा ।

९. 'नूपुर, पावजेब'के ७ नाम हैं—नूपुरम्, तुलाकोटिः, पादकटकम् (३ पु न), पादाङ्गदम्, मञ्जीरम्, हंसकम् (२ पु न), शिञ्जिनी ॥

शेषश्चात्र—नुपुरे तु पादशीली मन्दीरं पादनालिका । (अलङ्कारशेषश्चात्र—
पादाङ्गुलीयके पादपालिका पादकीलिका ।)

१०. 'कपड़े'के १२ नाम हैं—अंशुकम्, वस्त्रम्, (पु न), अम्बरम्, सिचयः, वसनम, चीरम्, आच्छादः (+आच्छादनम्), सिक् (-च्, स्त्री), चेलम्, वासः (सस्), पटः (त्रि), प्रोतः ॥

—१ऽञ्चलस्यान्तो २वर्तिर्वस्तिश्च तद्दशाः ।
३पत्त्रोर्णं धौतकौशेयं४मुष्णीषो मूर्धवेष्टनम् ॥ ३३१ ॥
५तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ।
६त्वक्फलक्रिमिरोमभ्यः संभवात्तच्चतुर्विधम् ॥ ३३२ ॥
क्षौमकार्पासकौशेयराङ्कवादिविभेदतः ।
७क्षौमे दुकूलं दुगूलं स्यात्८कार्पासं तु बादरम् ॥ ३३३ ॥
९कौशेयं कृमिकोशोत्थं १०राङ्कवं मृगरोमजम् ।
११कम्बलः पुनरूर्णायुराविकौरभ्ररल्लकाः ॥ ३३४ ॥

शेषश्चात्र—वस्त्रे निवसनं वस्त्रं सत्रं कर्पटमित्यपि ।

१. 'कपड़ेके आँचर (छोर)'का १ नाम है—अञ्चलः (पु न) ॥

२. 'कपड़ेकी किनारी (धारी)'के ३ नाम हैं—वर्तिः, वस्तिः (२ पु स्त्री), दशाः (नि. स्त्री ब. व.) ॥

शेषश्चात्र—दशास्तु वस्त्रपेश्यः ।

३. 'रेशमी वस्त्र'के २ नाम हैं—पत्त्रोर्णम् , धौतकौशेयम् ॥

४. 'पगड़ी, या मुरेठा' (शिरपर बांधे जानेवाले कपड़े)'के २ नाम हैं—उष्णीषः (पु न), मूर्धवेष्टनम् (+शिरोवेष्टनम्) ॥

५. 'धुले हुए कपड़े'का १ नाम है—उद्गमनीयम् ।

विमर्श—यहां युग शब्दके विवक्षित नहीं होनेसे धुले हुए एक कपड़ेके अर्थमें भी 'उद्गमनीय' शब्दका प्रयोग मिलता है । यथा—"गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा—"(कु० सं० ७।११); अतएव 'भागुरि'ने—"धौतैरुद्गमनीयं तु धौतवस्त्रमुदाहृतम्" तथा 'हलायुध'ने—"धौतमुद्गमनीयञ्च—(अ० रत्नमाला २।३९६)"कहा है ॥

६. '(तीसी आदिका) छिलका, (कपास आदिका) फल, (रेशमका) कीड़ा और (भेंड़ आदिका) रोंआं—इन चार वस्तुओंसे बनानेवाले वस्त्रों'का क्रमशः १-१ नाम है—क्षौमम् , कार्पासम् , कौशेयम् , राङ्कवम् ॥ (अत एव वस्त्रके ४ भेद हैं) ॥

७. 'तीसी आदिके डण्ठलके छिलके से बननेवाले कपड़े'के ३ नाम हैं—क्षौमम् (पु न), दुकूलम् , दुगूलम् ॥

८. 'कपास (रुई) आदिके फलसे बननेवाले कपड़े'के २ नाम हैं—कार्पासम् , बादरम् ॥

९. 'रेशमके कीड़े आदिसे बननेवाले कपड़े'का १ नाम है—कौशेयम् ॥

१०. 'रङ्कु नामक मृगके रोंएंसे बननेवाले कपड़े'का १ नाम है—राङ्कवम् ॥

११. कम्बल'के ५ नाम हैं—कम्बलः (पु न), ऊर्णायुः (–युस् , पु), आविकः, औरभ्रः, रल्लकः ॥

१नवं वासोऽनाहतं स्यात्तन्त्रकं निष्प्रवाणि च ।
२प्रच्छादनं प्रावरणं संव्यानं चोत्तरीयकम् ॥ ३३५ ॥
३वैकक्षे प्रावारोत्तरासङ्गौ बृहतिकाऽपि च ।
४वराशिः स्थूलशाटः स्यात् ५परिधानं त्वधोंऽशुकम् ॥ ३३६ ॥
अन्तरीयं निवसनमुपसंव्यानमित्यपि ।
६तद्ग्रन्थिरुच्चयो नीवी ७वरस्त्र्यर्धोरुकांशुकम् ॥ ३३७ ॥
चण्डातकं चलनकं८श्चलनी त्वितरस्त्रियाः ।
९चोलः कञ्चुलिका कूर्पासकोऽङ्गिका च कञ्चुके ॥ ३३८ ॥
१०शाटी चोट्य११थ नीशारो हिमवातापहांशुके ।
१२कच्छा कच्छाटिका कक्षा परिधानाऽपराञ्चले ॥ ३३९ ॥

---

१. (बिना धुले तथा बिना पहने हुए) 'नये कपड़े'के ३ नाम हैं—अनाहतम्, तन्त्रकम्, निष्प्रवाणि (सब त्रि) ॥

२. 'दुपट्टा, चद्दर'के ४ नाम हैं—प्रच्छादनम्, प्रावरणम्, संव्यानम्, उत्तरीयकम् ॥

३. 'छातीपर तिर्छे रखे हुए चादर'के ४ नाम हैं—वैकक्षम्, प्रावारः, उत्तरासङ्गः, बृहतिका ॥

४. 'मोटी साड़ी'के २ नाम हैं—वराशिः (पु + वरासिः) स्थूलशाटः (+ स्थूलशाटकः) ॥

५. 'धोती (कमरसे नीचे पहने जानेवाले कपड़े)'के ५ नाम हैं—परिधानम्, अधोंऽशुकम् (+ अधोवस्त्रम्), अन्तरीयम्, निवसनम्, उपसंव्यानम् ॥

६. 'नीवी (कमरसे नीचे पहनी गयी साड़ी की गांठ'के २ नाम हैं—उच्चयः, नीवी ॥

७. 'साया (उत्तम स्त्रियोंके साड़ीके नीचे पहने जानेवाले लहंगेके वस्त्र)'के २ नाम हैं—चण्डातकम्, चलनकः ॥

८. 'सामान्य स्त्रियोंकी साड़ीके नीचे पहने जानेवाले वस्त्र'का १ नाम है—चलनी ॥

९. 'स्त्रियों की चोली-ब्लाउज आदि'के ५ नाम हैं—चोलः, कञ्चुलिका, कूर्पासकः (+ कूर्पासः), अङ्गिका, कञ्चुकः (पु न) ॥

१०. 'स्त्रियोंकी साड़ी'के २ नाम हैं—शाटी (पु न । + शाटः, शाटकः), चोटी (+ चोटः पु स्त्री) ॥

११. 'रजाई'का १ नाम है—नीशारः ॥

१२. 'धोतीकी लांग (पछुआ, ढेका)'के ३ नाम हैं—कच्छा, कच्छाटिका (कच्छाटी, पु स्त्री), कक्षा ॥

१कच्चापटस्तु कौपीनं २समौ नक्तककर्पटौ ।
३निचोलः प्रच्छदपटो निचुलश्चोत्तरच्छदः ॥ ३४० ॥
४उत्सवेषु सुहृद्भिर्यद् बलादाकृष्य गृह्यते ।
वस्त्रमाल्यादि तत्पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् ॥ ३४१ ॥
५तत्तु स्यादाप्रपदीनं व्याप्नोत्याप्रपदं हि यत् ।
६चीवरं भिक्षुसङ्घाटी ७जीर्णवस्त्रं पटच्चरम् ॥ ३४२ ॥
८शाणी गोणी छिद्रवस्त्रे ९जलार्द्रा क्लिन्नवाससि ।
१०पर्यस्तिका परिकरः पर्यङ्कश्चावसक्थिका ॥ ३४३ ॥
११कुथे वर्णः परिस्तोमः प्रवेणीनवतास्तराः ।

---

१. 'कौपीन, लंगोटी'के २ नाम हैं—कच्चापटः (+कच्चापुटः), कौपीनम् ॥

२. 'पानी, आदि छाननेका कपड़ा (छनना या—छननेके समान कपड़ेका टुकड़ा'के २ नाम हैं—नक्तकः, कर्पटः (पु न) ॥

३. 'गद्दी आदिपर बिछानेका चादर, पलंगपोश'के ४ नाम हैं—निचोलः, प्रच्छदपटः, निचुलः, (+निचुलकम् , पु न), उत्तरच्छदः ॥

४. 'पुत्रोत्पत्ति या विवाहादि उत्सवके समय मित्रों (या-प्रिय नौकर आदि)के द्वारा हठपूर्वक जो कपड़ा या माला (हार) आदि छीन लिया जाता है, उस (कपड़े या माला आदि)'के २ नाम हैं—पूर्णपात्रम्, पूर्णानकम् ॥

५. 'पैरकी घुट्टीतक पहुँचनेवाले वस्त्र (पाजामा, अँगरखा या बुर्का)'का १ नाम है—आप्रपदीनम् ॥

६. 'मुनि या साधु आदिके (नीचे तक पहने जानेवाले) वस्त्र'के २ नाम हैं—चीवरम्, भिक्षुसङ्घाटी ॥

७. 'पुराने वस्त्र'का १ नाम है—पटच्चरम् ॥

८. 'जालीदार कपड़े'के २ नाम हैं—शाणी, गोणी ॥

९. 'भींगे हुए कपड़े'का १ नाम है—जलार्द्रा ॥

१०. 'विशेष ढंगसे बैठकर पीठ और दोनों घुटनोंको बांधनेवाले गमछी आदि कपड़े'के ४ नाम हैं—पर्यस्तिका, परिकरः, पर्यङ्कः (+पल्यङ्कः), अवसक्थिका ॥

११. 'हाथी आदिके झूल या-रथ आदिके पर्दे' के ६ नाम हैं—कुथः (त्रि), वर्णः, परिस्तोमः (+वर्णपरिस्तोमः), प्रवेणी, नवतम्, आस्तरः (+आस्तरणम्) ॥

१अपटी काण्डपटः स्यात् प्रतिसीरा जवन्यपि ॥ ३४४ ॥
तिरस्करिण्य२थोल्लोचो वितानं कदकोऽपि च ।
चन्द्रोदये ३स्थुलं दूष्ये ४केणिका पटकुट्यपि ॥ ३४५ ॥
गुणलयनिकायां स्यात् ५संस्तरस्स्रस्तरौ समौ ।
६तल्पं शय्या शयनीयं शयनं तलिमं च तत् ॥ ३४६ ॥
७मञ्चमञ्चकपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वया समाः ।
८उच्छीर्षकमुपाद् धानबर्हौ ९पाल पतद्ग्रहः ॥ ३४७ ॥
प्रतिग्राहो १०मुकुरात्मदर्शाऽऽदर्शास्तु दर्पणे ।
११स्याद्वेत्रासनमासन्दी १२विष्टरः पीठमासनम् ॥ ३४८ ॥

---

१. 'पर्दा'के ५ नाम हैं—अपटी, काण्डपटः, प्रतिसीरा, जवनी (+यमनी, जवनिका), तिरस्करिणी ॥

२. 'चँदोवा, चाँदनी'के ४ नाम हैं—उल्लोचः, वितानम् (पु न), कदकः, चन्द्रोदयः ॥

३. 'तम्बू, सामियाना'के २ नाम हैं—स्थुलम्, दूष्यम् ॥

४. 'टेण्ट (कपड़ेके घर)'के ३ नाम हैं—केणिका, पटकुटी, गुणलयनिका ॥

५. 'पल्लव आदिके बिछौने'के २ नाम हैं—संस्तरः (+प्रस्तरः), स्रस्तरः ॥

६. 'शय्या'के ५ नाम हैं—तल्पम् (पु न), शय्या, शयनीयम्, शयनम् (पु न), तलिमम् ॥

७. 'मचान'के ५ नाम हैं—मञ्चः, मञ्चकः (पु न), पर्यङ्कः, पल्यङ्कः, खट्वा ॥

८. 'तकिया, मसनंद'के ३ नाम हैं—उच्छीर्षकम्, उपधानम्, उपबर्हम् ॥

९. 'पिकदान, उगलदान'के ३ नाम हैं—पालः (पु। +न), पतद्ग्रहः (+पतद्ग्राहः), प्रतिग्राहः (+प्रतिग्रहः) ॥

१०. 'दर्पण, आइना'के ४ नाम हैं—मुकुरः (+मकुरः, मङ्कुरः), आत्मदर्शः, आदर्शः, दर्पणः ॥

११. 'बेंतका आसन या—कुर्सी'के २ नाम हैं—वेत्रासनम्, आसन्दी ॥

१२. 'पीढ़ा या चौकी आदि बैठनेका साधन-विशेष'के ३ नाम हैं—विष्टरः (पु न), पीठम् (न स्त्री), आसनम् (पु न) ॥

१कसिपुर्भोजनाच्छादा २वौशीरं शयनासने।
३लाक्षा द्रुमामयो राक्षा रङ्गमाता पलङ्कषा ॥ ३४६ ॥
जतु क्षतघ्ना क्रिमिजा ४यावालक्तौ तु तद्रसः।
५अञ्जनं कज्जलं दीपः प्रदीपः कज्जलध्वजः ॥ ३५० ॥
स्नेहप्रियो ६गृहमणिर्दशाकर्षो दशेन्धनः।
७व्यजनं तालवृन्तं ८तद् धवित्रं मृगचर्मणः ॥ ३५१ ॥
९आलावर्तं तु वस्त्रस्य १०कङ्कतः केशमार्जनः।
प्रसाधनश्चा११थ बालक्रीडनके गुडो गिरिः ॥ ३५२ ॥
गिरियको गिरिगुडः १२समौ कन्दुकगेन्दुकौ।
१३राजा राट् पृथिवीशक्रमध्यलोकेशभूभृतः ॥ ३५३ ॥

---

१. 'खाना-कपड़ा (एक साथ कथित भोजन तथा वस्त्र)'का १ नाम है—कसिपुः (+कशिपुः) ॥

२. 'एक साथ कथित शयन और आसन'का १ नाम है—औशीरम् ॥

३. 'लाख, लाह'के ८ नाम हैं—लाक्षा, द्रुमामयः, राक्षा, रङ्गमाता (-मातृ), पलङ्कषा, जतु (न), क्षतघ्ना, क्रिमिजा ॥

४. 'अलक्तक, महावर'के २ नाम हैं—यावः (+यावकः), अलक्तः (+अलक्तकः)। (किसी २ के मतमें 'लाक्षा'से यहांतक सब शब्द एकार्थक हैं) ॥

५. 'काजल, अञ्जन'के २ नाम हैं—अञ्जनम्, कज्जलम् ॥

६. 'दीप, दिया'के ७ नाम हैं—दीपः (पु न। +दीपक), प्रदीपः, कज्जलध्वजः, स्नेहप्रियः, गृहमणिः, दशाकर्षः, दशेन्धनः ॥

७. 'पंखा, ताड़का पङ्खा'के २ नाम हैं—व्यजनम् (+वीजनम्), तालवृन्तम् ॥

८. 'मृगचर्मके पङ्खे'का १ नाम है—धवित्रम्। (इस पंखेका यज्ञमें उपयोग होता है) ॥

९. 'कपड़ेके पङ्खे'का १ नाम है—आलावर्तम् ॥

१०. 'कङ्घी'के ३ नाम हैं—कङ्कतः (त्रि) केशमार्जनः, प्रसाधनः ॥

११. 'बच्चोंके खिलौने'के ५ नाम हैं—बालक्रीडनकम्, गुडः, गिरिः (पु), गिरियकः (+गिरीयकः, गिरिकः), गिरिगुडः ॥

१२. 'गेंद'के २ नाम हैं—कन्दुकः (पु न), गेन्दुकः (+गन्दुकः) ॥

१३. 'राजा'के ११ नाम हैं—राजा (-जन्), राट् (-ज्), पृथिवीशक्रः,

महीक्षित् पार्थिवो मूर्धाभिषिक्तो भू-प्रजा-नृ-पः ।
१मध्यमो मण्डलाधीशः २सम्राट् तु शास्ति यो नृपान् ॥ ३५४ ॥
यः सर्वमण्डलस्येशो राजसूयं च योऽयजत् ।
३चक्रवर्ती सार्वभौम ४स्ते तु द्वादश भारते ॥ ३५५ ॥
५आर्षभिर्भरतस्तत्र ६सगरस्तु सुमित्रभूः ।
७मघवा वैजयि८रथाश्वसेननृपनन्दनः ॥ ३५६ ॥
सनत्कुमारो९ऽथ शान्तिः कुन्थुररो जिना अपि ।
१०सुभूमस्तु कार्तवीर्यः ११पद्मः पद्मोत्तरात्मजः ॥ ३५७ ॥
१२हरिषेणो हरिसुतो १३जयो विजयनन्दनः ।
१४ब्रह्मसूनुर्ब्रह्मदत्तः—

मध्यलोकेशः, भूभृत, महीक्षित्, पार्थिवः, मूर्धाभिषिक्तः (+मूर्धावसिक्तः), भूपः, प्रजापः, नृपः (यौ०—भूपालः, लोकपालः, नरपालः,······) ॥

१. 'मध्यम राजा (किसी एक मण्डलके स्वामी)'के २ नाम हैं—मध्यमः, मण्डलाधीशः ॥

२. 'सम्राट् (बादशाह, जो सब राजाओंपर शासन करता हो, सम्पूर्ण मण्डलोंका स्वामी हो और जिसने राजसूय यज्ञ किया हो, उस)'का १ नाम है—सम्राट् (-म्राज्) ॥

३. 'चक्रवर्ती (समस्त पृथ्वीका स्वामी)'के २ नाम हैं—चक्रवर्ती (-र्तिन्), सार्वभौमः ॥

शेषश्चात्र—चक्रवर्तिन्यधीश्वरः ॥

४. वे (चक्रवर्ती राजा) भारतमें १२ हुए हैं ॥

५. (अब क्रमसे 'भरत' आदि १२ चक्रवर्तियोंके पर्यायोंको कहते हैं—) 'भरत'के २ नाम हैं—आर्षभिः, भरतः ॥

६. 'सगर'के २ नाम हैं—सगरः, सुमित्रभूः ॥

७. 'मघवा'के २ नाम हैं—मघवा (-वन्), वैजयिः ॥

८. 'सनत्कुमार'के २ नाम हैं—अश्वसेन-नृपनन्दनः, सनत्कुमारः ॥

९. उक्त 'भरत' आदि चार चक्रवर्तियोंके अतिरिक्त 'शान्ति, कुन्थु, और अर' ये तीर्थङ्कर भी 'चक्रवर्ती' हो चुके हैं ॥

१०. 'कार्तवीर्य'के २ नाम हैं—सुभूमः, कार्तवीर्यः ॥

११. 'पद्म'के २ नाम हैं—पद्मः, पद्मोत्तरात्मजः ॥

१२. 'हरिषेण'के २ नाम हैं—हरिषेणः, हरिसुतः ॥

१३. 'जय'के २ नाम हैं—जयः, विजयनन्दनः ॥

१४. 'ब्रह्मदत्त'के २ नाम हैं—ब्रह्मसूनुः, ब्रह्मदत्तः ॥

—१सर्वेऽपीक्ष्वाकुवंशजाः ॥ ३५८ ॥
२प्राजापत्यस्त्रिपृष्ठो३ऽथ द्विपृष्ठो ब्रह्मसंभवः ।
४स्वयंभू रुद्रतनयः ५सोमभूः पुरुषोत्तमः ॥ ३५९ ॥
६शैवः पुरुषसिंहो७ऽथ महाशिरःसमुद्भवः ।
८स्यात्पुरुषपुण्डरीको दत्तोऽग्निसिंहनन्दनः ॥ ३६० ॥
९नारायणो दाशरथिः १०कृष्णस्तु वसुदेवभूः ।

१. उक्त 'भरत' आदि ३५६—३५८ बारह चक्रवर्ती 'इक्ष्वाकु'के वंशमें उत्पन्न हुए थे (स्पष्टज्ञानार्थ निम्नोक्त चक्र देखें) ॥

भारतस्य द्वादशचक्रवर्तिनां बोधकचक्रम्

क्रमाङ्काः	चक्रवर्तिनां नामानि	चक्रवर्तिपितॄणां नामानि
१	भरतः	ऋषभः
२	सगरः	सुमित्रविजयः
३	मघवा	विजयः
४	सनत्कुमारः	अश्वसेनः
५	शान्तिः	विश्वसेनः
६	कुन्थुः	सूरः
७	अरः	सुदर्शनः
८	सुभूमः	कृतवीर्यः
९	पद्मः	पद्मोत्तरः
१०	हरिषेणः	हरिः
११	जयः	विजयः
१२	ब्रह्मदत्तः	ब्रह्मा

२. 'त्रिपृष्ठ'के २ नाम हैं—प्राजापत्यः, त्रिपृष्ठः ॥

३. 'द्विपृष्ठ'के २ नाम हैं—द्विपृष्ठः, ब्रह्मसम्भवः ॥

४. 'स्वयम्भू'के २ नाम हैं—स्वयम्भूः, रुद्रतनयः ॥

५. 'पुरुषोत्तम'के २ नाम हैं—सोमभूः, पुरुषोत्तमः ॥

६. 'पुरुषसिंह'के २ नाम हैं—शैवः, पुरुषसिंहः ॥

७. 'पुरुषपुण्डरीक'के २ नाम हैं—महाशिरःसमुद्भवः, पुरुषपुण्डरीकः ॥

८. 'दत्त'के २ नाम हैं—दत्तः, अग्निसिंहनन्दनः ॥

९. 'नारायण'के २ नाम हैं—नारायणः, दाशरथिः ॥

१० 'कृष्ण'के २ नाम हैं—कृष्णः, वसुदेवभूः ॥

१वासुदेवा अमी कृष्णा नव २शुक्लाबलास्त्वमी ॥ ३६१ ॥
३अचलो विजयो भद्रः सुप्रभश्च सुदर्शनः ।
आनन्दो नन्दनः पद्मो रामो ४विष्णुद्विषस्त्वमी ॥ ३६२ ॥
५अश्वग्रीवस्तारकश्च मेरको मधुरेव च ।
निशुम्भबलिप्रह्लादलङ्केशमगधेश्वराः ॥ ३६३ ॥

---

१. 'त्रिपृष्ठ' (३५६)से यहांतक ६ अर्धचक्रवर्तियोंका कृष्ण वर्ण है ॥

२. आगे (३६२में) कहे जानेवालों का शुक्ल वर्ण है ॥

३. अचलः, विजयः, भद्रः, सुप्रभः, सुदर्शनः, आनन्दः, नन्दनः, पद्मः, रामः (इन नवोंका शुक्ल वर्ण है) ।

४. आगे (३६३में) कहे जानेवाले ६ पूर्व (३५६–३६१) कथित विष्णुरूप 'त्रिपृष्ठ' आदि ६ अर्द्धचक्रवर्तियोंके शत्रु हैं ॥

५. अश्वग्रीवः, तारकः, मेरकः, मधुः, निशुम्भः, बलिः, प्रह्लादः, लङ्केशः (रावणः), मगधेशः (जरासन्धः) । ये ६ क्रमसे त्रिपृष्ठ आदिके शत्रु हैं ॥

विमर्श—पूर्वोक्त (३५६–३६१) 'त्रिपृष्ठ' आदि ६ अर्धचक्रवर्तियोंके २–२ पर्यायोंमें से १–१ पर्यायके द्वारा उनका मुख्य नाम व्यक्त होता है, तथा १–१ पर्यायसे उनके पिताका नाम सूचित होता है। अनुपदोक्त (३६२में) 'अचलः'से 'रामः' तक ६ पूर्वोक्त (३६२) 'त्रिपृष्ठ' आदि अर्धचक्रवर्तियों'के अग्रज (बड़े भाई) हैं, तथा क्रमशः इनके भी वे ही पिता हैं, जो 'त्रिपृष्ठ' आदि ६ अर्धचक्रवर्तियोंके हैं । स्पष्ट-ज्ञानार्थ चक्र देखना चाहिए ॥

अर्धचक्रिणां तदग्रजानां तत्पितॄणां रिपूणाञ्च नामबोधकचक्रम्

क्रमा०	अर्धचक्रिणः	वर्णः	तदग्रजाः	वर्णः	तत्पितरः	तद्रिपवः
१	त्रिपृष्ठः	श्यामः	अचलः	शुक्लः	प्रजापतिः	अश्वग्रीवः
२	द्विपृष्ठः	,,	विजयः	,,	ब्रह्मा	तारकः
३	स्वयम्भूः	,,	भद्रः	,,	रुद्रः	मेरकः
४	पुरुषोत्तमः	,,	सुप्रभः	,,	सोमः	मधुः
५	पुरुषसिंहः	,,	सुदर्शनः	,,	शिवः	निशुम्भः
६	पुरुषपुण्डरीकः	,,	आनन्दः	,,	महाशिराः	बलिः
७	दत्तः	,,	नन्दनः	,,	अग्निसिंहः	प्रह्लादः
८	नारायणः	,,	पद्मः	,,	दशरथः	लंकेशः (रावणः)
९	कृष्णः	,,	रामः	,,	वसुदेवः	मगधेश्वरःजरासन्ध

१जिनैः सह त्रिषष्टिः स्युः शलाकापुरुषा अमी ।
२आदिराजः पृथुर्वैन्यो ३मान्धाता युवनाश्वजः ॥ ३६४ ॥
४धुन्धुमारः कुवलाश्वो ५हरिश्चन्द्रस्त्रिशङ्कुजः ।
६पुरूरवा बौध ऐल उर्वशीरमणश्च सः ॥ ३६५ ॥
७दौष्यन्तिर्भरतः सर्वन्दमः शकुन्तलात्मजः ।
८हैहयस्तु कार्तवीर्यो दोःसहस्रभृदर्जुनः ॥ ३६६ ॥
९कौशल्यानन्दनो दाशरथो रामो—

---

१. पूर्व (१ । २६-२८) कथित २४ जिनेन्द्रों (तीर्थङ्करों)के साथ ये ३९ ('भरत' आदि १२ चक्रवर्ती, 'त्रिपृष्ठ' आदि ९ अर्धचक्रवर्ती, 'अचल' आदि ९ बलदेव (त्रिपृष्ठ आदिके अग्रज) और 'अश्वग्रीव' आदि ९ प्रतिवासुदेव (त्रिपृष्ठ आदिके शत्रु १२+९+९+९ = ३९) मिलकर कुल ६३ (२४+३९ = ६३) 'शलाकापुरुष' कहे जाते हैं ॥

२. (अब विविध राजाओंके पर्याय कहते हैं—) 'पृथु'के ३ नाम हैं—आदिराजः, पृथुः, वैन्यः ॥

३. 'मान्धाता'के २ नाम हैं—मान्धाता (- तृ), युवनाश्वजः ॥

४. 'धुन्धुमार'के २ नाम हैं—धुन्धुमारः, कुवलाश्वः ॥

५. 'हरिश्चन्द्र'के २ नाम हैं—हरिश्चन्द्रः, त्रिशङ्कुजः ॥

६. 'पुरूरवा'के ४ नाम हैं—पुरूरवाः (- वस्), बौधः, ऐलः, उर्वशीरमणः ॥

७. 'भरत (चक्रवर्ती)'के ४ नाम हैं—दौष्यन्तिः (+दौष्मन्तिः), भरतः, सर्वदमः (+सर्वदमनः), शकुन्तलात्मजः ॥

८. 'कार्तवीय (सहस्रार्जुन)'के ४ नाम हैं—हैहयः, कार्तवीर्यः, दोःसहस्रभृत् (+सहस्रबाहुः), अर्जुनः ॥

विमर्श—ये 'मान्धाता' आदि ६ चक्रवर्ती राजा थे। जैसा कहा भी है—

मान्धाता धुन्धुमारश्च हरिश्चन्द्रः पुरूरवाः ।
भरतः कार्तवीर्यश्च षडेते चक्रवर्तिनः ॥ इति ॥

(अर्थात् मान्धाता, धुन्धुभार, हरिश्चन्द्र, पुरूरवा, भरत और कार्तवीर्य ये छ चक्रवर्ती कहाते हैं ।'

९. 'रामचन्द्र (राजा राम)'के ३ नाम हैं—कौशल्यानन्दनः, दाशरथिः, रामः (+रामभद्रः, रामचन्द्रः) ॥

—१ऽस्य तु प्रिया ।
वैदेही मैथिली सीता जानकी धरणीसुता ॥ ३६७ ॥
२रामपुत्रौ कुशलवावेकयोक्त्या कुशीलवौ ।
३सौमित्रिर्लक्ष्मणो ४वाली वालिरिन्द्रसुतश्च सः ॥ ३६८ ॥
५आदित्यसूनुः सुग्रीवो ६हनुमान् वज्रकङ्कटः ।
मारुतिः केशरिसुत आञ्जनेयोऽर्जुनध्वजः ॥ ३६९ ॥
७पौलस्त्यो रावणो रक्षो-लङ्केशो दशकन्धरः ।
८रावणिः शक्रजिन्मेघनादो मन्दोदरीसुतः ॥ ३७० ॥
९अजातशत्रुः शल्यारिर्धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ।
कङ्कोऽजमीढो १०भीमस्तु मरुत्पुत्रो वृकोदरः ॥ ३७१ ॥
किर्मीर-कीचक-वक-हिडिम्बानां निषूदनः ।

---

१. 'रामकी स्त्री (सीता)'के ५ नाम हैं—वैदेही, मैथिली, सीता, जानकी, धरणीसुता ॥

२. 'रामके पुत्रों'का १–१ नाम है—कुशः, लवः । तथा दोनों पुत्रोंका एक साथ 'कुशीलवौ' (नि० द्विव०) १ नाम है ॥

३. 'लक्ष्मण'के २ नाम हैं—सौमित्रिः, लक्ष्मणः ॥

४. 'वाली (सुग्रीवके बड़े भाई)'के ३ नाम हैं—वाली (– लिन्), वालिः, इन्द्रसुतः (+सुग्रीवाग्रजः) ॥

५. 'सुग्रीव'के २ नाम हैं—आदित्यसूनुः, सुग्रीवः ॥

६. 'हनुमान'के ६ नाम हैं—हनुमान् (– मत् ।+हनूमान् , – मत्), वज्रकङ्कटः, मारुतिः, केशरिसुतः, आञ्जनेयः, अर्जुनध्वजः ॥

७. 'रावण'के ५ नाम हैं—पौलस्त्यः, रावणः, रक्षईशः, लङ्केशः (यौ०—राक्षसेशः, लङ्कापतिः,······), दशकन्धरः (+दशास्यः, दशशिराः–रस् , दशकण्ठः,······) ॥

८. 'रावणपुत्र (मेघनाद)'के ४ नाम हैं—रावणिः, शक्रजित् , मेघनादः, मन्दोदरीसुतः ॥

९. 'युधिष्ठिर'के ६ नाम हैं—अजातशत्रुः, शल्यारिः, धर्मपुत्रः, युधिष्ठिरः, कङ्कः, अजमीढः ॥

१०. 'भीमसेन, भीम'के ७ नाम हैं—भीमः (+भीमसेनः), मरुत्पुत्रः, वृकोदरः, किर्मीरनिषूदनः, कीचकनिषूदनः, बकनिषूदनः, हिडिम्बनिषूदनः (यौ०—कीर्मिरारिः, कीचकारिः, बकारिः,·········) ॥

१अर्जुनः फाल्गुनः पार्थः सव्यसाची धनञ्जयः ॥ ३७२ ॥
राधावेधी किरीट्यैन्द्रिर्जिष्णुः श्वेतहयो नरः ।
बृहन्नटो गुडाकेशः सुभद्रेशः कपिध्वजः ॥ ३७३ ॥
बीभत्सः कर्णजित् २तस्य गाण्डीवं गाण्डिवं धनुः ।
३पाञ्चाली द्रौपदी कृष्णा सैरन्ध्री नित्ययौवना ॥ ३७४ ॥
वेदिजा याज्ञसेनी च ४कर्णश्चम्पाधिपोऽङ्गराट् ।
राधा-सूता-ऽर्कतनयः ५कालपृष्ठं तु तद्धनुः ॥ ३७५ ॥
६श्रेणिकस्तु भम्भासारो ७हालः स्यात् सातवाहनः ।
८कुमारपालश्चौलुक्यो राजर्षिः परमार्हतः ॥ ३७६ ॥
मृतस्वमोक्ता धर्मात्मा मारिव्यसनवारकः ।
९राजबीजी राजवंश्यो—

---

१. 'अर्जुन'के १७ नाम हैं—अर्जुनः, फाल्गुनः, पार्थः, सव्यसाची (-चिन्), धनञ्जयः, राधावेधी (-धिन्), किरीटी (-टिन्), ऐन्द्रिः, जिष्णुः, श्वेतहयः, नरः, बृहन्नटः, गुडाकेशः, सुभद्रेशः (+सुभद्रापतिः), कपिध्वजः, बीभत्सः, कर्णजित् (यौ०—कर्णारिः,······) ॥

शेषश्चात्र—अर्जुने विजयश्चित्रयोधी चित्राङ्कसूदनः ।
योगी धन्वी कृष्णपक्षो नन्दिघोषस्तु तद्रथः ॥
ग्रन्थिकस्तु सहदेवो नकुलस्तन्तिपालकः ।
माद्रेयाविमौ, कौन्तेया भीमार्जुनयुधिष्ठिराः ।
द्वयेऽपि पाण्डवेयाः स्युः पाण्डवाः पाण्डवायनाः ॥

२. 'अर्जुनके धनुष'के २ नाम हैं—गाण्डीवम्, गाण्डिवम् (२ पु न) ॥

३. 'द्रौपदी'के ७ नाम हैं—पाञ्चाली, द्रौपदी, कृष्णा, सैरन्ध्री, नित्ययौवना, वेदिजा, याज्ञसेनी ॥

४. 'राजा कर्ण'के ६ नाम हैं—कर्णः, चम्पाधिपः, अङ्गराट् (-राज् । +अङ्गराजः), राधातनयः, सूततनयः, अर्कतनयः (यौ०—राधेयः,······) ॥

५. 'राजा कर्णके धनुष'का १ नाम है—कालपृष्ठम् ॥

६. 'राजा श्रेणिक'के २ नाम हैं—श्रेणिजः, भम्भासारः ॥

७. 'सातवाहन'के २ नाम हैं—हालः, सातवाहनः (+सालवाहनः) ॥

८. 'कुमारपाल'के ८ नाम हैं—कुमारपालः, चौलुक्यः, राजर्षिः, परमार्हतः, मृतस्वमोक्ता (-क्तृ), धर्मात्मा (-त्मन्), मारिवारकः, व्यसन-वारकः ॥

९. 'राजकुलमें उत्पन्न'के २ नाम हैं—राजबीजी (-जिन्), राजवंश्यः ॥

—१बीज्यवंश्यौ तु वंशजे ॥ ३७७ ॥
२स्वाम्यमात्यः सुहृत्कोशो राष्ट्रदुर्गबलानि च ।
राज्याङ्गानि प्रकृतयः ३पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ ३७८ ॥
४तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्या५दावापस्त्वरिचिन्तनम् ।
६परिस्यन्दः परिकरः परिवारः परिग्रहः ॥ ३७९ ॥
परिच्छदः परिबर्हस्तन्त्रोपकरणे अपि ।
७राजशय्या महाशय्या ८भद्रासनं नृपासनम् ॥ ३८० ॥
९सिंहासनं तु तद्धैमं १०छत्रमातपवारणम् ।
११चामरं वालव्यजनं रोमगुच्छः प्रकीर्णकम् ॥ ३८१ ॥

---

१. 'वंशमें उत्पन्न'के ३ नाम हैं—बीज्यः, वंश्यः, वंशजः । (यथा — सूर्यवंशमें उत्पन्न 'राम'का नाम—सूर्यबीज्यः, सूर्यवंश्यः, सूर्यवंशजः,……) ॥

२. 'स्वामी, अमात्यः, सुहृद्, कोशः, राष्ट्रम्, दुर्गम् , बलम्—(क्रमशः राजा, मंत्री, मित्र, खजाना, राज्य, किला और सेना) ये ७ 'राज्याङ्ग' हैं, इनके २ नाम हैं—राज्याङ्गानि, प्रकृतयः ॥

३. 'नागरिकों (नगरवासियों)के समूह'के भी उक्त २ (राज्याङ्गानि, प्रकृतयः) नाम हैं ॥

४. 'अपने राज्यकी रक्षा आदिकी चिन्ता'का १ नाम है—तन्त्रम् ॥

५. 'सन्धि आदि षड्गुणोंके द्वारा शत्रुराज्यके विषय में चिन्ता करने'का १ नाम है—आवापः ॥

६. 'परिवार, परिजन' (भाई-बन्धु आदि या-नौकर-चाकर आदि)'के ८ नाम हैं—परिस्यन्दः, परिकरः, परिवारः, परिग्रहः, परिच्छदः, परिबर्हः (+परिबर्हणम्), तन्त्रम् , उपकरणम् (+परिजनः) ॥

७. 'राजशय्या (राजाकी शय्या—बहुमूल्य रत्नादिसे अलङ्कृत पलङ्ग आदि)'के २ नाम हैं—राजशय्या, महाशय्या ॥

८. 'राजाके आसन (चांदी आदिका बना हुआ राजाके बैठनेका सिंहासन)'का १ नाम है—भद्रासनम् (+नृपासनम्) ॥

९. 'सिंहासन (राजाके बैठनेके लिए सुवर्णका बना हुआ आसन)'का १ नाम है—सिंहासनम् ॥

१०. 'छाता'के २ नाम हैं—छत्रम् (त्रि), आतपवारणम् (+आतपत्रम्, उष्णवारणम्,…………) ॥

११. 'चामर (चँवर)'के ४ नाम हैं—चामरम् , वालव्यजनम् , रोमगुच्छः, प्रकीर्णकम् ॥

१स्थगी ताम्बूलकरङ्को २भृङ्गारः कनकालुका ।
३भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः ४पादपीठं पदासनम् ॥ ३८२ ॥
५अमात्यः सचिवो मन्त्री धीसखः सामवायिकः ।
६नियोगी कर्मसचिव आयुक्तो व्यापृतश्च सः ॥ ३८३ ॥
७द्रष्टा तु व्यवहाराणां प्राड्विपाकोऽक्षदर्शकः ।
८महामात्राः प्रधानानि ९पुरोधास्तु पुरोहितः ॥ ३८४ ॥
सौवस्तिको१०ऽथ द्वारस्थः क्षत्ता स्याद् द्वारपालकः ।
दौवारिकः प्रतीहारो वेत्र्युत्सारकदण्डिनः ॥ ३८५ ॥
११रक्षिवर्गेऽनीकस्थः स्या१२दध्यक्षाधिकृतौ समौ ।
१३पौरोगवः सूदाध्यक्षः १४सूदस्त्वौदनिको गुणः ॥ ३८६ ॥
भक्तकारः सूपकारः सूपारालिकवल्लवाः ।

---

१. 'पानदान, पनबट्टा'के २ नाम हैं—स्थगी, ताम्बूलकरङ्कः ॥

२. 'झारी'के २ नाम हैं—भृङ्गारः, कनकालुका (+कनकालूः) ॥

३. 'मङ्गलकलश'के २ नाम हैं—भद्रकुम्भः, पूर्णकुम्भः ॥

४. सिंहासनके पावदान'के २ नाम हैं—पादपीठम्, पदासनम् ॥

५. 'मन्त्री'के ५ नाम हैं—अमात्यः, सचिवः, मन्त्री (-न्त्रिन्), धीसखः (+बुद्धिसहायः), सामवायिकः ॥

६. 'सहायक मन्त्री'के ४ नाम हैं—नियोगी (+गिन्), कर्मसचिवः (+कर्मसहायः), आयुक्तः, व्यापृतः ॥

७. 'मुकदमेको देखनेवाला, न्यायाधीश'के २ नाम हैं—प्राड्विवाकः, अक्षदर्शकः ॥

शेषश्चात्र—स्यान्न्यायद्रष्टरि स्थेयः ॥

८. 'राज्यके मन्त्री पुरोहित और सेनापति आदि प्रधान व्यक्तियों'के २ नाम हैं—महामात्राः (त्रि), प्रधानानि ॥

९. 'पुरोहित'के ३ नाम हैं—पुरोधाः (-धस्), पुरोहितः, सौवस्तिकः ॥

१०. 'द्वारपाल'के ८ नाम हैं—द्वारस्थः (+द्वाःस्थः, द्वाःस्थितः), क्षत्ता (-त्तृ), द्वारपालकः (+द्वारपालः), दौवारिकः, प्रतीहारः, वेत्री (-त्रिन्।+वेत्रधरः), उत्सारकः, दण्डी (ण्डिन्) ॥

शेषश्चात्र—द्वाःस्थे द्वाःस्थितिदर्शकः ॥

११. 'राजादिके अङ्गरक्षक'का १ नाम है—अनीकस्थः ॥

१२. 'अध्यक्ष, अधिकारी'के २ नाम हैं—अध्यक्षः, अधिकृतः ॥

१३. 'पाचकों (भोजन तैयार करनेवालों)के अध्यक्ष'के २ नाम हैं—पौरोगवः, सूदाध्यक्षः ॥

१४. 'पाचक (भोजन तैयार करनेवाले, रसोइये)'के ८ नाम हैं—सूदः, औदनिकः, गुणः, भक्तकारः, सूपकारः, सूपः, आरालिकः, वल्लवः ॥

१भौरिकः कनकाध्यक्षो २रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥ ३८७ ॥
३स्थानाध्यक्षः स्थानिकः स्या४च्छुल्काध्यक्षस्तु शौल्किकः ।
५शुल्कस्तु घट्टादिदेयं ६धर्माध्यक्षस्तु धार्मिकः ॥३८८॥
धर्माधिकरणी चा७थ हट्टाध्यक्षोऽधिकर्मिकः ।
८चतुरङ्गबलाध्यक्षः सेनानीर्दण्डनायकः ॥ ३८९ ॥
९स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे १०गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।
११स्यातामन्तःपुराध्यक्षेऽन्तर्वंशिकावरोधिकौ ॥ ३९० ॥
१२शुद्धान्तः स्यादन्तःपुरमवरोधोऽवरोधनम् ।

---

१. 'सुवर्णाध्यक्ष'के २ नाम हैं—भौरिकः (+हैरिकः), कनकाध्यक्षः ॥

२. 'रूपाध्यक्ष (टकसालके अध्यक्ष)'के २ नाम हैं—रूप्याध्यक्षः, नैष्किकः (टङ्कपतिः) ॥

३. 'स्थान (दश, या पांच ग्रामों)के अध्यक्ष'के २ नाम हैं—स्थानाध्यक्षः, स्थानिकः ॥

४. 'टैक्स (राज्यकर)के अध्यक्ष'के २ नाम हैं—शुल्काध्यक्षः, शौल्किकः ॥

५. 'नदीके तट या जङ्गल आदिके कर (टैक्स)'का १ नाम है—शुल्कः (पु न) ॥

६. 'धर्माध्यक्ष'के ३ नाम हैं—धर्माध्यक्षः, धार्मिकः, धर्माधिकरणी (-णिन्) ॥

७. 'बाजारके अध्यक्ष'के २ नाम हैं—हट्टाध्यक्षः, अधिकर्मिकः ॥

८. 'चतुरङ्गिणी सेना (हयदल, रथदल, पैदल और गजदल)के अध्यक्ष' अर्थात् 'सेनापति'के ३ नाम हैं— चतुरङ्गबलाध्यक्षः, सेनानीः, दण्डनायकः ॥

९. 'ग्रामके अध्यक्ष'का १ नाम है—स्थायुकः ॥

१०. 'बहुत ग्रामोंके अध्यक्ष'का १ नाम है—गोपः ॥

११. 'अन्तःपुर (रनिवास)के अध्यक्ष'के ३ नाम हैं—अन्तःपुराध्यक्षः, अन्तर्वंशिकः (+आन्तर्वेश्मिकः), आवरोधिकः (+आन्तःपुरिकः) ॥

शेषश्चात्र—

क्षुद्रोपकरणानां स्यादध्यक्षः पारिकर्मिकः ।
पुराध्यक्षे कोट्टपतिः पौरिको दण्डपाशिकः ॥

१२. 'एक पुरुषकी अनेक रानियोंके (तथा उपचारसे 'रनिवास' अर्थात् रानियोंके महल)'के ४ नाम हैं—शुद्धान्तः (पु न), अन्तःपुरम्, अवरोधः, अवरोधनम् ॥

१सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ३९१ ॥
२षण्ढे वर्षवरः ३शत्रौ प्रतिपक्षः परो रिपुः ।
शात्रवः प्रत्यवस्थाता प्रत्यनीकोऽभियात्यरी ॥ ३९२ ॥
दस्युः सपत्नोऽसहनो विपक्षो द्वेषी द्विषन् वैर्यहितो जिघांसुः ।
दुर्हृत् परेः पन्थकपन्थिनौ द्विट् प्रत्यर्थ्यमित्रावभिमात्यराती ॥३९३॥
४वैरं विरोधो विद्वेषो ५वयस्यः सवयाः सुहृत् ।
स्निग्धः सहचरो मित्रं सखा ६सख्यं तु सौहृदम् ॥ ३९४ ॥
सौहार्दं साप्तपदीनमैत्र्यजर्याणि संगतम् ।
७आनन्दनं त्वाप्रच्छनं स्यात् सभाजनमित्यपि ॥ ३९५ ॥
८विषयानन्तरो राजा शत्रुर्९मित्रमतः परम् ।
१०उदासीनः परतरः ११पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ॥ ३९६ ॥

---

१. 'कञ्चुकियों'के ४ नाम हैं—सौविदल्लाः, कञ्चुकिनः (-किन्), स्थापत्याः, सौविदल्लाः । (ब० व० अविवक्षित होनेसे एकवचनादिकाभी प्रयोग होता है) ॥

२. 'नपुंसक, अन्तःपुरके रक्षक'के २ नाम हैं—षण्ढः, वर्षवरः ॥

३. 'शत्रु' के २९ नाम हैं—शत्रुः, प्रतिपक्षः, परः, रिपुः, प्रत्यवस्थाता (-तृ), प्रत्यनीकः, अभियातिः, अरिः, दस्युः, सपत्नः, असहनः, विपक्षः, द्वेषी (-षिन्), द्विषन् (-षत्), वैरी (-रिन्), अहितः, जिघांसुः, दुर्हृद्, परिपन्थकः, परिपन्थी (-न्थिन्), द्विट् (-ष्), प्रत्यर्थी (र्थिन्), अमित्रः (पु ।+ असु-हृद्), अभिमातिः, अरातिः ॥

४. 'वैर' के ३ नाम हैं—वैरम्, विरोधः, विद्वेषः ॥

५. 'मित्र' के ७ नाम हैं-वयस्यः, सवयाः (-यस्), सुहृद्, स्निग्धः, सहचरः (+ सहायः), मित्रम्, सखा (-खि) ॥

६. 'मित्रता, दोस्ती' के ७ नाम हैं—सख्यम्, सौहृदम्, सौहार्दम्, साप्तपदीनम्, मैत्री, अजर्यम्, संगतम् ॥

७. 'आलिङ्गनादिसे आनन्दित करने' के ३ नाम हैं—आनन्दनम्, आप्रच्छनम्, सभाजनम् ॥

८. 'अपने राज्य के पासवाले राज्यके राजा' का १ नाम है—शत्रुः ॥

९. । 'पूर्वोक्तसे भिन्न राजा' का १ नाम है—मित्रम् ॥

१०. । 'उक्त दोनों (शत्रु तथा मित्र) राजाओं से भिन्न (तटस्थ) राजा' का १ नाम है—उदासीनः (+तटस्थः) ॥

११. । 'विजयाभिलाषी राजाकी पीठपर (पीछे) स्थित राजा' का १ नाम है—पार्ष्णिग्राहः ॥

१अनुवृत्तिस्त्वनुरोधो २हेरिको गूढपूरुषः ।
प्रणिधिर्यथार्हवर्णोऽवसर्पो मन्त्रविच्चरः ।। ३९७ ।।
वार्तायनः स्पशश्चार ३आप्तप्रत्ययितौ समौ ।
४सत्रिणि स्याद् गृहपति५र्दूतः संदेशहारकः ।। ३९८ ।।
६सन्धिविग्रहयानान्यासनद्वैधाश्रया अपि ।
षड्गुणाः—

विमर्श—इन पांचों में बाहर राज-मण्डल पूरा हो गया। वे १२ राज-मण्डल ये हैं—१ शत्रु, २ मित्र, ३ शत्रुका मित्र, ४ मित्रका मित्र, ५ शत्रुके मित्रका मित्र ६ पार्ष्णिग्राह (अपने पीछे से सहायतार्थ आनेवाला), ७ आक्रन्द (शत्रु के पीछे सहायतार्थ आनेवाला), ७ पार्ष्णिग्राहासार (सहायतार्थ शत्रुके पक्ष से बुलाया गया), ९ आक्रन्दासार (सहायतार्थ अपने पक्ष से बुलाया गया), १० विजिगीषु (स्वयं विजय चाहने वाला), ११ मध्यम और १२ उदासीन। इनमें से पहले वाले ५ आगे चलते या सामने रहते हैं, अनन्तर चार (६ से ९ तक) विजयाभिलाषी राजा (१०वें) के पीछे रहते हैं, ११ वां (मध्यम) दोनों पक्षवालों का वध करने में समर्थ होने के कारण स्वतन्त्र होता है और १२ वां (उदासीन) उन सभी के मण्डल से बाहर रहता है और स्वतन्त्र एवं सर्वाधिक बलशाली होता है। (शिशुपालवध की 'सर्वङ्कषा' व्याख्या २।८१)।।

१. 'अनुरोध' के २ नाम हैं—अनुवृत्तिः अनुरोधः ।।

२. 'गुप्तचर'के १० नाम हैं—हेरिकः, गूढपूरुषः, प्रणिधिः, यथार्हवर्णः, अवसर्पः, मन्त्रवित् (-विद्), चरः, वार्तायनः, स्पशः, चारः ।।

३. 'आप्त, विश्वसनीय'के २ नाम हैं—आप्तः, प्रत्ययितः ।।

४. 'गृहपति'के २ नाम हैं—सत्री (-त्रिन्), गृहपतिः ।।

५. 'दूत (मौखिक सन्देश पहुँचानेवाला)'के २ नाम हैं—दूतः, संदेशहारकः ।।

६. सन्धिः, विग्रहः, यानम्, आसनम्, द्वैधम्, आश्रयः—ये राजनीतिमें 'षड्गुणाः' कहे जाते हैं।

विमर्श—१ सन्धि—(कर देना स्वीकारकर या उपहार आदि देकर शत्रुपक्षसे मेल करना), २.विग्रह—(अपने राष्ट्र से दूसरे राष्ट्रमें जाकर युद्ध, दाह आदि करते हुए विरोध करना), ३ यान—(चढ़ाई करनेके लिए प्रस्थान करना), ४—आसन—(शत्रुपक्षसे युद्ध नहीं करते हुए अपने दुर्ग या सुरक्षित स्थानमें चुप-चाप बैठ जाना), ५ द्वैध—(एक राजाके साथ सन्धिकर अन्यत्र

—१शक्तयस्तिस्रः प्रभुत्वोत्साहमन्त्रजाः ॥ ३९९ ॥
२सामदानभेददण्डा उपायाः ३साम सान्त्वनम् ।
४उपजापः पुनर्भेदो ५दण्डः स्यात्साहसं दमः ॥ ४०० ॥
६प्राभृतं ढौकनं लञ्चोत्कोचः कौशलिकामिषे ।
उपाच्चारः प्रदानं दाहारौ ग्राह्यायने अपि ॥ ४०१ ॥
७मायोपेक्षेन्द्रजालानि क्षुद्रोपाया इमे त्रयः ।
८मृगयाऽक्षाः स्त्रियः पानं वाक्पारुष्यार्थदूषणे ॥ ४०२ ॥
दण्डपारुष्यमित्येतद्धेयं व्यसनसप्तकम् ।

यात्रा करना, अथवा—दो बलवान् शत्रुओंमें वचनमात्रसे आत्मसमर्पण करते हुए दोनों पक्षका (कभी एक पक्षका कभी दूसरे पक्षका) गुप्तरूपसे आश्रय करना) और ६ आश्रय—(बलवान् शत्रुसे युद्ध करने में स्वयं समर्थ नहीं होनेपर किसी दूसरे अधिक बलवान् राजाका आश्रय करना) । ये 'षड्गुण' कहलाते हैं ॥

१. प्रभुशक्तिः, उत्साहशक्तिः, मन्त्रशक्तिः—ये ३ 'शक्तियां' हैं ।

विमर्श—१ प्रभुशक्ति—(खजाने तथा दण्ड आदिकी उन्नति होना), २ उत्साहशक्ति—(उद्योग करते हुए सहन करना), और ३ मन्त्रशक्ति—(पांच अङ्गोंवाला मन्त्र अर्थात् गुप्तमन्त्रणा) । पांच अङ्ग ये हैं—१ सहाय, २ साधन, ३ उपाय, ४ देश-कालका यथोचित विभाजन और ५ विपत्तिसे बचाव ॥[1]

२. साम (-मन्), दानम्, दण्डः, भेदः—ये ४ 'उपाय' कहलाते हैं ॥

३. 'साम (मधुर भाषणादिसे शान्त करना)'के २ नाम हैं—साम (-मन्), सान्त्वनम् (+सान्त्वम्) ॥

४. 'भेद (आपसमें विरोध कराना)'के २ नाम हैं—उपजापः, भेदः ॥

५. 'दमन, दण्ड'के ३ नाम हैं—दण्डः, (पु न), साहसम् (न । +पु न), दमः ॥

६. 'घूस, या—उपहार (भेंट)'के १२ नाम हैं—प्राभृतम्, ढौकनम्, लञ्चा (पु स्त्री), उत्कोचः, कौशलिकम्, आमिषम् (पु न), उपचारः, उपप्रदानम्, उपदा, उपहारः, उपग्राह्यः, उपायनम् ॥

७. 'माया, उपेक्षा, इन्द्रजालम्—इन तीनों'का 'क्षुद्रोपायः' यह १ नाम है । (ये ३ क्षुद्र उपाय हैं) ॥

८. । मृगया, अक्षाः, स्त्रियः, पानम्, वाक्पारुष्यम्, अर्थदूषणम्, दण्डपा-

---

१. तदुक्तम्—"सहायाः साधनोपाया विभागो देशकालयोः ।
विनिपातप्रतीकारः सिद्धिः पञ्चाङ्गमिष्यते ॥ इति ॥

१पौरुषं विक्रमः शौर्यं शौण्डीर्यं च पराक्रमः ॥ ४०३ ॥
२यत्कोशदण्डजं तेजः स प्रभावः प्रतापवत् ।
३भिया धर्मार्थकामैश्च परीक्षा या तु सोपधा ॥ ४०४ ॥
४तन्मन्त्राद्यषडक्षीणं यत्तृतीयाद्यगोचरः ।
५रहस्यालोचनं मन्त्रो ६रहश्छन्नमुपह्वरम् ॥ ४०५ ॥
विविक्तविजनैकान्तनिःशलाकानि केवलम् ।
७गुह्ये रहस्यं ८न्यायस्तु देशरूपं समञ्जसम् ॥ ४०६ ॥
कल्पाभ्रेषौ नयो ९न्याय्यं तूचितं युक्तसाम्प्रते ।
लभ्यं प्राप्तं भजमानाभिनीतौपयिकानि च ॥ ४०७ ॥

रुष्यम् इन सातों का 'व्यसनम्' यह १ नाम है। राजाको (मानवमात्रको) इनका त्याग करना चाहिए।

विमर्श—१ मृगया—(शिकार, आखेट), २—अक्ष-जुआ खेलना, घुड़-दौड़, आदिपर लाटरी डालना आदि), ३ स्त्रियः—(स्त्रियों में अधिक आसक्ति), ४ पानम्—(मद्य आदि नशीली वस्तुओं का सेवन), ५ वाक्पारुष्य—(कठोर वचन बोलना), ६ अर्थ-दूषण—(धनका लेना, धनका नहीं देना, धनका विनाश और धनका परित्याग) और ७ दण्डपारुष्य—(कठोर दण्ड देना) ॥

१. 'पराक्रम, पुरुषार्थ' के ५ नाम हैं—पौरुषम्, विक्रमः, शौर्यम्, शौण्डीर्यम्, पराक्रमः ॥

२. 'प्रभाव—(कोश तथा दण्डसे उत्पन्न राज-तेज)'के २ नाम हैं—प्रभावः, प्रतापः ॥

३. 'भय, धर्म, अर्थ तथा काम के द्वारा मंत्री आदि की परीक्षा लेने' का १ नाम है—उपधा ॥

४. 'जिसे तीसरा व्यक्ति नहीं जाने ऐसी मन्त्रणा (सलाह, परामर्श), क्रीडा आदि 'का १ नाम है—अषडक्षीणम् ॥

५. 'गुप्त मन्त्र'के ३ नाम हैं—रहस्यम्, आलोचनम्, मन्त्रः ॥

६. 'एकान्त गुप्त स्थान'के ८ नाम हैं—रहः (-हस्, न), छन्नम्, उपह्वरम् (पु न), विविक्तम्, विजनम् (+ निर्जनम्), एकान्तम्, निःशलाकम्, केवलम् ॥

७. 'गुप्त'के २ नाम हैं—गुह्यम्, रहस्यम् ॥

८. 'न्याय'के ६ नाम हैं—न्यायः, देशरूपम्, समञ्जसम्, कल्पः, अभ्रेषः, नयः (+ नीतिः) ॥

९. 'न्याय्य (न्याययुक्त)'के ९ नाम हैं—न्याय्यम्, उचितम्,

१प्रक्रिया त्वधिकारो२ऽथ मर्यादा धारणा स्थितिः ।
संस्था३ऽपराधस्तु मन्तुर्व्यलीकं विप्रियागसी ॥ ४०८ ॥
४बलिः करो भागधेयो ५द्विपाद्यो द्विगुणो दमः ।
६वाहिनी पृतना सेना बलं सैन्यमनीकिनी ॥ ४०९ ॥
कटकं ध्वजिनी तन्त्रं दण्डोऽनीकं पताकिनी ।
वरूथिनी चमूश्चक्रं स्कन्धावारो७ऽस्य तु स्थितिः ॥ ४१० ॥
शिबिरं ८रचना तु स्याद् व्यूहो दण्डादिको युधि ।

युक्तम्, साम्प्रतम्, लभ्यम्, प्राप्तम्, भजमानम्, अभिनीतम्, औपयिकम् (सब वाच्यलिङ्ग हैं) ॥

१. 'अधिकार'के २ नाम हैं—प्रक्रिया, अधिकारः ॥

२. 'मर्यादा'के ४ नाम हैं—मर्यादा, धारणा, स्थितिः, संस्था ॥

३. 'अपराध'के ५ नाम हैं—अपराधः, मन्तुः (पु), व्यलीकम् (पु न), विप्रियम्, आगः (-गस्, न) ॥

४. 'कर, टैक्स'के ३ नाम हैं—बलिः (पु स्त्री), करः, भागधेयः ॥

विमर्श—यद्यपि अर्थशास्त्रमें प्रजासे अन्नादिके उपजका छठा हिस्सा लेना 'भागधेय' स्थावर तथा जङ्गम (नदी, पर्वत, जङ्गल आदि तथा रथ, गाड़ी आदि)से हिरण्यादि (सोना, या रुपया आदि) लेना 'कर' और भृत्यादिके उपजीव्य वस्तुको लेना 'बलि' कहा गया है, तथापि यहांपर उन विशिष्ट भेदोंका आश्रय छोड़कर सामान्यतया सबको पर्याय रूपमें कहा गया है ॥

५. 'दुगुना दण्ड'का १ नाम है—द्विपाद्यः ॥

६. 'सेना'के १६ नाम हैं—वाहिनी, पृतना, सेना, बलम्, सैन्यम्, अनीकिनी, कटकम् (पु न), ध्वजिनी, तन्त्रम्, दण्डः, अनीकम् (२ पु न), पताकिनी, वरूथिनी, चमूः (स्त्री), चक्रम् (पु न), स्कन्धावारः ॥

७. 'शिबिर (सेनाके ठहरनेका स्थान पड़ाव)'का १ नाम है—शिबिरम् ॥

८. 'दण्ड' आदि नामक व्यूह (मोर्चाबन्दी)का १ नाम है—व्यूहः ॥

विमर्श—कुछ व्यूहोंके ये नाम हैं—दण्डव्यूह, मण्डलव्यूह, उच्छिन्नव्यूह, अबलव्यूह, दृढव्यूह, चक्रव्यूह, शकटव्यूह, वराहव्यूह, मकरव्यूह, सूचीव्यूह, गरुडव्यूह,……। (इनमें-से कतिपय व्यूह-रचनाओंके प्रकार एवं इनमेंसे किस व्यूहकी रचना किस अवस्थामें करनी चाहिए, इत्यादि जाननेके लिए 'मनुस्मृति' की (७ । १८७–१९१) मत्कृत 'मणिप्रभा' नामकी राष्ट्रभाषामयी

१प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः २सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ४११ ॥
३एकेभैकरथास्त्र्यश्वाः पत्तिः पञ्चपदातिका ।
४क सेना सेनामुखं गुल्मो वाहिनी पृतना चमूः ॥ ४१२ ॥
अनीकिनी च पत्तेः स्यादिभाद्यैस्त्रिगुणैः क्रमात् ।
५दशानीकिन्योऽक्षौहिणी ६सज्जनं तूपरक्षणम् ॥ ४१३ ॥
७वैजयन्ती पुनः केतुः पताका केतनं ध्वजः ।

टीका देखें ॥ "कौटिल्य अर्थशास्त्रमें भी व्यूहोंके भेदोपभेदका तथा शत्रुके किस व्यूहका किस व्यूहसे भेदन करना चाहिए, इसका सविस्तर वर्णन है[1] ॥

१. 'मोर्चाबन्दीके पार्श्वभाग'के २ नाम हैं—प्रत्यासारः, व्यूहपार्ष्णिः ॥

२. 'सेनाके पीछेवाले भाग'का १ नाम है—प्रतिग्रहः ॥

३. जिसमें १–१ हाथी तथा रथ, ३ घोड़े (रथके घोड़ेके अतिरिक्त), ५ पैदल सैनिक हों, उसे 'पत्तिः' कहते हैं ॥

४. 'पत्ति'के हाथी आदिको त्रिगुणित बढ़ाते जानेसे क्रमशः. सेना, सेनामुखम् , गुल्मः (पु न), वाहिनी, पृतना, चमूः, अनीकिनी (ये १–१ नाम सेना-विशेषके होते हैं) ॥

५. 'दस अनीकिनी–परिमित सेना'की १ अक्षौहिणी सेना होती है ॥

विमर्श—'पत्ति'से आरम्भकर 'अक्षौहिणी' तक सेना-विशेषके हाथी आदिकी संख्याज्ञानार्थ पृष्ठ १८५ के चक्र देखें । विशेषजिज्ञासुओंको 'अमरकोष' की मत्कृत 'अमरचन्द्रिका' नामकी टिप्पणी देखनी चाहिए, जो 'मणिप्रभा' टीका के पृष्ठ २६४ पर लिखी गयी है ॥

६. 'सेनाको बढ़ाने, या रक्षा करने'के २ नाम हैं—सज्जनम्, उपरक्षणम् ॥

७. 'झण्डा'के ५ नाम हैं—वैजयन्ती, केतुः (पु), पताका (+ पटाका), केतनम् , ध्वजः (२ पु न) । (किसी-किसीके मतमें 'झण्डे'के दण्ड (बांस आदि)का नाम 'ध्वज' है तथा शेष ४ नाम 'झण्डा' (झण्डेके कपड़े)के हैं) ॥

---

१. तथा च कौटिल्यार्थशास्त्रे—

"पक्षावुरस्यं प्रतिग्रह इत्यौशनसो व्यूहविभागः, पक्षौ कक्षावुरस्यं प्रतिग्रह इति बार्हस्पत्यः, प्रपक्षकक्षोरस्या उभयोर्दण्डभोगमण्डलासंहताः प्रकृतिव्यूहाः । तत्र तिर्यग्वृत्तिर्दण्डः । समस्तानामन्वावृत्तिर्भोगः । सरतां सर्वतो वृत्तिर्मण्डलः । स्थितानां पृथगनीकवृत्तिरसंहतः ।" (कौ० अर्थ० १० । ६ । १–७) ॥ इतोऽग्रेऽमीषां व्यूहानां भेदाः, क्व च कस्य व्यूहस्योपयोगितेत्यादिकमध्यायेऽस्मिन् वर्णितमिति तत एव द्रष्टव्यं जिज्ञासुभिः ॥

१अस्योच्चूलावचूलाख्यावूर्ध्वाधोमुखकूर्चकौ ॥ ४१४ ॥
२गजो वाजी रथः पत्तिः सेनाङ्गं स्याच्चतुर्विधम् ।
३युद्धार्थे चक्रवद्याने शताङ्गः स्यन्दनो रथः ॥ ४१५ ॥

---

१. 'इस झण्डेके ऊपर तथा नीचेवाले अग्रभाग'का क्रमशः १-१ नाम है—उच्चूलः, अवचूलः ॥

२. गजः, वाजी (-जिन्), रथः, पत्तिः, (क्रमशः—गजदल, हयदल, रथदल और पैदल)—ये चार सेनाके अङ्ग 'सेनाङ्गम्' हैं, अतएव सेनाको 'चतुरङ्गिणी' (गजदल, हयदल, रथदल और पैदल) सेना कहते हैं ॥

विमर्श—वर्तमान नवीन कालमें तो (वायुयान आदिवाली सेना) 'नभःसेना', (जहाज, पनडुब्बी, सुरङ्ग बिछाने या हटानेवाले जहाज आदि की सेना) 'जलसेना' और (टैंक, मशीनगन, आदि तथा घुड़सवार एवं पैदल सेना) 'स्थल सेना' कहलाती है। इन तीन प्रकार की सेनाओंके अतिरिक्त विज्ञानके आधुनिकतम नवीनाविष्कारके कारण 'अणुबम, परमाणु-बम, हाइड्रोजन बम आदि विशेष युद्धसाधनयुक्त सेनाका आविष्कार हो गया है ॥

पत्त्यादिसेना-विशेषाणां गजादिसंख्याबोधकं चक्रम्

सेनानाम	गजसंख्या	रथसंख्या	रथाश्ववर्जिताश्वसंख्या	पत्तिसंख्या	सर्वयोगः
पत्तिः	१	१	३	५	१०
सेना	३	३	९	१५	३०
सेनामुखम्	९	९	२७	४५	९०
गुल्मः	२७	२७	८१	१३५	२७०
वाहिनी	८१	८१	२४३	४०५	८१०
पृतना	२४३	२४३	७२९	१२१५	२४३०
चमूः	७२९	७२९	२१८७	३६४५	७२९०
अनीकिनी	२१८७	२१८७	६ ६१	१०९३५	२१८७०
अक्षौहिणी	२१८७०	२१८७०	६५६१०	१०९३५०	२१८७००
(अन्यत्रोक्ता) महाक्षौहिणी	१३२१२४९०	१३२१२४९०	३९६३७४७०	६६०६२४५०	१३२१२४९००

३. 'युद्धके रथ'के ३ नाम हैं—शताङ्गः, स्यन्दनः, रथः (पु स्त्री) ॥

१स क्रीडार्थः पुष्परथो २देवार्थस्तु मरुद्रथः ।
३योग्यारथो वैनयिको४ऽध्वरथः पारियानिकः ॥ ४१६ ॥
५कर्णीरथः प्रवहणं डयनं रथगर्भकः ।
६अनस्तु शकटो७ऽथ स्याद् गन्त्री कम्बलिवाह्यकम् ॥ ४१७ ॥
८अथ काम्बलवास्त्राद्यास्तैस्तैः परिवृते रथे ।
९स पाण्डुकम्बली यः स्यात्संवीतः पाण्डुकम्बलैः ॥ ४१८ ॥
१०स तु द्वैपो वैयाघ्रश्च यो वृतो द्वीपिचर्मणा ।
११रथाङ्गं रथपादोऽरि चक्रं १२धारा पुनः प्रधिः ॥ ४१९ ॥
नेमि—

---

१. 'क्रीडा (उत्सवादि यात्रा)के लिए बनाये गये रथ'का १ नाम है—पुष्परथः ॥

२. 'देवता (देव-प्रतिमा)को विराजमान करनेवाले रथ'का १ नाम है—मरुद्रथः ॥

३. 'शस्त्रकी शिक्षा तथा अभ्यासके लिए बनाये गये रथ'के २ नाम हैं—योग्यारथः, वैनयिकः ॥

४. 'सामान्यतः यात्रा करने (कहीं आने-जाने)के लिए बनाये गये रथ'के २ नाम हैं—अध्वरथः, पारियानिकः ॥

५. 'जिसे कहार कन्धेपर ढोवें, उस रथ'के अथवा—'स्त्रियोंके चढ़नेके लिए पर्दा लगे हुए रथ'के ४ नाम हैं—कर्णीरथः, प्रवहणम्, डयनम्, रथगर्भकः ॥

६. 'गाड़ी'के २ नाम हैं—अनः (-नस्, न), शकटः (त्रि) ॥

७. 'छोटी गाड़ी, या—सग्गड़'के २ नाम हैं—गन्त्री, कम्बलिवाह्यकम् ॥

८. 'कम्बल, कपड़ा आदिसे ढके या मढ़े हुए रथ'का क्रमशः १–१ नाम हैं—काम्बलः, वास्त्रः । ('आदि'से दुकूल या दुगूल से ढके या मढ़े हुए रथका 'दौकूलः' या 'दौगूलः' नाम है) ॥

९. 'पाण्डु वर्णके कम्बल से ढके या—मढ़े हुए रथ'का १ नाम है—पाण्डुकम्बली ॥

१०. 'बाघके चमड़ेसे ढके या मढ़े हुए रथ'के २ नाम हैं—द्वैपः, वैयाघ्रः ॥

११. 'पहिया'के ४ नाम हैं—रथाङ्गम्, रथपादः, अरि (-रिन्, न), चक्रम् (पु न) ॥

१२. 'नेमि (पहिये या टायरके ऊपरी भाग)'के ३ नाम हैं—धारा, प्रधिः (पु स्त्री), नेमिः (स्त्री) ॥

—१रक्षाग्रकीले त्वणयाणी २नाभिस्तु पिण्डिका ।
३युगन्धरं कूबरं स्याद् ४युगमीशान्तबन्धनम् ॥ ४२० ॥
५युगकीलकस्तु शम्या ६प्रासङ्गस्तु युगान्तरम् ।
७अनुकर्षो दार्वधःस्थं ८धूर्वी यानमुखं च धूः ॥ ४२१ ॥
९रथगुप्तिस्तु वरूथो १०रथाङ्गानि त्वपस्कराः ।
११शिबिका यानयाप्ये१२ऽथ दोला प्रेङ्खादिका भवेत् ॥ ४२२ ॥
१३वैनीतिकं परम्परावाहनं शिबिकादिकम् ।

---

१. 'पहिएके नाभिके बीचवाली कील'के २ नाम हैं—अणिः, आणिः (२ पु स्त्री) ॥

२. 'नाभि' (पहिएके बीचवाले मोटे काष्ठ)—जिसमें अरा (दण्डे) लगे रहते हैं—उसके २ नाम हैं—नाभिः, पिण्डिका ॥

३. 'रथ या गाड़ी आदिका बंबा (जिसमें घोड़े या बैलके कन्धेपर रखे जानेवाले जुआको बांधा जाता है, रथ, तांगे, एक्के या गाड़ीके उस बांस)'के २ नाम हैं—युगन्धरम् , कूबरम् (२ पु न) ॥

४. 'रथ या गाड़ी आदिके जुवा'का १ नाम है—युगम् (पु न) ॥

५. 'उक्त जुवेकी कील'के २ नाम हैं—युगकीलकः, शम्या ॥

६. 'नये बछवेको हलमें चलना सिखलानेके लिए उसके कन्धेपर रखे जानेवाले काष्ठ'के २ नाम हैं—प्रासङ्गः, युगान्तरम् ॥

७. 'रथ या गाड़ी आदिके नीचेवाले काष्ठ'का १ नाम है—अनुकर्षः ॥

८. 'रथादिके आगेवाले भाग (जिसमें घोड़े या बैल आदि बांधे जाते हैं)' उसके ३ नाम हैं—धूर्वी, यानमुखम्, धूः (=धुर्, स्त्री) ॥

९. 'रथ आदिके रक्षार्थ लोहादिके आवरण'के २ नाम हैं—रथगुप्तिः, वरूथः (पु न) ॥

१०. 'रथके पहिया आदि अवयवों'का १ नाम है—अपस्करः ॥

११. 'पालकी, तामजान, नालकी आदि (जिसे मनुष्य कन्धे पर ढोवें, उस)'के २ नाम हैं—शिबिका, याप्ययानम् ॥

१२. 'झूला, हिंडोला'के २ नाम हैं—दोला, प्रेङ्खोलिका । ('प्रेङ्खोलिका' आदिका नाम 'दोला' है, यहां 'आदि' शब्दसे—'शयानकम्' आदिका संग्रह करना चाहिए) ॥

१३. बारी-बारीसे ढोये जानेवाली पालकी आदि'का १ नाम है—वैनीतिकम् (पु न) ॥

१यानं युग्यं पत्रं वाह्यं वह्यं वाहनधोरणे ॥ ४२३ ॥
२नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः सव्येष्ठसारथी ।
दक्षिणस्थप्रवेतारौ क्षत्ता रथकुटुम्बिकः ॥ ४२४ ॥
३रथारोहिणि तु रथी ४रथिके रथिरो रथी ।
५अश्वारोहे त्वश्ववारः सादी च तुरगी च सः ॥ ४२५ ॥
६हस्त्यारोहे सादियन्तृमहामात्रनिषादिनः ।
७आधोरणा हस्तिपका गजाजीवेभपालकाः ॥ ४२६ ॥
८योद्धारस्तु भटा योधाः ९सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।
१०सेनायां ये समवेतास्ते सैन्याः सैनिका अपि ॥ ४२७ ॥
११ये सहस्रेण योद्धारस्ते साहस्राः सहस्रिणः ।

---

१. 'वाहन'के ७ नाम हैं—यानम्, युग्यम्, पत्रम् (पु न), वाह्यम्, वह्यम्, वाहनम्, धोरणम् ॥

२. 'सारथि (रथादि चलानेवाले)'के १० नाम हैं—नियन्ता (–तृ), प्राजिता (–तृ), यन्ता (–न्तृ), सूतः, सव्येष्ठा (–ष्ठृ । + सव्येष्ठः), सारथिः, दक्षिणस्थः, प्रवेता (–तृ), क्षत्ता (–तृ), रथकुटुम्बिकः (+ सादी,–दिन्) ॥

३. 'रथपर चढ़कर युद्धकरनेवाले'का १ नाम है—रथी (–थिन्) ॥

४. 'रथवाले, या रथपर चढ़े हुए'के ३ नाम हैं—रथिकः, रथिरः, रथी (–थिन्) ॥

५. 'घुड़सवार'के ४ नाम हैं—अश्वारोहः, अश्ववारः, सादी (–दिन्), तुरगी (–गिन्) ॥

६. 'हाथीपर चढ़नेवाले'के ५ नाम हैं—हस्त्यारोहः, सादी (– दिन्), यन्ता (– न्तृ), महामात्रः, निषादी (– दिन्) ॥ (किसी-किसीके मतमें 'हस्त्यारोह' आदि सब नाम एकार्थक (हाथीवानके) हैं ॥

७. 'हाथीवान्, पिलवान'के ४ नाम हैं—आधोरणाः, हस्तिपकाः, गजाजीवाः, इभपालकाः ।

८. 'युद्ध करनेवाले वीरों'के ३ नाम हैं—योद्धारः (– द्धृ), भटाः, योधाः ॥

९. 'सेनाके पहरेदारों'के २ नाम हैं—सेनारक्षाः, सैनिकाः ॥

१०. 'सेनामें नियुक्त सभी लोगों'के २ नाम हैं—सैन्याः, सैनिकाः ॥

११. 'एक सहस्र योद्धाओंसे युद्ध करनेवाले वीर'के २ नाम हैं—साहस्राः, सहस्रिणः (स्रिन्) ॥

विमर्श—'हस्त्यारोहाः' (४२६)से इस 'सहस्रिणः' (४२८) शब्द तक सब पर्यायोंमें बहुत्वकी अपेक्षा बहुवचनका प्रयोग किया गया है, अतएव एकत्वकी इच्छामें उक्त पर्यायोंका प्रयोग एकवचनमें भी होता है ॥

१छायाकरश्छत्रधारः २पताकी वैजयन्तिकः ॥ ४२८ ॥
३परिधिस्थः परिचर ४आमुक्तः प्रतिमुक्तवत् ।
अपिनद्धः पिनद्धो५ऽथ सन्नद्धो व्यूहकङ्कटः ॥ ४२९ ॥
दंशितो वर्मितः सज्जः ६सन्नाहो वर्म कङ्कटः ।
जगरः कवचं दंशस्तनुत्रं माठ्युरश्छदः ॥ ४३० ॥
७निचोलकः स्यात्कूर्पासो वारबाणश्च कञ्चुकः ।
८सारसनं त्वधिकाङ्गं हृदि धार्यं सकञ्चुकैः ॥ ४३१ ॥
९शिरस्त्राणे तु शीर्षण्यं शिरस्कं शीर्षकं च तत् ।
१०नागोदमुदरत्राणं ११जङ्घात्राणं तु मत्कुणम् ॥ ४३२ ॥

---

१. 'राजा आदिके छत्रको धारण करनेवाले'के २ नाम हैं—छायाकरः, छत्रधारः ॥

२. 'ध्वजा, झंडा धारण करनेवाले'के २ नाम हैं—पताकी (– किन् । + पताकाधरः), वैजयन्तिकः ॥

३. 'सेनाके रक्षार्थ चारो ओर रहनेवाली सेना या पहरेदार'के २ नाम हैं—परिधिस्थः, परिचरः ॥

४. 'पहनकर उतारे हुए कवच, या वस्त्रादि'के ४ नाम हैं—आमुक्तः, प्रतिमुक्तः, अपिनद्धः, पिनद्धः ॥

५. 'कवच पहनकर युद्धके लिए तैयार'के ५ नाम हैं—सन्नद्धः, व्यूहकङ्कटः, दंशितः, वर्मितः (+ कवचितः), सज्जः ॥

६. 'कवच'के ९ नाम हैं—सन्नाहः, वर्म (– र्मन्, न), कङ्कटः, जगरः, कवचम् (पु न), दंशः (+ दशनम्), तनुत्रम् (+ तनुत्राणम्), माठी (स्त्री), उरश्छदः (+ त्वक्त्रम्) ॥

७. 'युद्धमें बाणादिसे रक्षार्थ पहने जानेवाले फौलाद'के ४ नाम हैं—निचोलकः, कूर्पासः, वारबाणः, कञ्चुकः (२ पु न) ॥

८. 'उक्त फौलादी झूलको स्थिर रखनेके लिए छाती पर कसी हुई पट्टी आदि'के २ नाम हैं—सारसनम्, अधिकाङ्गम् (+ अधियाङ्गम्, धियाङ्गम्, अधिपाङ्गः, धिपाङ्गः । पु न) ॥

९. 'युद्धमें शिरकी रक्षाके लिए पहने जानेवाले फौलादी टोप'के ४ नाम हैं—शिरस्त्राणम्, शीर्षण्यम्, शिरस्कम्, शीर्षकम् (+ खोलम्) ॥

१०. 'युद्धमें पेटके रक्षार्थ पहने जानेवाले कवच-विशेष'के २ नाम हैं—नागोदम्, उदरत्राणम् ॥

११. 'युद्धमें जङ्घोंके रक्षार्थ पहने जानेवाले कवच विशेष'के २ नाम हैं—जङ्घात्राणम्, मत्कुणम् ॥

१बाहुत्राणं बाहुलं स्यार२ज्जालिका त्वङ्गरक्षणी ।
जालप्रायाऽऽयसी स्या३दा युधीयः शस्त्रजीविनि ॥ ४३३ ॥
काण्डपृष्ठायुधिकौ च ४तुल्यौ प्रासिककौन्तिकौ ।
५पारश्वधिकस्तु पारश्वधः परश्वधायुधः ॥ ४३४ ॥
६स्युर्नैस्त्रिंशिकशाक्तीकयाष्टीकास्तत्तदायुधाः ।
७तूणी धनुर्भृद्धानुष्कः स्यात् ८काण्डीरस्तु काण्डवान् ॥ ४३५ ॥
९कृतहस्तः कृतपुंखः सुप्रयुक्तशरो हि यः ।
१०शीघ्रवेधी लघुहस्तो११ऽपराद्धेषुस्तु लक्ष्यतः ॥ ४३६ ॥
च्युतेषु१२र्दूरवेधी तु दूरापात्या—

---

१. 'युद्धमें बाहुके रक्षार्थ पहने जानेवाले कवच विशेष'के २ नाम हैं—बाहुत्राणम्, बाहुलम् ॥

२. 'युद्धमें अङ्गरक्षार्थ पहने जानेवाले लोहेकी जालीके समान कवच-विशेष'के ४ नाम हैं—जालिका, अङ्गरक्षणी, जालप्राया, आयसी ॥

३. 'शस्त्र धारण द्वारा जीविका चलानेवाले'के ४ नाम हैं—आयुधीयः, शस्त्रजीवी (– विन्), काण्डपृष्ठः, आयुधिकः ॥

४. 'भाला चलानेवाले'के २ नाम हैं—प्रासिकः, कौन्तिकः ॥

५. 'फरसा चलानेवाले'के ३ नाम हैं—पारश्वधिकः, पारश्वधः, परश्वधायुधः ॥

६. 'तलवार, शक्ति (बर्छी) तथा यष्टि चलानेवाले'का क्रमसे १–१ नाम है—नैस्त्रिंशिकः, शाक्तीकः, याष्टीकः ॥

७. 'धनुष चलानेवाले या धारण करनेवाले'के ३ नाम हैं—तूणी (– णिन् । + निषङ्गी, – ङ्गिन्), धनुर्भृत् (यौ०—धनुर्धरः, धन्वी–न्विन्, धनुष्मान्–ष्मन्), धानुष्कः ॥

८. 'बाणधारी'के २ नाम हैं—काण्डीरः, काण्डवान् (– वत्) ॥

९. 'ठीक तरीकेसे बाण चलाये हुए योद्धा आदि'के २ नाम हैं—कृतहस्तः, कृतपुङ्खः ॥

१०. 'शीघ्रतासे लक्ष्य वेध करनेवाले'के २ नाम हैं—शीघ्रवेधी (धिन्), लघुहस्तः ॥

११. 'लक्ष्य वेधसे भ्रष्ट बाणवाले'का १ नाम है—अपराद्धेषुः ॥

१२. 'दूर तक लक्ष्य वेध करनेवाले'के २ नाम हैं—दूरवेधी (धिन्), दूरापाती (– तिन्) ॥

—१युधं पुनः ।
हेतिः प्रहरणं शस्त्रमस्त्रं (स्यात्*)२तच्चतुर्विधम् ॥ ४३७ ॥
मुक्तं द्विधा पाणियन्त्रमुक्तं शक्तिशरादिकम् ।
अमुक्तं शस्त्रिकादि स्याद् यष्ट्याद्यं तु द्वयात्मकम् ॥ ४३८ ॥
३धनुश्चापोऽस्त्रमिष्वासः कोदण्डं धन्व कार्मुकम् ।
द्रुणाऽऽसौ ४लस्तकोऽस्यान्तर५ग्रं त्वर्तिरटन्यपि ॥ ४३९ ॥
६मौर्वी जीवा गुणो गव्या शिञ्जा बाणासनं द्रुणा ।
शिञ्जिनी ज्या च ७गोधा तु तलं ज्याघातवारणम् ॥ ४४० ॥
८स्थानान्यालीढवैशाखप्रत्यालीढानि मण्डलम् ।
समपादं च—

---

१. 'आयुध, हथियार'के ५ नाम हैं—आयुधम् (पु न), हेतिः, प्रहरणम्, शस्त्रम् (न स्त्री), अस्त्रम् ॥

२. 'उस आयुध'के ४ भेद हैं—१—हाथसे छोड़े जानेवाली शक्ति (बर्छी) आदि, २—यन्त्र (धनुष आदि)से छोड़े जानेवाले बाण आदि, ३—बिना फेंके चलाये जानेवाले छुरा, कटार, तलवार आदि, ४—फेंककर या हाथसे पकड़े हुए चलाये जानेवाली यष्टि (छड़ी) लाठी आदि । इस प्रकार प्रथम दो प्रकारके आयुधका नाम 'मुक्तम्' (१—पाणिमुक्तम्, २ यन्त्र-मुक्तम्), तृतीय प्रकारके आयुधका नाम 'अमुक्तम्' और ४ चतुर्थ प्रकारके आयुधका नाम 'मुक्तामुक्तम्' है । इस प्रकार आयुध ४ प्रकारके होते हैं ॥

३. 'धनुष्, चाप'के ६ नाम हैं—धनुः (-नुष्, पु न ।+धनुः—नु, पु न ।+धनूः, स्त्री), चापः (पु न), अस्त्रम्, इष्वासः (+शरासनम्), कोदण्डम् (२ पु न), धन्व (-न्वन्, न), कार्मुकम्, द्रुणम्, आसः (पु न) ॥

४. 'धनुषके मध्यभाग (जिसे मूठसे पकड़ा जाता है, उस भाग)'का १ नाम है—लस्तकः ॥

५. 'धनुष्के अग्रभाग (किनारेवाले भाग)'के २ नाम हैं—अर्तिः, अटनी ॥

६. 'धनुष्की डोरी, तांत'के ६ नाम हैं—मौर्वी, जीवा, गुणः, गव्या (स्त्री न), शिञ्जा, बाणासनम्, द्रुणा, शिञ्जिनी, ज्या ॥

७. 'धनुष्की डोरीके आघातसे रक्षाकेलिए कलाईपर बांधे जानेवाले चमड़े आदिके पट्टे'के २ नाम हैं—गोधा, तलम् (+तला स्त्री) ॥

८. 'युद्धके आसन-विशेषों'का पृथक्-पृथक् १-१ नाम है—आलीढम्, वैशाखम् (+पु), प्रत्यालीढम्, मण्डलम्, समपादम् (सब न) ॥

---

*कोष्ठान्तर्गतश्शब्दश्छन्दोभङ्गदोषवारणाय मया योजितः ।

—१वेध्यं तु लक्षं लक्ष्यं शरव्यकम् ॥ ४४१ ॥
२बाणे पृषत्कविशिखौ खगगार्ध्रपक्षौ, काण्डाशुगप्रदरसायकपत्रवाहाः।
पत्रीष्वजिह्मगशिलीमुखकङ्कपत्ररोपाः कलम्बशरमार्गणचित्रपुङ्खाः॥ ४४२ ॥
३प्रक्ष्वेडनः सर्वलौहो नाराच एषणश्च सः।

विमर्श—'आलीढ' नामके युद्धासनमें बाएँ पैरको आगेकी ओर कुछ झुका हुआ एवं दो हाथ विस्तृत करना चाहिए।

'वैशाख स्थानक' नामके युद्धासनमें कूटलक्ष्यका निशाना मारनेके लिए दोनों पैरोंको हाथभर विस्तृत करना चाहिए। दूरस्थ लक्ष्यको मारनेके लिए 'प्रत्यालीढ' नामके युद्धासनमें दहने पैरको पीछे झुका हुआ और बाएँ पैरको तिर्छा करना चाहिए। 'मण्डल' नामके युद्धासनमें दोनों पैरोंको विशेष रूपसे मण्डलाकार बहिर्भूत एवं तीक्ष्ण करना चाहिए। 'समपाद' नामके युद्धासनमें दोनों पैरोंको पूर्णतः स्थिर एवं सटा हुआ रखना चाहिए; ऐसा धनुर्वेदमें[1] कहा गया है॥

१. 'लक्ष्य, निशाना'के ४ नाम हैं—वेध्यम्, (+स्त्री), लक्षम्, लक्ष्यम्, शरव्यकम् (+स्त्री। +शरव्यम्। सब न)॥

शेषश्चात्र—वेध्ये निमित्तम्।

२. 'बाण'के २० नाम हैं—बाणः (पु न), पृषत्कः, विशिखः, खगः, गार्ध्रपक्षः, काण्डः (पु न), आशुगः, प्रदरः, सायकः, पत्रवाहः पत्री (-त्रिन्), इषुः (त्रि), अजिह्मगः, शिलीमुखः, कङ्कपत्रः, रोपः, कलम्बः, शरः, मार्गणः, चित्रपुङ्खः॥

शेषश्चात्र—बाणे तु लक्षहा मर्मभेदनः। वारश्च वीरशङ्कुश्च कादम्बोऽप्य-स्त्रकण्टकः॥

३. लोहेके बने हुए बाण'के ४ नाम हैं—प्रक्ष्वेडनः, सर्वलौहः, नाराचः, एषणः॥

१. यद्धनुर्वेदः—

"अग्रतो वामपादं तु तीक्ष्णं चैवानुकुञ्चितम्।
'आलीढं' तु प्रकर्तव्यं हस्तद्वयसविस्तरम्॥
पादौ सविस्तरौ कार्यौ समहस्तप्रमाणतः।
'वैशाखस्थानके' वत्स! कूटलक्ष्यस्य वेधने॥
'प्रत्यालीढे' तु कर्तव्यः सव्यस्तीक्ष्णोऽनुकुञ्चितः।
तिर्यग्वामः पुरस्तत्र दूरापाते विशिष्यते॥
'समपादे' समौ पादौ निष्कम्पौ च सुसंगतौ।
मण्डले' मण्डलाकारौ बाह्यतीक्ष्णौ विशेषतः॥" इति।

१निरस्तः प्रहितो २बाणे विषाऽक्ते दिग्धलिप्तकौ ॥ ४४३ ॥
३बाणमुक्तिर्व्यवच्छेदो ४दीप्तिर्वेगस्य तीव्रता ।
५क्षुरप्रतद्बलार्द्धेन्दुतीरीमुख्यास्तु तद्भिदः ॥ ४४४ ॥
६पक्षो वाजः ७पत्रणा तन्न्यासः ८पुंखस्तु कर्त्तरी ।
९तूणो निषङ्गस्तूणीर उपासङ्गः शराश्रयः ॥ ४४५ ॥
शरधिः कलापोऽप्य१०थ चन्द्रहासः करवालनिस्त्रिंशकृपाणखड्गाः ।
तरवारिकौक्षेयकमण्डलाग्रा असिर्ऋष्टिरिष्टी—

शेषश्चात्र—नाराचे लोहनालोऽस्त्रसायकः ।

१. 'धनुष आदिसे छोड़े (चलाये) हुए बाण आदि हथियार'के २ नाम हैं—निरस्तः, प्रहितः ॥

२. 'विषमें बुझाये हुए बाण'के २ नाम हैं—दिग्धः, लिप्त कः (+लिप्तः) ।

३. 'धनुषसे बाण छोड़ने'के २ नाम हैं—बाणमुक्तिः, व्यवच्छेदः ॥

४. 'बाणकी शीघ्र गति'का १ नाम है—दीप्तिः ॥

५. क्षुरप्रः, तद्बलम्, अर्धेन्दुः, तीरी, आदि ('आदि' शब्दसे—दण्डासनम्, तोमरः, वावल्लः, भल्लः, गरुडः, अर्धनाराचः, आदिका संग्रह है) विभिन्न प्रकारके बाणोंके भेद हैं ।

विमर्श—जिस बाणका धार (अग्रिम भाग) छूरेके समान हो, उसे 'क्षुरप्र'; जो बाण चूहेकी पूंछके समान हो, उसे 'तद्बल'; जिस बाणका अग्रभाग आधे चन्द्रके समान हो, उसे 'अर्धेन्दु' और जिस बाणके पीछेवाले तीन भागमें शर (शरकण्डा, या काष्ठादि) और आगेवाले एक भाग (चतुर्थांश)में लोहा लगा हो, उसे 'तीरी' कहते हैं ॥

६. 'बाणोंके पिछले भागोंमें लगाये हुए गीध-कङ्क-आदि पक्षियोंके पङ्ख'के २ नाम हैं—पक्षः, वाजः ॥

७. 'उक्त पङ्खोंको बाणमें लगाने'का १ नाम है—पत्रणा ॥

८. 'पुङ्ख (धनुषकी डोरी रखनेका स्थान)'के २ नाम हैं—पुङ्खः (पु न) कर्तरी ॥

९. 'तरकस'के ७ नाम हैं—तूणः (त्रि), निषङ्गः, तूणीरः, उपासङ्गः, शराश्रयः, शरधिः (पु । यौ०—इषुधिः, बाणधिः,..........), कलापः ॥

१०. 'तलवार'के ११ नाम हैं—चन्द्रहासः, करवालः, निस्त्रिंशः, कृपाणः, खड्गः, तरवारिः (पु), कौक्षेयकः, मण्डलाग्रः, असिः (पु), ऋष्टिः, रिष्टिः (२ पु स्त्री) ॥

शेषश्चात्र—असिस्तु सायकः ॥

श्रीगर्भो विजयः शास्ता व्यवहारः प्रजाकरः ।

—१त्सरुरस्य मुष्टिः ॥ ४४६ ॥
२प्रत्याकारः परीवारः कोशः खड्गपिधानकम् ।
३अड्डनं फलकं चर्म खेटकाऽऽवरणस्फुराः ॥ ४४७ ॥
४अस्य मुष्टिस्तु संग्राहः ५क्षुरी छुरी कृपाणिका ।
शस्त्र्यसिर्धेनुपुत्र्यौ च ६पत्रपालस्तु साऽऽयता ॥ ४४८ ॥
७दण्डो यष्टिश्च लगुडः ८स्यादीली करवालिका ।
९भिन्दिपाले सृगः १०कुन्ते प्रासो—

धर्मपालोऽक्षरो देवस्तीक्ष्णकर्मा दुरासदः ॥
प्रसङ्गो रुद्रतनयो मनुर्ज्येष्ठः शिवङ्करः ।
करपालो विशसनस्तीक्ष्णधारो विषाग्रजः ॥
धर्मप्रचारो धाराङ्गो धाराधरकरालिकौ ।
चन्द्रभासश्च शस्त्रः ।

१. 'तलवारकी मूंठ'का १ नाम है—त्सरुः (पु । यहां तलवारको उपलक्षण मानकर कटार, छड़ी आदिकी मूंठकोभी 'त्सरुः' कहते हैं) ॥

२. 'तलवार (कटार आदि) की म्यान'के ४ नाम हैं—प्रत्याकारः, परीवारः, कोशः (त्रि), खड्गपिधानकम् (+खड्गपिधानम्) ॥

३. 'ढाल'के ६ नाम हैं—अड्डनम् , फलकम् (+फरकम् । पु न), चर्म (-र्मन्), खेटकम् (पु न), आवरणम् , स्फुरः (+स्फुरकः) ॥

४. 'ढालकी मूंठ'का १ नाम है—संग्राहः ॥

५. 'छुरी'के ६ नाम हैं—क्षुरी (+क्षुरिका), छुरी, कृपाणिका (+कृपाणी), शस्त्री, असिधेनुः, असिपुत्री) ॥

शेषश्चात्र—अथ क्षुर्यस्त्री कोशशायिका । पत्रञ्च धेनुका ।

६. 'बड़ी छुरी, कटार'का १ नाम है—पत्रपालः ॥

शेषश्चात्र—पत्रपाले तु हुलमातृका । कुट्टन्ती पत्रफला च ।

७. 'दण्डा, छड़ी, लाठी'का क्रमशः १-१ नाम है—दण्डः (पु न), यष्टिः (पु स्त्री), लगुडः ॥

८. 'एक तरफ धारवाली छोटी तलवार, या गुप्ती'के २ नाम हैं—ईली, करवालिका (+तरवालिका) ॥

९. 'फेंक कर चलाये जानेवाला बड़ा डण्डा लगा हुआ एक प्रकारका बरछा या भाला'के २ नाम हैं—भिन्दिपालः, सृगः ॥

१०. 'भाला (हाथमें पकड़े हुए ही चलाये जानेवाला फल लगा हुआ अस्त्र-विशेष'के २ नाम हैं—कुन्तः, प्रासः ॥

—१ऽथ द्रुघणो घनः ॥ ४४९ ॥
मुद्गरः स्यात् २कुठारस्तु परशुः पर्शुपर्श्वधौ ।
परश्वधः स्वधितिश्च ३परिघः परिघातनः ॥ ४५० ॥
४सर्वला तोमरे ५शल्यं शङ्कौ ६शूले त्रिशीर्षकम् ।
७शक्तिपट्टिसदुःस्फोटचक्राद्याः शस्त्रजातयः ॥ ४५१ ॥
८खुरली तु श्रमो योग्याऽभ्यास—

---

१. 'मुद्गर'के ३ नाम हैं—द्रुघणः, घनः, मुद्गरः (पु स्त्री) ॥

२. 'फरसाके ५ नाम हैं—कुठारः (पु स्त्री), परशुः, पर्शुः, पर्श्वधः, परश्वधः, स्वधितिः, (५ पु) ॥

३. 'लोहा मढ़ी हुई लाठी'के २ नाम हैं—परिघः (+पलिघः), परिघातनः ॥

४. 'तोमर (भालेके समान एक अस्त्र-विशेष)'के २ नाम हैं—सर्वला, तोमरः (पु न) ॥

५. 'भाला, काँटा, कील'के २ नाम हैं—शल्यम् (पु न), शङ्कुः (पु) ॥

६. 'त्रिशूल'के २ नाम हैं—शूलम् (पु न । त्रिशूलम्), त्रिशीर्षकम् ॥

७. 'शक्ति (साँग), पट्टिस (पटा), दुःस्फोट और चक्र आदिका क्रमशः १-१ नाम है—शक्तिः, पट्टिसः (+पट्टिशः), दुःस्फोटः, चक्रम् (पु न), शक्ति आदि (आदि शब्दसे—शतघ्नी, महाशिला, भुशुण्डी), (+भुशुण्डी), चिरिका, वराहकर्णकः, इत्यादिका संग्रह है) ये शस्त्र-जातियाँ अर्थात् शस्त्रोंके भेद हैं ॥

शेषश्चात्र—अथ शक्तिः कासूर्महाफला ॥

अष्टतालाऽऽयता सा च पट्टिसस्तु खुरोपमः ।
लोहदण्डस्तीक्ष्णधारो दुःस्फोटाराफलौ समौ ॥
चक्रं तु वलयप्रायमरसञ्चितमित्यपि ।
शतघ्नी तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ॥
अयःकण्टकसंच्छन्ना शतघ्न्येव महाशिला ।
भुशुण्डी स्याद्दारुमयी वृत्तायःकीलसञ्चिता ॥
कणयो लोहमात्रोऽथ चिरिका तु हुलाग्रका ।
वराहकर्णकोऽन्वर्थः फलपत्राग्रके हुलम् ॥
मुनयोऽस्त्रशेखरं च ।

८. 'शस्त्र-चालनका अभ्यास (चाँदमारी) करने'के ४ नाम हैं—खुरली, श्रमः, योग्या, अभ्यासः ॥

—१स्तङ्कः खलूरिका ।
२सर्वाभिसारो सर्वौघः सर्वसन्नहनं समाः ॥ ४५२ ॥
३लोहाभिसारो दशम्यां विधिर्नीराजनात्परः ।
४प्रस्थानं गमनं व्रज्याऽभिनिर्याणं प्रयाणकम् ॥ ४५३ ॥
यात्राऽ५भिषेणनं तु स्यात् सेनयाऽभिगमो रिपौ ।
६स्यात् सुहृद्बलमासारः ७प्रचक्रं चलितं बलम् ॥ ४५४ ॥
८प्रसारस्तु प्रसरणं तृणकाष्ठादिहेतवे ।
९अभिक्रमो रणे यानमभीतस्य रिपून् प्रति ॥ ४५५ ॥

शेषश्चात्र—शस्त्राभ्यास उपासनम् ।

१. 'शस्त्राभ्यास (चांदमारी) करनेके मैदान का १ नाम है—खलूरिका ॥

२. 'सब सेनाओंके साथ आक्रमण या युद्धार्थ प्रस्थान करने'के ३ नाम हैं—सर्वाभिसारः, सर्वौघः, सर्वसन्नहनम् ॥

३. 'विजया दशमी के दिन दिग्विजय यात्राके पहले, शान्त्युदक छिड़कने के बाद किये जानेवाले (शस्त्रोंका प्रदर्शन रूप) विधि विशेष'का १ नाम है—लोहाभिसारः[1] ॥

विमर्श—अमरसिंहने तो दिग्विजय यात्राके पूर्व शान्त्युदकके छिड़कनेका ही नाम 'लोहाभिसार' कहा है। यथा—लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः (अम० २।८।९४) ॥

४. 'यात्रा, प्रस्थान करने'के ६ नाम हैं—प्रस्थानम्, गमनम्, व्रज्या, अभिनिर्याणम्, प्रयाणकम् (+प्रयाणम्), यात्रा ॥

५. 'सेनाके साथ शत्रु पर चढ़ाई करने'का १ नाम है—अभिषेणनम् ॥

६. 'मित्रबल'का १ नाम है—आसारः ॥

७. 'प्रस्थान की हुई सेना'का १ नाम है—प्रचक्रम् ॥

८. 'सेनासे बाहर तृण-जल आदिके लिए जाने'का १ नाम है—प्रसारः। (अमरसिंहने "आसारः, प्रसारः" दोनोंको एकार्थक माना है) (अमर० २।८।९६) ॥

९. 'निर्भय होकर युद्धमें शत्रुके प्रति आगे बढ़ने'का १ नाम है—अभिक्रमः ॥

---

१. तदुक्तम्—"लोहाभिसारस्तु विधिः परो नीराजनान्नृपैः ।
दशम्यां दंशितैः कार्यः ॥ इति ॥

१अभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽभ्यमित्रीणोऽभ्यरि व्रजन् ।
२स्यादुरस्वानुरसिल ३ऊर्जस्व्यूर्जस्वलौ समौ ॥ ४५६ ॥
४सांयुगीनो रणे साधुर्५जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।
६जय्यो यः शक्यते जेतुं ७जेयो जेतव्यमात्रके ॥ ४५७ ॥
८वैतालिका बोधकरा अर्थिकाः सौखसुप्तिकाः ।
९घाण्टिकाश्चाक्रिकाः १०सूतो वन्दी मङ्गलपाठकः ॥ ४५८ ॥
११मागधो मगधः १२संशप्तका युद्धाऽनिवर्तिनः ।
१३नग्नः स्तुतिव्रत—

---

१. 'शत्रुके सामने युद्धार्थ बढ़नेवाले'के ३ नाम हैं—अभ्यमित्र:, अभ्यमित्रीय:, अभ्यमित्रीण: ॥

२. 'बलवान्'के २ नाम हैं—उरस्वान् (- स्वत्) उरसिल: ॥

३. 'अधिक बलवान्'के २ नाम हैं—ऊर्जस्वी (- स्विन्), ऊर्जस्वलः (+ऊर्जस्वान्, - स्वत्) ॥

४. 'युद्धमें निपुण'का १ नाम है—सांयुगीनः ॥

५. 'विजयी'के ३ नाम हैं—जेता (- तृ), जिष्णु:, जित्वर: ॥

शेषश्चात्र—जिष्णौ तु विजयी जैत्रः ।

६. 'जिसे जीता जा सके उस'का १ नाम है—जय्य: ॥

७. 'जीतने योग्य (जो भले ही जीता न जा सके, किन्तु जिसका जीतना उचित हो उस'का १ नाम है—जेय: ॥

८. वैतालिक (राजाओंकी स्तुति करते हुए प्रातःकाल जगानेवाले वन्दिगण)'के ४ नाम हैं—वैतालिका:, बोधकरा:, अर्थिका:, सौखसुप्तिकाः (+सौखशायनिका:, सौखशाय्यका:) ॥

९. 'देवता आदिके आगे घण्टा बजाकर स्तुति करनेवालों'के २ नाम हैं—घाण्टिका:, चाक्रिका: ॥

विमर्श—"वैतालिका:,······चाक्रिका:" शब्दोंमें बहुत्वकी अपेक्षासे बहुवचनका प्रयोग होनेसे उन शब्दोंका प्रयोग ए० व० में भी होता है ॥

१०. 'मङ्गल पाठ करनेवाले बन्दी'के ३ नाम हैं—सूत:, वन्दी (-न्दिन्), मङ्गलपाठक: ॥

११. 'प्रशंसाकर याचना करनेवाले'के २ नाम हैं—मागध:, मगधः ॥

१२. 'युद्धसे विमुख होकर नहीं लौटनेवालों'के २ नाम हैं—संशप्तका:, युद्धानिवर्तिन: (- र्तिन् । यहाँ भी ब० व० बहुत्वापेक्ष ही है, अतः ए० व० भी होता है) ॥

१३. 'स्तुतिमात्र करनेवाले'के २ नाम हैं—नग्नः, स्तुतिव्रतः ॥

—१स्तस्य ग्रन्थो भोगावली भवेत् ॥ ४५६ ॥

२प्राणः स्थाम तरः पराक्रमबलद्युम्नानि शौर्य्यौजसी
शुष्मं शुष्म च शक्तिरूर्ज्जसहसी ३युद्धं तु सङ्ख्यं कलिः ।
संग्रामाऽऽहवसंप्रहारसमरा जन्यं युदायोधनं
संस्फोटः कलहो मृधं प्रहरणं संयद्रणो विग्रहः ॥ ४६० ॥
द्वन्द्वं समाघातसमाह्वयाभिसंपातसंमर्दसमित्प्रघाताः ।
आस्कन्दनाजिप्रधनान्यनीकमभ्यागमश्च प्रविदारणं च ॥ ४६१ ॥
समुदायः समुदयो राटिः समितिसङ्गरौ ।
अभ्यामर्दः सम्परायः समीकं साम्परायिकम् ॥ ४६२ ॥
आक्रन्दः संयुगं चा४थ नियुद्धं तद् भुजोद्भवम् ।
५पटहाडम्बरौ तुल्यौ ६तुमुलं रणसङ्कुलम् ॥ ४६३ ॥
७नासीरं त्वग्रयानं स्या८दवमर्दस्तु पीडनम् ।

---

१. 'उक्त नग्नके ग्रन्थ'का १ नाम है—भोगावली ॥

२. 'बल, सामर्थ्य'के १३ नाम हैं—प्राणः, स्थाम (–मन्), तरः (–रस् । २ न), पराक्रमः, बलम् (पु न), द्युम्नम् (+द्रविणम्), शौर्य्यम्, ओजः (–जस्, न), शुष्मम्, शुष्म (–ष्मन्, न), शक्तिः, ऊर्ज्जः (पु स्त्री । +ऊर्क्–र्ज्), सहः (–स्, न) ॥

३. 'लड़ाई, युद्ध'के ४१ नाम हैं—युद्धम्, सङ्ख्यम् (पु न), कलिः (पु), संग्रामः, आहवः, सम्प्रहारः, समरः, जन्यम् (२ पु न), युत् (–ध्), आयोधनम्, संस्फोटः (+संस्फेटः, संफेटः), कलहः, मृधम्, प्रहरणम्, संयत् (न । + स्त्री), रणः (पु न), विग्रहः, द्वन्द्वम्, समाघातः, समाह्वयः, अभिसम्पातः, संमर्दः, समित्, प्रघातः, आस्कन्दनम्, आजिः (स्त्री), प्रधनम्, अनीकम्, अभ्यागमः, प्रविदारणम्, समुदायः, समुदयः, राटिः (स्त्री), समितिः, सङ्गरः, अभ्यामर्दः, सम्परायः (पु न), समीकम्, साम्परायिकम्, आक्रन्दः, संयुगम् (पु न) ॥

४. 'कुश्ती, मल्लयुद्ध, दंगल'का १ नाम है—नियुद्धम् ॥

५. 'नगाड़ा नामक बाजा'के २ नाम हैं—पटहः, आडम्बरः (पु न) ॥

६. 'घनघोर युद्ध'के २ नाम हैं—तुमुलम्, रणसङ्कुलम् ॥

७. 'आगे चलनेवाली सेना, या—सेनाका आगे चलने'के २ नाम हैं—नासीरम् (स्त्री न), अग्रयानम् ॥

८. 'सेनाके द्वारा पीड़ित (शत्रुपक्षको तङ्ग) करने'के २ नाम हैं—अवमर्दः, पीडनम् ॥

१प्रपातस्त्वभ्यवस्कन्दो धाट्यभ्यासादनं च सः ॥ ४६४ ॥
२तद्रात्रौ सौप्तिकं ३वीराशंसनं त्वाजिभीष्मभूः ।
४नियुद्धभूरक्षवाटो ५मोहो मूर्च्छा च कश्मलम् ॥ ४६५ ॥
६वृत्ते भाविनि वा युद्धे पानं स्याद्वीरपाणकम् ।
७पलायनमपयानं संदावद्रवविद्रवाः ॥ ४६६ ॥
अपक्रमः समुत्प्रेभ्यो द्रावो८ऽथ विजयो जयः ।
९पराजयो रणे भङ्गो १०डमरे डिम्बविप्लवौ ॥ ४६७ ॥
११वैरनिर्यातनं वैरशुद्धिर्वैरप्रतिक्रिया ।
१२बलात्कारस्तु प्रसभं हठो१३ऽथ स्खलितं छलम् ॥ ४६८ ॥

---

१. 'कपटसे आक्रमण करने (छापा मारना)'के ४ नाम हैं—प्रपातः, अभ्यवस्कन्दः (+अवस्कन्दः), धाटी, अभ्यासादनम् ॥

२. 'रातमें सोनेके बाद छलसे आक्रमण करने'का १ नाम है–सौप्तिकम् ॥

३. 'युद्धकी भयङ्कर भूमि'के २ नाम हैं—वीराशंसनम् (+वीरासंशनी), आजिभीष्मभूः ॥

४. 'अखाड़ा, मल्लोंके युद्ध करनेकी भूमि'के २ नाम हैं—नियुद्धभूः, अक्षवाटः ॥

५. 'मूर्च्छा'के ३ नाम हैं—मोहः, मूर्च्छा, कश्मलम् ॥

६. 'युद्धके पहले या बादमें योद्धाओंके मद्यपान करने'का १ नाम है—वीरपाणकम् (+वीरपाणम्) ॥

७. 'भागने'के ६ नाम हैं–पलायनम्, अपयानम्, संदावः, द्रवः, विद्रवः, अपक्रमः, संद्रावः, उद्रावः, प्रद्रावः (+नशनम्) ॥

८. 'विजय, जीत'के २ नाम हैं—विजयः, जयः ॥

९. 'हार, पराजय'का १ नाम है—पराजयः ॥

१०. 'लूटपाट, या—अनुचित युद्ध' के ३ नाम हैं—डमरः, डिम्बः (पु न), विप्लवः ॥

शेषश्चात्र—स्याच्छृगाली तु विप्लवे ।

११. 'विरोध का बदला लेने (प्रतिकार करने)'के ३ नाम हैं—वैरनिर्यातनम्, वैरशुद्धिः वैरप्रतिक्रिया ॥

१२. 'बलात्कार करने'के ३ नाम हैं—बलात्कारः, प्रसभम् (न । + पु न), हठः ॥

१३. 'छल (युद्धके नियमको भङ्ग करना)'के २ नाम हैं—स्खलितम्, छलम् ॥

१परापर्यभितो भूतो जितो भग्नः पराजितः ।
२पलायितस्तु नष्टः स्याद् गृहीतदिक् तिरोहितः ॥ ४६९ ॥
३जिताहवो जितकाशी ४प्रस्कन्नपतितौ समौ ।
चारः कारा गुप्तौ ५वन्द्यां ग्रहकः प्रोपतो ग्रहः ॥ ४७० ॥
६चातुर्वर्ण्यं द्विजक्षत्रवैश्यशूद्रा नृणां भिदः ।
७ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुरिति क्रमात् ॥ ४७१ ॥
चत्वार आश्रमास्तत्र ८वर्णी स्याद् ब्रह्मचारिणि ।
९ज्येष्ठाश्रमी गृहमेधी गृहस्थः स्नातको गृही ॥ ४७२ ॥
१०वैखानसो वानप्रस्थो ११भिक्षुः सांन्यासिको यतिः ।
कर्म्मन्दी रक्तवसनः १२परिव्राजकतापसौ ॥ ४७३ ॥
पाराशरी पारिकाङ्क्षी मस्करी पारिरक्षकः ।

---

१. 'पराजित, हारे हुए'के ६ नाम हैं—पराभूतः, परिभूतः, अभिभूतः, जितः, भग्नः, पराजितः ॥

२. 'भागे हुए'के ४ नाम हैं—पलायितः, नष्टः, गृहीतदिक् (-दिश्), तिरोहितः ॥

३. 'युद्धमें विजय प्राप्त किये हुए'के २ नाम हैं—जिताहवः, जितकाशी (-शिन्) ॥

४. 'गिरे हुए'के २ नाम हैं—प्रस्कन्नः, पतितः ॥

५. 'जेल'के ३ नाम हैं—चारः (+चारकः), कारा, गुप्तिः ॥

६. 'बलवान्‌के हाथमें दिये गये राजकुमार आदि, या—बलपूर्वक लायी गयी स्त्री'के ४ नाम हैं—वन्दी, ग्रहकः, प्रग्रहः, उपग्रहः ॥

७. द्विजः, क्षत्रः, वैश्यः, शूद्रः (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र)—ये ४ मनुष्योंके जाति (वर्ण)-विशेष हैं, इन चारोंके समुदायका १ नाम है—'चातुर्वर्ण्यम्' ॥

८. 'ब्रह्मचारी (-रिन्), गृही (-हिन्), वानप्रस्थः, भिक्षुः (ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास)—ये ४ क्रमशः उन ब्राह्मणादिके आश्रम हैं—'आश्रमः' (पु न) है ॥

९. 'ब्रह्मचारी'के २ नाम हैं—वर्णी (-र्णिन्), ब्रह्मचारी (-रिन्) ॥

१०. 'गृहस्थ'के ५ नाम हैं—ज्येष्ठाश्रमी (-मिन्), गृहमेधी (-धिन्), गृहस्थः, स्नातकः, गृही (-हिन्) ॥

११. 'वानप्रस्थ'के २ नाम हैं—वैखानसः, वानप्रस्थः ॥

१२. 'संन्यासी'के ११ नाम हैं—भिक्षुः, सांन्यासिकः (+संन्यासी,-सिन्,) यतिः, कर्मन्दी (-न्दिन्), रक्तवसनः, परिव्राजकः (+परिव्राट्,-ज्),

१स्थाण्डिलः स्थण्डिलशायी यः शेते स्थण्डिले व्रतात् ॥ ४७४ ॥
२तपःक्लेशसहो दान्तः ३शान्तः श्रान्तो जितेन्द्रियः ।
४अवदानं कर्म्म शुद्धं ५ब्राह्मणस्तु त्रयीमुखः ॥ ४७५ ॥
भूदेवो वाडवो विप्रो द्वयग्राभ्यां जातिजन्मजाः ।
वर्णज्येष्ठः सूत्रकण्ठः षट्कर्मा मुखसंभवः ॥ ४७६ ॥
वेदगर्भः शमीगर्भः सावित्रो मैत्र एतसः ।
६वटुः पुनर्माणवको ७भिक्षा स्याद् ग्रासमात्रकम् ॥ ४७७ ॥
८उपनायस्तूपनयो वटूकरणमानयः ।
९अग्नीन्धनं त्वग्निकार्यमाग्नीध्रा चाग्निकारिका ॥ ४७८ ॥
१०पालाशो दण्ड आषाढो व्रते ११राम्भस्तु वैणवः ।

तापसः (+तपस्वी,-स्विन्), पाराशरी (-रिन्), पारिकाङ्क्षी (-ङ्क्षिन्), मस्करी (-रिन्), पारिरक्षिकः ॥

१. 'व्रत-पालनार्थ बिछौनेसे हीन भूमिपर सोनेवाले'के २ नाम हैं—स्थाण्डिलः, स्थण्डिलशायी (-यिन्) ॥

२. 'तपस्याके कष्टको सहन करनेवाले'के २ नाम हैं—तपःक्लेशसहः, दान्तः ॥

३. 'जितेन्द्रिय' के ३ नाम हैं—शान्तः, श्रान्तः, जितेन्द्रियः ॥

४. 'शुद्ध (उच्च) कर्म'का १ नाम है—अवदानम् ॥

५. 'ब्राह्मण'के २० नाम हैं—ब्राह्मणः, त्रयीमुखः, भूदेवः (+भूसुरः), वाडवः, विप्रः, द्विजातिः, द्विजन्मा (-न्मन्), द्विजः, अग्रजातिः, अग्रजन्मा (-न्मन्), अग्रजः, वर्णज्येष्ठः, सूत्रकण्ठः, षट्कर्मा (-र्मन्), मुखसम्भवः, वेदगर्भः शमीगर्भः, सावित्रः, मैत्रः, एतसः ॥

६. 'मौञ्जी मेखला धारण किये हुए ब्रह्मचारी'के २ नाम हैं—वटुः, माणवकः ॥

७. 'भिक्षा (एक ग्रासके प्रमाणमें ब्रह्मचारीको गृहस्थसे मिलनेवाला अन्न)'का १ नाम है—भिक्षा ॥

८. 'यज्ञोपवीत संस्कार'के ४ नाम हैं—उपनायः, उपनयः वटूकरणम्, आनयः (+व्रतबन्धनम्, मौञ्जीबन्धनम्) ॥

९. 'अग्निहोत्र'के ४ नाम हैं—अग्नीन्धनम्, अग्निकार्यम्, आग्नीध्रा (+आग्नीध्री), अग्निकारिका ॥

१०. 'ब्रह्मचारीके पलाशके दण्ड'के २ नाम हैं—पालाशः, आषाढः ॥

११. 'ब्रह्मचारीके बांसके दण्ड'के २ नाम हैं—राम्भः, वैणवः ॥

१बैल्वः सारस्वतो रौच्यः २पैलवस्त्वौपरोधिकः ॥ ४७९ ॥
३आश्वत्थस्तु जितनेमि४रौदुम्बर उलूखलः ।
५जटा सटा ६वृषी पीठं ७कुण्डिका तु कमण्डलुः ॥ ४८० ॥
८श्रोत्रियश्छान्दसो ९यष्टा त्वादेष्टा स्याद् मखे व्रती ।
याजको यजमानश्च १०सोमयाजी तु दीक्षितः ॥ ४८१ ॥
११इज्याशीलो यायजूको १२यज्वा स्यादासुतीबलः ।

---

१. 'ब्रह्मचारीके बेलके दण्ड'के ३ नाम हैं—बैल्वः, सारस्वतः, रौच्यः ॥

२. ब्रह्मचारीके पीलु (वृक्ष-विशेष)के दण्ड'के २ नाम हैं—पैलवः, औपरोधिकः ॥

३. 'ब्रह्मचारीके पीपलके दण्ड'के २ नाम हैं—आश्वत्थः, जितनेमिः ॥

४. 'ब्रह्मचारीके गूलरके दण्ड'के २ नाम हैं—औदुम्बरः, उलूखलः ॥

विमर्श—इस ग्रन्थकी 'स्वोपज्ञवृत्ति'में स्पष्ट उल्लेख नहीं होनेपर भी "ब्राह्मणजातीय ब्रह्मचारी का दण्ड पलाश या बांसका, क्षत्रियजातीय ब्रह्मचारीका दण्ड बेल या पीलुका और वैश्यजातीय ब्राह्मणका दण्ड पीपल या गूलरका होता है" ऐसा स्वरसतः प्रतीत होता है; क्योंकि वहींपर (स्वोपज्ञ वृत्तिमें ही) लिखा है कि—

"मनुस्तु—'ब्राह्मणो बैल्वपालाशौ क्षत्रियो वाटखादिरौ ।
पैलवौदुम्बरौ वैश्यो दण्डानर्हन्ति धर्मतः ॥' इत्याह"

अर्थात् 'मनुने तो—ब्राह्मण ब्रह्मचारी बेल या पलाशका, क्षत्रिय ब्रह्मचारी बड़ या खैर (कत्था) का और वैश्य ब्रह्मचारी पीलु या गूलरका दण्ड धर्मानुसार ग्रहण करें' ऐसा कहा है ॥

५. 'जटा'के २ नाम हैं—जटा, सटा ॥

६. 'तपस्वियोंके आसन'के २ नाम हैं—वृषी, पीठम् ॥

७. 'तपस्वियोंके कमण्डलु'के २ नाम हैं—कुण्डिका, कमण्डलुः (पु न) ॥

८. 'वेदपाठी'के २ नाम हैं—श्रोत्रियः, छान्दसः ॥

९. 'यजमान, यज्ञकर्ता'के ४ नाम हैं—यष्टा, आदेष्टा (२-ष्टृ), याजकः, यजमानः ॥

१०. 'यज्ञमें दीक्षित'के २ नाम हैं—सोमयाजी (-जिन्), दीक्षितः ॥

११. 'सदा यज्ञ करनेवाले'के २ नाम हैं—इज्याशीलः, यायजूकः ॥

१२. 'विधिपूर्वक यज्ञ किये हुए'के २ नाम हैं—यज्वा (-ज्वन्), आसुतीबलः ॥

१सोमपः सोमपीथी स्यात् २स्थपतिर्गीःपतीष्टिकृत् ॥ ४८२ ॥
३सर्ववेदास्तु सर्वस्वदक्षिणं यज्ञमिष्टवान् ।
४यजुर्विदध्वर्यु५ऋग्विद् होतो६द्गाता तु सामवित् ॥ ४८३ ॥
७यज्ञो यागः सवः सत्रं स्तोमो मन्युर्मखः क्रतुः ।
संस्तरः सप्ततन्तुश्च वितानं बर्हिरध्वरः ॥ ४८४ ॥
८अध्ययनं ब्रह्मयज्ञः ९स्याद्देवयज्ञ आहुतिः ।
होमो होत्रं वषट्कारः १०पितृयज्ञस्तु तर्पणम् ॥ ४८५ ॥
तच्छ्राद्धं पिण्डदानं च ११नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ।
१२भूतयज्ञो बलिः १३पञ्च महायज्ञा भवन्त्यमी ॥ ४८६ ॥

---

१. 'सोमपान करनेवाले'के २ नाम हैं—सोमपः, सोमपीथी (–थिन्) ॥

२. 'बृहस्पतियज्ञ करनेवाले'के २ नाम हैं—स्थपतिः, गीष्पतीष्टिकृत् ॥

३. 'सम्पूर्ण धन दान करके यज्ञ करनेवाले'का १ नाम है—सर्ववेदाः (–दस्) ॥

४. 'अध्वर्यु'के २ नाम हैं—यजुर्वित् (–र्विद्), अध्वर्युः ॥

५. 'होता'के २ नाम हैं—ऋग्वित् (–ग्विद्), होता (–तृ) ॥

६. 'उद्गाता'के २ नाम हैं—सामवित् (–विद्), उद्गाता (–तृ) ॥

७. 'यज्ञ'के १३ नाम हैं—यज्ञः, यागः, सवः, सत्रम्, स्तोमः, मन्युः (पु), मखः, क्रतुः (पु), संस्तरः, सप्ततन्तुः (पु), वितानम् (पु न), बर्हिः (–र्हिस्, न), अध्वरः ॥

८. 'ब्रह्मयज्ञ (वेदादिके स्वाध्याय)'के २ नाम हैं—अध्ययनम्, ब्रह्मयज्ञः ॥

९. 'देवयज्ञ (अग्निमें मन्त्रपूर्वक हवन करने)'के ५ नाम हैं—देवयज्ञः, आहुतिः, होमः, होत्रम्, वषट्कारः ॥

१०. 'पितृयज्ञ (तर्पण, श्राद्ध—पिण्डदान आदि करने)'के ४ नाम हैं—पितृयज्ञः, तर्पणम्, श्राद्धम् (पु न), पिण्डदानम् ॥

११. 'नृयज्ञ (अतिथि, अभ्यागतके भोजनादिसे सत्कार करने)'के २ नाम हैं—नृयज्ञः, अतिथिपूजनम् ॥

१२. 'भूतयज्ञ (कौवे, कुत्ते आदिके लिए बलि देने)'के २ नाम हैं—भूतयज्ञः, बलिः (पु स्त्री) ॥

१३. 'इन ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, नृयज्ञ और भूतयज्ञ)को 'पञ्चमहायज्ञ' कहते हैं। 'महायज्ञाः' ॥

१योऽभिमन्त्र्य निहन्येत स स्यात्पशुरुपाकृतः ॥ ४६३ ॥
२परम्पराकं शसनं प्रोक्षणं च मखे वधः ।
३हिंसार्थं कर्माभिचारः स्याद् ४यज्ञार्हं तु यज्ञियम् ॥ ४६४ ॥
५हविः सान्नाय्य६मामिक्षा शृतोष्णक्षीरगं दधि ।
क्षीरशरः पयस्या च ७तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ४६५ ॥
८हव्यं सुरेभ्यो दातव्यं ९पितृभ्यः कव्यमोदनम् ।
१०आज्ये तु दधिसंयुक्ते पृषदाज्यं पृषातकः ॥ ४६६ ॥
११दध्ना तु मधु संपृक्तं मधुपर्कं महोदयः ।
१२हवित्री तु होमकुण्डं १३हव्यपाकः पुनश्चरुः ॥ ४६७ ॥

---

१. 'अभिमन्त्रितकर यज्ञमें वध्य किये जानेवाले पशु'का १ नाम है—उपाकृतः ॥

२. 'यज्ञीय पशु-वध'के ३ नाम हैं—परम्पराकम्, शसनम् (+शमनम्), प्रोक्षणम् ॥

३. 'शत्रु आदिकी हिंसाके लिए किये जानेवाले कर्म (मारण, मोहन, उच्चाटन, आदि)'का १ नाम है—अभिचारः ॥

४. 'यज्ञके लिए किये जानेवाले हिंसा कर्म'का १ नाम है—यज्ञियम् ॥

५. 'हविष्य'के २ नाम हैं—हविः (-विष्, न), सान्नाय्यम् ॥

६. 'उबाले हुए गर्म दूधमें छोड़े गये दही'के ३ नाम हैं—आमिक्षा, क्षीरशरः, पयस्या ॥

७. 'पूर्वोक्त आमिक्षाके माँड (मलाई)'का १ नाम है—वाजिनम् ॥

८. 'देवताओंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले पाक (हविष्य, खीर)'का १ नाम है—हव्यम् ॥

९. 'पितरोंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले पाक'का १ नाम है—कव्यम् ॥

विमर्श—'अतिज्ञों'का मत है कि देवों या पितरों किसीके उद्देश्यसे दिये जानेवाले पाक'के 'हव्यम्, कव्यम्' ये दोनों ही नाम हैं ॥

१०. 'दधि-बिन्दुसे युक्त घी'के २ नाम हैं—पृषदाज्यम् (+दध्याज्यम्), पृषातकः ॥

११. 'मधुपर्क (शहद मिले हुए दही)'के २ नाम हैं—मधुपर्कम्, महोदयः ॥

१२. 'हवनके कुण्ड'के २ नाम हैं—हवित्री, होमकुण्डम् ॥

१३. 'हव्य (देवोद्देश्यक खीर आदि) का पकाने, या—उक्त हव्यको पकानेके बर्तन'के २ नाम हैं—हव्यपाकः, चरुः (पु) ॥

१अमृतं यज्ञशेषे स्याद् २विघसो भुक्तशेषके ।
३यज्ञान्तोऽवभृथः ४पूर्तं वाप्या५दीष्टं मखक्रिया ॥ ४९८ ॥
६इष्टापूर्तं तदुभयं ७बर्हिर्मुष्टिस्तु विष्टरः ।
८अग्निहोत्र्यग्निचिच्चाहिताग्ना९वथाग्निरक्षणम् ॥ ४९९ ॥
अग्न्याधानमग्निहोत्रं १०दर्वी तु घृतलेखनी ।
११होमाग्निस्तु महाज्वालो महावीरः प्रवर्गवत् ॥ ५०० ॥
१२होमधूमस्तु निगणो १३होमभस्म तु वैष्टुतम् ।
१४उपस्पर्शस्त्वाचमनं १५घारसेकौ तु सेचने ॥ ५०१ ॥

---

१. 'यज्ञके बाद बचे हुए हविष्यान्न'के २ नाम हैं—अमृतम्, यज्ञशेषः ।

२. 'भोजनके बाद बचे हुए अन्न'के २ नाम हैं—विघसः, भुक्तशेषकः (+भुक्तशेषः) ॥

३. 'यज्ञके समाप्त होनेपर किये जाने वाले स्नान विशेष'के २ नाम हैं—यज्ञान्तः, अवभृथः ॥

४. 'बावली, पोखरा, तडाग, खुदवाने या बगीचा आदि लगाने'का १ नाम है—पूर्तम् ॥

५. 'यज्ञ करने'का १ नाम है—इष्टम् ॥

६. 'उक्त दोनों (पूर्त तथा इष्ट) कर्मों'का १ नाम है—इष्टापूर्तम् ॥

७. 'कुशाग्रोंकी मुट्ठी'का १ नाम है—विष्टरः (पु न) ॥

८. 'अग्निहोत्री'के ३ नाम हैं—अग्निहोत्री (त्रिन्), अग्निचित्, आहिताग्निः ॥

९. 'अग्निहोत्र'के ३ नाम हैं—अग्निरक्षणम्, अग्न्याधानम्, अग्निहोत्रम् ॥

१०. 'दर्वी' (यज्ञीय घृतको आलोडित करने तथा अपद्रव्य को बहिष्कृत करनेके लिए कलछुलके आकारके पात्र)'के २ नाम हैं—दर्वी, घृतलेखनी ॥

११. 'हवनकी अग्नि'के ४ नाम हैं—होमाग्निः, महाज्वालः, महावीरः, प्रवर्गः ॥

१२. 'हवनके धूएँ'के २ नाम हैं—होमधूमः, निगणः ॥

१३. 'होमकी भस्म'के २ नाम हैं—होमभस्म (– स्मन्), वैष्टुतम् ॥

१४. 'आचमन करने'के २ नाम हैं—उपस्पर्शः, आचमनम् ॥

१५. 'घृतसे अग्निके सेचन करने'के ३ नाम हैं—घारः[1] सेकः, सेचनम् ॥

---

१. तदुक्तं कात्यायनश्रौतसूत्रे—"एत्य जुह्वाभिधारणं ध्रुवाया हविष उपाभृतश्च ।", "चतुरवत्तं सवषट्कारासु ।" तथा—"अनिधावदायावदाय ध्रुवाम-

१योऽभिमन्त्र्य निहन्येत स स्यात्पशुरुपाकृतः ॥ ४६३ ॥
२परम्पराकं शसनं प्रोक्षणं च मखे वधः ।
३हिंसार्थं कर्माभिचारः स्याद् ४यज्ञार्हं तु यज्ञियम् ॥ ४६४ ॥
५हविः सान्नाय्य६मामिक्षा शृतोष्णक्षीरगं दधि ।
क्षीरशरः पयस्या च ७तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ४६५ ॥
८हव्यं सुरेभ्यो दातव्यं ९पितृभ्यः कव्यमोदनम् ।
१०आज्ये तु दधिसंयुक्ते पृषदाज्यं पृषातकः ॥ ४६६ ॥
११दध्ना तु मधु संपृक्तं मधुपर्कं महोदयः ।
१२हवित्री तु होमकुण्डं १३हव्यपाकः पुनश्चरुः ॥ ४६७ ॥

---

१. 'अभिमन्त्रितकर यज्ञमें वध्य किये जानेवाले पशु'का १ नाम है—उपाकृतः ॥

२. 'यज्ञीय पशु-वध'के ३ नाम हैं—परम्पराकम्, शसनम् (+शमनम्), प्रोक्षणम् ॥

३. 'शत्रु आदिकी हिंसाके लिए किये जानेवाले कर्म (मारण, मोहन, उच्चाटन, आदि)'का १ नाम है—अभिचारः ॥

४. 'यज्ञके लिए किये जानेवाले हिंसा कर्म'का १ नाम है—यज्ञियम् ॥

५. 'हविष्य'के २ नाम हैं—हविः (–विष्, न), सान्नाय्यम् ॥

६. 'उबाले हुए गर्म दूधमें छोड़े गये दही'के ३ नाम हैं—आमिक्षा, क्षीरशरः, पयस्या ॥

७. 'पूर्वोक्त आमिक्षाके माँड (मलाई)'का १ नाम है—वाजिनम् ॥

८. 'देवताओंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले पाक (हविष्य, खीर)'का १ नाम है—हव्यम् ॥

९. 'पितरोंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले पाक'का १ नाम है—कव्यम् ॥

विमर्श—'अतिज्ञों'का मत है कि देवों या पितरों किसीके उद्देश्यसे दिये जानेवाले पाक'के 'हव्यम्, कव्यम्' ये दोनों ही नाम हैं ॥

१०. 'दधि-बिन्दुसे युक्त घी'के २ नाम हैं—पृषदाज्यम् (+दध्याज्यम्), पृषातकः ॥

११. 'मधुपर्क (शहद मिले हुए दही)'के २ नाम हैं—मधुपर्कम्, महोदयः ॥

१२. 'हवनके कुण्ड'के २ नाम हैं—हवित्री, होमकुण्डम् ॥

१३. 'हव्य (देवोद्देश्यक खीर आदि) को पकाने, या—उक्त हव्यको पकानेके बर्तन'के २ नाम हैं—हव्यपाकः, चरुः (पु) ॥

१अमृतं यज्ञशेषे स्याद् २विघसो भुक्तशेषके ।
३यज्ञान्तोऽवभृथः ४पूर्तं वाप्या५दीष्टं मखक्रिया ॥ ४९८ ॥
६इष्टापूर्तं तदुभयं ७बर्हिर्मुष्टिस्तु विष्टरः ।
८अग्निहोत्र्यग्निचिच्चाहिताग्ना९वथाग्निरक्षणम् ॥ ४९९ ॥
अग्न्याधानमग्निहोत्रं १०दर्वी तु घृतलेखनी ।
११होमाग्निस्तु महाज्वालो महावीरः प्रवर्गवत् ॥ ५०० ॥
१२होमधूमस्तु निगणो १३होमभस्म तु वैष्टुतम् ।
१४उपस्पर्शस्त्वाचमनं १५घारसेकौ तु सेचने ॥ ५०१ ॥

---

१. 'यज्ञके बाद बचे हुए हविष्यान्न'के २ नाम हैं—अमृतम्, यज्ञशेषः ।

२. 'भोजनके बाद बचे हुए अन्न'के २ नाम हैं—विघसः, भुक्तशेषकः (+भुक्तशेषः) ॥

३. 'यज्ञके समाप्त होनेपर किये जाने वाले स्नान विशेष'के २ नाम हैं—यज्ञान्तः, अवभृथः ॥

४. 'बावली, पोखरा, तडाग, खुदवाने या बगीचा आदि लगाने'का १ नाम है—पूर्तम् ॥

५. 'यज्ञ करने'का १ नाम है—इष्टम् ॥

६. 'उक्त दोनों (पूर्त तथा इष्ट) कर्मों'का १ नाम है—इष्टापूर्तम् ॥

७. 'कुशाओंकी मुट्ठी'का १ नाम है—विष्टरः (पु न) ॥

८. 'अग्निहोत्री'के ३ नाम हैं—अग्निहोत्री (त्रिन्), अग्निचित्, आहिताग्निः ॥

९. 'अग्निहोत्र'के ३ नाम हैं—अग्निरक्षणम्, अग्न्याधानम्, अग्निहोत्रम् ॥

१०. 'दर्वी' (यज्ञीय घृतको आलोडित करने तथा अपद्रव्य को बहिष्कृत करनेके लिए कलछुलके आकारके पात्र)'के २ नाम हैं—दर्वी, घृतलेखनी ॥

११. 'हवनकी अग्नि'के ४ नाम हैं—होमाग्निः, महाज्वालः, महावीरः, प्रवर्गः ॥

१२. 'हवनके धूएँ'के २ नाम हैं—होमधूमः, निगणः ॥

१३. 'होमकी भस्म'के २ नाम हैं—होमभस्म (– स्मन्), वैष्टुतम् ॥

१४. 'आचमन करने'के २ नाम हैं—उपस्पर्शः, आचमनम् ॥

१५. 'घृतसे अग्निके सेचन करने'के ३ नाम हैं—घारः[1] सेकः, सेचनम् ॥

---

१. तदुक्तं कात्यायनश्रौतसूत्रे—"एत्य जुह्वाभिघारणं ध्रुवाया हविष उपाभृतश्च ।", "चतुरवत्तं सवषट्कारासु ।" तथा—"अनिधावदायावदाय ध्रुवाम-

१ब्रह्मासनं ध्यानयोगासनेऽथ ब्रह्मवर्चसम् ।
वृत्ताध्ययनर्द्धिः ३पाठे स्याद् ब्रह्माञ्जलिरञ्जलिः ॥ ५०२ ॥
४पाठे तु मुखनिष्क्रान्ता विप्रुषो ब्रह्मबिन्दवः ।
५साकल्यवचनं पारायणं ६कल्पे विधिक्रमौ ॥ ५०३ ॥
७मूलेऽङ्गुष्ठस्य स्याद् ब्राह्मं तीर्थं ८कायं कनिष्ठयोः ।
९पित्र्यं तर्जन्यङ्गुष्ठान्त१०र्दैवतं त्वङ्गुलीमुखे ॥ ५०४ ॥
११ब्रह्मत्वं तु ब्रह्मभूयं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ।

---

१. 'ब्रह्मासन (ध्यान तथा योगके आसन-विशेष)'का १ नाम है—ब्रह्मासनम् ॥

२. 'सदाचार तथा वेदादि-स्वाध्यायकी समृद्धि'के २ नाम हैं—ब्रह्म-वर्चसम्, वृत्ताध्ययनर्द्धिः ॥

३. 'वेदाध्ययनके समयमें बाँधे गये अञ्जलि'का १ नाम है—ब्रह्माञ्जलिः ।

४. 'वेदाध्ययनके समय मुखसे निकले हुए थूकके बिन्दुओं'का १ नाम है—ब्रह्मबिन्दवः (ब० व० बहुत्वकी अपेक्षासे है) ॥

५. 'पारायण (लगातार अर्थोच्चारण किये बिना अध्ययन करने)'के २ नाम हैं—साकल्यवचनम्, पारायणम् ॥

६. 'विधि, क्रम'के ३ नाम हैं—कल्पः, विधिः, क्रमः ॥

७. 'हाथके अंगूठेके मध्यमें । 'ब्राह्मम्' तीर्थम् अर्थात् 'ब्राह्मतीर्थ' होता है ॥

८. 'कनिष्ठा अङ्गुलियों के मध्यमें 'कायं' तीर्थम् (+ 'प्राजापत्यं' तीर्थम् अर्थात् 'प्रजापति तीर्थ') अर्थात्, 'काय तीर्थ' होता है ॥

९. तर्जनी तथा अंगूठेके मध्यमें 'पित्र्यम्' तीर्थम् अर्थात् 'पित्र्यतीर्थ' होता है ॥

१०. 'अङ्गुलियोंके अग्रभागमे 'दैवतम्' तीर्थम् अर्थात् 'दैवततीर्थ' होता है ।

विमर्श । उक्त तीर्थमें से 'ब्राह्म' तीर्थसे ब्रह्माके उद्देश्यसे, 'काय' तीर्थ से प्रजापतिके उद्देश्यसे, 'पित्र्य' तीर्थ से पितरों के उद्देश्य से और 'दैवत' तीर्थ से देवताओं के उद्देश्य से तर्पणका जल आदि दिया जाता है ॥

शेषश्चात्र—करमध्ये सौम्यं तीर्थम् ।

११. 'ब्रह्मसायुज्य (परब्रह्ममें लीन हो जाने)'के३ नाम हैं ।—ब्रह्मत्वम्, ब्रह्मभूयम्, ब्रह्मसायुज्यम् ॥

भिधारयति । आप्यायतां ध्रुवा हविषा घृतेन यज्ञं यज्ञं प्रति देवयद्भ्यः । सूर्याया ऊधोऽअदित्याऽउपस्थाऽउरुधारा पृथ्वी यज्ञेऽस्मिन्निति ।" (का० श्रौ० सू० ३।३।९, ११-१२) ॥

१देवभूयादिकं तद्वद्धथोपाकरणं श्रुतेः ॥ ५०५ ॥
संस्कारपूर्वग्रहणं स्यात् ३स्वाध्यायः पुनर्जपः ।
४औपवस्त्रं तूपवासः ५कृच्छ्रं सान्तपनादिकम् ॥ ५०६ ॥
६प्रायः संन्यास्यनशने ७नियमः पुण्यकं व्रतम् ।
८चरित्रं चरिताचारौ चारित्रचरणे अपि ॥ ५०७ ॥
वृत्तं शीलं च ९सर्वैनोध्वंसि जप्येऽघमर्षणम् ।
१०समास्तु पादग्रहणाभिवादनोपसंग्रहाः ॥ ५०८ ॥
११उपवीतं यज्ञसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ।
१२प्राचीनावीतमन्यस्मिन्—

---

१. । उसी प्रकार 'देवसायुज्य (देवमें मिल जाने, या—देवरूप हो जाने), के ;देवभूयम्, आदि ('आदि' शब्द से देवत्वम्, देवसायुज्यम्', मूर्खभूयम्, मूर्खत्वम्,·········) नाम होते हैं ॥

२. 'संस्कारपूर्वक वेदके ग्रहण' करनेका १ नाम है—उपाकरणम् ॥

३. 'वेदादिके पाठ'के २ नाम हैं—स्वाध्यायः, जपः ॥

४. 'उपवास'के २ नाम हैं—औपवस्त्रम् (+औपवस्तम्, उपवस्त्रम्), उपवासः (पु न) ॥

५. 'सान्तपन' आदि ('आदि'से 'चान्द्रायण, आदिका संग्रह है) व्रतों'का १ नाम है—कृच्छ्रम् (पु न) ॥

६. 'स्वर्गादि उत्तम लोकको प्राप्तिके लिए भोजनत्यागपूर्वक मरनेके अध्यवसाय'का १ नाम है—प्रायः ॥

७. 'नियम, व्रत'के ३ नाम हैं—नियमः, पुण्यकम्, व्रतम् (पु न) ॥

शेषश्चात्र—अथ स्यान्नियमे तपः ।

८. 'आचरण, चरित्र'के ७ नाम हैं—चरित्रम्, चरितम्, आचारः, चारित्रम्, चरणम्, वृत्तम्, शीलम् (पु न) ॥

९. 'अघमर्षण (सब पापके नाशक जप-विशेष)'का १ नाम है—अघमर्षणम् ॥

१०. 'गुरु आदिके चरण स्पर्शकर प्रणाम करने'के ३ नाम हैं—पादग्रहणम्, अभिवादनम्, उपसंग्रहः ॥

११. 'बाँये कन्धेसे दहिने पार्श्वमें तिर्छे लटकते हुए जनेऊ'के २ नाम हैं—उपवीतम् (पु न), यज्ञसूत्रम् ॥

१२. 'दहने कन्धेसे बाँये पार्श्वमें तिर्छे लटकते हुए जनेऊ'का १ नाम है—प्राचीनावीतम् ॥

—१निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥ ५०९ ॥
२प्राचेतसस्तु वाल्मीकिर्वल्मीककुशिनौ कविः ।
मैत्रावरुणवाल्मीकौ ३वेदव्यासस्तु माठरः ॥ ५१० ॥
द्वैपायनः पाराशर्यः कानीनो बादरायणः ।
व्यासोऽ ४स्याम्बा सत्यवती वासवी गन्धकालिका ॥ ५११ ॥
योजनगन्धा दाशेयी शालङ्कायनजा च सा ।
५जामदग्न्यस्तु रामः स्याद् भार्गवो रेणुकासुतः ॥ ५१२ ॥
६नारदस्तु देवब्रह्मा पिशुनः कलिकारकः ।
७वशिष्ठोऽरुन्धतीजानि ८रक्षमाला त्वरुन्धती ॥ ५१३ ॥
९त्रिशङ्कुयाजी गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः ।
१०कुशारणिस्तु दुर्वासाः ११शतानन्दस्तु गौतमः ॥ ५१४ ॥

---

१. 'मालाके समान सीधे छाती पर लटकते हुए जनेऊ'का १ नाम है—निवीतम् ॥

२. 'वाल्मीकि मुनि'के ७ नाम हैं—प्राचेतसः, वाल्मीकिः, वल्मीकः, कुशी (- शिन्), कविः (+आदिकविः), मैत्रावरुणः (+मैत्रावरुणिः), वाल्मीकः ॥

३. 'वेदव्यास, व्यासजी'के ७ नाम हैं—वेदव्यासः, माठरः, द्वैपायनः, पाराशर्यः, कानीनः, बादरायणः, व्यासः ॥

४. 'उक्त व्यासजीकी माता'के ६ नाम हैं—सत्यवती, वासवी, गन्धकालिका (+गन्धकाली), योजनगन्धा, दाशेयी, शालङ्कायनजा ॥

शेषश्चात्र—सत्यवत्यां गन्धवती मत्स्योदरी ।

५. 'परशुरामजी'के ४ नाम हैं—जामदग्न्यः, रामः (+परशुरामः), भार्गवः, रेणुकासुतः (+रैणुकेयः) ॥

६. 'नारदजी'के ४ नाम हैं—नारदः, देवब्रह्मा (- ह्मन्), पिशुनः, कलिकारकः (+देवर्षिः) ॥

७. 'वशिष्ठजी'के २ नाम हैं—वशिष्ठः (+वसिष्ठः), अरुन्धतीजानिः ॥

८. 'अरुन्धती (वशिष्ठजीकी धर्मपत्नी)'के २ नाम हैं—अक्षमाला, अरुन्धती ॥

९. 'विश्वामित्रजी'के ४ नाम हैं—त्रिशङ्कुयाजी (- जिन्), गाधेयः (+गाधिनन्दनः), विश्वामित्रः, कौशिकः ॥

१०. 'दुर्वासाजी'के २ नाम हैं—कुशारणिः, दुर्वासाः (- सस्) ॥

११. 'गौतम मुनि'के २ नाम हैं—शतानन्दः, गौतमः ॥

१याज्ञवल्क्यो ब्रह्मरात्रिर्योगेशो२ऽप्यथ पाणिनौ ।
सालातुरीयदाक्षेयौ ३गोनर्दीये पतञ्जलिः ॥ ५१५ ॥
४कात्यायनो वररुचिर्मेधाजिच्च पुनर्वसुः ।
५अथ व्याडिर्विन्ध्यवासी नन्दिनीतनयश्च सः ॥ ५१६ ॥
६स्फोटायने तु कक्षीवान् ७पालकाप्ये करेणुभूः ।
८वात्स्यायने मल्लनागः कौटल्यश्चणकात्मजः ॥ ५१७ ॥
द्रामिलः पक्षिलस्वामी विष्णुगुप्तोऽङ्गुलश्च सः ।
९क्षतव्रतोऽवकीर्णी स्याद् १०व्रात्यः संस्कारवर्जितः ॥ ५१८ ॥
११शिश्विदानः कृष्णकर्मा—

---

१. 'याज्ञवल्क्य मुनि'के ३ नाम हैं—याज्ञवल्क्यः, ब्रह्मरात्रिः, योगेशः (+योगीशः) ॥

२. 'पाणिनि मुनि'के ३ नाम हैं—पाणिनिः, सालातुरीयः, दाक्षेयः (+दाक्षीपुत्रः) ॥

३. 'पतञ्जलि मुनि'के २ नाम हैं—गोनर्दीयः, पतञ्जलिः ॥

४. 'कात्यायन'के ४ नाम हैं—कात्यायनः, वररुचिः, मेधाजित्, पुनर्वसुः ॥

५. 'व्याडि'के ३ नाम हैं—व्याडिः, विन्ध्यवासी (–सिन्), नन्दिनीतनयः ॥

६. 'स्फोटायन'के २ नाम हैं—स्फोटायनः (+स्फोटनः), कक्षीवान् (–वत्) ॥

७. 'पालकाप्य'के २ नाम हैं—पालकाप्यः, करेणुभूः (+कारेणवः) ॥

८. 'वात्स्यायन (चाणक्य)'के ८ नाम हैं—वात्स्यायनः, मल्लनागः, कौटल्यः (+कौटिल्यः), चणकात्मजः (+चाणक्यः), द्रामिलः, पक्षिलस्वामी (–मिन्), विष्णुगुप्तः, अङ्गुलः ॥

९. 'नियम कालके मध्यमें ही जिसका ब्रह्मचर्य व्रतभङ्ग हो गया हो, उस'के २ नाम हैं—क्षतव्रतः, अवकीर्णी (–र्णिन्) ॥

१०. 'जिसका यज्ञोपवीत संस्कार नियत समय पर नहीं हुआ हो, उस द्विज'का १ नाम है—व्रात्यः ।

विमर्श—गर्भ से सोलहवें वर्ष की अवस्थातक ब्राह्मण, बाइस वर्ष की अवस्थातक क्षत्रिय, चौबीस वर्ष की अवस्थातक वैश्यका यज्ञोपवीत संस्कार नहीं होनेपर वे 'व्रात्य' कहलाते हैं ॥

११. 'निन्दित कर्म (दुराचार) करनेवाले'के २ नाम हैं—शिश्विदानः, कृष्णकर्मा (–र्मन्) ॥

—१ब्रह्मबन्धुर्द्विजोऽधमः ।
२नष्टाग्निर्वीरहा ३जातिमात्रजीवी द्विजब्रुवः ॥ ५१९ ॥
४धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिः५वेदहीनो निराकृतिः ।
६वार्त्ताशी भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् ॥ ५२० ॥
७उच्छिष्टभोजनो देवनैवेद्यबलिभोजनः ।
८अजपस्त्वसदध्येता ९शाखारण्डोऽन्यशाखकः ॥ ५२१ ॥
१०शस्त्राजीवः काण्डस्पृष्टो ११गुरुहा नरकीलकः ।
१२मलो देवादिपूजायामश्राद्धो—

---

१. 'नीच द्विज'का १ नाम है—ब्रह्मबन्धुः ॥

२. 'जिसके अग्निहोत्रकी अग्नि प्रमादादि से बुझ गयी हो, उस अग्नि होत्री'के २ नाम हैं—नष्टाग्निः, वीरहा (-हन्) ॥

३. 'अपनी जाति बतलाकर जीविका चलानेवाले द्विज'का १ नाम है—द्विजब्रुवः ॥

४. 'धर्मध्वजी (जटादि बढ़ाकर या—गेरुआ वस्त्र आदि पहनकर धर्मात्मा बननेका पाखण्ड रच कर जीविका करनेवाले)'के २ नाम हैं—धर्मध्वजी (-जिन्), लिङ्गवृत्तिः ॥

५. 'वेदका अध्ययन नहीं करनेवाले'के २ नाम हैं—वेदहीनः, निराकृतिः ॥

६. 'भोजन-प्राप्त्यर्थ अपनी जाति या गोत्र आदि कहनेवाले'का १ नाम है—वार्त्ताशी (-शिन्) ॥

७. 'देवताके नैवेद्य तथा बलिको भोजन करनेवाले'का १ नाम है—उच्छिष्टभोजनः ॥

८. 'ठीक-ठीक स्वाध्याय नहीं करनेवाले'के २ नाम हैं—अजपः, असदध्येता (-ध्येतृ) ॥

९. 'अपनी शाखाका त्याग कर दूसरेकी शाखाको ग्रहण करनेवाले'के २ नाम हैं—शाखारण्डः, अन्यशाखकः ॥

१०. 'शस्त्रसे जीविका चलानेवाले'के २ नाम हैं—शस्त्राजीवः, काण्डस्पृष्टः ॥

११. 'गुरुकी हत्या करनेवाले'के २ नाम हैं—गुरुहा (-हन्), नरकीलकः ॥

१२. 'देवता आदिकी पूजामें श्रद्धा नहीं रखनेवाले'का १ नाम है—मलः ॥

—१Sथ मलिम्लुचः ॥ ५२२ ॥

पञ्चयज्ञपरिभ्रष्टो २निषिद्धैकरुचिः खरुः ।
३सुप्ते यस्मिन्नुदेत्यर्कोऽस्तमेति च क्रमेण तौ ॥ ५२३ ॥
अभ्युदिताऽभिनिर्मुक्तौ ४वीरोज्झो न जुहोति यः ।
५अग्निहोत्रच्छलाद् याच्ञापरो वीरोपजीवकः ॥ ५२४ ॥
६वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।
स्याद्वादवाद्याऽऽर्हतः स्या७च्छून्यवादी तु सौगतः ॥ ५२५ ॥
८नैयायिकस्त्वाक्षपादो योगः ९साङ्ख्यस्तु कापिलः ।
१०वैशेषिकः स्यादौलूक्यो ११बार्हस्पत्यस्तु नास्तिकः ॥ ५२६ ॥
चार्वाको लौकायतिक१२श्चैते षडपि तार्किकाः ।

---

१. 'पञ्चयज्ञ (३ । ४८६) नहीं करनेवाले'का १ नाम है—मलिम्लुचः (+पञ्चयज्ञपरिभ्रष्टः) ॥

२ 'जिसकी रुचि एक स्थानपर या किसी एक में निषिद्ध हो, उसका १ नाम है—खरुः, (+निषिद्धैकरुचिः) ॥

३. 'जो सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समयतक सोता रहे, उस'का क्रमसे १—१ नाम है—अभ्युदितः, अभिनिर्मुक्तः ॥

४. 'हवन (अग्निहोत्र) नहीं करनेवाले'का १ नाम है—वीरोज्झः ॥

५. 'अग्निहोत्रके नाम पर याचनाकर जीविका चलानेवाले'का १ नाम है—वीरोपजीवकः ॥

६. 'शूद्रसे प्राप्त धनके द्वारा अग्निहोत्र करनेवाले'का १ नाम है—वीरविप्लावकः ॥

७. 'जैन, स्याद्वादवादी'के २ नाम हैं—स्याद्वादवादी (-दिन् । + अनेकान्तवादी,-दिन्), आर्हतः (+जैनः) ॥

'बौद्ध'के २ नाम हैं—शून्यवादी (-दिन्), सौगतः (+बौद्धः) ॥

८. 'नैयायिक'के ३ नाम हैं—नैयायिकः, आक्षपादः, यौगः ॥

९. 'साङ्ख्य (साङ्ख्य शास्त्र के पढ़ने या जाननेवाले)'के २ नाम—हैं साङ्ख्यः, कापिलः ॥

१०. 'वैशेषिक'के २ नाम हैं—वैशेषिकः, औलूक्यः ॥

११. 'चार्वाक के ४ नाम हैं—बार्हस्पत्यः, नास्तिकः, चार्वाकः, लौकायतिकः (+लौकायितिकः) ॥

१२. इन ६ ('स्याद्वादवादी,…बार्हस्पत्य') को 'तर्किक' कहते हैं—('तार्किकः' पुं है) ॥

१क्षत्रं तु क्षत्रियो राजा राजन्यो बाहुसंभवः ॥ ५२७ ॥
२अर्यो भूमिस्पृशो वैश्या ऊरव्या ऊरुजा विशः ।
३वाणिज्यं पाशुपाल्यञ्च कर्षणं चेति वृत्तयः ॥ ५२८ ॥
४आजीवो जीवनं वार्त्ता जीविका वृत्तिवेतने ।
५उञ्छो धान्यकणादानं ६कणिशाद्यर्जनं शिलम् ॥ ५२९ ॥
७ऋतं तद् द्वयं८मनृतं कृषि ९र्मृतं तु याचितम् ।
१०अयाचितं स्मादमृतं ११सेवावृत्तिः श्वजीविका ॥ ५३० ॥
१२सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या १३वाणिजो वणिक् ।
क्रयविक्रयिकः पण्याजीवाऽऽपणिकनैगमाः ॥ ५३१ ॥
वैदेहः सार्थवाहश्च—

---

१. 'क्षत्रिय'के ५ नाम हैं—क्षत्रम् (पु न), क्षत्रियः, राजा (-जन्), राजन्यः, बाहुसम्भवः (+ बाहुजः) ॥

२. 'वैश्य'के ६ नाम हैं—अर्याः, भूमिस्पृशः (-स्पृश्), वैश्याः, ऊरव्याः, ऊरुजाः, विशः (-श् । ब० व० बहुत्वापेक्ष है, अतएव ए० व० में भी इनका प्रयोग होता है) ॥

३. इन वैश्योंकी वृत्ति वाणिज्यम्, पाशुपाल्यम्, कर्षणम् (अर्थात् क्रमशः—व्यापार, पशुपालन और खेती) है ॥

४. 'जीविका'के ६ नाम हैं—आजीवः, जीवनम्, वार्त्ता, जीविका, वृत्तिः, वेतनम् ॥

५. 'खेत काटकर किसानके अन्न ले जानेके उपरान्त उस खेतमें-से १-१ दाना चुँगने'का १ नाम है—उञ्छः ॥

६. 'खेत काटकर किसानके अन्न ले जानेके उपरान्त उस खेतमें-से १-१ बाल चुँगने'का १ नाम है—शिलम् ॥

७. 'उक्त दोनों (उञ्छः, शिलम्)'का १ नाम है—ऋतम् ॥

८. 'खेतीसे जीविका चलाने'का १ नाम है—अनृतम् ॥

९. 'याचनाकर जीविका चलाने'का १ नाम है—मृतम् ॥

१०. 'विना याचना किये मिले हुए द्रव्यादिसे जीविका चलानेवाले'के २ नाम हैं—अयाचितम्, अमृतम् ॥

११. 'सेवाके द्वारा जीविका चलानेवाले'के २ नाम हैं—सेवावृत्तिः, श्वजीविका ॥

१२. 'व्यापार'के ३ नाम हैं—सत्यानृतम्, वाणिज्यम्, वणिज्या (स्त्री न) ॥

१३. 'बनियाँ, व्यापारी'के ८ नाम हैं—वाणिजः, वणिक् (- णिज्),

—१क्रायकः क्रयिकः क्रयी ।
२क्रेयदे तु विपूर्वास्ते ३मूल्ये वस्नार्घवक्रयाः ॥ ५३२ ॥
४मूलद्रव्यं परिपणो नीवी ५लाभोऽधिकं फलम् ।
६परिदानं विनिमयो नैमेयः परिवर्त्तनम् ॥ ५३३ ॥
व्यतिहारः परावर्त्तो वैमेयो निमयोऽपि च ।
७निक्षेपोपनिधी न्यासे ८प्रतिदानं तदर्पणम् ॥ ५३४ ॥
९क्रेतव्यमात्रके क्रेयं—

क्रयविक्रयिकः, पण्याजीवः, आपणिकः (+प्रापणिकः), नैगमः, वैदेहः, सार्थवाहः ॥

१. 'खरीददार'के ३ नाम हैं—क्रायकः, क्रयिकः, क्रयी (–यिन्) ॥

२. 'बेचनेवाले'के ४ नाम हैं—क्रेयदः, विक्रायकः, विक्रयिकः, विक्रयी (–यिन्) ॥

३. 'मूल्य, कीमत'के ४ नाम हैं—मूल्यम्, वस्नः (पु न), अर्घः, वक्रयः ॥

शेषश्चात्र—अथ वक्रये ।
भाटकः ।

४. 'व्यापारादिमें लगाये गये मूल धन'के ३ नाम हैं—मूलद्रव्यम्, परिपणः, नीवी ॥

५. 'लाभ, नफा'के २ नाम हैं—लाभः, फलम् ॥

६. 'परिवर्तन (अदल-बदल) करने'के ८ नाम हैं—परिदानम्, विनिमयः, नैमेयः, परिवर्त्तनम्, व्यतिहारः, परावर्त्तः, वैमेयः, निमयः ॥

७. 'धरोहर, निक्षेप (पुनः वापस लेनेके लिए कोई वस्तु या द्रव्यादि किसीको देने)'के ३ नाम हैं—निक्षेपः, उपनिधिः, न्यासः ॥

८. 'उक्त धरोहरको लौटाने'का १ नाम है—प्रतिदानम् ॥

विमर्श—किसी पात्रमें रखकर वस्तु या द्रव्यादिका बिना नाम कहे पुनः वापस लेनेके लिए किसीको देनेका नाम 'उपनिधिः' उक्त वस्तु आदिका नाम प्रकाशित कर (कहकर) देने या रखनेका नाम 'न्यासः' और मरम्मतके लिए कारीगरको बर्तन आदि देनेका नाम 'निक्षेपः' है[1] ॥

९. 'खरीदने योग्य वस्तु'का १ नाम है—क्रेयम् ॥

---

१. तदुक्तम्—
"वासनस्थमनाख्याय हस्तेऽन्यस्य यदर्पितम् ।
द्रव्यं तदुपनिधिर्न्यासः प्रकाश्य स्थापितं तु यत् ॥
निक्षेपः शिल्पिहस्ते तु भाण्डं संस्कर्तुमर्पितम् ।" इति ॥

—१क्रय्यं न्यस्तं क्रयाय यत् ।
२पणितव्यं तु विक्रेयं पण्यं ३सत्यापनं पुनः ॥ ५३५ ॥
सत्यंकारः सत्याकृति४स्तुलयौ विपणविक्रयौ ।
५गण्यं गणेयं सङ्ख्येयं ६सङ्ख्या त्वेकादिका भवेत् ॥ ५३६ ॥

---

१. 'सौदा (खरीददार लोग खरीदें, इस विचारसे दूकान या बाजारमें रखी हुई वस्तु)'का १ नाम है—क्रय्यम् ॥

२. 'बेचने योग्य वस्तु'के ३ नाम हैं—पणितव्यम्, विक्रेयम्, पण्यम् ॥

३. 'सौदेको बेचनेके लिए वचनबद्ध होने'के ३ नाम हैं—सत्यापनम्, सत्यङ्कारः, सत्याकृतिः ॥

४. 'बिक्री करने (बेचने)'के २ नाम हैं—विपणः, विक्रयः ॥

५. 'गिनती करने योग्य, गणनीय'के ३ नाम हैं—गण्यम्, गणेयम्, सङ्ख्येयम् ॥

६. 'एकः' आदि ('आदि' शब्दसे—द्वौ, त्रयः, चत्वारः, पञ्च,······) को 'सङ्ख्या' कहते हैं ।

विमर्श—'एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः' (एक, दो, तीन, चार)—ये ४ शब्द त्रिलिङ्ग हैं, "पञ्च, षट्, सप्त, अष्ट, (+अष्टौ-ष्टन्),············ अष्टादश" (क्रमशः—पाँच, छह, सात, आठ,······अट्ठारह) सब शब्द अलिङ्ग (या—तीनों लिङ्गमें समान रूपवाले) हैं, एकोनविंशतिः, विंशतिः, एकविंशतिः,····अष्टनवतिः, नवनवतिः (क्रमशः—उन्नीस, बीस, इक्कीस,····अट्ठानबे, निन्यानबे)—ये सब शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं । परन्तु 'षष्टिः, एकषष्टिः,······" अर्थात् क्रमशः—"साठ, एकसठ,······,' आदि ('षष्टिः, जिनके अन्तमें हों वे शब्द तथा 'षष्टिः' शब्द भी) त्रिलिङ्ग हैं) । इनमें "एकः, द्वौ,······ अष्टादश" अर्थात् क्रमशः—एक से अट्ठारह तक संख्यावाले सब शब्द सङ्ख्येयमें और विंशतिः,·······शब्द सङ्ख्येय तथा सङ्ख्यान—इन दोनों अर्थमें प्रयुक्त होते हैं । (क्रमशः उदा०—सङ्ख्येयमें 'एक' आदि शब्द यथा—एकः, पुरुषः, द्वौ ग्रामौ, त्रयः सुराः,······। सङ्ख्येयमें 'विंशति' आदि शब्द यथा—विंशतिः घटाः, एकविंशतिः पुरुषाः, त्रिंशत् भवनानि,······; सङ्ख्यानमें 'विंशति' आदि शब्द यथा—विंशतिर्घटानाम्, एकविंशतिः पुरुषाणाम्,······। उक्त 'विंशति' आदि शब्द सङ्ख्येय तथा सङ्ख्यानमें प्रयुक्त होनेपर केवल एकवचन ही रहते हैं (जैसा ऊपर उदा० में है), किन्तु 'सङ्ख्या'में प्रयुक्त होनेपर द्विवचन तथा बहुवचनमें भी हो जाते हैं, यथा—द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः, गवां विंशतिः, गवां विंशती, गवां विंशतयः,······॥

१यथोत्तरं दशगुणं भवेदेको दशायुतः ।
शतं सहस्रमयुतं लक्षप्रयुतकोटयः ॥ ५३७ ॥
अर्बुदमब्जं खर्वं च निखर्वं च महाम्बुजम् ।
शङ्कुर्वार्धिरन्त्यं मध्यं परार्द्धं चेति नामतः ॥ ५३८ ॥
२असङ्ख्यं द्वीपवार्ध्यादि ३पुद्गलाऽऽत्माद्यनन्तकम् ।
४सांयात्रिकः पोतवणिग् ५यानपात्रं वहित्रकम् ॥ ५३९ ॥
वोहित्थं वहनं पोतः ६पोतवाहो नियामकः ।
निर्यामः ७कर्णधारस्तु नाविको ८नौस्तु मङ्गिनी ॥ ५४० ॥
तरीतरण्यौ बेडा—

---

१. एक से आरम्भकर वक्ष्यमाण (आगे कहे जानेवाले) सङ्ख्यावाचक शब्द क्रमशः दशगुने होते जाते हैं। वे शब्द ये हैं—एकः, दश (-शन्), शतम्, सहस्रम्, अयुतम् (३ पु न), लक्षम् (स्त्री न । + नियुतम्), प्रयुतम् (पु न), कोटिः (स्त्री), अर्बुदम् (पु न), अब्जम्, खर्वम्, निखर्वम्, महाम्बुजम् (+ महापद्मम्), शङ्कुः (पु स्त्री), समुद्रः (+ सागरः,······ पु), अन्त्यम्, मध्यम्, परार्द्धम् । (इनके क्रमशः—"इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, दश हजार, लाख, दश लाख करोड़, दश करोड़,······" अर्थ हैं) ।

विमर्श—इस सङ्ख्या के विषयमें विशेष जिज्ञासुओंको हेमाद्रि दानखण्ड पृ० १२८ तथा अमरकोषकी मणिप्रभा नामक टीका पर अमरकौमुदी नामकी टिप्पणी (अमरकोष २ । ६ । ८३—८४) देखनी चाहिए ॥

२. 'द्वीप' (जम्बूद्वीप, आदि) तथा समुद्र आदि ('आदि' शब्द से—चन्द्र, सूर्य आदि) 'असङ्ख्य (सङ्ख्यातीत)' हैं ॥

३. 'पुद्गल आत्मा आदि ('आदि' शब्दसे 'आकाशप्रदेश,······) 'अनन्त' हैं ॥

४. 'जहाजी व्यापारी'के २ नाम हैं—सांयात्रिकः, पोतवणिक् (-णिज्) ॥

५. 'जहाज'के ५ नाम हैं—यानपात्रम्, वहित्रम्, वोहित्थम्, वहनम् (+ प्रवहणम्), पोतः ॥

६. 'जहाजको चलानेवाले के ३ नाम हैं—पोतवाहः, नियामकः, निर्यामः ॥

७. 'कर्णधार'के २ नाम हैं—कर्णधारः, नाविकः ॥

८. 'नाव'के ५ नाम हैं—नौः (स्त्री । + नौका), मङ्गिनी, तरी, तरणी (+ तरिः, तरणिः), बेडा ॥

—१ऽथ द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ।
२नौकादण्डः क्षेपणी स्याद्३गुणवृक्षस्तु कूपकः ॥ ५४१ ॥
४पोलिन्दास्त्वन्तरादण्डाः ५स्याद् मङ्गो मङ्गिनीशिरः ।
६अभ्रिस्तु काष्ठकुद्दालः ७सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ ५४२ ॥
८केनिपातः कोटिपात्रमरित्रे९ऽथोडुपः प्लवः ।
कोलो भेलस्तरण्डश्च १०स्यात्तरपण्यमातरः ॥ ५४३ ॥
११वृद्ध्याजीवो द्वैगुणिको वार्धुषिकः कुसीदिकः ।
वार्धुषिश्च १२कुसीदार्थप्रयोगौ वृद्धिजीवने ॥ ५४४ ॥
१३वृद्धिः कलान्तर१४मृणं तूद्धारः पर्युदञ्चनम् ।
१५याच्ञयाप्तं याचितकं १६परिवृत्त्यापमित्यकम् ॥ ५४५ ॥

---

१. 'काष्ठकी छोटी नाव, या—काष्ठ अथवा पत्थरकी बनी हुई हौज टब'का १ नाम है—द्रोणी (+द्रोणिः, द्रुणिः) ॥

२. 'डांड़ा (जिससे नाव खेते हैं, उस दण्डा'के २ नाम हैं—नौकादण्डः क्षेपणी ॥

३. 'मस्तूल'के २ नाम हैं—गुणवृक्षः, कूपकः ॥

४. 'नावके बीचवाले डण्डों'का १ नाम है—पोलिन्दाः ॥

५. 'नावके ऊपरवाले भाग'का १ नाम है—मङ्गः (पु । +पु न) ॥

६. 'काष्ठकी कुदाल (नाव या जहाजमें छिद्र होनेपर जिससे खोद-खोद कर पटुआ) सन या चिथड़ा भरते हैं, उस)'का १ नाम है—अभ्रिः (स्त्री) ॥

७. 'नावके भीतर जमा हुए पानी को बाहर फेंकनेवाले (चमड़ेके मसक या थैले) पात्र'का १ नाम है—सेकपात्रम्, सेचनम् ॥

८. 'लङ्गर'के ३ नाम हैं—केनिपातः, कोटिपात्रम्, अरित्रम् ॥

९. 'छोटी नाव, डोंगी'के ५ नाम हैं—उडुपः (पु न), प्लवः, कोलः, भेलः, तरण्डः (पु न) ॥

१०. 'नाव या जहाजके भाड़े'के २ नाम हैं—तरपण्यम् , आतरः ॥

११. 'सूदखोर (सूद अर्थात् व्याजपर रुपयेको कर्ज देनेवाले)'के ५ नाम हैं—वृद्ध्याजीवः, द्वैगुणिकः, वार्धुषिकः, कुसीदकः, वार्धुषिः ॥

१२. 'सूद, व्याज'के २ नाम हैं—कुसीदम् (+कुशीदम्), अर्थप्रयोगः ॥

१३. 'मूलधनकी वृद्धि'के २ नाम हैं—वृद्धिः, कलान्तरम् ॥

१४. 'ऋण, कर्ज'के ३ नाम हैं—ऋणम्, उद्धारः, पर्युदञ्चनम् ॥

१५. 'याचना करनेपर मिले हुए धनादि'का १ नाम है—याचितकम् ॥

१६. 'किसी वस्तु आदिके बदलेमें मिली हुई वस्तु'का १ नाम है—आपमित्यकम् ॥

१अधमर्णो ग्राहकः स्यात्२उत्तमर्णस्तु दायकः ।
३प्रतिभूर्लग्नकः ४साक्षी स्थेय ५आधिस्तु बन्धकः ॥ ५४६ ॥
६तुलाद्यैः पौतवं मानं ७द्रुवयं कुडवादिभिः ।
८पाय्यं हस्तादिभिः९स्तत्र स्याद्गुञ्जाः पञ्च माषकः ॥ ५४७ ॥
१०ते तु षोडश कर्षोऽक्षः ११पलं कर्षचतुष्टयम् ।
१२बिस्तः सुवर्णो हेम्नोऽक्षे १३कुरुबिस्तस्तु तत्पले ॥ ५४८ ॥
१४तुला पलशतं—

---

१. 'कर्जदार, ऋण लेनेवाले'के २ नाम हैं—अधमर्णः, ग्राहकः ॥

२. 'कर्जदेनेवाले, महाजन'के ३ नाम हैं—उत्तमर्णः, दायकः ॥

३. उक्त दोनोंके बीचमें जमानत करनेवाले'के २ नाम हैं—प्रतिभूः, लग्नकः ॥

४. 'गवाह, साक्षी'के २ नाम हैं—साक्षी (-क्षिन्), स्थेयः ॥

शेषश्चात्र—अथ साक्षिणि स्यान्मध्यस्थः प्राश्निकोऽपि सः ।
कूटसाक्षी मृषासाक्ष्ये सूची स्याद् दुष्टसाक्षिणि ॥

५. 'बन्धक' (ऋण चुकानेतक प्रामाणिकताके लिए महाजनके यहां रखी हुई कोई वस्तु आदि)'के २ नाम हैं—आधिः, बन्धकः ॥

६. (अब मान-विशेषका वर्णन करते हैं—) 'तराजू, काँटा आदि'से तौलने'का १ नाम है—पौतवम् (+यौतवम्) ॥

७. 'कुडव (पसर, अञ्जलि) आदिसे नापकर प्रमाण करने'का १ नाम है—द्रुवयम् ॥

८. 'हाथ, फुट, गज, बांस आदि से प्रमाण करने'का १ नाम है-पाय्यम् ॥

९. 'उन तीनोंमें ('पौतव) द्रुवय और पाय्य' संज्ञक मानोंमें क्रमप्राप्त प्रथम 'पौतव' मानका वर्णन करते हैं—) 'पौतव' मानमें 'पांच गुञ्जा (रत्ती)का १ 'माषकः' (मासा=१ आना भर) होता है ॥

१०. 'सोलह माषक' (मासे)'का १ 'कर्षः, अक्षः' (१ रुपया भर) होता है । ये २ नाम हैं ॥

११. 'चार कर्ष' (रुपयेभर) का १ 'पलम्' (एक छटाक पल) होता है ॥

१२. 'सोनेके अक्ष (एक भर सोने अर्थात् एक असर्फी)'के २ नाम हैं—बिस्तः, अक्षः ॥

१३. 'एक पल (चार भर) सोने'का १ नाम है—कुरुबिस्तः ॥

१४. 'सौ पल' (चारसौ रुपये भर अर्थात् पांचसेर) का एक 'तुला' होती है ॥

—१तासां विंशत्या भार आचितः ।
२शाकटः शाकटीनश्च शलाटस्ते दशाचितः ॥ ५४९ ॥
३चतुर्भिः कुडवैः प्रस्थः ४प्रस्थैश्चतुर्भिराढकः ।
५चतुर्भिराढकैर्द्रोणः ६खारी षोडशभिश्च तैः ॥ ५५० ॥

---

१. 'बीस तुला (पसेरी) अर्थात् ढाई मनके ५ नाम हैं—भारः, आचितः, शाकटः, शाकटीनः, शलाटः ॥

२. 'दश भार' (पचीस मन)का १ 'आचितः' (+ न) होता है ॥

विमर्श—यहां पर 'भारः,............'शलाटः' ५ शब्दोंको एकार्थक नहीं मानकर 'शाकटः, शाकटीनः, शलाटः इन तीन शब्दोंका सम्बन्ध 'ते दशाचितः'के साथ करके अर्थ करना चाहिये—"बीस तुला (२००० पल=ढाई मन)के २ नाम हैं—'भारः, आचितः' । तथा 'दश भार' (२५ मन)के ४ नाम हैं—'शाकटः, शाकटीनः शलाटः, आचितः ।" ऐसा अर्थ नहीं करनेसे 'स्वोपज्ञवृत्ति' में लिखित "शकटेन वोढुं शक्यः शाकटः" (गाड़ीसे ढो सकने योग्य) यह विग्रह सङ्गत नहीं होता, क्योंकि 'आचितः' के विग्रहमें उसके पूर्वलिखित 'पुंसा हि द्वे पलसहस्रे वोढुं शक्यते' (मनुष्य २००० पल अर्थात् ढाई मन ढो सकता है) वचन गाड़ी तथा मनुष्य दोनों का बोझ ढाई मन मानना लोकविरुद्ध प्रतीत होता है । इसके विपरीत मत्प्रतिपादित अर्थके अनुसार मनुष्यको ढाई मन और गाड़ीको पच्चीस मन बोझ ढोना लोक व्यवहारनुकूल होता है, अतएव—"२० तुला (२००० पल = ढाई मन)के 'भारः, आचितः' दो नाम और १० आचित (२५ मन)के "शाकटः, शाक टीनः, शलाटः, आचितः' चार नाम हैं" ऐसा अर्थ करना चाहिए । ऐसा अर्थ करने पर ही "भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः । आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः । (अमरकोष २ । ९६ । ८७)" अर्थात् "२० तुला (ढाई मन)का 'भार' और १० भार (२५ मन)का १ 'आचित' होता है और यह आचित गाड़ीका बोझ होता है" इस अमरकोषोक्तिसे भी विरोध नहीं होता है । मानके विषय में विशेष जिज्ञासुओंको अमरकोष की मत्कृत 'मणिप्रभा' व्याख्या की 'अमरकौमुदी' टिप्पणी देखनी चाहिए ॥

३. (अब क्रमप्राप्त द्वितीय 'द्रुवय' नामक मानको कहते हैं—) 'चार कुडव' (आठ पसर) का १ नाम है—प्रस्थः (पु न) ॥

४. 'चार प्रस्थ'का १ नाम है—आढकः (त्रि) ॥

५. 'चार आढक'का १ नाम है—द्रोणः (पु न) ॥

६. 'सोलह द्रोण'का १ नाम है—खारी ॥

१चतुर्विंशत्यङ्गुलानां हस्तो २दण्डश्चतुष्करः।
३तत्सहस्रौ तु गव्यूतं क्रोशः४स्तौ द्वौ तु गोरुतम् ॥ ५५१ ॥
गव्या गव्यूतगव्यूती ५चतुष्क्रोशं तु योजनम्।
६पाशुपाल्यं जीववृत्ति७र्गोमान् गोमी गवीश्वरे ॥ ५५२ ॥

---

१. (अब क्रमप्राप्त तृतीय 'पाय्य' संज्ञकमानको कहते हैं—) 'चौबीस अंगुल'का १ नाम है—हस्तः ॥

२. 'चार हस्त'का १ नाम है—दण्डः ॥

३. 'दो सहस्र दण्ड' (१ कोस)'के २ नाम हैं—गव्यूतम्, क्रोशः ॥

४. 'दो गव्यूत (कोस)'के ४ नाम हैं—गोरुतम्, गव्या, गव्यूतम्, गव्यूतिः (पु स्त्री) ॥

५. 'चार कोस'का १ नाम है—योजनम् ॥

विमर्श—त्रिविधमानोंके स्पष्टार्थ अधोलिखित चक्र देखिये—

त्रिविधमान-बोधक चक्र—

१ पौतवमान		२ द्रुवयमान		३ पाय्यमान	
१ गुञ्जा	१ रत्ती	१ कुडवः	२ प्रसृती	१ अङ्गुलम्	३ यवाः
५ ,,	१ माषकः (मासा)	४ कुडवाः	१ प्रस्थः	२४ अङ्गुलानि	१ हस्तः
१६ माषकाः	१ कर्षः	४ प्रस्थाः	१ आढकः	४ हस्ताः	१ दण्डः
४ कर्षाः	१ पलम्	१६ आढकाः	१ खारी	२००० दण्डाः	१ क्रोशः
१६ माषकाः (स्वर्णस्य)	१ विस्तः			२ क्रोशौ	१ गव्यूतिः
४ विस्ताः	१ कुरुविस्तः			२ गव्यूती (४ क्रोशाः)	१ योजनम्
१०० पलानि	१ तुला				
२० तुलाः	१ भारः				
२० भाराः	१ आचितः				

६. 'पशुपालन'के २ नाम हैं—पाशुपाल्यम्, जीववृत्तिः ॥

७. 'गोस्वामी'के ३ नाम हैं—गोमान् (-मत्), गोमी (-मिन्), गवीश्वरः (+गवेश्वरः) ॥

१गोपाले गोधुगाभीरगोपगोसङ्ख्यवल्लवाः ।
२गोविन्दोऽधिकृतो गोषु ३जाबालस्त्वजजीविकः ॥ ५५३ ॥
४कुटुम्बी कर्षकः क्षेत्री हली कृषिककार्षकौ ।
कृषीवलोऽपि ५जित्या तु हलिः ६सीरस्तु लाङ्गलम् ॥ ५५४ ॥
गोदारणं हल७मीषासीते तद्दण्डपद्धती ।
८निरीषे कुटकं ९फाले कृषकः कुशिकः फलम् ॥ ५५५ ॥
१०दात्रं लवित्रं ११तन्मुष्टौ वण्टो १२मत्यं समीकृतौ ।
१३गोदारणं तु कुद्दालः १४खनित्रं त्ववदारणम् ॥ ५५६ ॥
१५प्रतोदस्तु प्रवयणं प्राजनं तोत्रतोदने ।

---

१. 'ग्वाला, गोप'के ६ नाम हैं—गोपालः, गोधुक् (-दुह्), आभीरः, गोपः, गोसङ्ख्यः, वल्लवः ॥

२. 'गौओंके अधिकारी'का १ नाम है—गोविन्दः ॥

३. 'बकरी, खसीसे जीविका चलाने या उसे पालनेवाले'के २ नाम हैं—जाबालः, अजजीविकः ॥

४. 'किसान'के ७ नाम हैं—कुटुम्बी (-म्बिन्), कर्षकः, क्षेत्री (-त्रिन्। + क्षेत्राजीवः), हली (-लिन्), कृषिकः (+ कृषकः), कार्षकः, कृषीवलः ॥

५. 'बड़े हल'के २ नाम हैं—जित्या, हलिः (२ पु स्त्री) ॥

६. 'हल'के ४ नाम हैं—सीरः (पु न), लाङ्गलम्, गोदारणम्, हलम् (पु न) ॥

७. 'हरिस (हलका लम्बा दण्ड)'तथा 'हल चलानेपर पड़ी हुई लकीर' के क्रमशः १—१ नाम हैं—ईषा, सीता ॥

८. 'हलके नीचे वाला वह काष्ठ'-जिसमें फार गाड़ा जाता है' के २ नाम हैं—निरीषम्, कुटकम् ॥

९. 'हलके फार'के ४ नाम हैं—फालः, कृषकः, कुशिकः, फलम् ॥

१०. 'हँसिया'के २ नाम हैं—दात्रम्, लवित्रम् ॥

११. 'हँसियेके बेंट' का १ नाम है—वण्टः ॥

१२. 'जोती हुई भूमिको हेंगासे बराबर करने'का १ नाम है—मत्यम् ॥

१३. 'कुदाल'के २ नाम हैं—गोदारणम्, कुद्दालः (पु । + न) ॥

१४. 'रामा' खन्ती या खन्ता' (खोदनेका एक औजार)'के २ नाम हैं—खनित्रम्, अवदारणम् ॥

१५. 'चाबुक'के ५ नाम हैं—प्रतोदः, प्रवयणम्, प्राजनम्, तोत्त्रम्, तोदनम् ॥

१योत्रं तु योक्त्रमाबन्धः २कोटिशो लोष्टभेदनः ॥ ५५७ ॥
३मेधिर्मेथिः खलेवाली खले गोबन्धदारु यत् ।
४शूद्रोऽन्त्यवर्णो वृषलः पद्यः पज्जो जघन्यजः ॥ ५५८ ॥
५ते तु मूर्धावसिक्तादा रथकृन्मिश्रजातयः ।
६क्षत्रियायां द्विजान्मूर्धावसिक्तो ७विट्स्त्रियां पुनः ॥ ५५९ ॥
अम्बष्ठो८ऽथ पारशवनिषादौ शूद्रयोषिति ।
९क्षत्राद् माहिष्यो वैश्याया१०मुग्रस्तु वृषलस्त्रियाम् ॥ ५६० ॥
११वैश्यात्तु करणः १२शूद्रात्त्वायोगवो विशः स्त्रियाम् ।
१३क्षत्रियायां पुनः क्षत्ता १४चण्डालो ब्राह्मणस्त्रियाम् ॥ ५६१ ॥
१५वैश्यात्तु मागधः क्षत्र्यां १६वैदेहको द्विजस्त्रियाम् ।

---

१. 'जोती, या नाधा'के ३ नाम हैं—योत्रम्, योक्त्रम्, आबन्धः ॥

२. हेंगा, पटेला'के २ नाम हैं—कोटिशः (+कोटीशः), लोष्टभेदनः ॥

३ 'मेंह' (दंवनीमें चलते हुए बैलोंको बांधनेके खम्भे'के ३ नाम हैं—मेधिः, मेथिः (२ पु स्त्री), खलेवाली ॥

४. 'शूद्र'के ६ नाम हैं—शूद्रः, अन्त्यवर्णः, वृषलः, पद्यः, पज्जः, जघन्यजः ॥

५. 'मूर्धावसिक्त' (५५६ श्लो०)से आरम्भकर 'रथकारकः' (५८१ श्लो०) तक वर्णित जाति वर्णसङ्कर शूद्र जाति' है ॥

६. 'ब्राह्मणसे क्षत्रिय स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है-मूर्धावसिक्तः ॥

७. 'ब्राह्मणसे क्षत्रिय स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है—अम्बष्ठः ॥

८. 'ब्राह्मणसे शूद्रा स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'के २ नाम हैं—पारशवः, निषादः ॥

९. 'क्षत्रियसे वैश्या स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है—माहिष्यः ॥

१०. 'क्षत्रियसे शूद्रा स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है—उग्रः ॥

११. 'वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है—करणः ॥

१२. 'शूद्रसे वैश्या स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है—आयोगवः ॥

१३. 'शूद्रसे क्षत्रिया स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है—क्षत्ता (-त्तृ) ॥

१४. 'शूद्रसे ब्राह्मणी स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है—चण्डालः ॥

१५. 'वैश्यसे क्षत्रिया स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है—मागधः ॥

१६. 'वैश्यसे ब्राह्मणी स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है—वैदेहकः ॥

१सूतस्तु क्षत्रियाज्जात २इति द्वादश तद्भिदः ॥ ५६२ ॥
३माहिष्येण तु जातः स्यात् करण्यां रथकारकः ।
४कारुस्तु कारी प्रकृतिः शिल्पी ५श्रेणिस्तु तद्गणः ॥ ५६३ ॥
६शिल्पं कला विज्ञानं च—

---

१. 'क्षत्रियसे ब्राह्मणी स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान'का १ नाम है—सूतः ॥

२. ये १२ (५५६—५६२ श्लो०) 'शूद्र' जातिके भेद हैं ॥

३. माहिष्य (क्षत्रियसे वैश्या स्त्रीमें उत्पन्न पुत्र)से करणी (वैश्यसे शूद्रा स्त्रीमें उत्पन्न कन्या)में उत्पन्न सन्तान (बढई, कमार), का १ नाम है—रथकारकः ॥

वर्णसङ्करों के मातृ-पितृ जातिबोधक चक्र—

क्रमाङ्क	पितृजाति	मातृजाति	वर्णसङ्कर संतान-जाति
१	ब्राह्मणः	क्षत्रिया	मूर्धाभिषिक्तः
२	,,	वैश्या	अम्बष्ठः
३	,,	शूद्रा	पाराशवः, निषादश्च
४	क्षत्रियः	वैश्या	माहिष्यः
५	,,	शूद्रा	उग्रः
६	वैश्यः	,,	करणः
७	शूद्रः	वैश्या	आयोगवः
८	,,	क्षत्रिया	क्षत्ता
९	,,	ब्राह्मणी	चण्डालः
१०	वैश्यः	क्षत्रिया	मागधः
११	,,	ब्राह्मणी	वैदेहकः
१२	क्षत्रियः	,,	सूतः
१३	माहिष्यः	करणी	तक्षा (रथकारकः)

४. 'कारीगर'के ४ नाम हैं—कारुः, कारी (-रिन्), प्रकृतिः, शिल्पी (-ल्पिन्) ॥

५. 'उन (कारीगरों)के समुदाय'का १ नाम है—श्रेणिः (पु स्त्री) ॥

६. 'शिल्प, कारीगरी'के ३ नाम हैं—शिल्पम, कला, विज्ञानम् ॥

—१मालाकारस्तु मालिकः।
पुष्पाजीवः २पुष्पलावी पुष्पाणामवचायिनी ॥ ५६४ ॥
३कल्यपालः सुराजीवी शौण्डिको मण्डहारकः।
वारिवासः पानवणिग् ध्वजो ध्वज्याऽऽसुतीबलः ॥ ५६५ ॥
४मद्यं मदिष्ठा मदिरा परिस्नुता कश्यं परिस्नुन्मधु कापिशायनम्।
गन्धोत्तमा कल्यमिरा परिप्लुता कादम्बरी स्वादुरसा हलिप्रिया ॥५६६॥
शुण्डा हाला हारहूरं प्रसन्ना वारुणी सुरा।
माध्वीकं मदना देवसृष्टा कापिशमब्धिजा ॥ ५६७ ॥
५मध्वासवे माधवको ६मैरेये शीधुरासवः।
७जगलो मेदको मद्यपङ्कः ८किण्वं तु नग्नहूः ॥ ५६८ ॥
नग्नहुर्मद्यबीजं च ९मद्यसन्धानमासुतिः।
आसवोऽभिषवो १०मद्यमण्डकारोत्तमौ समौ ॥ ५६९ ॥

---

१. 'माली'के ३ नाम हैं—मालाकारः, मालिकः, पुष्पाजीवः ॥

२. 'फूलोंको चुनने या तोड़नेवाली'का १ नाम है—पुष्पलावी ॥

३. 'कलवार, मद्यके व्यापारी'के ९ नाम हैं—कल्यपालः, सुराजीवी (–विन्), शौण्डिकः, मण्डहारकः, वारिवासः, पानवणिक् (–ज्), ध्वजः, ध्वजी (–जिन्), आसुतीवलः ॥

४. 'मदिरा, शराब'के २९ नाम हैं—मद्यम्, मदिष्ठा, मदिरा, परिस्नुता, कश्यम्, परिस्नुत् (स्त्री), मधु (पु न), कापिशायनम्, गन्धोत्तमा, कल्यम् (न स्त्री), इरा, परिप्लुता, कादम्बरी (स्त्री न), स्वादुरसा, हलिप्रिया, शुण्डा (पु स्त्री), हाला, हारहूरम्, प्रसन्ना, वारुणी, सुरा, माध्वीकम्, मदना, देवसृष्टा, कापिशम्, अब्धिजा ॥

५. 'सहद मिलाकर तैयार किये गये मद्य'के २ नाम हैं—मध्वासवः, माधवकः ॥

६. 'गुडसे बने मद्य'के ३ नाम हैं—मैरेयः, शीधुः (२ पु न), आसवः ॥

७. मद्यको तैयार करनेके लिए पीसे गये पदार्थ-विशेष, या—मद्यकी सीठी, या—मद्यके काढ़े'के ३ नाम हैं—जगलः, मेदकः, मद्यपङ्कः ॥

८. 'चावल आदिको उबालकर तैयार किये गये मद्य-बीज'के ४ नाम हैं—किण्वम्, नग्नहूः, नग्नहुः (२ पु), मद्यबीजम् ॥

९. मद्यको तैयार करनेके लिए उसकी सामग्री महुए आदिको सड़ाने'के ४ नाम हैं—मद्यसन्धानम्, आसुतिः, आसवः, अभिषवः ॥

१०. 'मद्यके माँड़ (मद्यके स्वच्छ भाग)'के २ नाम हैं—मद्यमण्डः, कारोत्तमः ॥

१गल्वर्कस्तु चषकः स्यात्सरकश्चानुतर्षणम् ।
२शुण्डा पानमदस्थानं ३मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ५७० ॥
४सपीतिः सहपानं स्या५दापानं पानगोष्ठिका ।
६उपदंशस्त्ववदंशश्चक्षणं मद्यपाशनम् ॥ ५७१ ॥
७नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो मुष्टिकश्च सः ।
८तैजसावर्त्तनी मूषा ९भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥ ५७२ ॥
१०आस्फोटनी वेधनिका ११शाणस्तु निकषः कषः ।
१२संदंशः स्यात्कङ्कमुखो १३भ्रमः कुन्दं च यन्त्रकम् ॥ ५७३ ॥
१४वैकटिको मणिकारः—

---

१. 'मद्यपान करनेके प्याले, सकोरे'के ४ नाम हैं—गल्वर्कः, चषकः, सरकः (२ पु न), अनुतर्षणम् (+ अनुतर्षः) ॥

विमर्श—'अमरकोष'कारने प्रथम दो पर्यायोंको उक्त अर्थ तथा अन्तवाले दो शब्दोंका 'मद्य परोसना (बाँटना)' अर्थ माना है ॥

२. 'कलवरिया, भट्ठी (मद्य पीनेके स्थान)का' १ नाम है—शुण्डा ॥

३. 'मद्य-पानके क्रम—वारी'के २ नाम हैं—मधुवाराः, मधुक्रमाः ॥

४. एक साथ मद्य-पान करने'के २ नाम हैं—सपीतिः, सहपानम् ॥

५. 'मद्य-पान-गोष्ठी—जमाव'के २ नाम हैं—आपानम्, पानगोष्ठिका (+पानगोष्ठी) ॥

६. 'मद्यपानमें रुचि-वर्धनार्थ बीच-बीच में नमकीन चना आदि खाने'के ४ नाम हैं—उपदंशः, अवदंशः, चक्षणम्, मद्यपाशनम् ॥

७. 'सुनार'के ४ नाम हैं—नाडिन्धमः, स्वर्णकारः, कलादः, मुष्टिकः (+पश्यतोहरः) ॥

८. 'घरिया (सोना-चाँदी गलानेके लिए मिट्टीके बनाये हुए पात्र-विशेष)'के २ नाम हैं—तैजसावर्त्तनी, मूषा ॥

९. 'धौंकनी, भाथी'के २ नाम हैं—भस्त्रा, चर्मप्रसेविका ॥

१०. 'बर्मी (मोती आदिमें छेद करनेके अस्त्र-विशेष)'के २ नाम हैं—आस्फोटनी, वेधनिका ॥

११. 'सान'के ३ नाम हैं—शाणः, निकषः, कषः ॥

१२. 'संडसी'के २ नाम हैं—सन्देशः, कङ्कमुखः ॥

१३. 'यन्त्र, मसीन'के ३ नाम हैं—भ्रमः, कुन्दम् (पु न), यन्त्रकम् (+यन्त्रम्) ॥

१४. 'जवाहरातको सानपर चढ़ाकर सुडौल बनानेवाले'के २ नाम हैं—वैकटिकः, मणिकारः ॥

—१शौल्बिकस्ताम्रकुट्टकः ।
२शाङ्खिकः स्यात् काम्बविक३स्तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ५७४ ॥
४कृपाणी कर्त्तरी कल्पन्यपि ५सूची तु सेवनी ।
६सूचिसूत्रं पिप्पलकं ७तर्कुः कर्त्तनसाधनम् ॥ ५७५ ॥
८पिञ्जनं विहननं च तुलास्फोटनकार्मुकम् ।
९सेवनं सीवनं स्यूति१०स्तुल्यौ स्यूतप्रसेवकौ ॥ ५७६ ॥
११तन्त्रवायः कुविन्दः स्यात् १२त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ।
१३वाणिर्व्यूति१४र्वानदण्डो वेमा १५सूत्राणि तन्तवः ॥ ५७७ ॥

---

१. 'तमेड़ा' (ताँबेके वर्तन आदि बनाने वाले)'के २ नाम हैं—शौल्बिकः, ताम्रकुट्टकः ॥

२. 'समुद्रनिर्गत शङ्खको ठीक करनेवाले' या 'शंखकी चूड़ी आदि बनाने वाले'के २ नाम हैं—शाङ्खिकः काम्बविकः ॥

३. 'दर्जी'के २ नाम हैं—तुन्नवायः, सौचिकः ॥

४. 'कैंची'के ३ नाम हैं—कृपाणी, कर्त्तरी, कल्पनी ॥

५. 'सूई'के २ नाम हैं—सूची (+सूचिः), सेवनी ॥

६. 'सूईके धागे'के २ नाम हैं—सूचिसूत्रम्, पिप्पलकम् ।

७. 'तकुआ (सूत कातनेके साधन-विशेष)'के २ नाम हैं—तर्कुः (पु), कर्त्तनसाधनम् ॥

८. 'धुनकी (रूई धुननेवाली धनुही)'के ३ नाम हैं—पिञ्जनम्, विहननम्, तुलास्फोटनकार्मुकम् ॥

९. 'सिलाई करने'के ३ नाम हैं—सेवनम्, सीवनम्, स्यूतिः ॥

१०. 'सिले हुए वस्त्रादि'के २ नाम हैं—स्यूतः, प्रसेवकः ॥

११. 'जुलाहे, बुनकर'के २ नाम हैं—तन्त्रवायः (+तन्तुवायः), कुविन्दः ॥

१२. 'ढरकी, या—सूत लपेटे जानेवाले वंशादिखण्ड'के २ नाम हैं—त्रसरः, सूत्रवेष्टनम् ॥

१३. 'बुनना (कपड़ेकी बुनाई करने)'के २ नाम हैं—वाणिः (स्त्री), व्यूतिः ॥

१४. ('करघा, या—वेमा (कपड़ा बुननेके दण्डे)'के २ नाम हैं—वानदण्डः, वेमा (-मन्, पु न) ॥

१५. 'सूत (धागा, डोरा)'के २ नाम हैं—सूत्राणि, (पु न), तन्तवः (पु । दोनों पर्यायोंमें बहुत्वापेक्षया बहुवचन प्रयुक्त होनेसे एकत्वादिकी विवक्षामें एकवचनादि भी होते हैं)

१निर्णेजकस्तु रजकः २पादुकाकृत्तु चर्मकृत् ।
३उपानत् पादुका पादूः पन्नद्धा पादरक्षणम् ॥ ५७८ ॥
प्राणहिता४ऽनुपदीना त्वाबद्धाऽनुपदं हि या ।
५नद्ध्री वद्ध्री वरत्रा स्या६दारा चर्मप्रभेदिका ॥ ५७९ ॥
७कुलालः स्यात् कुम्भकारो दण्डभृच्चक्रजीवकः ।
८शाणाजीवः शस्त्रमार्जो भ्रमासक्तोऽसिधावकः ॥ ५८० ॥
९धूसरश्चाक्रिकस्तैली स्यात् १०पिण्याकखलौ समौ ।
११रथकृत् स्थपतिस्त्वष्टा काष्ठतट् तक्षवर्द्धकी ॥ ५८१ ॥
१२ग्रामायत्तो ग्रामतक्षः—

---

१. 'धोबी'के २ नाम हैं—निर्णेजकः (+धावकः), रजकः ॥

२. 'चमार'के २ नाम हैं—पादुकाकृत्, चर्मकृत् ॥

३. 'जूते'के ६ नाम हैं—उपानत् (-नह्, स्त्री), पादुका, पादूः (स्त्री), पन्नद्धा, पादरक्षणम्, (+पादत्राणम्), प्राणहिता ॥

शेषश्चात्र—पादुकायां पादरथी पादजङ्घः पदत्वरा ।
पादवीथी च पेशी च पानपीठी पदायता ॥

४. 'मोजा (पैताबा) या—पूरा जूता (बूट)'का १ नाम है—अनुपदीना ॥

५. 'चमड़ेकी रस्सी'के ३ नाम हैं—नद्ध्री, वद्ध्री (२ स्त्री), वरत्रा ॥

६. 'चमड़ा सीने या काटनेके औजार'के २ नाम हैं—आरा, चर्मप्रभेदिका ॥

७. 'कुम्हार'के ४ नाम हैं—कुलालः, कुम्भकारः, दण्डभृत्, चक्रजीवकः ॥

८. 'सान चढ़ानेवाले'के ४ नाम हैं—शाणाजीवः, शस्त्रमार्जः, भ्रमासक्तः, असिधावकः ॥

९. 'तेली'के ३ नाम हैं—धूसरः, चाक्रिकः, तैली (-लिन् ।+तिलन्तुदः) ॥

१०. 'खल्ली (तेल निकालनेके बाद बची हुई सीटी)'के २ नाम हैं—पिण्याकः, खलः (२ पु न) ॥

११. बढ़ई'के ६ नाम हैं—रथकृत्, (+रथकारः), स्थपतिः, त्वष्टा (-ष्टृ), काष्ठतट् (-तक्ष्), तक्षा (-क्षन्), वर्द्धकिः ॥

१२. 'गांवके बढ़ई (जो किसानोंके अधीन रहकर हल आदिका कार्य करता है, उस साधारण बढ़ई'का १ नाम है—ग्रामतक्षः ॥

—१कौटतक्षोऽनधीनकः ।
२वृक्षभृत्तक्षणी वासी ३क्रकचं करपत्रकम् ॥ ५८२ ॥
४स उद्घनो यत्र काष्ठे काष्ठं निक्षिप्य तक्ष्यते ।
५वृक्षादनो वृक्षभेदी ६टङ्कः पाषाणदारणः ॥ ५८३ ॥
७व्योकारः कर्मारो लोहकारः ८कूटं त्वयोघनः ।
९व्रश्चनः पत्रपरशु१०रीषीका तूलिकेषिका ॥ ५८४ ॥
११भक्ष्यकारः कान्दविकः १२कन्दुस्वेदनिके समे ।
१३रङ्गाजीवस्तौलिकिकश्चित्रकृच्चा१४थ तूलिका ॥ ५८५ ॥
कूचिका—

---

१. 'स्वतन्त्र, रहकर काम करनेवाले बढ़ई'का १ नाम है—कौटतक्षः (+कूटतक्षः) ॥

२. 'बसूला'के ३ नाम हैं—वृक्षभित् (-द्), तक्षणी, वासी ॥

३. 'आरा, साह, आरी'के २ नाम हैं—क्रकचम् (पु न), करपत्रकम् (+करपत्रम्) ॥

४. 'ठेहा (जिस काष्ठ पर रखकर दूसरे काष्ठ आदि को छीलते हैं, उस नीचेवाले काष्ठ)'का १ नाम है—उद्घनः । (उपचारसे 'निहाय' जिस ठोस लोहे पर रखकर दूसरे लोहेको पीटते हैं, उस नीचेवाले लोहे)'को भी 'उद्घनः' कहते हैं) ॥

५. 'कुल्हाड़ीं, या—बड़ा कुल्हाड़ा (या—बसूला)'के २ नाम हैं—वृक्षादनः, वृक्षभेदी (-दिन्) ॥

६. 'छेनी, छेना (पत्थर तोड़नेवाले औजार)'के २ नाम हैं—टङ्कः (पु न), पाषाणदारणः ॥

७. 'लोहार'के ३ नाम हैं—व्योकारः, कर्मारः, लोहकारः ॥

८. 'लोहेके घन'के २ नाम हैं—कूटम् (पु न), अयोघनः ॥

९. 'सोना-चाँदी काटनेकी छेनी, या—छोटी आरी'के २ नाम हैं—व्रश्चनः, पत्रपरशुः ॥

१०. 'लकड़ी या लोहेकी शलाका—सींक'के ३ नाम हैं—ईषीका, तूलिका, ईषिका ॥

११. 'हलवाई'के २ नाम हैं—भक्ष्यकारः, कान्दविकः ॥

१२. 'भट्ठा, भाड़'के २ नाम है—कन्दुः (पु स्त्री), स्वेदनिका ॥

१३. 'चित्रकार, रंगसाज'के ३ नाम हैं—रङ्गाजीवः, तौलिकिकः, चित्रकृत् (+चित्रकरः, चित्रकारः) ॥

१४. 'कूची, रंग भरनेके ब्रस'के २ नाम हैं—तूलिका, कूचिका ॥

—१चित्रमालेख्यं २पलगण्डस्तु लेप्यकृत् ।
३पुस्तं लेप्यादि कर्म स्याद् ४नापितश्चण्डिलः क्षुरी ॥ ५८६ ॥
क्षुरमर्दी दिवाकीर्तिर्मुण्डकोऽन्तावसाय्यपि ।
५मुण्डनं भद्राकरणं वपनं परिवापणम् ॥ ५८७ ॥
चौरं ६नाराची त्वेषिण्यां ७देवाजीवस्तु देवलः ।
८मार्दङ्गिको मौरजिको ९वीणावादस्तु वैणिकः ॥ ५८८ ॥
१०वेणुध्मः स्याद् वैणविकः ११पाणिघः पाणिवादकः ।
१२स्यात् प्रातिहारिको मायाकारो १३माया तु शाम्बरी ॥ ५८९ ॥
१४इन्द्रजालं तु कुहुकं जालं कुसृतिरित्यपि ।

---

१. 'चित्र, फोटो'के २ नाम हैं—चित्रम्, आलेख्यम् ॥

२. 'चूने आदिसे पुताई करनेवाले'के २ नाम हैं—पलगण्डः, लेप्यकृत् (+लेपकः) ॥

३. 'चूने आदिसे पुताई करने'का १ नाम है—पुस्तम् (पु न) ॥

४. 'नाई, हज्जाम'के ७ नाम हैं—नापितः, चण्डिलः, क्षुरी (– रिन्), क्षुरमर्दी (– र्दिन्), दिवाकीर्तिः, मुण्डकः, अन्तावसायी (– यिन्) ॥

शेषश्चात्र—नापिते ग्रामणीभण्डिवाहचौरिकभाण्डिकाः ॥

५. 'मुण्डन कराने, हजामत बनाने'के ५ नाम हैं—मुण्डनम्, भद्राकरणम्, वपनम्, परिवापणम्, चौरम् ॥

६. 'सोना-चाँदी तौलने'का काँटा'के २ नाम हैं—नाराची, एषिणी (+एषणिका, एषणी) ॥

७. 'देव-पूजन कर जीविका चलानेवाले'के २ नाम हैं—देवाजीवः, देवलः ॥

८. 'मृदङ्ग बजानेवाले'के २ नाम हैं—मार्दङ्गिकः, मौरजिकः ॥

९. 'वीणा बजानेवाले'के २ नाम हैं—वीणावादः, वैणिकः ॥

१०. 'वंशी या मुरली बजानेवाले'के २ नाम हैं—वेणुध्मः, वैणविकः ॥

११. 'ताली बजानेवाले'के २ नाम हैं—पाणिघः, पाणिवादकः ॥

१२. 'माया करनेवाले (जादूगर)'के २ नाम हैं—प्रातिहारिकः, मायाकारः ॥

१३. 'माया'के २ नाम हैं—माया, शाम्बरी ॥

१४. 'इन्द्रजाल'के ४ नाम हैं—इन्द्रजालम्, कुहुकम् (+कुहकम्), जालम्, कुसृतिः ॥

१कौतूहलं तु कुतुकं कौतुकं च कुतूहलम् ॥ ५६० ॥
२व्याधो मृगवधाजीवी लुब्धको मृगयुश्च सः ।
३पापर्धिर्मृगयाऽऽखेटो मृगव्याच्छोदने अपि ॥ ५६१ ॥
४जालिकस्तु वागुरिको ५वागुरा मृगजालिका ।
६शुम्बं वटारको रज्जुः शुल्वं तन्त्री वटी गुणः ॥ ५६२ ॥
७धीवरो दाशकैवर्त्तौ ८बडिशं मत्स्यवेधनम् ।
९आनायस्तु मत्स्यजालं १०कुवेणी मत्स्यबन्धनी ॥ ५६३ ॥
११जीवान्तकः शाकुनिको १२वैतंसिकस्तु सौनिकः ।
मांसिकः कौटिकश्चा१३थ सूना स्थानं वधस्य यत् ॥ ५६४ ॥
१४स्याद् बन्धनोपकरणं वीतंसो मृगपक्षिणाम् ।

---

१. 'कौतुक, कुतूहल'के ४ नाम हैं—कौतूहलम्, कुतुकम्, कौतुकम्, कुतूहलम् (+विनोदः) ॥

२. 'व्याध'के ४ नाम हैं—व्याधः, मृगवधाजीवी (–विन्), लुब्धकः (+लुब्धः), मृगयुः ॥

३. 'शिकार, आखेट'के ५ नाम हैं—पापर्धिः, मृगया, आखेटः, मृगव्यम्, आच्छोदनम् (२ पु न) ॥

४. 'जाल लगानेवाले'के २ नाम हैं—जालिकः, वागुरिकः ॥

५. 'मृग-पक्षी आदि फसानेवाले जाल'के २ नाम हैं—वागुरा, मृगजालिका ॥

६. 'रस्सी'के ७ नाम हैं—शुम्बम् (न स्त्री), वटारकः, रज्जुः (स्त्री), शुल्वम्, तन्त्री, वटी (स्त्री), गुणः ॥

७. 'मल्लाह'के ३ नाम हैं—धीवरः, दाशः, कैवर्तः ॥

८. 'बंशी (जिसमें आटा या किसी छोटे कीड़ेको लपेट कर मछली फँसाते हैं, उस लोहेकी टेढी कील)'के २ नाम हैं—बडिशम्, मत्स्यवेधनम् ॥

९. 'मछली फँसानेके जाल'का १ नाम है—आनायः ॥

१०. 'मछलीको पकड़कर रखनेवाली टोकरी'के २ नाम हैं—कुवेणी, मत्स्यबन्धनी ॥

११. 'चिड़ियामार'के २ नाम हैं—जीवान्तकः, शाकुनिकः ॥

१२. 'वधिक (चीक)'के ४ नाम हैं—वैतंसिकः, सौनिकः, मांसिकः, कौटिकः (+खट्टिकः) ॥

१३. 'कसाई खाना'का १ नाम है—सूना ॥

१४. 'मृग, पशु, पक्षी आदिको फँसानेके साधनों'का १ नाम है—वीतंसः (पु न) ॥

१पाशस्तु बन्धनग्रन्थिरखपातावटौ समौ ॥ ५९५ ॥
३उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद् ४विवर्णस्तु पृथग्जनः ।
इतरः प्राकृतो नीचः पामरो बर्बरश्च सः ॥ ५९६ ॥
५चण्डालेऽन्तावसाय्यन्तेवासिश्वपचबुक्कसाः ।
निषादप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनङ्गमाः ॥ ५९७ ॥
६पुलिन्दा नाहला निष्ट्याः शबरा वरुटा भटाः ।
माला भिल्लाः किराताश्च सर्वेऽपि म्लेच्छजातयः ॥ ५९८ ॥

इत्याचार्यहेमचन्द्रविरचितायाम् "अभिधानचिन्तामणिनाममालायां" तृतीयो "मर्त्यकाण्डः' समाप्तः ॥ ३ ॥

---

१. 'फाँस (मृगादिको बाँधनेका ग्रन्थि-विशेष)'का १ नाम है—पाशः ।

२. 'मृगादिको फँसानेके लिए बनाये गये गढे'के २ नाम हैं—अवपातः, अवटः ॥

३. 'मृगोंको फँसानेके कूट यन्त्र'के २ नाम हैं—उन्माथः, कूटयन्त्रम् (+पाशयन्त्रम्) ॥

४. 'नीच, पामर'के ७ नाम हैं—विवर्णः, पृथग्जनः, इतरः, प्राकृतः, नीचः, पामरः, बर्बरः ॥

५. 'चण्डाल'के १० नाम हैं—चण्डालः (+चाण्डालः), अन्तावसायी (– यिन्), अन्तेवासी (– सिन्), श्वपचः (+श्वपाकः), बुक्कसः (+पुक्कसः, पुष्कसः), निषादः, प्लवः, मातङ्गः, दिवाकीर्तिः, जनङ्गमः ॥

विमर्श—यहाँ पर 'श्वपच' अर्थात् 'डोम' और बुक्कस' अर्थात् 'मृतप' इस भेद-विशेषका आश्रय नहीं किया गया है ॥

६. 'म्लेच्छ जातियों'के ये भेद हैं—पुलिन्दाः, नाहलाः, निष्ट्याः, शबराः, वरुटाः, भटाः, मालाः, भिल्लाः, किराताः । (बहुत्वापेक्षया बहुवचन प्रयुक्त होनेसे उक्त शब्दोंका एकवचनमें भी प्रयोग होता है) ॥

इस प्रकार 'मणिप्रभा' व्याख्यामें तृतीय मर्त्यकाण्ड समाप्त हुआ ॥ ३ ॥

अथ तिर्यक्काण्डः ॥ ४ ॥

[1]भूर्भूमिः पृथिवी पृथ्वी वसुधोर्वी वसुन्धरा ।
धात्री धरित्री धरणी विश्वा विश्वम्भरा धरा ॥ १ ॥
क्षितिः क्षोणी क्षमाऽनन्ता ज्या कुर्वसुमती मही ।
गौर्गोत्रा भूतधात्री क्ष्मा गन्धमाताऽचलाऽवनिः ॥ २ ॥
सर्वंसहा रत्नगर्भा जगती मेदिनी रसा ।
काश्यपी पर्वताधारा स्थिरेला रत्नबीजसूः ॥ ३ ॥
विपुला सागराच्चाग्रे स्युर्नेमीमेखलाम्बराः ।
[2]द्यावापृथिव्यौ तु द्यावाभूमी द्यावाक्षमे अपि ॥ ४ ॥
दिवस्पृथिव्यौ रोदस्यौ रोदसी रोदसी च ते ।
[3]उर्वरा सर्वसस्या भू[4]रिरिणं पुनरूषरम् ॥ ५ ॥

---

१. प्रथम यहां से आरम्भकर ४।१३४ तक 'पृथ्वीकायिक' जीवों का वर्णन करते हैं—

'पृथ्वी'के ४३ नाम हैं–भूः, भूमिः, पृथिवी, पृथ्वी, वसुधा, उर्वी, वसुन्धरा, धात्री, धरित्री, धरणी, विश्वा, विश्वम्भरा, धरा, क्षितिः, क्षोणी, क्षमा, अनन्ता, ज्या, कुः, वसुमती, मही, गौः (गो), गोत्रा, भूतधात्री, क्ष्मा, गन्धमाता (–तृ), अचला, अवनिः, सर्वंसहा, रत्नगर्भा (+रत्नवती), जगती, मेदिनी, रसा, काश्यपी, पर्वताधारा, स्थिरा, इला, रत्नसूः, बीजसूः, विपुला, सागरनेमी, सागरमेखला, सागराम्बरा, (यौ०—समुद्ररशना, समुद्र-काञ्चिः, समुद्रवसना,······) ॥

शेषश्चात्र—अथ पृथ्वी महाकान्ता क्षान्ता मेर्वद्रिकर्णिका ।
गोत्रकीला घनश्रेणी मध्यलोका जगद्वहा ॥
देहिनी केलिनी मौलिर्महास्थाल्यम्बरस्थली ।

२. 'सम्मिलित आकाश तथा पृथ्वी'के ७ नाम हैं—द्यावापृथिव्यौ, द्यावाभूमी, द्यावाक्षमे, दिवस्पृथिव्यौ (+दिवःपृथिव्यौ), रोदस्यौ, रोदसी (–दस्, न, द्विव०), रोदसी (–सि । शेष ५ स्त्री, द्वि०) ॥

३. 'उपजाऊ भूमि'का १ नाम है—उर्वरा ।

४. 'ऊसर भूमि'के २ नाम हैं—इरिणम् , ऊषरम् ।

१स्थलं स्थली २मरुर्धन्वा ३क्षेत्राद्यप्रहतं खिलम् ।
४मृन्मृत्तिका ५सा क्षारोषो ६मृत्सा मृत्स्ना च सा शुभा ॥ ६ ॥
७रुमा लवणखनिः स्यात् ८सामुद्रं लवणं हि यत् ।
तदक्षीवं वशिरश्च ९सैन्धवं तु नदीभवम् ॥ ७ ॥
माणिमन्थं शीतशिवं १०रौमकं तु रुमाभवम् ।
वसुकं वसूकं तच्च ११विडापाक्ये तु कृत्रिमे ॥ ८ ॥
१२सौवर्चलेऽक्षं रुचकं दुर्गन्धं शूलनाशनम् ।
१३कृष्णे तु तत्र तिलकं १४यवक्षारो यवाग्रजः ॥ ९ ॥
यवनालजः पाक्यश्च १५पाचनकस्तु टङ्कणः ।
मालतीतीरजो लोहश्लेषणो रसशोधनः ॥ १० ॥

---

१. 'अकृत्रिम (विना लिपी-पुती हुई—प्राकृतिक) भूमि'के २ नाम हैं—स्थलम् , स्थली ।

२. 'मरुभूमि (मारवाड़ आदिकी निर्जल भूमि)के २ नाम हैं—मरुः, धन्वा (—न्वन् । २ पु) ॥

३. 'हल आदिसे बिना जोते या कोड़े (खोदे) गये खेत आदि'के २ नाम हैं—अप्रहतम् , खिलम् ॥

४. 'मिट्टी'के २ नाम हैं—मृत् (–द्), मृत्तिका ॥

५. 'खारी 'मिट्टी'के २ नाम हैं—क्षारा, ऊषः ॥

६. 'अच्छी मिट्टी'के २ नाम हैं--मृत्सा, मृत्स्ना ॥

७. 'नमककी खान'का १ नाम है—रुमा ॥

८. 'समुद्री नमक'के ४ नाम हैं—सामुद्रम्, लवणम्, अक्षीवम्, वशिरः (पु । +न) । (किसीके मतसे अन्तवाले २ शब्द उक्तार्थक हैं) ॥

९. (' सिन्धु देशमें पैदा होनेवाले) सेंधा नमक'के ४ नाम हैं—सैन्धवम् (पु न), नदीभवम्, माणिमन्थम्, शीतशिवम् ॥

१०. 'सांभर (खानमें पैदा होनेवाले) नमक'के ४ नाम हैं—रौमकम्, रुमाभवम्, वसुकम्, वसूकम् ॥

११. 'खरिया या खारा नमक'के २ नाम हैं—विडम्, अपाक्यम् ॥

१२. 'सोचर नमक' के ५ नाम हैं—सौवर्चलम् (पु न), अक्षम्, रुचकम्, दुर्गन्धम्, शूलनाशनम् ॥

१३. 'काला नमक'का १ नाम है--तिलकम् ॥

१४. 'जवाखार'के ४ नाम हैं—यवक्षारः, यवाग्रजः, यवनालजः, पाक्यः ॥

१५. 'सुहागा'के ५ नाम हैं—पाचनकः, टङ्कणः (+टङ्कनः), मालतीतीरजः, लोहश्लेषणः, रसशोधनः ॥

१समास्तु स्वर्जिकाक्षारकापोतसुखवर्च्चकाः ।
२स्वर्जिस्तु स्वर्जिका स्रुग्घ्नी योगवाही सुवर्च्चिका ॥ ११ ॥
३भरतान्यैरावतानि विदेहाश्च कुरून् विना ।
वर्षाणि कर्मभूम्यः स्युः ४शेषाणि फलभूमयः ॥ १२ ॥
५वर्षं वर्षधराद्यङ्कं ६विषयस्तूपवर्त्तनम् ।
देशो जनपदो नीवृद्राष्ट्रं निर्गश्च मण्डलम् ॥ १३ ॥
७आर्यावर्त्तो जन्मभूमिर्जिनचक्र्यर्द्धचक्रिणाम् ।
पुण्यभूराचारवेदी मध्यं विन्ध्याहिमागयोः ॥ १४ ॥

---

१. 'सज्जीखार'के ३ नाम हैं—स्वर्जिकाक्षारः, कापोतः, सुखवर्चकः ॥

२. 'सोरा या सज्जी'के ५ नाम हैं—स्वर्जिः, स्वर्जिका, स्रुग्घ्नी, योगवाही, सुवर्चिका ॥

३. ५ 'भरत' (एक जम्बूद्वीपमें, दो धातकी खण्डमें और दो पुष्कर-वरद्वीपार्धमें—१+२+२=५), ५ 'ऐरावत' और ५ विदेह (पूर्वविदेह तथा अपरविदेह; देवकुरु तथा उत्तरकुरु—इन दोनोंको छोड़कर) ये वर्ष 'कर्मभूमि' हैं ॥

४. बाकी (जम्बूद्वीपमें चार वर्ष हैमवत, हरिवर्ष, रम्यक और हैरण्यवत, धातकीखण्ड तथा पुष्करवरद्वीपार्ध में उन्हीं नामोंवाले आठ आठ वर्ष और देवकुरु उत्तरकुरुरूप दश विदेहांश—इस प्रकार ४+८+८+१०=३०) तीस वर्ष 'भोगभूमि' हैं ॥

५. हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी—ये ६ वर्ष जम्बूद्वीपमें; उक्त नामवाले १२–१२ वर्ष धातकीखण्ड तथा पुष्कर-वरार्धद्वीपमें—इस प्रकार ६+१२+१२=३० वर्षधरादिसे चिह्नित का १ नाम 'वर्षम्' (पु न) है । (लौकिक जन नव वर्ष हैं, ऐसा कहते हैं)[1] ॥

६. 'देश'के ८ नाम हैं—विषयः, उपवर्तनम् (+उपावर्तनम्), देशः, जनपदः, नीवृत् (स्त्री ।+पु), राष्ट्रम् (पु न), निर्गः, मण्डलम् ॥

७. 'आर्यावर्त' (विन्ध्याचल तथा हिमाचलकी मध्यभूमि)'के ३ नाम हैं—आर्यावर्तः, पुण्यभूः, आचारवेदी ॥

---

१ यथा—भारतं प्रथमं वर्षं ततः किम्पुरुषं स्मृतम् ।
हरिवर्षं तथैवान्यद् मेरोर्दक्षिणतो द्विजः ॥
रम्यकं चोत्तरं वर्षं तस्यैवानु हिरण्मयम् ।
उत्तराः कुरवश्चैव यथा वै भारतं तथा ॥
भद्राश्वं पूर्वतो मेरोः केतुमालं तु पश्चिमे ।
नवसाहस्रमेकैकमेतेषां द्विजसत्तम ॥
इलावृत्तञ्च तन्मध्ये तन्मध्ये मेरुरुत्थितः ।" (स्वो० ४ । १३)

१गङ्गायमुनयोर्मध्यमन्तर्वेदिः समस्थली ।
२ब्रह्मावर्तः सरस्वत्या दृषद्वत्याश्च मध्यतः ॥ १५ ।
३ब्रह्मवेदिः कुरुक्षेत्रे पञ्चरामह्रदान्तरम् ।
४धर्मक्षेत्रं कुरुक्षेत्रं द्वादशयोजनावधि ॥ १६ ॥
५हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि ।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः स मध्यमः ॥ १७ ॥
६देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्यो नदीं यावच्छरावतीम् ।
७पश्चिमोत्तरस्तूदीच्यः ८प्रत्यन्तो म्लेच्छमण्डलः ॥ १८ ॥
९पाण्डूदक्कृष्णतो भूमः पाण्डूदक्कृष्णमृत्तिके ।

विमर्श—यह आर्यावर्त विन्ध्य तथा हिमालय पर्वतोंके मध्यभाग को कहते हैं, यही अवसर्पिणी कालके बृषभदेवादि २४ तीर्थङ्करों (१ । २६–२८) भरत आदि १२ चक्रवर्तियों (३ ३५५–३५८), अश्वग्रीवादि तथा त्रिपृष्ठादि अर्धचक्रवर्तियों (३ । ३५६–३६१) और साहचर्य से अचलादि ९ बलदेवोंकी (३ । ३६१) जन्मभूमि है) ॥

१. 'अन्तर्वेदि (गङ्गा तथा यमुना नदीके मध्यभूमि–भाग)'के २ नाम हैं—अन्तर्वेदिः, समस्थली ॥

२, 'ब्रह्मावर्त (सरस्वती तथा दृषद्वती नदियोंके मध्यभूमि-भाग)'का १ नाम है—ब्रह्मावर्तः ।

३. 'ब्रह्मवेदि (कुरुक्षेत्र में पांच परशुरामतडागोंके मध्यभाग,)'का १ नाम है—ब्रह्मवेदिः ॥

४. 'कुरुक्षेत्र'के २ नाम हैं, यह १२ योजनमें विस्तृत है—धर्मक्षेत्रम्, कुरुक्षेत्रम् ॥

५ 'मध्यदेश (हिमालय तथा विन्ध्यपर्वतके मध्यभाग और विनशन (सरस्वती नदीके जलके अन्तर्धान होनेका स्थान तथा प्रयागके पश्चिमके भाग)'के २ नाम हैं—मध्यदेशः, मध्यमः ॥

६. 'प्राच्यदेश (पूर्वोत्तर होकर बहनेवाली शरावती नदीके पूर्व-दक्षिण दिशामें स्थित देश)'का १ नाम है—प्राच्यः ॥

७. 'उदीच्य (पूर्वोक्त शरावती नदीके पश्चिमोत्तर दिशा में स्थित देश)'का १ नाम है—उदीच्यः ॥

८. 'म्लेच्छ देश'का १ नाम है—प्रत्यन्तः ॥

९. 'पाण्डु, उदीची तथा कृष्ण भूमिवाले देशों'के क्रमशः २–२ नाम हैं—पाण्डुभूमः, पाण्डुमृत्तिकः, उदग्भूमः, उदङ्मृत्तिकः, कृष्णभूमः कृष्ण-मृत्तिकः ॥

१जङ्गलो निर्जलोऽ२ऽनूपोऽम्बुमान् ३कच्छस्तु तद्विधः ॥ १९ ॥
४कुमुद्वान् कुमुदावासो ५वेतस्वान् भूरिवेतसः ।
६नडप्रायो नडकीयो नड्वांश्च नड्वलश्च सः ॥ २० ॥
७शाद्वलः शादहरिते ८देशो नद्यम्बुजीवनः ।
स्यान्नदीमातृको ९देवमातृको वृष्टिजीवनः ॥ २१ ॥
१०प्राग्ज्योतिषाः कामरूपा ११मालवाः स्युरवन्तयः ।
१२त्रैपुरास्तु डाहलाः स्युश्चैद्यास्ते चेदयश्च ते ॥ २२ ॥
१३वङ्गास्तु हरिकेलीया १४अङ्गाश्चम्पोपलक्षिताः ।
१५साल्वास्तु कारकुक्षीया १६मरवस्तु दशेरकाः ॥ २३ ॥
१७जालन्धरास्त्रिगर्त्ताः स्यु—

---

१. 'निर्जल देश'के २ नाम हैं—जङ्गलः, निर्जलः ॥
२. 'सजल देश'के २ नाम हैं—अनूपः, अम्बुमान् (–मत्) ॥
३. 'कच्छ (प्रायः जलयुक्त) देश'का १ नाम है—कच्छः ॥
४. 'कुमुदबहुल (अधिक कुमुद—रात्रिमें विकसित होनेवाले कमल-विशेष—वाले) देश'के २ नाम हैं—कुमुद्वान् (–द्वत्), कुमुदावासः ॥
५. 'बहुत बेंत पैदा होनेवाले देश'का १ नाम है—वेतस्वान् (–स्वत्) ॥
६. 'बहुत नरसल पैदा होनेवाले देश'के ४ नाम हैं—नडप्रायः, नडकीयः, नड्वान् (–ड्वस्), नड्वलः ॥
७. 'बहुत दूर्वा वाले देश'का १ नाम है—शाद्वलः ॥
८. 'नदी (नहर, आहर, पोखर, नलकूप आदि)के पानीसे खेतोंकी सिंचाईसे जीविका करनेवाले देश'का १ नाम है—नदीमातृकः ॥
९. 'वर्षा मात्रके पानीसे खेतोंकी सिंचाई कर जीविका चलानेवाले देश'का १ नाम है—देवमातृकः ॥
१०. 'कामरूप (कामाख्या) देश'के २ नाम हैं—प्राग्ज्योतिषाः, कामरूपाः ॥
११. 'मालव देश'के २ नाम हैं—मालवाः, अवन्तयः ॥
१२. 'चैद्यदेश'के ४ नाम हैं—त्रैपुराः, डाहलाः, चैद्याः, चेदयः ॥
१३. 'बङ्गाल देश'के २ नाम हैं—वङ्गाः, हरिकेलीयाः ॥
१४. 'अङ्ग देश'के २ नाम हैं—अङ्गाः, चम्पोपलक्षिताः ॥
१५. 'साल्व देश'के २ नाम हैं—साल्वाः, कारकुक्षीयाः ॥
१६. 'मरु देश'के २ नाम हैं—मरवः (– रु । पु), दशेरकाः ॥
१७. 'त्रिगर्त देश'के २ नाम हैं—जालन्धराः, त्रिगर्ताः ॥

—१स्तायिकास्तर्जिकाभिधाः ।
२कश्मीरास्तु माधुमताः सारस्वता विकर्णिकाः ॥ २४ ॥
३वाहीकाष्टक्कनामानो ४वाह्लीका वाह्लिकाह्वयाः ।
५तुरुष्कास्तु साखयः स्युः ६कारूषास्तु बृहद्गृहाः ॥ २५ ॥
७लम्पाकास्तु मुरण्डाः स्युः ८सौवीरास्तु कुमालकाः ।
९प्रत्यग्रथास्त्वहिच्छत्राः १०कीकटा मगधाह्वयाः ॥ २६ ॥
११ओण्ड्राः केरलपर्यायाः १२कुन्तला उपहालकाः ।
१३ग्रामस्तु वसथः सं-नि-प्रति-पर्यु-पतः परः ॥ २७ ॥
१४पाटकस्तु तदर्द्धे स्या१५दाघाटस्तु घटोऽवधिः ।
अन्तोऽवसानं सीमा च मर्य्यादाऽपि च सीमनि ॥ २८ ॥

---

१. 'तायिक नामक देश-विशेष'के २ नाम हैं—तायिकाः, तर्जिकाः ॥

२. 'कश्मीर देश'के ४ नाम हैं—कश्मीराः, माधुमताः, सारस्वताः, विकर्णिकाः ॥

३. 'वाहीक देश'के २ नाम हैं—वाहीकाः, टक्काः ॥

४. 'वाह्लीक देश'के २ नाम हैं—वाह्लीकाः, वाह्लिकाः ॥

५. 'तुरुष्क (तुर्क या तुर्की) देश'के २ नाम हैं—तुरुष्काः, साखयः ॥

६. 'कारूष देश'के २ नाम हैं—कारूषाः, बृहद्गृहाः ॥

७. 'लम्पाक देश'के २ नाम हैं—लम्पाकाः, मुरण्डाः ॥

८. 'सौवीर देश'के २ नाम हैं—सौवीराः, कुमालकाः ॥

९. 'अहिच्छत्र देश'के २ नाम हैं—प्रत्यग्रथाः, अहिच्छत्राः ॥

१०. 'मगध देश'के २ नाम हैं—कीकटाः, मगधाः ॥

११. 'केरल देश'के २ नाम हैं—ओण्ड्राः, केरलाः ॥

१२. 'कुन्तल देश'के २ नाम हैं—कुन्तलाः, उपहालकाः ॥

विमर्श—प्राग्ज्योतिष (श्लो० २१)से यहाँ (कुन्तल देश) तक कहे गये देशोंमें-से 'प्राग्ज्योतिष, मालव, चेदि, वङ्ग, अङ्ग और मगध देश पूर्व दिशामें, मरु और शाल्व देश पश्चिममें, जालन्धर, तायिक, कश्मीर, वाहीक, वाह्लिक, तुरुष्क, कारूष, लम्पाक, सौवीर और प्रत्यग्रथ देश उत्तरमें तथा ओण्ड्र और कुन्तल देश दक्षिणमें हैं ॥

१३. 'ग्राम (गाँव)'के ६ नाम हैं—ग्रामः, संवसथः, निवसथः, प्रतिवसथः, उपवसथः ॥

१४. 'आधे गाँव'का १ नाम है—पाटकः ॥

१५. 'सीमा'के ८ नाम हैं—आघाटः, घटः, अवधिः, अन्तः, अवसानम्, सीमा, मर्यादा, सीमा (– मन्, स्त्री) ॥

१ग्रामसीमा तूपशल्यं २मालं ग्रामान्तराटवी।
३पर्यन्तभूः परिसरः स्यात् ४कर्मान्तस्तु कर्मभूः ॥ २९ ॥
५गोस्थानं गोष्ठ६मेतत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम्।
७तदाशितंगवीनं स्याद् गावो यत्राऽऽशिताः पुरा ॥ ३० ॥
८क्षेत्रे तु वप्रः केदारः ९सेतौ पाल्यालिसंवराः।
१०क्षेत्रं तु शाकस्य शाकशाकटं शाकशाकिनम् ॥ ३१ ॥
११व्रैहेयं शालेयं षष्टिक्यं कौद्रवीण-मौद्गीने।
व्रीह्यादीनां क्षेत्रे१२ऽणव्यं तु स्यादाणवीनमणोः ॥ ३२ ॥
१३भङ्ग्यं भाङ्गीनमौमीनमुम्यं यव्यं यवक्यवत्।
तिल्यं तैलीनं माषीणं माष्यं भङ्गादिसंभवम् ॥ ३३ ॥
१४सीत्यं हल्यं—

---

१. 'ग्रामकी सीमा'का १ नाम है—उपशल्यम् ॥

२. 'ग्रामके बीचके जङ्गल'का १ नाम है—मालम् ॥

३. 'ग्रामके पासकी भूमि'का १ नाम है—परिसरः ॥

४. 'कर्मभूमि'के २ नाम हैं—कर्मान्तः, कर्मभूः ॥

५. 'गोष्ठ (गौओंके ठहरनेका स्थान)'के २ नाम हैं—गोस्थानम्, गोष्ठम् ॥

६. 'भूतपूर्व गोष्ठ'का १ नाम है—गौष्ठीनम् ॥

७. 'पहले जहाँ गौवें बैठायी गयी हों, उस स्थान'का १ नाम है—आशितङ्गवीनम् ॥

८. 'खेत'के ३ नाम हैं—क्षेत्रम्, वप्रः, केदारः (२ पु न) ॥

९. 'पुल'के ४ नाम हैं—सेतुः (पु), पालिः, आलिः (२ स्त्री), संवरः ॥

१०. 'शाकके खेत'के २ नाम हैं—शाकशाकटम्, शाकशाकिनम् ॥

११. 'व्रीहि धान, शालि धान, साठी धान, कोदो और मूँग पैदा होनेवाले खेत'का क्रमशः १-१ नाम है—व्रैहेयम्, शालेयम्, षष्टिक्यम्, कौद्रवीणम्, मौद्गीनम् ॥

१२. 'चीना पैदा होनेवाले खेत'के २ नाम हैं—अणव्यम्, आणवीनम् ॥

१३. 'भाँग, तीसी (अलसी), यव (जौ), तिल और उड़द पैदा होनेवाले खेतके क्रमशः २-२ नाम हैं—भङ्ग्यम्, भाङ्गीनम्; औमीनम्, उम्यम्, यव्यम्, यवक्यम्, तिल्यम्, तैलीनम्, माषीणम्, माष्यम् ॥

१४. हल,से जोते हुए खेत'के २ नाम हैं—सीत्यम्, हल्यम् ॥

—१त्रिहल्यं तु त्रिसीत्यं त्रिगुणाकृतम् ।
तृतीयाकृतं २द्विहल्याद्येवं शम्बाकृतञ्च तत् ॥ ३४ ॥
३बीजाकृतं तूप्तकृष्टं ४द्रौणिकाऽऽढकिकादयः ।
स्युर्द्रोणाढकवापादौ ५खलधानं पुनः खलम् ॥ ३५ ॥
६चूर्णे क्षोदो७ऽथ रजसि स्युर्धूलीपांसुरेणवः ।
८लोष्टे लोष्टुर्दलिर्लेष्टु९र्वल्मीकः कृमिपर्वतः ॥ ३६ ॥
वम्रीकूटं वामलूरो नाकुः शक्रशिरश्च सः ।
१०नगरी पूः पुरी द्रङ्गः पत्तनं पुटभेदनम् ॥ ३७ ॥
निवेशनमधिष्ठानं स्थानीयं निगमोऽपि च ।

---

१. 'तिखारे (हलसे तीन बार जोते) हुए खेत'के ४ नाम हैं—त्रिहल्यम्, त्रिसीत्यम्, त्रिगुणाकृतम्, तृतीयाकृतम् ॥

२. 'दोखारे (हलसे दो बार जोते हुए खेत'के ५ नाम हैं—द्विहल्यम्, द्विसीत्यम्, द्विगुणाकृतम्, द्वितीयाकृतम्, शम्बाकृतम् ॥

३. 'बीज बोनेके बाद जोते गए खेत'के २ नाम हैं—बीजाकृतम्, उप्तकृष्टम् ॥

४. 'एक द्रोण, एक आढक बीज बोने योग्य खेत'का क्रमशः १—१ नाम है—'द्रौणिकः, आढकिकः ।

विमर्श—'आदि' शब्दसे 'एक खारी बीज बोने योग्य खेत'का १ नाम है—खारीकः । इसी प्रकारसे १—१ द्रोण, आढक या खारी आदि परिमित अन्न रखने पकाने या अँटने योग्य वर्तन का भी क्रमशः 'द्रौणिकः, आढकिकः, खारीकः' आदि १—१ नाम जानना चाहिए ॥

५. 'खलिहान'के २ नाम हैं—खलधानम्, खलम् ॥

६. 'चूर्ण'के २ नाम हैं—चूर्णः (पु न), क्षोदः ॥

७. 'धूल'के ४ नाम हैं—रजः (-जस्, न), धूली (स्त्री, +धूलिः), पांसुः (पु), रेणुः (स्त्री) ॥

८. 'ढेला'के ४ नाम हैं—लोष्टः (पु न), लोष्टुः (पु), दलिः (स्त्री), लेष्टुः (पु) ॥

९. 'वामी, दिअकाँड़'के ६ नाम हैं—वल्मीकः (पु न), कृमिपर्वतः, वम्रीकूटम्, वामलूरः, नाकुः (पु), शक्रशिरः (-रस्, न) ॥

१०. 'नगरी (शहर)'के १० नाम हैं—नगरी (स्त्री; नगरम्, न)। पूः (पुर्), पुरी (त्रि), द्रङ्गः, पत्तनम् (+पट्टनम्), पुटभेदनम्, निवेशनम्, अधिष्ठानम्, स्थानीयम्, निगमः ।

विमर्श—वाचस्पति ने इस ग्रामके निम्नलिखित विशेष भेद स्वीकार किये हैं—१०८ गावों में सबसे लम्बे गांवको 'स्थानीयम्'; उसके आधे लम्बेको

१शाखापुरं तूपपुरं २खेटः पुरार्द्धविस्तरः ॥ ३८ ॥
३स्कन्धावारो राजधानी ४कोट्टदुर्गे पुनः समे ।
५गया पूर्गयराजर्षेः ६कन्यकुब्जं महोदयम् ॥ ३९ ॥
कन्याकुब्जं गाधिपुरं कौशं कुशस्थलञ्च तत् ।
७काशिर्वराणसी वाराणसी शिवपुरी च सा ॥ ४० ॥
८साकेतं कोसलाऽयोध्या ९विदेहा मिथिला समे ।
१०त्रिपुरी चेदिनगरी ११कौशाम्बी वत्सपत्तनम् ॥ ४१ ॥

'द्रोणमुखम् , कर्वटम्', उसके आधेको 'कर्वुटिकम्' उसके आधेको 'कार्वटम्' उसके आधेको 'पत्तनम् , पुटभेदनम्'; पत्तनके आधेको 'निगमः', निगमके आधेको 'निवेशनम्', कहते हैं। 'कर्वट'से छोटे गाँवको 'द्रङ्गः'; 'पत्तन'से उत्तम गाँवको 'उद्रङ्गः, निवेशः, द्रङ्गः' कहते हैं ॥[1]

१. 'उपनगर'का १ नाम है—शाखापुरम् ॥
२. 'पुर'के आधे विस्तारवाले गांव'का १ नाम है—खेटः ॥
३. 'राजधानी'के २ नाम हैं—स्कन्धावारः, राजधानी (स्त्री न) ॥
४. 'किला'के २ नाम हैं—कोट्टः (पु न), दुर्गम् ॥
५. 'गया (गया नामक शहर)'का १ नाम है—गया ॥
६. 'कन्नौज'के ६ नाम हैं—कन्यकुब्जम् , महोदयम्, कन्याकुब्जम् (३ स्त्री न), गाधिपुरम् , कौशम् , कुशस्थलम् ॥
७. 'काशी नगरी'के ४ नाम हैं—काशिः (स्त्री । + काशी), वराणसी, वाराणसी, शिवपुरी ॥
८. 'अयोध्या पुरी'के ३ नाम हैं—साकेतम् , कोसला, अयोध्या ॥
९. 'मिथिला पुरी'के २ नाम हैं—विदेहा, मिथिला ॥
१०. 'चेदिपुरी'के २ नाम हैं—त्रिपुरी, चेदिपुरी ॥
११. 'कौशाम्बी नगरी'के २ नाम हैं—कौशाम्बी, वत्सपत्तनम् ॥

---

१. तदुक्तम्—

स्यात्स्थानीयं त्वतिलम्बो गामो ग्रामशताष्टके ।
तदर्धं तु द्रोणमुखं तच्च कर्वटमस्त्रियाम् ॥
कर्वटार्धे कर्वुटिकं स्यात्तदर्धे तु कार्वटम् ।
तदर्धे पत्तनं तच्च पत्तनं पुटभेदनम् ॥
निगमस्तु पत्तनार्धे तदर्धे तु निवेशनम् ।
कर्वटादधमो द्रङ्गः पत्तनादुत्तमश्च सः ॥
उद्रङ्गश्च निवेशश्च स एव द्रङ्ग इत्यपि ।

१उज्जयनी स्याद्विशालाऽवन्ती पुष्पकरण्डिनी ।
२पाटलिपुत्रं कुसुमपुरं ३चम्पा तु मालिनी ॥ ४२ ॥
लोमपादकर्णयोः पूः४र्देवीकोट उमावनम् ।
कोटिवर्षं बाणपुरं स्याच्छोणितपुरं च तत् ॥ ४३ ॥
५मथुरा तु मधूपघ्नं मधुरा६ऽथ गजाह्वयम् ।
स्याद् हास्तिनपुरं हस्तिनीपुरं हस्तिनापुरम् ॥ ४४ ॥
७तामलिप्तं दामलिप्तं तामलिप्ती तमालिनी ।
स्तम्बपूर्विष्णुगृहं च स्याद् ८विदर्भा तु कुण्डिनम् ॥ ४५ ॥
९द्वारवती द्वारका स्याद्१०निषधा तु नलस्य पूः ।
११प्राकारो वरणः साले १२चयो वप्रोऽस्य पीठभूः ॥ ४६ ॥
१३प्राकाराग्रं कपिशीर्षं—

---

१. 'उज्जयिनी'के ४ नाम हैं—उज्जयनी, विशाला, अवन्ती, पुष्पकरण्डिनी ॥

२. 'पाटलिपुत्र (पटना)'के २ नाम हैं—पाटलिपुत्रम्, कुसुमपुरम् ॥

३ 'चम्पापुरी'के ४ नाम हैं—चम्पा, मालिनी, लोमपादपूः, कर्णपूः (२–पुर्; + लोमपादपुरी, कर्णपुरी) ॥

४. 'शोणितपुरी (बाणासुरकी नगरी)'के ५ नाम हैं—देवीकोटः, उमावनम्, कोटिवर्षम्, बाणपुरम्, शोणितपुरम् ॥

५. 'मथुरा पुरी'के ३ नाम हैं—मथुरा, मधूपघ्नम्, मधुरा ॥

६. 'हस्तिनापुर'के ४ नाम हैं—गजाह्वयम् (गज (हाथी)के पर्यायभूत सब नाम—यथा 'गजपुरम्, गजनगरम्, ...'), हास्तिनपुरम्, हस्तिनीपुरम्, हस्तिनापुरम् ॥

७. 'तामलिप्त (बङ्गालमें स्थित) नगरी'के ६ नाम हैं—तामलिप्तम्, दामलिप्तम्, तामलिप्ती, तमालिनी, स्तम्बपूः (–पुर्), विष्णुगृहम् ॥

८. 'विदर्भपुरी'के २ नाम हैं—विदर्भा, कुण्डिनम् (+ कुण्डिनपुरम्, कुण्डिनापुरम्) ॥

९. 'द्वारकापुरी'के २ नाम हैं—द्वारवती, द्वारका ॥

१० 'राजानलकी नगरी (निषधा पुरी)'का १ नाम है—निषधा ॥

११. किले या नगर आदिकी ऊँची चहारदिवारी'के ३ नाम हैं—प्राकारः, वरणः, सालः ॥

१२. 'उक्त चहारदिवारीके नीचेवाली आधारभूमि'के २ नाम हैं—चयः, वप्रः (पु न) ॥

१३. 'चहारदिवारीके सबसे ऊपर के भाग'के २ नाम हैं—प्राकाराग्रम्, कपिशीर्षम् ॥

—१क्षौमाऽट्टाऽट्टालकाः समाः ।
२पूर्द्वारे गोपुरं ३रथ्याप्रतोलीविशिखाः समाः ॥ ४७ ॥
४परिकूटं हस्तिनखो नगरद्वारकूटके ।
५मुखं निःसरणे ६वाटे प्राचीनाऽऽवेष्टकौ वृतिः ॥ ४८ ॥
७पदव्येकपदी पद्या पद्धतिर्वर्त्म वर्त्तनी ।
अयनं सरणिर्मार्गोऽध्वा पन्था निगमः सृतिः ॥ ४९ ॥
८सत्पथे स्वतितः पन्था ९ अपन्था अपथं समे ।
१०व्यध्वो दुरध्वः कदध्वा विपथं कापथं च सः ॥ ५० ॥
११प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा १२कान्तारो वर्त्म दुर्गमम् ।
१३सुरुङ्गा तु सन्धिला स्याद् गूढमार्गो भुवोऽन्तरे ॥ ५१ ॥

---

१. 'उक्त चहारदिवारीके ऊपरमें युद्ध करनेके लिए बने हुए स्थान-विशेष'के ३ नाम हैं—क्षौमः, अट्टः (पु न), अट्टालकः ॥

२. 'नगरके द्वार (फाटक-प्रवेशमार्ग)'के २ नाम हैं—पूर्द्वारम्, गोपुरम् ॥

३. 'गली'के ३ नाम हैं—रथ्या; प्रतोली, विशिखा ॥

४. 'नगर या किलेके द्वारपर सुखपूर्वक आने-जानेके लिए बनाये हुये ढालू रास्ता'के ३ नाम हैं—परिकूटम् (न पु), हस्तिनखः, नगरद्वारकूटकः ॥

५. 'निकलने (या प्रवेशकरने)के मार्ग'के २ नाम हैं—मुखम्, निःसरणम् ॥

६. 'घेरा'के ४ नाम हैं—वाटः (त्रि), प्राचीनम् , आवेष्टकः, वृतिः ॥

७. 'मार्ग, रास्ता'के १३ नाम हैं—पदवी, एकपदी, पद्या, पद्धतिः, वर्त्म (–र्त्मन् न), वर्तनी, अयनम्, सरणिः (स्त्री), मार्गः, अध्वा (–ध्वन्), पन्थाः (–थिन् । २ पु), निगमः, सृतिः ॥

८. 'अच्छे मार्ग'के ३ नाम हैं—सत्पथः, सुपन्थाः, अतिपन्थाः (२–थिन्) ॥

९. 'अमार्ग, मार्गका अभाव'के २ नाम हैं—अपन्थाः (–थिन्), अपथम् ॥

१०. 'कुमार्ग, खराब रास्ते'के ५ नाम हैं—व्यध्वः, दुरध्वः, कदध्वा (–ध्वन्), विपथम्, कापथम् (२ न । + २ पु) ॥

११. 'दूरतक सूने (जनसञ्चारादिरहित) मार्ग'का १ नाम है—प्रान्तरम् ॥

१२. (जङ्गल आदिके) 'दुर्गम मार्ग'का १ नाम है—कान्तारः (पु न) ॥

१३. 'सुरङ्ग (भूमिके भीतर बने हुए गुप्त मार्ग)'के २ नाम हैं—सुरुङ्गा, सन्धिला ॥

१चतुष्पथे तु संस्थानं चतुष्कं २त्रिपथे त्रिकम् ।
३द्विपथन्तु चारपथो ४गजाद्यध्वा त्वसङ्कुलः ॥ ५२ ॥
घण्टापथः संसरणं श्रीपथो राजवर्त्म च ।
उपनिष्क्रमणञ्चोपनिष्करञ्च महापथः ॥ ५३ ॥
५विपणिस्तु वणिग्मार्गः ६स्थानं तु पदमास्पदम् ।
७श्लेषस्त्रिमार्ग्याः शृङ्गाटं ८बहुमार्गी तु चत्वरम् ॥ ५४ ॥
९श्मशानं करवीरं स्यात्पितृप्रेताद्वनं गृहम् ।
१०गेहभूर्वास्तु ११गेहन्तु गृहं वेश्म निकेतनम् ॥ ५५ ॥
मन्दिरं सदनं सद्म निकाय्यो भवनं कुटः ।
आलयो निलयः शाला सभोदवसितं कुलम् ॥ ५६ ॥
धिष्ण्यमावसथः स्थानं पस्त्यं संस्त्याय आशयः ।
ओको निवास आवासो वसतिः शरणं क्षयः ॥ ५७ ॥
धामागारं निशान्तञ्च—

---

१. 'चौराहा, चौक'के ३ नाम हैं—चतुष्पथः, संस्थानम्, चतुष्कम् ॥

२. 'तिमुहानी (तीन मार्गोंके सम्मिलन स्थान)'के २ नाम हैं—त्रिपथम्, त्रिकम् ॥

३. 'दोमुहानी (दो मार्गोंके सम्मिलन स्थान)'के २ नाम हैं—द्विपथम्, चारपथः ॥

४. 'राजमार्ग, चौड़े मार्ग, सड़क'के ८ नाम हैं—असङ्कुलः, घण्टापथः, संसरणम्, श्रीपथः, राजवर्त्म (-र्त्मन्), उपनिष्क्रमणम्, उपनिष्करम्, महापथः ॥

विमर्श—'दशधन्वन्तरो राजमार्गो घण्टापथः स्मृतः' ऐसा कहते हुए 'चाणक्य'ने ४० हाथ चौड़े मार्गको 'घण्टापथ' कहा है। 'अमरसिंह'ने ग्राम-के मार्गको 'उपसरण' कहा है (अमर २।१।१८) ॥

५. 'बाजार वा कटरेके मार्ग'के २ नाम हैं—विपणिः (स्त्री), वणिग्मार्गः, (+पण्यवीथी) ॥

६. 'स्थान, पद'के ३ नाम हैं—स्थानम्, पदम्, आस्पदम् ॥

७. 'तीन मार्गोंके मिलनेके स्थान'का १ नाम है—शृङ्गाटम् ॥

८. 'बहुत मार्गोंके मिलनेके स्थान'के २ नाम हैं—बहुमार्गी, चत्वरम् ॥

९. 'श्मशान'के ६ नाम हैं-श्मशानम्, करवीरम्, पितृवनम्, प्रेतवनम्, पितृगृहम्, प्रेतगृहम् ॥

१०. 'घरके निमित्त स्थान'के २ नाम हैं—गेहभूः, वास्तु (न पु) ॥

११. 'गृह, घर'के ३१ नाम हैं—गेहम्, गृहम् (२ न पु), वेश्म

१कुट्टिमन्त्वस्य बद्धभूः ।
२चतुःशालं सञ्जवनं ३सौधन्तु नृपमन्दिरम् ॥ ५८ ॥
४उपकारिकोपकार्या ५सिंहद्वारं प्रवेशनम् ।
६प्रासादो देवभूपानां ७हर्म्यन्तु धनिनां गृहम् ॥ ५९ ॥
८मठावसथ्यावसथाः स्युश्छात्रव्रतिवेश्मनि ।
९पर्णशालोटज१०श्चैत्यविहारौ जिनसद्मनि ॥ ६० ॥
११गर्भागारेऽपवरको वासौकः शयनास्पदम् ।
१२भाण्डागारन्तु कोशः स्या—

(–श्मन्, न), निकेतनम्, मन्दिरम् (न स्त्री), सदनम्, सद्म (–द्मन्, न), निकाय्यः, भवनम् (न पु), कुटः (पु स्त्री), आलयः, निलयः, शाला, सभा, उदवसितम्, कुलम्, धिष्ण्यम्, आवसथः, स्थानम्, पस्त्यम्, संस्त्यायः, आश्रयः, ओकः (–कस् न), निवासः, आवासः, वसतिः (स्त्री), शरणम्, क्षयः, धाम (–मन् न), आगारम्, निशान्तम् ॥

१. 'पत्थर आदिसे बने हुए मकानके फर्श'का १ नाम है—कुट्टिमम् (न पु) ॥

२—'चारो ओर से बने हुए घरवाले मकान'के २ नाम हैं—चतुःशालम्, संजवनम् ॥

३. 'राजभवन'का १ नाम है—सौधम् ॥

४. 'सामियाना, टेण्ट आदि—कपड़ेके मकान'के २ नाम हैं—उपकारिका, उपकार्या (+उपकर्या) ॥

५. 'प्रवेशद्वार'के २ नाम हैं—सिंहद्वारम्, प्रवेशनम् ॥

६. 'देवताओं तथा राजाओंके घर'का १ नाम है—प्रासादः ॥

७. 'धनवानोंके घर'का १ नाम है—हर्म्यम् ॥

८. 'मठ (छात्रों या संन्यासी आदि व्रतियोंके घर)'के ३ नाम हैं—मठः (त्रि), आवसथ्यः, आवसथः ॥

९. 'पर्णशाला, झोपड़ी (पत्तियों या घास-फूस आदिसे छाये हुए मुनि आदिकी कुटिया)'के २ नाम हैं—पर्णशाला, उटजः (पु न) ॥

१०. 'जिन मन्दिर'के २ नाम हैं—चैत्यम्, विहारः ॥

११. 'तहखाना (भूमिके अन्दर बने हुए घर)'के ४ नाम हैं–गर्भागारम्, अपवरकः, वासौकः (– कस्), शयनास्पदम् ॥

१२. 'भाण्डार, खजानाघर'के २ नाम हैं—भाण्डागारम्, कोशः (+कोषः । पु न) ॥

१चन्द्रशाला शिरोगृहम् ॥ ६१ ॥
२कुप्यशाला तु सन्धानी ३कायमानं तृणौकसि ।
४होत्रीयन्तु हविर्गेहं ५प्राग्वंशः प्राग्हविर्गृहात् ॥ ६२ ॥
६आथर्वणं शान्तिगृह७मास्थानगृहमिन्द्रकम् ।
८तैलिशाला यन्त्रगृह९मरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ६३ ॥
१०सूदशाला रसवती पाकस्थानं महानसम् ।
११हस्तिशाला तु चतुरं १२वाजिशाला तु मन्दुरा ॥ ६४ ॥
१३सन्दानिनी तु गोशाला १४चित्रशाला तु जालिनी ।
१५कुम्भशाला पाकपुटी १६तन्तुशाला तु गर्त्तिका ॥ ६५ ॥

---

१. 'शिरोगृह (घरके ऊपर बने हुए दुमंजिले आदि मकान)'के २ नाम हैं—चन्द्रशाला, शिरोगृहम् ॥

२. 'सोने-चाँदीसे भिन्न (तांबा आदि) धातु रखे जानेवाले घर'के २ नाम हैं—कुप्यशाला, सन्धानी ॥

३. 'तृण, काष्ठ आदि रखे जानेवाले घर'के २ नाम हैं—कायमानम्, तृणौकः (-कस्) ॥

४. 'हवनगृह अग्निहोत्र भवन'के २ नाम हैं—होत्रीयम्, हविर्गेहम् ॥

५. 'हवनगृहके पूर्व भागमें स्थित घर'का १ नाम है—प्राग्वंशः ॥

६. 'शान्तिगृह'के २ नाम हैं—आथर्वणम्, शान्तिगृहम् (+शान्तिगृहकम्) ॥

७. 'आस्थानगृह, सभाभवन'के २ नाम हैं—आस्थानगृहम्, इन्द्रकम् ॥

८. 'तेल पेरनेवाले कोल्हू घर'के २ नाम हैं—तैलिशाला, यन्त्रगृहम् ॥

९. 'सूतीगृह'के २ नाम हैं—अरिष्टम्, सूतिकागृहम् ॥

१०. 'पाकशाला, रसोईघर'के ४ नाम हैं—सूदशाला, रसवती, पाकस्थानम्, (+पाकशाला), महानसम् ॥

११. 'हाथीखाना, हाथीके रहनेका घर'के २ नाम हैं—हस्तिशाला, चतुरम् ॥

१२. 'घुड़सार, घोड़ोंके रहनेका घर'के २ नाम हैं—वाजिशाला, मन्दुरा (स्त्री न) ॥

१३. 'गोशाला'के २ नाम हैं—सन्दानिनी, गोशाला ॥

१४. 'चित्रशाला'के २ नाम हैं—चित्रशाला, जालिनी ॥

१५. 'घड़ा, या बर्तन बनाने या पकाये जानेवाले घर'के २ नाम हैं—कुम्भशाला, पाकपुटी ॥

१६. 'कपड़ा बुने जानेवाले घर'के २ नाम हैं—तन्तुशाला, गर्तिका ॥

१नापितशाला वपनी शिल्पा खरकुटी च सा ।
२आवेशनं शिल्पिशाला ३सत्रशाला प्रतिश्रयः ॥ ६६ ॥
४आश्रमस्तु मुनिस्थान५मुपघ्नस्त्वन्तिकाश्रयः ।
६प्रपा पानीयशाला स्याद्७गञ्जा तु मदिरागृहम् ॥ ६७ ॥
८पक्कणः शबरावासो ९घोषस्त्वाभीरपल्लिका ।
१०पण्यशाला निषद्याऽट्टो हट्टो विपणिरापणः ॥ ६८ ॥
११वेश्याश्रयः पुरं वेशो १२मण्डपस्तु जनाश्रयः ।
१३कुड्यं भित्ति१४स्तदेडूकमन्तर्निहितकीकसम् ॥ ६९ ॥
१५वेदी वितर्दि—

---

१. 'क्षौरगृह (हजामत बनाये जानेवाले घर)'के ४ नाम हैं—नापितशाला, वपनी, शिल्पा, खरकुटी ॥

२. 'कारीगरके घर'के २ नाम हैं—आवेशनम्, शिल्पिशाला ॥

३. 'सदावर्त गृह (जहाँ पर नित्य अन्नादि दिया जाता हो, उस घर)'के २ नाम हैं—सत्रशाला, प्रतिश्रयः ॥

४. 'मुनियोंके रहनेके स्थान'का १ नाम है—आश्रमः (पु न) ॥

५. 'समीपस्थ आश्रय गृह'के २ नाम हैं—उपघ्नः, अन्तिकाश्रयः ॥

६. 'प्याऊ, पौसरा, पानी पिलानेका स्थान या घर'के २ नाम हैं—प्रपा, पानीयशाला ॥

७. 'भट्ठी (मदिराके घर)'के २ नाम हैं—गञ्जा, मदिरागृहम् ॥

८. 'शबरों (जंगल-निवासी कोल, भील, किरात आदि)के वासस्थान'के २ नाम हैं—पक्कणः (पु न), शबरावासः (यौ०—शबरालयः, शबरगृहम्,………) ॥

९. 'गोपोंके घर'के २ नाम हैं—घोषः, आभीरपल्लिका (+आभीरपल्लिः) ॥

१०. 'दूकान'के ६ नाम हैं—पण्यशाला, निषद्या, अट्टः (पु न), हट्टः, विपणिः (स्त्री), आपणः ॥

११ 'वेश्या गृह'के ३ नाम हैं—वेश्याश्रयः, पुरम्, वेशः ॥

१२. 'मण्डप'के २ नाम हैं—मण्डपः (पु न), जनाश्रयः ॥

१३. 'दिवाल, भीत'के २ नाम हैं—कुड्यम् (न । + पु), भित्तिः ॥

१४. 'भीतरमें हड्डी देकर बनायी गयी दिवाल'का १ नाम है—एडूकम् ॥

विमर्श—'अमरकोष' की 'धरा' नामक व्याख्याकार और के. पी. जायसवाल ने 'एडूक' का अर्थ 'बौद्ध स्तूप' किया है। (अमरकोषस्य २।२।४ 'धरा' व्याख्यायाः टिप्पणी) ॥

१५. वेदीके २ नाम हैं—वेदी, वितर्दिः ॥

—१रजिरं प्राङ्गणं चत्वराङ्गने ।
२वलजं प्रतीहारो द्वार्द्वारे३ऽथ परिघोऽर्गला ॥ ७० ॥
४सालपा त्वर्गलिका सूचिः ५कुञ्चिकायान्तु कूचिका ।
साधारण्यङ्कटश्चासौ ६ द्वारयन्त्रन्तु तालकम् ॥ ७१ ॥
७अस्योद्घाटनयन्त्रन्तु ताल्यपि प्रतिताल्यपि ।
८तिर्यग्द्वारोर्ध्वदारूत्तरङ्गं स्या९दररं पुनः ॥ ७२ ॥
कपाटोऽररिः कुवाटः १०पक्षद्वारन्तु पक्षकः ।
११प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्याद् १२बहिर्द्वारन्तु तोरणम् ॥ ७३ ॥
१३तोरणोर्ध्वे तु मङ्गल्यं दाम वन्दनमालिका ।
१४स्तम्भादेः स्यादधोदारौ शिला १५नासोर्ध्वदारुणि ॥ ७४ ॥

---

१. 'आंगन'के ४ नाम हैं—अजिरम् , प्राङ्गणम् (+ अङ्गणम्), चत्वरम्, अङ्गनम् ॥

२. 'द्वार'के ४ नाम हैं—वलजम् , प्रतीहारः, द्वाः (द्वार् स्त्री), द्वारम् ॥

३. 'किल्ली, आगल'के २ नाम हैं—परिघः, अर्गला (त्रि) ॥

४. 'छोटी किल्ली, आगल'के २ नाम हैं—अर्गलिका, सूचिः ॥

५. 'कूंची'के ४ नाम हैं—कुञ्चिका, कूचिका, साधारणी, अङ्कुटः ॥

६. 'ताला'के २ नाम हैं—द्वारयन्त्रम् , तालकम् ॥

७. 'ताली, चाभी'के २ नाम हैं—ताली, प्रतिताली ॥

८. 'द्वारके ऊपर तिर्छी लगी हुई लकड़ी'का १ नाम है—उत्तरङ्गम् ॥

९. 'किवाड़'के ४ नाम हैं—अररम् , कपाटः, (त्रि + कवाटः), अररिः (पु न), कुवाटः ॥

१०. 'खिड़की, या बड़े फाटकके बन्द रहने पर भी भीतर जाने आनेके लिए बनाये गये छोटे द्वार'के २ नाम हैं—पक्षद्वारम् , पक्षकः (+ खटक्किका) ॥

११. 'भीतरी द्वार'का १ नाम है—अन्तर्द्वारम् ॥

१२. 'बाहरी द्वार, तोरणद्वार'के २ नाम हैं—बहिर्द्वारम्, तोरणम् (न पु) ॥

१३. 'बन्दनवार (द्वारके ऊपर मङ्गलाथ लगायी गयी फूल या आम्रादि पल्लवकी माला)'का १ नाम है—वन्दनमालिका ॥

१४. 'खम्भेके नीचेवाली लकड़ी या पत्थर'का १ नाम है—शिला ॥

१५. 'खम्भेके ऊपरवाली लकड़ी या पत्थर'का १ नाम है—नासा ॥

विमर्श—'गौड'का मत है कि खम्भेके ऊपर दूसरी लकड़ी रखनेके लिए जो एक छोटी लकड़ी रखी जाती है, उसे 'शिला' कहते हैं । 'मालाकार'का

१गोपानसी तु वलभीच्छादने वक्रदारुणि ।
२गृहावग्रहणी देहल्युम्बरोदुम्बरोम्बुराः ॥ ७५ ॥
३प्रघाणः प्रघणोऽलिन्दो बहिर्द्वारप्रकोष्ठके ।
४कपोतपाली विटङ्कः ५पटलच्छदिषी समे ॥ ७६ ॥
६नीव्रं वलीकं तत्प्रान्त ७इन्द्रकोशस्तमङ्कः ।
८वलभी छदिराधारो ९नागदन्तास्तु दन्तकाः ॥ ७७ ॥
१०मत्तालम्बोऽपाश्रयः स्यात्प्रग्रीवो मत्तवारणे ।
११वातायनो गवाक्षश्च जालके१२ऽथान्नकोष्टकः ॥ ७८ ॥
कुसूलो—

मत है कि द्वारशाखाके ऊपर तथा नीचे दी हुई लकड़ी (कुर्सी) को 'शिलानासा' कहते हैं ॥

१. 'धरन (छप्परको छानेके लिए लगायी गयी लकड़ी)'का १ नाम है—गोपानसी ॥

२. 'देहली, पटडेहर'के ५ नाम हैं—गृहावग्रहणी, देहली, उम्बरः, उदुम्बरः, उम्बुरः ॥

३. 'द्वारके नीचेवाले चौकठके नीचे लगाये गये चौड़े पत्थर आदि'के ३ नाम हैं—प्रघाणः, प्रघणः, अलिन्दः ।

४. 'कबूतरोंका दरबा'के २ नाम हैं—कपोतपाली, विटङ्कः (पु न) ॥

५. 'छप्पर'के २ नाम हैं—पटलम् (त्रि), छदिः (– दिस्, स्त्री) ॥

६. 'ओरी'के २ नाम हैं—नीव्रम् , वलीकम् (न पु) ॥

७. 'सभादिमें भाषणादिके लिए ऊँचे बनाये गये मंच'के २ नाम हैं—इन्द्रकोशः (+इन्द्रकोषः), तमङ्कः (+मञ्चकः) ॥

८. 'छप्परके नीचेवाले बाँस आदि—कोरो, ठाट या छज्जा'का १ नाम है—वलभी (+वलभिः) ॥

९. 'खूंटी'के २ नाम हैं—नागदन्तः, दन्तकः ॥

१०. 'मकानके चारो ओर बने हुए लकड़ी आदिका घेरा या झरोखा, खिड़की'के ४ नाम हैं—मत्तालम्बः, अपाश्रयः, प्रग्रीवः (पु न), मत्तवारणः ॥

११. 'जंगला, खिड़की'के ३ नाम हैं—वातायनः (पु न), गवाक्षः, जालकम् ॥

१२. 'कोठला, भांड़'के २ नाम हैं—अन्नकोष्ठकः, कुसूलः (+कुशूलः) ॥

—१ऽश्रिस्तु कोणोऽणिः कोटिः पाल्यस्त्र इत्यपि ।
२आरोहणन्तु सोपानं ३निःश्रेणिस्त्वधिरोहणी ॥ ७९ ॥
४स्थूणा स्तम्भः ५सालभञ्जी पाञ्चालिका च पुत्रिका ।
काष्ठादिघटिता ६लेप्यमयी त्वञ्जलिकारिका ॥ ८० ॥
७नन्द्यावर्त्तप्रभृतयो विच्छन्दा आढ्यवेश्मनाम् ।
८समुद्गः सम्पुटः ९पेटा स्यान्मञ्जूषा१०ऽथ शोधनी ॥ ८१ ॥
सम्मार्जनी बहुकरी वर्धनी च समूहनी ।
११सङ्करावकरौ तुल्या१२वुदूखलमुलूखलम् ॥ ८२ ॥
१३प्रस्फोटनन्तु पवन१४मवघातस्तु कण्डनम् ।

---

१. 'घरके कोने आदि'के ६ नाम हैं—अश्रिः (स्त्री), कोणः, अणिः (पु स्त्री), कोटिः (स्त्री), पाली, अस्रः ॥

२. 'सीढ़ी'के २ नाम हैं—आरोहणम्, सोपानम् ॥

३. 'काठ आदिकी सीढ़ी'के २ नाम हैं—निःश्रेणिः (स्त्री), अधिरोहणी ॥

४. 'खम्भे'के २ नाम हैं—स्थूणा, स्तम्भः ॥

५. 'काठ, पत्थर या हाथीदाँत आदिकी मूर्ति-स्टेचू'के ३ नाम हैं—सालभञ्जी, पाञ्चालिका, पुत्रिका ॥

६. 'रंग आदिसे बनायी गयी मूर्ति'का १ नाम है—अञ्जलिकारिका ॥

७. 'विशिष्ट ढंगसे बने हुए धनवानोंके गृहों'के 'नन्द्यावर्त्तः' आदि ('आदि' शब्दसे 'स्वस्तिकः, सर्वतोभद्रः' आदि) नाम हैं ॥

विमर्श—चारो ओरसे द्वार तथा तोरणवाले घरको 'स्वस्तिकः', अनेक मञ्जिलवाले घरको 'सर्वतोभद्रः', गोलाकार घरको 'नन्द्यावर्तः', और सुन्दरतम घरको 'विच्छन्दः' कहते हैं ॥

८. 'डब्बे'के २ नाम हैं—समुद्गः, सम्पुटः ॥

९. 'झाँपी'के २ नाम हैं—पेटा (+पेटकः), मञ्जूषा ॥

१०. 'झाड़ू'के ५ नाम हैं—शोधनी (+पवनी), संमार्जनी, बहुकरी (पु स्त्री), वर्धनी, समूहनी ॥

११. 'कूड़े-करकट के २ नाम हैं—सङ्करः, अवकरः ॥

१२. 'ओखली'के २ नाम हैं—उदूखलम् , उलूखलम् ॥

१३. 'फटकने'के २ नाम हैं—प्रस्फोटनम् , पवनम् ॥

१४. 'कूटने'के २ नाम हैं—अवघातः, कण्डनम् ॥

१कटः किलिञ्जो २मुसलोऽयोऽग्रं ३कण्डोलकः पिटम् ॥ ८३ ॥
४चालनी तितउः ५शूर्पं प्रस्फोटन६मथान्तिका ।
चुल्ल्यश्मन्तकमुद्धानं स्यादधिश्रयणी च सा ॥ ८४ ॥
७स्थाल्युखा पिठरं कुण्डं चरुः कुम्भी ८ घटः पुनः ।
कुटः कुम्भः करीरश्च कलशः कलसो निपः ॥ ८५ ॥
९हसन्यङ्गाराच्छकटीधानीपात्र्यो हसन्तिका ।
१०भ्राष्ट्रोऽम्बरीष ११ऋचीषमृजीषं पिष्टपाकभृत् ॥ ८६ ॥
१२कम्बिर्दर्विः खजाका१३ऽथ स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ।
१४वार्धान्यान्तु गलन्त्यालूः कर्करी करको१५ऽथ सः ॥ ८७ ॥
नालिकेरजः करङ्क—

---

१. 'चटाई, खसकी टट्टी'के २ नाम हैं—कटः (त्रिः), किलिञ्जः ॥

२. 'मूसल'के २ नाम हैं—मुसलः (+मुषलः), अयोग्रम् (न पु । +अयोनिः) ॥

३. 'बाँस आदिकी दौरी, डाली, ओड़ी, टोकरी, खँचिया आदि'के २ नाम हैं—कण्डोलकः, पिटम् (न पु । +पिटकः) ॥

४. 'चलनी'के २ नाम हैं—चालनी (स्त्री न), तितउः (पु न) ॥

५. 'सूप'के २ नाम हैं—शूर्पम्, प्रस्फोटनम् (२ न पु) ॥

६. 'चुल्ही'के ५ नाम हैं—अन्तिका (+अन्ती), चुल्ली, अश्मन्तकम्, उद्धानम्, अधिश्रयणी ॥

७. 'बटलोई, चरुई, बहुगुना आदि'के ६ नाम हैं—स्थाली, उखा, पिठरम्, कुण्डम् (२ त्रि), चरुः (पु), कुम्भी ॥

८. 'घड़े'के ७ नाम हैं—घटः (पु स्त्री), कुटः (पु न), कुम्भः (पु स्त्री), करीरः (पु न), कलशः, कलसः (२ त्रि), निपः (पु न) ॥

९. 'बोरसी, अंगीठी'के ५ नाम हैं—हसनी, अङ्गारशकटी, अङ्गारधानी, अङ्गारपात्री, हसन्तिका ॥

१०. 'भाड़, भँड़सार'के २ नाम हैं—भ्राष्ट्रः, अम्बरीषः (२ पु न) ॥

११. 'तावा'के २ नाम हैं—ऋचीषम्, ऋजीषम् ॥

१२. 'कलछुल'के ३ नाम हैं—कम्बिः, दर्विः, खजाका (३ स्त्री) ॥

१३. 'लकड़ीकी कलछुल'का १ नाम है—तर्दूः (स्त्री) ॥

१४. 'कमण्डलु'के ५ नाम हैं—वार्धानी, गलन्ती, आलूः (स्त्री), कर्करी, करकः (पु न) ॥

१५. 'नारियल के कमण्डलु'का १ नाम है—करङ्कः ॥

—१स्तुल्यौ कटाहकर्परौ ।
२मणिकोऽलिञ्जरो ३गर्गरीकलश्यौ तु मन्थनी ॥ ८८ ॥
४वैशाखः खजको मन्था मन्थानो मन्थदण्डकः ।
मन्थः क्षुब्धो५ऽस्य विष्कम्भो मञ्जीरः कुटरोऽपि च ॥ ८९ ॥
६शालाजीरो वर्धमानः शरावः ७कोशिका पुनः ।
मल्लिका चषकः कंसः पारी स्यात्पानभाजनम् ॥ ९० ॥
८कुतूश्चर्मस्नेहपात्रं ९ कुतुपस्तु तदल्पकम् ।
१०दृतिः खल्ल११श्चर्ममयी त्वालूः करकपात्रिका ॥ ९१ ॥
१२सर्वमावपनं भाण्डं १३पात्राऽमत्रे तु भाजनम् ।

---

१. 'कड़ाह'के २ नाम हैं—कटाहः (त्रि), कर्परः ॥

२. 'हथहर, गडुई'के २ नाम हैं—मणिकः, अलिञ्जरः (२ पु न) ॥

३. 'दही मथनेके बर्तन'के ३ नाम हैं—गर्गरी, कलशी, मन्थनी ॥

४. 'मथनी'के ७ नाम हैं—वैशाखः, खजकः, मन्थाः (–थिन्), मन्थानः, मन्थदण्डकः, मन्थः, क्षुब्धः ॥

५. 'जिसमें बांधकर मथनी घुमायी जाती है, उस खम्भे'के ३ नाम हैं—विष्कम्भः (+दण्डकरोटकम), मञ्जीरः, कुटरः (+कुटकः) ॥

६. 'सकोरे, ढकनी आदि'के ३ नाम हैं—शालाजीरः, वर्धमानः, शरावः (२ पु न) ॥

७. 'प्याली या प्याले'के ६ नाम हैं—कोशिका, मल्लिका, चषकः, कंसः (२ पु न), पारी, पानभाजनम् ॥

८. 'कुप्पा (तेल या घी रखनेके लिए चमड़ेके बने हुए बड़े पात्र)' का १ नाम है—कुतूः ॥

९. 'कुप्पी (पूर्वोक्त छोटे बर्तन)' का १ नाम है—कुतुपः (पु न) ॥

१०. 'खरल (दवा आदि कूटनेके लिए लोहे या पत्थर के बने खरल)' के २ नाम हैं— दृतिः (पु), खल्लः ॥

११. चमड़ेके के कमण्डलु'का १ नाम है—करकपात्रिका ॥

१२. 'भाण्ड (जिसमें कोई वस्तु रखी जाय उस)'के २ नाम हैं--आवपनम्, भाण्डम् ॥

१३. 'बर्तन (छोटी थाली)'के ३ नाम हैं—पात्रम् (त्रि), अमत्रम्, भाजनम् ॥

विमर्श—'अमरकोष'कारने आवपन आदि पांचों पर्यायोंको एकार्थक माना है (२।९।३३) ॥

१तद्विशालं पुनः स्थालं २स्यात्पिधानमुदञ्चनम् ॥ ९२ ॥
३शैलोऽद्रिः शिखरी शिलोच्चयगिरी गोत्रोऽचलः सानुमान् ।
ग्रावा पर्वतभूध्रभूधरधराहार्या नगो४ऽथोदयः ।
पूर्वाद्रि५श्चरमाद्रिरस्त ६उदगद्रिस्त्वद्रिराड् मेनका-
प्राणेशो हिमवान् हिमालयहिमप्रस्थौ भवानीगुरुः ॥ ९३ ॥
७हिरण्यनाभो मैनाकः सुनाभश्च तदात्मजः ।
८रजताद्रिस्तु कैलासोऽष्टापदः स्फटिकाचलः ॥ ९४ ॥
९क्रौञ्चः क्रुञ्चो१०ऽथ मलय आषाढो दक्षिणाचलः ।
११स्यान्माल्यवान् प्रस्रवणो १२विन्ध्यस्तु जलवालकः ॥ ९५ ॥
१३शत्रुञ्जयो विमलाद्रि १४रिन्द्रकीलस्तु मन्दरः ।

---

१. 'थाल, परात'का १ नाम है—स्थालम् (न स्त्री) ॥

२. 'ढक्कन'के २ नाम हैं—पिधानम् , उदञ्चनम् ॥

३. 'पर्वत, पहाड़'के १५ नाम हैं—शलः, अद्रिः, शिखरी (-रिन्), शिलोच्चयः, गिरिः, गोत्रः, अचलः, सानुमान् (-मत्), ग्रावा (-वन्), पर्वतः, भूध्रः (यौ०—कुध्रः, महीध्रः,………), भूधरः (यौ०—महीधरः, भूभृत् , पृथ्वीधरः, पृथ्वीभृत् ,…………), धरः, अहार्यः, नगः ॥

शेषश्चात्र—गिरौ प्रपाती कुट्टार उर्वङ्गः कन्दराकरः ।

४. 'उदयाचल'के २ नाम हैं—उदयः (+उदयाचलः), पूर्वाद्रिः ।

५. 'अस्ताचल'के २ नाम हैं—चरमाद्रिः, अस्तः (+अस्ताचलः) ॥

६. 'हिमालय पर्वत'के ७ नाम हैं—उदगद्रिः, अद्रिराट् (-राज्), मेनकाप्राणेशः, हिमवान् (-वत्), हिमालयः , हिमप्रस्थः, भवानीगुरुः ॥

७. 'मैनाकपर्वत'के ३ नाम हैं—हिरण्यनाभः, मैनाकः, सुनाभः ॥

८. 'कैलास पर्वत'के ४ नाम हैं—रजताद्रिः, कैलासः, अष्टापदः, स्फटिकाचलः ॥

शेषश्चात्र—कैलासे धनदावासो हराद्रिर्हिमवद्धसः ॥

९. 'क्रौञ्चपर्वत'के २ नाम हैं—क्रौञ्चः, क्रुञ्चः ॥

१०. 'मलय पर्वत'के ३ नाम हैं—मलयः (पु न), आषाढः, दक्षिणाचलः ॥

शेषश्चात्र—मलयश्चन्दनगिरिः ।

११. 'माल्यवान् पर्वत'के २ नाम हैं—माल्यवान् (-वत्), प्रस्रवणः ॥

१२. 'विन्ध्य पर्वत'के २ नाम हैं—विन्ध्यः, जलवालकः ॥

१३. 'विमल पर्वत'के २ नाम हैं—शत्रुञ्जयः, विमलाद्रिः ॥

१४. 'मन्दर पर्वत'के २ नाम हैं—इन्द्रकीलः, मन्दरः ॥

१सुवेलः स्यात्त्रिमुकुटस्त्रिकूटस्त्रिककुच्च सः ॥ ९६ ॥
२उज्जयन्तो रैवतकः ३सुदारुः पारियात्रकः ।
४लोकालोकश्चक्रवालो५ऽथ मेरुः कर्णिकाचलः ॥ ९७ ॥
रत्नसानुः सुमेरुः स्वःस्वर्गिकाञ्चनतो गिरिः ।
६श्रृङ्गन्तु शिखरं कूटं ७प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ९८ ॥
८मेखला मध्यभागोऽद्रेर्नितम्बः कटकश्च सः ।
९दरी स्यात्कन्दरो१०ऽखातबिले तु गह्वरं गुहा ॥ ९९ ॥
११द्रोणी तु शैलयोः सन्धिः १२पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ।
१३दन्तकास्तु बहिस्तिर्यक्प्रदेशा निर्गता गिरेः ॥ १०० ॥

---

१. 'सुवेल पर्वत'के ४ नाम हैं—सुवेलः, त्रिमुकुटः, त्रिकूटः, त्रिककुत् (-कुद्) ॥

२. 'रैवतक पर्वत'के २ नाम हैं—उज्जयन्तः, रैवतकः ॥

३. 'पारियात्र पर्वत'के २ नाम हैं—सुदारुः, पारियात्रकः ॥

४. 'लोकालोक पर्वत'के २ नाम हैं—लोकालोकः, चक्रवालः ॥

५. 'सुमेरु पर्वत'के ७ नाम हैं—मेरुः, कर्णिकाचलः, रत्नसानुः, सुमेरुः, स्वर्गिरिः, स्वर्गिगिरिः, काञ्चनगिरिः । (४।९३ से यहांतक सब पर्वतके पर्याय वाचक शब्द पुंल्लिङ्ग हैं) ॥

६. 'शिखर, पहाड़की चोटी'के ३ नाम हैं—शृङ्गम् , शिखरम् , कूटम् (३ न पु) ॥

७. 'प्रपात'के ३ नाम हैं—प्रपातः, अतटः, भृगुः ।

विमर्श—"जिस तटसे गिरा जाय, उस तटका नाम 'भृगु' है" यह किसी-किसीका मत है ॥

८. 'पर्वतकी चढ़ाईके मध्यभाग'के ३ नाम हैं—मेखला, नितम्बः, कटकः (पु न) ॥

९. 'कन्दरा; दरी'के २ नाम हैं—दरी, कन्दरः (त्रि) ॥

१०. 'गुहा, पर्वतकी गुफा'के २ नाम हैं—गह्वरम् (पु न), गुहा ॥

विमर्श—किसी-किसी के मतसे 'दरी, कन्दरः, गह्वरम् , गुहा'ये ४ नाम 'गुफा'के ही हैं ॥

११. 'दो पर्वतोंके मिलनेके स्थान' का१ नाम है—द्रोणी ॥

१२. 'पर्वतके पासवाले छोटे-छोटे पहाड़ों'का १ नाम है—पादाः ॥

१३. 'पर्वतके निकले हुए बाहरी तिर्छे स्थानों'का १ नाम है—दन्तकाः ॥

१अधित्यकोर्ध्वभूमिः स्यार२दधोभूमिरुपत्यका ।
३स्नुः प्रस्थं सानु४रश्मा तु पाषाणः प्रस्तरो दृषत् ॥ १०१ ॥
ग्रावा शिलोपलौ ५गण्डशैलाः स्थूलोपलाश्च्युताः ।
६स्यादाकरः खनिः खानिर्गञ्जा ७धातुस्तु गैरिकम् ॥ १०२ ॥
८शुक्लधातौ पाकशुक्ला कठिनी खटिनी खटी ।
९लोहं कालायसं शस्त्रं पिण्डं पारशवं घनम् ॥ १०३ ॥
गिरिसारं शिलासारं तीक्ष्णकृष्णामिषे अयः ।
१०सिंहानधूर्तमण्डूरसरणान्यस्य किट्टके ॥ १०४ ॥
११सर्वञ्च तैजसं लोहं १२विकारस्त्वयसः कुशी ।

---

१. 'पहाड़की ऊपरवाली भूमि'का १ नाम है—अधित्यका ॥

२. 'पहाड़की नीचेवाली भूमि'का १ नाम है—उपत्यका ॥

३. 'पर्वतकी ऊपरवाली समतल भूमि'के ३ नाम हैं—स्नुः (पु), प्रस्थम्ः, सानुः (२ पु न) ॥

४. 'पत्थर'के ७ नाम हैं—अश्मा (-श्मन्), पाषाणः, प्रस्तरः, दृषत् (स्त्री), ग्रावा (-वन् , पु), शिला, उपलः (पु न) ॥

५. 'पर्वतसे गिरे हुए बड़े-बड़े चट्टानों'का १ नाम है—गण्डशैलाः ॥

६. 'खान'के ४ नाम हैं—आकरः, खनिः, खानिः (२ स्त्री), गञ्जा (स्त्री पु) ॥

७. 'गेरू'के २ नाम हैं—धातुः (पु), गैरिकम् ॥

८. 'खड़िया, चाक'के ४ नाम हैं—शुक्लधातुः, पाकशुक्ला, कठिनी, खटिनी, खटी (+कखटी) ॥

९. 'लोहे'के ११ नाम हैं—लोहम् (पु न), कालायसम्, शस्त्रम्, पिण्डम् , पारशवम् (पु न), घनम्, गिरिसारम् , शिलासारम् (२ न ।+२ पु), तीक्ष्णम् , कृष्णामिषम्, अयः (-यस् , न) ॥

शेषश्चात्र—स्याल्लोहे धीनधीवरे ।

१०. 'मण्डूर लोहकिट्ट'के ४ नाम हैं–सिंहानम्, धूर्तम् , मण्डरम्, सरणम् ॥

११. 'सर्वविध (आठोप्रकारके) तेजोविकार'का १ नाम है—लोहम् (न पु) ॥

विमर्श—लोह आठ हैं—सोना, चाँदी, तांबा, पीतल, काँसा, रांगा, सीसा, लोहा । इन्हींको 'अष्टधातु' कहते हैं ॥

१२. 'लोहेकी बनी हुई वस्तु'का १ नाम है—कुशी ॥

१ताम्रं म्लेच्छमुखं शुल्वं रक्तं द्व्यष्टमुदुम्बरम् ॥ १०५ ॥
म्लेच्छशावरभेदाख्यं मर्कटास्यं कनीयसम् ।
ब्रह्मवर्द्धनं वरिष्ठं २सीसन्तु सीसपत्रकम् ॥ १०६ ॥
नागं गण्डूपदभवं वप्रं सिन्दूरकारणम् ।
वर्ध्रं स्वर्णारियोगेष्टे यवनेष्टं सुवर्णकम् ॥ १०७ ॥
३वङ्गं त्रपु स्वर्णजनागजीवने मृद्वङ्गरङ्गे गुरुपत्रपिच्चटे ।
स्याच्चक्रसंज्ञं तमरञ्च नागजं कस्तीरमालीनकसिंहले अपि ॥ १०८ ॥
४स्याद्रूप्यं कलधौततारजतश्वेतानि दुर्वर्णकं
खर्जूरञ्च हिमांशुहंसकुमुदाभिख्यं—

---

१. 'तांबे'के १२ नाम हैं—ताम्रम्, म्लेच्छमुखम्, शुल्वम्, रक्तम्, द्व्यष्टम्, उदुम्बरम् (+औदुम्बरम्), म्लेच्छम्, शावरम्, मर्कटास्यम्, कनीयसम्, ब्रह्मवर्धनम्, वरिष्ठम् ॥

शेषश्चात्र—ताम्रे पवित्रं कास्यं च ॥

२. 'सीसा'के ११ नाम हैं—सीसम् (न ।+पु), सीसपत्रकम्, नागम, गण्डूपदभवम्, वप्रम्, सिन्दूरकारणम्, वर्ध्रम्, स्वर्णारिः, योगेष्टम्, यवनेष्टम्, सुवर्णकम् ॥

शेषश्चात्र—सीसके तु महाबलम् । चीनः पट्टं समोलूकं कृष्णं च त्रपुबन्धकम् ॥

३. 'राँगा'के १४ नाम हैं—वङ्गम्, त्रपु (न), स्वर्णजम्, नागजीवनम्, मृद्वङ्गम, रङ्गम्, गुरुपत्रम्, पिच्चटम्, चक्रम् ('चक्र'के पर्यायवाचक सभी शब्द), तमरम्, नागजम्, कस्तीरम्, आलीनकम्, सिंहलम् ॥

शेषश्चात्र—त्रपुणि श्वेतरूप्यं स्यात् शण्ठं सलवणं रजः ।
पारसं मधुकं ज्येष्ठं घनं च मुखभूषणम् ॥

४. 'चाँदी'के १० नाम हैं—रूप्यम्, कलधौतम्, तारम्, रजतम् (न पु), श्वेतम् (+सितम्,..................), दुर्वर्णकम्, खर्जूरम् हिमांशुः, हंसः, कुमुदः (हिमांशु आदि अर्थात् चन्द्र आदिके वाचक सभी शब्द, अत एव+चन्द्रः, सोम..............; मरालः, मानसौकाः, कैरवः,..........) ॥

शेषश्चात्र—राजते त्रापुषं वङ्गः जीवनं वसु भीरुकम् ।
शुभ्रं सौम्यं च शोध्यं च रूप्यं भीरु जवीयसम् ॥

—१सुवर्णं पुनः ।
स्वर्णं हेम हिरण्यहाटकवसून्यष्टापदं काञ्चनं
कल्याणं कनकं महारजतरैगाङ्गेयरुक्माण्यपि ॥ १०९ ॥
कलधौतलोहोत्तमवह्निबीजान्यपि गारुडं गैरिकजातरूपे ।
तपनीयचामीकरचन्द्रभर्माऽर्जुननिष्ककार्तस्वरकर्बुराणि ॥ ११० ॥
जाम्बूनदं शातकुम्भं रजतं भूरि भूत्तमम् ।
२हिरण्यकोशाकुप्यानि हेम्नि रूप्ये कृताकृते ॥ १११ ॥
३कुप्यन्तु तद्द्वयादन्यद्४रूप्यं तु द्वयमाहतम् ।
५अलङ्कारसुवर्णन्तु शृङ्गीकनकमायुधम् ॥ ११२ ॥
६रजतञ्च सुवर्णञ्च संश्लिष्टे घनगोलकः ।
७पित्तलारेऽ—

---

१. 'सोने, सुवर्ण'के ३३ नाम हैं—सुवर्णम्, स्वर्णम् (२ न पु), हेम (-मन्, न ।+हेमः, पु), हिरण्यम् (न पु), हाटकम् (न ।+पु), वसु (न), अष्टापदम् (न पु), काञ्चनम्, कल्याणम्, कनकम्, महारजतम्, राः (=रै, पु स्त्री), गाङ्गेयम्, रुक्मम्, कलधौतम्, लोहोत्तमम्, वह्निबीजम्, गारुडम्, गैरिकम्, जातरूपम्, तपनीयम्, चामीकरम्, चन्द्रम् (न पु), भर्म (-र्मन्, न), अर्जुनम्, निष्कः (पु न), कार्तस्वरम्, कर्बुरम्, जाम्बूनदम्, शातकुम्भम् (+शातकौम्भम्), रजतम्, भूरि (न ।+पु), भूत्तमम् ॥

शेषश्चात्र—सुवर्णं लोभनं शुक्रं तारजीवनमौजसम् ।
दाक्षायणं रक्तवर्णं श्रीमत्कुम्भं शिलोद्भवम् ॥
वैणवं तु कर्णिकारच्छायं वेणुतटीभवम् ।

२. 'सिक्का आदि बनाये हुए या बिना बनाये हुए सोना तथा चाँदी'के ३ नाम हैं—हिरण्यम्, कोशम्, अकुप्यम् ॥

३. 'सिक्का बनाये या बिना बनाये हुए सोना-चाँदीको छोड़कर दूसरे तांबा आदि धातु'का १ नाम है—कुप्यम् ।

४. 'सिक्का आदि रूपमें परिणत सोना-चाँदी, तांबा आदि सब धातुओं'का १ नाम है—रूप्यम् ॥

५. 'आभूषणार्थ सुवर्ण'के ३ नाम हैं—अलङ्कारसुवर्णम्, शृङ्गीकनकम्, आयुधम् ॥

६. 'मिश्रित सोना-चाँदी'का १ नाम है—घनगोलकः (पु न) ॥

७. 'पीतल'के २ नाम हैं—पित्तला (स्त्री न ।+पु न), आरः (पु न) ॥

—१आरकूटः कपिलोहं सुवर्णकम् ॥ ११३ ॥
रिरी रीरी च रीतिश्च पीतलोहं सुलोहकम् ।
२ब्राह्मी तु राज्ञी कपिला ब्रह्मरीतिर्महेश्वरी ॥ ११४ ॥
३कांस्ये विद्युत्प्रियं घोषः प्रकाशं वङ्गशुल्वजम् ।
घण्टाशब्दमसुराह्वरवणं लोहजं मलम् ॥ ११५ ॥
४सौराष्ट्रके पञ्चलोहं ५वर्तलोहं तु वर्तकम् ।
६पारदः पारतः सूतो हरबीजं रसश्चलः ॥ ११६ ॥
७अभ्रकं स्वच्छपत्रं खमेघाख्यं गिरिजामले ।
८स्रोतोऽञ्जनन्तु कापोतं सौवीरं कृष्णयामुने ॥ ११७ ॥
९अथ तुत्थं शिखिग्रीवं तुत्थाञ्जनमयूरके ।
१०मूषातुत्थं कांस्यनीलं हेमतारं वितुन्नकम् ॥ ११८ ॥
११स्यात्तु कर्परिकातुत्थममृतासङ्गमञ्जनम् ।

---

१. 'पित्तलके भेद-विशेष'के ७ नाम हैं—आरकूटः (पु न), कपिलोहम्, सुवर्णकम्, रिरी रीरी, रीतिः, पीतलोहम्, सुलोहकम् (+सुलोहम्) ॥

२. 'पीतवर्ण लोहके भेद-विशेष'के ५ नाम हैं—ब्राह्मी, राज्ञी, कपिला, ब्रह्मरीतिः, महेश्वरी (किसी-किसीके मतसे 'पित्तला' आदि १२ नाम एकार्थक हैं) ॥

३. 'काँसा'के १० नाम हैं—कांस्यम्, विद्युत्प्रियम्, घोषः, प्रकाशम्, वङ्गशुल्वजम्, घण्टाशब्दम्, कंसम्, रवणम्, लोहजम्, मलम् ॥

४. 'ताँबा-पीतल-रांगा-सीसा-लोहा रूप पंचलोह'के २ नाम हैं—सौराष्ट्रकम्, पञ्चलोहम् ॥

५. 'लोह-विशेष या इस्पात'के २ नाम हैं—वर्तलोहम्, वर्तकम् ॥

६. 'पारा'के ६ नाम हैं—पारदः, पारतः (पु न), सूतः, हरबीजम्, रसः, चलः (+चपलः) ॥

७. 'अभ्रक, अबरख'के ७ नाम हैं—अभ्रकम्, स्वच्छपत्रम्, खमेघाख्यम् (आकाश तथा मेघके पर्यायवाचक शब्द, अतः—+खम्, गगनम्, ················, मेघम्, अम्बुदम्, ················), गिरिजामलम् ॥

८. 'काला सुर्मा'के ५ नाम हैं—स्रोतोञ्जनम्, कापोतम्, सौवीरम्, कृष्णम्, यामुनम् ॥

९. 'तूतिया'के ४ नाम हैं—तुत्थम्, शिखिग्रीवम्, तुत्थाञ्जनम्, मयूरकम् ।

१०. 'नीलाथोथा'के ४ नाम हैं—मूषातुत्थम्, कांस्यनीलम्, हेमतारम्, वितुन्नकम् ॥

११. 'अञ्जन'के ३ नाम हैं—कर्परिकातुत्थम्, अमृतासङ्गम्, अञ्जनम् ॥

१रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं तुत्थे दार्वीरसोद्भवे ॥ ११९ ॥
२पुष्पाञ्जनं रीतिपुष्पं पौष्पकं पुष्पकेतु च ।
३माक्षिकं तु कदम्बः स्याच्चक्रनामाऽजनामकः ॥ १२० ॥
४ताप्यो नदीजः कामारिस्ताराररिर्विटमाक्षिकः ।
५सौराष्ट्री पार्वती काक्षी कालिका पर्पटी सती ॥ १२१ ॥
आढकी तुवरी कंसोद्भवा काच्छी मृदाह्वया ।
६कासीसं धातुकासीसं खेचरं धातुशेखरम् ॥ १२२ ॥
७द्वितीयं पुष्पकासीसं कंसकं नयनौषधम् ।
८गन्धाश्मा शुल्वपामाकुष्ठारिर्गन्धिकगन्धकौ ॥ १२३ ॥
सौगन्धिकः शुकपुच्छो ९हरितालन्तु पिञ्जरम् ।
बिडालकं विस्रगन्धि खर्जूरं वंशपत्रकम् ॥ १२४ ॥
आलपीतनतालानि गोदन्तं नटमण्डनम् ।
वङ्गारिर्लोमहृच्चा—

---

१. 'दारुहल्दीके रससे बने हुए तूतिया'के २ नाम हैं—रसगर्भम्, तार्क्ष्यशैलम् ॥

२. 'तपाये हुए पीतलकी मैलसे बने हुए सुर्मे'के ४ नाम हैं—पुष्पाञ्जनम् (+कुसुमाञ्जनम्), तार्क्ष्यशैलम्, पौष्पकम्, पुष्पकेतु ॥

विमर्श—'अञ्जन-सम्बन्धी भेदोपभेद तथा मतान्तरोंको अमरकोष (२ । ९ । १०२)के मत्कृत 'मणिप्रभा' टीका तथा 'अमरकौमुदी' टिप्पणीमें देखें ॥

३. 'माक्षिक' (सहद या सोनामक्खी)के ४ नाम हैं—माक्षिकम्, कदम्बः, चक्रनामा (-मन् । चक्रके पर्यायवाचक सब शब्द), अजनामकः (अज अर्थात् विष्णुके पर्यायवाचक सब शब्द, अतः—वैष्णवः,........) ॥

४. 'विटमाक्षिक'के ५ नाम हैं—ताप्यः, नदीजः, कामारिः, ताराररिः, विटमाक्षिकः ॥

५. 'पर्पटी'के ११ नाम हैं—सौराष्ट्री, पार्वती, काक्षी, कालिका, पर्पटी, सती, आढकी, तुवरी, कंसोद्भवा, काच्छी, मृदाह्वया (मिट्टीके पर्याय वाचक शब्द, अतएव—मृत्तिका, मृत्स्ना, मृत्सा,......) ॥

६. 'कसीस'के ४ नाम हैं—कासीसम्, धातुकासीसम्, खेचरम्, धातुशेखरम् ॥

७. 'फूलकसीस'के ३ नाम हैं—पुष्पकासीसम्, कंसकम्, नयनौषधम् ॥

८. 'गन्धक'के ८ नाम हैं—गन्धाश्मा (-श्मन्), शुल्वारिः, पामारिः, कुष्ठारिः, गन्धिकः, गन्धकः, सौगन्धिकः, शुकपुच्छः ॥

९. 'हरताल'के १३ नाम हैं—हरितालम्, पिञ्जरम् बिडालकम्, विस्र-

—१अथ मनोगुप्ता मनःशिला ॥ १२५ ॥
करवीरा नागमाता रोचनी रसनेत्रिका ।
नेपाली कुनटी गोला मनोह्वा नागजिह्विका ॥ १२६ ॥
२सिन्दूरं नागजं नागरक्तं शृङ्गारभूषणम् ।
चीनपिष्टं ३हंसपादकुरुविन्दे तु हिङ्गुलः ॥ १२७ ॥
४शिलाजतु स्याद् गिरिजमर्थ्यं गैरेयमश्मजम् ।
५क्षारः काचः ६कुलाली तु स्याच्चक्षुष्या कुलत्थिका ॥ १२८ ॥
७बोलो गन्धरसः प्राणः पिण्डो गोपरसः शशः ।
८रत्नं वसु मणि९स्तत्र वैडूर्यं वालवायजम् ॥ १२९ ॥

गन्धि, खर्जूरम्, वंशपत्रकम्, आलम्, पीतनम्, तालम्, गोदन्तम् (+गोपित्तम्), नटमण्डनम्, वङ्गारिः, लोमहृत् ॥

१. 'मैनसिल'के ११ नाम हैं—मनोगुप्ता, मनःशिला (+शिला), करवीरा, नागमाता (-मातृ), रोचनी, रसनेत्रिका, नेपाली (+नैपाली), कुनटी, गोला, मनोह्वा, नागजिह्विका ॥

२. 'सिन्दूर'के ५ नाम हैं—सिन्दूरम्, नागजम्, नागरक्तम्, शृङ्गारभूषणम् (+शृङ्गारम्), चीनपिष्टम् ॥

३. 'हिंगुल'के ३ नाम हैं—हंसपादः, कुरुविन्दम्, हिङ्गुलः (पु।+न पु।+हिङ्गुलुः) ॥

४. 'सिलाजीत'के ५ नाम हैं—शिलाजतु (न), गिरिजम्, अर्थ्यम्, गैरेयम्, अश्मजम् ॥

५. 'काच'के २ नाम हैं—क्षारः, काचः ॥

६. 'काला सुर्मा'के ३ नाम हैं—कुलाली, चक्षुष्या, कुलत्थिका ॥

७. 'गन्धरस'के ६ नाम हैं—बोलः, गन्धरसः, प्राणः, पिण्डः, गोपरसः (+रसः), शशः ॥

८. 'रत्न, मणि, जवाहरात'के ३ नाम हैं—रत्नम्, वसु (न), मणिः (पु स्त्री।+माणिक्यम्) ॥

विमर्श—रत्न की आठ जातियाँ हैं, यथा—हीरा, मोती, सोना, चाँदी, चन्दन, शङ्ख, चर्म (मृगचर्म, व्याघ्रचर्म आदि) और वस्त्र[1] ॥

९. उनमें 'वैडूर्य, विल्लौर मणि'के २ नाम हैं—वैडूर्यम्, वालवायजम् ॥

---

१. तद्यथा वाचस्पतिः—"हीरकं मौक्तिकं स्वर्णं रजतं चन्दनानि च ।
शङ्खश्चर्म च वस्त्रञ्चेत्यष्टौ रत्नस्य जातयः ॥" इति ॥

१मरकतमश्मगर्भं गारुत्मतं हरिन्मणिः ।
२पद्मरागो लोहितकलक्ष्मीपुष्पारुणोपलाः ॥ १३० ॥
३नीलमणिस्त्विन्द्रनीलः ४सूचीमुखन्तु हीरकः ।
वराकरं रत्नमुख्यं वज्रपर्यायनाम च ॥ १३१ ॥
५विराटजो राजपट्टो राजावर्तोऽथ ६विद्रुमः ।
रक्ताङ्को रक्तकन्दश्च प्रवालं हेमकन्दलः ॥ १३२ ॥
७सूर्यकान्तः सूर्यमणिः सूर्याश्मा दहनोपलः ।
८चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिश्चान्द्रश्चन्द्रोपलश्च सः ॥ १३३ ॥
९क्षीरतैलस्फाटिकाभ्यामन्यौ खस्फटिकाविमौ ।

---

१. 'मरकतमणि, पन्ना'के ४ नाम हैं—मरकतम्, अश्मगर्भम्, गारुत्मतम्, हरिन्मणिः ॥

२. 'पद्मराग मणि'के ४ नाम हैं—पद्मरागः (पु न), लोहितकः, लक्ष्मीपुष्पम्, अरुणोपलः (+शोणरत्नम्) ॥

३. 'इन्द्रनीलमणि, नीलम'के २ नाम हैं—नीलमणिः, इन्द्रनीलः (पु न) ॥

४. 'हीरा'के ५ नाम हैं—सूचीमुखम्, हीरकः (न ।+पु ।+हीरः), वराकरम्, रत्नमुख्यम्, वज्रपर्यायनामक (वज्रके पर्यायवाचक सब नाम, अतः—+वज्रम्, दम्भोलिः,······) ॥

५. 'लाजावर्त'के ३ नाम हैं—विराटजः (+वैराटः), राजपट्टः, राजावर्तः ॥

६. 'मूंगा'के ५ नाम हैं—विद्रुमः, रक्ताङ्कः, रक्तकन्दः, प्रवालम् (पु न), हेमकन्दलः ॥

७. 'सूर्यकान्तमणि'के ४ नाम हैं—सूर्यकान्तः, सूर्यमणिः, सूर्याश्मा (-श्मन्), दहनोपलः ॥

८. 'चन्द्रकान्तमणि'के ४ नाम हैं—चन्द्रकान्तः, चन्द्रमणिः, चान्द्रः, चन्द्रोपलः ॥

९. दूधके समान श्वेत तथा तैलके समान रंगवाले स्फटिकों से भिन्न रङ्गवाले इन दोनों (सूर्यकान्तमणि तथा चन्द्रकान्तमणि)का 'खस्फटिकौ' अर्थात् 'आकाशस्फटिकौ' भी नाम है। (दोनोंके अर्थमें प्रयुक्त होनेसे द्विवचन कहा गया है, वह द्विवचन नित्य नहीं है) ॥

विमर्श—'वाचस्पति'ने कहा है कि स्फटिकके ३ भेद हैं—आकाशस्फटिक,

१शुक्तिजं मौक्तिकं मुक्ता मुक्ताफलं रसोद्भवम् ॥ १३४ ॥
२नीरं वारि जलं दकं कमुदकं पानीयमम्भः कुशं
तोयं जीवनजीवनीयसलिलार्णांस्यम्बु वाः संवरम् ।
क्षीरं पुष्करमेघपुष्पकमलान्यापः पयःपाथसी
कीलालं भुवनं वनं घनरसो यादोनिवासोऽमृतम् ॥ १३५ ॥
कुलीनसं कबन्धञ्च प्राणदं सर्वतोमुखम् ।

क्षीरस्फटिक और तैलस्फटिक । उनमें आकाशस्फटिक श्रेष्ठ है और उसके भी दो भेद हैं—सूर्यकान्त और चन्द्रकान्त[1] ॥

१. 'मोती'के ५ नाम हैं—शुक्तिजम्, मौक्तिकम्, मुक्ता, मुक्ताफलम्, रसोद्भवम् ॥

विमर्श—यहाँ 'शुक्तिजम्' शब्दमें शुक्ति (सीप) उपलक्षण है, क्योंकि हाथीके मस्तक तथा दाँत, कुत्ते और सूअर के दाँत, मेघ, सर्प, बाँस तथा मछली; इनसे भी मोती उत्पन्न होता है । इसके अतिरिक्त किसी-किसीका यह भी सिद्धान्त है कि—हाथी, मेघ, सूअर, शङ्ख, मछली, शुक्ति (सीप) और बाँससे मोती उत्पन्न होता है, इनमेंसे शुक्तिमें अधिक उत्पन्न होता है[2] ॥

॥ पृथ्वीकायिक समाप्त ॥

२. (अब यहाँसे आरम्भकर ४।१६२ तक 'जलकायिक' जीवोंका वर्णन करते हैं—) 'पानी'के ३४ नाम हैं—नीरम्, वारि (न), जलम्, दकम्, कम्, उदकम्, पानीयम्, अम्भः (–म्भस्, न), कुशम्, तोयम्, जीवनम्, जीवनीयम्, सलिलम्, अर्णः (–र्णस्), अम्बु (२ न), वाः (=वार्, स्त्री), संवरम्, क्षीरम्, पुष्करम्, मेघपुष्पम्, कमलम्, आपः (=अप्, नि० स्त्री, ब० व०), पयः (–यस्), पाथः (–थस् । २ न), कीलालम्, भुवनम्, वनम्, घनरसः (पु । + न), यादोनिवासः, अमृतम्, कुलीनसम्, कबन्धम् (+कम्, अन्धम्), प्राणदम्, सर्वतोमुखम् ॥

---

१. तद्यथाऽऽह बृहस्पतिः—

[स्फटिकास्तु त्रयस्तेषामाकाशस्फटिको वरः ।
द्वौ क्षीरतैलस्फटिकावाकाशस्फटिकस्य तु ॥
द्वौ भेदौ सूर्यकान्तश्च चन्द्रकान्तश्च तत्र च ।इति।]"

२. तदुक्तम्—"हस्तिमस्तकदन्तौ तु दंष्ट्रा शुनवराहयोः ।
मेघो भुजङ्गमो वेणुर्मत्स्यो मौक्तिकयोनयः ॥ इति ॥"

अन्यच्च—"करीन्द्रजीमूतवराहशङ्खमत्स्याहिशुक्त्युद्भववेणुजानि ।
मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके तेषां तु शुक्त्युद्भवमेव भूरि ॥ इति ॥"

१अस्थाघास्थागमस्ताघमगाधञ्चातलस्पृशि ॥ १३६ ॥
२निम्नं गभीरं गम्भीर३मुत्तानं　तद्विलक्षणम् ।
४अच्छं प्रसन्ने५ऽनच्छं स्यादाविलं　कलुषञ्च तत् ॥ १३७ ॥
६अवश्यायस्तु तुहिनं　प्रालेयं मिहिका हिमम् ।
स्यान्नीहारस्तुषारश्च ७हिमानी तु　महद्धिमम् ॥ १३८ ॥
८पारावारः सागरोऽवारपारोऽकूपारोदध्यर्णवा　वीचिमाली ।
यादःस्रोतोवार्नदीशः सरस्वान् सिन्धूदन्वन्तौ　मितद्रुः समुद्रः ॥१३९॥
आकरो　मकराद्रत्नाज्जलान्निधिर्विराशयः ।

शेषश्चात्र—जले दिव्यमिरासेव्यं कृपीटं घृतमङ्कुरम् ।
　　विषं पिप्पलपातालनलिनानि च कम्बलम् ॥
　　पावनं षड्रसं चापि पल्लूरं तु सितं पयः ।
　　किट्टिमं तदतिक्षारं सालूकं पङ्कगन्धिकम् ॥
　　अन्धं तु कलुषं तोयमतिस्वच्छं तु काचिमम् ।

१. 'अथाह, अगाध'के ५ नाम हैं—अस्थाघम्, अस्थागम्, अस्ताघम्, अगाधम्, अतलस्पृक् (– स्पृश्, सब त्रि) ॥

२. 'गहरा, गम्भीर'के ३ नाम हैं—निम्नम्, गभीरम्, गम्भीरम् ॥

विमर्श—किसी-किसी आचार्यका मत है कि 'अस्थाघ' आदि ८ नाम एकार्थक अर्थात् 'अगाध' के ही हैं ॥

३. 'छिछला, थाहयुक्त'का १ नाम है—उत्तानम् ॥

४. 'स्वच्छ, साफ'के २ नाम हैं—अच्छम्, प्रसन्नम् ॥

५. 'मैले, कलुषित'के ३ नाम हैं—अनच्छम्, आविलम्, कलुषम् ॥

६. 'पाला, तुषार'के ७ नाम हैं—अवश्यायः, तुहिनम्, प्रालेयम्, मिहिका (+ धूममहिषी, धूमिका, धूमरी), हिमम्, नीहारः, तुषारः (३ पु न) ॥

७. 'अधिक पाला, हिम-समूह'का १ नाम है—हिमानी ॥

८. 'समुद्र'के २१ नाम हैं—पारावारः, सागरः, अवारपारः, अकूपारः (+ अकूवारः), उदधिः, अर्णवः, वीचिमाली (–लिन्), यादईशः, स्रोतईशः, वारीशः, नदीशः (+ यौ०–यादःपतिः, स्रोतःपतिः, वाःपतिः, नदीपतिः,……), सरस्वान् (–स्वत्), सिन्धुः (पु स्त्री), उदन्वान् (–न्वत्), मितद्रुः (पु), समुद्रः, मकराकरः (+ मकरालयः), रत्नाकरः (+ रत्नराशिः), जलनिधिः, जलधिः जलराशिः (यौ०—वारिनिधिः, वारिधिः, वारिराशिः……) ॥

शेषश्चात्र—समुद्रे तु महाकच्छो दारदो धरणीप्लवः ।
　　महीप्रावार उर्वङ्गस्तिमिकोशो महाशयः ॥

१द्वीपान्तरा असङ्ख्यास्ते सप्तैवेति तु लौकिकाः ॥ १४० ॥
२लवणक्षीरदध्याज्यसुरेक्षुस्वादुवारयः ।
३तरङ्गे भङ्गवीच्यूर्म्युत्कलिका ४महति त्विह ॥ १४१ ॥
लहर्य्युल्लोलकल्लोला ५आवर्त्तः पयसां भ्रमः ।
तालूरो वोलकश्चासौ ६वेला स्याद् वृद्धिरम्भसः ॥ १४२ ॥
७डिण्डीरोऽब्धिकफः फेनो ८बुद्बुदस्थासकौ समौ ।
९मर्यादा कूलभूः १०कूलं प्रपातः कच्छरोधसी ॥ १४३ ॥
तटं तीरं प्रतीरञ्च ११पुलिनं तज्जलोज्झितम् ।
सैकतञ्चा१२न्तरीपन्तु द्वीपमन्तर्जले तटम् ॥ १४४ ॥
१३तत्परं पार१४मवारं त्ववार्क् १५पात्रं तदन्तरम् ।

---

१. बीच-बीचमें द्वीपवाले असङ्ख्य समुद्र हैं, किन्तु लौकि मतसे सात ही समुद्र हैं ॥

२. सात समुद्रों के क्रमशः २-२ नाम हैं—लवणवारिः, लवणोदः; क्षीर-वारिः, क्षीरोदः, दधिवारिः, दध्युदः; आज्यवारिः, आज्योदः; सुरावारिः, सुरोदः; इक्षुवारिः, इक्षूदः; स्वादुवारिः स्वादूदः ॥

३. 'तरङ्ग'के ५ नाम हैं—तरङ्गः, भङ्गः, वीचिः (स्त्री), ऊर्मिः (पु स्त्री), उत्कलिका ॥

४. 'बड़े तरङ्ग लहर'के ३ नाम हैं—लहरी, उल्लोलः, कल्लोलः ॥

५. 'पानीके भौंर'के ३ नाम हैं—आवर्त्तः, तालूरः, बोलकः ॥

६. 'पानी बढ़ने'का १ नाम है—वेला ॥

७. 'फेन'के ३ नाम हैं—डिण्डीरः, अब्धिकफः (+सागरमलम्), फेनः ॥

८. 'बुद्बुद, बुलबुला'के २ नाम हैं—बुद्बुदः, स्थासकः ॥

९. 'समुद्रतीरकी भूमि'का १ नाम है—मर्यादा ॥

१०. 'तट, किनारा तीर'के ७ नाम हैं—कूलम्, प्रपातः, कच्छः, रोधः (-धस्, न), तटम् (त्रि), तीरम्, प्रतीरम् ॥

११. 'जिसे पानीने छोड़ दिया है, उस किनारे (तट)'के २ नाम हैं—पुलिनम् (न पु), सैकतम् ॥

१२. 'टापू'के २ नाम हैं—अन्तरीपम्, द्वीपम् (पु न) ॥

१३. 'दूसरी ओरवाले किनारे'का १ नाम है—पारम् (पु न) ॥

१४. 'इस ओरवाले किनारे'का १ नाम है—अवारम् (पु न) ॥

१५. 'दोनों तटोंके बीचवाले भाग'का १ नाम है—पात्रम् (त्रि) ॥

१नदी हिरण्यवर्णा स्याद्रोधोवक्रा तरङ्गिणी ॥ १४५ ॥
सिन्धुः शैवलिनी वहा च ह्रदिनी स्रोतस्विनी निम्नगा
स्रोतो निर्झरिणी सरिच्च तटिनी कूलङ्कषा वाहिनी ।
कर्षूर्द्वीपवती समुद्रदयिताधुन्यौ स्रवन्तीसर-
स्वत्यौ पर्वतजाऽऽपगा जलधिगा कुल्या च जम्बालिनी ॥ १४६ ॥
२गङ्गा त्रिपथगा भागीरथी त्रिदशदीर्घिका ।
त्रिस्रोता जाह्नवी मन्दाकिनी भीष्मकुमारसूः ॥ १४७ ॥
सरिद्वरा विष्णुपदी सिद्धस्वःस्वर्गिखापगा ।
ऋषिकुल्या हैमवती स्वर्वापी हरशेखरा ॥ १४८ ॥
३यमुना यमभगिनी कालिन्दी सूर्यजा यमी ।
४रेवेन्दुजा पूर्वगङ्गा नर्मदा मेकलाद्रिजा ॥ १४९ ॥
५गोदा गोदावरी ६तापी तपनी तपनात्मजा ।
७शुतुद्रिस्तु शतद्रुः स्यात् ८कावेरी त्वर्द्धजाह्नवी ॥ १५० ॥
९करतोया सदानीरा—

---

१. 'नदी'के २७ नाम हैं—नदी, हिरण्यवर्णा, रोधोवक्रा, तरङ्गिणी, सिन्धुः (पु स्त्री), शैवलिनी, वहा, ह्रदिनी (+ह्रादिनी), स्रोतस्विनी, निम्नगा, स्रोतः (—तस् , न), निर्झरिणी, सरित् (स्त्री), तटिनी, कूलङ्कषा, वाहिनी, कर्षूः (स्त्री), द्वीपवती, समुद्रदयिता, धुनी, स्रवन्ती, सरस्वती, पर्वतजा, आपगा, जलधिगा, कुल्या, जम्बालिनी ॥

२. 'गङ्गा नदी'के १९ नाम हैं—गङ्गा, त्रिपथगा (+त्रिमार्गगा), भागीरथी, त्रिदशदीर्घिका, त्रिस्रोताः (स्त्री), जाह्नवी (+जह्नुकन्या), मन्दाकिनी, भीष्मसूः, कुमारसूः (२ स्त्री),सरिद्वरा, विष्णुपदी, सिद्धापगा, स्वरापगा, स्वर्ग्यापगा, खापगा, ऋषिकुल्या, हैमवती, स्वर्वापी, हरशेखरा ॥

३. 'यमुना नदी'के ५ नाम हैं—यमुना, यमभगिनी, कालिन्दी (+कलिन्दतनया), सूर्यजा, यमी ॥

४. 'नर्मदा नदी'के ५ नाम हैं—रेवा, इन्दुजा, पूर्वगङ्गा, नर्मदा, मेकलाद्रिजा (+मेकलकन्या, मेकलकन्यका) ॥

५. 'गोदावरी नदी'के २ नाम हैं—गोदा, गोदावरी ॥

६. 'तापी नदी'के ३ नाम हैं—तापी, तपनी, तपनात्मजा ॥

७. 'शतद्रु, सतलज नदी'के २ नाम हैं—शुतुद्रुः, शतद्रुः (२ स्त्री) ॥

८. 'कावेरी नदी'के २ नाम हैं—कावेरी, अर्धजाह्नवी ॥

९. 'करतोया नदी'के २ नाम हैं—करतोया, सदानीरा ॥

—१चन्द्रभागा तु चन्द्रका ।
२वासिष्ठी गोमती तुल्ये ३ब्रह्मपुत्री सरस्वती ॥ १५१ ॥
४विपाड् विपाशा५ऽऽर्जुनी तु बाहुदा सैतवाहिनी ।
६वैतरणी नरकस्था ७स्रोतोऽम्भःसरणं स्वतः ॥ १५२ ॥
८प्रवाहः पुनरोघः स्याद्वेणी धारा रयश्च सः ।
९घट्टस्तीर्थोऽवतारे१०ऽम्बुवृद्धौ पूरः प्लवोऽपि च ॥ १५३ ॥
११पुटभेदास्तु वक्राणि १२भ्रमास्तु जलनिर्गमाः ।
१३परीवाहा जलोच्छ्वासाः—

विमर्श—पार्वती-विवाहके समय हाथसे गिरे हुए कन्यादान-जलसे यह नदी निकली है, ऐसा पुराणोंमें लिखा है । यह बङ्गालकी नदी है ॥

१. चन्द्रभागा नदी'के २ नाम हैं—चन्द्रभागा (+चान्द्रभागा), चन्द्रका ॥

२. 'गोमती नदी'के २ नाम हैं—वासिष्ठी (+गौतमी), गोमती ॥

३. 'सरस्वती नदी'के २ नाम हैं—ब्रह्मपुत्री, सरस्वती ॥

४. 'विपाशा नदी'के २ नाम हैं—विपाट् (-पाश् , स्त्री), विपाशा ॥

५. 'बाहुदा नदी'के ३ नाम हैं—आर्जुनी, बाहुदा, सैतवाहिनी ॥

६. 'वैतरणी नदी'के २ नाम हैं—वैतरणी, नरकस्था । (यह नरक में स्थित है) ॥

शेषश्चात्र—मरूदला तु मुरला सुरबेला सुनन्दिनी ।
चर्मण्वती रतिनदी संभेदः सिन्धुसङ्गमः ॥

७. 'सोता (स्वतः पानीके बहने)'का १ नाम है—स्रोतः (-तस् , न) ॥

८. 'प्रवाह, धारा'के ५ नाम हैं—प्रवाहः ओघः, वेणी, धारा, रयः ॥

९. 'घाट (नदीमें उतरनेके मार्ग)'के ३ नाम हैं—घट्टः, तीर्थः (पु न), अवतारः ॥

१०. 'पूर, पानी बढ़ना'के २ नाम हैं—पूरः, प्लवः ॥

११. 'पानीकी भंवरी, जलावर्त'के २ नाम हैं—पुटभेदाः, वक्राणि (+चक्राणि) ।

विमर्श—कोई कोई आचार्य टेढ़ी नदीका, कोई भूमि के भीतरसे पानी की धारा निकलनेका पर्याय इन दोनों शब्दोंको मानते हैं ॥

१२. 'पानी निकलने के मार्ग'का १ नाम है—भ्रमाः ॥

१३. 'पृथ्वीके नीचेसे ऊपरकी ओर तीव्र धारा निकलने'के २ नाम हैं—परीवाहाः, जलोच्छ्वासाः ॥

—१कूपकास्तु विदारकाः ॥ १५४ ॥

२प्रणाली जलमार्गे३ऽथ पानं कुल्या च सारणिः ।

४सिकता वालुका ५बिन्दौ पृषत्पृषतविप्रुषः ॥ १५५ ॥

६जम्बाले चिक्किलौ पङ्कः कर्दमश्च निषद्वरः ।

शादो ७हिरण्यबाहुस्तु शोणो ८नदे पुनर्वहः ॥ १५६ ॥

भिद्य उद्ध्यः सरस्वांश्च ९द्रहोऽगाधजलो ह्रदः ।

१०कूपः स्यादुदपानोऽन्धुः प्रहि११र्नेमी तु तन्त्रिका ॥ १५७ ॥

१२नान्दीमुखो नान्दीपटो वीनाहो मुखबन्धने ।

१३आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपे —

---

१. 'पानी इकट्ठा होनेके लिए सूखी हुई-सी नदी में खोदे गये गढ़ों'के २ नाम हैं—कूपकाः, विदारकाः ॥

२. 'नाली'का १ नाम है—प्रणाली (त्रि) ॥

३. 'नहर, मानवकृत छोटी नदी'के ३ नाम हैं—पानम्, कुल्या, सारणिः (स्त्री) ॥

शेषश्चात्र—नीका च सारणौ ।

४. 'बालू, रेत'के २ नाम हैं—सिकताः (स्त्री, नि ब० व०), वालुकाः ॥

५. 'बूँद'के ४ नाम हैं—बिन्दुः (पु), पृषत् (न), पृषतः, विप्रुट् (-प्रुष्) ॥

६. 'कीचड़, पङ्क'के ६ नाम हैं—जम्बालः (पु न), चिक्किलः, पङ्कः (पु न), कर्दमः, निषद्वरः, शादः (+ विस्कल्लः) ॥

७. 'सोन, शोणभद्र'के २ नाम हैं—हिरण्यबाहुः, शोणः ॥

८. 'नद'के ५ नाम हैं—नदः वहः, भिद्यः , उद्ध्यः, सरस्वान् (-स्वन्) ॥

९. 'अथाह जलवाले नद'के ३ नाम हैं—द्रहः, अगाधजलः, ह्रदः ॥

१०. 'कूप, कूआं, इनारा'के ४ नाम हैं—कूपः (पु न), उदपानः (पु न), अन्धुः, प्रहिः (२ पु) ॥

११. 'कूँआके ऊपर रस्सी बांधनेके लिए काष्ठ आदिकी बनी हुई चरखी, या ऊपर रखी हुई लकड़ी आदि'के २ नाम हैं—नेमी (+ नेमिः स्त्री), तन्त्रिका ॥

१२. 'कूंएके जगत'के ३ नाम हैं—नान्दीमुखः, नान्दीपटः, वीनाहः (पु न) ॥

१३. 'चरन' (पशुओं के पानी पीनेके लिए कूंएके पास ईंट आदि पत्थर आदिसे बनाये गये हौज)के २ नाम हैं—आहावः, निपानम् (न पु) ॥

१ऽथ दीर्घिका ॥ १५८ ॥
वापी स्यात् २क्षुद्रकूपे तु चुरी चुण्ढी च चूतकः ।
३उद्घाटकं घटीयन्त्रं ४पादावर्तोऽरघट्टकः ॥ १५९ ॥
५अखातन्तु देवखातं ६पुष्करिण्यान्तु खातकम् ।
७पद्माकरस्तडागः स्यात्कासारः सरसी सरः ॥ १६० ॥
८वेशन्तः पल्वलोऽल्पं ९परिखा खेयखातिके ।
१०स्यादालवालमावालमावापः स्थानकञ्च सः ॥ १६१ ॥
११आधारस्त्वम्भसां बन्धो १२निर्झरस्तु झरः सरिः ।
उत्सः स्रवः प्रस्रवणं १३जलाधारा जलाशयाः ॥ १६२ ॥

---

१. 'बावली'के २ नाम हैं—दीर्घिका, वापी ॥

२. 'छोटे कूंए, भड़कूई'के ३ नाम हैं—चुरी, चुण्ढी, चूतकः ॥

३. 'धुरई घड़ारी'के २ नाम हैं—उद्धाटकम् (+उद्धातनम्), घटी-यन्त्रम् ॥

४. 'रेंहट'के २ नाम हैं—पादावर्तः, अरघट्टकः (+अरघट्टः) ॥

५. 'प्राकृतिक तडाग या कुण्ड आदि'के २ नाम हैं—अखातम्, देवखातम् ॥

६. 'पोखरे छोटे तडाग'के २ नाम हैं—पुष्करिणी, खातकम् (+खातम्) ॥

७. 'तडाग'के ५ नाम हैं—पद्माकरः तडागः (+तटाकः), कासारः (२ पुन), सरसी, सरः (-रस् न)।

विमर्श—'छोटे तडाग'को 'कासार' तथा विशाल तडाग'को 'सरसी' कहते हैं, ऐसा वाचस्पतिका मत है ॥

८. 'जलके छोटे गढ़े' के २ नाम हैं—वेशन्तः, पल्वलः (+तल्लः) ॥

९. 'खाई'के ३ नाम हैं—परिखा, खेयम्, खातिका ॥

१०. थाला' (पानी ठहरने के लिए पौधे या छोटे वृक्षके चारों ओर बनाये गये गोलाकार गढेके ४ नाम हैं—आलवालम् (पु न), आवालम् (न।+पु।+जलपिण्डलः), आवापः, स्थानकम् ॥

११. 'बांध'का १ नाम है—आधारः ॥

१२. 'झरना'के ६ नाम हैं—निर्झरः, झरः, सरिः (स्त्री), उत्सः (पु।+न), स्रवः, प्रस्रवणम् ॥

१३. 'जलाशयमात्र'के २ नाम हैं—जलाधारः, जलाशयः ॥

॥ जलकायिक समाप्त ॥

१वह्निर्बृहद्भानुहिरण्यरेतसौ धनञ्जयो हव्यहविर्हुताशनः ।
कृपीटयोनिर्दमुना विरोचनाशुशुक्षणी छागरथस्तनूनपात् ॥ १६३ ॥
कृशानुर्वैश्वानरवीतिहोत्रा वृषाकपिः पावकचित्रभानू ।
अप्पित्तधूमध्वजकृष्णवर्त्माऽर्चिष्मच्छमीगर्भतमोघ्नशुक्राः ॥ १६४ ॥
शोचिष्केशः शुचिहुतवहोषर्बुधाः सप्तमन्त्र-
ज्वालाजिह्वो ज्वलनशिखिनौ जागृविर्जातवेदाः ।
बर्हिःशुष्माऽनिलसखवसू रोहिताश्वाऽऽश्रयाशौ
बर्हिर्ज्योतिर्दहनबहुलौ हव्यवाहोऽनलोऽग्निः ॥ १६५ ॥
विभावसुः सप्तोदर्चिः २स्वाहाऽग्नायी प्रियाऽस्य च ।
३और्वः संवर्त्तकोऽब्ध्यग्निर्वाडवो वडवामुखः ॥ १६६ ॥
४दवो दावो वनवह्निः५र्मेघवह्निरिरम्मदः ।

---

१. 'अब यहांसे आरम्भकर ४।१७१ तक 'तेजःकायिक' जीवोंका वर्णन करते हैं—'अग्नि, आग'के ५१ नाम हैं—वह्निः, बृहद्भानुः, हिरण्यरेताः (-तस्), धनञ्जयः, हव्याशनः, हविरशनः, हुताशनः, कृपीटयोनिः, दमुनाः (-नस् ।+ दमूनाः,-नस्), विरोचनः, आशुशुक्षणिः, छागरथः, तनूनपात्, कृशानुः, वैश्वानरः, वीतिहोत्रः, वृषाकपिः, पावकः, चित्रभानुः, अप्पित्तम्, धूमध्वजः, कृष्णवर्त्मा (-त्मन्), अर्चिष्मान् (-ष्मत्), शमीगर्भः, तमोघ्नः, शुक्रः, शोचिष्केशः, शुचिः, हुतवहः, उषर्बुधः, सप्तजिह्वः, मन्त्रजिह्वः, ज्वालाजिह्वः, ज्वलनः, शिखी (-खिन्), जागृविः, जातवेदः (-दस्), बर्हिःशुष्मा (-ष्मन् ।+बर्हिः, -र्हिस्, शुष्मा,-ष्मन्), अनिलसखा (-खि), वसुः, रोहिताश्वः, आश्रयाशः, बर्हिर्ज्योतिः (-तिस्), दहनः, बहुलः, हव्यवाहः, अनलः, अग्निः, विभावसुः, सप्तार्चिः, उदर्चिः (२-र्चिस, 'अप्यित्तम्' न, शेष सब पु) ॥

शेषश्चात्र—अग्नौ वमिर्दीप्रः समन्तभुक् ।
पर्परीकः पविर्घासः पृथुर्घसुरिराशिरः ॥
जुहुराणः पृदाकुश्च कुषाकुर्हवनो हविः ।
घृतार्चिर्नाचिकेतश्च पृष्टो वञ्चतिरञ्जतिः ॥
भुजिर्भरथपीथौ च स्वनिः पवनवाहनः ।

२. 'अग्निकी पत्नी'के २ नाम हैं—स्वाहा (स्त्री ।+अव्य), अग्नायी ॥

३. 'वडवानल'के ५ नाम हैं—और्वः, संवर्तकः, अब्ध्यग्निः, वाडवः, वडवामुखः ॥

४. 'दावाग्नि'के ३ नाम हैं—दवः, दावः, वनवह्निः ॥

५. 'बादलकी आग'के २ नाम हैं—मेघवह्निः, इरम्मदः ॥

१छागणस्तु करीषाग्निः २कुकूलस्तु तुषानलः ॥ १६७ ॥
३सन्तापः संज्वरो ४बाष्प ऊष्मा ५जिह्वाः स्युरर्चिषः ।
६हेतिः कीला शिखा ज्वालार्चि७रुल्का महत्यसौ ॥ १६८ ॥
८स्फुलिङ्गोऽग्निकणो९ऽलातज्वालोल्का१०ऽलातमुल्मुकम् ।
११धूमः स्याद्वायुवाहोऽग्निवाहो दहनकेतनम् ॥ १६९ ॥
अम्भःसूः करमालश्च स्तरीर्जीमूतवाह्यपि ।
१२तडिदैरावती विद्युच्चला शम्पाऽचिरप्रभा ॥ १७० ॥
आकालिकी शतह्रदा चञ्चला चपलाऽशनिः ।
सौदामनी क्षणिका च ह्रादिनी जलवालिका ॥ १७१ ॥

---

१. 'सूखे गोबर (गोइंठा, उपला, कण्डा)की आग'के २ नाम हैं—छागणः, करीषाग्निः ॥

२. 'भूसेकी आग (भभूल, भौर)'के २ नाम हैं—कुकूलः (पु न), तुषानलः (तुषाग्निः) ॥

३. 'संताप'के २ नाम हैं—सन्तापः, संज्वरः ॥

४. 'बाष्प, भाप'के २ नाम हैं—बाष्पः (पु न), ऊष्मा (–ष्मन्, पु) ॥

५. 'आगकी ज्वाला' उसकी जिह्वा (जीभ) है ॥

विमर्श—'अग्निकी सात जिह्वाएं (जीभें)' हैं—हिरण्या, कनका, रक्ता-कृष्णा, वसुप्रभा, कन्या, रक्ता और बहुरूपा ॥[1]

६. 'ज्वाला'के ५ नाम हैं—हेतिः, कीला (स्त्री पु), शिखा, ज्वाला (पु स्त्री), अर्चिः (–र्चिस्, स्त्री न) ॥

७. 'उल्का (आगकी बहुत बड़ी ज्वाला)'का १ नाम है—उल्का ॥

८. 'चिनगारी'का १ नाम है—स्फुलिङ्ग (त्रि) ॥

९. 'बनेठी (लुआठी आदि)के घुमानेसे बनी हुई मण्डलाकार ज्वाला अथवा 'कभी २ आकाशसे गिरनेवाले उत्पातसूचक तेजःपुञ्ज'का १ नाम है—उल्का ॥

१०. 'बनेठी या लुआठी'के २ नाम हैं—अलातम्, उल्मुकम् ॥

११. 'धूम, धूआँ'के आठ नाम हैं—धूमः, वायुवाहः, अग्निवाहः, दहनकेतनम्, अम्भःसूः, करमालः, स्तरीः (स्त्री) जीमूतवाही (– हिन्) ॥

१२. 'बिजली' के १५ नाम हैं—तडित् (स्त्री), ऐरावती, विद्युत् (स्त्री),

---

१ तदुक्तम्—"भवति हिरण्या कन्यका रक्ताकृष्णा वसुप्रभा कन्या ।
रक्ता बहुरूपेति समार्चिषां जिह्वाः ॥" इति ।

१वायुः समीरसमिरौ पवनाशुगौ नभःश्वासो नभस्वदनिलश्वसनाः समीरणः।
वातोऽहिकान्तपवमानमरुत्प्रकम्पनाः कम्पाकनित्यगतिगन्धवहप्रभञ्जनाः।१७२।
मातरिश्वा जगत्प्राणः पृषदश्वो महाबलः।
मारुतः स्पर्शनो दैत्यदेवो २झञ्झा स वृष्टियुक्॥ १७३॥
३प्राणो नासाग्रहृन्नाभिपादाङ्गुष्ठान्तगोचरः।
४अपानः पवनो मन्थापृष्ठपृष्ठान्तपार्ष्णिगः॥ १७४॥
५समानः सन्धिहृन्नाभिद्६षूदानो हृच्छिरोऽन्तरे।
७सर्वत्वग्वृत्तिको व्यान—

चला, शम्पा (+सम्पा), अचिरप्रभा, आकालिकी, शतह्रदा, चञ्चला, चपला, अशनिः (पु स्त्री), सौदामनी (+सौदामिनी), क्षणिका, ह्रादिनी, जलवालिका॥

॥ अग्निकायिक समाप्त॥

१. ('अब यहाँसे ४।१७६ तक 'वायुकायिक' जीवोंका वर्णन करते हैं—) 'हवा'के २६ नाम हैं—वायुः, समीरः, समिरः, पवनः, आशुगः, नभःश्वासः, नभस्वान्, (-स्वत्), अनिलः, श्वसनः, समीरणः, वातः, अहिकान्तः, पवमानः, मरुत्, प्रकम्पनः, कम्पाकः, नित्यगतिः (+सदागतिः), गन्धवहः (+गन्धवाहः), प्रभञ्जनः, मातरिश्वा (-श्वन्), जगत्प्राणः, पृषदश्वः, महाबलः, मारुतः, स्पर्शनः, दैत्यदेवः (सब पु)॥

शेषश्चात्र—वायौ सुरालयः प्राणः संभृतो जलभूषणः।
शुचिर्वहो लोलघण्टः पश्चिमोत्तरदिक्पतिः॥
अङ्कतिः क्षिपणुर्मर्को ध्वजप्रहरणश्चलः।
शीतलो जलकान्तारो मेघारिः सृमरोऽपि च॥

२. 'वर्षायुक्त हवा'का १ नाम है—झञ्झा॥

३. 'प्राणवायु (नाकके अग्रभाग, हृदय, नाभि और पैरके अङ्गूठेमें स्थित वायु)'का १ नाम है—प्राणः॥

४. 'अपानवायु (ग्रीवाके पीछेके दोनों भाग, पीठ, गुदा, पैरके पीछेवाले भागमें स्थित वायु)'का १ नाम है—अपानः॥

५. 'समानवायु (सब (सन्धियों) जोड़ों, हृदय तथा नाभिमें स्थित वायु)'का १ नाम है—समानः॥

६. 'उदानवायु (हृदय तथा शिरके मध्य भाग (कण्ठ, तालु एवं भ्रूमध्य)में स्थित वायु)'का १ नाम है—उदानः॥

७. 'व्यानवायु (सम्पूर्ण चमड़ेमें स्थित वायु)'का १ नाम है—व्यानः।

१—इत्यङ्गे पञ्च वायवः ॥ १७५ ॥
२अरण्यमटवी सत्रं वार्क्षं च गहनं झषः ।
कान्तारं विपिनं कक्षः स्यात् षण्डं काननं वनम् ॥ १७६ ॥
दवो दावः ३प्रस्तारस्तु तृणाटव्यां झषोऽपि च ।
४अपोपाभ्यां वनं वेलमारामः कृत्रिमे वने ॥ १७७ ॥
५निष्कुटस्तु गृहारामो ६बाह्यारामस्तु पौरकः ।
७आक्रीडः पुनरुद्यानं ८राज्ञां त्वन्तःपुरोचितम् ॥ १७८ ॥
तदेव प्रमदवनं९ममात्यादेस्तु निष्कुटे ।
वाटी पुष्पाद्वृक्षाच्चासौ १०क्षुद्रारामः प्रसीदिका ॥ १७९ ॥
११वृक्षोऽगः शिखरी च शाखिफलदावद्रिर्हरिद्रुर्द्रुमो
जीर्णो द्रुर्विटपी कुठः क्षितिरुहः कारस्करो विष्टरः ।
नन्द्यावर्त्तकरालिकौ तरुवसू पर्णी पुलाक्यंह्रिपः
सालाऽनोकहगच्छपादपनगा रूक्षागमौ पुष्पदः ॥ १८० ॥

---

१. 'शरीरमें स्थित अर्थात् सञ्चार करनेवाले ये पाँच वायु (प्राण, अपान, समान, उदान तथा व्यान) हैं ॥

॥ वायुकायिक समाप्त ॥

२. (अब यहाँसे ४।२६७ तक वनस्पतिकायिक जीवोंका वर्णन करते हैं—'जङ्गल'के १४ नाम हैं—अरण्यम् (पु न), अटवी, सत्रम्, वार्क्षम्, गहनम्, झषः, कान्तारम् (पु न), विपिनम्, कक्षः, षण्डम् (पु न), काननम्, वनम्, दवः, दावः ॥

३. 'अधिक घासवाले जङ्गल'के ३ नाम हैं—प्रस्तारः, तृणाटवी, झषः ।

४. 'कृत्रिम वन'के ४ नाम हैं—अपवनम्, उपवनम्, वेलम्, आरामः ॥

५. 'गृहके पासवाले बगीचे'के २ नाम हैं—निष्कुटः, गृहारामः ॥

६. 'गाँव या नगरके बाहरवाले बगीचे'के २ नाम हैं—बाह्यारामः, पौरकः ॥

७. 'क्रीडा (विलास)के लिए बनाये गये बगीचे'के २ नाम हैं—आक्रीडः, उद्यानम् (२ पु न) ॥

८. 'राजाओंके अन्तःपुर (रानियों)के योग्य घिरे हुए बगीचे'का १ नाम है—प्रमदवनम् ॥

९. 'फुलवाड़ी' अर्थात् 'मंत्री आदि (धनिक-सेठों या वेश्यादिकों)के घरके निकटस्थ बगीचे)'के २ नाम हैं—पुष्पवाटी, वृक्षवाटी ॥

१०. 'छोटे बगीचे'के २ नाम हैं—क्षुद्रारामः, प्रसीदिका ॥

११. 'पेड़, वृक्ष'के ३० नाम हैं—वृक्षः, अगः, शिखरी (– रिन्),

१कुञ्जनिकुञ्जकुडङ्गाः स्थाने वृक्षैर्वृतान्तरे ।
२पुष्पैस्तु फलवान् वृक्षो वानस्पत्यो ३विना तु तैः ॥ १८१ ॥
फलवान् वनस्पतिः स्यात् ४फलावन्ध्यः फलेग्रहिः ।
५फलवन्ध्यस्त्ववकेशी ६फलवान् फलिनः फली ॥ १८२ ॥
७ओषधिः स्यादौषधिश्च फलपाकावसानिका ।
८क्षुपो ह्रस्वशिफाशाखः ९प्रततिर्व्रततिर्लता ॥ १८३ ॥
वल्लय१०स्यान्तु प्रतानिन्यां गुल्मिन्युलपवीरुधः ।

शाखी (– खिन्), फलदः, अद्रिः, हरिद्रुः, द्रुमः, जीर्णः, द्रुः, विटपी (–पिन्), कुठः, क्षितिरुहः, (यौ०—कुजः, महीरुहः, भूरुहः·······), कारस्करः, विष्टरः, नन्द्यावर्तः, करालिकः, तरुः, वसुः, पर्णी (– र्णिन्), पुलाकी (– किन्), अंह्रिपः (+अंघ्रिपः, चरणपः), सालः, अनोकहः, गच्छः, पादपः, नगः, रूक्षः, अगमः, पुष्पदः (सब पु) ॥

शेषश्चात्र—वृक्षे त्वारोहकः स्कन्धी सीमिको हरितच्छदः ।
उरुर्जन्तुर्वह्निभूश्च ।

१. 'कुञ्ज (सघन वृक्षों या झाड़ियोंसे घिरे हुए स्थान)'के ३ नाम हैं—कुञ्जः, निकुञ्जः (२ पु न), कुडङ्गः ॥

२. 'फूलनेके बाद फलनेवाले वृक्षों (यथा—आम, जामुन,········)'का १ नाम है—वानस्पत्यः ॥

३. 'बिना फूलके फलनेवाले वृक्षों (यथा—गूलर, कठूमर,·······)'का १ नाम है—वनस्पतिः ॥

४. 'फलनेवाले वृक्षों'के २ नाम हैं—फलावन्ध्यः; फलेग्रहिः ॥

५. 'कभी नहीं फलनेवाले वृक्षों'के २ नाम हैं—फलवन्ध्यः, अवकेशी (शिन्) ॥

६. 'फले हुए वृक्ष'के ३ नाम हैं—फलवान् (– वत्), फलिनः, फली (लिन्) ॥

७. 'एक बार फलकर नष्ट होनेवाले पौधों (यथा—गेहूँ, चना, धान, कदीमा कद्दू,·······)'के २ नाम हैं—ओषधिः, औषधिः (२ स्त्री) ॥

८. 'झाड़ी (छोटी डाल आदिवाले पौधों' यथा—गुलाब, गेंदा, जपा, करीर, झरबेरी··········)'का १ नाम है—क्षुपः ॥

९. लता, बेल (यथा—गुडुच, सेम, कदीमा,·······)के ४ नाम हैं—प्रततिः, व्रततिः (२ स्त्री,) लता, वल्ली ॥

१०. 'बहुत डालोंवाली लता'के ४ नाम हैं—प्रतानिनी, गुल्मिनी, उलपः, वीरुत् (–रुध्, स्त्री) ॥

१स्यात् प्ररोहोऽङ्कुरोऽङ्कूरो रोहश्चर२ स तु पर्वणः ॥ १८४ ॥
समुत्थितः स्याद् बलिशं ३शिखाशाखालताः समाः ।
४साला शाला स्कन्धशाखा ५स्कन्धः प्रकाण्डमस्तकम् ॥ १८५ ॥
६मूलाच्छाखावधिर्गण्डिः प्रकाण्डो७ऽथ जटा शिफा ।
८प्रकाण्डरहिते स्तम्बो विटपो गुल्म इत्यपि ॥ १८६ ॥
९शिरोनामाग्रं शिखरं १० मूलं बुध्नोंऽह्रिनाम च ।
११सारो मज्जि १२त्वचि च्छल्ली चोचं वल्कञ्च वल्कलम् ॥ १८७ ॥
१३स्थाणौ तु ध्रुवकः शङ्कुः—

---

१. 'अङ्कुर'के ४ नाम हैं—प्ररोहः, अङ्कुरः, अङ्कूरः (२ पु।+२ न) रोहः ॥

२. 'गांठ (गिरह)से निकले हुए अङ्कुर'का १ नाम है—बलिशम् ॥

३. 'डाल, शाखा'के ३ नाम हैं—शिखा, शाखा, लता ॥

४. 'स्कन्धसे निकली हुई शाखा'के ३ नाम हैं—साला, शाला, स्कन्धशाखा ॥

५. 'स्कन्ध (पेड़के तनेके ऊपर जहां दो शाखा विभक्त हो उस)'का १ नाम है—स्कन्धः ॥

६. 'पेड़का तना'का १ नाम है—प्रकाण्डः (पु न)।

विमर्श—अमरकोषकारने (२।४।१०) पूर्वोक्त दोनों पर्यायोंको एकार्थक माना है ॥

७. 'पेड़ आदिकी सोर, जड़'के २ नाम हैं—जटा, शिफा ॥

८. 'प्रकाण्ड रहित वृक्षादि'के ३ नाम हैं—स्तम्बः, विटपः, गुल्मः (पु न) ॥

९. 'पेड़ आदिके ऊपरी भाग फुनगी'के ३ नाम हैं—शिरोनाम (अर्थात् शिरके वाचक सब पर्याय, अतः शिरः (-रस्), मस्तकम्, मूर्धा (-र्धन्) शीर्षम्,), अग्रम्, शिखरम् ॥

१० 'जड़'के ३ नाम हैं—मूलम्, बुध्नः अंह्रिनाम (-मन्। पैरके वाचक सब शब्द, अत एव—+अंह्रिः, पादः, चरणः,……) ॥

११. 'सारिल लकड़ी (पेड़का आसरारहित भाग)'के २ नाम हैं—सारः, मज्जा (-ज्जन् पु) ॥

१२. 'छाल, बाकल, छिलका'के ५ नाम हैं—त्वक् (-च्, स्त्री), छल्ली, चोचम्, वल्कम्, वल्कलम् (२ पु न) ॥

१३. 'खूथ, ठूठ काष्ठ'के ३ नाम हैं—स्थाणुः (पु न), ध्रुवकः, शङ्कुः, (पु) ॥

—१काष्ठे दलिकदारुणी।

२निष्कुहः कोटरो ३मञ्जा मञ्जरिर्वल्लरिश्च सा ॥ १८८ ॥

४पत्रं पलाशं छदनं बर्हं पर्णं छदं दलम्।

५नवे तस्मिन् किसलयं किसलं पल्लवोऽत्र तु ॥ १८९ ॥

नवे प्रवालो७ऽस्य कोशी शुङ्गा ८माढिर्दलस्नसा।

९विस्तारविटपौ तुल्यौ १०प्रसूनं कुसुमं सुमम् ॥ १९० ॥

११पुष्पं सूनं सुमनसः प्रसवश्च मणीवकम्।

१२जालकक्षारकौ तुल्यौ कलिकायान्तु कोरक ॥ १९१ ॥

१३कुड्मले मुकुलं १४गुच्छे गुच्छस्तवकगुत्सकाः।

गुलुञ्छो—

---

१. 'काष्ठ, लकड़ी'के ३ नाम हैं—काष्ठम्, दलिकम्, दारु (न पु) ॥

२. पेड़का 'खोढ़रा'के २ नाम हैं—निष्कुहः, कोटरः (पुन) ॥

३. 'मञ्जरी, मोञ्जर'के ३ नाम हैं—मञ्जा, मञ्जरीः, (स्त्री। +मञ्जरी,) बल्लरिः (स्त्री) ॥

४. 'पत्ता, पल्लव'के ७ नाम हैं—पत्रम् (पु न); पलाशम्, छदनम्, बर्हम् (पु न), छदम्, पर्णम्, दलम् (२ पु न) ॥

५. 'नये पल्लव'के ३ नाम हैं—किसलयम्, किसलम्, पल्लवः (पु न) ॥

६. 'नये किसलय' (बिलकुल नये पल्लव—जो सर्वप्रथम रक्तवर्णका निकलता है)'का १ नाम है—प्रवालः (पु न) ॥

७. 'प्रवालके कोशी (निकलनेके पूर्व बन्द नवपल्लव)'के २ नाम हैं—कोशी, शुङ्गा (पु स्त्री) ॥

८. 'पत्तेके रेशे'के २ नाम हैं—माढिः (स्त्री), दलस्नसा ॥

९. 'शाखाके फैलाव'के २ नाम हैं—विस्तारः, विटपः (पु न)

१०. 'फूल, पुष्प'के ८ नाम हैं—प्रसूनम्, कुसुमम् (न पु), सुमम्, पुष्पम्, सूनम्, सुमनसः (स्त्री, नि ब० व०), प्रसवः, मणीवकम् ॥

११. 'फूलकी कलियोंके गुच्छे'के २ नाम हैं—जालकम्, क्षारकः (पु न) ॥

१२. 'कली, अविकसित पुष्प'के २ नाम हैं—कलिका, कोरकः (पु न) ॥

१३. 'अर्द्धविकसित फूल'के २ नाम हैं—कुड्मलम्, मुकुलम् (२ पु न) ॥

विमर्श—'हृद्य'लोग 'कोरक' तथा 'कुड्मल'में अभेद मानते हैं[1]।

१४. 'गुच्छे' ५ नाम हैं—गुञ्छः, गुच्छः, स्तवकः (पु न), गुत्सकः (+गुत्सः), गुलुञ्छः (पु। +न) ॥

---

१. "हृद्यास्तु—अवान्तरभेदं न मन्यन्ते। यदाहुः–मुकुलाख्या तु कलिका कुड्मलं जालकं तथा। क्षारकं कोरकं च' इति।"

—१ऽथ रजः पौष्पं परागो२ऽथ रसो मधु ।। १९२ ।।
मकरन्दो मरन्दश्च ३वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।
४प्रबुद्धोज्जृम्भफुल्लानि व्याकोशं विकचं स्मितम् ।। १९३ ।।
उन्मिषितं विकसितं दलितं स्फुटितं स्फुटम् ।
प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लोच्छ्वसितानि विजृम्भितम् ।। १९४ ।।
स्मेरं विनिद्रमुन्निद्रविमुद्रहसितानि च ।
५संकुचितन्तु निद्राणं मीलितं मुद्रितञ्च तत् ।। १९५ ।।
६फलन्तु सस्यं ७तच्छुष्कं वानमामं ८शलाटु च ।
९ग्रन्थिः पर्व परु१०र्बीजकोशी शिम्बा शमी शिमिः ।। १९६ ।।
शिम्बिश्च ११पिप्पलोऽश्वत्थः श्रीवृक्षः कुञ्जराशनः ।
कृष्णावासो बोधितरुः १२प्लक्षस्तु पर्कटी जटी ।। १९७ ।।
१३न्यग्रोधस्तु बहुपात् स्याद्वटो वैश्रवणालयः ।

---

१. 'फूलके रज, पराग'का १ नाम है—परागः ।।

२. 'फूलके रस, मकरन्द'के ३ नाम हैं—मधु (न), मकरन्दः, मरन्दः ।।

३. 'डण्ठल, फूल और फलकी भेंटी'का १ नाम हैं—वृन्तम् ।।

४. 'फूलके फूलने, विकसित होने'के २१ नाम हैं—प्रबुद्धम्, उज्जृम्भम्, फुल्लम्, व्याकोशम्, विकचम्, स्मितम्, उन्मिषितम्, विकसितम्, दलितम्, स्फुटितम्, स्फुटम्, प्रफुल्लम्, उत्फुल्लम्, संफुल्लम्, उच्छ्वसितम्, विजृम्भितम्, स्मेरम्, विनिद्रम्, उन्निद्रम् , विमुद्रम्, हसितम् ।।

५. 'फूलके बन्द होने'के ४ नाम हैं—संकुचितम्, निद्राणम् , मिलितम्, मुद्रितम् ।।

६. 'फल'के २ नाम हैं—फलम् (पु न), सस्यम् ।।

७. 'सूखे फल'का १ नाम है—वानम् ।

८. 'कच्चे फल'का १ नाम है—शलाटु (त्रि),

९. 'गाठ, गिरह, पोर'के ३ नाम हैं—ग्रन्थिः (पु), पर्व (–र्वन्), परुः (–रुस् । २ न) ।।

१०. 'फली, छीमी (यथा—सेम, मटर आदिकी फली)'के ५ नाम हैं—बीजकोशी, शिम्बा, शमी, शिमिः, शिम्बिः (२ स्त्री) ।।

११. 'पीपल'के ६ नाम हैं—पिप्पलः (पुस्त्री), अश्वत्थः, श्रीवृक्षः, कुञ्जराशनः, कृष्णावासः, बोधितरुः (+चलदलः) ।।

१२. 'पाकर'के ३ नाम हैं—प्लक्षः, पर्कटी, जटी (–टिन्) ।।

१३. 'बड़'के ४ नाम हैं—न्यग्रोधः, बहुपात् (–पाद्), वटः (त्रि), वैश्रवणालयः ।।

१उदुम्बरो जन्तुफलो मशकी हेमदुग्धकः ॥ १९८ ॥
२काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयुर्जघनेफला ।
३आम्रश्चूतः सहकारः ४सप्तपर्णस्त्वयुक्छदः ॥ १९९ ॥
५शिग्रुः शोभाञ्जनोऽक्षीवतीक्ष्णगन्धकमोचकाः ।
६श्वेतेऽत्र श्वेतमरिचः ७पुन्नागः सुरपर्णिका ॥ २०० ॥
८बकुलः केसरो९ऽशोकः कङ्केल्लिः ११ककुभोऽर्जुनः ।
११मालूरः श्रीफलो बिल्वः १२किङ्किरातः कुरण्टकः ॥ २०१ ॥
१३त्रिपत्रकः पलाशः स्यात् किंशुको ब्रह्मपादपः ।
१४तृणराजस्तलस्तालो १५रम्भा मोचा कदल्यपि ॥ २०२ ॥
१६करवीरो हयमारः १७कुटजो गिरिमल्लिका ।

---

१. 'गूलर के ४ नाम हैं—उदुम्बरः, जन्तुफलः, मशकी (-किन्), हेमदुग्धकः ॥

२. 'कठूमर'के ४ नाम हैं—काकोदुम्बरिका, फल्गुः, मलयुः (+मलपुः) जघनेफला (सब स्त्री) ॥

३. 'आम'के ३ नाम हैं—आम्रः, चूतः, सहकारः (+माकन्दः) ॥

४. 'सप्तपर्ण, सतौना'के २ नाम हैं—सप्तपर्णः, (+यौ०--सप्तच्छदः …), अयुक्छदः, (+विषमच्छदः) ॥

५. 'सहिजना'के ५ नाम हैं—शिग्रुः (पु न), शोभाञ्जनः, अक्षीवः, तीक्ष्णगन्धकः, (+तीक्ष्णगन्धः), मोचकः ॥

६. 'श्वेत सहिजना'का १ नाम है—श्वेतमरिचः ॥

७. 'पुन्नाग, सदाबहार'के २ नाम हैं—पुन्नागः, सुरपर्णिका ॥

८. 'मौलश्री'के २ नाम हैं—बकुलः, केसरः ॥

९. 'अशोक'के २ नाम हैं--अशोकः, कङ्केल्लिः (स्त्री) ॥

१०. 'अर्जुन वृक्ष'के २ नाम हैं--कुकुभः, अर्जुनः ॥

११. 'बेल, श्रीफल'के ३ नाम हैं—मालूरः, श्रीफलः, बिल्वः ॥

१२. 'कटसरैया'के २ नाम हैं—किङ्किरातः, कुरण्टकः (+कुरुण्टकः, कुरण्डकः) ॥

१३. 'पलाश'के ४ नाम हैं—त्रिपत्रकः, पलाशः, किंशुकः, ब्रह्मपादपः ॥

१४. 'ताड'के ३ नाम हैं—तृणराजः, तलः, तालः ॥

१५. 'केला'के ३ नाम हैं—रम्भा, मोचा, कदली ॥

१६. 'कनेर'के २ नाम हैं—करवीरः, हयमारः ॥

१७. 'कुटज, कोरैया'के २ नाम हैं--कुटजः, गिरिमल्लिका ॥

१विदुलो वेतसः शीतो वानीरो वञ्जुलो रथः ॥ २०३ ॥
२कर्कन्धुः कुवली कोलिर्बदर्यं३थ हलिप्रियः ।
नीपः कदम्बः ४सालस्तु सर्जो५ऽरिष्टस्तु फेनिलः ॥ २०४ ॥
६निम्बोऽरिष्टः पिचुमन्दः ७समौ पिचुलझाबुकौ ।
८कर्पासस्तु बादरः स्यात् पिचव्य९स्तूलकं पिचुः ॥ २०५ ॥
१०आरग्वधः कृतमाले ११वृषो वासाऽऽटरूषके ।
१२करञ्जस्तु नक्तमालः १३स्नुहिर्वज्रो महातरुः ॥ २०६ ॥
१४महाकालस्तु किम्पाके १५मन्दारः पारिभद्रके ।
१६मधूकस्तु मधूष्ठीलो गुडपुष्पो मधुद्रुमः ॥ २०७ ॥
१७पीलुः सिनो गुडफलो १८गुग्गुलुस्तु पलङ्कषः ।

---

१. 'बेंत'के ६ नाम हैं—विदुलः, वेतसः (पु स्त्री), शीतः, वानीरः, वञ्जुलः, रथः ॥

२. 'बेर'के ४ नाम हैं—कर्कन्धुः (+कर्कन्धूः), कुवली (त्रि), कोलिः (स्त्री), बदरी ॥

३. 'कदम्ब'के ३ नाम हैं—हलिप्रियः, नीपः, कदम्बः (+धाराकदम्बः, राजकदम्बः, 'धूलिकदम्बः' उक्त कदम्बसे भिन्न होता है) ॥

४. 'साल'के २ नाम हैं—सालः (पु न), सर्जः ॥

५. 'रीठा'के २ नाम हैं--अरिष्टः, फेनिलः ॥

६. 'नीम'के ३ नाम हैं—निम्बः, अरिष्टः, पिचुमन्दः (+पिचुमर्दः) ॥

७. 'झाऊ'के २ नाम हैं—पिचुलः, झाबुकः ॥

८. 'कपास, वृक्ष'के ३ नाम हैं—कर्पासः (पु न), बादरः, पिचव्यः ॥

९. 'रूई'के २ नाम हैं—तूलकम् (+तूलम् । पु न), पिचुः (पु) ॥

१०. 'अमलतास'के २ नाम हैं—आरग्वधः, कृतमालः ॥

११. 'अड़ूसा, बाकस'के ३ नाम हैं—वृषः (पु । +स्त्री), वासा (+वाशा), आटरूषकः (+अटरूषः) ॥

१२. 'करञ्ज'के २ नाम हैं—करञ्जः, नक्तमालः ॥

१३. 'सेहुँड़, थूहर, स्नुही'के ३ नाम हैं—स्नुहिः (स्त्री, +स्नुहा), वज्रः, महातरुः ॥

१४. 'किंपाक वृक्ष'के २ नाम हैं—महाकालः, किम्पाकः ॥

१५. 'मन्दार'के २ नाम हैं—मन्दारः, पारिभद्रकः (+पारिभद्रः) ॥

१६. 'महुआ'के ४ नाम हैं—मधूकः, मधुष्ठीलः, गुडपुष्पः, मधुद्रुमः ॥

१७. 'पीलू नामक वृक्ष'के ३ नाम हैं—पीलुः (पु), सिनः, गुडफलः ॥

१८. 'गूगुल'के २ नाम हैं—गुग्गुलुः (पु), पलङ्कषः ॥

१राजादनः पियालः स्यात्२ तिनिशस्तु रथद्रुमः ॥ २०८ ॥
३नागरङ्गस्तु नारङ्ग ४इङ्गुदी तापसद्रुमः ।
५काश्मरी भद्रपर्णी श्रीपर्ण्य६म्लिका तु तिन्तिडी ॥ २०९ ॥
७शेलुः श्लेष्मातकः ८पीतसालस्तु प्रियकोऽसनः ।
९पाटलिः पाटला १०भूर्जो बहुत्वको मृदुच्छदः ॥ २१० ॥
११द्रुमोत्पलः कर्णिकारे १२निचुले हिज्जलेज्जलौ ।
१३धात्री शिवा चामलकी १४कलिरक्षो बिभीतकः ॥ २११ ॥
१५हरीतक्यभया पथ्या १६त्रिफला तत्फलत्रयम् ।
१७तापिञ्छस्तु तमालः स्या१८च्चम्पको हेमपुष्पकः ॥ २१२ ॥

---

१. 'पियाल (जिसके फलके बीजको 'चिरौंजी' कहते हैं, उस)'के २ नाम हैं—राजादनः (पु न), पियालः (+प्रियालः) ॥

२. 'शीशमकी जातिका वृक्ष-विशेष, बञ्जुल'के २ नाम हैं—तिनिशः, रथद्रुमः ॥

३. 'नारङ्गी'के २ नाम हैं—नागरङ्गः, नारङ्गः (+नार्यङ्गः) ॥

४. 'इङ्गुदी, इंगुआ'के २ नाम हैं—इङ्गुदी (त्रि), तापसद्रुमः ॥

५. 'गंभार'के ३ नाम हैं—काश्मरी (+काश्मर्यः), भद्रपर्णी (+भद्रपर्णिका), श्रीपर्णी ॥

६. 'इमिली'के २ नाम हैं—अम्लिका, तिन्तिडी ॥

७. 'लसोड़ा'के २ नाम हैं—शेलुः (पु । +सेलुः), श्लेष्मातकः ॥

८. 'विजयसार'के ३ नाम हैं—पीतसालः (+पीतसारकः, पीतसारः, पीतसालकः), प्रियकः, असनः ॥

९. 'पाढ़र'के २ नाम हैं—पाटलिः (पु स्त्री । +पाटली), पाटला ॥

१०. 'भोजपत्रके पेड़'के ३ नाम हैं—भूर्जः, बहुत्वक्कः, मृदुच्छदः ॥

११. 'कठचम्पा, कर्णिकार'के २ नाम हैं—द्रुमोत्पलः, कर्णिकारः ॥

१२. 'जलबेंत-विशेष'के ३ नाम हैं—निचुलः, हिज्जलः, इज्जलः ॥

१३. 'आँवला'के ३ नाम हैं—धात्री, शिवा, आमलकी (त्रि) ॥

१४. 'बहेड़ा'के ३ नाम हैं—कलिः (पु), अक्षः, बिभीतकः (त्रि । +विभेदकः) ॥

१५. 'हर्रे'के ३ नाम हैं—हरीतकी (स्त्री), अभया, पथ्या ॥

१६. 'संयुक्त आँवला, बहेड़ा तथा हर्रे'को 'त्रिफला' कहते हैं ॥

१७. 'तमाल वृक्ष'के २ नाम हैं—तापिञ्छः (+तापिच्छः), तमालः (पु न) ॥

१८. 'चम्पा'के २ नाम हैं—चम्पकः, हेमपुष्पकः ॥

१निर्गुण्डी सिन्दुवारे२ऽतिमुक्तके माधवी लता।
वासन्ती ३चौड्रपुष्पं जपा ४जातिस्तु मालती ॥ २१३ ॥
५मल्लिका स्याद्विचकिलः ६सप्तला नवमालिका।
७मागधी यूथिका ८सा तु पीता स्याद्धेमपुष्पिका ॥ २१४ ॥
९प्रियङ्गुः फलिनी श्यामा १०बन्धूको बन्धुजीवकः।
११करुणो मल्लिकापुष्पो १२जम्बीरे जम्भजम्भलौ ॥ २१५ ॥
१३मातुलुङ्गो बीजपूरः १४करीरक्रकरौ समौ।
१५पञ्चाङ्गुलः स्यादेरण्डे १६धातक्यां धातुपुष्पिका ॥ २१६ ॥
१७कपिकच्छूरात्मगुप्ता १८धत्तूरः कनकाह्वयः।
१९कपित्थस्तु दधिफलो २०नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥ २१७ ॥

---

१. 'सिंधुवार'के २ नाम हैं—निर्गुण्डी (+निर्गुण्टी), सिन्दुवारः ॥

२. 'माधवी लता'के ४ नाम हैं—अतिमुक्तकः (+अतिमुक्तः), माधवी, लता, वासन्ती ॥

३. 'ओढ़उल, जपा'के २ नाम हैं—ओड्रपुष्पम्, जपा (+जवा) ॥

४. 'मालती चमेली'के २ नाम हैं—जातिः, मालती ॥

५. 'मल्लिका, छोटी बेला'के २ नाम हैं—मल्लिका, विचकिलः ॥

६. 'नवमल्लिका, वासन्ती, नेवारी'के २ नाम हैं—सप्तला, नवमालिका ॥

७. 'जूही'के २ नाम हैं—मागधी, यूथिका ॥

८. 'पीली जूही'का १ नाम है—हेमपुष्पिका (+हेमपुष्पी) ॥

९. 'प्रियङ्गु'के ३ नाम हैं—प्रियङ्गुः (स्त्री), फलिनी, श्यामा ॥

१०. 'दुपहरिया नामक फूल'के २ नाम हैं—बन्धूकः, बन्धुजीवकः ॥

११. 'मल्लिका पुष्प'के २ नाम हैं—करुणः, मल्लिकापुष्पः ॥

१२. 'जंबीरी नीबू'के ३ नाम हैं—जम्बीरः, जम्भः (पु न), जम्भलः ॥

१३. 'बिजौरा नीबू'के २ नाम हैं—मातुलुङ्गः (+मातुलिङ्गः), बीजपूरः ॥

१४. 'करील'के २ नाम हैं—करीरः (पु न), क्रकरः ॥

१५. 'एरण्ड, रेंड़'के २ नाम हैं—पञ्चाङ्गुलः, एरण्डः ॥

१६. 'धव'के २ नाम हैं—धातकी, धातुपुष्पिका (+धातृपुष्पिका) ॥

१७. 'कवाछ'के २ नाम हैं—कपिकच्छूः (स्त्री), आत्मगुप्ता ॥

१८. 'धतूरा'के २ नाम हैं—धत्तूरः (+धात्तूरः), कनकाह्वयः, (सुवर्णके वाचक सब नाम अतः—कनकः, सुवर्णः,.........) ॥

१९. 'कैंत, कपित्थ'के २ नाम हैं—कपित्थः, दधिफलः ॥

२०. 'नारियल'के २ नाम हैं—नालिकेरः (—नारिकेलः। पु न), लाङ्गली ॥

१आम्रातको वर्षपाकी २केतकः क्रकचच्छदः ।
३कोविदारो युगपत्रः ४सल्लकी तु गजप्रिया ॥ २१८ ॥
५वंशो वेणुर्यवफलस्त्वचिसारस्तृणध्वजः ।
मस्करः शतपर्वा च ६ स्वनन् वातात्स कीचकः ॥ २१९ ॥
७तुकाक्षीरी वंशक्षीरी त्वक्क्षीरी वंशरोचना ।
८पूगे क्रमुकगूवाकौ ९तस्योद्वेगं पुनः फलम् ॥ २२० ॥
१०ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागपर्यायवल्ल्यपि ।
११तुम्ब्यलाबूः १२कृष्णला तु गुञ्जा १३द्राक्षा तु गोस्तनी ॥ २२१ ॥
मृद्वीका हारहूरा च १४गोक्षुरस्तु त्रिकण्टकः ।
श्वदंष्ट्रा स्थलशृङ्गाटो १५गिरिकर्ण्यपराजिता ॥ २२२ ॥
१६व्याघ्री निदिग्धिका कण्टकारिका स्या—

---

१. 'आमड़ा'के २ नाम हैं—आम्रातकः, वर्षपाकी (–किन्) ॥

२. 'केतकी'के २ नाम हैं—केतकः (पु स्त्री), क्रकचच्छदः ॥

३. 'कचनार'के २ नाम हैं—कोविदारः, युगपत्रः ॥

४. 'सलई'के २ नाम हैं—सल्लकी (पु स्त्री), गजप्रिया ॥

५. 'बाँस'के ७ नाम हैं—वंशः, वेणुः (पु), यवफलः, त्वचिसारः (+त्वक्सारः), तृणध्वजः, मस्करः, शतपर्वा (–र्वन्) ॥

६. 'छिद्र में वायुके प्रवेश करनेपर बजनेवाले बाँस'का १ नाम है—कीचकः ॥

७. 'वंशलोचन'के ४ नाम हैं—तुकाक्षीरी, वंशक्षीरी, त्वक्क्षीरी (स्त्री न), वंशरोचना ॥

८. 'सुपारी कसैलीके वृक्ष'के ३ नाम हैं—पूगः, क्रमुकः, गूवाकः ।

९. 'सुपारीके फल'का १ नाम है—उद्वेगम् ॥

१०. 'पान'के ३ नाम हैं—ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागपर्यायवल्ली (अर्थात् सर्पके पर्यायवाचक नामके बाद वल्ली शब्द या वल्लीके पर्यायवाचक शब्द जोड़नेसे बना हुआ पर्याय, अतः—नागवल्ली, सर्पवल्ली,फणिलता····) ॥

११. 'कद्दू, लौकी'के २ नाम हैं—तुम्बी, अलाबूः (२ स्त्री न) ॥

१२. 'गुञ्जा, करेजनी'के २ नाम हैं—कृष्णला, गुञ्जा ॥

१३. 'दाख, मुनक्का'के ४ नाम हैं—द्राक्षा, गोस्तनी, मृद्वीका, हारहूरा ॥

१४. 'गोखरू'के ४ नाम हैं—गोक्षुरः, त्रिकण्टकः, श्वदंष्ट्रा, स्थलशृङ्गाटः ॥

१५. 'अपराजिता'के २ नाम हैं—गिरिकर्णी, अपराजिता ॥

१६. 'रेंगनी, भटकटैया'के ३ नाम हैं—व्याघ्री, निदिग्धिका, कण्टकारिका (—कण्टकारी) ॥

—१दथामृता।
वत्सादनी गुडूची च २विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥ २२३ ॥
३उशीरं वीरणीमूले ४ह्रीबेरे बालकं जलम्।
५प्रपुन्नाटस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः ॥ २२४ ॥
६लट्वायां महारजनं कुसुम्भं कमलोत्तरम्।
७लोध्रे तु गालवो रोध्रतिल्वशावरमार्जनाः ॥ २२५ ॥
८मृणालिनी पुटकिनी नलिनी पङ्कजिन्यपि।
९कमलं नलिनं पद्ममरविन्दं कुशेशयम् ॥ २२६ ॥
परं शतसहस्राभ्यां पत्रं राजीवपुष्करे।
विसप्रसूतं नालीकं तामरसं महोत्पलम् ॥ २२७ ॥
तज्जलात्सरसः पङ्कात्परै रुड्रुहजन्मजैः।
१०पुण्डरीकं सिताम्भोज—

---

१. 'गुडुच'के ३ नाम हैं—अमृता, वत्सादनी, गुडूची ॥

२. 'इनारुन'के २ नाम हैं—विशाला, इन्द्रवारुणी ॥

३. 'खश'के २ नाम हैं—उशीरम् (न पु), वीरणीमूलम् ॥

४. 'नेत्रवाला'के ३ नाम हैं—ह्रीबेरम्, बालकम्, जलम् (+बाला तथा जल'के पर्यायवाचक शब्द—अतः 'बालम्, कचम्..........जलम्, नीरम्......) ॥

५. 'चकवढ़'के ४ नाम हैं—प्रपुन्नाटः (+प्रपुन्नाडः), एडगजः, दद्रुघ्नः, चक्रमर्दकः (+चक्रमर्दः) ॥

६. 'कुसुम्भके फूल'के ४ नाम हैं—लट्वा, महारजनम्, कुसुम्भम् (पु न), कमलोत्तरम् ॥

७. 'लोध'के ६ नाम हैं—लोध्रः, गालवः, रोध्रः, तिल्वः, शावरः, मार्जनः ॥

८. 'कमलिनी'के ४ नाम हैं—मृणालिनी, पुटकिनी, नलिनी, पङ्कजिनी (+कमलिनी) ॥

९. 'कमल'के २५ नाम हैं—कमलम्, नलिनम्, पद्मम् (३ पु न), अरविन्दम्, कुशेशयम्, शतपत्रम्, सहस्रपत्रम्, राजीवम्, पुष्करम्, विसप्रसूतम्। (+विसप्रसूनम्), नालीकम् (पु न), तामरसम्, महोत्पलम्, जलरुट्, सरोरुट्, पङ्करुट् (३–रुह्), जलरुहम्, सरोरुहम्, पङ्करुहम्, जलजन्म, सरोजन्म, पङ्कजन्म (३–जन्मन्), जलजम्, सरोजम्, पङ्कजम् (यौ०—नीरजम्, वारिजम्, सरसीरुहम्,......) ॥

१०. 'श्वेतकमल'के २ नाम हैं—पुण्डरीकम्, सिताम्भोजम् ॥

१मथ रक्तसरोरुहे ॥ २२८ ॥

रक्तोत्पलं कोकनदं २कैरविण्यां कुमुद्वती ।
३उत्पलं स्यात्कुवलयं कुवेलं कुवलं कुवम् ॥ २२९ ॥
४श्वेते तु तत्र कुमुदं कैरवं गर्दभाह्वयम् ।
५नीले तु स्यादिन्दीवरं ६हल्लकं रक्तसन्ध्यके ॥ २३० ॥
७सौगन्धिके तु कह्लारं ८बीजकोशो वराटकः ।
कर्णिका ९पद्मनालन्तु मृणालं तन्तुलं विसम् ॥ २३१ ॥
१०किञ्जल्कं केसरं ११संवर्त्तिका तु स्यान्नवं दलम् ।
१२करहाटः शिफा च स्यात्कन्दे सलिलजन्मनाम् ॥ २३२ ॥
१३उत्पलानान्तु शालूकं—

---

१. 'रक्तकमल'के ३ नाम हैं—रक्तसरोरुहम्, रक्तोत्पलम्, कोकनदम् ॥

२. 'कुमुदिनी (रात्रिमें खिलनेवाली कमलिनी)'के २ नाम हैं—कैरविणी, कुमुद्वती (+कुमुदिनी) ॥

३. 'उत्पल'के ५ नाम हैं—उत्पलम् (पु न), कुवलयम्, कुवेलम्, कुवलम् (पु न), कुवम् ॥

४. 'श्वेत उत्पल'के ३ नाम हैं—कुमुदम् (+कुमुत्,-द्), कैरवम्, गर्दभाह्वयम् (अर्थात् 'गधे'के वाचक सब नाम, अतः—गर्दभम्, खरम्…) ॥

५. 'नीले उत्पल'का १ नाम है—इन्दीवरम् ॥

६. 'सुर्ख (अधिक लाल) उत्पल'के २ नाम हैं—हल्लकम्, रक्तसन्ध्यकम् (+रक्तोत्पलम्) ॥

७. 'सुगन्धि कमल' (यह शरद् ऋतुमें फूलता है और श्वेत होता है)'के २ नाम हैं—सौगन्धिकम्, कह्लारम् ॥

८. 'कमलगट्टाके कोष (छत्ते)'के ३ नाम हैं—बीजकोशः, वराटकः, कर्णिका ॥

९. 'कमलनाल (कमलकी डण्ठल)'के ४ नाम हैं—पद्मनालम्, मृणालम् (त्रि), तन्तुलम्, बिसम् ॥

१०. 'कमल-केसर'के २ नाम हैं—किञ्जल्कम्, केसरम् (२ पु न) ॥

११. 'कमलकी नयी पँखुड़ी'का १ नाम है—संवर्तिका ॥

१२. 'पानीमें उत्पन्न होनेवाले कमल आदिके कन्द (मूल)'के २ नाम हैं—करहाटः, शिफा (+कन्दः (पु न) ॥

१३. 'उत्पलके कन्द'का १ नाम है—शालूकम् ॥

—१नील्यां शैवाल-शेवले ।
शेवालं शैवलं शेपालं जलाच्छूक-नीलिके ॥ २३३ ॥
२धान्यन्तु सस्यं सीत्यञ्च व्रीहिः स्तम्बकरिश्च तत् ।
३आशुः स्यात्पाटलो व्रीहि४र्गर्भपाकी तु षष्टिकः ॥ २३४ ॥
५शालयः कलमाद्याः स्युः ६कलमस्तु कलामकः ।
७लोहितो रक्तशालिः स्याद् ८महाशालिः सुगन्धिकः ॥ २३५ ॥
९यवो हयप्रियस्तीक्ष्णशूक१०स्तोक्मस्त्वसौ हरित् ।
११मङ्गल्यको मसूरः स्यात् १ कलायस्तु सतीनकः ॥ २३६ ॥
हरेणुः खण्डिकश्चा१३थ चणको हरिमन्थकः ।

---

१. 'सेवाल'के ८ नाम हैं--नीली, शैवालम्, शेवलम्, शेवालम्, शैवलम्, शेपालम् (६ पु न), जलशूकम्, जलनीलिका ॥

२. 'धान्य, अन्नमात्र'के ५ नाम हैं—धान्यम्, सस्यम्, सीत्यम्, व्रीहिः, स्तम्बकरिः (२ पु)।

विमर्श—'धान्य'के १७ भेद शास्त्रकारोंने कहे हैं, यथा—लाल धान, जौ, मसूर, गेहूँ, हरा मूँग, उड़द, तिल, चना, चीना, टांगुन, कोदो, राजमूंग, शालि, रहर, मटर, कुलथी और सन ।[1]

३. 'लाल रंगवाले साठी धान'के २ नाम हैं—आशुः (पु), व्रीहिः ॥

४. 'साठी या 'सेहीं'धान'के २ नाम हैं—गर्भपाकी, षष्टिकः ॥

५. 'कलम (उत्तम जातिके धानों)'का १ नाम है—शालिः (पु) ॥

६. 'अच्छे धान, या कलमदान धान'के २ नाम हैं—कलमः, कलामकः ॥

७. 'उत्तमजातीय लाल धान'के २ नाम हैं--लोहितः, रक्तशालिः ॥

८. 'सुगन्धित (कृष्णभोग, ठाकुरभोग, कनकजीर, बासमती आदि) धान'के २ नाम हैं—महाशालिः, सुगन्धिकः ॥

९. 'जौ'के ३ नाम हैं—यवः, हयप्रियः, तीक्ष्णशूकः ॥

१०. 'हरे जौ का १ नाम है—तोक्मः ॥

११. 'मसूर'के २ नाम हैं—मङ्गल्यकः, मसूरकः (पु स्त्री) ॥

१२. 'मटर'के ४ नाम हैं—कलायः, सतीनकः (+सातीनः), हरेणुः (पु), खण्डिकः ॥

१३. 'चना, बूँट'के २ नाम हैं—चणकः, हरिमन्थकः ॥

तदुक्तम्—

"व्रीहिर्यवो मसूरो गोधूमो मुद्गमाषतिलचणकाः ।
अणवः प्रियङ्गुकोद्रवमयुष्ठकाः शालिराढक्यः ।
किञ्च कलायकुलत्थौ शणश्च सप्तदश धान्यानि ॥" इति ।

१माषस्तु मदनो नन्दी वृष्यो बीजवरो बली ॥ २३७ ॥
२मुद्गस्तु प्रथनो लोभ्यो बलाटो हरितो हरिः ।
३पीतेऽस्मिन् वसु-खण्डीर-प्रवेल-जय-शारदाः ॥ २३८ ॥
४कृष्णे प्रवर-वासन्त-हरिमन्थज-शिम्बिकाः ।
५वनमुद्गे तुवरक-निगूढक-कुलीनकाः ॥ २३९ ॥
खण्डी च ६राजमुद्गे तु मकुष्ठकमयुष्ठकौ ।
७गोधूमे सुमनो ८वल्ले निष्पावः शितशिम्बिकः ॥ २४० ॥
९कुलत्थस्तु कालवृन्त१०स्ताम्रवृन्ता कुलत्थिका ।
११आढकी तुवरी वर्णा स्यात् १२कुल्मासस्तु यावकः ॥ २४१ ॥
१३नीवारस्तु वनव्रीहिः १४श्यामाक-श्यामकौ समौ ।
१५कङ्गुस्तु कङ्गुनी कङ्गुः प्रियङ्गुः पीततण्डुला ॥ २४२ ॥

---

१. 'उड़द'के ६ नाम हैं—माषः (पु न), मदनः, नन्दी (–न्दिन्), वृष्यः, बीजवरः, बली (–लिन्) ॥

२. 'हरे रंगकी मूंग'के ६ नाम हैं—मुद्गः, प्रथनः, लोभ्यः, बलाटः, हरितः, हरिः (पु) ॥

३. 'पीली मूंग'के ५ नाम हैं—वसुः, खण्डीरः, प्रवेलः, जयः, शारदः ॥

४. 'काली मूंग'के ४ नाम हैं—प्रवरः, वासन्तः, हरिमन्थजः, शिम्बिकः ॥

५. 'वनमूंग'के ५ नाम हैं—वनमुद्गः, तुवरकः, निगूढकः, कुलीनकः, खण्डी (–ण्डिन्) ॥

६. 'राजमूंग (उत्तमजातीय मूंग)'के ३ नाम हैं—राजमुद्गः, मकुष्ठकः, मयुष्ठकः ॥

७. 'गेहूँ'के २ नाम हैं—गोधूमः, सुमनः ॥

८. 'राजमाष (काली उरद) या एक प्रकारका गेहूँ'के ३ नाम हैं—वल्लः, निष्पावः, शितशिम्बिकः ॥

९. 'कुल्थी'के २ नाम हैं—कुलत्थः, कालवृन्तः ॥

१०. 'छोटी कुल्थी'के २ नाम हैं—ताम्रवृन्ता, कुलत्थिका ॥

११. 'रहर'के ३ नाम हैं—आढकी, तुवरी, वर्णा ॥

१२. 'अधसूखे उड़द आदि या विना टूंड़वाले जौ'के २ नाम हैं—कुल्मासः (+कुल्माषः), यावकः ॥

१३. 'नीवार, तेनी'के २ नाम हैं—नीवारः, वनव्रीहिः ॥

१४. 'साँवाँ'के २ नाम हैं—श्यामाकः, श्यामकः ॥

१५. (पीले चावलवाली) 'टाँगुन'के ५ नाम हैं—कङ्गुः, कङ्गुनी, कङ्गुः, प्रियङ्गुः, पीततण्डुला (सब स्त्री) ॥

१सा कृष्णा मधुका रक्ता शोधिका मुसटी सिता ।
पीता माधव्य२थोद्दालः कोद्रवः कोरदूषकः ॥ २४३ ॥
३चीनकस्तु काककङ्गु ४ऽर्यवनालस्तु योनलः ।
जूर्णाह्वयो देवधान्यं जोन्नाला बीजपुष्पिका ॥ २४४ ॥
५शणं भङ्गा मातुलानो स्या६दुमा तु क्षुमाऽतसी ।
७गवेधुका गवेधुः स्या ८ज्जर्तिलोऽरण्यजस्तिलः ॥ २४५ ॥
९षण्ढतिले तिलपिञ्जस्तिलपेजो१०ऽथ सर्षपः ।
कदम्बकस्तन्तुभो११ऽथ सिद्धार्थः श्वेतसर्षपः ॥ २४६ ॥
१२माषादयः शमीधान्यं १३शूकधान्यं यवादयः ।
१४स्यात्सस्यशूकं किंशारुः—

---

१. 'काली, लाल, सफेद और पीली टाँगुन'के क्रमशः १-१ नाम हैं—मधुका, शोधिका, मुसटी, माधवी ॥

२. 'कोदो'के ३ नाम हैं—उद्दालः, कोद्रवः, कोरदूषकः ॥

३. 'चीना (इसका 'माही' बनता है)'के २ नाम हैं—चीनकः, काककङ्गुः ॥

४. 'ज्वार, जोन्हरी, मसूरिया'के ६ नाम हैं—यवनालः, योनलः, जूर्णाह्वयः, देवधान्यम्, जोन्नाला, बीजपुष्पिका ॥

५. 'सन'के ३ नाम हैं—शणम्ः, भङ्गा, मातुलानी ॥

६. 'तीसी, अलसी'के ३ नाम हैं—उमा, क्षुमा, अतसी ॥

७. 'मुनियोंका अन्न-विशेष'के २ नाम हैं—गवेधुका (+गवीधुका), गवेधुः (स्त्री ।+गवेडुः) ॥

८. 'वनतिल'का १ नाम है—जर्तिलः ॥

९. 'फलहीन (नहीं फलनेवाले) तिल'के ३ नाम हैं—षण्ढतिलः, तिलपिञ्जः, तिलपेजः ॥

१०. 'सरसो'के ३ नाम हैं—सर्षपः, कदम्बकः, तन्तुभः ॥

११. 'श्वेत (या पीले) सरसो'के २ नाम हैं—सिद्धार्थः, श्वेतसर्षपः ॥

१२. 'उड़द आदि (४।२३७) अन्न'का १ नाम है—शमीधान्यम् । अर्थात् ये अन्न फली (छीमी)में उत्पन्न होते हैं ॥

१३. 'जौ' आदि (४।२३६) अन्न'का १ नाम है—शूकधान्यम् । अर्थात् जौ, गेहूँ आदि अन्नमें 'टूंड़' होते हैं ॥

१४. 'जौ आदिके टूंड़'के २ नाम हैं—सस्यशूकम् (पु न), किंशारुः (पु) ॥

—१कणिशं सस्यशीर्षकम् ॥ २४७ ॥
२स्तम्बस्तु गुच्छो धान्यादे३र्नालं काण्डो४ऽफलस्तु सः ।
पलः पलालो ५धान्यत्वक्तुषो ६बुसे कडङ्गरः ॥ २४८ ॥
७धान्यमावसितं रिद्धं ८तत्पूतं निर्बुसीकृतम् ।
९मूलपत्रकरीराग्रफलकाण्डाविरूढकाः ॥ २४९ ॥
त्वक्पुष्पं कवकं शाकं दशधा शिग्रुकञ्च तत् ।
१०तण्डुलीयस्तण्डुलेरो मेघनादोऽल्पमारिषः ॥ २५० ॥

---

१. 'धान, गेहूँ, जौ आदिकी बाल'के २ नाम हैं—कणिशम् (पु न । +कनिशम्), सस्यशीर्षकम् (+सस्यमञ्जरी) ॥

२. 'धान आदिके स्तम्ब'के २ नाम हैं—स्तम्बः, गुच्छः ॥

३. 'धान आदिके डण्ठल (डाँठ)'के २ नाम हैं—नालम् (त्रि), काण्डः (पु न) ॥

४. 'पुआल (धानके अन्नरहित डण्ठल)'के २ नाम हैं—पलः, पलालः (२ पु न) ॥

५. 'धानके छिलका (भूसी)'के २ नाम हैं—धान्यत्वक् (- च्, स्त्री), तुषः ॥

६. 'धान आदिके भूसे (जिसे पशु खाते हैं, उस पवटा, भूसा)'के २ नाम हैं—बुसः (पु न), कडङ्गरः ॥

७. 'पके या सुरक्षार्थं ढके हुए धान्य'के ३ नाम हैं—धान्यम्, आवसितम्, रिद्धम् ॥

८. 'ओसाए हुए (भूसासे अलग किये हुए) धान्य'का १ नाम है—पूतम् ॥

९. 'जड़ (मूली बिस आदिके), पत्ता (नीम आदिके), कोपल (बाँस आदिके), अग्र (करील वृक्षादिके), फल (कद्दू, कोंहड़ा आदिके), डाल (एरण्ड, बाँस आदिके), विरूढक (खेतसे उखाड़े गये फल या जड़ आदिके स्वेदसे पुनः पैदा हुए अङ्कुर । या—अविरूढक-ताड़के बीजकी गिरी), छिलका (केला आदिके), फूल (अगस्त्य, करीर वृक्ष आदिके), और कवक (वर्षा ऋतुमें उत्पन्न होनेवाले छत्राकार भूकन्द-विशेष कुकुरमुत्ता), ये १० प्रकारके 'शाक' होते हैं, इन (शाकों)'के २ नाम हैं—शाकम्, शिग्रुकम् (+शिग्रु । २ पु न) ॥

१०. (अब 'शाक-विशेष'के पर्याय कहते हैं—) 'चौराई शाक'के ४ नाम हैं—तण्डुलीयः, तण्डुलेरः, मेघनादः, अल्पमारिषः ॥

१बिम्बी रक्तफला पीलुपर्णी स्यात्तुण्डिकेरिका ।
२जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ॥ २५१ ॥
३वास्तुकन्तु क्षारपत्रं ४पालक्या मधुसूदनी ।
५रसोनो लशुनोऽरिष्टो म्लेच्छकन्दो महौषधम् ॥ २५२ ॥
महाकन्दो ६रसोनोऽन्यो गृञ्जनो दीर्घपत्रकः ।
७भृङ्गराजो भृङ्गरजो मार्कवः केशरञ्जनः ॥ २५३ ॥
८काकमाची वायसी स्यात् ९कारवेल्लः कटिल्लकः ।
१०कूष्माण्डकस्तु कर्कारुः ११कोशातकी पटोलिका ॥ २५४ ॥
१२चिर्भिटी कर्कटी वालुङ्क्यर्वारुस्त्रपुसी च सा ।
१३अर्शोघ्नः सूरणः कन्दः १४शृङ्गबेरकमार्द्रकम् ॥ २५५ ॥
१५कर्कोटकः किलासघ्नस्तिक्तपत्रः सुगन्धकः ।

---

१. 'कुन्दरू'के ४ नाम हैं—बिम्बी (+बिम्बिका), रक्तफला, पीलुपर्णी, तुण्डिकेरिका (+तुण्डिकेरी) ॥

२. 'जीवन्ती'के ५ नाम हैं—जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्रवा ॥

३. 'बथुआ'के २ नाम हैं—वास्तूकम्, क्षारपत्रम् ॥

४. 'पालकी साग'के २ नाम हैं—पालक्या, मधुसूदनी ॥

५. 'लहसुन'के ६ नाम हैं—रसोनः, लशुनः (२ पु न), अरिष्टः, म्लेच्छकन्दः, महौषधम्, महाकन्दः ॥

६. 'लाल लहसुन, प्याजके जाति-विशेष'के २ नाम हैं—गृञ्जनः, दीर्घपत्रकः ॥

७. 'भँगरिया, भाँगरा'के ४ नाम हैं—भृङ्गराजः, भृङ्गरजः, मार्कवः, केशरञ्जनः ॥

८. 'मकोय'के २ नाम हैं—काकमाची, वायसी ॥

९. 'करेला'के २ नाम हैं—कारवेल्लः, कटिल्लकः ॥

१०. 'कूष्माण्ड (कोंहड़ा, भतुआ, भूआ)'के २ नाम हैं—कूष्माण्डकः (+कूष्माण्डः), कर्कारुः ॥

११. 'परवल, या तरोई'के २ नाम हैं—कोशातकी, पटोलिका ॥

१२. 'ककड़ी'के ५ नाम हैं—चिर्भिटी, कर्कटी, वालुङ्की, एर्वारुः (पु स्त्री), त्रपुसी ॥

१३. 'सूरन'के ३ नाम हैं—अर्शोघ्नः, सूरणः, कन्दः (पु न) ॥

१४. 'अदरख, आदी'के २ नाम हैं—शृङ्गबेरकम्, आर्द्रकम् ॥

१५. 'खेखसा, ककोड़ा'के ४ नाम हैं—कर्कोटकः, किलासघ्नः, तिक्तपत्रः सुगन्धकः ॥

१मूलकन्तु हरिपर्णं सेकिमं हस्तिदन्तकम् ॥ २५६ ॥
२तृणं नडादि नीवारादि च ३शष्पन्तु तन्नवम् ।
४सौगन्धिकं देवजग्धं पौरं कत्तृणरौहिषे ॥ २५७ ॥
५दर्भः कुशः कुथो बर्हिः पवित्र६मथ तेजनः ।
गुन्द्रो मुञ्जः शरो ७दूर्वा त्वनन्ता शतपर्विका ॥ २५८ ॥
हरिताली रुहा ८पोटगलस्तु धमनो नडः ।
९कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता १०गुन्द्रा तु सोत्तमा ॥ २५९ ॥
११वल्वजा उलपो१२ऽथेक्षुः स्याद्रसालोऽसिपत्रकः ।
१३भेदाः कान्तारपुण्ड्राद्यास्तस्य—

---

१. 'मूली'के ४ नाम हैं—मूलकम् (पु न), हरिपर्णम्, सेकिमम्, हस्तिदन्तकम् ॥

२. 'नरसल तथा नीवार आदि' 'तृण' कहे जाते हैं, यह 'तृण' शब्द नपुंसकलिङ्ग 'तृणम्' है ॥

३. 'उक्त नरसल आदि तथा नीवार आदि नये अर्थात् छोटे हों तो उन्हें 'शष्प' कहते हैं, यह 'शष्प' शब्द 'शष्पम्' नपुंसक है ॥

४. 'रोहिष, रूसा घास (जड़ सुगन्धि होती है)'के ५ नाम हैं—सौगन्धिकम्, देवजग्धम्, पौरम्, कत्तृणम्, रौहिषम् (पु न) ॥

५. 'कुशा'के ५ नाम हैं—दर्भः, कुशः (पु न), कुथः, बर्हिः (-र्हिष्, पु न), पवित्रम् ।

६. 'मूंज'के ४ नाम हैं—तेजनः, गुन्द्रः, मुञ्जः, शरः ॥

७. 'दूब'के ५ नाम हैं—दूर्वा, अनन्ता, शतपर्विका, हरिताली, रुहा ।

८. 'नरसल'के ३ नाम हैं—पोटगलः, धमनः, नडः, (पु न) ॥

९. 'मोथा'के ३ नाम हैं—कुरुविन्दः, मेघनामा (-मन् । अर्थात् -मेघ'के पर्यायवाचक सभी शब्द, अतः—जलधरः, जलदः, नीरधरः, नीरदः······), मुस्ता (त्रि । + मुस्तकः) ॥

१०. 'नागरमोथा (उत्तमजातीय मोथा)'का १ नाम है—गुन्द्रा ॥

११. 'उलप (एक प्रकारके तृण-विशेष)'के २ नाम हैं—वल्वजाः (पु ब० व०), उलपः ॥

१२. 'गन्ना, ऊख'के ३ नाम हैं—इक्षुः (पु), रसालः, असिपत्रकः ॥

१३. उस गन्नेके 'कान्तारः, पुण्ड्रः' इत्यादि भेद होते हैं ।

विमर्श—वाचस्पतिने गन्नेके ११ भेद कहे हैं, यथा—पुण्ड्र, भीरुक,

—१मूलन्तु मोरटम् ॥ २६० ॥

२काशस्त्विषीका ३घासस्तु यवसं ४तृणमर्जुनम् ।

५विषः क्ष्वेडो रसस्तीक्ष्णं गरलो—

शून्येश्वर, कोषकार, शतघोर, तापस, नेपाल, दीर्घपत्र, काष्ठेक्षु, नीलघोर और खर्नटी ॥[1]

१. 'गन्नेकी जड़'का १ नाम है—मोरटम् ॥

२. 'काश नामक घास'के २ नाम हैं—काशः (पु न), इषीका ॥

३. 'घास (गौ आदि पशुओंका खाद्य—घास, भूसा आदि)'के २ नाम हैं—घासः, यवसम् (न।+पु) ॥

४. 'तृण'के २ नाम हैं—तृणम् (पु न), अर्जुनम् ॥

५. 'विष, जहर'के ५ नाम हैं—विषः (पु न), क्ष्वेडः, रसः (पु न), तीक्ष्णम्, गरलः (पु न)।

विमर्श—विषके मुख्य दो भेद होते हैं १ स्थावर तथा २ जङ्गम। प्रथम 'स्थावर' विषके १० भेद तथा उन १० भेदोंके ५५ उपभेद होते हैं और द्वितीय 'जङ्गम' विषके १६ भेद होते हैं। कौन-सा विष किस-किस स्थान या जीवादिमें होता है, इसे जिज्ञासुओंको 'अमरकोष (१।८।१०-११)'के मत्कृत 'मणिप्रभा' नामक राष्ट्रभाषानुवाद तथा 'अमरकौमुदी नामिका' संस्कृत टिप्पणीमें देखना चाहिए ॥

---

१ तद्यथा—"पुण्ड्रेक्षौ पुण्ड्रकः सेव्यः पौण्ड्रकोऽतिरसो मधुः ।
श्वेतकाण्डो भीरुकस्तु हरितो मधुरो महान् ॥
शून्येश्वरस्तु कान्तारः कोषकारस्तु वंशकः ।
शतघोरस्त्वीषत्क्षारः पीतच्छायोऽथ तापसः ॥
सितनीलोऽथ नेपालो वंशप्रायो महाबलः ।
अन्वर्थस्तु दीर्घपत्रो दीर्घपर्वा कषायवान् ॥
काष्ठेक्षुस्तु ह्रस्वकाण्डो घनग्रन्थिर्वनोद्भवः ।
नीलघोरस्तु सुरसो नीलपीतलराजिमान् ॥
अनूपसंभवः प्रायः खर्नटी त्विक्षुबालिका ।
करङ्कशालिः शावेक्षुः सूचिपत्रो गुडेक्षवः ॥" इति ।

—१ऽथ हलाहलः ॥ २६१ ॥
वत्सनाभः कालकूटो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ।
सौराष्ट्रिकः शौल्किकेयः काकोलो दारदोऽपि च ॥ २६२ ॥
अहिच्छत्रो मेषशृङ्गः कुष्ठवाल्कूनन्दनाः ।
कैराटको हैमवतो मर्कटः करवीरकः ॥ २६३ ॥
सर्षपो मूलको गौरार्द्रकः सक्तककर्दमौ ।
अङ्कोल्लसारः कालिङ्गः शृङ्गिको मधुसिक्थकः ॥ २६४ ॥
इन्द्रो लाङ्गुलिको विस्फुलिङ्गपिङ्गलगौतमाः ।
मुस्तको दालवश्चेति स्थावरा विषजातयः॥ २६५ ॥
२कुरण्टाद्या अग्रबीजा ३मूलजास्तूत्पलादयः ।
४पर्वयोनय इक्ष्वाद्याः ५स्कन्धजाः सल्लकीमुखाः ॥ २६६ ॥
६शाल्यादयो बीजरुहाः ७सम्मूर्च्छजास्तृणादयः ।
८स्युर्वनस्पतिकायस्य षडेता मूलजातयः ॥ २६७ ॥

---

१. हलाहलः, (+हालाहलः, हालहलः । सब पु न), वत्सनाभः, कालकूटः, ब्रह्मपुत्रः, प्रदीपनः, सौराष्ट्रिकः, शौल्किकेयः, काकोलः (पु न), दारदः, अहिच्छत्रः, मेषशृङ्गः, कुष्ठः, वालूकः, नन्दनः, कैराटकः, हैमवतः, मर्कटः, करवीरकः, (+करवीरः), सर्षपः, मूलकः, गौरार्द्रकः, सक्तुकः, कर्दमः, अङ्कोल्लसारः, कालिङ्गः, शृङ्गिकः, मधुसिक्थकः (+मधुसिक्थः), इन्द्रः, लाङ्गुलिकः, विस्फुलिङ्गः, पिङ्गलः, गौतमः, मुस्तकः, दालवः (सब पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग है, ऐसा वाचस्पतिका मत है);—ये सब 'स्थावर' विषके भेद हैं ॥

२. 'कटसरैया आदि ('आदि' शब्द से—पारिभद्र आदि) 'अग्रबीजाः' हैं अर्थात्—इनकी उत्पत्ति अग्रभागसे होती है ॥

३. 'उत्पल आदि' ('आदि' शब्दसे सूरण, आर्द्रक आदि) 'मूलजाः' हैं अर्थात् इनकी उत्पत्ति मूल (जड़) से होती है ॥

४. 'गन्ना' आदि ('आदि' शब्दसे तृण बांस आदि) 'पर्वयोनयः (–निः) हैं अर्थात् इनकी उत्पत्ति 'गांठ, गिरह, पर्व (पोर)'से होती है ॥

५. 'सलई' आदि ('आदि' शब्दसे 'बड़' आदि) 'स्कन्धजाः' हैं अर्थात् इनकी उत्पत्ति 'स्कन्ध'से होती है ॥

६. 'शालि, धान आदि ('आदि' शब्द से 'साठी चना, मूंग, गेहूँ' आदि) 'बीजरुहाः' हैं अर्थात् इनकी उत्पत्ति बीजसे होती है ॥

७. 'तृण' आदि ('आदि' शब्दसे भूच्छत्र (कुकुरमुत्ता) आदि) 'संमूर्च्छजाः हैं अर्थात् इनकी उत्पत्ति संमूर्च्छनसे होती है ॥

८. 'वनस्पतिकायिक जीवोंके ये ६ (अग्रभाग, मूल, पर्व (पोर, गिरह), स्कन्ध, बीज और सम्मूर्च्छन) 'मूलजाति' अर्थात् उत्पत्ति-स्थान हैं ॥

१नीलङ्गुः कृमिरन्तर्जः २क्षुद्रकीटो बहिर्भवः ।
३पुलकास्तूभयेऽपि स्युः ४कीकसाः कृमयोऽणवः ॥ २६८ ॥
५काष्ठकीटो घुणो ६गण्डूपदः किञ्चुलकः कुसूः ।
भूलता ७गण्डूपदी तु शिल्य८स्रपा जलौकसः ॥ २६९ ॥
जलालोका जलूका च जलौका जलसर्पिणी ।
९मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिः १०कम्बुस्तु वारिजः ॥ २७० ॥
त्रिरेखः षोडशावर्त्तः शङ्खो११ऽथ क्षुद्रकम्बवः ।
शङ्खनकाः क्षुल्लकाश्च—

वनस्पतिकाय समाप्त ।

एकेन्द्रिय जीववर्णन समाप्त ॥

१. (४ । १ से प्रारम्भ किया गया पृथ्वी आदि एकेन्द्रिय जीवोंका वर्णनकर अब (४ । २७२ तक) द्वीन्द्रिय (दो इन्द्रियोंवाले जीवोंका वर्णन करते हैं—) 'शरीरके भीतर उत्पन्न होनेवाले छोटे-छोटे कीड़ोंका १ नाम है—नीलङ्गुः (पु) ॥

२. 'शरीर'के बाहर उत्पन्न होनेवाले छोटे २ कीड़ों'का १ नाम है—क्षुद्रकीटः (पु स्त्री) ॥

३. 'शरीरके भीतर तथा बाहर उत्पन्न होनेवाले दोनों प्रकारके छोटे-छोटे कीड़ों'का १ नाम है—पुलकाः ॥

४. 'छोटे कीड़ों'का १ नाम है—कीकसाः ॥

५. 'घुन'के २ नाम हैं—काष्ठकीटः, घुणः ॥

६. 'केंचुआ नामक कीड़े'के ४ नाम हैं–गण्डूपदः, किञ्चुलकः (+किञ्चुलुकः), कुसूः, भूलता ॥

७. 'केंचुएकी स्त्री या केचुआ जातीय छोटे कीड़े'के २ नाम हैं–गण्डूपदी, शिली ॥

८. 'जोंक'के ६ नाम हैं—अस्रपा (+विचका), जलौकसः (– कस्, नि स्त्री, ब० व०), जलालोका, जलूका, जलौकाः, जलसर्पिणी ॥

९. 'सीप'के ३ नाम हैं—मुक्तास्फोटः, अब्धिमण्डूकी, शुक्तिः (स्त्री) ॥

१०. 'शङ्ख'के ५ नाम हैं—कम्बुः (पु न), वारिजः (+जलजः, अब्जः), त्रिरेखः, षोडशावर्त्तः, शङ्खः (पु न) ॥

११. 'छोटे-छोटे शङ्खों (नदी आदिमें उत्पन्न होनेवाले छोटे-छोटे कीड़ों)'के ३ नाम हैं—क्षुद्रकम्बवः (– म्बुः), शङ्खनकाः, क्षुल्लकाः ॥

१शम्बूकास्त्वम्बुमात्रजाः ॥ २७१ ॥
२कपर्दस्तु हिरण्यः स्यात्पणास्थिकवराटकौ ।
३दुर्नामा तु दीर्घकोशा ४पिपीलकस्तु पीलकः ॥ २७२ ॥
५पिपीलिका तु हीनाङ्गी ६ब्राह्मणी स्थूलशीर्षिका ।
७घृतेली पिङ्गकपिशा-८थोपजिह्वोपदेहिका ॥ २७३ ॥
वम्र्युपदीका ९रिक्षा तु लिक्षा १०यूका तु षट्पदी ।
११गोपालिका महाभीरु१२र्गोमयोत्था तु गर्दभी ॥ २७४ ॥
१३मत्कुणास्तु कोलकुण उद्दंशः किटिभोत्कुणौ ।

---

१. 'घोघा (दोहना) या पानीमें ही उत्पन्न होनेवाली सब प्रकारकी सीप'के २ नाम हैं—शम्बूकाः (+शम्बुकाः), अम्बुमात्रजाः ॥

२. 'कौड़ी'के ४ नाम हैं—कपर्दः, हिरण्यः (पु न), पणास्थिकः, वराटकः ॥

शेषश्चात्र—'स्यात्तु श्वेतः कपर्दके ।"

३. 'घोंघा या जोंकके समान एक जलचर जीव-विशेष'के २ नाम हैं—दुर्नामा (- मन् । + दुःसंज्ञा), दीर्घकोशा ॥

॥ द्वीन्द्रिय जीव वर्णन समाप्त ॥

४. (अब यहाँसे ४।२७५ तक त्रीन्द्रिय अर्थात् तीन इन्द्रियवाले जीवोंका वर्णन करते हैं—) 'चींटा, मकोड़ा'के २ नाम हैं—पिपीलकः, पीलकः ॥

५. 'चींटी'के २ नाम हैं—पिपीलिका, हीनाङ्गी ॥

६. 'एक प्रकारकी बिहनी (भिड़)-विशेष'के २ नाम हैं—ब्राह्मणी, स्थूलशीर्षिका ॥

७. 'तेलचटा'के २ नाम हैं—घृतेली, पिङ्गकपिशा ॥

८. 'दीमक'के ४ नाम हैं—उपजिह्वा, उपदेहिका, वम्री, उपदीका ॥

९. 'लीख'के २ नाम हैं—रिक्षा, लिक्षा ॥

१०. 'जूं'के २ नाम हैं—यूका, षट्पदी ॥

११. 'ग्वालिन नामक कीड़े (यह बरसातमें एक स्थान पर ही अधिक उत्पन्न होते हैं, इसे 'अहिरिन या गिंजनी' भी कहते हैं)'के २ नाम हैं—गोपालिका, महाभीरुः ॥

१२. 'गोबरौरा (गोबरमें उत्पन्न होनेवाले कीड़े)'के २ नाम हैं—गोमयोत्था, गर्दभी ॥

१३. 'खटमल, उड़िस'के ५ नाम हैं—मत्कुणः, कोलकुणः, उद्दंशः, किटिभः (+किटिभः), उत्कुणः ॥

१इन्द्रगोपस्त्वग्निरजो वैराटस्तित्तिभोऽग्निकः ॥ २७५ ॥
२ऊर्णनाभस्तन्त्रवायो जालिको जालकारकः ।
कृमिर्मर्कटको लूता लालास्त्रावोऽष्टपाच्च सः ॥ २७६ ॥
३कर्णजलौका तु कर्णकीटा शतपदी च सा ।
४वृश्चिको द्रुण आल्यालि५रलं तत्पुच्छकण्टकः ॥ २७७ ॥
६भ्रमरो मधुकृद् भृङ्गश्चञ्चरीकः शिलीमुखः ।
इन्दिन्दिरोऽली रोलम्बो द्विरेफो७ऽस्य षडंह्रयः ॥ २७८ ॥
८भोज्यन्तु पुष्पमधुनी ९खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ।

---

१. 'मखमली कीड़े (लाल मखमलके समान सुन्दर और मुलायम पीठ-वाला छोटा-सा यह कीड़ा बरसातमें होता है, इसे 'बीरबहूटी' भी कहते हैं—) के ५ नाम हैं—इन्द्रगोपः, अग्निरजः, वैराटः, तित्तिभः, अग्निकः ॥

॥ त्रीन्द्रिय जीववर्णन समाप्त ॥

२. (यहाँसे ४।२८१½ तक) चतुरिन्द्रिय—चार इन्द्रियवाले जीवोंके पर्याय कहते हैं—) 'मकड़ा, मकड़ी (जो जाल-सा बनाकर उसीमें रहती है)' के ६ नाम हैं—ऊर्णनाभः, तन्त्रवायः, जालिकः, जालकारकः, कृमिः (+क्रिमिः), मर्कटकः, लूता, लालास्त्रावः, अष्टपात् (– पाद्) ॥

३. 'कनगोजर, कनखजुरा'के ३ नाम हैं—कर्णजलौका, कर्णकीटा, शतपदी ॥

४. 'बिच्छू'के ४ नाम हैं—वृश्चिकः (पु स्त्री), द्रुणः (+द्रुतः), आली, आलिः ॥

५. 'बिच्छूके डङ्क'का १ नाम है—अलम् ॥

६. 'भौंरे'के ९ नाम हैं—भ्रमरः, मधुकृत् (+मधुकरः), भृङ्गः, चञ्चरीकः, शिलीमुखः, इन्दिन्दिरः, आलिः (+अली – लिन्), रोलम्बः, द्विरेफः (+भसलः । सब स्त्री पु) ॥

७. इस (भौंरे)के छः पैर होते हैं—अतः—षट्पदः, षडङ्घ्रिः, षट्चरणः,…) इसके पर्याय होते हैं) ॥

८. इस (भौंरे)का भोज्य पदार्थ पुष्प तथा मधु अर्थात् पुष्पपराग है—(अतः—'पुष्पलिट्,—लिह्, पुष्पन्धयः, मधुलिट्—लिह् , मधुपः, मधुव्रतः,…)' इसके पर्याय होते हैं) ॥

९. 'जुगुनू, खद्योत'के २ नाम हैं—खद्योतः, ज्योतिरिङ्गणः ॥

शेषश्चात्र—"खद्योते तु कीटमणिर्ज्योतिर्माली तमोमणिः ।
पराबुदो निमेषद्युद् ध्वान्तचित्रः ।"

१पतङ्गः शलभः २क्षुद्रा सरघा मधुमक्षिका ॥ २७९ ॥
३माक्षिकादि तु मधु स्याद् ४मधूच्छिष्टन्तु सिक्थकम् ।
५वर्वणा मक्षिका नीला ६पुत्तिका तु पतङ्गिका ॥ २८० ॥
७वनमक्षिका तु दंशो ८दंशी तज्जातिरल्पिका ।
९तैलाटी वरटा गन्धोली स्या—

---

१ 'शलभ, पतिगा' के २ नाम हैं—पतङ्गः, शलभः ॥

२. 'मधुमक्खी'के ३ नाम हैं—क्षुद्रा, सरघा, मधुमक्षिका ॥

३. 'मधु, सहद (मधुमक्खी आदि ('आदि'से पुत्तिका, भौंरा,.... का संग्रह है) के द्वारा निर्मित मधुर द्रव्य-विशेष)'का १ नाम है—मधु (न।+पु) ॥

विमर्श—'वाचस्पति'ने मधुके—पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र, दाल, औद्दालक, माक्षिक, अर्घ्य और छात्रक, ये ८ भेद बतलाकर इनमें-से प्रत्येक का पृथक्-गुण कहा है[1] ॥

४. 'मोम'के २ नाम हैं—मधूच्छिष्टम्, सिक्थकम् ॥

५. 'नीले रंगकी मक्खी'का १ नाम है—वर्वणा ॥

६. 'एक प्रकारकी छोटी मधुमक्खी'के २ नाम हैं–पुत्तिका, पतङ्गिका ॥

७. 'डाँस, दंश'के २ नाम है—वनमक्षिका; दंशः ॥

८. 'मच्छड़'का १ नाम है–दंशी ॥

९. 'बर्रे, बिर्हनी, हड्डा, भर'के ३ नाम हैं—तैलाटी, वरटा, (पु स्त्री), गन्धोली ॥

---

१ तद्यथा—

"पौत्तिकभ्रामरक्षौद्रदालौदालकमाक्षिकम् ।
अर्घ्यं छात्रकमित्यष्टौ जातयोऽस्य पृथग्गुणाः ॥
तत्र पौत्तिकमुत्तमघृताभं विषकीटजम् ।
भ्रामरं तु भ्रमरजं पाण्डुरं गुरु शीतलम् ॥
क्षौद्रं तु कपिलं दाहि क्षुद्रानीतं मलावहम् ।
दालं तु दलजं सेव्वं दुर्लभं रूक्षवालकम् ॥
उद्दालकं तु शालाकं विषजिन्मधुराम्लकम् ।
माक्षिकं तु मधु ज्येष्ठं विरूक्षं तैलवर्णकम् ॥
अर्घ्यं तु पूज्यमापाण्डु मनाक् तिक्तं सवालकम् ।
छात्रं त्वेकान्तमधुरं सर्वार्घ्यं राजसेवितम् ॥"

—१चीरी तु चीरुका ॥ २८१ ॥
झिल्लीका झिल्लिका वर्षकरी भृङ्गारिका च सा ।
२पशुस्तिर्यङ् चरि३र्हिंस्रेऽस्मिन् व्यालः श्वापदोऽपि च ॥२८२॥
४हस्ती मतङ्गजगजद्विपकर्यनेकपा मातङ्गवारणमहामृगसामयोनयः ।
स्तमेरमद्विरदसिन्धुरनागदन्तिनो दन्तावलः करटिकुञ्जरकुम्भिपीलवः ॥२८३॥
इभः करेणुर्गजो५ऽस्य स्त्री धेनुका वशाऽपि च ।
६भद्रो मन्दो मृगो मिश्रश्चतस्रो गजजातयः ॥ २८४ ॥
७कालेऽप्यजातदन्तश्च स्वल्पाङ्गश्चापि मत्कुणौ ।

---

१. 'झिंगुर,के ६ नाम हैं—चीरी, चीरुका, झिल्लीका, झिल्लिका, वर्षकरी, भृङ्गारिका ॥

चतुरिन्द्रियजीववर्णन समाप्त ॥

२. (अब यहांसे (४ । ४२१½ ।) तक स्थलचर, खचर (आकाश गामी) और जलचर भेदसे तीन प्रकारके पञ्चेन्द्रिय, जीवोंका क्रमशः वर्णन करते हैं उनमें प्रथम स्थलचर जीवोंका (४ । ३८१ तक) वर्णन है) 'पशु'के ३ नाम हैं—पशुः, तिर्यङ् (–यञ्च्), चरिः (सब पु) ॥

३. 'बाघ-सिंह आदि हिंसक पशुओं'के २ नाम हैं—व्यालः, श्वापदः ॥

४. 'हाथी'के २३ नाम हैं—हस्ती (–स्तिन्), मतङ्गजः, गजः, द्विपः, करी (–रिन्), अनेकपः, मातङ्गः, वारणः, महामृगः, सामयोनिः, स्तम्बेरमः, द्विरदः, सिन्धुरः, नागः, दन्ती (–न्तिन्), दन्तावलः, करटी (–टिन्), कुञ्जरः (पु न), कुम्भी (–म्भिन्), पीलुः, इभः, करेणुः (पु स्त्री + स्त्रीध्वजः), गजः ॥

शेषश्चात्र—"अथ कुञ्जरे ।
पेचकी पुष्करी पद्मी पेचिकः सूचिकाधरः ।
विलोमजिह्वोऽन्तःस्वेदो महाकायो महामदः ॥
सूर्पकर्णो जलाकाङ्क्षो जटी च षष्टिहायनः ।
असुरो दीर्घपवनः शुण्डालः कपिरित्यपि ॥"

५. 'हथिनी'के २ नाम हैं—धेनुका, वशा ।

शेषश्चात्र—"वशायां वासिता कर्णधारिणी गणिकाऽपि च ।"

६. 'हाथीके चार जाति विशेष हैं—भद्रः, मन्दः, मृगः, मिश्रः ॥

७. 'दाँत निकलनेकी अवस्था आजाने पर भी जिस हाथी का दाँत नहीं निकलते, उसका तथा छोटे शरीरवाले (चकुनी) हाथी'का १ नाम है—मत्कुणः ॥

१पञ्चवर्षो गजो बालः स्यात्पोतो दशवर्षकः ॥ २८५ ॥
विक्को विंशतिवर्षः स्यात्कलभस्त्रिंशदब्दकः ।
२यूथनाथो यूथपति३र्मत्ते प्रभिन्नगर्जितौ ॥ २८६ ॥
४मदोत्कटो मदकलः ५सम्रावुद्भ्रान्तनिर्मदौ ।
६सज्जितः कल्पित७स्तिर्यग्घाती परिणतो गजः ॥ २८७ ॥
८व्यालो दुष्टगजो ९गम्भीरवेद्यवमताङ्कशः ।
१०राजवाह्यस्तूपवाह्यः ११सन्नाह्यः समरोचितः ॥ २८८ ॥
१२उदग्रदन्नीषादन्तो १३बहूनां घटना घटा ।
१४मदो दानं प्रवृत्तिश्च १५वमथुः करशीकरः ॥ २८९ ॥

---

१. 'पाँच, दस, बीस और तीस वर्षकी अवस्थावाले हाथियों'का क्रमशः १—१ नाम है—बालः, पोतः, विक्कः, कलभः ॥

२. 'यूथके स्वामी'के २ नाम हैं—यूथनाथः, यूथपतिः ॥

३. 'जिसका मद बह रहा हो, उस हाथी के ३ नाम हैं—मत्तः, प्रभिन्नः, गर्जितः ॥

४. 'मतवाले हाथी'के २ नाम हैं—मदोत्कटः, मदकलः ॥

५. 'जिस हाथीका मद चूकर समाप्त हो गया हो, उस'के २ नाम हैं—उद्भ्रान्तः, निर्मदः ॥

६. 'युद्धके लिए तैयार किये गये हाथी'के २ नाम हैं—सज्जितः, कल्पितः ॥

७. 'दाँतसे तिर्छा प्रहार किये हुए हाथी'का १ नाम है—परिणतः ॥

८. 'दुष्ट हाथी'के २ नाम हैं—व्यालः, दुष्टगजः ॥

९. 'अङ्कुश-प्रहारसे भी नहीं मानने (वशमें आने) वाले हाथी'के २ नाम हैं—गम्भीरवेदी (-दिन्), अवमताङ्कुशः ॥

१०. 'जिस हाथीपर राजा सवारी करें, उसके २ नाम हैं—राजवाह्यः, उपवाह्यः (+औपवाह्यः)॥

११. 'युद्धके योग्य हाथी'के २ नाम हैं—सन्नाह्यः, समरोचितः ॥

१२. 'हरिस (हलके लम्बे डण्डे)के समान बड़े-बड़े दाँतवाले हाथी'के २ नाम हैं—उदग्रदन् (-दत्), ईषादन्तः ॥

१३. 'बहुत हाथियोंके झुण्ड'का १ नाम है—घटा ॥

१४. 'हाथीके मद'के ३ नाम हैं—मदः, दानम्, प्रवृत्तिः ॥

१५. 'हाथीके सूँड़ से निकलनेवाले जलकण'के २ नाम हैं—वमथुः (पु), करशीकरः ॥

१हस्तिनासा करः शुण्डा हस्तो२ऽग्रन्त्वस्य पुष्करम् ।
३अङ्गुलिः कर्णिका ४दन्तौ विषाणौ ५स्कन्ध आसनम् ॥२९०॥
६कर्णमूलञ्चूलिका स्या७दीषिका त्वक्षिकूटकम् ।
८अपाङ्गदेशो निर्याणं ९गण्डस्तु करटः कटः ॥ २९१ ॥
१०अवग्रहो ललाटं स्या११दारक्षः कुम्भयोरधः ।
१२कुम्भौ तु शिरसः पिण्डौ १३कुम्भयोरन्तरं विदुः ॥ २९२ ॥
१४वातकुम्भस्तु तस्याधो १५वाहित्थन्तु ततोऽप्यधः ।
१६वाहित्थाधः प्रतिमानं १७पुच्छमूलन्तु पेचकः ॥ २९३ ॥
१८दन्तभागः पुरोभागः १९पक्षभागस्तु पार्श्वकः ।

---

१. 'हाथीके सूंड़'के ४ नाम हैं—हस्तिनासा, करः, शुण्डा, हस्तः ॥
२. 'सूंड़'के अगले भाग'का १ नाम है—पुष्करम् ॥
३. 'हाथीके अङ्गुलि'का १ नाम है—कर्णिका ॥
४. 'हाथीके दोनों दाँतों'का १ नाम है—विषाणौ ॥
५. 'हाथीके कन्धे'का १ नाम है—आसनम् ॥
६. 'हाथीके कर्णमूल (कनपट्टी)'का १ नाम है—चूलिका ॥
७. 'हाथीके नेत्रके गोलाकार भाग'का १ नाम है—ईषिका (+ईषीका, इषिका, इषीका) ॥
८. 'हाथीके नेत्रप्रान्त'का १ नाम है—निर्याणम् ॥
९. 'हाथीके गण्डस्थल, कपोल'के २ नाम हैं—करटः, कटः ॥
१०. 'हाथीके ललाट'का १ नाम है—अवग्रहः ॥
११. 'हाथीके दोनों कुम्भों (मस्तकस्थ मांस-पिण्डों)के नीचेवाले भाग'का १ नाम है—आरक्षः ॥
१२. 'हाथीके मस्तकके ऊपरमें स्थित दो मांसपिण्डों'का १ नाम है—कुम्भौ ॥
१३. 'पूर्वोक्त दोनों कुम्भोंके मध्यभाग'का १ नाम है—विदुः (पु) ॥
१४. 'उक्त विदु (कुम्भद्वयके मध्यभाग)के नीचेवाले भाग'का १ नाम है—वातकुम्भः ॥
१५. 'पूर्वोक्त 'वातकुम्भ'के नीचेवाले भाग'का १ नाम है—वाहित्थम् ॥
१६. 'पूर्वोक्त 'वाहित्थ'के नीचेवाले भाग'का १ नाम है—प्रतिमानम् ॥
१७. 'हाथीकी पूंछके मूल भाग'का १ नाम है—पेचकः ॥
१८. 'हाथीके आगेवाले भाग'का १ नाम है—दन्तभागः ॥
१९. 'हाथीके बगलवाले भाग'का १ नाम है—पार्श्वकः ॥

१पूर्वस्तु जङ्घादिदेशो गात्रं स्यात् २पश्चिमोऽपरा ॥ २६४ ॥
३बिन्दुजालं पुनः पद्मं ४शृङ्खलो निगडोऽन्दुकः ।
हिञ्जीरश्च पादपाशो ५वारिस्तु गजबन्धभूः ॥ २६५ ॥
६त्रिपदी गात्रयोर्बन्ध एकस्मिन्नपरेऽपि च ।
७तोत्रं वेणुकं८मालानं बन्धस्तम्भो९ऽङ्कुशः सृणिः ॥ २६६ ॥
१०अपष्ठं त्वङ्कुशस्याग्रं ११यातमङ्कुशवारणम् ।
१२निषादिनां पादकर्म यतं १३वीतन्तु तद्द्वयम् ॥ २६७ ॥
१४कक्ष्या दूष्या वरत्रा स्यात् १५कण्ठबन्धः कलापकः ।

---

१. 'हाथीके पूर्व (आगेवाले) भाग' (पैर, जंघा आदि) का १ नाम है—गात्रम् ॥

२. 'हाथीके पीछेवाले भाग'का १ नाम है—अपरा (स्त्री न । + अवरा) ॥

३. 'युवावस्थाप्राप्त हाथीके मुखपर लाल रंगके पद्माकार बिन्दु-समूह'का १ नाम है—पद्मम् ॥

४. 'साँकल—हाथी बांधनेवाली लोहेकी बेड़ी'के ५ नाम हैं—शृङ्खलः (त्रि), निगडः (+ निगलः), अन्दुकः (+ अन्दूः, स्त्री), हिञ्जीरः (३ पु न), पादपाशः ॥

५. 'हाथी बांधनेकी भूमि'का १ नाम है—वारिः (स्त्री वारी) ॥

६. 'हाथीके आगेवाले दोनों पैर तथा पीछेवाले एक पैरको बांधने'का १ नाम है—त्रिपदी ॥

७. 'हाथीको हांकनेके लिए बनी हुई बांसकी छोटी छड़ी'के २ नाम हैं—तोत्रम्, वेणुकम् ॥

८. 'हाथी बांधनेके खूँटे'का १ नाम है—आलानम् ॥

९. 'अङ्कुश'के २ नाम हैं—अङ्कुशः (पु न), सृणिः (पु स्त्री) ॥

१०. 'अङ्कुशके अग्रभाग'का १ नाम है—अपष्ठम् ॥

११. 'अङ्कुश मारकर हाथीके दुर्व्यवहारको रोकने'का १ नाम है—यातम् (+ घातम्) ॥

१२. 'हाथीवानके दोनों पैरके अंगूठेसे हाथीको हाँकने'का १ नाम है—यतम् ॥

१३. 'पूर्वोक्त दोनों कार्य ('यात' तथा 'यत')'का १ नाम है—वीतम् ॥

१४. 'हाथी कसनेके रस्से'के ३ नाम हैं—कक्ष्या, दूष्या, वरत्रा ॥

१५. 'कण्ठबन्धन'के २ नाम हैं—कण्ठबन्धः, कलापकः ॥

१घोटकस्तुरगस्तार्क्ष्यस्तुरङ्गोऽश्वस्तुरङ्गमः ॥ २९८ ॥
गन्धर्वोऽर्वा सप्तिवीती वाहो वाजी हयो हरिः ।
२वडवाऽश्वा प्रसूर्वामी ३किशोरोऽल्पवया हयः ॥ २९९ ॥
४जवाधिकस्तु जवनो ५रथ्यो वोढा रथस्य यः ।
६आजानेयः कुलीनः स्यात् ७तत्तद्देशास्तु सैन्धवाः ॥ ३०० ॥
वानायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिकादयः ।
८विनीतस्तु साधुवाही ९दुर्विनीतस्तु शूकलः ॥ ३०१ ॥
१०कश्यः कशार्हो ११हृद्वक्त्रावर्ती श्रीवृक्षकी हयः ।

---

१. 'घोड़े'के १४ नाम हैं—घोटकः, तुरगः, तार्क्ष्यः, तुरङ्गः अश्व तुरङ्गमः, गन्धर्वः, अर्वा (– र्वन्), सप्तिः, वीतिः, वाहः, वाजी (– जिन्), हयः, हरिः (सब पु) ॥

शेषश्चात्र—"अश्वे तु क्रमणः कुण्डी प्रोथी हेषी प्रकीर्णकः ।
पालकः परुलः किण्वी कुटरः सिंहविक्रमः ॥
माषाशी केसरी हंसो मुद्गभुग्गूढभोजनः ।
वासुदेवः शालिहोत्रो लक्ष्मीपुत्रो मरुद्रथः ॥
चामर्येकशफोऽपि स्यात् ।"

२. 'घोड़ी'के ४ नाम हैं—वडवा, अश्वा, प्रसूः, (स्त्री), वामी ॥

शेषश्चात्र—"अश्वायां पुनरर्वती ॥"

३. 'बछेड़ा (छोटी अवस्थावाला घोड़ेके बच्चे)'का १ नाम है—किशोरः ॥

४. 'तेज चलनेवाले'के २ नाम हैं—जवाधिकः, जवनः ॥

५. 'रथ खींचनेवाले घोड़े'का १ नाम है—रथ्यः ॥

६. 'अच्छे नस्लके (काबुली आदि) घोड़े'के २ नाम हैं—आजानेयः, कुलीनः ॥

७. 'सिन्धु, वनायुज, पारसीक, कम्बोज और वाह्लिक देशमें उत्पन्न होने वाले घोड़ों'का क्रमशः १-१ नाम है—सैन्धवाः, वानायुजाः, पारसीकाः, काम्बोजाः, वाह्लिकाः,............... । ('आदि' शब्दसे 'तुषार' आदिका संग्रह है) ॥

८. 'सुशिक्षित घोड़े'का १ नाम हैं—साधुवाही (– हिन्) ॥

९. 'दुष्ट अशिक्षित घोड़े'का १ नाम हैं—शूकलः ॥

१०. 'कोड़ा मारने योग्य'का १ नाम है—कश्यः ॥

११. 'छाती तथा मुखपर बालोंकी भौंरी (गोलाकार घुमाव) वाले घोड़े'का १ नाम है—श्रीवृक्षकी (– किन्) ॥

१पञ्चभद्रस्तु हृत्पृष्ठमुखपार्श्वेषु पुष्पितः ॥ ३०२ ॥
२पुच्छोरःखुरकेशास्यैः सितः स्यादष्टमङ्गलः ।
३सिते तु कर्ककोकाहौ ४खोङ्गाहः श्वेतपिङ्गले ॥ ३०३ ॥
५पीयूषवर्णे सेराहः ६पीते तु हरियो हये ।
७कृष्णवर्णे तु खुङ्गाहः ८क्रियाहो लोहितो हयः ॥ ३०४ ॥
९आनीलस्तु नीलको१०ऽथ त्रियूहः कपिलो हयः ।
११वोल्लाहस्त्वयमेव स्यात्पाण्डुकेसरवालधिः ॥ ३०५ ॥
१२उराहस्तु मनाक्पाण्डुः कृष्णजङ्घो भवेद्यदि ।
१३सुरूहको गर्दभाभो १४वोरुखानस्तु पाटलः ॥ ३०६ ॥
१५कुलाहस्तु मनाक्पीतः कृष्णः स्याद्यदि जानुनि ।
१६उकनाहः पीतरक्तच्छायः स एव तु क्वचित् ॥ ३०७ ॥
कृष्णरक्तच्छविः प्रोक्तः—

---

१. 'हृदय (छाती), पीठ, मुख तथा दोनों पार्श्व भागोंमें श्वेत चिह्न-वाले घोड़े'का १ नाम है—पञ्चभद्रः ॥

२. 'पूँछ, छाती, चारो खुर, केश तथा मुखमें श्वेत वर्णवाले घोड़े'का १ नाम है—अष्टमङ्गलः ॥

३. 'श्वेत घोड़े'के २ नाम हैं—कर्कः, कोकाहः ॥

४. 'श्वेत 'पिङ्गल वर्णवाले घोड़े'का १ नाम है—खोङ्गाहः ॥

५. 'अमृत या दूधके समान रंगवाले घोड़े'का १ नाम है—सेराहः ॥

६. 'पीले घोड़े'का १ नाम है—हरियः ॥

७. 'काले घोड़े'का १ नाम है—खुङ्गाहः ॥

८. 'लाल घोड़े'का १ नाम है—क्रियाहः ॥

९. 'अत्यन्त नीले घोड़े'का १ नाम है—नीलकः ॥

१०. 'कपिल वर्णवाले घोड़े'का १ नाम है—त्रियूहः ॥

११. 'यदि 'त्रियूह' (कपिल वर्णवाले घोड़े) को केसर (आयल) और पूँछ पाण्डुवर्णके हों तो उस घोड़े'का १ नाम है—वोल्लाहः ॥

१२. 'थोड़ा पाण्डुवर्ण तथा काली जङ्घोंवाले घोड़े'का १ नाम है—उराहः ॥

१३. 'गधेके रंगवाले घोड़े'का १ नाम है—सुरूहकः ॥

१४. 'पाटल वर्णवाले घोड़े'का १ नाम है—वोरुखानः ॥

१५. 'कुछ पीले वर्णवाले तथा काली घुटनेवाले घोड़े'का १ नाम है—कुलाहः ॥

१६. 'पीले तथा लाल वर्णवाले अथवा काले तथा लाल वर्णवाले घोड़े'का १ नाम है—उकनाहः ॥

१शोणः कोकनदच्छविः ।
२हरिकः पीतहरितच्छायः स एव हालकः ॥ ३०८ ॥
पङ्गुलः सितकाचाभो ३हलाहश्चित्रितो हयः ।
४ययुरश्वोऽश्वमेधीयः ५प्रोथमश्वस्य नासिका ॥ ३०९ ॥
६मध्यं कश्यं ७निगालस्तु गलोद्देशः ८खुराः शफाः ।
९अथ पुच्छं वालहस्तो लाङ्गूलं लूम वालधिः ॥ ३१० ॥
१०अपावृत्तपरावृत्तलुठितानि तु वेल्लिते ।
११धोरितं वल्गितं प्लुतोत्तेजितोत्तेरितानि च ॥ ३११ ॥
गतयः पञ्च धाराख्यास्तुरङ्गाणां क्रमादिमाः ।
१२तत्र धौरितकं धौर्यं धोरणं धोरितञ्च तत् ॥ ३१२ ॥
बभ्रुकङ्कशिखिक्रोडगतिवद्—

---

१. 'कोकनद (सुर्ख कमल)के समान रंगवाले घोड़े'का १ नाम है—शोणः ॥

२. 'पीले तथा हरे (सब्ज) वर्णवाले घोड़े'के २ नाम हैं—हरिकः, हालकः ॥

३. 'श्वेत काँचके समान वर्णवाले घोड़े'का १ नाम है—पङ्गुलः ॥

४. 'चित्रित (चितकबरे) घोड़े'का १ नाम है—हलाहः ॥

शेषश्चात्र—"मल्लिकाक्षः सितैर्नेत्रैः स्याद्वाजीन्द्रायुधोऽसितैः ।
ककुदी ककुदावर्तो निर्मुष्कस्त्विन्द्रवृद्धिकः ॥"

५. 'अश्वमेध यज्ञके घोड़े'के २ नाम हैं—ययुः (पु), अश्वमेधीयः ॥

६. 'घोड़ेकी नाक'का १ नाम है—प्रोथम् (पु न) ॥

७. 'घोड़ेके मध्य भाग (जहाँ कोड़ा मारा जाता है, उस शरीर भाग)'का १ नाम है—कश्यम् ॥

८. 'घोड़ेके गले ('देवमणि' नामक भँवरीके स्थान)'का १ नाम है—निगालः ॥

९. 'खुर'के २ नाम हैं—खुराः, शफाः (पु न) ॥

१०. पूंछ'के ५ नाम हैं—पुच्छम् (पु न),वालहस्तः, लांगूलम् (पु न) लूम (-मन्, न), वालधिः (पु) ॥

११. 'लोटने'के ४ नाम हैं—अपावृत्तम्, परावृत्तम्, लुठितम् , वेल्लितम् ॥

१२. घोड़ोंकी चालका १ नाम है—'धारा' । उसके ५ भेद हैं—धोरितम्, वल्गितम्, प्लुतम्, उत्तेजितम्, उत्तेरितम् ॥

१३. 'नेवला, कङ्कपक्षी, मोर और सूअरके समान घोड़ेकी चाल' अर्थात्

१वल्गितं पुनः ।
अग्रकायसमुल्लासात्कुञ्चितास्यं नतत्रिकम् ॥ ३१३ ॥
२प्लुतन्तु लङ्घनं पक्षिमृगगत्यनुहारकम् ।
३उत्तेजितं रेचितं स्यान्मध्यवेगेन या गतिः ॥ ३१४ ॥
४उत्तेरितमुपकण्ठमास्कन्दितकमित्यपि ।
उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गमनं कोपादिवाखिलैः पदैः ॥ ३१५ ॥
५आश्वीनोऽध्वा स योऽश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।
६कवी खलीनं कविका कवियं मुखयन्त्रणम् ॥ ३१६ ॥
पञ्चाङ्गी ७वक्त्रपट्टे तु तलिका तलसारकम् ।
८दामाञ्चनं पादपाशः ९प्रक्षरं प्रखरः समौ ॥ ३१७ ॥
१०चर्मदण्डे कशा ११रश्मौ वल्गाऽवक्षेपणी कुशा ।

'दुलकी चाल'के ४ नाम हैं—धौरितकम्, धौर्यम्, धोरणम्, धोरितम् (+ धारणम्) ॥

१. 'शरीरके अगले (पूर्वार्द्ध) भागको बढ़ाकर शिरको संकुचितकर त्रिकको झुकाये हुए घोड़ेकी गति अर्थात् 'सरपट' चाल'का १ नाम है—वल्गितम् ॥

२. 'पक्षी तथा हरिनके समान घोड़ेकी चाल अर्थात् 'चौकड़ी (छलांग) मारने'के २ नाम हैं—प्लुतम्, लङ्घनम् ॥

३. 'घोड़ेकी मध्यम चाल'के २ नाम हैं—उत्तेजितम्, रेचितम् ॥

४ 'क्रुद्ध-से घोड़ेके चारो पैरोंसे उछल-उछलकर चलने'के ३ नाम हैं—उत्तेरितम्, उपकण्ठम्, आस्कन्दितकम् (+आस्कन्दितम्) ॥

५. 'घोड़ेके एकदिनमें चलने योग्य मार्ग'का १ नाम है—आश्वीनः ॥

६. 'लगाम'के ६ नाम हैं—कवी, खलीनम् (पु न), कविका, कवियम् (पु न), मुखयन्त्रणम्, पञ्चाङ्गी ॥

७. 'घोड़ेके मुखपर लगाये जानेवाले चमड़े के पट्टे'के २ नाम हैं—तलिका, तलसारकम् ॥

८. 'घोड़ेके पैर बांधनेकी रस्सी, छान या पछाड़ी'के २ नाम हैं—दामाञ्चनम्, पादपाशः ॥

९. 'घोड़ेको सज्जित करने'के २ नाम हैं—प्रक्षरम्, प्रखरः (पु । + न) ॥

१०. 'चमड़ेकी चाबुक या कोड़े'के २ नाम हैं—चर्मदण्डः, कशा ॥

११. 'घोड़ेकी रास, लगामकी रस्सी'के ४ नाम हैं—रश्मिः (स्त्री), वल्गा (+वल्गः, वागा), अवक्षेपणी, कुशा ॥

१पर्याणन्तु पल्ययनं २वीतं फल्गु हयद्विपम् ॥ ३१८ ॥
३वेसरोऽश्वतरो वेगसरश्चा४थ क्रमेलकः ।
कुलनाशः शिशुनामा शलो भोलिर्मरुप्रियः ॥ ३१९ ॥
मयो महाङ्गो वासन्तो द्विककुद् गंलङ्घनः ।
भूतघ्न उष्ट्रो दाशेरो रवणः कण्टकाशनः ॥ ३२० ॥
दीर्घग्रीवः केलिकीर्णः ५करभस्तु त्रिहायणः ।
६स तु शृङ्खलकः काष्ठमयैः स्यात्पादबन्धनैः ॥ ३२१ ॥
७गर्दभस्तु चिरमेही वालेयो रासभः खरः ।
चक्रीवान् शङ्कुकर्णो८ऽथ ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ३२२ ॥
वाडवेयः सौरभेयो भद्रः शकरशाकरौ ।
उक्षाऽनड्वान् ककुद्मान् गौर्वलीवर्दश्च शाङ्करः ॥ २३ ॥
९उक्षा तु जातो जातोक्षः १०स्कन्धिकः स्कन्धवाहकः ।
११महोक्षः स्यादुक्षतरो १२वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ॥ ३२४ ॥

---

१. 'घोड़ेकी जीन, खोगीर'के २ नाम हैं—पर्याणम्, पल्ययनम् ॥

२. 'निःसार घोड़े तथा हाथी'का १ नाम है—वीतम् ॥

३. 'खच्चर'के ३ नाम हैं—वेसरः, अश्वतरः, वेगसरः ॥

४. 'ऊँट'के १८ नाम हैं—क्रमेलकः, कुलनाशः, शिशुनामा (-मन् । 'शिशु' (बालक)के पर्यायवाचक नाम अतः—बालः, अर्भकः······), शलः, भोलिः, मरुप्रियः, मयः, महाङ्गः, वासन्तः, द्विककुत् (कुद्), दुर्गलङ्घनः, भूतघ्नः, उष्ट्रः, दाशेरः, रवणः, कण्टकाशनः, दीर्घग्रीवः, केलिकीर्णः ॥

५. 'तीन वर्षकी उम्रवाले ऊँट'का १ नाम है—करभः ॥

६. 'लकड़ीके बने पादबन्ध यन्त्रसे बांधे जानेवाले ऊँट'का १ नाम है—शृङ्खलकः ॥

७. 'गधे'के ७ नाम हैं—गर्दभः, चिरमेही (-हिन्), वालेयः, रासभः, खरः, चक्रीवान् (-वत्), शङ्कुकर्णः ॥

८. 'बैल'के १४ नाम हैं—ऋषभः, वृषभः, वृषः, वाडवेयः, सौरभेयः, भद्रः, शकरः, शाकरः, उक्षा (-क्षन्), अनड्वान् (-डुह्), ककुद्मान् (-द्मत्), गौः (पु स्त्री), बलीवर्दः, शाङ्करः ॥

९. 'बछवे (छोटे बाछा)की अवस्था पारकर युवावस्थामें प्रवेश करते हुए बैल'का १ नाम है—जातोक्षः ॥

१०. (कन्धेसे हल, गाड़ी आदिका) भार ढोनेवाले बैल'के २ नाम हैं—स्कन्धिकः, स्कन्धवाहकः ॥

११. 'बड़े बैल'के २ नाम हैं—महोक्षः, उक्षतरः ॥

१२. 'बूढ़े बैल'के २ नाम हैं—वृद्धोक्षः, जरद्गवः ॥

१षण्ढतोचित आर्षभ्यः २कूटो भग्नविषाणकः ।
३इट्चरो गोपतिः षण्डो गोवृषो मदकोहलः ॥ ३२५ ॥
४वत्सः शकृत्करिस्तर्णो ५दम्यवत्सतरौ समौ ।
६नस्योतो नस्तितः ७षष्ठवाट् तु स्याद्युगपार्श्वगः ॥ ३२६ ॥
८युगादीनान्तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।
९स तु सर्वधुरीणः स्यात्सर्वां वहति यो धुरम् ॥ ३२७ ॥
१०एकधुरीणैकधुरावुभावेकधुरावहे ।
११धुरीणधुर्यधौरेयधौरेयकधुरन्धराः ॥ ३२८ ॥
धूर्वहे१२ऽथ गलिदुष्टवृषः शक्तोऽप्यधूर्वहः ।

---

१. 'बधिया करनेके योग्य बाछा'का १ नाम है—आर्षभ्यः ॥

२. 'टूटी हुई सींगवाले बैल आदि'के २ नाम हैं—कूटः, भग्नविषाणकः ॥

३. 'साँड़'के ५ नाम हैं—इट्चरः (+इत्वरः), गोपतिः, षण्डः (+सण्डः), गोवृषः, मदकोहलः ॥

४. (बकरीकी मिंगनी—जैसा) 'गोबर करनेवाले अर्थात् बहुत छोटी उम्रवाले बाछा-बाछी'के ३ नाम हैं—वत्सः, शकृत्करिः, तर्णः ॥

५. '(गाड़ी, हल आदिमें) जोतनेके योग्य बैल'के २ नाम हैं—दम्यः, वत्सतरः ॥

६. 'नाथे हुए बैल आदि'के २ नाम हैं—नस्योतः, नस्तितः ॥

७. 'दहने-बायें (दोनों तरफ) चलनेवाले बैल'के या शिक्षित करनेके लिए पहली बार जोते गये बैल'के २ नाम हैं—षष्ठवाट् (-वाह् । + प्रष्ठवाट्, पष्ठवाट्; २—वाह्), युगपार्श्वगः ॥

८. 'युग (युवा, जुवाठ), प्रासङ्ग (शिक्षित करनेके लिए बाछाके कन्धेपर रक्खे जानेवाले काष्ठ) तथा गाड़ीको ढोनेवाले बैल'का क्रमसे १—१ नाम है—युग्यः, प्रासङ्ग्यः, शाकटः ॥

९. 'सब तरफके भार ढोनेवाले बैल'का १ नाम है—सर्वधुरीणः ।

१०. 'एक तरफ'के बोझ ढोनेवाले बैल'के २ नाम हैं—एकधुरीणः, एकधुरः ॥

११. 'बोझ 'जुवा' ढोनेवाले बैल'के ६ नाम हैं—धुरीणः, धुर्यः, धौरेयः, धौरेयकः, धुरन्धरः, धूर्वहः ॥

१२. 'गर (समर्थ होकर भी जोतनेके समयमें जुवा गिराकर बैठ जानेवाले) दुष्ट बैल'का १ नाम है—गलिः ॥

१स्थौरी पृष्ठ्यः पृष्ठवाह्यो २द्विदन् षोडन् द्विषड्दौ ॥ ३२९ ॥
३वहः स्कन्धो४ऽशकूटन्तु ककुदं ५नैचिकं शिरः ।
६विषाणं कूणिका शृङ्गं ७सास्ना तु गलकम्बलः ॥ ३३० ॥
८गौः सौरभेयी माहेयी माहा सुरभिरर्जुनी ।
उस्राऽघ्न्या रोहिणी शृङ्गिण्यनड्वाह्यनडुह्युषा ॥ ३३१ ॥
तम्पा निलिम्पिका तम्बा ९सा तु वर्णैरनेकधा ।
१०प्रष्ठौही गर्भिणी ११वन्ध्या वशा १२वेहद्वृषोपगा ॥ ३३२ ॥
१३अवतोका स्रवद्गर्भा—

---

१. 'पीठसे बोझ ढोनेवाले (बोरा आदि लादे जानेवाले) बैल'के ३ नाम हैं—स्थौरी (–रिन् । + स्थूरी, –रिन्), पृष्ठ्यः, पृष्ठवाह्यः ॥

२. 'दो और छः दाँतवाले बैल आदि (बालक घोड़ा आदि भी)'का क्रमशः १—१ नाम है—द्विदन् (–दत्), षोडन् (–डत्) ॥

३. 'बैलके कन्धे'के २ नाम हैं—वहः, स्कन्धः ॥

४. 'ककुद, मउर (बैलकी पीठपरका डील कन्धेपर उठा हुआ मांस-पिण्ड विशेष)'के २ नाम हैं—अंशकूटम्, ककुदम् (पु न । + ककुद्) ॥

५. 'बैलके शिर'का १ नाम है—नैचिकम् (+ नैचिकी) ॥

६. 'बैल (आदि)के सींग'के ३ नाम हैं—विषाणम् (त्रि), कूणिका, शृङ्गम् (पु न) ॥

७. 'लोर (बैल या गायकी गर्दनके नीचे कम्बल-जैसा लटकता हुआ मांस-विशेष)'के २ नाम हैं—सास्ना, गलकम्बलः ॥

८. 'गाय'के १६ नाम हैं—गौः (–गो, पु स्त्री), सौरभेयी, माहेयी, माहा, सुरभिः, अर्जुनी, उस्रा, अघ्न्या, रोहिणी, शृङ्गिणी, अनड्वाही, अनडुही, उषा, तम्पा, निलिम्पिका, तम्बा ॥

९ 'रंगभेदसे वह गाय अनेक प्रकारकी होती है (यथा—'शवला, धवला, कृष्णा, कपिला, पाटला,······' अर्थात् चितकबरी, धौरी, काली, कैल, और गोली (लाल),·······) ॥

१०. 'गर्भिणी या—प्रथमवार गर्भिणी'के २ नाम हैं—प्रष्ठौही, गर्भिणी ॥

११. 'बांझ (बच्चा नहीं देनेवाली) गाय आदि'के २ नाम हैं—वन्ध्या, वशा ॥

१२. 'साड़के साथ संभोगकी हुई या—गर्भ-स्रावकी हुई गाय'के २ नाम हैं—वेहत् , वृषोपगा ॥

१३. गर्भपातकी हुई, या–मरे हुए बच्चे वाली गाय' का १ नाम है—अवतोका ॥

—१वृषाक्रान्ता तु सन्धिनी ।
२प्रौढवत्सा बष्कयिणी ३धेनुस्तु नवसूतिका ॥ ३३३ ॥
४परेष्टुर्बहुसूतिः स्याद् ५गृष्टिः सकृत्प्रसूतिका ।
६प्रजने काल्योपसर्या च ७सुखदोह्या तु सुव्रता ॥ ३३४ ॥
८दुःखदोह्या तु करटा ९बहुदुग्धा तु वञ्जुला ।
१०द्रोणदुग्धा द्रोणदुघा ११पीनोध्नी पीवरस्तनी ॥ ३३५ ॥
१२पीतदुग्धा तु धेनुष्या संस्थिता दुग्धबन्धके ।
१३नैचिकी तूत्तमा गोषु १४पलिक्नी बालगर्भिणी ॥ ३३६ ॥
१५समांसमीना तु सा या प्रतिवर्षं विजायते ।
१६स्यादचण्डी तु सुकरा—

---

१. 'सांढ़से आक्रान्त (संभोग की हुई), या—दुहनेके समयपरभी दूध नहीं देनेवाली गाय'का १नाम है—सन्धिनी ॥

२. 'बकेना गाय'का एक नाम है—'वष्कयणी ॥

३. 'थोड़े दिनोंकी व्यायी हुई गाय'का १नाम है— धेनुः ॥

४. 'अनेक बार व्यायी हुई गाय'का १ नाम है—परेष्टुः ॥

५. 'एक बार व्यायी हुई गाय'का १ नाम है—गृष्टिः ॥

६. 'रंभाई (उठी) हुई अर्थात् गर्भग्रहणार्थ बैलके साथ संभोगकी इच्छा करनेवाली गाय'के २ नाम हैं—काल्या, उपसर्या ॥

७. 'सरलतासे दूध देनेवाली सूधी गाय'का १ नाम है—सुव्रता ॥

८. 'करटही (बड़ी कठिनाईसे दूही जानेवाली) गाय'का १ नाम है—करटा ॥

९. 'दूधारू' (बहुत दूध देनेवाली) गाय'का १ नाम है—वञ्जुला ॥

१०. 'एक द्रोण (आधा मन) दूध देनेवाली गाय'के २ नाम हैं—द्रोण-दुग्धा, द्रोणदुघा ॥

११. 'मोटे-मोटे स्तनोंवाली गाय'के २ नाम हैं—पीनोध्नी, पीवरस्तनी ॥

१२. (ऋण चुकाने तक उत्तमर्णके यहां दूध दुहनेके लिए) 'बन्धक रखी हुई गाय'के २ नाम हैं—पीतदुग्धा, धेनुष्या ॥

१३. 'गायोंमें उत्तम गाय'का १ नाम है—नैचिकी ॥

१४. 'बचपनमें ही गर्भ-धारणकी हुई गाय'का १ नाम है—पलिक्नी (+मलिनी) ॥

१५. 'धनपुरही (प्रत्येक वर्षमें व्यानेवाली) गाय'का १ नाम है—समांसमीना ॥

१६. 'सूधी गाय'का १ नाम है—सुकरा ॥

—१वत्सकामा तु वत्सला ॥ ३३७ ॥
२चतुरब्देहायणी द्व्यब्दे काद्यायन्येकादिवर्षिका ।
३आपीनमूधो ४गोविट् तु गोमयं भूमिलेपनम् ॥ ३३८ ॥
५शुष्के तु तत्र गोग्रन्थिः करीषच्छगणे अपि ।
६गवां सर्वं गव्यं ७व्रजे गोकुलं गोधनं धनम् ॥ ३३९ ॥
८प्रजने स्यादुपसरः ९कीलः पुष्पलकः शिवः ।
१०बन्धनं दाम सन्दानं ११पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ३४० ॥
१२अजः स्याच्छगलश्छागश्छगो वस्तः स्तभः पशुः ।
१३अजा तु च्छागिका मञ्जा सर्वभक्षा गलस्तनी ॥ ३४१ ॥
१४युवाऽजो वर्करो—

---

१. (स्नेहसे) 'बछवेको चाहनेवाली गाय'के २ नाम हैं—वत्सकामा, वत्सला ॥

२. 'चार, तीन, दो और एक वर्षकी अवस्थावाली गाय'के क्रमशः २—२ नाम हैं—चतुर्हायणी, चतुर्वर्षा; त्रिहायणी, त्रिवर्षा; द्विहायनी, द्विवर्षा; एकहायनी, एकवर्षा ॥

३. 'गायके थन'के २ नाम हैं—आपीनम् (पु न), ऊधः (–धस्, न) ॥

४. 'गोबर'के ३ नाम हैं—गोविट् (—श्), गोमयम्, भूमिलेपनम् (+पवित्रम्) ॥

५. 'सूखे गोबर'के ३ नाम हैं—गोग्रन्थिः, करीषम् (पु न), छगणम् ॥

६. 'गो-सम्बन्धी सब पदार्थ (यथा–दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र·······)' का १ नाम है—गव्यम् ॥

७. 'गोसमूह'के ४ नाम हैं—व्रजः (पु न), गोकुलम्, गोधनम्, धनम् ॥

८. 'पशुओंके गर्भाधान समय'के २ नाम हैं—प्रजनः, उपसरः ॥

९. 'खूँटा'के ३ नाम हैं—कीलः (पु स्त्री), पुष्पलकः, शिवः ॥

१०. (पशु) बांधनेके ३ नाम हैं—बन्धनम्, दाम (–मन्, न स्त्री)' संदानम् ॥

११. 'पगहा (पशु बांधने वाली रस्सी)' का १ नाम है—दामनी ॥

१२. 'खसी बकरे'के ७ नाम हैं—अजः, छागलः, छागः, छगः, वस्तः, स्तभः, पशुः ॥

१३. 'बकरी'के ५ नाम हैं—अजा, छागिका (+छागी), मञ्जा, सर्वभक्षा, गलस्तनी ॥

१४. 'बोका (युवा बकरा)' का १ नाम है—वर्करः ॥

१ऽवौ तु मेषोर्णायुहुडोरणाः ।
उरभ्रो मेण्ढको वृष्णिरेडको रोमशो हुडुः ॥ ३४२ ॥
सम्फालः शृङ्गिणो भेडो २मेषी तु कुररी रुजा ।
जालकिन्यविला वेण्य३थेडिक्कः शिशुवाहकः ॥ ३४३ ॥
पृष्ठशृङ्गो वनाजः स्या४दविदुग्धे त्ववेः परम् ।
सोढं दूसं मरीसञ्च ५कुक्कुरो वक्रवालधिः ॥ ३४४ ॥
अस्थिभुग्भषणः सारमेयः कौलेयकः शुनः ।
शुनिः श्वानो गृहमृगः कुर्कुरो रात्रिजागरः ॥ ३४५ ॥
रसनालिड् रतपराः कीलशायिव्रणान्दुकाः ।
शालावृको मृगदंशः श्वा६ऽलर्कस्तु स रोगितः ॥ ३४६ ॥
७विश्वकद्रुस्तु कुशलो मृगव्ये ८सरमा शुनी ।
९विट्चरः शूकरे ग्राम्ये—

---

१. 'भेड़ों'के १४ नाम हैं—अविः, मेषः (पु न), ऊर्णायुः, हुडः, उरणः उरभ्रः, मेण्ढकः, वृष्णिः, एडकः, रोमशः, हुडुः, सम्फालः, शृङ्गिणः, भेडः ॥

२. 'भेंड़'के ६ नाम हैं—मेषी, कुररी, रुजा, जालकिनी, अविला; वेणी ।

३. 'जङ्गली बकरा'के ४ नाम हैं—इडिक्कः, शिशुवाहकः, पृष्ठशृङ्गः, वनाजः ॥

४. 'भेंड़के दूध'के ३ नाम हैं—अविसोढम्; अविदूसम्, अविमरीसम् ॥

५. 'कुत्ते'के २० नाम हैं—कुक्कुरः, वक्रवालधिः, अस्थिभुक् (–भुज्), भषणः (+भषकः), सारमेयः, कौलेयकः, शुनः, शुनिः, श्वानः, गृहमृगः, कुर्कुरः, रात्रिजागरः, रसनालिट् (–लिह्), रतकीलः, रतशायी (–यिन्), रतव्रणः, रतान्दुकः, शालावृकः, मृगदंशः, श्वा (श्वन्) ॥

शेषश्चात्र—शुनि क्रोधी रसापायी शिवारिः सूचको रुरुः ।
वनंतपः स्वजातिद्विट् कृतज्ञो भल्लहश्च सः ॥
दीर्घनादः पुरोगामी स्यादिन्द्रमहकामुकः ।
मण्डलः कपिलो ग्राममृगश्चेन्द्रमहोऽपि च ॥"

६. 'रोगी कुत्ते'का १ नाम है—अलर्कः ॥

७. 'शिकारी कुत्ते'का १ नाम है—विश्वकद्रुः ॥

८. 'कुतिया'के २ नाम हैं—सरमा, शुनी ॥

९. 'ग्रामीण सूअर'का १ नाम है—विट्चरः (+ग्राम्यशूकरः) ॥

—१महिषो यमवाहनः ॥ ३४७ ॥
रजस्वलो वाहरिपुर्लुलायः सैरिभो महः ।
धीरस्कन्धः कृष्णश्रृङ्गो जरन्तो दंशभीरुकः ॥ ३४८ ॥
रक्ताक्षः कासरो हंसकालीतनयलालिकौ ।
२अरण्यजेऽस्मिन् गवलः ३सिंहः कण्ठीरवो हरिः ॥ ३४९ ॥
हर्यक्षः केसरीभारिः पञ्चास्यो नखरायुधः ।
महानादः पञ्चशिखः पारिन्द्रः पत्यरी मृगात् ॥ ३५० ॥
श्वेतपिङ्गोऽप्यथ४थ व्याघ्रो द्वीपी शार्दूलचित्रकौ ।
चित्रकायः पुण्डरीक५स्तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ ३५१ ॥
६शरभः कुञ्जरारातिरुत्पादकोऽष्टपादपि ।
७गवयः स्याद्वनगवो गोसदृक्षोऽश्ववारणः ॥ ३५२ ॥

---

१. 'भैंसे'के १५ नाम हैं—महिषः, यमवाहनः (+यमरथः), रजस्वलः, वाहरिपुः, लुलायः, सैरिभः, महः, धीरस्कन्धः, कृष्णश्रृङ्गः, जरन्तः, दंशभीरुकः, रक्ताक्षः, कासरः, हंसकालीतनयः, लालिकः ॥

शेषश्चात्र—महिषे कलुषः पिङ्गः कटाहो गद्गदस्वरः ।
हेरम्बः स्कन्धश्रृङ्गश्च ॥

२. 'जंगली भैंसे'का १ नाम है—गवलः ॥

३. 'सिंह'के १४ नाम हैं—सिंहः, कण्ठीरवः, हरिः, हर्यक्षः, केसरी (-रिन्), इभारिः, पञ्चास्यः, नखरायुधः, महानादः, पञ्चशिखः, पारिन्द्रः (+पारीन्द्रः), मृगपतिः, मृगारिः (यौ०—मृगराजः, मृगरिपुः……), श्वेतपिङ्गः ॥

शेषश्चात्र—"सिंहे तु स्यात्पलङ्कषः, ।
शैलाटो वनराजश्च नभःक्रान्तो गणेश्वरः ॥
श्रृङ्गोष्णीषो रक्तजिह्वो व्यादीर्णास्यः सुगन्धिकः ॥

४. 'बाघ'के ६ नाम हैं—व्याघ्रः, द्वीपी (-पिन्), शार्दूलः, चित्रकः, चित्रकायः, पुण्डरीकः ॥

५. 'तेंदुआ बाघ, या चिता'के २ नाम हैं—तरक्षुः, मृगादनः ॥

६. 'सिंहसे भी बलवान् पशुविशेष' या 'लड़ीसरा'के ४ नाम हैं—शरभः, कुञ्जरारातिः, उत्पादकः, अष्टपात् (-द् ।+अष्टपादः) ॥

७. 'लीलगाय, घोड़रोज'के ४ नाम हैं—गवयः, वनगवः, गोसदृक्षः, अश्ववारणः ॥

१खड्गी वाध्रीणसः खड्गो गण्डको२ऽथ किरः किरिः ।
भूदारः सूकरः कोलो वराहः क्रोडपोत्रिणौ ॥ ३५३ ॥
घोणी घृष्टिः स्तब्धरोमा दंष्ट्री किट्यास्यलाङ्गलौ ।
आखनिकः शिरोमर्मा स्थूलनासो बहुप्रजः ॥ ३५४ ॥
३भाल्लूके भालूकर्क्षाच्छभल्लभल्लूकभल्लुकाः ।
४सृगालो जम्बुकः फेरुः फेरण्डः फेरवः शिवा ॥ ३५५ ॥
घोरवासी भूरिमायो गोमायुर्मृगधूर्तकः ।
हूरवो भरुजः क्रोष्टा ५शिवाभेदेऽल्पके किखिः ॥ ३५६ ॥
६पृथौ गुण्डिवलोपाकौ ७कोकस्त्वीहामृगो वृकः ।
अरण्यश्वा ८मर्कटस्तु कपिः कीशः प्लवङ्गमः ॥ ३५७ ॥
प्लवङ्गः प्लवगः शाखामृगो हरिर्वलीमुखः ।
वनौका वानरो९ऽथासौ गोलाङ्गूलोऽसिताननः ॥ ३५८ ॥

---

१. 'गैंड़ा'के ४ नाम हैं—खड्गी (-खड्गिन्), वाध्रीणसः, खड्गः, गण्डकः ॥

२. 'सूअर'के १८ नाम हैं—किरः, किरिः, भूदारः, सूकरः, कोलः, वराहः क्रोडः, पोत्री (-त्रिन्), घोणी (-णिन्), घृष्टिः, स्तब्धरोमा (-मन्), दंष्ट्री (-ष्ट्रिन्), किटिः, आस्यलाङ्गलः, आखनिकः, शिरोमर्मा (-र्मन्), स्थूलनासः, बहुप्रजः ॥

शेषश्चात्र—"सूकरे कुमुखः कामरूपी च सलिलप्रियः ।
तलेक्षणो वक्रदंष्ट्रः पङ्कक्रीडनकोऽपि च ॥

३. 'भालू'के ६ नाम हैं—भाल्लूकः, भालूकः, ऋक्षः, अच्छभल्लः, भल्लूकः, भल्लुकः ॥

४. 'सियार, गीदड़'के १३ नाम हैं—सृगालः (+शृगालः), जम्बुकः, फेरुः, फेरण्डः, फेरवः, शिवा (स्त्री), घोरवासी (-सिन्), भूरिमायः, गोमायुः, मृगधूर्तकः, हूरवः, भरुजः, क्रोष्टा (-ष्टु) ॥

५.'छोटे स्यार या स्यारिन'का १ नाम है—किखिः (स्त्री) ॥

६. 'बड़े स्यार-विशेष'के २ नाम हैं—गुण्डिवः, लोपाकः ॥

७. 'भेंडिया,हुँड़ार'के ४ नाम हैं—कोकः, ईहामृगः, वृकः, अरण्यश्वा (-श्वन्) ॥

८. 'बन्दर'के ११ नाम हैं—मर्कटः, कपिः, कीशः, प्लवङ्गमः, प्लवङ्गः, प्लवगः, शाखामृगः, हरिः, बलीमुखः, बनौकाः (-कस्), वानरः ॥

९. 'काले मुखवाले बन्दर, लूंगूर'का १ नाम है—गोलाङ्गूलः ॥

१मृगः कुरङ्गः सारङ्गो वातायुहरिणावपि ।
२मृगभेदा रुरुन्यङ्कुरङ्कुगोकर्णशंवराः ॥ ३५९ ॥
चमूरुचीनचमराः समूरैणर्श्यरौहिषाः ।
कदली कन्दली कृष्णशारः पृषतरोहितौ ॥ ३६० ॥
३दक्षिणेर्मा तु स मृगो यो व्याधैर्दक्षिणे क्षतः ।
४वातप्रमीर्वातमृगः ५शशस्तु मृदुलोमकः ॥ ३६१ ॥
शूलिको लोमकर्णो६ऽथ शल्ये शललशल्यकौ ।
श्वाविच्च ७तच्छलाकायां शललं शलमित्यपि ॥ ३६२ ॥
८गोधा निहाका ९गौधेरगौधारौ दुष्टतत्सुते ।
१०गौधेयोऽन्यत्र—

---

१. 'मृग, हरिण'के ५ नाम हैं—मृगः कुरङ्गः, सारङ्गः, वातायुः, हरिणः ॥

शेषश्चात्र—"मृगे त्वजिनयोनिः स्यात् ।"

२. 'विभिन्न मृग (हरिण)-विशेषका १—१ नाम है—रुरुः, न्यङ्कुः, रङ्कुः, गोकर्णः, शंवरः, चमूरुः, चीनः, चमरः, समूरः, एणः, ऋश्यः, रौहिषः, कदली (स्त्री),कन्दली (स्त्री ।+२—लिन्), कृष्णशारः, पृषतः, रोहितः ॥

'कदली स्त्रियामयम्, यदाह—"कदली तु बिले शेते मृदुभल्लेव कर्बुरः । नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विंशत्यङ्गुलायता ॥"

३. 'व्याधासे दहने भागमें आहत मृग'का १ नाम है—दक्षिणेर्मा (—र्मन्) ॥

४. 'वायु'के सामने दौड़नेवाले (तेज) मृग-विशेष'के २ नाम हैं—वातप्रमीः, वातमृगः ॥

५. 'खरगोश'के ४ नाम हैं—शशः (+शशकः), मृदुलोमकः, शूलिकः, लोमकर्णः ॥

६. 'साही' (आकारमें लगभग बिल्लीके बराबर तथा सम्पूर्ण शरीरमें तेज काँटों से भरा हुआ जानवर)'के ४ नाम हैं—शल्यः, शललः, शल्यकः (पु न), श्वावित् (—विध्) ॥

७. 'पूर्वोक्त' साही' जानवरके काँटे'के २ नाम हैं—शललम् (त्रि), शलम् ॥

८. 'गोह'के २ नाम हैं—गोधा, निहाका (२ नि स्त्री) ॥

९. 'गोहके दुष्ट बच्चे'के २ नाम हैं—गौधेरः, गौधारः ॥

१०. 'गोह'के अदुष्ट (सूधे) बच्चे'का १ नाम है—गौधेयः ॥

—१मुसली गोधिकागोलिके गृहात् ॥ ३६३ ॥
माणिक्या भित्तिका पल्ली कुड्यमत्स्यो गृहोलिका ।
२स्यादञ्जनाधिका हालिन्यञ्जनिका हलाहलः ॥ ३६४ ॥
३स्थूलाञ्जनाधिकायान्तु ब्राह्मणी रक्तपुच्छिका ।
४कृकलासस्तु सरटः प्रतिसूर्यः शयानकः ॥ ३६५ ॥
५मूषिको मूषको वज्रदशनः खनकोन्दुरौ ।
उन्दुरुर्वृष आखुश्च सूच्यास्यो वृषलोचने ॥ ३६६ ॥
६छुच्छुन्दरी गन्धमूष्यां ७गिरिका बालमूषिका ।
८बिडाल ओतुर्मार्जारो ह्रीकुश्च वृषदंशकः ॥ ३६७ ॥
९जाहको गात्रसङ्कोची मण्डली १०नकुलः पुनः ।
पिङ्गलः सर्पहा बभ्रुः—

---

१. 'छिपकिली, बिछुतिया'के ८ नाम हैं—मुसली, गृहगोधिका, गृहगोलिका, माणिक्या, भित्तिका, पल्ली, कुड्यमत्स्यः, गृहोलिका ॥

२. 'बड़ी जातिकी छिपकिली'के ४ नाम हैं—अञ्जनाधिका, हालिनी, अञ्जनिका, हलाहलः ॥

३. 'ओटनी, लहटन' (एक कीड़ा, जो आकारमें छिपकिलीके समान, परन्तु उससे छोटा होता है उसकी पूँछ बहुत लाल होती है और शरीर सांपके समान चिकना तथा चमकीला होता है और वह छिपकिलीके समान दिवालों पर नहीं चलती, किन्तु प्रायः समतल भूमिपर ही चलती है)'के २ नाम हैं—ब्राह्मणी, रक्तपुच्छिका ॥

४. 'गिर्गिट'के ४ नाम हैं—कृकलासः, सरटः, प्रतिसूर्यः, शयानकः (+प्रतिसूर्यशयानकः) ॥

५. 'चूहे' मूस'के १० नाम हैं—मूषिकः (पु न), मूषकः, वज्रदशनः, खनकः, उन्दुरः, उन्दुरुः (+उन्दरः),वृषः, आखुः, (पु स्त्री), सूच्यास्यः, वृषलोचनः ॥

६. 'छुछुन्दर'के २ नाम हैं—छुच्छुन्दरी, गन्धमूषी ॥

७. 'चूहिया'के २ नाम हैं—गिरिका, बालमूषिका ॥

८. 'बिलाव'के ५ नाम हैं—विडालः, ओतुः, मार्जारः, ह्रीकुः, वृषदंशकः ॥

विमर्श—कुछ लोगोंने 'ह्रीकुः'को' 'वन बिलाव'का पर्याय माना है ॥

९. 'एक प्रकारके'बड़े बिलाव'के ३ नाम हैं—जाहकः, गात्रसंकोची (-चिन्), मण्डली (-लिन्) ॥

१०. 'नेवले'के ४ नाम हैं—नकुलः, पिङ्गलः, सर्पहा (-हन्), बभ्रुः ॥

—१सर्पोऽहिः पवनाशनः ॥ ३६८ ॥
भोगी भुजङ्गभुजगावुरगो द्विजिह्वव्यालौ भुजङ्गमसरीसृपदीर्घजिह्वाः ।
काकोदरो विषधरः फणभृत्पृदाकुर्दृक्कर्णकुण्डलिबिलेशयदन्दशूकाः ॥३६९॥
दर्वीकरः कञ्चुकिचक्रिगूढपात्पन्नगा जिह्मगलेलिहानौ ।
कुम्भीनसाशीविषदीर्घपृष्ठाः २स्याद्राजसर्पस्तु भुजङ्गभोजी ॥३७०॥
३चक्रमण्डल्यजगरः पारीन्द्रो वाहसः शयुः ।
४अलगर्दो जलव्यालः ५समौ राजिलदुण्डुभौ ॥ ३७१ ॥
६भवेत्तिलित्सो गोनासो गोनसो घोणसोऽपि च ।
७कुक्कुटाहिः कुक्कुटाभो वर्णेन च रवेण च ॥ ३७२ ॥
८नागाः पुनः काद्रवेयाः९स्तेषां भोगावती पुरी ।
१०शेषो नागाधिपोऽनन्तो द्विसहस्राक्ष आलुकः ॥ ३७३ ॥

---

१. 'सांप'के ३० नाम हैं—सर्पः, अहिः (पु स्त्री), पवनाशनः, भोगी (-गिन्), भुजङ्गः, भुजगः, उरगः, द्विजिह्वः, व्यालः, भुजङ्गमः, सरीसृपः, दीर्घजिह्वः, काकोदरः, विषधरः- फणभृत्, पृदाकुः, दृक्कर्णः (+गोकर्णः, चक्षुःश्रवाः-वस्), कुण्डली (-लिन्), बिलेशयः, दन्दशूकः, दर्वीकरः, कञ्चुकी (—किन्); चक्री (-क्रिन्), गूढपात् (-द्), पन्नगः, जिह्मगः, लेलिहानः; कुम्भीनसः, आशीविषः, दीर्घपृष्ठः ॥

२. 'राजसर्प (दुमुहां सांप के २ नाम हैं—राजसर्पः, भुजङ्गभोजी (-जिन्) ॥

३. 'अजगर'के ५ नाम हैं—चक्रमण्डली (-लिन्), अजगरः, पारीन्द्रः, वाहसः, शयुः ॥

४. 'जलमें रहनेवाले सांप'के २ नाम हैं—अलगर्दः (+अलीगर्दः), जलव्यालः ॥

५. 'डोंड़ साँप'के २ नाम हैं—राजिलः, दुण्डुभः (+दुन्दुभः) ॥

६. 'पनज जातिका सांप'के ४ नाम हैं—तिलित्सः, गोनासः, गोनसः, घोणसः ॥

७. 'मुर्गेके समान रंग तथा बोली वाले सांप' का १ नाम है-कुक्कुटाहिः।

८. 'नाग' (सामान्य सर्पोंसे भिन्न देव-योनि-विशेषवाले सर्पों'के २ नाम हैं—नागाः, काद्रवेयाः ॥

९. 'उन पूर्वोक्त देवयोनि-विशेष वाले सर्पों की नगरी'का १ नाम है—भोगावती ॥

१०. 'शेषनाग'के ५ नाम हैं—शेषः, नागाधिपः, अनन्तः, द्विसहस्राक्षः, आलुकः (+एककुण्डलः) ॥

१स च श्यामोऽथवा शुक्लः सितपङ्कजलाञ्छनः ।
२वासुकिस्तु सर्पराजः श्वेतो नीलसरोजवान् ॥ ३७४ ॥
३तक्षकस्तु लोहिताङ्गः स्वस्तिकाङ्कितमस्तकः ।
४महापद्मस्त्वतिशुक्लो दशबिन्दुकमस्तकः ॥ ३७५ ॥
५शङ्खस्तु पीतो बिभ्राणो रेखामिन्दुसितां गले ।
६कुलिकोऽर्द्धचन्द्रमौलिर्ज्वालाधूमसमप्रभः ॥ ३७६ ॥
७अथ कम्बलाश्वतरधृतराष्ट्रबलाहकाः ।
इत्यादयोऽपरे नागास्तत्तत्कुलसमुद्भवाः ॥ ३७७ ॥
८निर्मुक्तो मुक्तनिर्मोकः—

---

१. 'उक्त' शेषनाग'का वर्ण श्याम या श्वेत होता है तथा उसके मस्तकपर श्वेत कमलका चिह्न होता है ॥

२. जिस सर्प राजका वर्ण श्वेत होता है तथा उसके मस्तकपर श्वेत कमलका चिह्न होता सै, उसका १ नाम है—'वासुकिः' ॥

३. जिस सर्पका वर्ण लाल होता है तथा उसके मस्तकपर स्वस्तिकका चिह्न होता है, उस सर्पका १ नाम हैं—'तक्षकः' ॥

४. जिस सर्पका वर्ण अत्यन्त श्वेत होता है तथा उसके मस्तकपर दश बिन्दुरूप चिह्न होता है, उस सर्पका १ नाम है—'महापद्मः' ॥

५. जिस सर्प का वर्ण पीला होता है तथा उसके गले (कण्ठ) में चन्द्रमाके समान श्वेत वर्णकी रेखा होती है, उसका १ नाम है—शिङ्खः ॥

६. जिस सर्पका वर्ण ज्वाला तथा धूएँ के समान होता है तथा मस्तक पर अर्द्धचक्ररूप चिह्न रहता है, उसका १ नाम है—'कुलिकः' ॥

७. 'कम्बलः, अश्वतरः, धृतराष्ट्रः, बलाहकः' इन चार नाम वाले तथा उनके कुलमें उत्पन्न अन्य 'नाग विशेष' (महानीलः,······) हैं ॥

आदिग्रहणाद् महानीलादय, यदा—
"महानीलः करहश्व पुष्पदन्तश्च दुर्मुखः ।
कपिलो वर्मिनः शङ्करोमा चर वीरकः॥ १ ॥
एलापत्रः शुक्तिकर्ण–हस्तिभद्र–धनुञ्जयाः ।
दधिमुखः समानासोतंसर्को दधिपूरणः ॥ २ ॥
हरिद्रको दधिकर्णो मणिः शृङ्गारपिण्डकः ।
कालियः शङ्खकूटश्च चित्रकः शङ्खचूडकः ॥ ३ ॥
इत्यादयोऽपरे नागास्तत्तत्कुलप्रसू तयः ॥' इति ॥

८. 'काँचली (केंचुल) को छोड़े हुए सांप'के २ नाम हैं—निर्मुक्तः, मुक्तनिर्मोकः ॥

—१सविषा निर्विषाश्च ते ।

२नागाः स्युर्दृग्विषा ३लूमविषास्तु वृश्चिकादयः ।। ३७८ ।।

व्याघ्रादयो लोमविषा नखविषा नरादयः ।

लालाविषास्तु लूताद्याः कालान्तरविषाः पुनः ।। ३७९ ।।

मूषिकाद्या ४दूषीविषन्त्ववीर्यमौषधादिभिः ।

५कृत्रिमन्तु विषं चारं गरश्चोपविषञ्च तत् ।। ३८० ।।

६भोगोऽहिकायो ७दंष्ट्राशी=दर्वी भोगः फटः स्फटः ।

फणोऽ९हिकोशे तु निर्ल्वयनीनिर्मोककञ्चुकाः ।। ३८१ ।।

१०विहगो विहङ्गमखगौ पतगो विहङ्गः शकुनिः शकुन्तिशकुनौ विवयःशकुन्ताः।।
नभसङ्गमो विकिरपत्त्ररथौ विहायो द्विजपक्षिविष्किरपतत्रिपतत्पतङ्गाः ।।३८२।।

पित्सन्नीडाण्डजोऽगौका—

---

१. वे सांप सविष (विषयुक्त) तथा निर्विष (विषरहित) दो प्रकारके होते हैं ।।

२. 'नाग' दृष्टिविष होते हैं अर्थात् नाग जिसको देख लेते हैं, उसपर उसके विषका प्रभाव पड़ जाता है ।।

३. (अब प्रसङ्गप्राप्त अन्य जीवोंमेंसे किसे कहां विष होता है, इसका वर्णन करते हैं--(बिच्छू आदि के पूंछ (डंक) में, व्याघ्र आदिके लोमोंमें, मनुष्य-आदिके नखोंमें, मकड़ी आदिके लारमें विष होता है तथा चूहे आदि (कुत्ता, स्यार आदि) कालान्तर विषवाले होते हैं अर्थात् उनके विषका प्रभाव तत्काल न होकर कुछ दिनोंके बाद होता है ।।

४. जिसे औषध आदि (मंत्र-यन्त्र आदि)से दूर किया जा सकता है, उसका १ नाम 'दूषीविषम्' है ।।

५. औषध आदिके संयोगसे बनाये गये विषके ३ नाम हैं—चारम् , गरः, उपविषम् ।।

६. 'साँप के शरीर'का १ नाम है—भोगः ।।

७. 'सांपके दाँत (दाढ़—इसके काटनेसे प्राणी नहीं जी सकता है)'का १ नाम है—आशीः ।।

८. 'सांपके फणा'के ५ नाम हैं—दर्वी, भोगः, फटः, स्फटः, फणः (+ न । ३ पु स्त्री) ।।

९. कांचली' (केंचुल)के ४ नाम हैं—अहिकोशः, निर्ल्वयनी (+ निर्लयनी), निर्मोकः, कञ्चुकः (पु न) ।।

पञ्चेन्द्रिय जीवोंमें स्थलचर जीववर्णन समाप्त ।।

१०. ('स्थलचर' पञ्चेन्द्रिय जीवोंका पर्यायादि कहकर अब 'खचर' पञ्चेन्द्रिय (४।४०९तक) जीवोंका पर्यायादि कहते हैं । 'पक्षी, चिड़िया'के २५ नाम हैं—विहगः,

—१अञ्चुश्चञ्चूः सृपाटिका ।
त्रोटिश्च २पत्रं पतत्रं पिच्छं बाजस्तनूरुहम् ॥ ३८३ ॥
पक्षो गरुच्छदश्चापि ३पक्षमूलन्तु पक्षतिः ।
४प्रडीनोड्डीनसंडीनडयनानि नभोगतौ ॥ ३८४ ॥
५पेशीकोशोऽण्डे ६कुलायो नीडे ७केकी तु सर्पभुक् ।
मयूरबर्हिणौ नीलकण्ठो मेघसुहृच्छिखी ॥ ३८५ ॥
शुक्लापाङ्गोऽस्य वाक् केका—

विहङ्गमः, खगः, पतगः, विहङ्गः, शकुनिः, शकुन्तिः, शकुनः, विः, वयः, (-यस्), शकुन्तः, नभसङ्गमः, विकिरः, पत्ररथः, विहायः (-यस्), द्विजः, पक्षी (-क्षिन्), विष्किरः, पतत्त्री (-त्रिन् ।+पतत्रिः), पतन् (-तत्), पतङ्गः, पित्सन् (-सत्), नीडजः, अण्डजः, अगौकाः (-कस्) ॥

शेषश्चात्र—भवेत् पक्षिणि चञ्चुमान् ॥
कण्ठाग्निः, कीकसमुखो लोमकी रसनारदः ।
वारङ्ग-नाडीचरणौ ॥"

१. 'चोंच, ठोर'के ४ नाम हैं—चञ्चुः, चञ्चूः, सृपाटिका (+सृपाटी), त्रोटिः (सब स्त्री) ॥

२. 'पंख'के ८ नाम हैं—पत्त्रम्, पतत्त्रम्, पिच्छम् (+पिञ्छम्), वाजः, तनूरुहम् (पु न), पक्षः, गरुत्, छदः (२ पु न) ॥

३. 'पंखकी जड़'का १ नाम है—पक्षतिः ॥

४. 'पक्षियोंके उड़नेके गति-विशेष'का क्रमशः १—१ नाम है—प्रडीनम्, उड्डीनम्, संडीनम्, डयनम् (+नभोगतिः) ॥

५. 'अण्डे'के २ नाम हैं—पेशीकोशः (+पेशी, कोषः), अण्डम् (पु न) ॥

६. 'खोता, घोंसला'के २ नाम हैं—कुलायः, नीडः ॥

७. 'मोर'के ८ नाम हैं—केकी (-किन्), सर्पभुक् (-भुज्), मयूरः, बर्हिणः (+बर्ही,-र्हिन्), नीलकण्ठः, मेघसुहृत् (-द्), शिखी (-खिन् । यौ० शिखावलः), शुक्लापाङ्गः ॥

शेषश्चात्र—मयूरे चित्रपिङ्गलः ।
नृत्यप्रियः स्थिरमदः खिलखिल्लो गरव्रतः ।
मार्जारकण्ठो मरुको मेघनादानुलासकः ॥
मयुको बहुलग्रीवो नगावासश्च चन्द्रकी ।"

८. 'मोरकी बोली'का १ नाम है—केका ॥

—१पिच्छं बर्हं शिखण्डकः ।
प्रचलाकः कलापश्च २मेचकश्चन्द्रकः समौ ॥ ३८६ ॥
३वनप्रियः परभृतस्ताम्राक्षः कोकिलः पिकः ।
कलकण्ठः काकपुष्टः ४काकोऽरिष्टः सकृत्प्रजः ॥ ३८७ ॥
आत्मघोषश्चिरजीवी घूकारिः करटो द्विकः ।
एकदृग्बलिभुग्ध्वाङ्क्षो मौकुलिर्वायसोऽन्यभृत् ॥ ३८८ ॥
५वृद्धद्रोणदग्धकृष्णपर्वतेभ्यस्त्वसौ परः ।
वनाश्रयश्च काकोलो ६मद्गुस्तु जलवायसः ॥ ३८९ ॥
७घूके निशाटः काकारिः कौशिकोलूकपेचकाः ।
दिवान्धोऽ८थ निशावेदी कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ ३९० ॥
कृकवाकुस्ताम्रचूडो विवृताक्षः शिखण्डिकः ।

---

१. 'मोरके पङ्ख'के ५ नाम हैं—पिच्छम्, बर्हम् (पु न), शिखण्डकः प्रचलाकः, कलापः ॥

२. 'मोरके पङ्खके ऊपरी भागमें होनेवाले चन्द्राकार रंगीन चिह्नविशेष'के २ नाम हैं—मेचकः, चन्द्रकः ॥

३. 'कोयल'के ७ नाम हैं—वनप्रियः, परभृतः (+अन्यभृतः, परपुष्टः), ताम्राक्षः, कोकिलः (+कोकिला, स्त्री), पिकः, कलकण्ठः, काकपुष्टः ॥

शेषश्चात्र—"कोकिले तु मदोल्लापी काकजातो रतोद्वहः ।
मधुघोषो मधुकण्ठः सुधाकण्ठः कुहूमुखः ॥
घोषयित्नुः पोषयित्नुः कामतालः कुनालिकः" ।

४. 'कौवे'के १४ नाम हैं—काकः, अरिष्टः, सकृत्प्रजः, आत्मघोषः, चिरजीवी (- विन्), घूकारिः, करटः, द्विकः, एकदृक् (श्), बलिभुक् (-ज् । +बलिपुष्टः), ध्वाङ्क्षः, मौकुलिः, वायसः, अन्यभृत् ॥

५. 'विभिन्न जातीय कौवों'का १-१ नाम है—वृद्धकाकः, द्रोणकाकः (+द्रोणः), दग्धकाकः, कृष्णकाकः, पर्वतकाकः, वनाश्रयः, काकोलः ॥

६. 'जलकौवे'के २ नाम हैं—मद्गुः, जलवायसः ॥

७. 'उल्लू'के ७ नाम हैं—घूकः, निशाटः, काकारिः, कौशिकः, उलूकः, पेचकः, दिवान्धः ॥

८. 'मुर्गे'के ७ नाम हैं—निशावेदी (- दिन्), कुक्कुटः (पु न), चरणायुधः, कृकवाकुः, ताम्रचूडः, विवृताक्षः, शिखण्डिकः ॥

शेषश्चात्र—"कुक्कुटे तु दीर्घनादश्चर्मचूडो नखायुधः ।
मयूरचटकः शौण्डो रणेच्छुश्च कलाधिकः ॥
आरणी विष्किरो बोधिर्नन्दीकः पुष्टिवर्धनः ।
चित्रवाजो महायोगी स्वस्तिको मणिकण्ठकः ॥
उषाकीलो विशोकश्च ब्राजस्तु ग्रामकुक्कुटः ।

१हंसाश्चक्राङ्गवक्राङ्गमानसौकःसितच्छदाः ॥ ३९१ ॥
२राजहंसास्त्वमी चञ्चुचरणैरतिलोहितैः ।
३मल्लिकाक्षास्तु मलिनैः४र्धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ ३९२ ॥
५कादम्बास्तु कलहंसाः पक्षैः स्युरतिधूसरैः ।
६वारला वरला हंसी वारटा वरटा च सा ॥ ३९३ ॥
७दार्वाघाटः शतपत्रः ८खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ।
९सारसस्तु लक्ष्मणः स्यात्पुष्कराख्यः कुरङ्करः ॥ ३९४ ॥
१०सारसी लक्ष्मणा११ऽथ क्रुङ् क्रौञ्चे—

---

१. 'हंसों'के ५ नाम हैं—हंसाः, चक्राङ्गाः, वक्राङ्गाः, मानसौकसः (– कस्), सितच्छदाः ॥

शेषश्चात्र—"हंसेषु तु मरालाः स्युः ।"

२. 'अधिक लाल रंगके चोंच और पैरवाले हंसों'का १ नाम है—राजहंसः ॥

३. 'मलिन (धूमिल) चोंच तथा चरणोंवाले हंसों'का १ नाम है—मल्लिकाक्षाः ॥

४. 'काले रंगके चोंच तथा चरणोंवाले हंसों'का १ नाम है—धार्तराष्ट्राः ॥

५. 'अत्यन्त धूसर रंगके पंखोंवाले हंसों'के २ नाम हैं—कादम्बाः, कलहंसाः ॥

विमर्श—'राजहंस' (४।३९२) से यहाँ तक सब पर्यायोंमें बहुत्व अविवक्षित होनेसे एकवचनमें भी इन शब्दोंका प्रयोग होता है) ॥

६. 'हंसी'के ५ नाम हैं—वारला, वरला, हंसी, वारटा, वरटा ॥

७. 'कठफोरवा पक्षी'के २ नाम हैं—दार्वाघाटः, शतपत्रः ॥

८. 'खञ्जन (खँड़लिच) पक्षी'के २ नाम हैं—खञ्जरीटः, खञ्जनः ॥

९. 'सारस पक्षी'के ४ नाम हैं—सारसः, लक्ष्मणः, पुष्कराख्यः ('कमल'के वाचक सब पर्याय अतः—कमलः, जलजः,·········) कुरङ्करः ॥

शेषश्चात्र—"सारसे दीर्घजानुकः ।
गोनर्दो मैथुनी कामी श्येनाक्षो रक्तमस्तकः ॥

१०. सारसी' (मादा सारस पक्षी)'के २ नाम हैं—सारसी, लक्ष्मणा (+लक्ष्मणी) ॥

११. क्रौञ्च पक्षी'के २ नाम हैं—क्रुङ् (–ञ्च्), क्रौञ्चः (पु। क्रुञ्चा, स्त्री) ॥

—१चाषे किकीदिविः ।
२चातकः स्तोकको बप्पीहः सारङ्गो नभोऽम्बुपः ॥ ३६५ ॥
३चक्रवाको रथाङ्गाह्वः कोको द्वन्द्वचरोऽपि च ।
४टिट्टिभस्तु कटुक्वाणः उत्पादशयनश्च सः ॥ ३६६ ॥
५चटको गृहबलिभुक् कलविङ्कः कुलिङ्ककः ।
६योषित्तु तस्य चटका ७स्त्र्यपत्ये चटका तयोः ॥ ३६७ ॥
८पुम्पत्ये चाटकैरो ९दात्यूहे कालकण्टकः ।
जलरङ्कुर्जलरङ्को १०बके कह्वो बकोटवत् ॥ ३६८ ॥
११बलाहकः स्याद्बलाको १२बलाका विसकण्ठिका ।

---

१. 'चास पक्षी'के २ नाम हैं—चाषः, किकीदिविः (+किकिदीबिः, किकी, दिविः) ॥

२. 'चातक पक्षी'के ५ नाम हैं—चातकः, स्तोकक:, बप्पीहः, सारङ्गः, नभोऽम्बुपः ॥

३. 'चकवा पक्षी'के ३ नाम हैं—चक्रवाकः, रथाङ्गाह्वः ('पहिया'के वाचक सब नाम, अतः—रथाङ्गः, चक्रः,.......), कोकः, द्वन्द्वचरः ॥

४. 'टिटिहिरी पक्षी'के ३ नाम हैं—टिट्टिभः (+टीटिभः), कटुक्वाणः, उत्पादशयनः ॥

५. 'गौरेया पक्षी'के ४ नाम हैं—चटकः, गृहबलिभुक् (– ज्), कलविङ्कः, कुलिङ्ककः (+कुलिङ्गः) ॥

६, 'मादा गौरैया पक्षी (गौरैया पक्षी की स्त्री)'का १ नाम है—चटका ॥

७. 'उन दोनोंकी मादा सन्तान (स्त्रीजातीय बच्चे)'का १ नाम है—चटका ॥

८. 'उन दोनोंकी नर सन्तान (पुरुष जातीय बच्चे)'का १ नाम है—चाटकैरः ॥

९. 'जलकौवा'के ४ नाम हैं—दात्यूहः (+दात्योहः), कालकण्टकः (+कालकण्ठकः), जलरङ्कुः, जलरङ्कः ॥

१०. 'बगुले'के ३ नाम हैं—बकः, कह्वः, बकोटः ॥

११. 'बगलाजातीय पक्षि-विशेष,या 'बाक' पक्षी'के २ नाम हैं—बलाहकः, बलाकः (पु + नि स्त्री) ॥

१२. 'बगली, बगलेकी स्त्री'के २ नाम हैं—बलाका, विसकण्ठिका (+विसकण्ठका, बकेरुका) ॥

१भृङ्गः कलिङ्गो धूम्याटः २कङ्कस्तु कमनच्छदः ॥ ३९९ ॥
लोहपृष्ठो दीर्घपादः कर्कटः स्कन्धमल्लकः ।
३चिल्लः शकुनिरातापी ४श्येनः पत्त्री शशादनः ॥ ४०० ॥
५दाक्षाय्यो दूरदृग्गृध्रो६ऽथोत्क्रोशो मत्स्यनाशनः ।
कुररः ७कीरस्तु शुको रक्ततुण्डः फलादनः ॥ ४०१ ॥
८शारिका तु पीतपादा गोराटी गोकिराटिका ।
९स्याच्चर्मचटकायान्तु जतुकाऽजिनपत्त्रिका ॥ ४०२ ॥
१०वल्गुलिका मुखविष्ठा परोष्णी तैलपायिका ।
११कर्करेटुः करेटुः स्यात्करटुः कर्कराटुकः ॥ ४०३ ॥
१२आटिरातिः शरारिः स्यात् १३कुकणाक्रकरौ समौ ।

---

१. 'भुजङ्गा पक्षी' के ३ नाम हैं—भृङ्गः, कलिङ्गः, धूम्याटः ॥

२. 'कङ्क पक्षी'के ६ नाम हैं—कङ्कः, कमनच्छदः, लोहपृष्ठः, दीर्घपादः, कर्कटः, स्कन्धमल्लकः ॥

३. 'चील पक्षी'के ३ नाम हैं—चिल्लः, शकुनिः, आतापी (–पिन् । + आतायी—यिन्) ॥

४. 'बाज पक्षी'के ३ नाम हैं—श्येनः, पत्री (—त्रिन्), शशादनः ॥

५. गीध'के ३ नाम हैं—दाक्षाय्यः, दूरदृक् (–दृश्), गृध्रः ॥
शेषश्चात्र—"गृध्रे तु पुरुषव्याघ्रः कामायुः कूणितेक्षणः । सुदर्शनः शकुन्याजौ ।"

६. कुरर पक्षी'के ३ नाम हैं—उत्क्रोशः, मत्स्यनाशनः, कुररः ॥

७. 'सुग्गे, तोते'के ४ नाम हैं—कीरः, शुकः, रक्ततुण्डः, फलादनः (+मेधावी–विन्) ॥

शेषश्चात्र—"शुके तु प्रियदर्शनः ॥ श्रीमान् मेधातिथिर्वाग्मी ।"

८. 'मैना पक्षी'के ४ नाम हैं—शारिका, पीतपादा, गोराटी, गोकिराटिका (+गोकिराटी) ॥

९. 'चमगादड़'के ३ नाम हैं—चर्मचटका, जतुका, अजिनपत्त्रिका ॥

१०. 'चपड़ा नामक कीट–विशेष'के ४ नाम हैं—वल्गुलिका, मुखविष्ठा, परोष्णी, तैलपायिका (+निशाटनी) ॥

११. 'एक प्रकारके सारसजातीय पक्षी'के ४ नाम हैं—कर्करेटुः, करेटुः, करटुः, कर्कराटुकः, (+कर्कराटुः) ॥

१२ 'आडी पक्षी'के ३ नाम हैं—आटिः, आतिः, शरारिः (सब स्त्री) ॥

१३. 'तीतरकी जातिके पक्षी,या अशुभ बोलनेवाले पक्षि–विशेष'के २ नाम हैं—कृकणः, क्रकरः ॥

१भासे शकुन्तः २कोयष्टौ शिखरी जलकुक्कुभः ॥ ४०४ ॥
३पारापतः कलरवः कपोतो रक्तलोचनः ।
४ज्योत्स्नाप्रिये चलचञ्चुचकोरविषसूचकाः ॥ ४०५ ॥
५जीवंजीवस्तु गुन्द्रालो विषदर्शनमृत्युकः ।
६व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः ७प्लवस्तु गात्रसंप्लवः ॥ ४०६ ॥
८तित्तिरिस्तु खरकोणो ९हारीतस्तु मृदङ्कुरः ।
१०कारण्डवस्तु मरुलः ११सुगृहश्चञ्चुसूचिकः ॥ ४०७ ॥
१२कुम्भकारकुक्कुटस्तु कुक्कुभः कुहकस्वनः ।
१३पक्षिणा येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये स दीपकः ॥ ४०८ ॥

---

१. 'भास पक्षी'के २ नाम हैं—भासः, शकुन्तः ॥

२. 'एक जलचारी पक्षि-विशेष'के ३ नाम हैं—कोयष्टिः, शिखरी (-रिन्), जलकुक्कुभः ॥

३. 'कबूतर'के ४ नाम हैं—पारापतः (+पारावतः), कलरवः, कपोतः, रक्तलोचनः ॥

४. 'चकोर पक्षी'के ४ नाम हैं—ज्योत्स्नाप्रियः, चलचञ्चुः, चकोरः, विषसूचकः ॥

विमर्श—विषमिश्रित अन्नादि देखनेसे चकोरकी आँखोंका रंग बदल जाता है, अत एव इसका नाम 'विषसूचक' पड़ा है ॥[1]

५. 'जीवंजीव'नामक पक्षि-विशेष,या चकोर विशेष'के ३ नाम हैं—जीवंजीवः, गुन्द्रालः, विषदर्शनमृत्युकः ॥

६. 'भरद्वाज (भरदुल) पक्षी'के २ नाम हैं—व्याघ्राटः, भरद्वाजः ॥

७. 'जलमुर्गा या कारण्डव पक्षी (कागके समान चोंच तथा लम्बे पैर या काले रंग के पक्षी'के २ नाम हैं—प्लवः, गात्रसंप्लवः ॥

८. 'तीतर'के २ नाम हैं—तित्तिरिः, खरकोणः ॥

९. 'हारिल, हारीत पक्षी'के २ नाम हैं—हारीतः, मृदङ्कुरः ॥

१०. 'बत्तख या एक प्रकार के हंसजातीय पक्षी'के २ नाम हैं—कारण्डवः, मरुलः ॥

११. 'बया पक्षी'के २ नाम हैं—सुगृहः, चञ्चुसूचिकः ॥

१२. 'वनमुर्गा पक्षी'के ३ नाम हैं—कुम्भकारकुक्कुटः, कुक्कुभः, कुहकस्वनः ॥

१३. 'जिस पक्षीके द्वारा दूसरी पक्षी पकड़े जाते हैं, उस (बाज आदि) पकड़नेवाले पक्षी'का १ नाम है—दीपकः ॥

---

१. तदुक्तम्—"चकोरस्य विरज्येते नयने विषदर्शनात् ॥"

१छेका गृह्याश्च ते गेहासक्ता ये मृगपक्षिणः ।
२मत्स्यो मीनः पृथुरोमा झषो वैसारिणोऽण्डजः ॥ ४०९ ॥
सङ्घचारी स्थिरजिह्व आत्माशी स्वकुलक्षयः ।
विसारः शकली शल्की शंवरोऽनिमिषस्तिमिः ॥ ४१० ॥
३सहस्रदंष्ट्रे वादालः ४ पाठीने चित्रवल्लिकः ।
५शकुले स्यात् कलको६ऽथ गडकः शकुलार्भकः ॥ ४११ ॥
७उलूपी शिशुके ८प्रोष्ठी शफरः श्वेतकोलके ।
९नलमीनश्चिलिचिमो १०मत्स्यराजस्तु रोहितः ॥ ४१२ ॥
११मद्गुरस्तु राजशृङ्गः १२शृङ्गी तु मद्गुरप्रिया ।

---

१. 'पालतू पशु-पक्षियों'के २ नाम हैं—छेकाः, गृह्याः ॥

पञ्चेन्द्रिय जीववर्णनमें खचर जीव वर्णन समाप्त ॥

२. (आकाशगामी पञ्चेन्द्रिय जीवोंका पर्याय कहकर अब जलचर पञ्चेन्द्रिय जीवों का पर्याय कहते हैं—) ॥ 'मछली'के १६ नाम हैं—मत्स्यः (+मत्सः), मीनः, पृथुरोमा (-मन्), झषः, वैसारिणः, अण्डजः, सङ्घचारी (-रिन्), स्थिरजिह्वः, आत्माशी (-शिन्), स्वकुलक्षयः, विसारः, शकली (-लिन्), शल्की (-ल्किन्), संवरः, अनिमिषः, तिमिः ॥

शेषश्चात्र—"मत्स्ये तु जलपिप्पकः । मूको जलाशयः शेवः ॥

३. 'पहिना मछली, बोदाक'के २ नाम हैं—सहस्रदंष्ट्रः, बादालः ॥

शेषश्चात्र—"सहस्रदंष्ट्रस्त्वेतनः । जलवालो वदालः ॥

४. 'पाठीन मछली'के २ नाम हैं—पाठीनः, चित्रवल्लिकः, ॥

शेषश्चात्र—"अथ पाठीने मृदुपाठकः ।"

५. 'सहरी मछली'के २ नाम हैं—शकुलः, कलकः ॥

६. 'गडुई मछली'के २ नाम हैं—गडकः, शकुलार्भकः ॥

७. 'सूंस'के २ नाम हैं—उलूपी (उलूपी (-पिन् ।+उलुपी, उलपी, २-पिन्), शिशुकः (+शिशुमारकः) ।।

८. 'सौरी मछली'के ३ नाम हैं—प्रोष्ठी (-ष्ठिन्), शफरः, (पु स्त्री), श्वेतकोलकः ॥

९. 'अधिकतर नरसलमें रहनेवाली मछली'के २ नाम हैं—नलमीनः (+नडमीनः), चिलिचिमः, (+चिलिचीमः) ॥

१०. 'रोहू मछली'के २ नाम हैं—मत्स्यराजः, रोहितः ॥

११. 'मांगुर, मोंगदरा मछली'के २ नाम हैं—मद्गुरः, राजशृङ्गः ॥

१२. 'सिन्धी मछली (मादा जातिकी मांगुर मछली)'के २ नाम हैं—शृङ्गी, मद्गुरप्रिया ॥

१क्षुद्राण्डमत्स्यजातन्तु पोताधानं जलाणुकम् ॥ ४१३ ॥
२महामत्स्यास्तु चीरिल्लितिमिङ्गिलगिलादयः ।
३अथ यादांसि नक्राद्या हिंसका जलजन्तवः ॥ ४१४ ॥
४नक्रः कुम्भीर आलास्यः कुम्भी महामुखोऽपि च ।
तालुजिह्वः शङ्कमुखो गोमुखो जलसूकरः ॥ ४१५ ॥
५शिशुमारस्त्वम्बुकूर्म उष्णवीर्यो महावसः ।
६उद्रस्तु जलमार्जारः पानीयनकुलो वसी ॥ ४१६ ॥
७ग्राहे तन्तुस्तन्तुनागोऽवहारो नागतन्तुणौ ।
८अन्येऽपि यादोभेदाः स्युर्बहवो मकरादयः ॥ ४१७ ॥
९कुलीरः कर्कटः पिङ्गचक्षुः पार्श्वोदरप्रियः ।
द्विधागतिः षोडशांह्रिः कुरचिल्लो बहिश्चरः ॥ ४१८ ॥

---

१. 'जीरा (अण्डेसे निकली हुई बहुत-सी छोटी-छोटी मछलियोंका समुदाय—जिन्हें 'मत्स्यबीज' भी कहते हैं, उस)'के २ नाम हैं—पोताधानम्, जलाणुकम् ॥

२. 'बहुत बड़ी-बड़ी मछलियों'का पृथक् १–१ नाम है—वे–'चीरिल्लिः, तिमिङ्गिलगिलः' इत्यादि (नन्द्यावर्तः,…………) हैं ॥

३. 'मगर आदि हिंसक जलचर जीवों'का १ नाम है—यादांसि (–दस् न) ॥

४. (वे 'यादस्' अर्थात् हिंसक जलचर जीव ये हैं—) 'नक्र, मगर, घड़ियाल'के ६ नाम हैं–नक्रः, कुम्भीरः, आलास्यः, कुम्भी (–म्भिन्), महामुखः, तालुजिह्वः, शङ्कमुखः (+शङ्कुमुखः), गोमुखः, जलसूकरः ॥

५. 'सूंस'के ४ नाम हैं—शिशुमारः, अम्बुकूर्मः, उष्णवीर्य, महावसः ॥

६. 'जलबिलाव'के ४ नाम हैं—उद्रः, जलमार्जारः, पानीयनकुलः, वसी (–सिन्) ॥

७. 'ग्राह या मगर'के ६ नाम हैं—ग्राहः, तन्तुः, तन्तुनागः, अवहारः, नागः, तन्तुणः, (+ वरुणपाशः) ॥

८. अन्य भी हिंसक जलचर जीवोंके मकरः,……('आदि'से 'शङ्कुफणी, शिन्,…………') भेद हैं ॥

९. 'केकड़े'के ८ नाम हैं—कुलीरः (पु न), कर्कटः (+कर्कः), पिङ्गचक्षुः, (–क्षुष्), पार्श्वोदरप्रियः, द्विधागतिः, षोडशांह्रिः, कुरचिल्लः, बहिश्चरः ॥

१कच्छपः कमठः कूर्मः क्रोडपादश्चतुर्गतिः ।
पञ्चाङ्गगुप्तदौलेयौ जीवथः २कच्छपी दुली ॥ ४१९ ॥
३मण्डूके हरिशालूरप्लवभेकप्लवङ्गमाः ।
वर्षाभूः प्लवगः शालुरजिह्वव्यङ्गदर्दुराः ॥ ४२० ॥
४स्थले नरादयो ये तु ते जले जलपूर्वकाः ।
५अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः ६पोतजाः कुञ्जरादयः ॥ ४२१ ॥
७रसजा मद्यकीटाद्या ८नृगवाद्या जरायुजाः ।
९यूकाद्याः स्वेदजा १०मत्स्यादयः सम्मूर्च्छनोद्भवाः ॥ ४२२ ॥
११खञ्जनास्तूद्भिदो—

---

१. 'कछुए'के ८ नाम हैं—कच्छपः, कमठः, कूर्मः, क्रोडपादः, चतुर्गतिः, पञ्चाङ्गगुप्तः, दौलेयः, जीवथः, (+उहारः) ॥

२. 'मादा (स्त्री-जातीय कछुआ, कछुई)के २ नाम हैं—कच्छपी, दुली ॥

३. 'मेंढक, बेंग'के १२ नाम हैं—मण्डूकः, हरिः, शालूरः, प्लवः, भेकः, प्लवङ्गमः, वर्षाभूः (पु), प्लवगः, शालुः, अजिह्वः, व्यङ्गः, दर्दुरः ॥

४. स्थलचारी जितने नर आदि (स्थलनरः, स्थलहस्ती (स्तिन्),··· जीव हैं, वे पूर्व में ('स्थल' शब्दके स्थानमें)'जल' शब्द जोड़नेसे 'जलनरः, जलहस्ती (-स्तिन्), जलतुरङ्गः,······उन्हीं जलचर जीवोंके पर्याय हो जाते हैं ॥

५. 'पक्षी, सांप, आदि ('आदि'से 'मछली, इत्यादि) जीव 'अण्डजाः' अर्थात् अण्डेसे उत्पन्न होनेवाले हैं ॥

६ 'हाथी आदि ('आदि'से साही, इत्यादि जीव 'पोतजाः' अर्थात् जरायुरहित गर्भ से उत्पन्न होनेवाले हैं ॥

७. मद्यके कीड़े आदि ('आदि'से घी, इक्षुरस, इत्यादि) जीव 'रसजाः' अर्थात् 'रस'से उत्पन्न होनेवाले हैं ॥

८. 'मनुष्य, गौ, आदि ('आदि'से भैंसा, सूअर, अज इत्यादि) जीव 'जरायुजाः' अर्थात् गर्भसे उत्पन्न होनेवाले हैं ॥

९. 'जूं, आदि ('आदि'से खटमल, मच्छड़, इत्यादि) जीव 'स्वेदजाः' अर्थात् पसीनेसे उत्पन्न होनेवाले हैं ॥

१०. मछली आदि ('आदि'से सांप इत्यादि) जीव 'संमूर्च्छनोद्भवाः' अर्थात् 'संमूर्च्छन' (सघन होने, अधिक बढ़ने से) उत्पन्न होने वाले हैं ॥

११. 'खञ्जन' इत्यादि ('आदि'से टिड्डी, फतिंगे, इत्यादि) जीव 'उद्भिदः' (-भिद्) अर्थात् पृथ्वी के भीतरसे उत्पन्न होने वाले हैं ॥

१ऽथोपपादुका देवनारकाः ।
२त्रसयोनय इत्यष्टा३वुद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ४२३ ॥

इत्याचार्यहेमचन्द्रविरचितायाम् "अभिधानचिन्तामणि-
नाममालायां" चतुर्थस्तिर्यक्काण्डः
समाप्तः ॥ ४ ॥

---

१. देव तथा नारक अर्थात् देवता तथा नरकवासी जीव 'उपपादुकाः' अर्थात् स्वयमेव उत्पन्न होनेवाले हैं ॥

२. ये ८ (अण्ड, पोत, रस, जरायु, स्वेद, सम्मूर्च्छन, उद्भिद् और उपपादुक) 'त्रसयोनयः' अर्थात् जीवोंके उत्पत्तिस्थान हैं ॥

३. 'उद्भिद्' (पृथ्वीको फोड़कर पैदा होनेवले वृक्ष, लता, धान्य आदि) के ३ नाम हैं—उद्भिद् , उद्भिज्जम्, उद्भिदम् ॥

इस प्रकार साहित्य-व्याकरणाचार्यादिपदविभूषितमिश्रोपाह्व श्रीहरगो
विन्दशास्त्रिविरचित 'मणिप्रभा' व्याख्या में चतुर्थ
'तिर्यक्काण्ड' समाप्त हुआ ॥ ४ ॥

अथ नारककाण्डः ॥५॥

१स्युर्नारकास्तु परेतप्रेतयात्यातिवाहिकाः ।
२आजूर्विष्टिः३र्यातना तु कारणा तीव्रवेदना ॥१॥
४नरकस्तु नारकः स्यान्निरयो दुर्गतिश्च सः ।
५घनोदधिघनवाततनुवातनभःस्थिताः ॥ २ ॥
६रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमःप्रभाः ।
महातमःप्रभा चेत्यधोऽधो नरकभूमयः ॥ ३ ॥
क्रमात्पृथुतराः सप्ता७थ त्रिंशत्पञ्चविंशतिः ।
पञ्चदश दश त्रीणि लक्षाण्यूनञ्च पञ्चभिः ॥ ४ ॥
लक्षं पञ्च च नरकावासाः सीमन्तकादयः ।
एतासु स्युः क्रमेण—

---

१. 'नारकीयों (नरकवासियों)'के ५ नाम हैं—नारकाः (यौ०—नारकिकाः, नैरयिकाः, नारकीयाः,······), परेताः, प्रेताः, यात्याः, अतिवाहिकाः ॥

२. 'नरकमें बलपूर्वक फेंकने या ढकेलने'के २ नाम हैं—आजूः, विष्टिः (२ स्त्री) ॥

३. 'नरकके घोर कष्ट'के ३ नाम हैं—यातना, कारणा, तीव्रवेदना ॥

४. 'नरक'के ४ नाम हैं नरकः, नारकः, निरयः, दुर्गतिः (स्त्री पु) ॥

५. 'आकाशमें स्थित नरकोंके तीनों वायु'के १-१ नाम हैं—घनोदधिः, घनवातः, तनुवातः ॥

६. 'रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, महातमःप्रभा' ये ७ नरकभूमि क्रमशः एक दूसरीसे बड़ी तथा नीचे-नीचे स्थित हैं ।

शेषश्चात्र—"अथ रत्नप्रभा घर्मा वंशा तु शर्कराप्रभा ।
स्याद्वालुकाप्रभा शला भवेत्पङ्कप्रभाऽञ्जना ॥
धूमप्रभा पुनः रिष्टा माधव्या तु तमःप्रभा ।
महातमःप्रभा माधव्येवं नरकभूमयः ॥"

७. पूर्वोक्त (५।३-४) 'रत्नप्रभा,······' सात नरकभूमियोंमें तीस लाख, पच्चीस लाख, पन्द्रह लाख, दश लाख, तीन लाख, पाँच कम एक लाख (निन्यानबे हजार नौ सौ पंचानबे और केवल पांच (सब योग चौरासी लाख),

१थ पातालं वडवामुखम् ॥ ५ ॥
बलिवेश्माधोभुवनं नागलोको रसातलम् ।
२रन्ध्रं बिलं निर्व्यथनं कुहरं शुषिरं शुषिः ॥ ६ ॥
छिद्रं रोपं विवरं च निम्नं रोकं वपान्तरम् ।
३गर्तश्वभ्रावटागाधदरास्तु विवरे भुवः ॥ ७ ॥

इत्याचार्यहेमचन्द्रविरचितायाम् "अभिधानचिन्तामणि-
नाममालायां" प[ञ्च]मो नारककाण्डः
समाप्तः ॥ ५ ॥

सीमन्तक आदि ('आदि'से 'रौद्र, हाहारव, घातन,……') नरकावास (रत्नप्रभा पृथिवीके प्रथम प्रतरका मध्यवर्ती नरककेन्द्र) होते हैं ।

१. 'पाताल'के ६ नाम हैं—पातालम्, वडवामुखम्, बलिवेश्म (-श्मन्), अधोभुवनम्, नागलोकः, रसातलम् (+रसा, तलम्) ॥

२. 'बिल, छिद्र'के १३ नाम हैं—रन्ध्रम्, बिलम्, निर्व्यथनम्, कुहरम्, शुषिरम्, शुषिः (स्त्री । + पु । + सुषिरम्), छिद्रम्, रोपम्, विवरम्, निम्नम्, रोकम्, वपा, अन्तरम् ॥

३. 'गढे'के ५ नाम हैं—गर्तः, श्वभ्रम्, अवटः, अगाधः, दरः (त्रि) ॥

इस प्रकार साहित्यव्याकरणाचार्यादिदिपदविभूषितमिश्रोपाह्व [श्री]हरगोविन्द
शास्त्रिविरचित 'मणिप्रभा' व्याख्यामें पञ्चम
'नारककाण्ड' समाप्त हुआ ॥ ५ ॥

अथ सामान्यकाण्डः ॥६॥

१स्याल्लोको विष्टपं विश्वं भुवनं जगती जगत् ।
२जीवाजीवाधारक्षेत्रं लोकोऽलोकस्ततोऽन्यथा ॥ १ ॥
३क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषश्चेतनः ४स पुनर्भवी ।
जीवः स्यादसुमान् सत्त्वं देहभृज्जन्युजन्तवः ॥ २ ॥
५उत्पत्तिर्जन्मजनुषी जननं जनिरुद्भवः ।
६जीवेऽसुजीवितप्राणा ७जीवातुर्जीवनौषधम् ॥ ३ ॥
८श्वासस्तु श्वसितं ९सोऽन्तर्मुख उच्छ्वास आहरः ।
आनो—

---

१. (मुक्त देवाधिदेव तथा चार गतियोंवाले देव, मर्त्य, तिर्यञ्च और नारक असाधारण अङ्गोंके साथ पाँच काण्डोंमें कह चुके हैं, अब तत्साधारणको कहनेवाला यह षष्ठ काण्ड कह रहे हैं—) 'लोक'के ६ नाम हैं—लोकः, विष्टपम् (पु न), विश्वम् , भुवनम् (पु न), जगती, जगत् (न) ॥

२. 'जीवों' (एकेन्द्रिय आदि प्राणियों) तथा 'अजीवों' (उन जीवोंसे भिन्न धर्मास्तिकाय आदि प्राणियों के आधारभूत क्षेत्र का 'लोक' १ नाम है और उस लोकसे भिन्न आकाशादि रूप का 'अलोकः' १ नाम है ॥

३. 'आत्मा'के ४ नाम हैं—क्षेत्रज्ञः, आत्मा (– त्मन् पु), पुरुषः, चेतनः (+जीवः) ॥

४. 'जीवात्मा'के ७ नाम हैं—भवी (– विन्), जीवः, असुमान् (– मत् । प्राणी, – णिन्), सत्त्वम् (पु न), देहभृत् (+देहभाक् , – ज् ; शरीरी, – रिन् ;········), जन्युः, जन्तुः (पु न । शेष पु) ॥

५. 'जन्म, उत्पत्ति'के ६ नाम हैं—उत्पत्तिः, जन्म (– मन् ।+जन्मम्), जनुः (– नुस् । २ न), जननम् , जनिः (स्त्री), उद्भवः ॥

६. 'प्राण'के ४ नाम हैं—जीवः (त्रि), असवः (– सु, पु ब० व०), जीवितम् (+जीवातुः), प्राणाः (पु ब० व०) ॥

७. 'जीवन-रक्षाके उपाय'के २ नाम हैं—जीवातुः (पु न), जीवनौषधम् ॥

८. 'श्वास, साँस'के २ नाम हैं—श्वासः, श्वसितम् ॥

९. 'अन्तर्मुख (मध्य वृत्तिवाले) उस श्वास'के ३ नाम हैं—उच्छ्वासः, आहरः, आनः ॥

—१बहिर्मुखस्तु स्यान्निःश्वासः पान एतनः ॥ ४ ॥
२आयुर्जीवितकालो३ऽन्तःकरणं मानसं मनः ।
हृच्चेतो हृदयं चित्तं स्वान्तं गूढपथोच्चले ॥ ५ ॥
४मनसः कर्म सङ्कल्पः स्या५द्धर्मो शर्म निर्वृतिः ।
सातं सौख्यं सुखं ६दुःखन्त्वसुखं वेदना व्यथा ॥ ६ ॥
पीडा बाधाऽर्त्तिराभीलं कृच्छ्रं कष्टं प्रसूतिजम् ।
आमनस्यं प्रगाढञ्च ७स्यादाधिर्मानसी व्यथा ॥ ७ ॥
८सपत्राकृतिनिष्पत्राकृती त्वत्यन्तपीडने ।
९क्षुज्जाठराग्निजा पीडा १०व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ॥ ८ ॥
११उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्या १२च्चर्चा सङ्ख्या विचारणा ।
१३वासना भावना संस्कारोऽनुभूताद्यविस्मृतिः ॥ ९ ॥

---

१. 'बहिर्मुख (बाहर निकलनेवाले) उस श्वास'के ३ नाम हैं—निःश्वासः, पानः, एतनः ॥

२. 'आयु (उम्र)'के २ नाम हैं—आयुः (- युस्, न । + आयु - यु, पु), जीवितकालः ॥

३. 'अन्तःकरण, हृदय'के १० नाम हैं—अन्तःकरणम्, मानसम्, मनः (- नस्), हृत् (- द्), चेतः (तस्), हृदयम्, चित्तम्, स्वान्तम्, गूढपथम्, उच्चलम् (+ अनिन्द्रियम्) ॥

४. 'मानसिक कर्म'का १ नाम है—सङ्कल्पः (+ विकल्पः) ॥

५. 'सुख'के ५ नाम हैं—शर्म (- र्मन्, पु । + शर्मम्), निर्वृतिः, सातम्, सौख्यम्, सुखम् ॥

६. 'दुःख'के १३ नाम हैं—दुःखम्, असुखम्, वेदना, व्यथा, पीडा, बाधा (+ बाधः), अर्तिः, आभीलम्, कृच्छ्रम्, कष्टम्, प्रसूतिजम्, आमनस्यम्, प्रगाढम् ॥

७. 'मानसिक पीडा'का १ नाम है—आधिः (पु) ॥

८. 'अत्यधिक पीडा'के २ नाम हैं—सपत्राकृतिः, निष्पत्राकृतिः ॥

९. 'भूख'का १ नाम है—क्षुत् (- ध् । + क्षुधा) ॥

१०. 'किसीके साथ द्रोह करनेके विचार'का १ नाम है—व्यापादः ॥

११. 'पहले होनेवाले ज्ञान'का १ नाम है—उपज्ञा । (यथा—पाणिनिकी, उपज्ञा (अष्टाध्यायी 'सूत्रपाठ'······) ॥

१२. 'चर्चा'के ३ नाम हैं—चर्चा (+ चर्चः), सङ्ख्या, विचारणा ॥

१३. 'संस्कार (पहले अनुभूत, दृष्ट या श्रुत विषयके स्मरण होने)'के ३ नाम हैं —वासना, भावना, संस्कारः ॥

१निर्णयो निश्चयोऽन्तः २सम्प्रधारणा समर्थनम् ।
३अविद्याऽहंमत्यज्ञाने ४भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥ १० ॥
५सन्देहद्वापराऽऽरेका विचिकित्सा च संशयः ।
६परभागो गुणोत्कर्षो ७दोषे त्वादीनवास्रवौ ॥ ११ ॥
८स्वाद्रूपं लक्षणं भावश्चात्मप्रकृतिरीतयः ।
सहजो रूपतत्त्वञ्च धर्मः सर्गो निसर्गवत् ॥ १२ ॥
शीलं सतत्त्वं संसिद्धि९रवस्था तु दशा स्थितिः ।
१०स्नेहः प्रीतिः प्रेमहार्दे ११दाक्षिण्यन्त्वनुकूलता ॥ १३ ॥
१२विप्रतिसारोऽनुशयः पश्चात्तापोऽनुतापश्च ।
१३अवधानसमाधानप्रणिधानानि तु समाधौ स्युः ॥ १४ ॥
१४धर्मः पुण्यं वृषः श्रेयः सुकृते—

---

१. 'निर्णय'के ३ नाम हैं—निर्णयः, निश्चयः, अन्तः ॥

२. 'समर्थन'के २ नाम हैं—सम्प्रधारणा, समर्थनम् ॥

३. 'अविद्या (अनित्य एवं अशुचि आदिको नित्य एवं शुचि समझने)'के ३ नाम हैं—अविद्या, अहंमतिः, अज्ञानम् ॥

४. 'भ्रम'के ३ नाम हैं—भ्रान्तिः, मिथ्यामतिः, भ्रमः ॥

५. 'संदेह, संशय'के ५ नाम हैं—सन्देह, द्वापर, (पु न),आरेकः, विचिकित्सा, संशयः ॥

६. 'गुणोत्कर्ष'के २ नाम हैं—परभागः, गुणोत्कर्षः ॥

७. 'दोष'के ३ नाम हैं—दोषः, आदीनवः, आस्रवः ॥

८. 'स्वरूप, स्वभाव'के १४ नाम हैं—स्वरूपम्, स्वलक्षणम् , स्वभावः, आत्मा (–मन्), प्रकृतिः, रीतिः, सहजः, रूपतत्त्वम्, धर्मः, (पु न), सर्गः, निसर्गः, शीलम् (पु न), सतत्त्वम्, संसिद्धिः ॥

९. 'दशा (हालत)'के ३ नाम हैं—अवस्था, दशा, स्थितिः ॥

१०. 'स्नेह, प्रीति'के ४ नाम हैं—स्नेहः (पु न), प्रीतिः, प्रेम (–मन्, पु न), हार्दम् ॥

११. 'अनुकूल भाव'के २ नाम हैं—दाक्षिण्यम् , अनुकूलता ॥

१२. 'पछतावा, पश्चात्ताप'के ४ नाम हैं—विप्रतिसारः, (+ विप्रतीसारः) अनुशयः, पश्चात्तापः, अनुतापः ॥

१३. 'अवधान, सावधान'के ४ नाम हैं–अवधानम्, समाधानम्, प्रणिधानम्, समाधिः ॥

१४. 'धर्म, पुण्य'के ५ नाम हैं—धर्मः, पुण्यम्, वृषः, श्रेयः (–यस), सुकृतम् ॥

—१नियतौ विधिः ।
दैवं भाग्यं भागधेयं दिष्टर्ङ्खायस्तु तच्छुभम् ॥ १५ ॥
३अलक्ष्मीर्निर्ऋतिः कालकर्णिका स्या४दथाशुभम् ।
दुष्कृतं दुरितं पापमेनः पाप्मा च पातकम् ॥ १६ ॥
किल्बिषं कलुषं किण्वं कल्मषं वृजिनं तमः ।
अंहः कल्कमघं पङ्कं ५उपाधिर्धर्मचिन्तनम् ॥ १७ ॥
६त्रिवर्गो धर्मकामार्था७श्चतुर्वर्गः समोक्षकाः ।
८बलतुर्याश्चतुर्भद्रं ९प्रमादोऽनवधानता ॥ १८ ॥
१०छन्दोऽभिप्राय आकूतं मतभावाशया अपि ।
११हृषीकमक्षं करणं स्रोतः खं विषयीन्द्रियम् ॥ १९ ॥
१२बुद्धीन्द्रियं स्पर्शनादि—

---

१. 'भाग्य'के ६ नाम हैं—नियतिः, विधिः, दैवम् (पु न), भाग्यम्, भागधेयम्, दिष्टम् ॥

२. 'शुभकारक भाग्य'का १ नाम है—अयः ॥

३. 'अलक्ष्मी, दुर्भाग्य,या नारकीय अशोभा'के ३ नाम हैं—अलक्ष्मीः, निर्ऋतिः, कालकर्णिका ॥

४. 'अशुभ, पाप'के १७ नाम हैं—अशुभम्, दुष्कृतम्, दुरितम्, पापम्; एनः (–नस्), पाप्मा (–प्मन्, पु), पातकम् (पु न), किल्बिषम्, कलुषम्, किण्वम्, कल्मषम्, वृजिनम्, तमः (–मस्), अंहः (–हस् । २ न), कल्कम् (पु न), अघम्, पङ्कः (पु न) ॥

५. 'धर्मचिन्तन'के २ नाम हैं—उपाधिः (पु) धर्मचिन्तनम् ॥

६. 'धर्म, काम तथा अर्थके समूह'का १ नाम है—त्रिवर्गः ॥

७. 'धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षके समूह'का १ नाम है—चतुर्वर्गः ॥

८. धर्म, काम, अर्थ तथा बलके समूह'का १ नाम है—चतुर्भद्रम् ॥

९. 'प्रमाद'के २ नाम हैं—प्रमादः, अनवधानता ॥

१०('अभिप्राय, आशय'के ६ नाम हैं—छन्दः, अभिप्रायः, आकूतम्, मतम्, भावः (पु न), आशयः ॥

११. 'इन्द्रिय'के ७ नाम हैं—हृषीकम्, अक्षम्, करणम्, स्रोतः (–तस् न),खम्, विषयि (–यिन्), इन्द्रियम्

१२. 'स्पर्शन (चमड़ा आदि, 'आदि' पदसे 'जीभ' नाक, नेत्र और कान'का संग्रह है, अतः इन चमड़ा आदि) पाँच इन्द्रियोंका १ नाम है—बुद्धीन्द्रियम् (+ज्ञानेन्द्रियम्, धीन्द्रियम्) ॥

१पाण्यादि तु क्रियेन्द्रियम् ।
२स्पर्शादयस्त्विन्द्रियार्था विषया गोचरा अपि ॥ २० ॥
३शीते तुषारः शिशिरः सुशीमः शीतलो जडः ।
हिमो४ऽथोष्णे तिग्मस्तीव्रस्तीक्ष्णश्चण्डः खरः पटुः ॥ २१ ॥
५कोष्णः कवोष्णः कदुष्णो मन्दोष्णश्चेषदुष्णवत् ।
६निष्ठुरः कक्खटः क्रूरः परुषः कर्कशः खरः ॥ २२ ॥
दृढः कठोरः कठिनो जरठः ७कोमलः पुनः ।
मृदुलो मृदुसोमालसुकुमारा अकर्कशः ॥ २३ ॥

---

१. 'हाथ आदि ('आदि' शब्दसे वाक्, चरण, पायु (गुदा) और उपस्थ (शिश्न, लिङ्ग);का संग्रह है, अतः हाथ पैर आदि) पांच इन्द्रियोंका १ नाम है—क्रियेन्द्रियम् (+कर्मेन्द्रियम्) ॥

२. 'स्पर्श आदि ('आदि' शब्दसे 'स्वाद लेना, सूंघना, देखना और सुनना' इन चारों का संग्रह है) उन बुद्धीन्द्रियोंके विषय हैं, और उनके ३ नाम हैं—इन्द्रियार्थाः, विषयाः, गोचराः ॥

विमर्श—'अमरकोष' कारने 'मन'को भी इन्द्रिय मानकर ६ 'ज्ञानेन्द्रिय' हैं, ऐसा कहा है (१।५।८)। बुद्धीन्द्रियों (ज्ञानेन्द्रियों) में—चमड़ेका छूना, जीभका स्वाद लेना, नाकका सूंघना, नेत्रका देखना और कानका सुनना :—ये उन-उन इन्द्रियोंके अपने-अपने विषय हैं, तथा क्रियेन्द्रियों (कर्मेन्द्रियों)में—हाथका ग्रहण करना, वाक्का बोलना, चरणका चलना, पायु (गुदा)का मलत्याग करना, और उपस्थ (पुरुषके शिश्न और स्त्रियोंके योनि)का मूत्रत्याग करना—ये उन-उन इन्द्रियोंके अपने-अपने 'विषय' हैं। 'अमरकोष' कारके मतसे 'मन'को भी बुद्धीन्द्रिय माननेपर उस 'मन'का 'जानना (ज्ञान करना)' विषय है ॥

३. 'ठण्डे, शीतल'के ७ नाम हैं—शीतः, तुषारः, शिशिरः, सुशीमः (+सुषीमः), शीतलः, जडः, हिमः ॥

४. 'गर्म, उष्ण'के ७ नाम हैं—उष्णः, तिग्मः, तीव्रः, तीक्ष्णः, चण्डः, खरः, पटुः ॥

५. थोड़े गर्म के ५ नाम हैं—कोष्णः, कवोष्णः, कदुष्णः, मन्दोष्णः, ईषदुष्णः (+ओष्णः) ॥

६. 'निष्ठुर, क्रूर'के १० नाम हैं—निष्ठुरः, कक्खटः, (खक्खटः), क्रूरः, परुषः, कर्कशः, खरः, दृढः, कठोरः, कठिनः, जरठः (+जरढः) ॥

७. 'कोमल'के ६ नाम हैं—कोमलः, मृदुलः, मृदुः, सोमालः, सुकुमारः, अकर्कशः ॥

१मधुरस्तु रसज्येष्ठो गुल्यः स्वादुर्मधूलकः ।
२अम्लस्तु पाचनो दन्तशठो३ऽथ लवणः सरः ॥ २४ ॥
सर्वरसो४ऽथ कटुः स्यादोषणो मुखशोधनः ।
५वक्त्रभेदी तु तिक्तो६ऽथ कषायस्तुवरो रसाः ॥ २५ ॥
७गन्धो जनमनोहारी सुरभिर्घ्राणतर्पणः ।
समाकर्षी निर्हारी च ८स आमोदो विदूरगः ॥ २६ ॥
९विमर्दोत्थः परिमलो१०ऽथामोदी मुखवासनः ।
इष्टगन्धः सुगन्धिश्च ११दुर्गन्धः पूतिगन्धिकः ॥ २७ ॥
१२आमगन्धि तु विस्रं स्याद् १३वर्णाः श्वेतादिका अमी ।

---

१. 'मीठा, मधुर'के ५ नाम हैं—मधुरः, रसज्येष्ठः, गुल्यः, स्वादुः, मधूलकः ॥

२. 'खट्टे'के ३ नाम हैं—अम्लः (+अम्बलः), पाचनः, दन्तशठः ॥

३. 'नमकीन, नमक'के ३ नाम हैं—लवणः, सरः, सर्वरसः ॥

४. 'कड़ुवे, कटु'के ३ नाम हैं—कटुः, ओषणः, मुखशोधनः ॥

५. 'तीता'के २ नाम हैं—वक्त्रभेदी (-दिन्), तिक्तः ॥

६. 'कषाय, कसैले'के २ नाम हैं—कषायः, तुवरः । (ये (४ । २४-२५) अर्थात् 'मीठा, खट्टा, नमकीन; कटु, तीता और कषाय'—६ 'रस' हैं, इनका 'रसाः' यह १ नाम है ॥

विमर्श—जल, गुड़, शक्कर आदि 'मीठा'; आम, नीमू, इमिली आदि 'खट्टा' सोडा, नमक आदि 'नमकीन'; मिर्चा आदि 'कटु' (कड़ुवा); नीम, बकायन, गुडुच आदि 'तीता' और हर्रे, आँवला आदि 'कषाय' रसवाले होते हैं ॥

७. 'गन्ध'के ६ नाम हैं—गन्धः, जनमनोहारी (-रिन्), सुरभिः, घ्राणतर्पणः, समाकर्षी (-र्षिन्), निर्हारी (-रिन्) ॥

८. 'दूरतक फैलनेवाले गन्ध'का १ नाम है—आमोदः ॥

९. 'विमर्दन (रगड़ने)से उत्पन्न गन्ध'का १ नाम है—परिमलः ॥

१०. 'सुगन्धि, खुशबू'के ४ नाम हैं—आमोदी (-दिन्), मुखवासनः, इष्टगन्धः, सुगन्धिः ॥

११. 'दुर्गन्ध, बदबू'के २ नाम हैं—दुर्गन्धः, पूतिगन्धिकः (+पूतिगन्धिः) ॥

१२. 'अपरिपक्व मलके समान गन्ध'के २ नाम हैं—आमगन्धि (-न्धिन्), विस्रम् ॥

१३. 'श्वेत' इत्यादिका 'वर्णाः' यह १ नाम है ।

१श्वेतः श्येतः सितः शुक्लो हरिणो विशदः शुचिः ॥ २८ ॥
अवदातगौरशुभ्रबलक्षधवलार्जुनाः ।
पाण्डुरः पाण्डरः पाण्डुरीषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ २९ ॥
३कापोतस्तु कपोताभः ४पीतस्तु सितरञ्जनः ।
हारिद्रः पीतलो गौरः ५पीतनीलः पुनर्हरित् ॥ ३० ॥
पालाशो हरितस्तालकाभो ६रक्तस्तु रोहितः ।
माञ्जिष्ठो लोहितः शोणः ७श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ ३१ ॥
८अरुणो बालसन्ध्याभः ९पीतरक्तस्तु पिञ्जरः ।
कपिलः पिङ्गलः श्यावः पिशङ्गः कपिशो हरिः ॥ ३२ ॥
बभ्रुः कद्रुः कडारश्च पिङ्गे १०कृष्णस्तु मेचकः ।
स्याद्रामः श्यामलः श्यामः कालो नीलोऽसितः शितिः ॥ ३३ ॥
११रक्तश्यामे पुनर्धूम्रधूमला—

---

१. 'सफेद रंग'के १६ नाम हैं—श्वेतः, श्येतः, सितः, शुक्लः, हरिणः, विशदः, शुचिः, अवदातः, गौरः, शुभ्रः, बलक्षः, धवलः, अर्जुनः, पाण्डुरः, पाण्डरः, पाण्डुः ॥

२. 'थोड़े श्वेत, धूसर रंग'का १ नाम है—धूसरः ॥

३. 'कबूतरके समान रंग'के २ नाम हैं—कापोतः, कपोताभः ॥

४. 'पीले रंग'के ५ नाम हैं—पीतः, सितरञ्जनः, हारिद्रः, पीतलः, गौरः ॥

५. 'हरे रंग'के ५ नाम हैं—पीतनीलः, हरित्, पालाशः, हरितः, तालकाभः ॥

६. 'लाल रंग'के ५ नाम हैं—रक्तः, रोहितः, माञ्जिष्ठः, लोहितः, शोणः ॥

७. 'श्वेत-मिश्रित लाल, गुलाबी रंग'के २ नाम हैं—श्वेतरक्तः, पाटलः ॥

८. 'बालसन्ध्याके समान रंग'के २ नाम हैं—अरुणः, बालसन्ध्याभः ॥

९. 'पीलेसे मिश्रित लाल; पिङ्गल'के १२ नाम हैं—पीतरक्तः, पिञ्जरः, कपिलः, पिङ्गलः, श्यावः, पिशङ्गः, कपिशः, हरिः, बभ्रुः, कद्रुः, कडारः, पिङ्गः ॥

१०. 'कृष्ण, श्यामरंग'के ९ नाम हैं—कृष्णः, मेचकः (पु न), रामः, श्यामलः, श्यामः, कालः, नीलः (पु न), असितः, शितिः ॥

११. 'लाल-मिश्रित श्याम, धूएँके समान धूमिल रंग'के ३ नाम हैं—रक्तश्यामः, धूम्रः, धूमलः ॥

—१वथ कर्बुरः ।
किर्म्मीर एतः शबलश्चित्रकल्माषचित्रलाः ॥ ३४ ॥
२शब्दो निनादो निर्घोषः स्वानो ध्वानः स्वरो ध्वनिः ।
निर्ह्रादो निनदो ह्रादो निःस्वानो निःस्वनः स्वनः ॥ ३५ ॥
रवो नादः स्वनिर्घोषः संव्याङ्भ्यो राव आरवः ।
क्वणनं निक्वणः क्वाणो निक्वाणश्च क्वणो रणः ॥ ३६ ॥
३षड्जर्षभगान्धारा मध्यमः पञ्चमस्तथा ।
धैवतो निषधः सप्त तन्त्रीकण्ठोद्भवाः स्वराः ॥ ३७ ॥

---

१. 'कर्बुर, चितकबरे रंग'के ७ नाम हैं—कर्बुरः, किर्म्मीरः, एतः, शबलः, चित्रः, कल्माषः, चित्रलः ॥

२. 'शब्द, ध्वनि, आवाज'के २७ नाम हैं—शब्दः, निनादः, निर्घोषः, स्वानः, ध्वानः, स्वरः, ध्वनिः, निर्ह्रादः, निनदः, ह्रादः, निःस्वानः, निःस्वनः, स्वनः, रवः (+रावः), नादः, स्वनिः, घोषः, संरावः, विरावः, आरावः, आरवः, क्वणनम् , निक्वणः, क्वाणः, निक्वाणः, क्वणः रणः ॥

३. 'षड्जः, ऋषभः, गान्धारः, मध्यमः, पञ्चमः, धैवतः, निषधः'—ये सात तन्त्री तथा कण्ठसे उत्पन्न होनेवाले स्वर हैं, अतः इन्हें 'स्वराः' कहते हैं ।

विमर्श—वीणाके दो भेद हैं—एक काष्ठमयी वीणा तथा दूसरी शारीरी वीणा; उनमें काष्ठमयी वीणामें तन्त्री (तार) से तथा शारीरी वीणामें कण्ठसे उक्त स्वरोंकी उत्पत्ति होती है उनमें-से 'षड्ज' को मोर, 'ऋषभ'को गौ, 'गान्धार'को अज तथा भेंड़, 'मध्यम'को क्रौञ्च पक्षी, 'पञ्चम'को वसन्त ऋतुमें कोयल, 'धैवत'को घोड़ा और 'निषाद'को हाथी बोलता है ।[1] इस सम्बन्धमें विशेष जिज्ञासु व्यक्तिको 'अमरकोष'का मत्कृत 'मणिप्रभा' नामक राष्ट्रभाषानुवादकी 'अमरकौमुदी' नामकी टिप्पणी देखनी चाहिए ॥

---

१. तदुक्तं हेमचन्द्राचार्येणास्यैव ग्रन्थस्य स्वोपज्ञवृत्तौ—"षड्भ्यो जायते षड्जः । यद्व्याडिः—

'कण्ठादुत्तिष्ठते व्यक्तं षड्जः षड्भ्यस्तु जायते ।
कण्ठोरस्तालुनासाभ्यो जिह्वाया दशनादपि ॥'

ऋषभो गोरुतसंवादित्वात् । तदाह व्याडिः—

'वायुः समुत्थितो नाभेः कण्ठशीर्षसमाहतः ।
नर्दद्वृषभवद्यस्मात्तेनैष ऋषभः स्मृतः ॥'

गां वाचं धारयति गान्धारः, गन्धवहमियर्त्ति वा । यदाह—

१ते मन्द्रमध्यतारा: स्युरुरःकण्ठशिरोभवाः ।
२रुदितं क्रन्दितं क्रुष्टं ३तदपुष्टन्तु गद्गदम् ॥ ३८ ॥
४शब्दो गुणानुरागोत्थः प्रणादः सीत्कृतं नृणाम् ।
५पर्दनं गुदजे शब्दे ६कर्दनं कुक्षिसम्भवे ॥ ३९ ॥
७क्ष्वेडा तु सिंहनादोऽ८थ क्रन्दनं सुभटध्वनिः ।
९कोलाहलः कलकल१०स्तुमुलो व्याकुलो रवः ॥ ४० ॥

---

१. वे 'षड्ज' इत्यादि पूर्वोक्त सातो स्वर 'उर, कण्ठ तथा शिर'से क्रमशः 'मन्द्र अर्थात् गम्भीर, मध्य तथा तार अर्थात् उच्च रूपमें उत्पन्न होते हैं, अतः उनमें प्रत्येकके 'मन्द्रः, मध्यः और तारः'ये तीन-तीन भेद होते हैं ॥

२. 'रोने'के ३ नाम हैं—रुदितम्, क्रन्दितम्, क्रुष्टम् ॥

३. 'अस्पष्ट (गद्गद कण्ठसे) रोने'का १ नाम है—गद्गदम् ॥

४. 'गुणानुरागजन्य मनुष्योंके शब्द (रत्यादिमें दन्तक्षतादि करनेपर 'सी-सी' इत्यादि ध्वनि करने)'के २ नाम हैं—प्रणादः, सीत्कृतम् ॥

५. 'पादने'का १ नाम है—पर्दनम् (+अपशब्दः) ॥

६. 'काँखके शब्द'का १ नाम है—कर्दनम् ॥

७. 'युद्धादिमें शूरवीरोंके सिंह तुल्य गरजने'के २ नाम हैं—क्ष्वेडा, सिंहनादः ॥

८. 'युद्धमें प्रतिद्वन्द्वीको ललकारने'का १ नाम है—क्रन्दनम् ॥

९. 'कोलाहल'के २ नाम हैं—कोलाहलः (पु न), कलकलः ॥

१०. 'बहुतोंके द्वारा किये गये अस्पष्ट और अधिक कोलाहल'का १ नाम है—तुमुलः ॥

'वायुः समुत्थितो नाभेः कण्ठशीर्षसमाहतः ।
नानागन्धवहः पुण्यैर्गान्धारस्तेन हेतुना ॥'
मध्ये भवो मध्यमः । यदाह—
'तद्वदेवोत्थितो वायुरुरःकण्ठसमाहतः ।
नाभिप्राप्तो महानादो मध्यमस्तेन हेतुना ॥'
पञ्चमस्थानभवत्वात् पञ्चमः । यदाह—
'वायुः समुत्थितो नाभेरुरोहृत्कण्ठमूर्धसु ।
विचरन् पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्चम उच्यते ॥'
धिया वतः धीवतः, तस्यायं धैवतः; दधाति संधत्ते स्वरानिति वा । यदाह—
'अभिसंधीयते यस्मात् स्वरास्तेनैव धैवतः ।'
निषीदन्ति स्वरा अत्र निषधो निषादाख्यः । यदाह—
'निषीदन्ति स्वरा अस्मिन्निषादस्तेन हेतुना ।' इति ॥" (अभि० चि० ६।३७ स्वो० वृ०) ॥

१मर्मरो वस्त्रपत्रादे२र्भूषणानान्तु शिञ्जितम् ।
३हेषा ह्रेषा तुरङ्गाणां ४गजानां गर्जबृंहिते ॥ ४१ ॥
५विस्फारो धनुषां ६हम्भारम्भे गो७र्जलदस्य तु ।
स्तनितं गर्जितं गर्जिः स्वनितं रसितादि च ॥ ४२ ॥
८कूजितं स्याद्विहङ्गानां ९तिरश्चां रुतवासिते ।
१०वृकस्य रेषणं रेषा ११बुक्कनं भषणं शुनः ॥ ४३ ॥
१२पीडितानान्तु कणितं १३मणितं रतकूजितम् ।
१४प्रकाणः प्रकणस्तन्त्र्या १५मर्दलस्य तु गुन्दलः ॥ ४४ ॥
१६चीजनन्तु कीचकानां १७भेर्या नादस्तु दद्रुरः ।

---

१. 'मर्मर (वस्त्र या अधसूखे पत्ते आदिके) शब्द'का १ नाम है—मर्मरः ॥

२. 'भूषणोंके शब्द (झनकार)'का १ नाम है—शिञ्जितम् ॥

३. 'घोड़ोंके शब्द (हिनहिनाने)'के २ नाम हैं—हेषा, ह्रेषा ॥

४. 'हाथियोंके शब्द (चिग्घाड़ने)'के २ नाम हैं—गर्जः (+गर्जा), बृंहितम् ॥

५. 'धनुषके शब्द'का १ नाम है—विस्फारः ।

६. 'गौके शब्द (रँभाने)'के २ नाम हैं—हम्भा, रम्भा ॥

७. 'मेघके शब्द (बादल गरजने)'के ५ नाम हैं—स्तनितम् , गर्जितम् , गर्जिः (पु), स्वनितम् , रसितम् ,……('आदि' शब्दसे 'ध्वनितम्' …………) ॥

८. 'पक्षियोंके शब्द (कूजने)'का १ नाम है—कूजितम् ॥

९. 'पशु-पक्षियोंके शब्द'के २ नाम हैं—रुतम् , वाशितम् ॥

१०. 'भेड़ियेके शब्द'के २ नाम हैं—रेषणम् , रेषा ॥

११. 'कुत्तेके शब्द (भूंकने)'के २ नाम हैं—बुक्कनम् , भषणम् ॥

१२. 'व्याधि या मार आदिके द्वारा पीडित जीवके शब्द'का १ नाम है—कणितम् ॥

१३. 'रतिकालमें किये गये शब्द'का १ नाम है—मणितम् ॥

१४. 'वीणादिके तारके शब्द'के २ नाम हैं—प्रकाणः, प्रकणः ॥

१५. 'मर्दल (मृदङ्गाकार एक प्राचीन बाजा)के शब्द'का १ नाम है—गुन्दलः ॥

१६. 'कीचक (फटनेके कारण छिद्रमें प्रवेश करनेवाले वायुसे ध्वनि करनेवाले बांस)के शब्द'का १ नाम है—चीजनम् ॥

१७. 'भेरीके शब्द'का १ नाम है—दद्रुरः ॥

१तारोऽत्युच्चैर्ध्वनिर्२मन्द्रो गम्भीरो ३मधुरः कलः ॥ ४५ ॥
४काकली तु कलः सूक्ष्म ५एकतालो लयानुगः ।
६काकुर्ध्वनिविकारः स्यात् ७प्रतिश्रुत्तु प्रतिध्वनिः ॥ ४६ ॥
८सङ्घाते प्रकरौघवारनिकरव्यूहाः समूहश्चयः
सन्दोहः समुदायराशिविसरव्राताः कलापो व्रजः ।
कूटं मण्डलचक्रवालपटलस्तोमा गणः पेटकं
वृन्दं चक्रकदम्बके समुदयः पुञ्जोत्करौ संहतिः ॥ ४७ ॥
समवायो निकुरुम्बं जालं निवहसञ्चयौ ।
जातं ९तिरश्चां तद्यूथं १०सङ्घसार्थौ तु देहिनाम् ॥ ४८ ॥
११कुलं तेषां सजातीनां—

---

१. 'अत्यधिक उच्च स्वर'का १ नाम है—तारः ॥

२. 'गम्भीर ध्वनि'का १ नाम है—मन्द्रः (+मद्रः) ॥

३. 'मधुर ध्वनि'का १ नाम है—कलः ॥

४. 'अत्यन्त मन्द ध्वनि'का १ नाम है—काकली (+काकलिः) ॥

५. 'लय'का १ नाम है—एकतालः ॥

६. 'विकृत ध्वनि'का १ नाम है—काकुः (पु स्त्री) ॥

विमर्श—यथा—विकृत कण्ठध्वनिसे कहे गये "तुमने मेरा बड़ा उपकार किया!" इस वाक्यका अर्थ मुख्यार्थके सर्वथा विपरीत "तुमने मेरा बड़ा अनुपकार किया" यह ध्वनित होता है, इसी कण्ठकी विकृत ध्वनि का नाम 'काकु' है ॥

७. 'प्रतिध्वनि'के २ नाम हैं—प्रतिश्रुत्, प्रतिध्वनिः (+प्रतिशब्दः) ॥

८. 'समुदाय, समूह'के ३५ नाम हैं—सङ्घातः, प्रकरः, ओघः, वारः (पु न), निकरः (+आकरः), व्यूहः, समूहः, चयः, सन्दोहः, समुदायः, राशिः (पु), विसरः, व्रातः, कलापः, व्रजः, कूटम् (२ पु न), मण्डलम् (त्रि), चक्रवालः, पटलम् (न स्त्री), स्तोमः, गणः, पेटकम् (त्रि), वृन्दम्, चक्रम् (पु न), कदम्बकम्, समुदयः, पुञ्जः, उत्करः, संहतिः, समवायः, निकुरुम्बम्, जालम् (स्त्री न), निवहः, सञ्चयः, जातम् ॥

९. 'पशु-पक्षियोंके समूह (झुण्ड)'का १ नाम है—यूथम् (पु न) ॥

१०. 'देहधारी (मनुष्यादि)के समूह'के २ नाम हैं—सङ्घः, सार्थः, (यथा—श्रमणादि चार प्रकारका 'सङ्घ' (समुदाय), यथा-पान्थसार्थः (पथिकसमूह),..........) ॥

११. 'एकजातिवालोंके समुदाय'का १ नाम है—कुलम्। (यथा—विप्रकुलम्, मृगकुलम्,..........) ॥

—१निकायस्तु सधर्मिणाम् ।
२वर्गस्तु सदृशां ३स्कन्धो नरकुञ्जरवाजिनाम् ॥ ४९ ॥
४ग्रामो विषयशब्दास्त्रभूतेन्द्रियगुणाद् व्रजे ।
५समजस्तु पशूनां स्यात् ६समाजस्त्वन्यदेहिनाम् ॥ ५० ॥
७शुकादीनां गणे शौकमायूरतैत्तिरादयः ।
८भिक्षादेर्भैक्षसाहस्रगार्भिणयौवतादयः ॥ ५१ ॥
९गोत्रार्थप्रत्ययान्तानां स्युरौपगवकादयः ।

---

१. 'समान धर्म या शीलवालोंके समुदाय'का १ नाम है—निकायः (यथा—वैयाकरणनिकायः, देवनिकायः,..........) ॥

२. 'समान जातिवाले जीवों तथा निर्जीवों के समूह'का १ नाम है—वर्गः । (यथा—ब्राह्मणवर्गः, अरिषड्वर्गः, त्रिवर्गः, कवर्गः, चवर्गः,.......) ॥

३. 'मनुष्यों, हाथिओं' और घोड़ोंके समूह'का १ नाम है—स्कन्धः ॥

४. 'विषय, शब्द, अस्त्र, भूत, इन्द्रिय और गुण शब्दोंके बादमें प्रयुक्त 'ग्राम' शब्द उन 'विषय' आदिके समूहका वाचक होता है । (यथा—विषयग्रामः, शब्दग्रामः, अस्त्रग्रामः, भूतग्रामः, इन्द्रियग्रामः और गुणग्रामः) अर्थात् विषयोंका समूह, शब्दोंका समूह............) ॥

५. 'पशुओंके समूह'का १ नाम है—समजः । (यथा—गोसमजः,....) ॥

६. 'दूसरे प्राणियोंके समूह'का १ नाम है—समाजः । (यथा—ब्राह्मणसमाजः, श्रोत्रियसमाजः, आर्यसमाजः,.........) ॥

७. 'सुग्गे, मोर और तीतर आदि ('आदि' शब्दसे 'कबूतर इत्यादिके समूह'का क्रमशः १—१ नाम है—शौकम्, मायूरम्, तैत्तिरम्, आदि ('आदि' शब्दसे—'कापोतम्,......) ॥

८. 'भिक्षाओं, सहस्रों, गर्भिणियों तथा युवतियोंके समूह'का क्रमशः १—१ नाम है—भैक्षम्, साहस्रम्, गार्भिणम्, यौवतम् ॥

९. 'गोत्र अर्थमें किये गये प्रत्यय जिन शब्दोंके अन्तमें हों, उन ('औपगव' इत्यादि) शब्दोंके समूह'का 'औपगवकम्' इत्यादि १—१ नाम है ।

विमर्श—'उपगोर्गोत्रापत्यम्, ('उपगु'का गोत्रापत्य) इस विग्रहमें गोत्र अर्थमें 'उपगु' शब्दसे 'अण्' प्रत्यय करनेपर 'औपगवः' शब्द सिद्ध होता है, उन 'औपगवों' के समूहका 'औपगवकम्' यह १ नाम है । ऐसा जानना चाहिए । इसी प्रकार 'आदि' शब्दसे 'गर्ग' शब्दसे गोत्रार्थक 'यञ्' प्रत्यय करनेपर 'गार्ग्य' शब्द सिद्ध होता है, उन 'गार्ग्यों'के समूहका 'गार्गकम्' यह १ नाम होगा । इसी क्रम से अन्यत्र भी जानना चाहिए ॥

१उक्षादेरौक्षकं मानुष्यकं वार्द्धकमौष्ट्रकम् ॥ ५२ ॥
स्याद्राजपुत्रकं राजन्यकं राजकमाजकम् ।
वात्सकौरभ्रके २कावचिकं कवचिनामपि ॥ ५३ ॥
हास्तिकन्तु हस्तिनां स्या३दापूपिकाद्यचेतसाम् ।
४धेनूनां धैनुकं धेन्वन्तानां गौधेनुकादयः ॥ ५४ ॥
५कैदारकं कैदारिकं कैदार्यमपि तद्गणे ।
६ब्राह्मणादेर्ब्राह्मण्यं माणव्यं वाडव्यमित्यपि ॥ ५५ ॥
७गणिकानान्तु गाणिक्यं ८केशानां कैश्यकैशिके ।
अश्वानामाश्वमश्वीयं ९पर्शूनां पार्श्वमप्य—

---

१. 'उक्षन्, मनुष्यों, वृद्धों, उष्ट्रों (ऊंटों), राजपुत्रों, राजन्यों (क्षत्रिय-जातीय राजकुमारों), राजाओं, अजों (बकरों), वत्सों, उरभ्रों (भेंड़ों)के समूह'का क्रमसे १—१—नाम है—औक्षकम्, मानुष्यकम्, वार्द्धकम्, औष्ट्रकम्, राजपुत्रकम्, राजन्यकम्, राजकम्, आजकम् , वात्सकम्, औरभ्रकम् ॥

२. 'कवचधारियों तथा हाथियोंके समूह'का क्रमसे १—१ नाम है—कावचिकम्, हास्तिकम् ॥

३. 'अपूपों (पूओं) आदि अचित्त (चेतनाहीन) वस्तुओंके समूह'का 'आपूपिकम्' इत्यादि १—१ नाम है । ('आदि शब्दसे शष्कुलियों (पूड़ियों) के समूहका 'शाष्कुलिकम्', पर्वतोंके समूहका 'पार्वतिकम्' इत्यादि १—१ नाम क्रमसे समझना चाहिए) ॥

४. 'धेनुओं (सकृत्प्रसूत गौओं) तथा 'धेनु' शब्दान्त 'गोधेनु' इत्यादिके समूहोंका क्रमशः 'धैनुकम्, गौधेनुकम्' इत्यादि १—१ नाम हैं ॥

५. 'केदारों (खेतों, क्यारियों)के समूह'के ३ नाम हैं—कैदारकम्, कैदारिकम्, कैदार्यम् ॥

६. 'ब्राह्मणों, माणवों (बालकों) तथा वडवाओं (घोड़ियों)के समूह'का क्रमशः १—१ नाम है—ब्राह्मण्यम्, माणव्यम्, वाडव्यम् ॥

७. 'गणिकाओं (वेश्याओं)के समूह'का १ नाम है—गाणिक्यम् ॥

८. 'केशों तथा अश्वोंके समूह'के क्रमशः २—२ नाम हैं—कैश्यम्, कैशिकम्; आश्वम्, अश्वीयम् ॥

९. 'पशुओं' (फरसों)के समूह'का १ नाम है—पार्श्वम् ।

विमर्श—समूह अर्थ में प्रयुक्त पूर्वोक्त (६ । ५१) शौकम् इत्यादिसे यहाँतक सब शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं ॥

—१थ ॥ ५६ ॥

१वातूलवात्ये वातानां २गव्यागोत्रे पुनर्गवाम् ।
३पाश्याखल्यादि पाशादेः ४खलादेः खलिनी निभाः ॥ ५७ ॥
५जनता बन्धुता ग्रामता गजता सहायता ।
जनादीनां ६रथानान्तु स्याद्रथ्या रथकट्यया ॥ ५८ ॥
७राजिर्लेखा ततिर्वीथीमालाऽऽल्यावलिपङ्क्तयः ।
धोरणी श्रेण्युदभौ तु द्वौ ९युगलं द्वितयं द्वयम् ॥ ५९ ॥
युगं द्वैतं यमं द्वन्द्वं युग्मं यमलयामले ।
१०पशुभ्यो गोयुगं युग्मे परं—

---

१. 'वायु (हवा) के समूह' अर्थात् 'आँधी'के २ नाम हैं—वातूलः (पु), वात्या (स्त्री) ॥

२. गौओंके समूह'के २ नाम हैं—गव्या, गोत्रा ॥

३. 'पाश, खल आदि ('आदि' शब्दसे-तृण, धूम,……)के समूह'का क्रमशः १—१ नाम है—पाश्या, खल्या, आदि ('आदि' शब्दसे–'तृण्या, धूम्या,……) ॥

४. 'खल आदि ('आदि' शब्दसे—कुटुम्ब,……) के समूह'का १ नाम है—खलिनी, आदि ('आदि'से—कुटुम्बिनी,……) ॥

५. 'जन, बन्धु, ग्राम, गज (हाथी) तथा सहायके समूहों'का क्रमशः १—१ नाम है—जनता, बन्धुता, ग्रामता, गजता, सहायता ॥

६. 'रथोंके समूह'के २ नाम हैं—रथ्या, रथकट्या ॥

७. 'श्रेणि, कतार'के १० नाम हैं—राजिः (स्त्री), लेखा, ततिः, वीथी, माला, आलिः, आवलिः (२ स्त्री), पङ्क्तिः, धोरणी, श्रेणी (स्त्री । +श्रेणिः, पु स्त्री) ॥

८. 'दोनों (जिससे एक साथ दोका बोध हो—जैसे 'दोनो जाते हैं'का १ नाम है—उभौ (नि० द्विव०) ॥

९. 'दो, जोड़ा'के १० नाम हैं—युगलम्, द्वितयम्, द्वयम् (३ स्त्री न), युगम्, द्वैतम्, यमम्, द्वन्द्वम्, युग्मम्, यमलम्, यामलम् (+जकुटम्) ॥

१०. एकजातीय किसी पशुके जोड़ों (दो पशुओं) को कहनेके लिए उस शब्दसे परे 'गोयुगम्' शब्द लगाया जाता है। (यथा—'अश्वगोयुगम्, यहां 'दो घोड़े' इस अर्थमें 'अश्वगोयुगम्' शब्दका प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार (हस्तिगोयुगम्,……) अर्थात् दो हाथी इत्यादि समझना चाहिए ॥

—१षट्त्वे तु षड्गवम् ॥ ६० ॥
२परःशताद्यास्ते येषां परा सङ्ख्या शतादिकात् ।
३प्राज्यं प्रभूतं प्रचुरं बहुलं बहु पुष्कलम् ॥ ६१ ॥
भूयिष्ठं पुरुहं भूयो भूयिष्ठं पुरुहं भूयो भूरि दभ्रं पुरु स्फिरम् ।
४स्तोकं क्षुल्लं तुच्छमल्पं दभ्राणुतलिनानि च ॥ ६२ ॥
तनु क्षुद्रं कृशं ५सूक्ष्मं पुनः श्लक्ष्णञ्च पेलवम् ।
६त्रुटौ मात्रा लवो लेशः कणो ७ह्रस्वं पुनर्लघु ॥ ६३ ॥
८अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ।
९दीर्घायते समे—

---

१. एक जातिवाले ६ पशुओंके समूहको कहनेके लिए उस पशुवाचक शब्दके बाद 'षड्गवम्' प्रत्यय जोड़ दिया जाता है। (यथा—६ हाथी, ६ घोड़े आदिको कहनेके लिए हाथी तथा घोड़ेके पर्यायवाचक 'गज तथा अश्व' आदि शब्दके बादमें "षड्गवम्" जोड़ देनेपर 'गजषड्गवम्, अश्वषड्गवम्' आदि शब्दका प्रयोग होता है। इसी प्रकार अन्यत्र भी समझना चाहिए) ॥

२. 'शत' (सौ) से अधिक संख्या कहनेके लिए 'शत' शब्दके पहले 'परः' शब्द जोड़कर 'परःशताः' (त्रि) शब्दका प्रयोग होता है। (परःशता गजाः अर्थात् सौसे अधिक हाथी) इसी प्रकार 'सहस्र, लक्ष......, शब्दोंके साथ 'परः' शब्द जोड़नेसे परःसहस्राः, परोलक्षाः (क्रमशः—हजारसे तथा लाख से अधिक) इत्यादि शब्द प्रयुक्त होते हैं ॥

३. 'प्रचुर, काफी'के १३ नाम हैं—प्राज्यम्, प्रभूतम्, प्रचुरम्, बहुलम्, बहु, पुष्कलम्, भूयिष्ठम्, पुरुहम्, भूयः (– यस्), भूरि, अदभ्रम्, पुरु, स्फिरम् ॥

४. 'थोड़े'के १० नाम हैं—स्तोकम्, क्षुल्लम्, तुच्छम्, अल्पम्, दभ्रम्, अणु, तलिनम्, तनु, क्षुद्रम्, कृशम् ॥

५. 'सूक्ष्म या चिकने'के ३ नाम हैं—सूक्ष्मम्, श्लक्ष्णम्, पेलवम् ॥

६. 'लेश, अत्यन्त कम'के ५ नाम हैं—त्रुटिः (स्त्री), मात्रा, लवः, लेशः, कणः (पु स्त्री) ॥

७. 'छोटे'के २ नाम हैं—ह्रस्वम्, लघु ॥

८. 'बहुत थोड़े'के ५ नाम हैं—अत्यल्पम्, अल्पिष्ठम्, अल्पीयः, कनीयः (+ कनिष्ठम्), अणीयः (३ – यस्) ॥

९. 'लम्बे'के २ नाम हैं—दीर्घम्, आयतम् ॥

—१तुङ्गमुच्चमुन्नतमुद्धुरम् ॥ ६४ ॥
प्रांशूच्छ्रितमुदग्रञ्च २न्यङ्नीचं ह्रस्वमन्थरे ।
खर्वं कुब्जं वामनञ्च ३विशालन्तु विशङ्कटम् ॥ ६५ ॥
पृथूरु पृथुलं व्यूढं विकटं विपुलं बृहत् ।
स्फारं वरिष्ठं विस्तीर्णं ततं बहु महद् गुरु ॥ ६६ ॥
४दैर्घ्यमायाम आनाह ५आरोहस्तु समुच्छ्रयः ।
उत्सेध उदयोच्छ्रायौ ६परिणाहो विशालता ॥ ६७ ॥
७प्रपञ्चाभोगविस्तारव्यासाः ८शब्दे स विस्तरः ।
९समासस्तु समाहारः संक्षेपः संग्रहोऽपि च ॥ ६८ ॥
१०सर्वं समस्तमन्यूनं समग्रं सकलं समम् ।
विश्वाशेषाखण्डकृत्स्नन्यक्षाणि निखिलाखिल ॥ ६९ ॥

---

१. 'ऊँचे'के ७ नाम हैं—तुङ्गम्, उच्चम्, उन्नतम्, उद्धुरम्, प्रांशु, उच्छ्रितम्, उदग्रम्, ॥

२. 'नीचे'के ७ नाम हैं—न्यक् (—ञ्च्), नीचम्, ह्रस्वम्, मन्थरम्, खर्वम्, कुब्जम्, वामनम् ॥

३. 'विशाल बड़े'के १६ नाम हैं—विशालम्, विशङ्कटम्, पृथु, उरु, पृथुलम्, व्यूढम्, विकटम्, विपुलम्, बृहत्, स्फारम्, वरिष्ठम्, विस्तीर्णम्, ततम्, बहु, महत्, गुरु ॥

४. 'लम्बाई'के ३ नाम हैं—दैर्घ्यम्, आयामः, आनाहः ॥

५. 'ऊँचाई'के ५ नाम हैं—आरोहः, समुच्छ्रयः, उत्सेधः, उदयः, उच्छ्रायः ॥

६. 'विशालता'के २ नाम हैं—परिणाहः, विशालता ॥

७. 'विस्तार, फैलाव'के ४ नाम हैं—प्रपञ्चः, आभोगः, विस्तारः, व्यासः ॥

८. 'शब्दके फैलाव'का १ नाम है—विस्तरः ॥

९. 'संक्षेप'के ४ नाम हैं—समासः, समाहारः, संक्षेपः, संग्रहः ॥

१०. 'सब, समस्त'के १३ नाम हैं—सर्वम्, समस्तम्, अन्यूनम् (+अनूनम्), समग्रम्, सकलम्, समम्, विश्वम्, अशेषम् (+निःशेषम्), अखण्डम्, कृत्स्नम्, न्यक्षः, निखिलम्, अखिलम् ॥

विमर्श—इनमें-से 'सम' शब्द केवल 'सम्पूर्ण' अर्थमें ही 'सर्वनाम' संज्ञक है, अतः 'सब छात्र आते हैं' इस अर्थमें "आगच्छन्ति 'समे' छात्राः" ऐसा प्रयोग होता है। 'सब' अर्थसे भिन्न (बराबर, तुल्य) अर्थमें सर्वनाम

१खण्डेऽर्धशकले भित्तं नेमशल्कदलानि च।
२अंशो भागश्च वण्टः स्यात् ३पादस्तु स तुरीयकः॥ ७०॥
४मलिनं कच्चरं म्लानं कश्मलञ्च मलीमसम्।
५पवित्रं पावनं पूतं पुण्यं मेध्य६मथोज्ज्वलम्॥ ७१॥
विमलं विशदं वीध्रमवदातमनाविलम्।
विशुद्धं शुचि ७चोक्षन्तु निःशोध्यमनवस्करम्॥ ७२॥
८निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं धौतं क्षालितमित्यपि।

संज्ञक नहीं होनेसे 'ये समान हिस्सेके अधिकारी हैं' इस अर्थमें "एते 'समानाम्' अंशानामधिकारिणः" प्रयोग होता है, ऐसे ही अन्यत्र भी जानना चाहिए। 'सर्व' और 'विश्व' शब्द भी 'संज्ञा' भिन्न अर्थमें 'सर्वनाम' संज्ञक हैं॥

१. 'खण्ड, टुकड़े'के ७ नाम हैं—खण्डम् (पु न।+खण्डलम्), अर्धः, शकलम् (पु न), भित्तम्, नेमः, शल्कम्, दलम्॥

विमर्श—इनमें-से 'अर्ध' शब्द पुंल्लिङ्ग है, अतः 'ग्रामार्धः, अर्धः पटी, अर्धो नगरम्' इत्यादि प्रयोग होते हैं; किन्तु कुछ आचार्योंका सिद्धान्त है कि यह 'अर्ध' शब्द वाच्यलिङ्ग अर्थात् विशेष्यानुसार लिङ्गवाला है, इसी कारण टीकाकार ने—"खण्डमात्रवृत्तितायामभिधेयलिङ्गः" ('खण्ड' अर्थमें प्रयुक्त होने पर अभिधेयलिङ्ग अर्थात् वाच्यलिङ्ग 'अर्ध' शब्द है) ऐसा कहा है तथा 'समान भाग' अर्थमें प्रयुक्त 'अर्ध' शब्द नपुंसकलिङ्ग है। 'नेम' शब्द भी 'आधा' अर्थमें सर्वनामसंज्ञक है, अतएव उक्त अर्थमें उसका प्रयोग 'सर्व' शब्दके समान तथा दूसरे अर्थमें 'राम' शब्दके समान होता है॥

२. 'अंश, बाँट, हिस्से'के ३ नाम हैं—अंशः, भागः, वण्टः॥

३. 'चतुर्थांश, चौथाई हिस्से'का १ नाम है—पादः॥

४. 'मलिन'के ५ नाम हैं—मलिनम्, कच्चरम्, म्लानम्, कश्मलम् (+कल्मषम्), मलीमसम्॥

५. 'पवित्र'के ४ नाम हैं—पवित्रम् (पु न।+त्रि), पावनम्, पूतम्, पुण्यम्, मेध्यम्॥

६. 'उज्ज्वल, (निर्मल, मलहीन)'के ८ नाम हैं—उज्ज्वलम्, विमलम्, विशदम्, वीध्रम्, अवदातम्, अनाविलम्, विशुद्धम्, शुचि॥

७. 'स्वतः स्वच्छ, निर्मल'के ३ नाम हैं—चोक्षम्, निःशोध्यम्, अनवस्करम्॥

८. 'शुद्ध (साफ) किये हुए'के ५ नाम हैं—निर्णिक्तम्, शोधितम्, मृष्टम्, धौतम्, क्षालितम्॥

१सम्मुखीनमभिमुखं २पराचीनं पराङ्मुखम् ॥ ७३ ॥
३मुख्यं प्रकृष्टं प्रमुखं प्रवर्हं वर्यं वरेण्यं प्रवरं पुरोगम् ।
अनुत्तरं प्राग्रहरं प्रवेकं प्रधानमग्रेसरमुत्तमाग्रे ॥ ७४ ॥
ग्रामण्यग्रण्यग्रिमजात्याग्र्यानुत्तमान्यनवराध्र्यवरे ।
प्रष्ठपराध्र्यपराणि ४श्रेयसि तु श्रेष्ठसत्तमे पुष्कलवत् ॥ ७५ ॥
५स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुञ्जराः ।
सिंहशार्दूलनागाद्यास्तल्लजश्च मतल्लिका ॥ ७६ ॥
मचर्चिकाप्रकाण्डोद्घाः प्रशस्यार्थप्रकाशकाः ।
६गुणोपसर्जनोपाग्राण्यप्रधाने७ऽधमं पुनः ॥ ७७ ॥
निकृष्टमणकं गर्ह्यमवद्यं काण्डकुत्सिते ।
अपकृष्टं प्रतिकृष्टं याप्यं रेफोऽवमं ब्रुवम् ॥ ७८ ॥
खेटं पापमपशदं कुपूयं चेलमर्व च ।

---

१. 'सामने (सम्मुख)'वाले के २ नाम हैं—सम्मुखीनम्, अभिमुखम् ॥

२. 'पीछेवाले'के २ नाम हैं—पराचीनम्, पराङ्मुखम् ॥

३. 'मुख्य, प्रधान'के २६ नाम हैं—मुख्यम्, प्रकृष्टम्, प्रमुखम्, प्रवर्हम्, वर्यम्, वरेण्यम्, प्रवरम्, पुरोगम्, अनुत्तरम्, प्राग्रहरम्, प्रवेकम्, प्रधानम् (न ।+त्रि), अग्रेसरम्, उत्तमम्, अग्रम्, ग्रामणीः, अग्रणीः, अग्रिमम्, जात्यम्, अग्र्यम्, अनुत्तमम्, अनवराध्र्यम्, वरम् (पु न ।+त्रि), प्रष्ठम्, पराध्र्यम्, परम् (शेष सब त्रि) ॥

४. 'अत्यधिक उत्तम या प्रशस्त'के ४ नाम हैं—श्रेयः (-स्), श्रेष्ठम्, सत्तमम्, पुष्कलम् (सब त्रि) ॥

५. 'जिस शब्दके उत्तरपद (समस्त होकर जिस शब्दके बाद)में इन वक्ष्यमाण 'व्याघ्र' आदि शब्दोंका प्रयोग होता है, उस शब्दकी श्रेष्ठताको ये शब्द व्यक्त करते हैं—जैसे—'नरव्याघ्रः, नरपुङ्गवः'……आदि कहनेसे उसका 'नरोंमें श्रेष्ठ' ऐसा अर्थ होता है और इनका लिङ्गपरिवर्तन नहीं होता है अर्थात् उत्तरपदवालाही लिङ्ग सर्वदा रहता है। उत्तरपदमें प्रयुक्त होकर पूर्वपदकी प्रशस्यताको कहनेवाले ये १२ शब्द हैं—व्याघ्रः, पुङ्गवः, ऋषभः, कुञ्जरः, सिंहः, शार्दूलः, नागः आदि ('आदि' शब्दसे 'वृन्दारकः' इत्यादिका संग्रह है) तल्लजः, मतल्लिका, मचर्चिका, प्रकाण्डम्, उद्घः ॥

६. 'अप्रधान'के ४ नाम हैं—गुणः, उपसर्जनम् (न, यथा—उपसर्जनं-भार्या,……), उपाग्रम्, अप्रधानम् ॥

७. 'निकृष्ट, हीन, निन्दनीय'के १६ नाम हैं—अधमम्, निकृष्टम्, अणकम्, गर्ह्यम्, अवद्यम्, काण्डम् (पु न); कुत्सितम्, अपकृष्टम्, प्रतिकृष्टम्,

१तदासेचनकं यस्य दर्शनाद् दृग्न तृप्यति ॥ ७९ ॥
२चारु हारि रुचिरं मनोहरं वल्गु कान्तमभिराममबन्धुरे ।
वामरुच्यसुषमाणि शोभनं मञ्जुमञ्जुलमनोरमाणि च ॥ ८० ॥
साधुरम्यमनोज्ञानि पेशलं हृद्यसुन्दरे ।
काम्यं कम्रं कमनीयं सौम्यञ्च मधुरं प्रियम् ॥ ८१ ॥
३व्युष्टिः फल४मसारन्तु फल्गु ५शून्यन्तु रिक्तकम् ।
शुन्यं तुच्छं वशिकञ्च ६निबिडन्तु निरन्तरम् ॥ ८२ ॥
निबिरीसं घनं सान्द्रं नीरन्ध्रं बहलं दृढम् ।
गाढमविरलञ्चा७थ विरलं तनु पेलवम् ॥ ८३ ॥
८नवं नवीनं सद्यस्कं प्रत्यग्रं नूत्ननूतने ।
नव्यञ्चाभिनवे ९जीर्णे पुरातनं चिरन्तनम् ॥ ८४ ॥
पुराणं प्रतनं प्रत्नं जर—

याप्यम् (+ याव्यम्) रेफः (+ रेपः), अवमम् , ब्रुवम्, खेटम्, पापम् , अपशदम्, कुपूयम् , चेलम् , अर्व (–र्वन् ।) 'रेफ' शब्दको छोड़कर शेष सब वाच्यलिङ्ग हैं) ॥

१. 'जिसके देखनेसे नेत्र तृप्त न हों अर्थात् बराबर देखते ही रहनेकी इच्छा बनी रहे, उस'का १ नाम है—आसेचनकम् ॥

२. 'सुन्दर, मनोहर'के २८ नाम हैं—चारु, हारि (–रिन्), रुचिरम्, मनोहरम् वल्गु, कान्तम् , अभिरामम् , बन्धुरम् , वामम् , रुच्यम्, सुषमम् , शोभनम् , मञ्जु, मञ्जुलम् , मनोरमम् , साधु, रम्यम् (+ रमणीयम्), मनोज्ञम् , पेशलम् , हृद्यम् , सुन्दरम् , काम्यम् , कम्रम् , कमनीयम् , सौम्यम् , मधुरम् , प्रियम् (+ लडहः । सब वाच्यलिङ्ग हैं) ॥

३. 'फल, परिणाम'के २ नाम हैं—व्युष्टिः, फलम् (+ परिणामः)

४. 'सारहीन'के २ नाम हैं—असारम् (+ निःसारम्), फल्गु ॥

५. 'शून्य, खाली, तुच्छ'के ५ नाम हैं—शून्यम्, रिक्तकम् (+ रिक्तम्), शुन्यम्, तुच्छम् , वशिकम् ॥

६. 'सघन'के १० नाम हैं—निबिडम् , निरन्तरम् , निबिरीसम् , घनम् , सान्द्रम् , नीरन्ध्रम् , बहलम् , दृढम् , गाढम् , अविरलम् ॥

७. 'विरल'के ३ नाम हैं—विरलम् , तनु, पेलवम् ॥

८. 'नये, नवीन'के ८ नाम हैं—नवम् , नवीनम् , सद्यस्कम् प्रत्यग्रम् , नूत्नम् , नूतनम् , नव्यम् , अभिनवम् ॥

९. 'पुराने'के ७ नाम हैं—जीर्णम् , पुरातनम् , चिरन्तनम् , पुराणम्, प्रतनम् , प्रत्नम् , जरत् ॥

१मूर्त्तन्तु मूर्त्तिमत् ।
२उच्चावचं नैकभेद३मतिरिक्ताधिके समे ॥ ८५ ॥
४पार्श्वं समीपं सविधं ससीमाभ्याशं सवेशान्तिकसन्निकर्षाः ।
सदेशमभ्यग्रसनीडसन्निधानान्युपान्तं निकटोपकण्ठे ॥८६॥
सन्निकृष्टसमर्यादाभ्यर्णान्यासन्नसन्निधी ।
५अव्यवहितेऽनन्तरं संसक्तमपटान्तरम् ॥ ८७ ॥
६नेदिष्ठमन्तिकतमं ७विप्रकृष्टपरे पुनः ।
दूरे८ऽतिदूरे दविष्ठं दवीयो९ऽथ सनातनम् ॥ ८८ ॥
शाश्वतानश्वरे नित्यं ध्रुवं १०स्थेयस्त्वतिस्थिरम् ।
स्थास्नु स्थेष्ठं ११तत्कूटस्थं कालव्याप्येकरूपतः ॥ ८९ ॥
१२स्थावरन्तु जङ्गमान्य—

---

१. 'मूर्तिमान्'के २ नाम हैं—मूर्त्तम्, मूर्त्तिमत् ॥

२. 'ऊँच-नीच (ऊबड़-खाबड़, विषमतल)के २ नाम हैं—उच्चावचम्, नैकभेदम् ॥

३. 'अतिरिक्त' (अधिक, अलावे)'के २ नाम हैं—अतिरिक्तम्, अधिकम् ॥

४. 'पास, निकट'के २० नाम हैं—पार्श्वम्, समीपम्, सविधम्, ससीमम्, अभ्याशम्, संवेशः, अन्तिकम्, सन्निकर्षः, सदेशम्, अभ्यग्रम्, सनीडम्, सन्निधानम्, उपान्तम्, निकटम् (पु न), उपकण्ठम्, सन्निकृष्टम्, समर्यादम्, अभ्यर्णम्, आसन्नम्, सन्निधिः (पु) ॥

५. 'अव्यवहित' (बीचमें अन्तरहीन)'के ४ नाम हैं—अव्यवहितम्, अनन्तरम्, संसक्तम्, अपटान्तरम् ॥

६. 'अत्यन्त समीप'के २ नाम हैं—नेदिष्ठम्, अन्तिकतमम् ॥

७. 'दूर'के ३ नाम हैं—विप्रकृष्टम्, परम्, दूरम् ॥

८. 'अत्यन्त दूर'के २ नाम हैं—अतिदूरम्, दविष्ठम्, दवीयः (-यस्) ॥

९. 'सनातन, नित्य'के ५ नाम हैं—सनातनम्, शाश्वतम्, अनश्वरम्, नित्यम्, ध्रुवम् ॥

१०. 'अत्यन्त स्थिर'के ४ नाम हैं—स्थेयः (-यस्), अतिस्थिरम्, स्थास्नु, स्थेष्ठम् ॥

११. 'सर्वदा एकरूपमें (निर्विकार होकर) स्थित रहनेवाले उस अत्यन्त स्थिर पदार्थ ('आकाश' आदि)' का १ नाम है—कूटस्थम् ॥

१२. 'स्थावर' (जङ्गमसे भिन्न, यथा—पृथ्वी, पर्वत आदि अचल पदार्थ)का १ नाम है—स्थावरम् ॥

१जङ्गमन्तु त्रसं चरम् ।
चराचरं जगदिङ्गं चरिष्णु २चाथ चञ्चलम् ॥ ६० ॥
तरलं कम्पनं कम्प्रं परिप्लवचलाचले ।
चटुलं चपलं लोलं चलं पारिप्लवास्थिरे ॥ ६१ ॥
३ऋजावजिह्मप्रगुणा४ववाग्रेऽवनतानते ।
५कुञ्चितं नतमाविद्धं कुटिलं वक्रवेल्लिते ॥ ६२ ॥
वृजिनं भङ्गुरं भुग्नमरालं जिह्ममूर्मिमत् ।
६अनुगेऽनुपदाऽन्वक्षान्व७ऽन्त्ययेकाक्येक एककः ॥ ६३ ॥
८एकात्तानायनसर्गाग्र्याण्यैकाग्र्यञ्च तद्गतम् ।
अनन्यवृत्त्येकायनगतञ्चा९ऽथाद्यमादिमम् ॥ ६४ ॥
पौरस्त्यं प्रथमं पूर्वमादिरग्र१०मथान्तिमम् ।
जघन्यमन्त्यं चरममन्तः पाश्चात्त्यपश्चिमे ॥ ६५ ॥

---

१. 'जङ्गम (चलने-फिरनेवाले, यथा—देव, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि)'के ७ नाम हैं—जङ्गमम्, त्रसम्, चरम्, चराचरम्, जगत्, इङ्गम्, चरिष्णु ॥

२. 'चञ्चल'के १२ नाम हैं—चञ्चलम्, तरलम्, कम्पनम्, कम्प्रम्, परिप्लवम्, चलाचलम्, चटुलम्, चपलम्, लोलम्, चलम्, पारिप्लवम्, अस्थिरम् ॥

३. 'सीधा, टेढा नहीं'के ३ नाम हैं—ऋजुः, अजिह्मः, प्रगुणः ॥

४. 'अधोमुख'के ३ नाम हैं—अवाग्रम्, अवनतम्, आनतम् ॥

५. 'टेढ़े'के १२ नाम हैं—कुञ्चितम्, नतम्, आविद्धम्, कुटिलम्, वक्रम्, वेल्लितम्, वृजिनम्, भङ्गुरम्, भुग्नम्, अरालम्, जिह्मम्, ऊर्मिमत् ॥

६. 'अनुगामी पीछे चलनेवाले'के ४ नाम हैं—अनुगम्, अनुपदम्, अन्वक्षम्, अन्वक् (-न्वञ्च् । + अनुचरः, अनुगामी, -मिन्) ॥

७. 'अकेले, अद्वितीय'के ३ नाम हैं—एकाकी (-किन्), एकः, एककः (+ अवगणः, अद्वितीयः असहायः, एकलः) ॥

८. 'एकाग्र'के ८ नाम हैं—एकतानम्, एकायनम्, एकसर्गम्, एकाग्रम्, ऐकाग्रम्, तद्गतम्, अनन्यवृत्ति (-त्तिन्), एकायनगतम् ॥

९. 'पहले, आदिम'के ७ नाम हैं—आद्यम्, आदिमम्, पौरस्त्यम्, प्रथमम्, पूर्वम्, आदिः, अग्रम् ॥

१०. 'अन्तिम, आखिरी, अन्तवाले'के ७ नाम हैं—अन्तिमम्, जघन्यम्, अन्त्यम्, चरमम्, अन्तः (पु), पाश्चात्त्यम्, पश्चिमम् ॥

१मध्यमं माध्यमं मध्यमीयं माध्यन्दिनञ्च तत् ।
२अभ्यन्तरमन्तरालं विचाले ३मध्यमन्तरे ॥ ९६ ॥
४तुल्यः समानः सदृक्षः सरूपः सदृशः समः ।
साधारणसधर्माणौ सवर्णः सन्निभः सदृक् ॥ ९७ ॥
५स्युरुत्तरपदे प्रख्यः प्रकारः प्रतिमो निभः ।
भूतरूपोपमाः काशः संनिप्रप्रतितः परः ॥ ९८ ॥
६औपम्यमनुकारोऽनुहारः साम्यं तुलोपमा ।
कक्षोपमान७मर्चा तु प्रतेर्मा यातना निधिः ॥ ९९ ॥
छाया छन्दः कायो रूपं बिम्बं मानकृती अपि ।
८सूर्मी स्थूणाऽयःप्रतिमा ९हरिणी स्याद्धिरण्मयी ॥ १०० ॥

---

१. 'मध्यम, बीचवाले'के ४ नाम हैं—मध्यमम्, माध्यमम्, मध्यमीयम्, माध्यन्दिनम् ॥

२. 'अन्तराल' (भीतरी भाग, बीचके हिस्से)'के ३ नाम हैं—अभ्यन्तरम्, अन्तरालम्, विचालम् ॥

३. 'बीच'के २ नाम हैं—मध्यम्, अन्तरम् ॥

४. 'तुल्य, समान'के ११ नाम हैं—तुल्यः, समानः, सदृक्षः, सरूपः, सदृशः, समः, साधारणः, सधर्मा (-र्मन्), सवर्णः, सन्निभः, सदृक् (-श्) ॥

५. 'किसी शब्दके उत्तर (बाद) में रहनेपर समस्त (समास किये हुए) ये ११ शब्द उसके समान अर्थको व्यक्त करते हैं (यथा—चन्द्रप्रख्यं, चन्द्रनिभं, चन्द्रप्रतिमं वा मुखम्……(अर्थात् चन्द्रमाके समान मुख,……) तथा ये शब्द विशेष्याधीन लिङ्गवाले होनेसे तीनों लिङ्गोंमें प्रयुक्त होते हैं (यथा—पल्लवप्रख्यः पाणिः,……), असमस्त (चन्द्रेण प्रख्यः,…) होनेपर इनका कोई प्रयोग नहीं होता है; वे ११ शब्द ये हैं—प्रख्यः, प्रकारः, प्रतिमः, निभः, भूतः, रूपम्, उपमा, संकाशः, नीकाशः, प्रकाशः, प्रतीकाशः ॥

६. 'उपमा, समानता'के ८ नाम हैं—औपम्यम्, अनुकारः, अनुहारः, साम्यम्, तुला, उपमा, कक्षा, उपमानम् (+उपमितिः) ॥

७. 'प्रतिमा, मूर्ति'के ११ नाम हैं—अर्चा, प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिनिधिः, प्रतिच्छाया, प्रतिच्छन्दः, प्रतिकायः, प्रतिरूपम्, प्रतिबिम्बम्, प्रतिमानम्, प्रतिकृतिः ॥

८. 'लोहेकी प्रतिमा'के ३ नाम हैं—सूर्मी, स्थूणा, अयःप्रतिमा ॥

९. 'सुवर्ण (सोने)की प्रतिमा'के २ नाम हैं—हरिणी, हिरण्मयी (+सौवर्णी, कनकमयी,……) ॥

१प्रतिकूलन्तु विलोममपसव्यमपष्ठुरम् ।
वामं प्रसव्यं प्रतीपं प्रतिलोममपष्ठु च ॥ १०१ ॥
२वामं शरीरेऽङ्गं सव्य३मपसव्यन्तु दक्षिणम् ।
४अबाधोच्छृङ्खलोद्दामान्ययन्त्रितमनर्गलम् ॥ १०२ ॥
निरङ्कुशे ५स्फुटे स्पष्टं प्रकाशं प्रकटोल्बणे ।
व्यक्तं ६वर्तुलन्तु वृत्तं निस्तलं परिमण्डलम् ॥ १०३ ॥
७बन्धुरन्तून्नतानतं ८स्थपुटं विषमोन्नतम् ।
९अन्यदन्यतरद्भिन्नं त्वमेकमितरच्च तत् ॥ १०४ ॥
१०करम्बः कबरो मिश्रः सम्पृक्तः खचितः समाः ।
११विविधस्तु बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ १०५ ॥

---

१. 'विपरीत, उलटा, प्रतिकूल'के ९ नाम हैं—प्रतिकूलम्, विलोमम्, अपसव्यम्, अपष्ठुरम्, वामम्, प्रसव्यम्, प्रतीपम्, प्रतिलोमम्, अपष्ठु ॥

२. 'शरीरके बाएँ अङ्ग'के २ नाम हैं—वामम्, सव्यम् ॥

३. 'शरीरके दहने अङ्ग'के २ नाम हैं—अपसव्यम्, दक्षिणम् ॥

४. 'निरङ्कुश, अधिक स्वतन्त्र'के ६ नाम हैं—अबाधम्, उच्छृङ्खलम्, उद्दामम्, अनियन्त्रितम्, अनर्गलम् (+निरर्गलम्), निरङ्कुशम् ॥

५. 'स्पष्ट'के ६ नाम हैं—स्फुटम्, स्पष्टम्, प्रकाशम्, प्रकटम्, उल्बणम्, व्यक्तम् ॥

६. गोलाकार, वृत्त'के ४ नाम हैं—वर्तुलम्, वृत्तम् (पु न । + त्रि), निस्तलम्, परिमण्डलम् ॥

७. 'अपेक्षाकृत अर्थात् साधारण ऊँचे-नीचे'के २ नाम हैं—बन्धुरम्, उन्नतानतम् ॥

८. 'विषम (अत्यधिक) ऊँचे-नीचे उबड़-खाबड़'के २ नाम हैं—स्थपुटम्, विषमोन्नतम् ॥

९. 'दूसरा, भिन्न'के ५ नाम हैं—अन्यत्, अन्यतरत्, भिन्नम्, एकम्, इतरत् । (इनमें-से तृतीय 'भिन्न' शब्दको छोड़कर शेष सब पर्याय सर्वनाम-संज्ञक हैं) ॥

१०. 'मिले, सटे' या जड़े'के ५ नाम हैं—करम्बः, कबरः, मिश्रः, संपृक्तः, खचितः ॥

११. 'विविध, अनेक प्रकार'के ४ नाम हैं—विविधः, बहुविधः, (+बहुरूपः), नानारूपः, (+नानाविधः), पृथग्विधः (+पृथग्रूपः, नैकरूपः,....) ॥

१त्वरितं सत्वरं तूर्णं शीघ्रं क्षिप्रं द्रुतं लघु ।
चपलाविलम्बिते च २झम्पा सम्पातपाटवम् ॥ १०६ ॥
३अनारतं त्वविरतं संसक्तं सततानिशे ।
नित्यानवरताजस्रासक्ताश्रान्तानि सन्ततम् ॥ १०७ ॥
४साधारणन्तु सामान्यं ५दृढसन्धिस्तु संहतम् ।
६कलिलं गहने ७संकीर्णे तु संकुलमाकुलम् ॥ १०८ ॥
कीर्णमाकीर्णञ्च ८पूर्णं त्वाचितं छन्नपूरिते ।
भरितं निचितं व्याप्तं ९प्रत्याख्याते निराकृतम् ॥ १०९ ॥
प्रत्यादिष्टं प्रतिक्षिप्तमपविद्धं निरस्तवत् ।
१०परिक्षिप्ते वलयितं निवृतं परिवेष्टितम् ॥ ११० ॥
परिष्कृतं परीतञ्च ११त्यक्तं तूत्सृष्टमुज्झितम् ।
धूतं हीनं विधूतञ्च—

---

१. 'शीघ्र, जल्द'के ९ नाम हैं—त्वरितम्, सत्वरम्, तूर्णम्, शीघ्रम्, क्षिप्रम्, द्रुतम्, लघु, चपलम्, अविलम्बितम् ॥

२. 'झपटने'के २ नाम हैं—झम्पा (स्त्री । + पु), संपातपाटवम् ॥

३. 'निरन्तर, लगातार, अव्यवहित'के ११ नाम हैं—अनारतम्, अविरतम्, संसक्तम्, सततम्, अनिशम् (+अव्य०), नित्यम्, अनवरतम्, अजस्रम्, असक्तम्, अश्रान्तम्, सन्ततम् ॥

४. 'साधारण'के २ नाम हैं—साधारणम्, सामान्यम् ॥

५. 'अच्छी तरह जुटे या मिले हुए'के २ नाम हैं—दृढसन्धिः, संहतम् ॥

६. 'गहन'के २ नाम हैं—कलिलम्, गहनम् ॥

७. 'सङ्कीर्ण' (ठसाठस भरे हुए, व्याप्त)के ५ नाम हैं—संकीर्णम्, संकुलम्, आकुलम्, कीर्णम्, आकीर्णम् ॥

८. 'पूर्ण, भरे हुए व्याप्त'के ७ नाम हैं—पूर्णम्, आचितम्, छन्नम् (+छादितम्), पूरितम्, भरितम्, निचितम्, व्याप्तम् ॥

९. 'प्रत्याख्यात (दूर हटाये गये, जिसका निराकरण किया गयाहो उस)'के ६ नाम हैं—प्रत्याख्यातम् निराकृतम्, प्रत्यादिष्टम्, प्रतिक्षिप्तम्, अपविद्धम्, निरस्तम् ॥

१०. 'घिरे हुए'के ६ नाम हैं—परिक्षिप्तम्, वलयितम्, निवृतम्, परिवेष्टितम्, परिष्कृतम्, परीतम् ॥

११. 'छोड़े, गये, हटाये गये'के ६ नाम हैं—त्यक्तम्, उत्सृष्टम्, उज्झितम्, धूतम्, हीनम्, विधूतम् ॥

—१विन्नं वित्तं विचारिते ॥ १११ ॥
२अवकीर्णे त्ववध्वस्तं ३संवीतं रुद्धमावृतम् ।
संवृतं पिहितं छन्नं स्थगितञ्चापवारितम् ॥ ११२ ॥
अन्तर्हितं तिरोहितं४मन्तर्द्धिस्त्वपवारणम् ।
छदनव्यवधान्तर्द्धापिधानस्थगनानि च ॥ ११३ ॥
व्यवधानन्तिरोधानं ५दर्शितन्तु प्रकाशितम् ।
आविष्कृतं प्रकटितं६मुच्चण्डन्त्ववलम्बितम् ॥ ११४ ॥
७अनादृतमवाज्ञातं मानितं गणितं मतम् ।
८रीढाऽवज्ञावहेलान्यसूर्क्षणञ्चाप्यनादरे ॥ ११५ ॥
९उन्मूलितमावर्हितं स्यादुत्पाटितमुद्धृतम् ।
१०प्रेङ्खोलितन्तरलितं लुलितं प्रेङ्खितं धुतम् ॥ ११६ ॥
चलितं कम्पितं धूतं वेल्लितान्दोलिते अपि ।

---

१. 'विचारित (जिसका विचार किया गया हो, उस)'के ३ नाम हैं—विन्नम्, वित्तम्, विचारितम् ॥

२. 'फैलाये हुए, चूर्ण किये हुए'के २ नाम हैं—अवकीर्णम्, अवध्वस्तम् ॥

३. 'ढके हुए, छिपाये गये, रोके गये'के १० नाम हैं—संवीतम्, रुद्धम्, आवृतम्, संवृतम्, पिहितम्, छन्नम् (+छादितम्), स्थगितम्, अपवारितम्, अन्तर्हितम्, तिरोहितम् ॥

४. रोकने, छिपाने, मनाकरने'के ९ नाम हैं—अन्तर्द्धिः (पु), अपवारणम्, छदनम्, व्यवधा, अन्तर्द्धा, पिधानम्, स्थगनम्, व्यवधानम्, तिरोधानम् ॥

५. 'प्रकाशित, आविष्कृत'के ४ नाम हैं—दर्शितम्, प्रकाशितम्, आविष्कृतम्, (+प्रादुष्कृतम्), प्रकटितम् ॥

६. 'लटकाये गये'के २ नाम हैं—उच्चण्डम्, अवलम्बितम् ॥

७. 'अनादृत, अपमानित'के ५ नाम हैं—अनादृतम्, अवज्ञातम्, अवमानितम्, अवगणितम्, अवमतम् ॥

८. 'अनादर'के ५ नाम हैं—रीढा, अवज्ञा (+अवमानना, अवगणना), अवहेलम् (त्रि), असूर्क्षणम् (+असूक्षणम्), अनादरः ॥

९. 'उखाड़े गये'के ४ नाम हैं—उन्मूलितम्, आवर्हितम्, उत्पाटितम्, उद्धृतम् ॥

१०. 'हिले या काँपे हुए'के १० नाम हैं—प्रेङ्खोलितम्, तरलितम्,

१दोला प्रेङ्खोलनं प्रेङ्खा २फाण्टं कृतमयत्नतः ॥ ११७ ॥
३अधःक्षिप्तं न्यञ्चितं स्या४दूर्ध्वक्षिप्तमुदञ्चितम् ।
५नुन्ननुत्तास्तनिष्ठ्यूतान्याविद्धं क्षिप्तमीरितम् ॥ ११८ ॥
६समे दिग्धलिप्ते ७रुग्णभुग्ने ८रूषितगुण्डिते ।
९गूढगुप्ते च १०मुषितमूषिते ११गुणिताहते ॥ ११९ ॥
१२स्यान्निशातं शितं शातं निशितन्तेजितं क्ष्णुतम् ।
१३वृते तु वृत्तवावृत्तौ—

लुलितम्, प्रेङ्खितम्, धुतम्, चलितम्, कम्पितम्, धूतम्, वेल्लितम्, आन्दोलितम् ॥

१. 'दोला, झूलना'के ३ नाम हैं—दोला, प्रेङ्खोलनम्, प्रेङ्खा ॥

२. 'बिना प्रयत्न किये गये'का १ नाम है—फाण्टम् ॥

विमर्श—जो बिना पकाये बिना पीसे ही केवल जलके संसर्गमात्रसे विभक्तरसवाला काढ़ा आदि आग पर थोड़ा-सा गर्म करनेपर तैयार हो जाय उसे 'फाण्ट' कहते हैं, जैसे—"फाण्टाभिरद्भिराचामेत्" (कुछ गर्म (विशेष आयास के बिना ही थोड़ा तपाये हुए) पानीसे आचमन करे) यहाँ थोड़ा गर्म करनेसे आयास (परिश्रम) का अभाव-सा प्रतीत होता है, ऐसा कुछ आचार्योंका मत है। कुछ आचार्योंका यह भी मत है कि 'आयासरहित पुरुष या दूसरे किसीको भी 'फाण्ट' कहते हैं, यथा—"फाण्टाश्चित्रास्त्रपाणयः ॥"

३. 'नीचे फेंके गये'के २ नाम हैं—अधःक्षिप्तम्, न्यञ्चितम् ॥

४. 'ऊपर फेंके गये'के २ नाम हैं—ऊर्ध्वक्षिप्तम्, उदञ्चितम् (+उदस्तम्) ॥

५. 'फेंके गये'के ७ नाम हैं—नुन्नम्, नुत्तम्, अस्तम्, निष्ठ्यूतम्, आविद्धम्, क्षिप्तम्, ईरितम् (+चोदितम्) ॥

६. 'लीपे गये, पोते गये'के २ नाम हैं—दिग्धम्, लिप्तम् ॥

७. 'टूटे हुए'के २ नाम हैं—रुग्णम्, भुग्नम् ॥

८. 'रूषित (भस्म या सूखी मिट्टी आदि रगड़ने या पोतने)'के २ नाम हैं—रूषितम्, गुण्डितम् ॥

९. 'गूढ, छिपे हुए'के २ नाम हैं—गूढम्, गुप्तम् ॥

१०. 'चुराये गये'के २ नाम हैं—मुषितम्, मूषितम् ॥

११. 'गुणित (अंक, रस्सी आदि)'के २ नाम हैं—गुणितम्, आहतम् ॥

१२. '(शानपर चढ़ाकर या पत्थर आदि पर रगड़कर) तेज किये गये'के ६ नाम हैं—निशातम्, शितम्, शातम्, निशितम्, तेजितम्, क्ष्णुतम् ॥

१३. 'चुने गये, निर्वाचित'के ३ नाम हैं—वृतः, वृत्तः, वावृत्तः ॥

—१ह्रीतह्रीणौ तु लज्जिते ॥ १२० ॥
२संगूढः स्यात्संकलिते ३संयोजित उपाहिते ।
४पक्वं परिणतं ५पाके क्षीराज्यहविषां शृतम् ॥ १२१ ॥
६निष्पक्वं कथिते ७प्लुष्टप्रष्टदग्धोषिताः समाः ।
८तनूकृते त्वष्टतष्टौ ९विद्धे छिद्रितवेधितौ ॥ १२२ ॥
१०सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ ११विलीने द्रुतविद्रुतौ ।
१२उतं प्रोते १३स्यूतमूतमुतञ्च तन्तुसन्तते ॥ १२३ ॥
१४पाटितं दारितं भिन्ने १५विदरः स्फुटनं भिदा ।
१६अङ्गीकृतं प्रतिज्ञातमूरीकृतोरुरीकृते ॥ १२४ ॥
संश्रुतमभ्युपगतमुररीकृतमाश्रुतम् ।
संगीर्णं प्रतिश्रुतञ्च—

---

१. 'लजाये (शर्माये) हुए'के ३ नाम हैं—ह्रीतः, ह्रीणः, लज्जितः ॥

२. 'संकलित'के २ नाम हैं—संगूढः, संकलितः ॥

३. 'संयुक्त किये (जोड़े) हुए'के २ नाम हैं—संयोजितः, उपाहितः ॥

४. 'पके हुए'के २ नाम हैं—पक्वम्, परिणतम् ॥

५. 'दूध, घी तथा हविष्यका पकाने (उबालने)'का १ नाम है—शृतम् ॥

६. 'अच्छी तरह पके हुए (अधिक उबालकर क्वाथ किये हुए)'के २ नाम हैं—निष्पक्वम्, क्वथितम् ॥

७. 'जले हुए'के ४ नाम हैं—प्लुष्टः, प्रष्टः, दग्धः, उषितः ॥

८. (छीलकर) पतला किये गये काष्ठ आदि'के ३ नाम हैं—तनूकृत; त्वष्टः, तष्टः, ॥

९. 'छेदे गये काष्ठ, लोहे आदि'के ३ नाम हैं—विद्धः, छिद्रितः, वेधितः ॥

१०. 'सिद्ध'के ३ नाम हैं—सिद्धम्, निर्वृत्तम्, निष्पन्नः ॥

११. 'पिघले हुए घृत आदि'के ३ नाम हैं—विलीनः, द्रुतः, विद्रुतः ॥

१२. 'बुने हुये कपड़े स्वेटर आदि'के २ नाम हैं—उतम्, प्रोतम् ॥

१३. 'सिले हुए कोट, कमीज, कुर्त्ते आदि'के ४ नाम हैं—स्यूतम्, ऊतम्, उतम्, तन्तुसन्ततम् ॥

१४. 'फाड़े या चीरे हुए काष्ठ आदि'के ३ नाम हैं—पाटितम्, दारितम्, भिन्नम् ॥

१५ 'फटने या फूटने'के २ नाम हैं—विदरः, स्फुटनम्, भिदा (+भित्, -द्) ॥

१६. 'स्वीकृत'के १० नाम हैं—अङ्गीकृतम् (+कक्षीकृतम्, स्वीकृतम्),

—१छिन्ने लूनं छितं दितम् ॥ १२५ ॥
छेदितं खण्डितं वृक्णं कृत्तं २प्राप्ते तु भावितम् ।
लब्धमासादितं भूतं ३पतिते गलितं च्युतम् ॥ १२६ ॥
स्रस्तं भ्रष्टं स्कन्नपन्ने ४संशितन्तु सुनिश्चितम् ।
५मृगितं मार्गितान्विष्टान्वेषितानि गवेषिते ॥ १२७ ॥
६तिमिते स्तिमितक्लिन्नसार्द्राद्रोन्नाः समुत्तवत् ।
७प्रस्थापितं प्रतिशिष्टं प्रहितप्रेषिते अपि ॥ १२८ ॥
८ख्याते प्रतीतप्रज्ञातवित्तप्रथितविश्रुताः ।
९तप्ते सन्तापितो दूनो धूपायितश्च धूपितः ॥ १२९ ॥
१०शीने स्त्यान११मुपनतस्तूपसन्न उपस्थितः ।

प्रतिज्ञातम्, ऊरीकृतम्, उररीकृतम्, संश्रुतम्, अभ्युपगतम्, उररीकृतम्, आश्रुतम्, संगीर्णम्, प्रतिश्रुतम् ॥

१. 'कटे हुए'के ८ नाम हैं—छिन्नम्, लूनम्, छितम्, (+छातम्), दितम्, छेदितम्, खण्डितम्, वृक्णम्, कृत्तम् ॥

२. 'प्राप्त, पाये हुए'के ५ नाम हैं—प्राप्तम्, भावितम्, लब्धम्, आसादितम् (+विन्नम्), भूतम् ॥

३. 'गिरे हुए'के ७ नाम हैं—पतितम्, गलितम्, च्युतम्, स्रस्तम्, भ्रष्टम्, स्कन्नम्, पन्नम् ॥

४. 'सुनिश्चित'के २ नाम हैं—संशितम्, सुनिश्चितम् ॥

५. 'ढूंढ़े (खोजे) गये'के ५ नाम हैं—मृगितम्, मार्गितम्, अन्विष्टम्, अन्वेषितम्, गवेषितम् ॥

६. '(पानी आदिसे) भींगे हुए कपड़े आदि'के ७ नाम हैं—तिमितः, स्तिमितः, क्लिन्नः, सार्द्रः, आर्द्रः, उन्नः, समुत्तः ॥

७. 'भेजे हुए'के ४ नाम हैं—प्रस्थापितम्, प्रतिशिष्टम्, प्रहितम्, प्रेषितम् ॥

८. 'विख्यात, प्रसिद्ध'के ६ नाम हैं—ख्यातः, प्रतीतः, प्रज्ञातः, वित्तः, प्रथितः, विश्रुतः (+प्रसिद्धः) ॥

९. 'तप्त (तपे हुए)'के ५ नाम हैं—तप्तः, सन्तापितः, दूनः, धूपायितः, धूपितः ॥

१०. 'जमकर कठोर बना हुआ घी आदि'के २ नाम हैं—शीनम्, स्त्यानम् ॥

११. 'उपस्थित, पासमें आये हुए'के ३ नाम हैं—उपनतः, उपसन्नः, उपस्थितः ॥

१निर्वातस्तु गते वाते २निर्वाणः पावकादिषु ॥ १३० ॥
३प्रवृद्धमेधितं प्रौढं ४विस्मृतान्तर्गते समे ।
५उद्वान्तमुद्गते ६गूनं हन्ने ७मीढन्तु मूत्रिते ॥ १३१ ॥
८विदितं बुधितं बुद्धं ज्ञातं सितगते अवान् ।
मनितं प्रतिपन्नञ्च ९स्यन्ने रीणं स्नुतं स्नुतम् ॥ १३२ ॥
१०गुप्तगोपायितत्राताविितत्राणानि रक्षिते ।
११कर्म क्रिया विधा १२हेतुशून्या त्वास्या विलक्षणम् ॥ १३३ ॥
१३कार्मणं मूलकर्म१४थ संवननं वशक्रिया ।
१५प्रतिबन्धे प्रतिष्टम्भः १६स्यादास्याऽऽस्थासना स्थितिः ॥ १३४ ॥

---

१. 'वायुके नष्ट (बन्द) होने'का १ नाम है—निर्वातः ॥

२. 'आग या दीपक आदिके बुझ जाने या मुनि आदि के मुक्ति पाने'का १ नाम है—निर्वाणः ॥

३. 'बढ़े हुए'के ३ नाम हैं—प्रवृद्धम्, एधितम्, प्रौढम् ॥

४. 'विस्मृत (भूले हुए)'के २ नाम हैं—विस्मृतम्, (+प्रस्मृतम्), अन्तर्गतम् ॥

५. 'उगले या उल्टी (कय) किये हुए'के २ नाम हैं—उद्वान्तम्, उद्गतम् ॥

६. 'पाखाना किये हुए'के २ नाम हैं—गूनम्, हन्नम् ॥

७. 'पेशाब किये हुए'के २ नाम हैं—मीढम्, मूत्रितम् ॥

८. 'जाने हुए'के ८ नाम हैं—विदितम्, बुधितम्, बुद्धम्, ज्ञातम्, अवसितम्, अवगतम्, मनितम्, प्रतिपन्नम् ॥

९. 'टपके, चूये या बहे हुए'के ४ नाम हैं—स्यन्नम्, रीणम्, स्नुतम्, स्नुतम् ॥

१०. 'गुप्त, रक्षित'के ६ नाम हैं—गुप्तम्, गोपायितम्, त्रातम्, अवितम्, त्राणम्, रक्षितम् ॥

११. 'कर्म'के ३ नाम हैं—कर्म (-र्मन्, पु न), क्रिया, विधा (+कृतिः) ॥

१२. 'कारणहीन स्थिति' (विलक्षण)'का १ नाम है—विलक्षणम् ॥

१३. 'मूल कर्म'के २ नाम हैं—कार्मणम्, मूलकर्म (-र्मन्) ॥

१४. 'वशमें करने'के २ नाम हैं—संवननम्, वशक्रिया (+वशीकरणम्) ॥

१५. 'प्रतिबन्ध (रुकावट)'के २ नाम हैं—प्रतिबन्धः, प्रतिष्टम्भः ॥

१६. 'स्थिति, ठहरने'के ४ नाम हैं—आस्या, आस्था, आसना, स्थितिः ॥

१परस्परं स्यादन्योन्यमितरेतरमित्यपि ।
२आवेशाटोपौ संरम्भे ३निवेशो रचना स्थितौ ॥ १३५ ॥
४निर्बन्धोऽभिनिवेशः स्यात् ५प्रवेशोऽन्तर्विगाहनम् ।
६गतौ वीङ्खा विहारेर्य्यापरिसर्पपरिक्रमाः ॥ १३६ ॥
७व्रज्याऽटाट्या पर्यटनं ८चर्या त्वीर्यापथस्थितिः ।
९व्यत्यासस्तु विपर्यासो वैपरीत्यं विपर्ययः ॥ १३७ ॥
व्यत्यये१०ऽथ स्फातिर्वृद्धौ ११प्रीणनेऽवनतर्पणे ।
१२परित्राणन्तु पर्याप्तिर्हस्तधारणमित्यपि ॥ १३८ ॥
१३प्रणतिः प्रणिपातोऽनुनये१४ऽथ शयने क्रमात् ।
विशाय उपशायश्च—

---

१. 'परस्पर (आपसमें)'के ३ नाम हैं—परस्परम्, अन्योन्यम्, इतरेतरम् ॥

२. 'संरम्भ, तेजी, तीव्रता'के ३ नाम हैं—आवेशः, आटोपः, संरम्भः ॥

३. 'रचना, बनावट'के ३ नाम हैं—निवेशः, रचना, स्थितिः ॥

४. 'निर्बन्ध, आग्रह'के २ नाम हैं—निर्बन्धः, अभिनिवेशः (+आग्रहः) ॥

५. 'प्रवेश करने (नदी या घर आदि में घुसने)'के २ नाम हैं—प्रवेशः, अन्तर्विगाहनम् ॥

६. 'गमन, जाने'के ६ नाम हैं—गतिः, वीङ्खा, विहारः, ईर्य्या, परिसर्पः परिक्रमः ॥

७. 'घूमने, टहलने'के ३ नाम हैं—व्रज्या, अटाट्या (+अटाटा, अट्या), पर्यटनम् ॥

८. 'ईर्यापथ में रहने (मुनियोंके ध्यान-मौन आदि नियत व्रतोंका पालन करने)'के २ नाम हैं—चर्या, ईर्य्यापथस्थितिः ॥

९. 'विपरीतता, उलटफेर'के ५ नाम हैं—व्यत्यासः, विपर्यासः, वैपरीत्यम्, विपर्ययः, व्यत्ययः ॥

१०. 'बढ़ने, वृद्धि होने'के २ नाम हैं—स्फातिः, वृद्धिः (+वर्द्धनम्) ॥

११. 'तृप्त करने'के ३ नाम हैं—प्रीणनम्, अवनम्, तर्पणम् ॥

१२. 'सहारा देने, रक्षा करने'के ३ नाम हैं—परित्राणम्, पर्याप्तिः, हस्तधारणम् ॥

१३. 'प्रणाम करने'के ३ नाम हैं—प्रणतिः, प्रणिपातः, अनुनयः (+प्रणामः, प्रणमनम्, नमस्कारः, नमस्कृतिः, नमस्करणम्) ॥

१४. क्रमशः (बारी-बारी से) पहरेदारी आदि के लिए सोने, शयन करने'के २ नाम हैं—विशायः, उपशायः ॥

—१पर्यायोऽनुक्रमः क्रमः ॥ १३६ ॥
परिपाट्यानुपूर्व्यावृर्द्तिपातस्त्वतिक्रमः ।
उपात्ययः पर्ययश्च ३समौ सम्बाधसङ्कटौ ॥ १४० ॥
४कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सिते ।
५अत्यर्थे गाढमुद्गाढं बाढं तीव्रं भृशं दृढम् ॥ १४१ ॥
अतिमात्रातिमर्यादनितान्तोत्कर्षनिर्भराः ।
भरैकान्तातिवेलातिशया ६जृम्भा तु जृम्भणम् ॥ १४२ ॥
७आलिङ्गनं परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ।
अङ्कपाली परीरम्भः क्रोडीकृतिट्रथोत्सवे ॥ १४३ ॥
महः क्षणोद्धवोद्धर्षा ९मेलके सङ्गसङ्गमौ ।
१०अनुग्रहोऽभ्युपपत्तिः ११समौ निरोधनिग्रहौ ॥ १४४ ॥

---

१. 'क्रम'के ६ नाम हैं—पर्यायः, अनुक्रमः, क्रमः, परिपाटी, आनुपूर्वी (+आनुपूर्व्यम्), आवृत् ॥

२. 'अतिक्रम (क्रमको भङ्ग करने)'के ४ नाम हैं—अतिपातः, अतिक्रमः, उपात्ययः, पर्ययः ॥

३. 'सङ्कीर्ण'के २ नाम हैं—सम्बाधः, सङ्कटः ॥

४. 'यथेष्ट, इच्छानुसार, भरपूर'के ६ नाम हैं—कामम्, प्रकामम्, पर्याप्तम्, निकामम् , इष्टम् , यथेप्सितम् ॥

विमर्श—कामम्, प्रकाम् और निकामम्—ये तीन शब्द अकारान्त होने पर अव्यय नहीं है और मकारान्त होनेपर अव्यय हैं[1] ॥

५. 'अतिशय, अधिक'के १६ नाम हैं—अत्यर्थम्, गाढम्, उद्गाढम्, बाढम्, तीव्रम्, भृशम्, दृढम्, अतिमात्रम्, अतिमर्यादम्, नितान्तम्, उत्कर्षः, निर्भरः, भरः, एकान्तम्, अतिवेलः, अतिशयः ॥

६. 'जँभाई'के २ नाम हैं—जृम्भा (त्रि), जृम्भणम् ॥

७. 'आलिङ्गन करने'के ७ नाम हैं—आलिङ्गनम्, परिष्वङ्गः, संश्लेषः, उपगूहनम्, अङ्कपाली, परीरम्भः, क्रोडीकृतिः ॥

८. 'उत्सव'के ५ नाम हैं—उत्सवः, महः, क्षणः, उद्धवः, उद्धर्षः ॥

९. 'मिलने'के ३ नाम हैं—मेलकः, सङ्गः, सङ्गमः (पु न) ॥

१०. 'अनुग्रह'के २ नाम हैं—अनुग्रहः, अभ्युपपत्तिः ॥

११. 'निरोध, रोकने'के २ नाम हैं—निरोधः, निग्रहः ॥

---

१. यथाऽऽह शाश्वतः—'कामे निकामे कामाख्या अव्ययास्तु मकारान्ताः ।' इति ॥

१विघ्नेऽन्तरायप्रत्यूहव्यवायाः २समये क्षणः
वेलावारावक्सरः प्रस्तावः प्रक्रमोऽन्तरम् ॥ १४५ ॥
३अभ्यादानमुपोद्घात आरम्भः प्रोपतः क्रमः ।
४प्रत्युत्क्रमः प्रयोगः स्या५दारोहणन्त्वभिक्रमः ॥ १४६ ॥
६आक्रमेऽधिक्रमक्रान्ती ७व्युत्क्रमस्तूत्क्रमोऽक्रमः ।
८विप्रलम्भो विप्रयोगो वियोगो विरहः समाः ॥ १४७ ॥
९आभा राढा विभूषा श्रीरभिख्याकान्तिविभ्रमाः ।
लक्ष्मीश्छाया च शोभायां १०सुषमा साऽतिशायिनी ॥ १४८ ॥
११संस्तवः स्यात्परिचय १२आकारस्त्विङ्ग इङ्गितम् ।
१३निमित्ते कारणं हेतुर्बीजं योनिर्निबन्धनम् ॥ १४९ ॥
निदान—

---

१. 'विघ्न'के ४ नाम हैं—विघ्नः, अन्तरायः, प्रत्यूहः, व्यवायः ॥

२. 'समय, अवसर'के ८ नाम हैं—समयः, क्षणः, वेला, वारः (पु न), अवसरः, प्रस्तावः, प्रक्रमः, अन्तरम् ॥

३. 'आरम्भ'के ५ नाम हैं—अभ्यादानम्, उपोद्घातः (+उद्घातः), आरम्भः, प्रक्रमः, उपक्रमः ॥

४. 'प्रयोग'के २ नाम हैं—प्रत्युत्क्रमः, प्रयोगः ॥

५. 'सामनेसे चढ़ने'के २ नाम हैं—आरोहणम्, अभिक्रमः ॥

६. 'क्रान्ति'के ३ नाम हैं—आक्रमः (+आक्रमणम्), अधिक्रमः, क्रान्तिः ॥

७. 'क्रमसे रहित'के ३ नाम हैं—व्युत्क्रमः, उत्क्रमः, अक्रमः ॥

८. 'वियोग, विरह'के ४ नाम हैं—विप्रलम्भः, विप्रयोगः, वियोगः, विरहः ॥

९. 'शोभा'के १० नाम हैं—आभा, राढा, विभूषा, श्रीः (स्त्री), अभिख्या, कान्तिः, विभ्रमः, लक्ष्मीः (स्त्री), छाया, शोभा ॥

१०. 'अत्यधिक शोभा'का १ नाम है—सुषमा ॥

११. 'परिचय, जान-पहचान'के २ नाम हैं—संस्तवः, परिचयः ॥

१२. 'चेष्टा, इशारा'के ३ नाम हैं—आकारः, इङ्गः, इङ्गितम् ॥

१३. ४६. 'कारण, हेतु'के ७ नाम हैं—निमित्तम्, कारणम्, हेतुः (पु), बीजम्, योनिः (पु स्त्री), निबन्धनम्, निदानम्, (ये धर्मवृत्ति होनेपर भी अपने लिङ्गको नहीं छोड़ते, अर्थात् अपने-अपने नियत लिङ्गमें ही प्रयुक्त होते हैं यथा—सुखस्य धर्मो निमित्तम्,……में ब्राह्मणका विशेषण होनेपर भी निमित्त शब्द नपुंसक में प्रयुक्त हुआ है) ॥

—१अथ कार्यं स्यादर्थः कृत्यं प्रयोजनम् ।
२निष्ठानिर्वहणे तुल्ये ३प्रवहो गमनं बहिः ॥ १५० ॥
४जातिः सामान्यं ५व्यक्तिस्तु विशेषः पृथगात्मिका ।
६तिर्यक्साचिः ७संहर्षस्तु स्पर्द्धा ८द्रोहस्त्वपक्रिया ॥ १५१ ॥
९बन्ध्ये मोघाऽफलमुधा १०अन्तर्गडु निरर्थकम् ।
११संस्थानं सन्निवेशः स्या१२दर्थस्यापगमे व्ययः ॥ १५२ ॥
१३सम्मूर्च्छनमभिव्याप्ति१४र्भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ।
१५अभावो नाशे १६संक्रामसंक्रमौ दुर्गसंचरे ॥ १५३ ॥
१७नीवाकस्तु प्रयामः स्या१८दवेक्षा प्रतिजागरः ।

---

१. 'प्रयोजन, कार्य'के ४ नाम हैं—कार्यम्, अर्थः, कृत्यम्, प्रयोजनम् ॥
२. 'निर्वाह करने'के २ नाम हैं—निष्ठा, निर्वहणम् ॥
३. 'बाहर जाने, बहने'का १ नाम है—प्रवहः ॥
४. 'जाति'के २ नाम हैं—जातिः (÷जातम्), सामान्यम् ॥
५. 'व्यक्ति, विशेष'के ३ नाम हैं—व्यक्तिः, विशेषः, पृथगात्मिका ॥
६. 'तिर्छे'के २ नाम हैं—तिर्यक् (-यञ्च्), साचिः (स्त्री । +साची, अव्य०) ॥
७. 'स्पर्द्धा, होड़'के २ नाम हैं—संहर्षः (+सङ्घर्षः), स्पर्द्धा ॥
८. 'द्रोह, अपकार'के २ नाम हैं—द्रोहः, अपक्रिया (+अपकारः) ॥
९. 'फलहीन, निष्फल'के ४ नाम हैं—बन्ध्यम्, मोघम्, अफलम्, मुधा (स्त्री तथा अव्य०) ॥
१०. 'निरर्थक'के २ नाम हैं—अन्तर्गडु, निरर्थकम् ॥
११. 'संस्थिति, ठहराव'के २ नाम हैं—संस्थानम्, सन्निवेशः ॥
१२. 'व्यय, खर्च'का १ नाम है—व्ययः ॥
१३. 'सर्वत्र व्याप्त होने—फैल जाने'के २ नाम हैं—सम्मूर्च्छनम्, अभिव्याप्तिः ॥
१४. 'यथोचितसे भ्रष्ट होने'का १ नाम है—भ्रेषः ॥
१५. 'अभाव नाश'के २ नाम हैं—अभावः, नाशः ॥
१६. 'दुर्ग (किला)में जाने या दुर्गके मार्ग'के ३ नाम हैं—संक्रामः, संक्रमः (२ पु न), दुर्गसंचरः ॥
१७. 'नियंत्रित वचन, (परिमित ठीक-ठीक बोलने)'के २ नाम हैं—नीवाकः, प्रयामः ॥
१८. 'अवेक्षण (देख भाल, निगरानी)'के २ नाम हैं—अवेक्षा, (+अवेक्षणम्, निरीक्षणम्), प्रतिजागरः ॥

१समौ विश्रम्भविश्वासौ २परिणामस्तु विक्रिया ॥ १५४ ॥
३चक्रावर्त्तो भ्रमो भ्रान्तिर्भ्रमिर्घूर्णिश्च घूर्णने ।
४विप्रलम्भो विसंवादो ५विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥ १५५ ॥
६उपलम्भस्त्वनुभवः ७प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।
८नियोगे विधिसंप्रेषौ ९विनियोगोऽर्पणं फले ॥ १५६ ॥
१०लवोऽभिलावो लवनं ११निष्पावः पवनं पवः ।
१२निष्ठेवष्ठीवनष्ठ्यूतष्ठेवनानि तु थूत्कृते ॥ १५७ ॥
१३निवृत्तिः स्यादुपरमो व्यवोपाङ्भ्यः परा रतिः ।
१४विधूननं विधुवनं १५रिङ्खणं स्खलनं समे ॥ १५८ ॥
१६रक्षणस्त्राणे १७ग्रहो ग्राहे—

---

१. 'विश्वास'के २ नाम हैं—विश्रम्भः, विश्वासः ॥

२. 'विकार (यथा—दूधका विकार दही······)'के २ नाम हैं—परिणामः (+परिणतिः), बिक्रिया (+विकारः, विकृतिः) ॥

३. 'भ्रमण, चक्कर लगाने'के ६ नाम हैं—चक्रावर्तः, भ्रमः, भ्रान्तिः, भ्रमिः, घूर्णिः (३ स्त्री), घूर्णनम् ॥

४. 'विसंवाद' (परस्पर या पूर्वापर विरोधी वचन)'के २ नाम हैं—विप्रलम्भः, विसंवादः (यथा—अन्धः पश्यति, मूको वदति·········) ॥

५. 'समर्पण करने, देने'के २ नाम हैं—विलम्भः, अतिसर्जनम् ॥

६. 'प्राप्ति'के २ नाम हैं—उपलम्भः, अनुभवः ॥

७. 'दोषारोपण, या पाने'के २ नाम हैं—प्रतिलम्भः, लम्भनम् ॥

८. 'नियुक्त करने, लगाने'के ३ नाम हैं—नियोगः, विधिः, संप्रैषः ॥

९. 'फलके विषयमें समर्पण करने'का १ नाम है—विनियोगः ॥

१०. 'काटने'के ३ नाम हैं—लवः, अभिलावः, लवनम् ॥

११. 'धान आदिसे भूसीको अलगकर साफ करने'के ३ नाम हैं-निष्पावः, पवनम् , पवः ॥

१२. 'थूकने'के ५ नाम हैं—निष्ठेवः (पु न), ष्ठीवनम् , ष्ठ्यूतम् , ष्ठेवनम् , थूत्कृतम् ॥

१३. 'निवृत्ति, समाप्ति'के ६ नाम हैं-निवृत्तिः, उपरमः, विरतिः, अवरतिः उपरतिः, आरतिः ॥

१४. 'हिलाने, कँपाने'के २ नाम हैं—विधूननम् , विधुवनम् ॥

१५. 'स्खलित होने, फिसलने'के २ नाम हैं—रिङ्खणम् , स्खलनम् ॥

१६. 'रक्षा करने, बचाने'के २ नाम हैं—रक्षणः, त्राणम् ॥

१७. 'पकड़ने'के २ नाम हैं—ग्रहः, ग्राहः ॥

—१व्यधनो वेधे २क्षये क्षिया ।
३स्फरणं स्फुरणे ४ज्यानिर्जीर्णि५र्वथ वरो वृतौ ॥ १५६ ॥
६समुच्चयः समाहारो७ऽपहारापचयौ समौ ।
८प्रत्याहार उपादानं ९बुद्धिशक्तिस्तु निष्क्रमः ॥ १६० ॥
१०इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्या धातुषु लक्षणम् ।
११अथाव्ययानि वक्ष्यन्ते १२स्वः स्वर्गे १३भूः रसातले ॥ १६१ ॥
१४भुवो विहायसा व्योम्नि १५द्यावाभूम्योस्तु रोदसी ।
१६उपरिष्टादुपर्यूर्ध्वे   १७स्यादधस्तादधोऽप्यवाक् ॥ १६२ ॥
१८वर्जने त्वन्तरेणर्ते हिरुग् नाना पृथग् विना ।

---

१. 'बेधने, छेदने'के २ नाम हैं—व्यधः, वेधः ॥

२. 'कम होने घटने'के २ नाम हैं—क्षयः, क्षिया ॥

३. 'फड़कने'के २ नाम हैं—स्फरणम् , स्फुरणम् ॥

४. 'पुराना होने'के २ नाम हैं—ज्यानिः, जीर्णिः ॥

५. 'स्वीकार करने, वरण करने'के २ नाम हैं—वरः, वृतिः ॥

६. 'एकत्र (इकट्ठा) करने, (समेटने, बटोरने)'के २ नाम हैं—समुच्चयः, समाहारः ॥

७. 'कम करने, हटाने'के २ नाम हैं—अपहारः अपचयः ॥

८. 'लाने'के २ नाम हैं—प्रत्याहारः, उपादानम् ॥

९. 'अष्टविध बुद्धिशक्ति'का १ नाम है—निष्क्रमः ॥

१०. इत्यादि प्रकारसे सिद्ध क्रियावाचक शब्दोंको धातु-प्रकृति-प्रत्ययके विभागादिके द्वारा जानना चाहिए ॥

११. अब साधारण शब्दोंका अर्थ कहनेके बाद 'अव्यय' (तीनों लिङ्गों, सातों विभक्तियों तथा तीनों वचनोंमें समान रूपवाले) शब्दोंको कहते हैं । 'अव्ययः' यह शब्द पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग है ॥

१२. 'स्वः' (स्वर्) का अर्थ 'स्वर्ग' है ॥

१३. 'भूः' (+भूस्) का अर्थ 'रसातल, पाताल' है ॥

१४. 'भुवः (वस्), विहायसा' इन २ शब्दोंका अर्थ 'आकाशमें' है ॥

१५. 'रोदसी'का अर्थ 'आकाश तथा भूमिका मध्य भाग' है ॥

१६. 'उपरिष्टात् , उपरि' इन २ शब्दोंका अर्थ 'ऊपरमें' है ॥

१७. 'अधस्तात्' अधः (– धस्) इन २ शब्दोंका अर्थ 'नीचे' है ॥

१८. 'अन्तरेण, ऋते, हिरुक् , नाना, पृथक् , विना' इन ६ शब्दोंका अर्थ 'अभावमें, विना' है ॥

१साकं सत्रा समं सार्द्धममा सह २कृतन्त्वलम् ॥ १६३ ॥
भवत्वस्तु च किं तुल्याः ३प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ।
तूष्णीं तूष्णीकां जोषञ्च मौने ५दिष्ट्या तु सम्मदे ॥ १६४ ॥
६परितः सर्वतो विष्वक् समन्ताच्च समन्ततः ।
७पुरः पुरस्तात्पुरतोऽग्रतः ८प्रायस्तु भूमनि ॥ १६५ ॥
९साम्प्रतमधुनेदानीं सम्प्रत्येतर्ह्य१०थाञ्जसा ।
द्राक् स्रागरं झटित्याशु मङ्क्ष्वह्नाय च सत्वरम् ॥ १६६ ॥
११सदा सनाऽनिशं शश्वद्१२भूयोऽभीक्ष्णं पुनःपुनः ।
असकृन्मुहुः १३सायन्तु दिनान्ते १४दिवसे दिवा ॥ १६७ ॥

---

१. 'साकम्, सत्रा, समम्, सार्द्धम्, अमा, सह' इन ६ शब्दोंका अर्थ 'साथमें' है ॥

२. 'कृतम्, अलम्, भवतु, अस्तु, किम्, इन ५ शब्दोंका अर्थ 'निषेध करना, है ॥

३. 'प्रेत्य, अमुत्र' इन २ शब्दोंका अर्थ 'परलोकमें' है ॥

४. 'तूष्णीम्, तूष्णीकाम्, जोषम्' इन तीन शब्दों का अर्थ 'मौन (चुप-चाप) रहना' है ॥

५. 'दिष्ट्या' (+समुपजोषम्) का अर्थ 'अधिक हर्ष' है ॥

६. 'परितः, सर्वतः (२-तस्), विष्वक् (-ष्वञ्च्), समन्तात्, समन्ततः (-तस्), इन ५ शब्दों का अर्थ 'सब तरफ' है ॥

७. 'पुरः (-रस्), पुरस्तात्, पुरतः, अग्रतः (२-तस्) इन ४ शब्दोंका अर्थ 'सामने, आगेकी ओर' है ॥

८. 'प्रायः (-यस्), का अर्थ 'अधिकतर, ज्यादातर' है ॥

९. 'साम्प्रतम्, अधुना, इदानीम्, सम्प्रति, एतर्हि' इन ५ शब्दोंका अर्थ 'इस समय' है ॥

१०. 'अञ्जसा, द्राक्, स्राक्, अरम्, झटिति, आशु, मङ्क्षु, अह्नाय, सत्वरम्' इन ९ शब्दोंका अर्थ 'शीघ्र, झटपट' है ॥

११. 'सदा (+सर्वदा), सना (+सनत्, सनात्), अनिशम्, शश्वत्' इन ४ शब्दोंका अर्थ 'सब समय' है ॥

१२. 'भूयः (-यस्), अभीक्ष्णम्, पुनःपुनः (-नर्), असकृत्, मुहुः (-हुस्)' इन ५ शब्दोंका अर्थ 'बार-बार, फिर' है ॥

१३. 'सायम्'का अर्थ 'सन्ध्या समय, सायंकाल' है ॥

१४. 'दिवा'का अर्थ 'दिन' है ॥

१सहसैकपदे सद्योऽकस्मात्सपदि तत्क्षणे ।
२चिराय चिररात्राय चिरस्य च चिराच्चिरम् ॥ १६८ ॥
चिरेण दीर्घकालार्थे ३कदाचिज्जातु कर्हिचित् ।
४दोषानक्तमुषा रात्रौ ५प्रगे प्रातरहर्मुखे ॥ १६९ ॥
६तिर्यगर्थे तिरः साचि ७निष्फले तु वृथा मुधा ।
८मृषा मिथ्याऽनृतेऽ९भ्यर्णे समया निकषा हिरुक् ॥ १७० ॥
१०शं सुखे ११बलवत्सुष्ठु किमुतातीव निर्भरे ।
१२प्राक् पुरा प्रथमे १३संवद्वर्षे १४परस्परे मिथः ॥ १७१ ॥
१५उषा निशान्तेऽ१६ल्पे किञ्चिन्मनागीषच्च किञ्चन ।

---

१. 'सहसा, एकपदे, सद्यः (-द्यस्), अकस्मात्, सपदि' इन ५ शब्दों' का अर्थ 'तत्काल, इसी क्षणमें, अभी' है ॥

२. 'चिराय, चिररात्राय, चिरस्य, चिरात्, चिरम्, चिरेण', इन ६ शब्दोंका अर्थ 'देरसे, विलम्बसे' है ॥

३. 'कदाचित्, जातु, कर्हिचित्' इन ३ शब्दोंका अर्थ 'कभी किसी समयमें' है ॥

४. 'दोषा, नक्तम्, उषा' इन ३ शब्दोंका अर्थ 'रात' है ॥

५. 'प्रगे, प्रातः (-तर्)' इन २ शब्दोंका अर्थ 'प्रातः-काल, सबेरे' है ॥

६. 'तिरः (-रस्), साचि' इन २ शब्दोंका अर्थ 'तिर्छा' है ॥

७. 'वृथा, मुधा' इन २ शब्दोंका अर्थ 'व्यर्थ, निष्फल' है ॥

८. 'मृषा, मिथ्या' इन २ शब्दोंका अर्थ 'झूठ, असत्य' है ॥

९. 'समया, निकषा, हिरुक्' इन ३ शब्दोंका अर्थ 'समीप' है ॥

१०. 'शम्'का अर्थ 'सुख' है ॥

११. 'बलवत्, सुष्ठु, किमुत, अतीव (+सु, अति)' इन ४ शब्दोंका अर्थ 'अत्यन्त, पूर्णतया' है ॥

१२. 'प्राक् (-ञ्च्), पुरा' इन २ शब्दोंका अर्थ 'पहले, या पूर्व दिशाकी ओर' है ॥

१३. 'संवत् (-वद्)'का अर्थ 'वर्ष, साल' है ॥

१४. 'मिथः (-थस्)' का अर्थ 'आपसमें' है ॥

१५. 'उषा'का अर्थ 'रात बीतनेके बाद तथा सूर्योदयसे कुछ पहलेका समय' है ॥

१६. 'किञ्चित्, मनाक्, ईषत्, किञ्चन' इन ४ शब्दोंका अर्थ थोड़ा, कुछ' है ॥

१आहो उताहो किमुत वितर्के किं किमूत च ॥ १७२ ॥
२इतिह स्यात्सम्प्रदाये ३हेतौ यत् तद् यतस्ततः ।
४सम्बोधनेऽङ्ग भोः प्याट् पाट् हे है हंहो अरेऽयि रे ॥ १७३ ॥
५श्रौषड् वौषट् वषट् स्वाहा स्वधा देवहविर्हुतौ ।
६रहस्युपांशु—

---

१. 'आहो, उताहो, किमुत, किम्, किमु, उत' इन ६ शब्दोंका अर्थ 'विकल्प (या पक्षान्तर, अथवा)' है ॥

२. 'इतिह'का अर्थ 'सम्प्रदाय' है । (यथा—इतिह स्माहुराचार्याः,…) ॥

३. 'यत्, तत्, यतः, ततः (२-तस्) (+येन, तेन)' इन ४ शब्दोंका अर्थ 'कारण, क्योंकि, इस कारणसे, उस कारणसे' है ॥

४. 'अङ्ग, भोः (-स्), प्याट्, पाट्, हे, है, हंहो, अरे, अयि, रे (+अररे,……)' ये १० शब्द सम्बोधनमें प्रयुक्त होते हैं ॥

शेषश्चात्र—आनुकूल्यार्थकं प्राध्वमसाकल्ये तु चिच्चन ।
तु हि च स्म ह वै पादपूरणे, पूजने स्वती ॥
वद् वा तथा तथैवैवं साम्येऽहो ही च विस्मये ।
स्युरेवं तु पुनर्वैवेत्यवधारणवाचकाः ॥
ॐ पृच्छायामतीते प्राक् निश्चयेऽद्धाऽञ्जसा द्वयम् ।
अतो हेतौ महः प्रत्यारम्भेऽथ स्वयमात्मनि ॥
प्रशंसने तु सुष्ठु स्यात्परश्वः श्वः परेऽहनि ।
अद्यात्राह्न्यथ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वेद्युरादयः ॥
समानेऽहनि सद्यः स्यात् परे त्वह्नि परेद्यवि ।
उभयद्युस्तूभयेद्युः समे युगपदेकदा ॥
स्यात्तदानीं तदा तर्हि यदा यर्ह्यन्यदैकदा ।
परुत् परार्यैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरेऽत्र च ॥
प्रकारेऽन्यथेतरथा कथमित्थं यथा तथा ।
द्विधा द्वेधा त्रिधा त्रेधा चतुर्धा द्वैधमादि च ॥
द्विस्त्रिश्चतुष्पञ्चकृत्व इत्याद्यावर्तने कृते ।
दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक् प्रत्यगादयः ॥

५. 'श्रौषट्, वौषट्, वषट्, स्वाहा, स्वधा' इनमें प्रथम ४ शब्द 'देवों के उद्देश्यसे हविष्य देनेमें तथा ५ वां अन्तिम (स्वधा) शब्द पितरोंके उद्देश्यसे 'कव्य' (श्राद्धपिण्डादि) देनेमें प्रयुक्त होते हैं ॥

६. 'उपांशु'का अर्थ 'एकांत है ॥

—१मध्येऽन्तरन्तरेणान्तरेऽन्तरा ॥ १७४ ॥
२प्रादुराविः प्रकाशे स्याद३भावे त्व न नो नहि ।
४हठे प्रसह्य५मा मास्म वारणे६ऽस्तमदर्शने ॥ १७५ ॥
७अकामानुमतौ कामं ८स्यादोमां परमं मते ।
९कच्चिदिष्टपरिप्रश्नेऽ१०वश्यं नूनञ्च निश्चये ॥ १७६ ॥
११बहिर्बहिर्भवे १२ह्यःस्यादतीतेऽह्नि श्व १३एष्यति ।
१४नीचैरल्पे १५महत्युच्चैः १६सत्त्वेऽस्ति १७दुष्ठु निन्दने ॥१७७॥
१८ननुच स्याद्विरोधोक्तौ १९पक्षान्तरे तु चेद् यदि ।

---

१. 'अन्तः (–न्तर्), अन्तरेण, अन्तरे, अन्तरा' इन ४ शब्दोंका अर्थ 'मध्य, बीच' है ॥

२. 'प्रादुः (–दुस्), आविः (–विस्)' इन २ शब्दोंका अर्थ 'प्रकट' है ॥

३. 'अ, न, नो, नहि' इन ४ शब्दोंका अर्थ 'अभाव' है ॥

४. 'प्रसह्य'का अर्थ 'हठसे, बलात्कारसे' है ॥

५. 'मा, मा स्म' इन २ शब्दोंका अर्थ 'निषेध, मना करना' है ॥

६. 'अस्तम्'का अर्थ 'दिखाई नहीं पड़ना, दर्शनाभाव' है ॥

७. 'कामम्' का अर्थ 'अनिच्छा होनेपर बादमें स्वीकार करना' है ॥

८. 'ओम्, आम्, परमम्' इन ३ शब्दोंका अर्थ 'स्वीकार' है ॥

९. 'कच्चित्' का अर्थ 'इष्टप्रश्न' है। (यथा—तव कुशलं कच्चित्? अर्थात् तुम्हारा कुशल तो है)॥

१०. 'अवश्यम्, नूनम्' इन २ शब्दोंका अर्थ 'निश्चय, अवश्य' है ॥

११. 'बहिः (–हिस्)'का अर्थ 'बाहर' है ॥

१२. 'ह्यः (ह्यस्)'का अर्थ 'बीता हुआ कल वाला दिन' है ॥

१३. 'श्वः (श्वस्)'का अर्थ 'आनेवाला कलका दिन' है ॥

१४. 'नीचैः (–चैस्)'का अर्थ 'थोड़ा, नीचे' है ॥

१५. 'उच्चैः, (–च्चैस्)'का अर्थ 'बड़ा; ऊपर' है ॥

१६. 'अस्ति'का अर्थ 'वर्तमान रहना' है ॥

१७. 'दुष्ठु'का अर्थ 'निन्दा करना' है ॥

१८. 'ननुच'का अर्थ 'विरोधकथन' है ॥

१९. 'चेत्, यदि' इन २ शब्दों का अर्थ 'पक्षान्तर (यदि, अगर)' है ॥

१शनैर्मन्दे२ऽर्वरे त्वर्वाग्३रोषोक्तावु ४नतौ नमः ॥ १८८ ।

इत्याचार्यहेमचन्द्रविरचितायाम् 'अभिधानचिन्तामणि'नाममालायां

षष्ठः सामान्यकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥

॥ सम्पूर्णोऽयं ग्रन्थः ॥

—×—

१. 'शनैः (–नैस्); का अर्थ 'धीरे मन्द' है ॥

२. 'अर्वाक् (–र्वाञ्च्)'का अर्थ 'कम, पहले' है ॥

३. 'उम्'का प्रयोग 'क्रोधपूर्वक कहने में' होता है ॥

४. 'नमः (–मस्)'का अर्थ 'नमस्कार, प्रणाम' है ॥

इस प्रकार साहित्य-व्याकरणाचार्यादिपदविभूषित मिश्रोपाह्व

श्रीहरगोविन्दशास्त्रिविरचित 'मणिप्रभा'व्याख्या, में

षष्ठ 'सामान्यकाण्ड' समाप्त हुआ ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

परिशिष्ट (१)

'मणिप्रभा'व्याख्यायामवशिष्टाः 'स्वोपज्ञवृत्त्य'न्तर्गताः शेषोक्तयः

१ शिष्ये छात्रः । (पृ० २२ । पंक्तिः ४)❀

२ भौमे व्योमोल्मुकैकाङ्गौ । (पृ० ३३ । पं० ८)

३ अगस्त्ये विन्ध्यकूटः स्याद्दक्षिणाशारतिर्मुनिः ।
सत्याग्निर्वारुणिः क्राथिस्तपनः कलशीसुतः ॥ (पृ० ३४ । पं० १७)

४ पक्षः कृष्णः सितो द्वेधा कृष्णो निशाह्वयोऽपरः ।
शुक्लो दिवाह्वयः पूर्वः । (पृ० ४२ । पं० २६)

५ वर्षे तु ऋतुवृत्तिर्युगांशकः ।
कालग्रन्थिर्मासमलः संवत् सर्वर्तुशारदौ ।
वत्स इद्वत्सरः इडावत्सरः परवाणिवत् ॥ (पृ० ४६ । पं० ३)

६ हूतौ हक्कारकाकारौ । (पृ० ७३ । पं० १२)

७ पूज्ये भरटको भट्टः । प्रयोज्यः पूज्यनामतः ।
(आवुकादयो नाट्यप्रस्तावान्नाट्योक्तौ द्रष्टव्याः) । (पृ० ९१।पं० १०)

८ भक्तमण्डे तु प्रस्रावप्रस्रवाच्छोटनास्रवाः । (पृ० १०३ । पं० १५)

९ तक्रे कट्वरसारणे । अर्शोघ्नं परमरसः । (पृ० १०६ । पं० १५)

१० पालिः सश्मश्रुयोषिति । (पृ० १३४ । पं० ७)

११ नप्ता तु दुहितुः पुत्रे । (पृ० १३६ । पं० २४)

१२ देहे सिनं प्रजनुकश्चतुःशाखं षडङ्गकम् ।
व्याधिस्थानञ्च । (पृ० १४१ । पं० १७)

१३ कचे पुनः । वृजिनो वेल्लितानोऽश्रः । (पृ० १४२ । पं० १०)

१४ अथ नाभौ पुतारिका । सिरामूलम् । (पृ० १५१ पं० ८)

१५ मेखला तु लालिनी कटिमालिका । (पृ० १६४ । पं० ११)

१६ अथ हिमवातापहांशुके । द्विखण्डको वरकश्च । (पृ० १६६ । पं० २०)

१७ राज्ञश्छत्रे नृपलक्ष्म । (पृ० १७६ । पं० २१)

१८ चमरः स्यात्तु चामरे । (पृ० १७६ । पं० २३)

१९ अथो भुजगभोगिनि । अहीरणी द्विमुखश्च । (पृ० ३१४ । पं० ८)



❀ २२ तमपृष्ठे ४ र्थपंक्त्यनन्तरं 'शिष्ये छात्रः' इति योजनीयः । एवमेवाग्रेऽपि बोध्यम् ।

परिशिष्ट (२)

अधस्तनांशाः संशोध्याः—

१ "शेषश्चात्र—···लताधारः ।" (पृ० १५१ पंक्ति १) अयमंशः १५० पृ० २० तम पंक्त्यनन्तरं पाठ्यः ।

२ "शेषश्चात्र—···क्लोमम् ।" (पृ० १५१ पंक्तिः ८) अयमंशः १५१ पृ० १ मपंक्त्यनन्तरं पाठ्यः ।

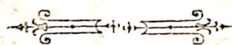
३ "शेषश्चात्र—आनुकूल्यार्थकं···प्रत्ययगादयः ॥" (पृ० ३६६ पंक्तिः ७—२३) अयमंशः ३६८ पृ० [illegible] र्थपंक्त्यनन्तरं पाठ्यः ।



अभिधानचिन्तामणिः

मूलस्थशब्दसूची

इत्यभिधानचिन्तामणि–मूलस्थशब्दसूची समाप्ता ।



अभिधानचिन्तामणिः

'शेष'स्थशब्दसूची

* मूलग्रन्थपङ्क्तिं परित्यज्य 'मणिप्रभा'व्याख्यात एवेयं पङ्क्तिगणना विधेया।

† प्रथमे परिशिष्टे नवमक्रमाङ्के 'अर्शोघ्न'शब्दो द्रष्टव्य इत्याशयः। अग्रेऽपि एवंविधस्थले इत्थमेव बोध्यं सुधीभिः।

इति शेषस्थशब्दसूची समाप्ता।



अभिधानचिन्तामणिः

विमर्शटिप्पण्यादिस्थ-शब्दसूची

* अत्रापि पङ्क्तिगणना 'शेष'स्थशब्दसूचीवत् 'मणिप्रभा' व्याख्यात एव कर्तव्या, न मूलश्लोकपङ्क्तिमारभ्येति बोध्यम् ।

इति विमर्श-टिप्पण्यादिस्थशब्दसूची समाप्ता।

